॥ ॐ अर्हं ॥

श्री उत्तराध्ययन सूत्र. द्वितिय विभाग.

अध्ययन २१ (१६ थी ३६)

(मूलगाथा–अन्वयार्थ तथा कथा सहित गुजराती भाषांतर)

भाषान्तर कर्ता—शास्त्री जेठालाल हरिभाइ—भावनगर.

गुरुणीजी श्री शिवश्रीजी तथा गुरुणीजी श्री हेतश्रीजी तथा गुरुणीजी श्री लाभश्रीजीना उपदेशथी विविध स्थान निवासी
श्राविकावर्ग विगेरेनी आर्थिक सहायथी प्रयत्नपूर्वक छपावी प्रसिद्ध करनार

शाह. कुंवरजी आणंदजी. श्री जैन धर्म प्रसारक सभाना प्रमुख—भावनगर.

वीर संवत् २४५२ विक्रम संवत् १९८२

॥ ॐ अर्हं ॥

प्रस्तावना.

जंबूद्वीपना आ भरतक्षेत्रमां आ अवसर्पिणीने विषे तथाप्रकारना जगतना स्वभावने अनुसरी ऋषभादिक चोवीश तीर्थंकरो थया छे. तेमां छेल्ला चोवीशमा तीर्थंकर श्री वर्धमान (महावीर) स्वामी थया छे. तेमना तीर्थमां गौतमादिक अग्यार गणधरो थया छे. तेमने तीर्थंकर नामगोत्र कर्मने अनुसरी श्रीवर्धमान स्वामीए " उप्पन्ने वा धुवे वा विगमे वा " आ त्रण पद आप्यां. ते उपरथी ते दरेक गणधरे द्वादशांगीनी रचना करी. तेनां नाम आ प्रमाणे छे—आचारांग १, सूत्रकृतांग २, स्थानांग ३, समवायांग ४, विवाहप्रज्ञप्ति एटले भगवती ५, ज्ञाताधर्मकथा ६, उपासकदशा ७, अंतकृत दशा ८, अनुत्तरोपपातिकदशा ९, प्रश्नव्याकरण १०, विपाकश्रुत ११ अने दृष्टिवाद १२. (आ छेल्ला दृष्टिवादमां चौद पूर्वनो समावेश थाय छे.) आ सिवाय बाकीनुं अंगबाह्य श्रुत कहेवाय छे. तेमां पण कालिक श्रुत अने उत्कालिक श्रुत एम बे विभाग छे. तेमां जे श्रुत असज्झाय न होय तो दिवस अने रात्रिनी पहेली अने छेल्ली ए बे पोरसीमां ज भणाय छे. ते श्रुत काळे एटले काळवेळाए ज भणातुं होवाथी कालिक कहेवाय छे. तथा जे श्रुत काळवेळा अने पांच प्रकारना असज्झाय सिवाय सर्व काळे भणाय छे, ते उत्कालिक कहेवाय छे. तेमां दशवैकालिक १, कल्पाकल्प २, क्षुल्लकल्पश्रुत ३, महाकल्पश्रुत ४, औपपातिक ५, राजप्रश्नीय ६, जीवाभिगम ७, प्रज्ञापना ८, महाप्रज्ञापना ९, नंदी १०, अनुयोगद्वार ११, देवेंद्रस्तव १२, तंदुलवैचारिक १३, चंद्रावेध्यक १४, प्रमादाप्रमाद १५, पौरुषीमंडळ १६, मंडलप्रवेश १७, गणिविद्या १८, विद्याचरण विनिश्चय १९,

ध्यानविभक्ति २०, मरणविभक्ति २१, आत्मविशुद्धि २२, संलेखनाश्रुत २३, वीतरागश्रुत २४, विहारकल्प २५, चरणविधि २६, आतुरप्रत्याख्यान २७, अने महाप्रत्याख्यान २८. आ अठ्ठावीश अध्ययनो (सूत्रो) उत्कालिक कहेवाय छे. तथा उत्तराध्ययन १, दशाश्रुतस्कंध २, बृहत्कल्प ३, व्यवहार ४, ऋषिभाषित ५, निशीथ ६, महानिशीथ ७, जंबूद्वीपप्रज्ञप्ति ८, सूरप्रज्ञप्ति ९, चंद्रप्रज्ञप्ति १०, द्वीपसागर प्रज्ञप्ति ११, क्षुद्रका विमानप्रविभक्ति १२, महती विमानप्रविभक्ति १३, अंगचूलिका १४, वर्गचूलिका १५, विवाहचूलिका १६, अरुणोपपात १७, वरुणोपपात १८, गरुडोपपात १९, धरणोपपात २०, वैश्रमणोपपात २१, वेलंधरोपपात २२, देवेंद्रोपपात २३, उत्थानश्रुत २४, समुत्थानश्रुत २५, नागपरिज्ञावलिका २६, * निरयावलिका कल्पिका २७, कल्पावतंसिका २८ पुष्पिका २९, पुष्पचूलिका ३०, वृष्णिदशा ३१, आशीविष भावना ३२, दृष्टिविष भावना ३३, चारण भावना ३४, महास्वप्न भावना ३५, अने तैजस निसर्ग ३६. आ विगेरे कालिकश्रुत कहेवाय छे. तेमां आ उत्तराध्ययन सूत्र कालिकमां प्रथम ज गणाव्युं छे. आ सूत्रमां छत्रीश अध्ययनो छे. ते अर्थथी श्री वर्द्धमान स्वामीए पोताना अवसान समये सोळ पहोरनी देशना आपी ते वखते प्ररूप्यां छे. ते देशनामां प्रभुए पंचावन अध्ययन पुण्यफळ विपाकनां अने पंचावन अध्ययन पापफळ विपाकनां कह्यां छे. त्यारपछी पूछ्या विना उत्तराध्ययनना छत्रीश अध्ययन प्रकाश्यां छे तेथी ते अपृष्ट व्याकरण कहेवाय छे. छेवट मरुदेवा मातानुं प्रधान नामनुं अध्ययन प्ररूपतां अंतर्मुहूर्तनुं शैलेशीकरण करी प्रभु मोक्षपद पाम्या छे.

आ उपरथी स्पष्ट जाणी शकाय छे के भगवानना मुखथी अंत समये आ सूत्रनो अर्थ प्ररूपेलो होवाथी तेमां अनेक धर्म विषयोनां तत्त्व

* आ पछीनां पांच नाम निरयावलिकाना ज विभागरूप छे.

होवा जोइए. अने तेज प्रमाणे छे एम आ सूत्र साद्यंत वांचतां निश्चय थाय छे. दरेक अध्ययनो सूत्ररूपे रचनार श्रीसुधर्मास्वामीए उत्तरोत्तर सहेतुक कह्यां छे, ते पण टीकाकारे स्पष्ट रीते बताव्युं छे. जो के आ सूत्र उपर वादीवेताळ श्रीशांतिसूरिए मोटी टीका करेली छे, अने त्यारपछी घणा आचार्योए भिन्न भिन्न टीकाओ करेली छे, तो पण आ भाषांतर करती वखते श्रीलक्ष्मीवल्लभ गणिकृत लक्ष्मीवल्लभी टीका अने महोपाध्याय श्रीभावविजयजी कृत टीकानो आधार लीधो छे. बन्ने टीकाकारोए मूळ सूत्रनो अर्थ विस्तारथी समजाव्यो छे; तेमज कथाभाग पण लक्ष्मीवल्लभी टीका करतां भावविजयजीनी टीकामां वधारे विस्तारथी आप्यो छे. आ सूत्रना भाषांतरमां सामान्य बोधवाळाने अति विस्तार वांचतां कंटाळो न आवे तेम ज अति संक्षिप्त वांचतां अपेक्षा न रहे तेटला माटे तेमनी बंनेनी रुचिने अनुसरी बन्ने टीकामांथी जोइतो विभाग लीधो छे. परंतु मूळ सूत्रनो अर्थ तो संपूर्ण दंडान्वयनी रीते सूत्रना पद मूकीने ज आप्यो छे. वधारे सरळताने माटे मूळ सूत्रनी गाथाओ उपर दंडान्वय प्रमाणे आंकडा लख्या छे, तेथी सामान्य बोधवाळा साधु साध्वी विगेरेने जीवविचारादिक प्रकरणनी जेम सरळताथी आ सूत्रना अर्थनुं ज्ञान थइ शके तेम छे, अने तेथी तेओने ज आ ग्रंथ विशेष उपयोगी छे. संस्कृतना अभ्यासीओने माटे तो श्रीलक्ष्मीवल्लभी विगेरे टीकाओ ज योग्य छे.

आ ग्रंथ आवी रीतनो छपाववा माटे प्रथम गुरुणीजी **श्रीशिवश्रीजीए** साध्वीजी **श्रीलाभश्रीजीने** भलामण करी हती, अने तेओश्रीना तथा तेमनी मुख्य शिष्या साध्वीजी **श्रीतिलकश्रीजीना** उपदेशथी छसो रुपीयानी सहाय प्रथमथी ज मळी हती, तेमज गुरुणीजी **श्रीहेतश्रीजी** तथा तेमनी मुख्य शिष्या साध्वीजी **श्रीउत्तमश्रीजीना** उपदेशथी चारसो रुपीयानी सहाय मळी हती. ते उपरथी साध्वीजी लाभश्रीजीए आ सभाना **शास्त्री जेठालाल हरिभाइ** पासे पोतानी देखरेख नीचे आ ग्रंथनुं काम शरु कराव्युं. अने बीजी वधारे सहाय

मेळववा प्रयत्न कर्यो. जेना परिणामे धारेली सहाय मळी छे. ते सहायकोनां नाम ग्रंथनी पाछळ बताववामां आव्यां छे.

आ ग्रंथना छत्रीशे अध्ययनोमां नीचे प्रमाणे विषयो आपेला छे:—

अध्ययन १ पानुं १—धर्मनुं मूळ विनय होवाथी प्रथम विनय नामनुं अध्ययन आप्युं छे. तेमां विनीत अने अविनीतनुं स्वरूप, विनीतना गुण अने अविनीतना दोष, अश्वना दृष्टांत सहित तथा कथा सहित बताववामां आवेल छे. तथा विनयना प्रसंगमां साधुनी भिक्षाटनादिक क्रिया, गुरुनो विनय साचववानी रीत ए विगेरे आपवामां आव्युं छे.

अध्ययन २ पानुं २९—विनयवंत साधुए परीषहो पण सहन करवा जोइए. तेथी बीजा अध्ययनमां बावीशे परीषहोनुं स्वरूप सविस्तर आप्युं छे. दरेक परीषह स्पष्ट रीते समजी शकाय तेटला माटे ते उपर एक एक कथा आपी छे. उपरांत प्रसंगने लीधे क्रोध उपर तथा ज्ञान उपर एम बे कथाओ अधिक आपी छे.

अध्ययन ३ पानुं ६८—परीषह सहन करवानुं कारण ए छे जे आ चतुर्गतिरूप संसारमां अटन करता प्राणीओने मनुष्यभव, धर्म श्रवणनी इच्छा, धर्मपर श्रद्धा अने संयमने विषे वीर्य, आ चार वस्तु अति दुर्लभ छे. तेथी चतुरंगीय नामनुं त्रीजुं अध्ययन आप्युं छे. तेमां मनुष्यभवनी दुर्लभता उपर चोल्लक विगेरे दश दृष्टांतो अने श्रद्धाना भ्रंश उपर आठ निन्हवोनी कथा आपी छे. ते चारे अंग जेने प्राप्त थया होय तेने स्वर्ग अने मोक्षना सुखनी प्राप्ति बतावी छे.

अध्ययन ४ पानुं १०४—चार अंगनी प्राप्ति थया छतां प्रमादनो त्याग करी अप्रमाद सेववानी आवश्यकता होवाथी प्रमादाप्रमाद नामनुं चोथुं अध्ययन कह्युं छे. तेमां जीवित कोइ पण प्रकारे सांधी शकातुं नथी अने वृद्धावस्था आवेथी धन, स्त्री, पुत्र विगेरे कोइ

पण शरणभूत थतुं नथी. तेथी मोहनिद्रानो त्याग करी अप्रमत्तपणे भावथी जागृत रहेवुं. ए विगेरे उपदेश आप्यो छे.

अध्ययन ५ पानुं १२३—मरण पर्यंत अप्रमादी रहेवानुं छे तेथी आ अध्ययनमां मरणना भेद बताव्या छे. तेमां मूळ सूत्रमां ज्ञानीओनुं सकाम मरण अने अज्ञानीनुं अकाम मरण एवा बे मुख्य विभाग बताव्या छे. अने टीकाकार महाराजे सतर प्रकारनां मरण पण संक्षेपथी कह्यां छे. तेमां प्राणीहिंसा मृषावाद विगेरेमां प्रवृत्त थइ, कामभोगमां आसक्त थइ, वृद्धावस्थामां व्याधिग्रस्त थइ, करेला कर्मनो पश्चात्ताप करतो प्राणी दुर्गतिमां जाय छे, ए विगेरे बाळ मरणनो व्याख्यामां बताव्युं छे. तथा गृहस्थाश्रममां रहीने पण जेओ सदाचार पूर्वक सद्व्रत पाळे छे तेओ स्वर्गादिक गतिने पामे छे, ए विगेरे बाळपंडित मरणनी व्याख्यामां बताव्युं छे, अने जेओ गृह, धन, स्त्री विगेरेनो सर्वथा त्याग करी केवळ आत्मकार्य साधवामां ज तत्पर रहे छे तेओ मोक्षादिक गतिने पामे छे, ए विगेरे पंडित मरणनी व्याख्यामां देखाड्युं छे. इत्यादि उत्तम उपदेश आ अध्ययनमां आप्यो छे.

अध्ययन ६ पानुं १३४—पंडितमरण, विद्या अने चारित्रवाळा साधुओनुं ज थतुं होवाथी आ अध्ययनमां निर्ग्रंथनुं स्वरूप बताव्युं छे. तेमां विद्याहीन पुरुष घणुं दुःख पामे छे, तेथी स्त्री, पुत्र, धनादिक उपरना मोहरूप अविद्यानो त्याग करवो, माता, पिता, स्त्री, पुत्र विगेरे कोइ पण दुःखथी मूकाववा समर्थ नथी, तेथी ते सर्वना स्नेहपाशनो त्याग करवो, हिंसादिक पांच आश्रवनो त्याग करवो, विविध भाषानुं के शास्त्रनुं ज्ञान छतां तेने क्रियामां न मूकाय तो ते पण अविद्या ज छे, शरीर अने कामभोगने विषे जे आसक्ति ते पण अविद्या छे, ते सर्व जाणी तेनो त्याग करी अप्रमत्तपणे संयमनुं पालन करी विचरवुं के जेथी सर्व दुःखथी मुक्त थवाय इत्यादि बताव्युं छे.

अध्ययन ७ पानुं १४०—रसगृद्धिनो त्याग कर्या विना निर्ग्रंथपणुं प्राप्त थतुं नथी, तेथी रसगृद्धिनो त्याग करवानुं स्वरूप सहेला-इथी समजाववा माटे सूत्रकार महाराजे अज (घेटो), कागणी, आम्रफळ अने वेपार ए चार दृष्टांत आपी रसगृद्धिथी थता दोष अने तेनो त्याग करवाथी थता गुणो बराबर बताव्या छे, तेथी आ अध्ययननुं नाम औरभ्रीय राख्युं छे. तेमां कामभोगादिकनी गृद्धिवाळाने बाळक अने तेनो त्याग करनारने पंडित कही पंडित थवानो उपदेश आप्यो छे.

अध्ययन ८ पानुं १५१—रसगृद्धिनो त्याग निर्लोभीथी थइ शके छे, तेथी निर्लोभतानुं स्वरूप बताववा माटे सूत्रकार सुधर्मा-स्वामी मूळसूत्रमां ज कपिल मुनिना चरित्र द्वारा उपदेश आपे छे. तेमां कपिलमुनिए पोते पांच सो चोरोने प्रतिबोध करवा माटे ध्रुवा-गीति छंद बोली सादी भाषामां ज धर्मनुं रहस्य समजावी तेमने प्रतिबोधी दीक्षा आपी छे. ए विगेरे हकीकत रसवाळी आपी छे.

अध्ययन ९ पानुं १६०—लोभ रहित प्राणी इंद्रादिकथी पण पूजाय छे एवुं जणाववा माटे नमिराजर्षिनुं चरित्र आपतां बीजा त्रण प्रत्येकबुद्धोनी कथा पण टीकाकार महाराजे कही छे अने त्यारपछी मूळ सूत्रमां संबंध मेळववा माटे नमि राजर्षिनुं चरित्र आप्युं छे. दीक्षा लीधा पछीनुं तेमनुं चरित्र सुत्रमां ज आवे छे. तेमां इंद्रे ब्राह्मणना वेषे आवी तेमनी राग द्वेषनो त्याग, धर्मनी स्थिरता अने संयमपरनी दृढता विगेरे संबंधी परिक्षा करी, छेवट तेमने संयममां दृढ जाणी प्रत्यक्ष थइ तेमनी स्तुति करी इंद्र स्वर्गे गया छे विगेरे हकीकत आपी छे.

अध्ययन १० पानुं १९८—नमि राजर्षिना चरित्रथी संयममां निश्चळता राखवानुं कह्युं, ते निश्चळता उपदेशथी ज प्राप्त थइ शके छे. तेथी श्री महावीरस्वामीए श्री गौतम गणधरने उद्देशी आ द्रुमपत्र नामनुं अध्ययन कह्युं छे. तेमां वृक्षनां नवां पत्रो जूनां पत्रोनी

जीर्णता जोइ तेमनी हांसी करे छे, तेमने जूनां पत्रो शिखामण आपे छे के—" अमे पण तमारी जेवा एक वखत हता, अने तमे पण काळे करीने अमारी जेवा जीर्ण थशो." विगेरे रूपक कह्युं छे. पछी आयुष्य अने यौवननुं अनित्यपणुं, मनुष्यभवनी दुर्लभता, ते प्रसंगे पृथ्वीकायादिकथी आरंभी पंचेंद्रिय तिर्यंच अने देव तथा नारकीनी कायस्थितिनो मोटो काळ, मनुष्यभव मळ्या छतां आर्यक्षेत्र, अविकळ इंद्रियपणुं, धर्मश्रवण, श्रद्धा विगेरेनी दुर्लभता बतावी छे. त्यारपछी वृद्धावस्थामां इंद्रियोनी शिथिलता थइ केवी स्थिति थाय छे ते सर्व बताव्युं छे. छेवटे संसारनो त्याग करी संयम अंगीकार करनारने समय मात्र पण प्रमाद नहीं करवा अने संयममां दृढ रहेवा उपदेश आप्यो छे, तथा गौतम गणधरनुं मोक्षगमन कह्युं छे.

अध्ययन ११ पानुं २१२—उपदेश पण विवेकीने ज आपी शकाय छे, अने विवेक बहुश्रुतनी सेवाथी प्राप्त थाय छे, तेथी आ अध्ययनमां बहुश्रुतनी सेवा करवानुं कह्युं छे. तेमां प्रथम अबहुश्रुत अने बहुश्रुतनुं लक्षण कही पछी ते बन्नेनी प्राप्ति शाथी थाय छे ? तेनां कारणो बताव्यां छे, तेमां बहुश्रुतपणानुं मूळ कारण विनय अने अबहुश्रुतपणानुं मूळ कारण अविनय होवाथी विनय अने अविनय शाथी प्राप्त थाय छे ? तेनां कारणो बताव्यां छे. तेमां अविनीतनां क्रोधादिक चौद स्थानो अने विनीतनां नम्रतादिक पंदर स्थानो बताव्यां छे. त्यारपछी बहुश्रुतनो आचार कही तेने सुशिक्षित अश्वादिकनी उपमा आपी प्रशंसा करी छे. तेमां छेवटे वासुदेव, चक्रवर्ती, इंद्र, मेरु, स्वयंभूरमण समुद्र विगेरेनी उपमा आपी छे. ते जाणवा योग्य छे.

अध्ययन १२ पानुं २२२—बहुश्रुते पण तप करवामां यत्न करवानो छे, तेथी तपसमृद्धि नामना आ अध्ययनमां हरिकेशबळ मुनिनी कथा कही तपनुं माहात्म्य बताव्युं छे. तेमां ते मुनि पारणाने दिवसे भिक्षा माटे अटन करता एक ब्राह्मणना यज्ञमां गया हता.

त्यां ब्राह्मणोए मुनिनी हांसी करी भिक्षानो निषेध कर्यो. ते वखते तिंदुक नामना ते मुनिना भक्त यक्षे मुनिना शरीरमां प्रवेश करी घणी रीते समजाववा पूर्वक भिक्षानी याचना करी, तोपण ब्राह्मणोए भिक्षा आपी नहीं. परंतु उलटा ते पुरोहितना विद्यार्थीओए मुनिनी कदर्थना करी तेथी यक्षे तेमने शिक्षा करी, ते जोइ भय पामेलो पुरोहित पोतानी भार्या भद्रा के जे राजपुत्री हती अने ते मुनिना प्रभावने सारी रीते जाणती हती तेना कहेवाथी मुनिने शरणे गयो. मुनिए तेने भावयज्ञनुं स्वरूप बतावी उपदेश आपी धर्म पमाड्यो. विगेरे हकीकत घणा विस्तारथी आपी धर्मनुं रहस्य बताव्युं छे.

अध्ययन १३ पानुं २४२—तप पण नियाणा रहित करवानो छे, तेथी नियाणानो दोष बताववा माटे चित्र अने संभूत मुनिनी कथा आपी छे. तेमां संभूतमुनि तपनुं नियाणुं करी ब्रह्मदत्त नामना चक्रवर्ती थया अने चित्रमुनिए नियाणुं कर्युं नहीं तेथी तेणे महेभ्य-पुत्र थइ जातिस्मरण ज्ञान पामी चारित्र ग्रहण कर्युं. पछी चक्रवर्तीने पण संगीत पूर्वक नाटक जोतां जातिस्मरण थयुं. तेथी पोताना पूर्व जन्मना भाइनी शोध करवा दोढ श्लोकवाळी समस्या पूर्ण करवा हमेशां आघोषणा कराववा लाग्या. छेवट ते मुनि मळ्या. तेमने चक्रवर्तीए भोग भोगववा घणी विनंति करी, परंतु ते मुनिए भोग तो अंगीकार न कर्या, पण चक्रीने धर्मविषे घणो उपदेश आप्यो, समृद्धिनी तुच्छता, संसारनी अनित्यता, कर्मना उदयनी उग्रता विगेरे बतावी घणी रीते समजाव्या, तोपण चक्रवर्ती पूर्वभवना नियाणावाळा होवाने लीधे प्रतिबोध पाम्या नहीं. छेवट ते मरीने नरके गया अने मुनि मोक्षे गया. आमां बन्नेनो संवाद घणो बोधदायक छे.

अध्ययन १४ पानुं २७५—आ अध्ययनमां पण नियाणा रहितनो गुण बताववा माटे नलिनीगुल्म नामना विमानमांथी च्यवीने छ जीवो जूदे जूदे ठेकाणे उत्पन्न थया छे. इषुकार राजा १, तेनी राणी कमलावती २, तेनो पुरोहित भृगु ३, तेनी पत्नी यशा ४,

तथा बे पुरोहितना पुत्रो ५–६. आमां प्रथम बे पुत्रोने प्रतिबोध थयो, पछी तेमना मातपिताने थयो अने त्यारपछी राजाराणीने प्रतिबोध थयो. ते वखते पुरोहित तथा तेनी स्त्रीए पुत्रोने घणी रीते संसारना लोभमां नांखवा प्रयत्न कर्यो, तो पण तेओए बिलकुल कामभोगनी इच्छा करी नहीं. ते विषेनो तेमनो संवाद घणो बोधदायक छे. छेवट ते चारे जणाए दीक्षा लीधी, ते वखते तेमनुं धन मालिकीविनानुं थवाथी तेने लेवा माटे राजा तैयार थयो, त्यारे राणीए राजाने पुरोहिते वमेला धनने ग्रहण करवानो निषेध करी धर्मनो उपदेश आपी प्रतिबोध पमाड्यो छे. आ विषय पण घणो उत्तम बोध आपनार छे. छेवट राजा अने राणीए पण दीक्षा लीधी. अंते ते छए जीवो मुक्तिने पाम्या.

अध्ययन १५ पानुं २६२.—नियाणा रहितपणुं प्राये करीने साधुने ज संभवे छे, तेथी आ सभिक्षु नामना अध्ययनमां भिक्षुना गुणो कह्या छे. तेमां रागद्वेष रहित थइ, आक्रोश वधादिकने सहन करी, कोइ पण वस्तुपर मूर्छा न राखी, अंतप्रांत भोजन, शय्या, आसन विगेरेने सेवी, शीतोष्णादिक परिसहो सहन करी, निरतिचार व्रतोनुं पालन करी, प्रशंसादिकमां आसक्ति रहित थइ, कषायादिकनो त्याग करी, पंचेंद्रियोना विषयथी निवृत्त थइ, विद्यामंत्रादिकवडे आजीविकाने नहीं करी, पूर्वना अने पछीना परिचयनो त्याग करी, भिक्षादिक मळवाथी अथवा न मळवाथी हर्ष शोकनो त्याग करी, जे कांइ मळे तेनाथी ज संतोष मानी, तथा ज्ञान दर्शन अने चारित्रमां ज लीन थइ जे विचरे ते ज साधु कहेवाय छे. ए विगेरे साधुना आचारो बताव्या छे.

विभाग बीजो.

अध्ययन १६ पानुं १—साधुना गुणो ब्रह्मचर्यथी ज स्थिर रही शके छे, तेथी आ ब्रह्मचर्यगुप्ति नामनुं अध्ययन कह्युं छे. तेमां

ब्रह्मचर्यनां स्थानो सांभळीने साधुना संयमनी उत्तरोत्तर वृद्धि थाय छे, आश्रवनो निरोध अने संवरनी प्राप्ति थाय छे, मन समाधिमां रहे छे, मन वचन अने कायानी गुप्ति सचवाय छे, जितेंद्रियपणुं प्राप्त थाय छे, तथा सदा अप्रमत्तपणुं प्राप्त थाय छे. ते बतावीने ब्रह्मचर्यनां दश स्थानो कह्यां छे. स्त्री पशु अने नपुंसक रहित उपाश्रयमां रहेवुं १, एकली स्त्रीनी साथे अथवा स्त्री संबंधी कथा करवी नहीं २, स्त्रीनी साथे एक आसनपर बेसवुं नहीं ३, स्त्रीना अवयवो जोवा नहीं ४, भींतविगेरेनी ओथाथी रही स्त्रीना क्रीडादिकना शब्दो सांभळवा नहीं ५, दीक्षा लीधा पहेलां स्त्री साथे करेली क्रीडानुं स्मरण करवुं नहीं ६, घी विगेरे जेमांथी नीतरतुं होय एवो गरिष्ठ आहार करवो नहीं ७, क्षुधानी शांति थाय तेथी वधारे आहार करवो नहीं ८, शरीरनी, आभूषा करवी नहीं ९, तथा शब्दादिक पांचे विषयोमां प्रवृत्ति करवी नहीं १०. आ दश स्थानोने प्रथम संक्षेपथी अने पछी विस्तारथी कही ब्रह्मचर्यमां दृढ थवानो उपदेश करी छेवट तेनो महिमा बताव्यो छे.

अध्ययन १७ पानुं १३—ब्रह्मचर्यनी समाधिनां स्थानो पापस्थानकोने वर्जवाथी ज पाळी शकाय छे, जे पापस्थानोने वर्जतो नथी ते पापश्रमण कहेवाय छे, तेथी आ अध्ययन पापश्रमणीय नामनुं कह्युं छे. तेमां 'श्रुतनो अभ्यास करावनार आचार्यादिक पण भूतकाळ अने भविष्यकाळ संबंधी कांइ पण जाणता नथी अने वर्तमानकाळ संबंधी तेओ जेटलुं जाणे छे तेटलुं नहीं भणेला पण जाणे छे, तेओनी जेम नहीं भणेलाने पण वसति, अन्न, पान, वस्त्र विगेरे मळे छे.' आ प्रमाणे जे प्रमादी साधु बोले छे अने मनोहर आहार करी प्रमादने लीधे निद्रादिकने सेवे छे, आचार्यादिकनी वैयावच्च करतो नथी, एकेंद्रियादिक जीवोनी विराधनामां प्रवर्ते छे, विधिप्रमाणे पडिलेहणादिक क्रिया करतो नथी, वळी चालतां ईर्यासमिति साचवे नहीं, क्रोधादिक कषायोनो त्याग करे नहीं, गुरुनो दोष कहेवामां

तत्पर थाय, ज्ञान नहीं छतां जेनी तेनी साथे वादविवाद करवामां प्रवर्ते, कारण विना पण घी दूध विगेरे विकृति वारंवार खाधा करे, व्रत पच्चख्खाण करे नहीं, परपाखंडीओ साथे प्रसंग वधारे, रागी श्रावकोना घरनी भिक्षा ग्रहण करे, आवा कुशीळीया अने पासत्थादिकनी जेवा आचरण करनार साधुओ केवळ वेषविडंबक ज छे. तेवाने कदापि साधु कही शकाय नहीं. विगेरे हकीकत विस्तारथी आपी छे.

अध्ययन १८ मानुं १८—पापस्थानोनो त्याग पण भोगनो त्याग करवाथी ज थाय छे. तेथी आ अध्ययनमां संयत राजानी कथा आपी छे. तेमां ते राजा मोटा सैन्यना परिवार सहित शिकार करवा गयो छे. त्यां एक मुनिने ध्यानमां रहेला जोइ तेने पोताना पाप संबंधी भय उत्पन्न थयो. तेथी तेणे मुनिने वंदना करी. ध्यानमां रहेला मुनि कांइ पण बोल्या नहीं, त्यारे तो ते वधारे भयभीत थइ वारंवार खमाववा लाग्यो, छेवट मुनिनुं ध्यान पूर्ण थयुं, त्यारे मुनिए तेने कह्युं के–" हे राजा ! माराथी तने जरा पण भय नथी, परंतु आ निरपराधी मृगादिक जीवोने तुं अभयदान आपनार था." एम कही मुनिए तेने संसारनी अनित्यता, जीवितनी चपळता, धनपुत्रादिकनी अशरणता, विष जेवा भोगनी परिणामे विरसता विगेरे संबंधी घणो असरकारक उपदेश आप्यो. तेथी वैराग्य पामी राजाए सर्व भोगनो त्याग करी दीक्षा लीधी. अनुक्रमे गीतार्थ थइ गुरुनी आज्ञाथी एकाकीपणे विचरवा लाग्या. एकदा ते राजर्षिने कोइ क्षत्रिय मुनिनो समागम थयो, ते वखते ते क्षत्रिय मुनिए ते राजर्षिना वैराग्यनी परीक्षा करी. पछी क्रियावादी, अक्रियावादी, विनयवादी अने अज्ञानवादी ए चार एकांतवादीना मिथ्यावाद बतावी तेनापर सारुं विवेचन कर्युं, पछी ते ज क्षत्रिय मुनिए ते राजर्षिने चारित्रमां स्थिर करवा माटे पोतानो ज आचार बताव्यो छे, तेमां संजय राजर्षिए बचे केटलाक प्रश्नो कर्या छे अने क्षत्रिय मुनिए तेना उत्तर आप्या छे, तेमां प्रसंगोपात भरतचक्रवर्ती विगेरे महापुरुषोनी कथाओ कही संजय राजर्षिने चारित्रमां दृढ कर्या छे.

अध्ययन १९ पानुं ६४—सांसारिक भोगऋद्धिनो त्याग करती वखते शरीरनी शुश्रूषा पण वर्जवानी छे, ते बाबत मृगापुत्रना दृष्टांतथी बतावी आपेल छे. तेमां ते मृगापुत्र दोगुंदुक देवनी जेम भोग भोगवतो पोताना महेलमां रह्यो हतो, तेवामां एकदा मार्गमां जता मुनिने जोइ जातिस्मरण थवाथी वैराग्य पामी मातापिता पासे आवी चारित्र लेवानी आज्ञा मागी, ते वखते तेणे नारक तिर्यंचनां दुःखो, कामभोगनी तुच्छता अने परिणामे विरसता, शुश्रूषा कर्या छतां शरीरनी अपवित्रता अनित्यता अने असारता, जन्म जरादिकनां दुःखो विगेरे विषयो दृष्टांत सहित समजाव्या छे. तेना जवाबमां तेना मातापिताए तेनापरना मोहने लीधे दीक्षानो निषेध करवा माटे चारित्रनुं दुष्कर-पणुं जणावतां पांचे महाव्रतो अने छठ्ठा रात्रिभोजन व्रतनी दुष्करता अने बावीश परीषहोनी दुःसहता विगेरे बतावेल छे. तथा चारित्रनुं पालन केवुं दुष्कर छे ? ते दृष्टांत सहित सविस्तर समजाव्युं छे. तो पण कामभोगमां लुब्ध नहीं थयेला अने चारित्रना कष्टथी भय नहीं पामेला मृगापुत्रे चार गतिवाळा संसारमां अनंतीवार नारकादिक दुःखोनो पोतानो अनुभव कही देखाड्यो छे के जे वांचवाथी वांचनारने पण वैराग्य उत्पन्न थाय तेम छे. पछी तेणे दीक्षा लीधा बाद भिक्षाचर्यानुं स्वरूप, चारित्रना आचार अने छेवट तेमनुं मोक्षगमन विगेरे बताव्युं छे.

अध्ययन २० पानुं ११३—' संसारमां मारो रक्षक कोइ नथी, हुं एकलो ज छुं ' एवा अनाथपणानी भावना विना शरीरनी शुश्रू-षानो त्याग थइ शकतो नथी, तेथी आ महानिर्ग्रंथीय नामना अध्ययनमां अनाथता सिद्ध करी छे. तेमां श्रेणिक राजा एकदा उद्यानमां गया छे, त्यां तेणे युवान वयवाळा, कोमळ शरीरवाळा अने मनोहर सौंदर्यवाळा एक मुनिने जोइ दीक्षा लेवानुं कारण पूछ्युं छे, तेना जवाबमां ते मुनिए कह्युं के—" मारो कोइ नाथ न होवाथी नाथ मेळववा माटे में दीक्षा लीधी छे. " ते सांभळी आश्चर्य पामेला राजाए कह्युं

के—" हुं तमारो नाथ थाउं, तमो इच्छा प्रमाणे भोग भोगवो. " एटले मुनिए कह्युं के—" हे राजा ! तमे तमारा ज नाथ नथी, तो बीजाना नाथ शी रीते थशो ? " आवुं अपूर्व वचन सांभळी अत्यंत विस्मय पामेला राजाए पोतानो सैन्य, कोष, परिवार विगेरे वैभव बतावी पोतानुं नाथपणुं सिद्ध कर्युं, त्यारे मुनिए पण पोतानी गृहस्थाश्रमनी श्रेष्ठ समृद्धिनुं तथा माता, पिता, पत्नी, मित्र विगेरेनुं वर्णन करी नेत्रनी असह्य वेदना थइ ते वखते कोइ पण काम लाग्युं नहीं, कोइए नाथपणुं बताव्युं नहीं, एम कही अनाथपणुं सिद्ध कर्युं छे. आ विषय घणो विस्तारथी असरकारक वर्णव्यो छे. पछी नेत्रनी वेदना दूर थाय तो सर्वस्वनो त्याग करी चारित्र लेवानी दृढ धारणा करतां वेदना दूर थइ अने चारित्र लीधुं त्यारे हवे पोताना आत्मानो तथा सर्व प्राणी मात्रनो हुं नाथ थयो छुं, इत्यादिक कही तथा नाथता अने अनाथतानुं स्वरूप समजावी राजाने सारो उपदेश कर्यो छे. पछी राजा प्रसन्न थइ मुनिने खमावी तेनी स्तुति करी पोताने स्थाने गया अने मुनि पण अन्यत्र विचर्या.

अध्ययन २१ पानुं १२६—अनाथपणानो विचार एकांत चर्या विना थइ शकतो नथी, तेथी आ अध्ययनमां समुद्रपाळना दृष्टांत-वडे एकांतचर्या वर्णवी छे. तेमां ते समुद्रपाळ पालित नामना श्रावकनो पुत्र हतो. तेनो जन्म समुद्रमां थयो हतो, तेथी तेनुं नाम समुद्र-पाळ पाड्युं हतुं. ते सकळ कळामां निपुण थइ युवावस्था पाम्यो, त्यारे ते रुपिणी नामनी कन्याने परण्यो. तेणीनी साथे दोगुंदक देवनी जेम निरंतर ते भोगविलासमां मग्न रहेतो हतो, एकदा पोताना महेलनी बारीमां बेठेलो ते समुद्रपाळ वध्यस्थाने लइ जवाता एक चोरने जोइ वैराग्य पाम्यो. तेथी तरत तेणे माता पितानी रजा लइ चारित्र ग्रहण कर्युं. पछी तेणे पोताना आत्माने शिक्षा आपी के—" हे जीव ! महाक्लेश कारक, भयकारक अने महामोह कारक स्वजनादिकना संगनो त्याग करी चारित्रधर्मपर रुचि करी व्रत तथा शीलनुं

पालन करी परीषहोने सहन कर. ” आ रीते अहिंसादिक पांच महाव्रतो संबंधी, समय प्रमाणे प्रतिलेखनादिक क्रिया संबंधी, विहार संबंधी, भयंकर शब्दादिकथी त्रास नहीं पामवा संबंधी, रागद्वेषना त्याग संबंधी, उपसर्गोने सहन करवा संबंधी, कषायना त्याग संबंधी तथा असंयममां रति अने संयममां अरतिनो त्याग करवा संबंधी अनेक प्रकारे उपदेश आप्यो छे. छेवट निरतिचार चारित्रनुं पालन करी ते महात्मा समुद्रपाल मुनि मुक्तिपद पाम्याछे.

अध्ययन २२ पानुं १३२—एकांतचर्या धीरज विना पाळी शकाती नथी तेथी रथनेमिना दृष्टांतवडे चारित्रने विषे धृति राखवानो उपदेश आप्यो छे. तेमां प्रथम श्रीनेमिनाथनुं चरित्र आपतां ते भगवाने राजीमतीने परणवा जतां ज मार्गमां पशुपक्षी दयाने लीधे परणवानो निषेध करी पाछा वळी वर्षीदान आपी दीक्षा ग्रहण करी. पछी भगवानने केवळज्ञान थयुं त्यारे राजीमतीए तथा प्रभुना भाइ रथनेमि विगेरे घणा जनोए दीक्षा लीधी. एकदा प्रभुने वांदी पाछा आवतां मार्गमां वृष्टि थवाथी राजीमती एक गुफामां पेठी, अने भीनां थयेलां वस्त्र सुकववा लागी. ते वखते ते ज गुफामां प्रथम आवीने रहेला रथनेमिए तेणीने जोइ. एटले चारित्रना परिणामथी भ्रष्ट थइ तेणे तेणीनी पासे भोगनी प्रार्थना करी. ते वखते भयभीत थयेली राजीमतीए वस्त्र पहेरी लइ धीरज राखी रथनेमिने उपदेश आप्यो के—“ तमे रूपमां कुबेर जेवा, नळकूबर जेवा के इंद्र जेवा हो पण हुं तमने कदापि इच्छीश नहीं. अगंधन कुळमां जन्मेला नाग अग्निमां प्रवेश करवानुं कबूल करे छे पण वमेलुं विष पाछुं चूसी लेता नथी. हे कामांध ! तमारा यशने धिक्कार छे के जे तमे वमेलाने खावा इच्छो छो. माटे आवा असंयम जीवित करतां पंडित मरणे मरवुं सारुं छे. स्त्रीओने जोइ आवी नीच अभिलाषा करवाथी तमारुं चित्त अस्थिर थशे, अने तेथी करीने तमारुं चारित्र नष्ट थशे. ” इत्यादिक उपदेशथी रथनेमिने प्रतिबोध थयो, तेथी पोताना पापनी आलोचना करी

चारित्रमां द्रढ थइ, त्रण गुप्तिथी गुप्त थइने तेमणे इंद्रियोने जीती. छेवट ते बन्ने केवळी थइ मोक्ष पाम्या.

अध्ययन २३ पानुं १५६—संयममां धृति राखतां छतां कोइने तेमां शंका उत्पन्न थाय, तो श्रीपार्श्वनाथना संतानीया श्रीकेशीकुमारे श्रीगौतमस्वामीने विनयथी प्रश्न पूछी पोताना शिष्योनो संदेह दूर कर्यो हतो, ते प्रमाणे अन्य मुमुक्षुए पण शंकानुं समाधान करी संयम मार्गमां प्रवर्तवुं, ते संबंधी आ अध्ययनमां घणी समजवा जेवी बोधदायक हकिकत आपी छे. तेमां प्रथम श्रीपार्श्वनाथनुं चरित्र आपी तेमना क्रमागत शिष्य श्रुत तथा अवधिज्ञानवाळा श्रीकेशीकुमार पोताना परिवार सहित एकदा श्रावस्ती नगरीना उद्यानमां समवसर्या छे, ते ज वखते त्यां बीजा उद्यानमां श्रीगौतमस्वामी पण समवसर्या. ते बन्नेना शिष्यो गोचरीए गया ते वखते परस्परना वेषमां तथा महाव्रतमां तफावत जोइ मनमां शंका पाम्या के—"अमे तथा आ मुनिओ एक ज मोक्षमार्गमां प्रवर्त्या छीए, अमारो अने तेमनो धर्म एक ज छे, छतां महाव्रतमां अने वेषमां आवो तफावत होवानुं शुं कारण हशे ? " आ प्रमाणे थयेली शंका तेमणे पोतपोताना गुरु पासे जइने पूछी. तेथी तेमने बोध करवा माटे ते बन्ने गणधरो एक ठेकाणे पोतपोताना परिवार सहित एकठा थया. ते वखते त्यां बीजा अन्य तीर्थना साधुओ अने घणा गृहस्थीओ पण आव्या, तथा यक्ष किन्नर अने राक्षसो विगेरे पण घणा आव्या, तेथी ते एक मोटी सभा थइ गइ. प्रथम श्रीकेशीकुमारे श्रीगौतमस्वामीने प्रश्न कर्यो के—" श्रीपार्श्वनाथ स्वामीए चार महाव्रतवाळो साधुधर्म कह्यो छे. अने श्री वर्धमानस्वामीए पांचमहाव्रतवाळो साधुधर्म कह्यो छे. तेम ज श्रीपार्श्वनाथ स्वामीए सचेल एटले वस्त्रवाळो अने श्रीवर्धमान स्वामीए अचेल एटले वस्त्र रहित धर्म कह्यो छे. आ बन्ने तीर्थंकरो मोक्षरूप एक ज कार्य साधवा माटे प्रवर्तेला छे, छतां तेमना मार्गमां आवी भिन्नता छे, तेनुं शुं कारण ? " तेना जवाबमां श्रीगौतमस्वामीए कह्युं के—" मध्यना बावीश तीर्थंकरोना साधुओ ऋजुप्राज्ञ होवाथी चोथा अपरिग्रह महाव्रतमां ज ब्रह्म-

र्यनो समावेश करी ले छे अने आ चोवीशमा तीर्थंकरना साधुओ वक्र-जड होवाथी तेवो समावेश करी शके नहीं, तेथी तेमने ब्रह्मचर्य अने अपरिग्रह ए बे व्रत जुदां पाडी पांच महाव्रतो कह्यां छे. वळी ए ज रीते ऋजुप्राज्ञने सचेल धर्म कह्यो छे एटले के तेओ गमे तेवा वस्त्रादिक राखी शके छे अने वक्रजडने तो अचेल धर्म कह्यो छे एटले तेओ प्रमाणोपेत ज वस्त्रादिक राखी शके छे. ते तेमनी तथाप्रकारनी योग्यता जोइ ते ते प्रमाणे अनुज्ञा आपी छे. " आ रीते ये प्रश्नोना उत्तरथी साधुओनी शंका दूर करी पछी केशीकुमारे आभ्यंतर शत्रुने जीतवा संबंधी, स्नेहपाशने छेदवा संबंधी, तृष्णारूपी लताने उखेडवा संबंधी, कषायरूपी अग्निने बुझववा संबंधी, मनरूपी अश्वनो निग्रह करवा संबंधी, उन्मार्गनो त्याग करी सन्मार्गमां प्रवर्तवा संबंधी, विगेरे घणा प्रश्नो कर्या, तेमना यथार्थ उत्तर श्रीगौतमस्वामीए आप्या. त्यारपछी श्रीकेशीकुमारे परिवार सहित श्रीगौतमस्वामी पासे पांच महाव्रतवाळो धर्म अंगीकार कर्यो. विगेरे हकीकत बहु बोधदायक आपेली छे.

अध्ययन २४ पानुं १८६—शंकानुं निवारण करवामां भाषासमितिरूप वाग्योगनी जरुर छे, तेथी आ अध्ययनमां पांच समिति अने त्रण गुप्तिरूप आठ प्रवचनमातानुं स्वरूप आप्युं छे. आ आठमां ज सर्व द्वादशांगरूप प्रवचननो समावेश थाय छे तेथी ते तेनी मातारूप कहेवाय छे. अहीं आ आठेनुं स्वरूप, तेनो उपयोग अने छेवटे ते पाळवाथी थतुं फळ सर्व हकीकत विस्तारथी आपी छे.

अध्ययन २५ पानुं १९६—जे ब्रह्मचर्यना गुणमां दृढ होय ते ज अष्ट प्रवचनमातानुं पालन करी शके छे, तेथी आ यज्ञिय नामना अध्ययनमां जयघोष अने विजयघोषनी कथाद्वारा ब्रह्मचर्यना गुण बताव्या छे. आ बन्ने ब्राह्मणो हता अने भाइओ हता, तेमां जयघोषे वैराग्य पामी दीक्षा ग्रहण करी छे. पछी केटलेक काळे पोताना भाइ विजयघोषने प्रतिबोध करवा माटे ते जयघोष मुनि वाणारसी नगरीमां पधार्या. ते वखते विजयघोषे यज्ञ प्रारंभ्यो हतो, त्यां भिक्षा माटे जयघोष मुनि गया. तेमने नहीं ओळखवाथी ते विप्रे भिक्षा आपी नहीं,

અને કહ્યું કે—" જેઓ વેદને જાણનારા હોય, યજ્ઞના અર્થી હોય, દ્વિજ હોય, જ્યોતિષ અને અંગશાસ્ત્રને જાણનાર હોય, ધર્મના પારગામી હોય અને જેઓ પોતાને તથા બીજાને સંસારસમુદ્રથી તારવામાં સમર્થ હોય, તેમને જ અહીં ભિક્ષા આપવામાં આવે છે." તે સાંભળી જયઘોષ મુનિએ તેનો ઉપકાર કરવા માટે કહ્યું કે—" તું વેદના, યજ્ઞના, નક્ષત્રના અને ધર્મના મુખને જાણતો નથી, તથા સ્વ–પરનો ઉદ્ધાર કરવામાં કોણ સમર્થ છે ? તે પણ તું જાણતો નથી. જો કદાચ જાણતો હો તો કહે." તે સાંભળી ઉત્તર આપવામાં અસમર્થ એવા તે બ્રાહ્મણે બે હાથ જોડી વિનયથી મુનિને જ તેનો ઉત્તર આપવા વિનંતિ કરી. ત્યારે મુનિએ વિસ્તારથી તે સર્વના ઉત્તર આપ્યા. તેમાં બ્રાહ્મણનું લક્ષણ આપતાં પ્રસંગને લીધે સાધુ, બ્રાહ્મણ, મુનિ, તાપસ, ક્ષત્રિય, વૈશ્ય, શૂદ્ર વિગેરેનાં લક્ષણો પણ આપ્યાં છે, સર્વ તે સાંભળી વિજયઘોષે વૈરાગ્ય પામી જયઘોષ મુનિ પાસે દીક્ષા લીધી. અનુક્રમે બન્ને મોક્ષ પામ્યા.

અધ્યયન ૨૬ પાનું ૨૦૫—બ્રહ્મચર્યના ગુણ યતિમાં જ હોય છે અને યતિએ અવશ્ય સાધુ સામાચારી પાળવાની છે, તેથી આ અધ્યયનમાં સાધુ સામાચારી બતાવી છે. તે દશ પ્રકારની છે—આવશ્યકી૧, નૈષેધિકી ૨, આપૃચ્છના ૩, પ્રતિપૃચ્છના ૪, છંદના ૫, ઇચ્છાકાર ૬, મિથ્યાકાર ૭, તથાકાર ૮, અભ્યુત્થાન ૯ અને ઉપસંપદા ૧૦. આ દશેનો અર્થ તથા તેનો ઉપયોગ કરવાનાં સ્થાનો બતાવ્યાં છે. ત્યારપછી ઓઘસામાચારી કહી છે. તેમાં પ્રથમ પોરસી અને પાદોનપોરસી વિગેરે કાળમાન જાણવાનો ઉપાય તથા રાત્રિના કાળમાન જાણવાનો ઉપાય બતાવી રાત્રિ દિવસની આઠ પોરસીમાં કઇ કઇ પોરસીએ કયું કયું કાર્ય કરવું ? તે બાબત બતાવતા પડિલેહણ, સ્વાધ્યાય, ગોચરી વિગેરે ક્રિયાઓનો નિયમિત કાળ બતાવ્યો છે. પછી વિસ્તારથી દિવસ અને રાત્રિનું કૃત્ય બતાવતા પડિલેહણ, સ્વાધ્યાય, આહાર, કાયોત્સર્ગ અને પ્રતિક્રમણનો વિધિ સવિસ્તર કહ્યો છે.

अध्ययन २७ पानुं २१९—साधुनी सामाचारी अशठपणाथी ज पाळी शकाय छे, तेथी आ अध्ययनमां ते वात दृढ करवा माटे गर्ग नामना आचार्यनुं दृष्टांत आप्युं छे. तेमां ते सूरि विचारे छे के—" जेम कोइ पुरुष गाडीमां वृषभादिकने जोडी परगाम जवा नीकळे, तेनी गाडीने जोडेला बळद जो गळीया होय तो ते पुरुष ते बळदने मारकूट करी छेवट खेदने ज पामे छे, ए ज रीते अविनीत शिष्योने वारंवार शिक्षा आपतां छतां ते कदापि विनीत थता नथी अने उलटा असमाधिनुं कारण थाय छे. तेथी मारे आ अविनीत शिष्योने छोडी अन्यत्र जइ आत्मकार्य साधवुं सारुं छे." एम विचारी गर्ग मुनि अविनीत शिष्योनो त्याग करी अन्यत्र जइ समाधिपूर्वक संयममार्गमां विचरवा लाग्या. अहीं गळीया बळद विषेनुं दृष्टांत पण विस्तारथी आप्युं छे अने पछी अविनीत शिष्य उपर तेनो उपनय पण ए ज प्रमाणे उतार्यो छे.

अध्ययन २८ पानुं २२३—शठतानो त्याग करवाथी मोक्ष सुलभ थाय छे, एम जणाववा माटे आ 'मोक्षमार्ग गति' नामनुं अध्ययन कह्युं छे. तेमां मोक्षमार्गनां ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने तप ए चार कारणो कह्यां छे. तेमां पण मति, श्रुत, अवधि, मनःपर्यव अने केवळ ए पांच प्रकारे ज्ञान कह्युं छे, ज्ञाननो विषय द्रव्य, गुण अने पर्याय तथा ते द्रव्यादिकनां लक्षणो, अने तेना भेद प्रभेद विगेरे आप्या छे. ए ज रीते दर्शनना व्याख्यामां जीव, अजीव, बंध, पुण्य, पाप विगेरे नव तत्त्वोनुं श्रद्धानरूप स्वरूप, निसर्गरुचि, उपदेशरुचि विगेरे समकितना दश भेदो, ते दशेनी विस्तारपूर्वक व्याख्या, परमार्थसंस्तव विगेरे समकितनां लिंग, समकितनुं माहात्म्य, निःशंकितादिक समकितना आठ आचार, ए विगेरे विषयो वर्णव्या छे. चारित्रनी व्याख्यामां सामायिक विगेरे चारित्रना पांच प्रकार, तेनुं स्वरूप अने तेनो अर्थ विगेरे बताव्युं छे. तथा तपनी व्याख्यामां छ प्रकारनो बाह्य अने छ प्रकारनो आभ्यंतर एम बार प्रकारनो

तप बताव्यो छे.

अध्ययन २९ पानुं २३२—वीतराग थया विना मोक्षमार्गनी प्राप्ति थइ शकती नथी, तेथी सम्यक्त्वपराक्रम नामनुं आ अध्ययन आप्युं छे. तेमां संवेग, निर्वेद, धर्मश्रद्धा विगेरे तोंतेर (७३) द्वारो कह्यां छे. ते दरेकनो शब्दार्थ, विस्तरार्थ अने फळ विगेरे विस्तारथी आपेल छे. तेनां नाम मात्र लखवाथी पण अहीं वधारे विस्तार थइ जाय तेम छे तेथी वांचनारने त्यांथी ज वांचवानी भलामण करवी योग्य लागे छे. तेमां बीजी पण घणी बाबतो वर्णवी छे.

अध्ययन ३० पानुं २६२—तप विना वीतराग एटले कर्मरहित थवातुं नथी तेथी आ अध्ययन तपोमार्गगति नामे आप्युं छे. तेमां कर्म खपाववा माटे आश्रवरहित थवुं जोइए. जेम कोइ तळावमांथी पाणी काढी नांखवुं होय तो प्रथम तेमां जळ आववानां द्वारो बंध करवां जोइए, अने त्यारपछी अंदर रहेला जळने शोषण करवानो उपाय करवो जोइए, तेम जीवरूपी तळावमां जळनी जेम भरेलां कर्मो खपाववा माटे प्रथम महाव्रतादिकवडे हिंसादिक द्वारो रुंधवा अने पछी तपवडे अंदरनां कर्मोनुं शोषण करी शकाय छे. आ प्रमाणे अध्ययननो आरंभ करी पछी अनशनादिक छ प्रकारनो बाह्य तप आप्यो छे तथा तेना प्रतिभेदो पण सविस्तर आप्या छे, अने त्यारपछी प्रायश्चित्तादिक छ प्रकारनो आभ्यंतर तप आप्यो छे. छेवट तपनुं फळ बताव्युं छे.

अध्ययन ३१ पानुं २७५—चारित्र विना तप सफळ थतो नथी, तेथी आ चरणविधि नामना अध्ययनमां संयममां प्रवृत्ति अने असंयमथी निवृत्ति करवा उपदेश आप्यो छे. ते प्रसंगे त्रण दंड, त्रण गारव अने त्रण शल्यनो त्याग; दिव्य, तिर्यंच अने मनुष्ये करेला उपसर्गोनुं सहन, चार विकथा, चार कषाय, चार संज्ञा अने बे दुर्ध्याननो त्याग; पांच महाव्रत, पांच इंद्रियोना विषय, कायिक्यादिक पांच

क्रिया, छ लेश्या, पृथिव्यादिक छ काय अने आहार करवाना छ कारणने विषे यतना, संसृष्टादिक सात प्रकारना पिंडग्रह ने सात भय, आठ मद, नव ब्रह्मचर्यगुप्ति, दश प्रकारनो साधुधर्म, श्रावकनी अग्यार प्रतिमा, भिक्षुनी बार प्रतिमा, तेर प्रकारनी क्रिया, चौद प्रकारना जीव, पंदर प्रकारना परमाधार्मिक, सूत्रकृतांगना सोळ अध्ययन, सत्तर प्रकारे संयम, अढार प्रकारनुं ब्रह्मचर्य, ओगणीश ज्ञाताध्ययन, असमाधिना वीश स्थानो, एकवीश प्रकारनी शबलक्रिया, बावीश परीषह, त्रेवीश अध्ययनवाळुं सुयगडांग, चोवीश देवो, पचीश भावना, दशाकल्पव्यवहारना छव्वीश उद्देशा, साधुना सत्तावीश गुण, आचारांगना अठ्ठावीश अध्ययन, पापश्रुतना ओगणत्रीश प्रसंगो, मोहना त्रीश स्थानको, सिद्धना एकत्रीश अतिशयो, बत्रीश योगनो संग्रह तथा तेत्रीश आशातना, आटला विषयो लीधा छे. तेमां उपादेयनुं ग्रहण अने हेयनो त्याग करवा उपदेश आप्यो छे, तथा ते प्रमाणे वर्तनार मोक्षने पामे छे एम तेनुं फळ पण बताव्युं छे.

अध्ययन ३२ पानुं २८७—प्रमादनो त्याग करवाथी ज चारित्र पाळी शकाय छे. तेथी आ प्रमादस्थान नामनुं अध्ययन आप्युं छे. तेमां अविरति, कषाय विगेरे प्रमादना स्थानो तजवा लायक छे, ज्ञान, दर्शन अने चारित्र आदरवा लायक छे. तेनो उपाय सद्गुर्वादिकनी सेवा, पासत्थादिकनो त्याग, स्वाध्याय अने धृति विगेरे छे. आवो उपाय प्राप्त करवा माटे एषणीय आहार, तत्त्वज्ञ शिष्य अने स्त्र्यादिक रहित उपाश्रय सेववानी जरुर छे. ज्ञानादिकनो प्रतिबंध करनार अने दुःखना हेतुरूप मोहादिकनी उत्पत्ति अने तेनो नाश शी रीते थाय ? ए विगेरेनो विस्तारथी उपदेश आप्यो छे. राग, द्वेष अने मोहनो नाश करवाना उपाय बतावतां दुग्धादिक विकृतिना त्यागपूर्वक अल्पाहार करवानो उपदेश आप्यो छे. स्त्रीसंगथी थता दोष अने ते वर्जवाथी थता गुण देखाड्या छे, इंद्रियोना विषयोनो त्याग बतावबा माटे पांचे विषयोनुं पृथक् पृथक् स्वरूप अने तेथी थता दोषो विस्तारथी आप्या छे. आ विषयना उपदेशमां राग, द्वेष, मोह अने कषायनुं स्वरूप

अने तेथी थता दोषो बताव्या छे. छेवट आ सर्व प्रमादनां स्थानोथी रहित थयेलो जीव मोक्षने पामे छे. एम कही अध्ययननी समाप्ति करी छे.

अध्ययन ३३ पानुं ३१०—प्रमाद सेववाथी कर्मबंध थाय छे, तेथी आ कर्मप्रकृति नामना अध्ययनमां कर्मनुं स्वरूप बताव्युं छे. तेमां प्रथम ज्ञानावरणीयादिक आठ कर्म अने ते दरेकनी उत्तरप्रकृति प्रभेद सहित कही छे. पछी कर्मना प्रदेशाग्र, क्षेत्र, काळ अने भाव विस्तारथी वर्णव्या छे.

अध्ययन ३४ पानुं ३१६—कर्मनी स्थिति लेश्याने आधीन होवाथी आ अध्ययनमां लेश्यानुं स्वरूप कह्युं छे. तेमां प्रथम लेश्यानां नाम कही पछी अनुक्रमे तेना वर्ण, रस, गंध, स्पर्श, परिणाम, लक्षण, स्थान, स्थिति, गति अने आयुष्य बताव्यां छे. तेमां चारे गतिना जीवोने आश्री लेश्यानी स्थिति विस्तारथी कही छे.

अध्ययन ३५ पानुं ३२८—शुभ लेश्या गुणवान साधुने ज होइ शके छे तेथी आ अनगारमार्गगति नामना अध्ययनमां साधुना गुणो बताव्या छे. तेमां प्रथम पंच महाव्रतो पाळवानुं कह्युं छे. पछी कामरागने जागृत करनार मनोहर उपाश्रयमां रहेवानो निषेध कर्यो छे, अने स्मशान तथा शून्यगृह जेवा स्थानमां रहेवानुं कह्युं छे. घर कराववा विगेरे कार्यमां त्रस अने स्थावर जीवोनी हिंसा होवाथी बिलकुल प्रवृत्ति करवी नहीं. जीवहिंसाना कारणथी ज पचन–पाचन क्रियामां, अग्नि सळगाववामां अने क्रय–विक्रय करवामां नहीं प्रवर्ती शुद्ध भिक्षाचर्याथी ज निर्वाह करवो, गारवनी वांछानो त्याग करी शुक्लध्यानमां ज रहेवुं, विगेरे उपदेश आप्यो छे.

अध्ययन ३६ पानुं ३३३—साधुगुण सेववामां जीवाजीवनुं स्वरूप जाणवुं आवश्यक छे, तेथी आ जीवाजीवविभक्ति नामना

अध्ययनमां जीव अने अजीव एवा बे विभाग बतावतां प्रथम लोक अने अलोक नामना बे विभाग बताव्या छे. पछी अजीवनी द्रव्य क्षेत्र, काळ अने भावथी प्ररूपणा करी छे. तेमां द्रव्यथी अजीवनी प्ररूपणा करतां रूपी अजीव द्रव्यना चार प्रकार अने अरूपी अजीव द्रव्यना दश प्रकार सविस्तर बताव्या छे. तथा भावथी प्ररूपणा करतां स्कंध अने परमाणुना वर्ण, गंध, रस, स्पर्श अने संस्थान ए पांच प्रकारना परिणाम प्रभेद सहित कह्या छे. त्यारपछी जीवनी प्ररूपणा करी छे. तेमां प्रथम संसारी अने सिद्ध एम जीवना बे प्रकार कही पछी सिद्धना पंदर भेद, तेमनी अवगाहना, क्षेत्र, तेमने रहेवानुं स्थान, सिद्धशिलानुं स्वरूप, सिद्धोनी अवगाहना विगेरे बताव्युं छे. पछी संसारी जीवनुं स्वरूप कहेतां तेमना त्रस अने स्थावर एम बे भेद बताव्या छे. पछी सूक्ष्म अने बादर, तेमज पर्याप्त अने अपर्याप्त पृथ्वीकाय, अप्काय अने वनस्पति-काय ए त्रण भेद स्थावरना बतावी तेमना पण भेद प्रभेद विगेरे बताव्या छे. तेमां ते दरेकनी द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावथी प्ररूपणा करी छे. त्यारपछी तेजस्काय, वायुकाय (गतित्रस) अने उदार एटले स्थूळ एम त्रण प्रकारना त्रस बताव्या छे. तेउवाउना पण सूक्ष्म बादर, पर्याप्त अने अपर्याप्त भेदो बतावी तेमना पण भेद, प्रभेद बतावतां द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भावथी प्ररूपणा करी छे. ते प्रसंगे तेमनुं दरेकनुं आयुष्य, कायस्थिति, अंतर अने वर्णादिक पृथक् पृथक् स्वरूप बताव्युं छे. पछी द्वींद्रिय विगेरे उदार त्रसकाय सूक्ष्म नहीं होवाथी तेमना पर्याप्त अने अपर्याप्त ए बे ज भेद बताव्या छे. तेमां द्वींद्रिय, त्रींद्रिय अने चतुरिंद्रियनुं आयुष्य, स्थिति, अंतर विगेरे बताव्युं छे. पंचेंद्रियनी प्ररूपणामां नारकी तिर्यंच मनुष्य अने देव ए चारेना भेद, प्रभेद, आयुष्य, कायस्थिति अने वर्णादिक पृथक् पृथक् बताव्युं छे. आ सर्व जीवाजीवनुं स्वरूप बतावी उपदेश आप्यो छे के—आ स्वरूप जाणीने मुनिए संयमने विषे रति करवी, अने घणा वर्षो सुधी चारित्र पर्यायनुं पालन करी छेवट संलेखना करवी." इत्यादिक उपदेश आपी प्रसंगने लीधे संलेखनानो विधि बताव्यो छे, त्यारपछी कंदर्पादिक पांच अशुभ

भावनानो त्याग करवा कह्युं छे, छेवट आ छत्रीश अध्ययननी प्ररूपणा करी श्रीवर्धमान स्वामी मोक्षे गया एम कही आ ग्रंथनी समाप्ति करी छे.

आ सूत्रमां चारित्रधर्म संबंधी घणां तत्त्वो बताव्यां छे, पण देशविरति धर्म बताव्यो नथी. तेथी आ सूत्र चारित्रवान मुनिने ज भणवा गणवा योग्य छे. आ सूत्रनो समावेश कथानुयोगमां होवाथी रसिक कथाओ सहित धर्मोपदेश आप्यो छे. टीकाकार महाराजे पण प्रसंगोपात रसिक कथाओ सहेली भाषामां आपी छे, तेथी वांचनार तथा सांभळनारने आनंद साथे धर्मनुं ज्ञान आपे एवुं आ सूत्र छे.

आ सूत्रना अमे बे विभाग कर्या छे. पहेलामां १५ अने बीजामां २१ अध्ययन आपेला छे. बीजो विभाग पहेला करतां मोटो थयो छे. छेवटे आ सूत्रनां छत्रीश अध्ययनो उपर छत्रीश सज्झायो छे, ते पण आपी छे. ते दरेके कंठे करवा जेवी छे त्यारपछी मदद करनारनां नाम अमर राखी आ विभाग संपूर्ण कर्यो छे. आशा छे के उत्तम जीवो आनुं पठन पाठनादिक करी आ सूत्र छपाववानो अमारो प्रयास सफळ करशे अने आवा ज्ञानोद्धारना कार्यमां व्यय करीने चंचळ लक्ष्मीनुं फळ ग्रहण करशे.

बंने विभागना प्रुफो सुधारवामां यथाशक्ति प्रयास कर्यो छे छतां दृष्टिदोष के मतिमांद्यादिकना कारणथी कांइ स्खलना जोवामां आवे, ते शिष्टजनोए सुधारीने वांचवा अने अमने लखी जणाववा नम्र विज्ञप्ति छे. इति शम्.

संवत १९८१ दीपोत्सवी.
श्री महावीर निर्वाण कल्याणक.

श्री जैन धर्म प्रसारक सभा.
भावनगर.

बंने विभागमां आवेली कथाओनी अनुक्रमणिका.

अध्ययन १ लुं. पानुं.

१ अविनीत कूलवालक मुनिनी कथा. २
२ चंडरुद्राचार्यनी कथा. ७
३ क्रोधने निष्फळ करवा उपर कुलपुत्रनी कथा. ८
४ प्रियाप्रिय उपर रागद्वेष न करवा विषे त्रण मांत्रिकोनी कथा ८
५ आत्मदमन उपर बे चोरनायकनी कथा. ९
६ आत्मदमन उपर सेचनक हाथीनी कथा. ११
७ गुरुनो उपघात करनार कुशिष्यनी कथा. १८

अध्ययन २ जुं.

८ क्षुधा परीषह उपर पिता पुत्र साधुनी कथा. २५
९ तृषा परीषह उपर धनशर्मा साधुनी कथा. २६
१० शीत परीषह उपर भद्रबाहुस्वामीना शिष्योनी कथा २७
११ उष्ण परीषह उपर अरहन्नक मुनिनी कथा. २८
१२ दंशमशक परीषह उपर श्रमणभद्र मुनिनी कथा. ३०
१३ अचेल परिषह उपर सोमदेव ऋषिनी कथा. ३१
१४ अरति परीषह उपर पुरोहितपुत्र अने राजपुत्रनी कथा ३४
१५ स्त्री परीषह उपर श्रीस्थूळभद्रनी कथा ३८
१६ चर्या परीषह उपर संगमाचार्यनी कथा ४२
१७ नैषेधिकी परीषह उपर कुरुदत्त साधुनी कथा. ४४
१८ शय्या परीषह उपर सोमदत्त अने सोमदेव मुनिनी कथा.... ४५
१९ क्रोध उपर क्षपक साधुनी कथा ४६
२० आक्रोश परीषह उपर अर्जुनमाळी मुनिनी कथा. ... ४७
२१ वध परीषह उपर स्कंदकाचार्यना शिष्योनी कथा. ४९

२२ यांचा परीषह उपर बळभद्र मुनिनी कथा. ५०
२३ अलाभ परीषह उपर ढंढणकुमार मुनिनी कथा. ५२
२४ रोग परीषह उपर काळवैशिकनी कथा. ५३
२५ तृणस्पर्श परीषह उपर भद्रर्षिनी कथा. ५५
२६ मळ परीषह उपर सुनंद श्रावकनी कथा.... .... ५६
२७ सत्कार परीषह उपर साधु तथा श्रावकनी कथा. ५७
२८ प्रज्ञा परीषह उपर सागराचार्यनी कथा. ५८
२९ अज्ञान परिषह उपर आभीर साधुनी कथा. ६१
३० ज्ञान परीषह उपर स्थूळभद्रनी कथा. ६२
३१ दर्शन परीषह उपर आर्य आषाढ सूरिनी कथा. ६३

अध्ययन ३ जुं.

३२ मनुष्य भवनी दुर्लभता उपर पहेलुं चोल्लक दृष्टांत. ६९
३३ ,, बीजुं पाशक दृष्टांत.... .... ७०
३४ ,, त्रीजुं धान्य दृष्टांत.... .... ७४
३५ मनुष्यभवनी दुर्लभता उपर चोथुं द्यूत दृष्टांत. ७४
३६ ,, पांचमुं रत्न दृष्टांत ७९
३७ ,, छठुं स्वप्न दृष्टांत. ७९
३८ ,, सातमुं चक्र (राधावेध) दृष्टांत. ८१
३९ ,, आठमुं चर्मदृष्टांत. ८२
४० ,, नवमुं युग (धोंसरानुं) दृष्टांत.... .... ८३
४१ ,, दशमुं परमाणु दृष्टांत. ८४
४२ श्रद्धानी दुर्लभता उपर पहेला निन्हव जमालिनी कथा. ८६
४३ ,, बीजा निन्हव तिष्यगुप्तनी कथा... .... ८८
४४ ,, त्रीजा निन्हव अव्यक्तवादीनी कथा. ९०
४५ ,, चोथा निन्हव अश्वमित्रनी कथा. ९१
४६ ,, पांचमा निन्हव गंगदेवनी कथा.... .... ९२
४७ ,, छठ्ठा निन्हव रोहगुप्तनी कथा. ९३
४८ ,, सातमा निन्हव गोष्ठामाहिलनी कथा. ९५

४९ श्रद्धानी दुर्लभता उपर आठमा निन्हव दिगंबर शिवभूतिनी कथा. ९८

अध्ययन ४ थुं.

५० जरावस्था पामेलाने कांइपण शरण नथी ते उपर अहनमल्लनी कथा १०४

५१ द्रव्यना लोभ उपर चोरनी कथा १०६

५२ पापकर्मनी प्रशंसा उपर चोरनी कथा १०७

५३ बंधुमोहना त्याग उपर आभीरीवंचक श्रेष्ठीनी कथा....१०८

५४ धन आ भवमां रक्षणकर्ता नथी ते उपर पुरोहितपुत्रनी कथा१०९

५५ नष्टदीपक धातुवादीनी कथा ११०

५६ द्रव्यथी जागता उपर अगडदत्त राजपुत्रनी कथा ११०

५७ लाभ थाय त्यांसुधी देह धारण करवा उपर मंडिक चोरनी कथा ११८

५८ शिक्षित अने अशिक्षित एवा बे अश्वोनी कथा १२०

५९ शीघ्रपणे विवेक पामी न शकाय ते उपर ब्राह्मणीनी कथा. १२१

६० प्रमाद अने अप्रमाद उपर वणिकनी बे स्त्रीओनी कथा.१२२

अध्ययन ५ मुं.

६१ अर्थदंड अने अनर्थदंड उपर पशुपाळनी कथा १२६

६२ दुःशीळीया उपर द्रमकनी कथा १३१

अध्ययन ६ ठुं.

६३ विद्या रहित द्रमक पुरुषनी कथा १३४

अध्ययन ७ मुं.

६४ घेटानुं दृष्टांत १४०

६५ कागिणी तथा आम्रनुं दृष्टांत १४३

६६ त्रण वणिकपुत्रनी कथा १४९

अध्ययन ८ मुं.

६७ कपिलमुनिनी कथा १५१

अध्ययन ९ मुं.

६८ प्रत्येकबुद्ध करकंडुनी कथा १६०

६९ बीजा प्रत्येकबुद्ध द्विमुखराजानी कथा १६५
७० त्रीजा प्रत्येकबुद्ध नमिराजानी कथा १६८
७१ चोथा प्रत्येकबुद्ध नग्गतिराजानी कथा १९०

अध्ययन १० मुं.

७२ गौतमस्वामीनी कथा १९८

अध्ययन १२ मुं.

७३ हरिकेशबल मुनिनी कथा २२६

अध्ययन १३ मुं.

७४ चित्र संभूत मुनिनी कथा २४३
७५ अलंकारोने भाररूप कहेवा माटे श्रेष्ठीपुत्रनी वहुनुं दृष्टांत २६७

अध्ययन १४ मुं.

७६ इषुकार राजा विगेरे छ जीवनी कथा २७०

बीजो विभाग—अध्ययन १८.

७७ संयतमुनि अने क्षत्रियमुनिनी कथामां अंतर्गत भरत चक्रीनी कथा २७
७८ सगर चक्रवर्तीनी कथा २८
७९ मघवा चक्रवर्तीनी कथा ३२
८० सनत्कुमार चक्रीनी कथा ३९
*८१ श्री शांतिनाथनी कथा ४३
८२ श्री कुंथुनाथनी कथा ६५
८३ श्री अरनाथनी कथा ६६
८४ महापद्म चक्रीनी कथा ६७
८५ हरिषेण चक्रीनी कथा ७४
८६ जयचक्रीनी कथा ७९
८७ दशार्णभद्र राजानी कथा ७९
८८ उदायन राजानी कथा ८९

८९ काशीराजनी कथा ६०
९० विजयराजानी कथा ६०
९१ महाबळ राजानी कथा ६१

अध्ययन १९ मुं.

९२ मृगापुत्रनी कथा. ९४

अध्ययन २० मुं.

९३ अनाथ मुनिनी कथा. ११३

अध्ययन २१ मुं.

९४ समुद्रपाळनी कथा. १२६

अध्ययन २२ मुं

९५ श्रीनेमिनाथनी कथा. १३३

अध्ययन २३ मुं.

९६ श्री पार्श्वनाथनी कथा. १५९
९७ श्री केशीकुमार अने गौतमस्वामीना प्रश्नोत्तर १७२

अध्ययन २५ मुं.

९८ जयघोष तथा विजयघोषनी कथा. १९१

अध्ययन २७ मुं.

९९ गर्ग आचार्यनी कथा. २१९

अध्ययन ११-१४-१६-१७-२४-२६-२८-२९-३०-३१-३२-३३-३४-३५-३६ आ पंदर अध्ययनमां कथा भाग बिलकुल नथी.

१५) भाइ रामभाइ भीखाभाइ.
१०) भाइ सोमचंद अमृतलाल अमदावाद.
१०) शा. जेचंद छगन भावनगर.
५) शा. मोनजी काळीदास भावनगर.
४) सुखलाल काळीदास लींबडी.
९) चाणसमाना एक श्रावकना.

भावनगर.

१०६) बाइ दीवाळी तथा मोतीबाइ तथा हेमबाइ—वोरा हठीसंग झवेरचंदनी विधवा.
६२) बाइ संतोक—नरोत्तमदास भाणजीनी धर्मपत्नी.
९१) बाइ चंदन—दामाभाइ त्रिभोवनदासनी धर्मपत्नी.
५१) बाइ चंदन—कापडीया मोतीचंद गिरधरनी धर्मपत्नी.
४०) बाइ प्रेमकोर हस्थु पोताना पुत्र लीलाधर व्रजलालना स्मरणार्थे.
५०) बाइ समरथ—हरगोविंद डाह्याभाइनी धर्मपत्नी.
५१) साध्वी उत्तमश्रीना उपदेशथी शाह खाते.
४०) श्राविका समुदायना नवा उपाश्रयना ज्ञानपंचमीना आव्या ते.
४०) वेन समु—हुकमचंद उकानी पुत्री.
३०) बाइ चकु—दामोदर नेमचंदनी धर्मपत्नी.
२४) बाइ कुंवर—अमरचंद जसराजनी विधवा.
२९) बाइ संतोक तथा सांकळी—मोतीभाइ जूठानी धर्मपत्नी.
२४) बाइ अंबा—रतनजी वीरजीनी विधवा.
२५) बाइ जडाव—अमृतलाल पुरुषोत्तमनी विधवा.
२५) बाइ माणेक—आणंदजी पुरुषोत्तमनी विधवा.
२५) वेन चंदन—शेठ रायचंद हीराचंदनी पुत्री.
२४) बाइ मोंघी—जेठालाल त्रिकमजीनी विधवा.
२५) दानशाळानी श्राविकाना ज्ञानखाताना.
२५) बाइ सांकळी—झवेर पीतांबरनी विधवा.
२९) बाइ समरथ.

आ ग्रंथ छपाववामां सहायकोनां नाम.

४३५) भावनगरनी श्राविका समुदायना अक्षयनिधि तप, स्वर्ग-स्वस्तिक तप अने जिनतपना.

४००) पूज्य गुरुणीजी श्री हेतश्रीजी तथा उत्तमश्रीजीना उपदेशथी कीकाभाइ प्रेमचंदभाइए आप्या ते. सुरत.

३००) पूज्य गुरुणीजी श्री शिवश्रीजी तथा तिलकश्रीजीना उपदेशथी बेन कमु—चुनीभाइ डाह्याभाइनी पुत्रीए आप्या ते. सुरत.

२००) पूज्य गुरुणीजी श्री शिवश्रीजी तथा तिलकश्रीजीना उपदेशथी ज्ञान खाताना.

१५१) तपस्वी प्रमोदविजयजीना उपदेशथी मूळजी हंसराजनी कंपनी खाते. भावनगर.

१५१) शेठ नागरदास पुरुषोत्तम. राणपुर.

१०१) तपस्वी प्रमोदविजयजीना उपदेशथी शा. नरोत्तमदास भाणजी. भावनगर.

१०१) तपस्वी प्रमोदविजयजीना उपदेशथी हरिचंदभाइ मीठा. ,,

१०१) तपस्वी प्रमोदविजयजीना उपदेशथी उत्तमशी माणेकचंद. ,,

१००) शा. हरिलाल जूठाभाइ. ध्रांगध्रा.

५०) तपस्वी प्रमोदविजयजीना उप. मणिलाल हेमचंद—भावनगर.

५०) भाइ परमाणंद कुंवरजीभाइ पोतानी मातुश्री बाइ रूपाळीना स्मरणार्थे. भावनगर.

५१) तपस्वी प्रमोदविजयजीना उप. भोगीलाल लल्लुभाइ पटणी.

५०) शा. अमृतलाल मोकमचंद अमदावाद. [भावनगर.

२५) पटणी चुनीलाल उजमशी भावनगर.

२५) शेठ छोटालाल आणंदजी भावनगर.

२५) बाइ पुरी—वोरा खोडीदास रणछोडनी विधवा.
२५) बाइ मोंघी—हीरालाल अमृतलालनी धर्मपत्नी.
२५) बाइ सूरज—लल्लुभाइ आणंदजीनी विधवा.
२५) बाइ दीवाळी—माणेकचंद जेचंदनी धर्मपत्नी.
२५) बाइ मणि—वर्धमान मनजीनी धर्मपत्नी.
२१) बाइ हेम—झवेर भाइचंदनी विधवा.
२१) बाइ मणि—पुरुषोत्तमनी दीकरी.
२०) बाइ वेणी—प्रेमचंद त्रीभोवनदासनी विधवा.
२०) बाइ राम—हठीसंग ओघवजीनी विधवा.
२०) बाइ सूरज—नेमचंद गिरधरनी धर्मपत्नी.
२०) बाइ गुलाब—हरगोविंद वेलचंदनी विधवा.
१५) बाइ हरख—गिरधर गोविंदजीनी विधवा.
१५) बाइ पोती—सोमचंद ओघवजीनी विधवा.
१५) बाइ उजम—गीगाभाइ भाणाभाइनी विधवा.

१५) बाइ चंचळ—बाबु मगनभाइनी धर्मपत्नी.
१५) बाइ मोंघी—जमनादास प्रेमजीनी दीकरी.
१५) बाइ पातळी—शेठ नरशी मूळजीनी धर्मपत्नी.
१५) बाइ कस्तुर—फतेहचंद झवेरभाइनी धर्मपत्नी.
१५) बाइ जडी—लल्लु त्रिकमनी विधवा.
१५) बाइ रंभा—जूठाभाइ सांकळचंदनी पुत्री.
१४) बाइ धोळी—वकील परभुदास मोतीचंदनी विधवा.
१२) बाइ देवकुर—माणेकचंद गोरधननी धर्मपत्नी.
११) बाइ जडी—त्रिभुवन हरखचंदनी धर्मपत्नी.
१०) बाइ हेम—लक्ष्मीचंद दयाळनी विधवा.
१०) बाइ मणि—नानचंद हरिचंदनी धर्मपत्नी.
१०) बाइ संतोक—मूळजी हंसराजनी धर्मपत्नी.
१०) भाइ भूपतभाइ—प्रेमचंद त्रिभोवनदासना पुत्र.
१०) बेन गुणी—त्रिभोवनदास भाणजीनी पुत्री.

१०) बाइ कडवी—चुनीलाल मोनजीनी विधवा.
१०) बाइ हरी—जमनादास डुंगरशीनी विधवा.
१०) बाइ अजवाळी—वजपाळ करशननी पुत्री.
१०) बाइ हेम—हीरालाल लक्ष्मीचंदनी धर्मपत्नी.
१०) बाइ नाथी—वोरा गोरधन हरखचंदनी धर्मपत्नी.
१०) बाइ हरकोर—मूळचंद शामजीनी माता.
१०) बाइ मंछा—झवेरचंद जूठाभाइनी धर्मपत्नी.
१०) बाइ मणि—नानचंद खोडीदासनी धर्मपत्नी.
१०) बाइ अजवाळी—अमृतलाल भीखाभाइनी विधवा.
१०) बाइ रतन—भीखा कुंवरजीनी विधवा.
१०) बाइ सांकळी—प्रभुदास त्रिकमनी विधवा.
१०) बाइ हरकोर—भजलाल परमानंदनी विधवा.
१०) बाइ अनोप—उत्तमचंद गिरधरनी विधवा.
१०॥ बाइ मोती—तलकचंद गीगाभाइनी धर्मपत्नी.

१०) बाइ कीली—गोपाळजी गीगाभाइनी धर्मपत्नी.
१०) बाइ कस्तुर—अमरचंद हरजीवननी धर्मपत्नी.
१०) बाइ रंभा—
१०) बाइ माकु—झवेरचंद मगनलालनी धर्मपत्नी.
१०) बाइ दीवाळी—खुबचंद डाह्यानी धर्मपत्नी.
१०) बाइ नवल—मूळचंद काळानी विधवा.
१०) बाइ सांकळी तथा मणि.
५) बाइ झरमर—पटणी चुनिलाल उजमशीनी विधवा.
५। बाइ हरकोर—मानचंद वेलचंदनी विधवा.
५) बाइ हेम—गिरधर हीराचंदनी विधवा.
५। बाइ जडी—न्यालचंद लक्ष्मीचंदनी धर्मपत्नी.
५) बेन अया—प्रेमचंद त्रिभुवनदासनी पुत्री.
५) बेन रमा—प्रेमचंद त्रीभुवनदासनी पुत्री.
५) बाइ अमृत—अमरचंद रामचंदनी धर्मपत्नी.

५) बाइ मांकु—रामचंद पुरुषोत्तमनी विधवा.

५) बाइ अजवाळी—डाह्यालाल हरिचंदनी धर्मपत्नी.

१। बाइ ओतम—हठीसंग आणंदजीनी पुत्री.

१) बाइ नंदु—संघवी दामोदर नेमचंदनी धर्मपत्नी.

५) बाइ हरकोर—भगवान करशननी विधवा.

१) बाइ दीवाळी—भीलोटा वकोर शामजीनी विधवा.

१) बाइ हरकोर—मगनलाल हंसराजनी धर्मपत्नी.

५) बाइ चंचळ—जीवराज फतेचंदनी विधवा.

१) बाइ चंदन—जसराज वेलचंदनी धर्मपत्नी.

५) बाइ मणि—वेलचंद धनजीनी धर्मपत्नी.

५) बाइ मणि—शेठ कस्तुर दीपचंदनी पुत्री.

५) बाइ हरकोर—मूळचंद करशननी धर्मपत्नी.

५) बाइ समरथ—हरजीवन करशननी धर्मपत्नी.

१) बाइ गोमती—वीरचंद हेमचंदनी विधवा.

१) बाइ मणि—गोपाळजी डाह्यानी विधवा.

५) बाइ रतन—नानचंद कुंवरजीनी धर्मपत्नी.

५) बाइ उजम—प्रभुभाइ रामचंदनी धर्मपत्नी.

५) बाइ पार्वती—मगनलाल बेचरनी विधवा.

१) बाइ कंकु—मानचंद मोतीचंदनी विधवा.

१) बाइ पुरी—मगनलाल कुंवरजीनी विधवा.

५) बाइ हेम—व्होरा दामोदर ताराचंदनी धर्मपत्नी.

५) बाइ चंदन—गोरधन त्रिभुवननी धर्मपत्नी.

५) बाइ सांकळी—जगजीवन मोतीचंदनी धर्मपत्नी.

५) बाइ चंचळ—विठ्ठलदास जीवराजनी धर्मपत्नी.

१) बाइ पुनी—केशवलाल लल्लुनी धर्मपत्नी.

५) बाइ कस्तुर—प्रभुदास दीपचंदनी धर्मपत्नी.

१) बाइ मोती—आणंदजी लश्करनी विधवा.

५) बाइ संतोक—वेलचंद दलीचंदनी विधवा.

१) बाइ दीवाळी—कपाशी कीलाभाइ गांडाभाइनी विधवा.
५) बाइ मोंघी—रामचंद अमरचंदनी विधवा.
१। बाइ दीवाळी—मोतीभाइ गगलनी विधवा.
१, बाइ अनोप—भगवान करमचंदनी धर्मपत्नी.
१) बाइ धंबा—मनोर माधानी विधवा.
१) बाइ रळीयात—दुलेभ मूळचंदनी धर्मपत्नी.
१) बाइ संतोक—नरोत्तम शामजीनी धर्मपत्नी.
५) बाइ अचरत—मगनलाल छगनलालनी विधवा.
५) बाइ कस्तुर—कानजी मोतीनी धर्मपत्नी.
१) बाइ रंभा—भगवान गोपाळजीनी धर्मपत्नी.
५) बाइ शशी—पुरुषोत्तम जगजीवननी धर्मपत्नी.
१) बाइ मोंघी—नथु खुशालनी विधवा.
५) बाइ गोमती—हरखचंद वालजीनी विधवा.
१) बाइ कमळा—देवचंद भाइचंदनी धर्मपत्नी

५) बाइ हेम—जगजीवन शवचंदनी विधवा.
५) बाइ माकु—मगन काळीदासनी धर्मपत्नी.
१) बाइ रुपाळी—जुठाभाइ त्रिभुवननी धर्मपत्नी.
१) बाइ लखमी—गांधी शंभु गोकळनी विधवा.
५) बाइ रुखी—खुबचंद वीरचंदनी धर्मपत्नी.
५) बाइ टबल—भाइचंदभाइ दामोदरनी विधवा.
२) बाइ संतोक—मनसुख कचराभाइनी विधवा.
१। बाइ संतोक—माणेकचंद खुशालनी विधवा.
५। बाइ भद्री—छोटालाल ह्राउनी विधवा.
१) बाइ संतोक—ओधवजी तेजपाळनी धर्मपत्नी.
२। बाइ वाली—फुलचंद मीठानी धर्मपत्नी.
५) बाइ लेरी—गोपाळजी जूठाभाइनी विधवा.
५। बाइ झमक—पुरुषोत्तम माणेकचंदनी विधवा.
५) बाइ हरख—छगनभाइ देवचंदनी विधवा.

४) बाइ दीवाळी—भाइचंद जसराजनी विधवा.

५) बाइ जडी—त्रिभोवन हठीसंगनी विधवा.

४) बाइ फीजी--हरजीवन [illegible]चंदनी विधवा.

५) बाइ कंकु—वोरा मानचंद करशननी विधवा.

५) बाइ अजवाळी—मगन सुंदरजीनी विधवा.

४) बाइ हरकोर—वोरा चुनीलाल सांकळचंदनी धर्मपत्नी.

९) बाइ संतोक—मोहन ताराचंदनी विधवा.

४) बाइ गोमती—शोभण भाणजीनी विधवा.

४) बेन जया—चुनीलाल जूठाभाइनी पुत्री.

९) बाइ चंचळ—फुलचंद वखतचंदनी धर्मपत्नी.

५) बाइ हरकोर—मूळचंद चतुर्भुजनी धर्मपत्नी.

४) बाइ जसी.

९) बाइ ओतम—प्रेमचंद गांडानी धर्मपत्नी.

गोघा.

१५१) साध्वी कंचनश्रीजीना उपदेशथी बाइ रामबा—करमचंद वीरचंदनी विधवा.

५०) बाइ चंदन—छोटाभाइ जीवनभाइनी पुत्री.

२५) बाइ अजवाळी—केशवलाल रतनजीनी विधवा.

२९) बाइ पार्वती—कुंवरजी नथुनी धर्मपत्नी.

२४) बाइ उजम—जीवन जेचंदनी विधवा.

१०) बाइ संतोक—नरोत्तम हकुनी धर्मपत्नी.

१०) बाइ मणि—वीठ्ठल मोतीनी विधवा.

१०) बाइ उजम—फुलचंद फीकानी विधवा.

९) बाइ हरकोर—मानचंद गांडाना दीकरानी वहु.

९) बाइ पार्वती—धर्मचंद मगनलालनी धर्मपत्नी.

९) बाइ मणि—धर्मचंद मगनलालनी धर्मपत्नी.

५) बाइ वीजी—वीठ्ठल धर्मचंदनी धर्मपत्नी.

५) बाइ भीवी—परमानंद लालचंदनी विधवा.

६) बाइ ओतम—शामजी मूळचंदनी विधवा.

६) बाइ नंदु—सोनी हीराचंद छगननी विधवा.

६) बाइ दीवाळी—जीवराम कीकानी विधवा.

६) बाइ अंबा—उका पुरुषोत्तमनी धर्मपत्नी—कोळीयाक.

६) बाइ संतोक—गुलाबचंद भाइचंदनी धर्मपत्नी—सहसलीपुं.

९) बाइ फडवी—जीवन गोरधननी धर्मपत्नी.

५) बाइ मणि—वीरचंदभाइनी पुत्री.

अमदावाद.

५१) साध्वी चंपाश्रीना उपदेशथी ज्ञानखाताना.

६०) बाइ जासुद—शेठ चमनलाल भगुभाइनी विधवा चंपाश्रीना उ०

३५) बाइ सोमी—दोलत नगीनदासनी धर्मपत्नी आणंदश्रीना उ०

३५) साध्वीजी मणिश्रीना उपदेशथी ज्ञानखातानो.

३०) बाइ पुंजी—फुदी. मोहकम लल्लुनी विधवा.

३०) बाइ चंपा—साकळचंद काळाभाइनी धर्मपत्नी.

२६) बाइ चंचळ—चुनीलाल दीपचंदनी विधवा.

२६) बाइ मेना—मणिलाल सांकळचंदनी विधवा.

२६) बाइ चंदन—सांकळा वखतचंदनी पुत्री.

२५) बाइ समरथ—मनसुखराम नानचंदनी धर्मपत्नी.

२६) बाइ मोती—मोहनभाइ मनसुखरामनी धर्मपत्नी.

२५) बाइ इच्छा—आत्माराम नाथाभाइनी विधवा चंपाश्रीना उ०

२५) बाइ हरकोर—वाडीलालनी विधवा.

२०) बेन गंगा—भोगीलाल मोहनलालनी विधवा.

१८) बाइ आधार—मोतीलाल काळीदासनी माताजी.

१६) बाइ हरकोर—वाडीलाल मोहकमचंदनी धर्मपत्नी.

१९) बाइ जासुद—चुनीलाल गोकळनी धर्मपत्नी.

१२) बाइ चंपा—प्रेमचंद केवळभाइनी धर्मपत्नी.

१०) बाइ सांकळी—अमृतलाल धर्मचंदनी विधवा.

१०) बाइ पुतळी–बालाभाइ जेचंदनी विधवा.
१०) बाइ रतन–मगन घेलानी धर्मपत्नी.
१०) बाइ मणि–मगन घेलानी धर्मपत्नी.
१०) बाइ चंपा–सुरचंद दोलतनी पुत्री.
१०) बाइ न्यालकोर–वाडीलाल नगीनदासनी धर्मपत्नी.
१०) बाइ सुभी–अमृतलाल मोहकमचंदनी धर्मपत्नी.
१०) बाइ जीवी–वाडीलाल काळीदासनी विधवा.
१०) बाइ जासुद–साराभाइ हठीसंगनी धर्मपत्नी.
१०) बाइ रुखी–छोटालाल चुनीलालनी. धर्मपत्नी.
५) बाइ चंदन–नेमचंद नगीननी माता.
५) बाइ मणि– जेचंदभाइ मनसुखनी धर्मपत्नी.
९) बाइ चंद्रा–रतीलाल त्रिकमनी विधवा.
५) बाइ जासुद–सकळचंद मगुभाइनी विधवा.
९) बाइ घेली–चुनीलाल अमीचंदनी विधवा.

५) बाइ चंचळ–मोहनलाल हरिलालनी विधवा.
६) बाइ अंबा–तनमन काळीदासनी धर्मपत्नी.
९) बाइ माणकोर–तनमन काळीदासनी धर्मपत्नी.
५) बाइ शशी–मोहन तनमनभाइनी धर्मपत्नी.
६) बाइ जसी–नेमचंद तनमनभाइनी धर्मपत्नी.
६) बाइ चंपा–भोगीलाल तनमनभाइनी धर्मपत्नी.
६) बाइ सुरज–त्रिकमभाइ नागरदासनी माता.
६) बाइ हरकोर–चमनभाइ लल्लुनी माता.
९) बाइ मणि–डाह्याभाइ दोलतनी विधवा.
६) बाइ चंदन– छोटालाल चकुभाइनी विधवा.
९) बाइ चंचळ–वाडीलाल गुलाबचंदनी विधवा.
९) बाइ जसी–सांकळचंद लल्लुभाइनी धर्मपत्नी.
१५१) बाइ केसर–शा. नगीनदास करमचंदनी धर्मपत्नी–पाटण
९१) पूज्य गुरुणीजी श्री शिवश्रीजीना तथा तिलकश्रीजीना उपदेशथी बेन रतन–कल्याणचंद सौभाग्यचंदनी पुत्री–सुरत.

५१) साध्वी तिलकश्रीजीना उपदेशथी बाइ मणिकोर—शेठ.
कल्याणचंद सौभाग्यचंदनी पुत्री.—सुरत.
५०) बाइ गटाबीबी—लक्ष्मीचंद हनुमानसंगनी विधवा—कलकत्ता.
११) बाइ गुलाब—रामचंद जेठाभाइनी विधवा. ,,
२५) बाइ दीवाळी—अमरचंद कानजीनी विधवा—मांगरोळ.
४०) बाइ समरथ—जेचंदभाइ माणेकचंदनी धर्मपत्नी—लींबडी.
३१॥ साध्वी तिलकश्रीजीना उपदेशथी रानपुरना ज्ञानखाता.
१५) बाइ दीवाळी—ताराचंद नथुभाइनी धर्मपत्नी—वढवाण.
१०) बाइ मणि—अमरशी ताराचंदनी विधवा. ,,
२५) साध्वी चंपाश्रीना उपदेशथी बाइ चंदन—म्हेसाणा.
५) बाइ संतोक—मूळजी लेंगारनी पुत्री—कच्छ मांडवी.
२५) बाइ मोंघी—लक्ष्मीचंद भगवाननी धर्मपत्नी—बोटाद.
१०) बाइ मोंघी—नरोत्तम सूरचंदनी विधवा—भोळाद.
१०) बाइ जडाव—खीमचंद जीवननी धर्मपत्नी—पालीताणा.

२५) साध्वी दोलतश्रीजीना उपदेशथी गांडालाल डाह्याभाइ—पाली
१०) बाइ नेमी—लल्लुभाइ पदमशीनी धर्मपत्नी—वका. [ताणा.
५) बाइ मणि—छगनलाल अमरचंदनी धर्मपत्नी—खंभात.
२५) क्षमाश्रीजीना उ०बाइ लक्ष्मी, धरमशी गणनीनी वि०—वीरमगाम
२५) साध्वी आणंदश्रीजीना उपदेशथी ज्ञानखाताना—वांकानेर.
२५ बाइ जेकोर-दोशी लल्लुभाइ जगजीवननी धर्मपत्नी—गोधा.
१००) बाइ मणि—चुनीलाल वीरचंदनी धर्मपत्नी—राधनपुर.
२५) बाइ संतोक— शा. वकोरं उनमशीनी विधवा. ,,
२५) बाइ मणि—हीरालाल वकोरनी धर्मपत्नी. ,,
२५) बाइ रूपाळी—मणिलाल वकोरनी धर्मपत्नी. ,,
२५) बाइ मोंघी—मणिलाल वकोरनी धर्मपत्नी. ,,
२५) बाइ परसन—जेसंगभाइ मोहनलालनी धर्मपत्नी. ,,
१०) बाइ तारा—रामलालनी पुत्री. ,,
५) बाइ समरथ—रामचंद शेठनी विधवा. ,,

श्री उत्तराध्ययनसूत्र भाषांतर.

विभाग बीजो.

अथ ब्रह्मचर्यगुप्ति नामनुं सोळमुं अध्ययन. १६.

पंदरमा अध्ययनमां साधुना गुणो कह्या. ते गुणो तो जे ब्रह्मचर्यमां स्थिर होय तेने ज तत्त्वथी संभवे छे अने ब्रह्मचर्य पण ब्रह्मगुप्तिने जाणवाथी ज पाळी शकाय छे. तेथी आ अध्ययनमां ते ब्रह्मगुप्तिओनुं ज स्वरूप कहे छे. ए संबंधथी आवेला आ अध्ययननुं प्रथम सूत्र आ प्रमाणे—

सुअं मे आउसं तेणं भगवया एवमक्खायं, इह खलु थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेरसमाहिट्ठाणा पन्नत्ता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी सया अप्पमत्ते विहरिज्जा ॥ १ ॥

अर्थ—श्री सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे के—(आउसं) हे आयुष्मान् ! (मे) में (सुयं) सांभळ्युं छे, के (तेणं भगवया) ते एटले ज्ञातकुळरूपी समुद्रने विकास करवामां चंद्र समान भगवान श्री वर्धमान जिनेश्वरे (एवं) आ प्रमाणे (अक्खायं) कह्युं छे. शुं कह्युं छे ? ते ज कहे छे—(इह) आ जिनप्रवचनने विषे (खलु) निश्चे (थेरेहिं भगवंतेहिं) भगवंत एटले पूज्य एवा स्थविर एटले गणधरादिके (दस) दश (बंभचेरसमाहिट्ठाणा) ब्रह्मचर्यनी समाधिनां स्थानो (पण्णत्ता) कह्यां छे. तात्पर्य ए छे के—आ बाबत स्थविरो पोतानी बुद्धिथी कहे छे एम नथी, परंतु भगवान श्री वर्धमानस्वामीए पण आ ज प्रमाणे कह्युं छे ते में सांभळ्युं छे. तेथी आ बाबतमां अनास्था-अश्रद्धा करशि नहीं.

हवे ब्रह्मचर्यनां स्थानो केवां छे ? ते कहे छे-(जे) जे ब्रह्मचर्यनां स्थानोने (भिक्खू) साधु जे ते (सोच्चा) सूत्रथी सांभळीने तथा (निसम्म) अर्थथी धारीने (संजमबहुले) बहुल एटले उत्तरोत्तर स्थाननी प्राप्तिवडे घणो छे संयम जेने एवो थाय छे, तेथी करीने ज (संवरबहुले) घणो छे संवर एटले आश्रवद्वारनो निरोध जेने एवो थाय छे, तेथी करीने ज (समाहिबहुले) घणी छे समाधि एटले मननी स्वस्थता जेने एवो थाय छे, तथा (गुत्ते) मन, वचन अने कायावडे गुप्त थाय छे, तेथी करीने ज (गुत्तिंदिए) गुप्त छे-वश छे इंद्रियो जेनी एवो थाय छे, अने तेथी करीने ज (गुत्तबंभयारी) नव गुप्तिने सेववाथी गुप्त एवा ब्रह्मचर्यनुं आचरण करवाना स्वभाववाळो थइने (सया) सदा (अप्पमत्ते) प्रमाद रहित थयो सतो (विहरिज्जा) विहार करे छे-विचरे छे.

कयरे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेरसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता ? जे भिक्खू सोच्चा निसम्म

संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी सया अप्पमत्ते विहरिज्जा ॥ २ ॥

अर्थ—जंबूस्वामी गुरु महाराज सुधर्मास्वामीने पूछे छे के—हे स्वामी ! (थेरेहिं भगवंतेहिं) स्थविर भगवंतोए (कयरे खलु ते) कया निश्चे ते (दस) दश (बंभचेरसमाहिट्ठाणा) ब्रह्मचर्यनी समाधिनां स्थानो (पण्णत्ता) कहेलां छे ? के (जे) जे स्थानोने (भिक्खू) साधु (सोच्चा) सूत्रथी सांभळीने तथा (निसम्म) अर्थथी अवधारीने (संजमबहुले) घणा संयमवाळो (संवरबहुले) घणा संवरवाळो (समाहिबहुले) घणी समाधिवाळो (गुत्ते) त्रण गुप्तिथी गुप्त (गुत्तिंदिए) इंद्रियोनी गुप्तिवाळो तथा (गुत्तबंभयारी) नव गुप्ति युक्त ब्रह्मचर्यनुं आचरण करवाना स्वभाववाळो थइने (सया) सदा (अप्पमत्ते) प्रमाद रहित (विहरिज्जा) विचरे छे २.

श्री सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने उत्तर आपे छे के—

इमे खलु ते थेरेहिं भगवंतेहिं दस बंभचेरसमाहिट्ठाणा पण्णत्ता, जे भिक्खू सोच्चा निसम्म संजमबहुले संवरबहुले समाहिबहुले गुत्ते गुत्तिंदिए गुत्तबंभयारी सया अप्पमत्ते विहरिज्जा ॥ ३ ॥

अर्थ—स्थविर भगवंतोए आ निश्चे ते दश ब्रह्मचर्यनी समाधिनां स्थानो कह्यां छे, के जे स्थानोने सांभळीने साधु सदा अप्रमत्तपणे विचरे छे. (मध्यना शब्दोनो अर्थ उपर प्रमाणे समजी लेवो.) ३.

हवे ते ब्रह्मचर्यनी समाधिनां दश स्थानो बतावे छे.

तं जहा—विवित्ताइं सयणासणाइं सेविज्जा से निग्गंथे, नो इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निग्गंथे । तं कहमिति चे ? आयरिआह—निग्गंथस्स खलु इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेअं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालिअं वा रोगायंकं हविज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसिज्जा, तम्हा नो इत्थिपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं सेवित्ता हवइ से निग्गंथे ॥ ४ ॥

अर्थ—(तं जहा) ते आ प्रमाणे—(विवित्ताइं) विविक्त एटले स्त्री, पशु अने नपुंसक रहित एवां (सयणासणाइं) शय्या, आसन अने उपलक्षणथी स्थानोने (सेविज्जा) जे सेवे, (से) ते (निग्गंथे) निर्ग्रंथ एटले साधु कहेवाय छे. आ प्रमाणे अन्वयवडे कह्युं. हवे अल्पमतिवाळा शिष्यने सारी रीते बोध थवा माटे आ ज अर्थने व्यतिरेकवडे कहे छे.—(इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं) स्त्री, पशु अने नपुंसक सहित एवां (सयणासणाइं) शय्या, आसन अने स्थानने (सेवित्ता) जे सेवनार होय (से) ते (निग्गंथे) निर्ग्रंथ (नो हवइ) न होय एटले न कहेवाय. आ प्रमाणे गुरुनुं वचन सांभळी शिष्य कहे छे के—(तं कहं) आ तमे कह्युं ते शी रीते ? (इति चे) आ प्रमाणे जो शिष्य शंका करे तो (आयरिआह) आचार्य कहे छे के—(खलु) निश्चे (इत्थीपसुपंडगसंसत्ताइं सयणासणाइं) स्त्री, पशु अने नपुंसक सहित एवां शयन, आसन अने स्थानने (सेवमाणस्स) सेवता एवा (बंभयारिस्स) अने ब्रह्मचारी एवा पण (निग्गंथस्स) निर्ग्रंथना (बंभचेरे)

ब्रह्मचर्यने विषे बीजा मनुष्योने (संका वा) शंका थाय, एटले के आवा प्रकारना शयन, आसनने सेवनार आ साधु ब्रह्मचारी हशे के नहीं होय ? एम बीजाओने शंका थाय छे. अथवा तो साधुने पोताने ज पोताना ब्रह्मचर्यने विषे शंका थाय छे. एटले के स्त्री विगेरेना दर्शनथी तेमापर गाढ अनुराग-प्रीति उत्पन्न थाय छे अने तेथी करीने समग्र जिनेश्वरनो उपदेश वीसरी जइ आवी भावना थाय छे के—

"सत्यं वच्मि हितं वच्मि, सारं वच्मि पुनः पुनः । अस्मिन्नसारे संसारे, सारं सारङ्गलोचना ॥"

"हुं सत्य कहुं छुं, हित कहुं छुं अने वारंवार सारने एटले तत्त्वने कहुं छुं के आ असार संसारमां मृगलोचना (स्त्री) ज सारभूत छे."

आवां रागीजनोनां वचननी भावना भावतां मिथ्यात्वना उदयथी कदाच "स्त्रीसेवनमां जे दोष तीर्थंकरोए कह्यो छे ते दोष सत्य नहीं होय" ए प्रमाणे तेने पोताने ज शंका उत्पन्न थाय. अथवा (कंखा वा) कांक्षा उत्पन्न थाय एटले स्त्रीविषयनी इच्छा उत्पन्न थाय. ते आ प्रमाणे.—

"प्रियादर्शनमेवास्तु, किमन्यैर्दर्शनान्तरैः । निर्वाणं प्राप्यते येन, सरागेणापि चेतसा ॥"

"अमारे प्रियानुं दर्शन ज हो, बीजां (बौद्धादिक) दर्शनोए करीने शुं फळ छे ? कारण के जे प्रियाना दर्शनवडे करीने सरागी चित्ते पण निर्वाण[1] पमाय छे."

---

१ मोक्ष. बीजा पक्षमां सुख.

आवा नास्तिकोना दर्शननी अभिलाषा थवाथी स्त्रीनी इच्छा थाय छे. (वितिगिच्छा वा) अथवा "आवी चारित्रनी कष्टकारी क्रिया करवाथी तेनुं कांइ फळ मळशे के नहीं ?" आवी फळ आश्री शंका थाय छे. तेथी आ "स्त्री विगेरेनुं सेववुं ज सारुं छे." एम धारे छे. ए प्रमाणे विचिकित्सा एटले फळनो संदेह (सद्धुपविज्ञा) उत्पन्न थाय छे. (भेअं वा लभेज्जा) अथवा भेद एटले चारित्रना विनाशने पामे छे. (उम्मायं वा पाउणिज्जा) अथवा उन्मादने एटले कामनी आतुरताने–पराधीनताने पामे छे. (दीहकालिअं वा रोगायंकं हविज्जा) अथवा लांबो काळ पहोंचे एवा रोग एटले दाहज्वरादिक अने आतंक एटले तत्काळ मरण करनारा शूळ विगेरे व्याधिओ शरीरने विषे उत्पन्न थाय छे. कामी मनुष्योना शरीरमां कामनी दश अवस्थाओ थाय छे ते आ प्रमाणे.—

" प्रथमे जायते चिन्ता, द्वितीये द्रष्टुमिच्छति । तृतीये दीर्घनिःश्वासः, चतुर्थे ज्वरमादिशेत् ॥
पञ्चमे दह्यते गात्रं, षष्ठे भक्तं न रोचते । सप्तमे च भवेत्कम्प, उन्मादश्चाष्टमे तथा ॥
नवमे प्राणसंदेहो, दशमे जीवितं त्यजेत् । कामिनां मदनोद्वेगा, दश संजायन्ते ध्रुवम् ॥ "

" कामीजनोने स्त्रीना दर्शनथी आ दश कामनी अवस्थाओ उत्पन्न थाय छे.—प्रथम तेने मळवा विषेनी चिंता–विचार थाय छे १, पछी ते स्त्रीने जोवानी इच्छा थाय छे २, पछी तेना विरहने लीधे दीर्घ निःश्वास मूके छे ३, पछी तेने परिणामे ज्वर आवे छे ४, पछी शरीर बळवा लागे छे ५, पछी भोजनपर अरुचि थाय छे ६, पछी शरीरे कंप थाय छे ७, पछी उन्माद थाय छे ८, पछी प्राणना संदेहमां आवी पडे छे ९ अने छेवट जीवितनो त्याग पण कोइक करे छे १०."

(केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसिज्जा) अथवा तो केवळी भगवाने प्ररूपेला चारित्रधर्म थकी भ्रष्ट थाय छे. केमके कोइक जीव क्लिष्ट कर्मना उदयथी धर्मभ्रष्ट पण थाय छे. (तम्हा) तेथी करीने (इत्थिपसुपंडगसंसत्ताइं) स्त्री, पशु अने नपुंसकना संबंधवाळां (सयणासणाइं) शयन, आसन अने स्थानने (सेवित्ता) जे सेवनार होय (से) ते (निग्गंथे) निर्ग्रंथ (नो हवइ) न होय-न कहेवाय. आ ब्रह्मचर्यनुं पहेलुं समाधिस्थान कह्युं १. ४.

हवे बीजुं समाधिस्थान कहे छे.—

णो इत्थीणं कहं कहित्ता हवइ से निग्गंथे, तं कहमिति चे ? आयरियाह-निग्गंथस्स खलु इत्थीणं कहं कहेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेअं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालिअं वा रोगायंकं हविज्जा केवलिपण्णत्ताओ वा धम्माओ भंसिज्जा, तम्हा खलु निग्गंथे नो इत्थीणं कहं कहिज्जा ॥ २-५ ॥

अर्थ—(इत्थीणं) एकली स्त्रीओनी पासे अथवा स्त्री संबंधी (कहं) कथाने (कहित्ता) जे कहेनार होय (से) ते (निग्गंथे) निर्ग्रंथ (णो हवइ) न होय, एटले के केवळ स्त्रीओनी पासे ज धर्मोपदेश करवो नहीं. अथवा स्त्रीओनी जाति कुळ, वेष अने रूप विगेरे संबंधी, तथा पद्मिनी, चित्रणी, हस्तिनी अने शंखिनी तथा मुग्धा, मध्या अने प्रौढा तथा कर्णाटक आदि देशमां उत्पन्न थयेली स्त्रीओ आवी आवी होय छे इत्यादिक स्त्री संबंधी कथा करवी नहीं. जो करे तो ते साधु न

कहेवाय. (तं कहं) तमे कह्युं ते शी रीते ? (इति चे) एम जो शिष्य शंका करे तो (आयरियाह) आचार्य कहे छे के—(खलु) निश्चे (इत्थीणं) एकली स्त्रीओ पासे कथा करतां अथवा स्त्री संबंधी (कहं कहेमाणस्स) कथाने कहेता एवा (निग्गंथस्स) साधुने (बंभयारिस्स) ब्रह्मचारी छतां पण (बंभचेरे) ब्रह्मचर्यने विषे (संका वा) हुं आ स्त्रीने सेवुं के न सेवुं ? इत्यादिक शंका उत्पन्न थाय छे. इत्यादिक सर्व उपर बताव्या प्रमाणे हानि थाय छे. ते पाठनो अर्थ उपर प्रमाणे अहीं पण करवो. छेवटमां (तम्हा खलु निग्गंथे) ते कारण माटे निश्चे साधुए (नो इत्थीणं कहं कहिज्जा) एकली स्त्री-ओनी पासे कथा करवी नहीं अथवा स्त्री संबंधी कथा कहेवी नहीं. आ ब्रह्मचर्यनुं बीजुं समाधिस्थान कह्युं. २. ५.

हवे त्रीजुं समाधिस्थान कहे छे.—

णो इत्थीहिं सद्धिं सन्निसिज्जागए विहरित्ता हवइ से निग्गंथे । तं कहमिति चे ? आयरिआह—निग्गंथस्स खलु इत्थीहिं सद्धिं सन्निसिज्जागयस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेअं वा लभेज्जा, उम्मायं वा पाउणिज्जा, दीहकालियं वा रोगायंकं हविज्जा, केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसिज्जा, तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीहिं सद्धिं सन्निसिज्जागए विहरिज्जा ॥ ३—६ ॥

अर्थ—(इत्थीहिं सद्धिं) स्त्रीओनी साथे (सन्निसिज्जागए) एक आसन पर रह्यो थको (विहरित्ता) स्थिति करनार

–साथे बेसनार जे होय (से) ते (निग्गंथे) साधु (णो हवइ) न होय–न कहेवाय. अहीं संप्रदाय एवो छे के—जे आसन उपर प्रथम स्त्री बेठेली होय, ते आसन उपरथी ते स्त्रीना उठ्या पछी बे घडी जाय त्यारे ज ते साधुने बेसवा योग्य थाय छे. (तं कहं) ते शी रीते ? (इति चे) एम जो शिष्य शंका करे तो (आयरिआह) आचार्य कहे छे. (खलु) निश्चे (इत्थीहिं सद्धिं) स्त्रीओनी साथे (सन्निसिज्जागयस्स) एक आसन पर रहेला–बेठेला (निग्गंथस्स) साधुने (बंभयारिस्स) ब्रह्मचारी छतां पण (बंभचेरे संका वा) ब्रह्मचर्यने विषे शंका उत्पन्न थाय. विगेरे आलावानो अर्थ पूर्वनी जेम जाणी लेवो. छेवट (तम्हा खलु) ते कारण माटे निश्चे (निग्गंथे) साधु (इत्थीहिं सद्धिं) स्त्रीओनी साथे (सन्निसिज्जाए) एक आसन पर रह्यो थको (नो विहरिज्जा) न विचरे–न बेसे. आ त्रीजुं समाधि स्थान कह्युं. ३–६.

हवे चोथुं समाधिस्थान कहे छे—

णो इत्थीणं इंदिआइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोएत्ता निज्झाएत्ता भवति से निग्गंथे । तं कहमिति चे ? आयरिआह–निग्गंथस्स खलु इत्थीणं इंदिआइं मणोहराइं मणोरमाइं आलोएमाणस्स निज्झाएमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा जाव केवलिपण्णत्ताओ वा धम्माओ भंसिज्जा, तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीणं इंदिआइं जाव निज्झाएज्जा ॥ ४–७ ॥

अर्थ—(इत्थीणं) स्त्रीओनां (इंदिआइं) नेत्रादिक इंद्रियोने. केवां इंद्रियोने ? (मणोहराइं) मनोहर एटले जोवा मात्रथी ज मनने आकर्षण करनारां तथा (मणोरमाइं) मनोरम एटले दर्शन कर्या पछी चिंतव्या थका मनने आनंद आपनारां एवां इंद्रियोने (आलोएत्ता) कांइक जोइने तथा (निज्झाएत्ता) अत्यंत जोइने अथवा निध्याता एटले जोया पछी "अहो ! ते स्त्रीना नेत्रनी सुंदरता अने नासिकानी सरळता केवी छे ? इत्यादिक विचार करनार जे होय (से) ते (निग्गंथे) साधु (णो भवति) न होय (तं कहं) ते केवी रीते ? (इति चे) एम जो शिष्य शंका करे तो (आयरिआह) आचार्य कहे छे—(खलु) निश्चे (इत्थीणं) स्त्रीओनां (इंदिआइं मणोहराइं मणोरमाइं) जोवाथी मननुं आकर्षण करनार अने जोया पछी मनने आनंद आपनार इंद्रियोने (आलोएमाणस्स) कांइक जोता एवा अने (निज्झाएमाणस्स) अत्यंत जोता एवा अथवा ध्यान करता एवा (निग्गंथस्स) साधुने (बंभयारिस्स) ब्रह्मचारी छतां पण (बंभचेरे संका वा) ब्रह्मचर्यने विषे शंकादिक दोष उत्पन्न थाय इत्यादिक पूर्वनी जेम जाणवुं. छेवट (तम्हा खलु) ते कारण माटे निश्चे (निग्गंथे) साधु (इत्थीणं) स्त्रीओनां (इंदिआइं जाव) मनोहर अने मनोरम एवां इंद्रियोने यावत् (नो निज्झाएज्जा) न जुए–न ध्यान करे. आ चोथुं समाधिस्थान थयुं. ४–७.

हवे पांचमुं समाधिस्थान कहे छे.—

णो निग्गंथे इत्थीणं कुड्डंतरंसि वा, दूसंतरंसि वा, भित्तिंतरंसि वा, कुइअसद्दं वा, रुइअसद्दं

वा, गीअसद्दं वा, हसिअसद्दं वा, थणिअसद्दं वा, कंदिअसद्दं वा, विलविअसद्दं वा सुणित्ता हवइ से निग्गंथे । तं कहमिति चे ? आयरिआह–निग्गंथस्स खलु इत्थीणं कुड्डंतरंसि वा जाव विलविअसद्दं वा सुणमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा जाव केवलिपण्णत्ताओ वा धम्माओ भंसिज्जा, तम्हा खलु निग्गंथे नो इत्थीणं कुड्डंतरंसि वा जाव सुणमाणो विहरेज्जा ॥ ५–८ ॥

अर्थ—(निग्गंथे) साधु (कुड्डंतरंसि वा) पथ्थर अने माटी विगेरेथी बनावेला कुड्य–भींतने आंतरे–ओथे रहीने, अथवा (दूसंतरंसि वा) दूष्य एटले वस्त्रना पडदाने आंतरे रहीने अथवा (भित्तिंतरंसि वा) पाकी ईंट अने चूना विगेरेथी बनावेली भींतने आंतरे रहीने (इत्थीणं) स्त्रीओना (कुइअसद्दं वा) कूजित शब्द एटले संभोग समये कोयल विगेरे पक्षीनी जेवा थता शब्दने अथवा (रुइअसद्दं वा) रतिकलहादिकमां थता रुदित शब्दने अथवा (गीअसद्दं वा) पंचम विगेरे गीतना शब्दने अथवा (हसिअसद्दं वा) हसवाना शब्दने अथवा (थणिअसद्दं वा) रति समयमां थयेला मेघनी गर्जना जेवा शब्दने अथवा (कंदिअसद्दं वा) पतिना विरहने लीधे करेला आक्रंदना शब्दने अथवा (विलविअसद्दं वा) भर्तारना गुणो संभारी संभारीने करेला विलापना शब्दने (सुणित्ता) सांभळनार जे होय (से) ते (निग्गंथे) साधु (नो हवइ) न होय–न कहेवाय. (तं कहं) ते केवी रीते ? (इति चे) एम जो शिष्य शंका करे तो (आयरिआह) आचार्य कहे छे—(खलु) निश्चे (कुड्डंतरंसि वा) प्रथम कहेला कुड्य विगेरेने आंतरे रहीने (इत्थीणं) स्त्रीओना पूर्वे कहेला कूजित

विगेरे यावत् (विलविअसद्दं वा) विलापना शब्दने (सुणमाणस्स) सांभळता (निग्गंथस्स) साधुने (बंभयारिस्स) ब्रह्मचारी एवा पण (बंभचेरे) ब्रह्मचर्यने विषे (संका वा) शंका विगेरे दोषो उत्पन्न थाय, यावत् केवळीए प्ररूपेला धर्मथकी भ्रष्ट थाय. (तम्हा) ते कारण माटे (खलु) निश्चे (निग्गंथे) साधु (कुड्डंतरंसि वा) कुड्य विगेरेने आंतरे रहीने (इत्थीणं) स्त्रीओना कूजित विगेरे शब्दने यावत् विलापना शब्दने (सुणमाणो) सांभळतो थको (नो विहरेज्जा) न विचरे-न रहे. कारण के स्त्रीओना कामोदीपक शब्दने जे सांभळे ते साधु कहेवाय नहीं. आ पांचमुं समाधिस्थान कह्युं. ५-८.

हवे छठुं समाधिस्थान कहे छे.—

नो निग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलिअं अणुसरित्ता भवइ, तं कहमिति चे? आयरिआह- निग्गंथस्स खलु इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलिअं अणुसरेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा जाव धम्माओ भंसिज्जा, तम्हा खलु नो निग्गंथे इत्थीणं पुव्वरयं पुव्वकीलिअं अणुसरेज्जा ॥ ६-९ ॥

अर्थ—(निग्गंथे) साधु (इत्थीणं) स्त्रीओ संबंधी एटले स्त्रीओनी साथे (पुव्वरयं) पूर्वे एटले गृहस्थावस्थाने विषे जे रत एटले संभोग कर्यो होय तेने तथा (पुव्वकीलिअं) पूर्वे-गृहस्थावस्थाने विषे स्त्रीओ साथे जे द्यूतादिक क्रीडा करी होय तेने (अणुसरित्ता) स्मरण करनार (नो भवइ) न थाय अर्थात् जो ते स्मरण करे तो ते साधु न कहेवाय.

(तं कहं) ते केवी रीते ? (इति चे) एम जो शिष्य शंका करे तो (आयरिआह) आचार्य करे छे.-(खलु) निश्चे (इत्थीणं) स्त्रीओ संबंधी (पुव्वरयं) पूर्वे रत कर्युं होय-काम सेवन कर्युं होय तेने तथा (पुव्वकीलिअं) पूर्वे काम क्रीडा करी होय तेने (अणुसरेमाणस्स) स्मरण करनार (निग्गंथस्स) साधुने (बंभयारिस्स) ब्रह्मचारी छतां पण (बंभचेरे) ब्रह्मचर्यने विषे (संका वा) शंका विगेरे दोषो थाय यावत् (धम्माओ भंसिज्जा) धर्मथी भ्रष्ट थाय. (तम्हा खलु) ते कारण माटे निश्चे (निग्गंथे) साधु (इत्थीणं) स्त्रीओ संबंधी (पुव्वरयं) पूर्वे करेला संभोगने तथा (पुव्व-कीलिअं) पूर्वे करेली द्यूतादिक क्रीडाने (नो अणुसरेज्जा) स्मरण न करे. आ छठुं समाधिस्थान कह्युं. ६-९.

हवे सातमुं समाधिस्थान कहे छे.--

णो पणीअं आहारमाहारित्ता हवइ से निग्गंथे, तं कहमिति चे ? आयरिआह-निग्गंथस्स खलु पणीअं पाणभोअणं आहारमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा जाव केवलिप-ण्णत्ताओ वा धम्माओ भंसिज्जा, तम्हा खलु नो निग्गंथे पणीअं आहारमाहरेज्जा ॥ ७-१० ॥

अर्थ--(पणीअं) प्रणीत एटले जेमांथी घी विगेरेना बिंदु झरता होय तेवा अने उपलक्षणथी शरीरना धातुओने पुष्ट करे तेवा (आहारं) आहारने (आहारित्ता) आहार करनार-भोजन करनार (णो हवइ) जे न होय (से) ते (निग्गंथे) निर्ग्रंथ कहेवाय. शेष सूत्रनो अर्थ प्रसिद्ध छे. आ सातमुं समाधिस्थान कह्युं. ७-१०.

हवे आठमुं समाधिस्थान कहे छे—

नो अइमायाए पाणभोअणं आहारइत्ता हवइ से निग्गंथे, तं कहमिति चे ? आयरिआह—निग्गंथस्स खलु अइमायाए पाणभोअणं आहारेमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा जाव धम्माओ भंसिज्जा, तम्हा खलु नो निग्गंथे अइमायाए पाणभोअणं भुंजिज्जा ॥ ८—११ ॥

अर्थ—(अइमायाए) अतिमात्रा वडे एटले पुरुषनो आहार बत्रीश कवल प्रमाण अने स्त्रीनो अट्ठावीश कवल प्रमाण कह्यो छे, तेथी अधिक प्रमाणवडे (पाणभोअणं) पान भोजनने (आहारइत्ता) आहार करनार (नो हवइ) जे न होय (से) ते (निग्गंथे) निर्ग्रंथ कहेवाय छे. शेष सूत्रनो अर्थ प्रसिद्ध छे. आ आठमुं समाधिस्थान थयुं ८—११.

हवे नवमुं समाधिस्थान कहे छे.—

नो विभूसाणुवाई हवई से निग्गंथे, तं कहमिति चे ? आयरिआह—विभूसावत्तिए खलु विभूसियसरीरे इत्थिजणस्स अहिलसणिज्जे हवइ, तओ णं तस्स इत्थिजणेणं अभिलसिज्जमाणस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा जाव धम्माओ भंसिज्जा, तम्हा खलु नो निग्गंथे विभूसाणुवाई सिआ ॥ ९—१२ ॥

अर्थ—(विभूसाणुवाई) विभूषानुपाती एटले शरीरने साफ राखी शोभा करनार (नो हवई) जे न होय (से) ते (निग्गंथे) निर्ग्रंथ कहेवाय छे. (तं कहं) ते एम केम ? (इति चे) एम जो शिष्य शंका करे तो (आयरिआह) आचार्य महाराज कहे छे के–(विभूसावत्तिए) विभूषा करवाना स्वभाववाळो (खलु) निश्चे (विभूसिअसरीरे) स्नानादिक वडे विभूषित कर्युं छे शरीर जेणे एवो साधु (इत्थिजणस्स) स्त्रीजनने (अहिलसणिज्जे) अभिलाष करवा लायक एटले प्रार्थना करवा लायक (हवइ) थाय छे. (तओ णं) तेथी करीने (इत्थिजणेणं) स्त्रीजने (अभिलसिज्जमाणस्स) अभिलाष कराता (बंभयारिस्स) ब्रह्मचारी एवा (तस्स) तेना (बंभचेरे) ब्रह्मचर्यने विषे (संका वा) शंका थाय, अथवा (कंखा वा) कांक्षा थाय, इत्यादि (जाव) यावत् (धम्माओ भंसिज्जा) धर्मथी भ्रष्ट थाय, (तम्हा) ते कारण माटे (खलु) निश्चे (निग्गंथे) निर्ग्रंथ (विभूसाणुवाई) शरीरनी विभूषा करनार (नो सिआ) न थाय. आ नवमुं समाधिस्थान कह्युं. ९–१२.

हवे दशमुं समाधिस्थान कहे छे.—

नो सद्दरूवरसगंधफासाणुवाई हवइ से निग्गंथे, तं कहमिति चे ? आयरिआह—निग्गंथस्स खलु सद्दरूवरसगंधफासाणुवाइस्स बंभयारिस्स बंभचेरे संका वा कंखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा, भेअं वा लभेज्जा, उम्मादं वा पाउणिज्जा, दीहकालिअं वा रोगायंकं हविज्जा, केवलि-

पन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसिज्जा, तम्हा खलु नो निग्गंथे सद्दरूवरसगंधफासाणुवाई हवइ से निग्गंथे, दसमे बंभचेरसमाहिट्ठाणे हवइ ॥ १०-१३ ॥

अर्थ—(सद्दरूवरसगंधफासाणुवाई) शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्श तेने अनुसरनार (नो हवइ) जे न होय (से) ते (निग्गंथे) निर्ग्रंथ कहेवाय छे. अर्थात् हसवुं आवे तेवा शब्द, स्त्रीनुं स्वरूप, मधुरादिक रस, चंदनादिकनो गंध अने सुखकारक कोमळ शरीरनो स्पर्श ए पांचे विषयोनो उपभोग करे नहीं. (तं कहं) ते केवी रीते ? (इति चे) एम जो शिष्य शंका करे तो (आयरिआह) आचार्य कहे छे के—(खलु) निश्चे (सद्दरूवरसगंधफासाणुवाइस्स) शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्शनो उपभोग करनार (बंभयारिस्स) ब्रह्मचारी एवा (निग्गंथस्स) निर्ग्रंथने (बंभचेरे) ब्रह्मचर्यने विषे (संका वा कंखा वा वितिगिच्छा वा समुप्पज्जिज्जा) शंका, के कांक्षा के विचिकित्सा उत्पन्न थवानो संभव छे. (भेअं वा लभेज्जा) अथवा चारित्रना विनाशने पामे. (उम्मादं वा पाउणिज्जा) अथवा उन्मादने पामे. (दीहकालिअं वा रोगायंकं हविज्जा) अथवा दीर्घकाळ सुधी पहोंचे तेवा ज्वरादिक रोगो अने तत्काळ मृत्यु करनारा शूळादिक आतंको तेने उत्पन्न थाय छे. (केवलिपन्नत्ताओ वा धम्माओ भंसिज्जा) अथवा केवळी भगवाने प्ररूपेला धर्मथी भ्रष्ट थाय छे. (तम्हा खलु) ते कारण माटे निश्चे (निग्गंथे) जे साधु (सद्दरूवरसगंधफासाणुवाई) शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्शने भोगवनार (नो हवइ) न होय (से) ते (निग्गंथे) निर्ग्रंथ कहेवाय छे. (दसमे बंभचेरसमाहिट्ठाणे हवइ) आ दशमुं ब्रह्मचर्यनुं समाधिस्थान कह्युं. १०-१३.

भवंति इत्थ सिलोगा, तं जहा—

अर्थ—(इत्थ) अहीं एटले उपर कहेला विषय उपर (सिलोगा) श्लोको (भवंति) छे. (तं जहा) ते आ प्रमाणे.—

जं विवित्तमणाइण्णं, रहिअं थीजणेण य। बंभचेरस्स रक्खट्ठा, आलयं तु निसेवए ॥ १ ॥

अर्थ—(जं) जे उपाश्रय (विवित्तं) विविक्त एटले एकांतमां रहेलो होय अर्थात् स्त्री आदिकना रहेवासथी रहित होय, तथा जे (अणाइण्णं) अनाकीर्ण एटले कांइ पण प्रयोजनवडे ज्यां स्त्री विगेरे आवता न होय अथवा जे उपाश्रय गृहस्थीओना घरथी दूर होय, तथा (थीजणेण य) समय विना वंदन श्रवणादिक निमित्ते जता आवता स्त्रीजनवडे अने च शब्द छे माटे पशु अने नपुंसकवडे (रहिअं) रहित होय तेवा (आलयं तु) आलयने एटले उपाश्रयने साधु (बंभचेरस्स) ब्रह्मचर्यना (रक्खट्ठा) रक्षणने माटे (निसेवए) सेवे एटले तेवा उपाश्रयमां साधुए रहेवुं योग्य छे. १.

मणपल्हायजणणिं, कामरागविवड्ढणिं। बंभचेररओ भिक्खू, थीकहं तु विवज्जए ॥ २ ॥

अर्थ—(बंभचेररओ) ब्रह्मचर्यने विषे रक्त-आसक्त एवो (भिक्खू) साधु (मणपल्हायजणणिं) चित्तने आह्लाद उत्पन्न करनारी तथा (कामरागविवड्ढणिं) कामरागने एटले विषयाभिलाषने वधारनारी (थीकहं तु) एवी स्त्री-कथाने (विवज्जए) वर्जे-त्याग करे. २.

समं च संथवं थीहिं, संकहं च अभिक्खणं। बंभचेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए॥ ३॥

अर्थ—(बंभचेररओ भिक्खू) ब्रह्मचर्यने विषे रक्त एवो साधु (थीहिं) स्त्रीओनी (समं च) साथे (संथवं) संस्तवने एटले एक आसन पर बेसीने परिचय करवो तेने (च) तथा (अभिक्खणं) वारंवार (संकहं) ते स्त्रीओनी साथे कथाने (निच्चसो) सर्वदा (परिवज्जए) वर्जे. ३.

अंगपच्चंगसंठाणं, चारुल्लविअपेहिअं। बंभचेररओ थीणं, चक्खुगिज्झं विवज्जए ॥ ४ ॥

अर्थ—(बंभचेररओ) ब्रह्मचर्यने विषे रक्त एवो साधु (थीणं) स्त्रीओ संबंधी (अंगपच्चंगसंठाणं) मस्तकादिक अंगो अने स्तनादिक उपांगोना संस्थानने एटले आकारने तथा (चारुल्लविअपेहिअं) मनोहर उल्लपित-वचन अने प्रेक्षित एटले कटाक्षपूर्वक जोवुं तेने (चक्खुगिज्झं) चक्षुए ग्रहण कर्युं सतुं एटले नेत्रवडे जोवामां आवे तो तेने (विवज्जए) वर्जे. एटले के नेत्र होवाने लीधे रूपनुं जोवुं अवश्य थाय ज छे. परंतु नजरे पडे के तरत त्यांथी दृष्टि खेंची लेवी, पण रागना वशथी वारंवार तेनी सन्मुख जोया करवुं नहीं. कह्युं छे के—

“ अशक्यं रूपमद्रष्टुं, चक्षुर्गोचरमागतम् । रागद्वेषौ तु यौ तत्र, तौ बुधः परिवर्जयेत् ” ॥

“ नेत्रना विषयमां आवेलुं रूप न जोवुं ए तो अशक्य छे, परंतु ते जोवामां जे राग के द्वेष थाय छे, तेनो पंडिते त्याग करवानो छे. ” ४.

कुइअं रुइअं गीअं, हसिअं थणिअकंदिअं । बंभचेररओ थीणं, सोअगिज्झं विवज्जए ॥ ५ ॥

अर्थ—(बंभचेररओ) ब्रह्मचर्यने विषे रक्त एवो साधु (थीणं) स्त्री संबंधी (कुइअं) कूजित शब्दने, तथा (रुइअं) रुदितना शब्दने, तथा (गीअं) गीतना शब्दने, तथा (हसिअं) हसवाना शब्दने, तथा (थणिअ) स्तनित शब्दने, तथा (कंदिअं) क्रंदित शब्दने (सोअगिज्झं) श्रोत्रवडे ग्रहण थाय—संभळाय तो तेने (विवज्जए) वर्जे. अहीं कूजित विगेरेनो अर्थ उपर आठमा सूत्रमां कह्यो छे. ते ज जाणवो. ५.

हासं किड्डुं रइं दप्पं, सहसावत्तासिआणि अ । बंभचेररओ थीणं, नाणुचिंते कयाइवि ॥ ६ ॥

अर्थ—(बंभचेररओ) ब्रह्मचर्यमां रक्त एवो साधु (थीणं) स्त्री संबंधी पूर्वे करेला (हासं) हास्यने (किड्डं) द्यूतादिक क्रीडाने, (रइं) स्त्रीना अंगना संगथी उत्पन्न थयेली प्रीतिने, (दप्पं) मानथी उत्पन्न थयेला गर्वने (सहसा-वत्तासिआणि अ) तथा सहसा एटले एकदम पाछळथी आवीने पोताना हाथवडे स्त्रीनां नेत्रो ढांकी दीधां होय ए विगेरे स्त्रीने त्रास पमाडनारी चेष्टाओने (कयाइवि) कदापि (न अणुचिंते) चिंतवे नहीं—संभारे नहीं. ६.

पणिअं भत्तपाणं च, खिप्पं मयविवड्ढणं । बंभचेररओ भिक्खू, निच्चसो परिवज्जए ॥ ७ ॥

अर्थ—(बंभचेररओ) ब्रह्मचर्यने विषे रक्त एवो (भिक्खू) साधु (पणिअं) प्रणीत एटले जेमांथी घृतादिक रस झरतो होय एवा (भत्तपाणं) भक्तने एटले आहारने तथा पानने एटले द्राक्ष, खजुर अने साकर विगेरेथी मिश्रित पाणीने

(च) तथा (खिप्पं) शीघ्रपणे (मयविवड्ढणं) कामने वृद्धि पमाडनार बीजा कोइ पण पदार्थने (निच्चसो) निरंतर (परिवज्जए) वर्जे. ७.

धम्मलद्धं मिअं काले, जत्तत्थं पणिहाणवं । नाइमत्तं तु भुंजिज्जा, बंभचेररओ सया ॥ ८ ॥

अर्थ—(पणिहाणवं) प्रणिधानवान एटले चित्तनी स्वस्थताए करीने युक्त एवो साधु (जत्तत्थं) यात्राने माटे एटले संयमना निर्वाहने माटे ज—परंतु रूपादिकने माटे नहीं तथा (काले) समये (धम्मलद्धं) धर्मना हेतुथी ज प्राप्त थयेलो परंतु कपटादिक करीने ग्रहण करेलो न होय तेवो तथा (मिअं) प्रमाणोपेत एवो ज आहार करे. (तु) परंतु (बंभचेररओ) ब्रह्मचर्यमां रक्त एवो साधु (सया) निरंतर (अइमत्तं) अधिक प्रमाणवाळा आहारनुं (न भुंजिज्जा) भोजन करे नहीं. ८.

विभूसं परिवज्जिज्जा, सरीरपरिमंडणं । बंभचेररओ भिक्खू, सिंगारत्थं न धारए ॥ ९ ॥

अर्थ—(बंभचेररओ) ब्रह्मचर्यने विषे रक्त एवो (भिक्खू) साधु (विभूसं) वस्त्रादिकवडे शरीरनी शोभाने (परिवज्जिज्जा) वर्जे. तथा (सिंगारत्थं) शोभाने माटे (सरीरपरिमंडणं) नख केशादिकना संस्कार रूप शरीरना मंडनने—शोभाने (न धारए) धारण न करे. ९.

सद्दे रूवे अ गंधे अ, रसे फासे तहेव य । पंचविहे कामगुणे, निच्चसो परिवज्जए ॥ १० ॥

अर्थ—ब्रह्मचर्यमां रक्त एवो साधु (सद्दे) कर्णने सुख आपनारा शब्द, (रूवे अ) नेत्रने प्रीति उपजावनार रूप तथा (गंधे अ) नासिकाने खुशकारक गंध तथा (रसे) मधुरादिक रस (तहेव य) तथा वळी (फासे) त्वचाने प्रीति

करनार स्पर्श (पंचविहे) ए पांच प्रकारना (कामगुणे) इच्छाकाम अने मदनकामने उपकार करनार होवाथी कामगुणोने (निच्चसो) निरंतर (परिवज्जए) वर्जे. १०.

प्रथम ब्रह्मचर्यना दरेक समाधिस्थानमां " शंका थाय अथवा कांक्षा थाय " इत्यादि कह्युं हतुं, तेने ज दृष्टांतवडे स्पष्ट करे छे.—

आलओ थीजणाइण्णो, थीकहा य मणोरमा । संथवो चेव नारीणं, तासिं इंदिअदरिसणं ॥ ११ ॥
कूइअं रुइअं गीअं, हसिअं भुत्तासिआणि अ । पणिअं भत्तपाणं च, अइमायं पाणभोअणं ॥ १२ ॥
गत्तभूसणमिट्ठं च, कामभोगा य दुज्जया । नरस्सत्तगवेसिस्स, विसं तालउडं जहा ॥ १३ ॥

अर्थ—(थीजणाइण्णो) स्त्रीजनवडे व्याप्त-सहित एवो (आलओ) उपाश्रय, (य) तथा (मणोरमा) मनने रमणीय लागे तेवी (थीकहा) स्त्री संबंधी कथा अथवा स्त्रीनी साथे कथा करवी ते, (चेव) तथा निश्चे (नारीणं) स्त्रीओनो (संथवो) संस्तव एटले तेमनी साथे एक आसनपर बेसी परिचय करवो ते, तथा (तासिं) ते स्त्रीओनां (इंदिअदरिसणं) नेत्र स्तन विगेरे इंद्रियोने-अंगोपांगने रागथी जोवां ते, तथा ते स्त्री संबंधी पूर्वे करेलां (कूइअं) कूजित, (रुइअं) रुदित, (गीअं) गीत, (हसिअं) हास्य अने (भुत्तासिआणि अ) स्त्री साथे भोगवेलां [भोगनां] आसनो ए सर्वनुं स्मरण करवुं ते, तथा (पणिअं) प्रणीत एवुं (भत्तपाणं च) भक्त पान, तथा (अइमायं पाणभोअणं) प्रमाणथी

अधिक पान भोजन लेवुं ते, तथा (इट्ठं च) इष्ट एवुं पण (गत्तभूसणं) गात्रभूषण एटले शरीरनी शोभा करवी ते, (य) तथा (दुजया) दुःखे करीने जीती शकाय एवा (कामभोगा) काम एटले रूप अने शब्द तथा भोग एटले रस, गंध अने स्पर्श, आ सर्वे (अत्तगवेसिस्स) आत्मानी एटले ब्रह्मचर्यरूप जीवितनी गवेषणा करनार (नरस्स) पुरुषने तथा उपलक्षणथी स्त्रीने पण (तालउडं विसं जहा) तालपुट विष समान छे, एटले के आ सर्वे ब्रह्मचर्यनो घात करनारा छे तेथी त्याग करवा योग्य छे. जेम तालपुट विष मुखमां नाखवाथी ताळवानो स्पर्श थाय के तरत ज ते मनुष्यना जीवितने हरे छे, तेम आ सर्वे पण सेव्याथका ब्रह्मचर्यरूपी जीवितने शंका कांक्षादिक दोषो उत्पन्न करीने तत्काळ हणे छे. ११–१२–१३.

हवे आ विषयने समाप्त करे छे.—

दुज्जए कामभोगे अ, निच्चसो परिवज्जए। संकट्ठाणाणि सव्वाणि, वज्जिज्जा पणिहाणवं ॥ १४ ॥

अर्थ—(पणिहाणवं) प्रणिधानवान एटले चित्तनी एकाग्रतावाळो साधु (दुजए) दुःखे करीने जीती शकाय एवा (कामभोगे) काम तथा भोगने (निच्चसो) निरंतर (परिवज्जए) वर्जे. (अ) तथा (सव्वाणि) सर्वे एटले दशे (संकट्ठाणाणि) पूर्वे कहेलां शंकानां स्थानोने (वज्जिज्जा) वर्जे. १४.

वळी तेने वर्जनारो शुं करे ? ते कहे छे.—

धम्मारामे चरे भिक्खू, धितिमं धम्मसारही । धम्मारामरए दंते, बंभचेरसमाहिए ॥ १५ ॥

अर्थ—(धितिमं) धृतिमान एटले धैर्यवडे युक्त, तथा (धम्मसारही) धर्मसारथि एटले बीजाओने पण धर्ममार्गमां प्रवर्तावनार, तथा (धम्मारामरए) धर्मने विषे सर्वथा रमण करनारा साधुओने विषे रक्त एटले तेवा साधुओनी साथे रहेनार, तथा (दंते) इंद्रियोनुं दमन करनार, तथा (बंभचेरसमाहिए) ब्रह्मचर्यने विषे सावधान एवो (भिक्खू) साधु (धम्मारामे) धर्मरूप आराम-उद्यानने विषे (चरे) विचरे. दुःखना संतापथी तपेला प्राणीओने धर्म ज सुखना हेतुरूप छे, माटे अहीं धर्मने आराम जेवो कह्यो छे. १५.

हवे ब्रह्मचर्यनो महिमा बतावे छे.—

देवदाणवगंधव्वा, जक्खरक्खसकिन्नरा । बंभयारिं नमंसंति, दुक्करं जे करंति ते ॥ १६ ॥

अर्थ—(दुक्करं) दुःखे करीने आचरी शकाय एवा ब्रह्मचर्यने (जे) जे (करंति) करे छे-पाळे छे, (ते) ते (बंभयारिं) ब्रह्मचारी मुनिने (देवदाणवगंधव्वा) देव, दानव, गांधर्व, (जक्खरक्खसकिन्नरा) यक्ष, राक्षस अने किंनर तथा उपलक्षणथी सर्व जातिना देवो (नमंसंति) नमस्कार करे छे. १६.

हवे आ अध्ययनना अर्थने समाप्त करे छे.—

एस धम्मे धुवे णितए, सासए जिणदेसिए ।
सिद्धा सिज्झंति चाणेणं, सिज्झिस्संति तहावरे त्ति[14] बेमि ॥ १७ ॥

अर्थ—(जिणदेसिए) जिनेश्वरे कहेलो (एस) आ (धम्मे) ब्रह्मचर्यरूप धर्म (धुवे) ध्रुव छे एटले परतीर्थिकोए खंडन न करी शकाय तेवो होवाथी प्रमाणवडे प्रतिष्ठा पामेलो छे, तथा आ ब्रह्मचर्य धर्म (णितए) नित्य छे एटले त्रणे काळमां अविनश्वर छे, तथा (सासए) शाश्वतो छे एटले त्रणे काळमां फळ आपनार छे. अथवा आ त्रणे विशेषणोनो अर्थ एक ज करवो. (च) तथा (अणेणं) आ ब्रह्मचर्यरूप धर्मवडे (सिद्धा) अतीत काळमां घणा-अनंत जीवो सिद्धिपदने पाम्या छे, तथा (सिज्झंति) वर्तमान काळे पण महाविदेहमां घणा जीवो सिद्ध थाय छे अथवा आ अध्ययननी प्ररूपणा करवाना अवसरनी अपेक्षाए वर्तमान काळे आ क्षेत्रमां पण सिद्ध थाय छे, (तहा) तथा (अवरे) बीजा घणा जीवो (सिज्झिस्संति) अनंत एवा आगामी काळमां सिद्धिपद पामशे. (त्ति बेमि) ए प्रमाणे हुं कहुं छुं. एटले हे जंबू ! जे प्रमाणे भगवान् वर्धमानस्वामी पासे में सांभळ्युं छे ते प्रमाणे हुं कहुं छुं एम सुधर्मास्वामिए जंबूस्वामीने कह्युं. १७.

॥ इति षोडशमध्ययनम् १६ ॥

अथ पापश्रमणीय नामनुं सत्तरमुं अध्ययन. १७.

सोळमा अध्ययनमां ब्रह्मचर्यनां समाधिस्थानो कह्यां, ते तो पापस्थानो वर्जवाथी ज पाळी शकाय छे, अने पापस्थानो सेववाथी पापश्रमण कहेवाय छे, तेथी पापश्रमणनुं स्वरूप आ अध्ययनमां बताव्युं छे. आ संबंधथी प्राप्त थयेला आ अध्ययननुं प्रथम सूत्र कहे छे.

जे केइ उ पव्वईए निअंठे, धम्मं सुणित्ता विणओववन्ने ।
सुदुल्लहं लहिउं बोहिलाभं, विहरिज्ज पच्छा य जहासुहं तु ॥ १ ॥

अर्थ—(जे केइ उ) जे कोइ (निअंठे) निर्ग्रंथे प्रथम (धम्मं सुणित्ता) चारित्ररूप धर्मने सांभळीने (विणओववन्ने) ज्ञानादिक–विनयने पाम्या सता (सुदुल्लहं) अत्यंत दुर्लभ एवा (बोहिलाभं) जिनधर्मनी प्राप्तिरूप बोधिलाभने एटले समकितने (लहिउं) पामीने (पव्वईए) प्रव्रज्या लीधी होय, अने (पच्छा य) पछीथी (जहासुहं तु) जेम सुख उपजे तेम ज (विहरिज्ज) विचरे एटले के प्रथम सिंहपणे प्रव्रज्या लइ पछीथी शियाळनी जेम निद्रादिक प्रमादने वश थइ विचरे. १.

तेवा प्रमादी साधुने गुरु विगेरे भणवानी प्रेरणा करे त्यारे ते शुं बोले ? ते बतावे छे.—

१

सिज्जा दढा पाउरणं मे अत्थि, उप्पज्जइ भोत्तुं तहेव पाउं ।
जाणामि जं वट्टइ आउसो त्ति, किं नाम काहामि सुएण भंते ॥ २ ॥

अर्थ—“ (मे) मारे (दढा) दृढ एटले वायु, आतप अने जलादिकना उपद्रव रहित (सिज्जा) वसति-उपाश्रय अने (पाउरणं) शीत विगेरेना उपद्रवनो नाश करनार प्रावरण-वस्त्रादिक पण (अत्थि) छे, (तहेव) तथा (भोत्तुं) खावा माटे अशन अने (पाउं) पीवाने माटे पाणी पण (उप्पज्जइ) उत्पन्न थाय छे एटले मळे छे. तथा (आउसो) हे आयुष्यमान् गुरु! (जं) जे वर्तमान काळे (वट्टइ) वर्ते छे, ते सर्वं (जाणामि) हुं जाणुं छुं. (त्ति) तेथी करीने (भंते) हे भगवान्! (सुएण) श्रुत भणवावडे करीने (किं नाम) शुं (काहामि) करुं? शामाटे प्रयास करुं?” अहीं ते प्रमादी शिष्यनो एवो अभिप्राय छे के—“ तमे पण श्रुतनो अभ्यास करो छो, ने तमे पण अतीत के भावी काइ पण जाणता नथी, परंतु मात्र वर्तमान काळे वर्तता पदार्थोने ज जाणो छो, एटलुं तो अमे पण भण्या विना ज जाणीए छीए. तथा वसति, वस्त्र, अशन अने पाणी विगेरे तमारी ज जेम अमे पण सुखे करीने पामीए छीए. तो हृदय, कंठ अने ताळवाने शोषण करनारा अभ्यासवडे शुं फळ छे?” आ प्रमाणे जे बोले ते पापश्रमण कहेवाय छे. एवो पछीनी गाथानो संबंध अहीं पण सिंहावलोकनना न्यायथी जाणवो. २.

जे केई पव्वइए, निद्दासीले पगामसो । भोच्चा पेच्चा सुहं सुअइ, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ ३ ॥

અર્થ—(જે કેઈ) જે કોઇ (પવ્વઈએ) પ્રવ્રજ્યા લીધેલો સાધુ (નિદ્દાસીલે) નિદ્રા લેવાના સ્વભાવવાળો હોય અને (પગામસો) અત્યંત (ભોચ્ચા) દહીં ભાત વિગેરેનો આહાર કરી તથા (પેચ્ચા) તક્રાદિકનું પાન કરી (સુહં) સુખે કરીને (સુઅઇ) કોઇ પણ ક્રિયાની અપેક્ષા રહિત થઇને સુવે છે, તે (પાવસમણે ત્તિ) પાપશ્રમણ છે એમ (વુચ્ચઈ) કહેવાય છે. ૩.

आयरिअउवज्झाएहिं, सुअं विणयं चं गाहिए । ते चेव खिंसई बाले, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ ४ ॥

અર્થ—(આયરિઅઉવજ્ઝાએહિં) જે આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયે (સુઅં) શ્રુત એટલે આગમ (ચ) અને (વિણયં) વિનય (ગાહિએ) ગ્રહણ કરાવ્યો હોય એટલે શીખવ્યો હોય (તે ચેવ) તેમની જ (બાલે) જે વિવેક રહિત બાળક (ખિંસઈ) ખિંસા–નિંદા કરે છે, તે (પાવસમણે ત્તિ) પાપશ્રમણ છે એમ (વુચ્ચઈ) કહેવાય છે. ૪.

आयरिअउवज्झायाणं, सम्मं नो परितप्पई । अप्पडिपूअए थद्धे, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ ५ ॥

અર્થ—જે સાધુ (આયરિઅઉવજ્ઝાયાણં) આચાર્ય કે ઉપાધ્યાયની (સમ્મં) સમ્યક્ પ્રકારે (નો પરિતપ્પઈ) વૈયાવચ્ચ વિગેરેની ચિંતા ન કરે, તથા જે સાધુ (અપ્પડિપૂઅએ) અપ્રતિપૂજક એટલે જિનેંદ્રાદિકની યથાયોગ્ય [ભાવ] પૂજા કરવામાં વિમુખ હોય, અથવા કોઇ મુનિએ ઉપકાર કર્યો હોય તોપણ તેનો પ્રત્યુપકાર કરવાથી વિમુખ હોય, તથા જે સાધુ (થદ્ધે) સ્તબ્ધ એટલે ગર્વિષ્ઠ હોય, તે (પાવસમણે ત્તિ વુચ્ચઈ) પાપશ્રમણ છે એમ કહેવાય છે. ૫.

આ રીતે વિનય રહિતને પાપશ્રમણ કહ્યો. હવે ચારિત્ર રહિતને પાપશ્રમણ કહે છે.—

संमद्दमाणे पाणाणि, बीआणि हरिआणि अ। असंजए संजयमन्नमाणे, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥६॥

अर्थ—(पाणाणि) द्वीन्द्रियादिक प्राणीओनुं, तथा (बीआणि) शाल्यादिक बीजोनुं (अ) तथा (हरिआणि) धरो विगेरे तृण-वनस्पतिनुं तथा उपलक्षणथी सर्व एकेन्द्रियोनुं (संमद्दमाणे) मर्दन करतो अने तेथी करीने (असंजए) संयम-चारित्र रहित एवो छतो पण जे (संजयमन्नमाणे) पोताने 'हुं साधु छुं' एम मानतो होय, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. आवो साधु संविग्न पाक्षिक पण कहेवातो नथी. ६.

संथारं फलगं पीढं, निसिज्जं पायकंबलं। अप्पमज्जिअ आरुहइ, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ ७ ॥

अर्थ—जे साधु (संथारं) कंबलादिक संथाराने, (फलगं) काष्ठमय पाटपाटलाने, (पीढं) पीठने एटले आसनने, (निसिज्जं) निषद्याने एटले स्वाध्याय भूमिने तथा (पायकंबलं) पादकंबल एटले पादप्रोंछनने (अप्पमज्जिअ) प्रमार्जन कर्या विना तथा उपलक्षणथी पडिलेहण कर्या विना (आरुहइ) ते पर आरूढ थाय एटले ते वस्तुओने वापरे, तो ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. ७.

दवदवस्स चरई, पमत्ते अ अभिक्खणं। उल्लंघणे अ चंडे अ, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ ८ ॥

अर्थ—आहारादिकने माटे ज्यारे जाय त्यारे जे साधु (दवदवस्स) शीघ्र शीघ्र एटले पृथ्वीपर धबधब करतो (चरई) चाले एटले इर्यासमितिने साचवे नहीं, (अ) तथा जे (अभिक्खणं) वारंवार (पमत्ते) प्रमादी थाय एटले

पांचे समिति रहित थाय, (अ) तथा जे (उल्लंघणे) अज्ञानीओने उल्लंघन करे एटले तेमनो तिरस्कार करे, अथवा हास्यादिक अविनय करनारा बालकोने क्रीडाथी पोताना आचारनुं उल्लंघन करे, (अ) तथा जे (चंडे) मनमां क्रोधवडे धमधमतो रहे, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. ८.

पडिलेहेइ पमत्ते, अवउज्झइ पायकंबलं । पडिलेहणाअणाउत्ते, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ ९ ॥

अर्थ—वस्त्र पात्रादिक पोताना उपकरणने जे साधु (पमत्ते) प्रमादी सतो (पडिलेहेइ) पडिलेहे एटले चित्त विना तेनी प्रतिलेखना करे, तथा जे साधु (पायकंबलं) पादप्रोंछनने अथवा पात्र अने कंबलने (अवउज्झइ) ज्यां त्यां तजे एटले प्रमार्जन अने प्रतिलेखन कर्या विनाना स्थानमां मूके. अहीं पात्र अने कंबलना ग्रहणवडे सर्व उपधिनुं ग्रहण करी लेवुं. तथा जे साधु (पडिलेहणाअणाउत्ते) पोतानी सर्व उपधिनी पडिलेहणने विषे अनायुक्त एटले आळसु-उपयोग रहित होय, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. ९.

पडिलेहेइ पमत्ते, जं किंचि हु णिसामिआ । *गुरुपरिभावए निच्चं, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥१०॥

अर्थ—(पमत्ते) प्रमादी एवो जे साधु (जं किंचि हु) जे काइ विकथादिकने (णिसामिआ) सांभळीने एटले सांभळतो सांभळतो (पडिलेहेइ) पडिलेहणा करे, एटले पडिलेहण करती वखते जो कोइ वात करतुं होय तो तेमां चित्त राखे, पण

* " गुरु परिभवई " इति प्रत्यन्तर पाठः

पडिलेहणमां चित्त राखे नहीं. तथा (निच्चं) निरंतर (गुरुपरिभावए) गुरुनो पराभव करनार होय अथवा (गुरुं परिभवई) गुरुनो पराभव करे, एटले के दोषयुक्त पडिलेहणादिक करता तेने जोइ गुरुमहाराज तेने शिक्षा आपे त्यारे ते सामुं बोले के-" त्यारे तमे ज करो." अथवा " तमे ज अमने आवी रीते शीखव्युं छे, तेथी ते तमारो ज दोष छे." एवो जवाब आपे, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. १०.

बहुमाई पमुहरी, थद्धे लुद्धे अणिग्गहे । असंविभागी अचिअत्ते, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ ११ ॥

अर्थ—तथा जे साधु (बहुमाई) घणो माया-कपटवाळो होय, तथा जे (पमुहरी) वाचाळ होय तथा (थद्धे) गर्विष्ठ होय, तथा (लुद्धे) लोभी होय, तथा (अणिग्गहे) मन तथा इंद्रियोने वश राखनार न होय-तेने वश होय तथा (असंविभागी) गुरु, ग्लान विगेरेनो संविभाग करनार न होय, तथा जे (अचिअत्ते) गुर्वादिकने विषे प्रीतिवाळो न होय, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. ११.

विवायं च उदीरेइ, अधम्मे अत्तपन्नहा । वुग्गहे कलहे रत्ते, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ १२ ॥

अर्थ—(च) तथा जे (विवायं) विवादने एटले वाणीना कलहने (उदीरेइ) उदीरणा करे एटले सामो माणस शांत होय तोपण तेना मर्मने प्रगट करी कलहनी वृद्धि करे, तथा जे (अधम्मे) अधर्मी एटले असदाचारमां रक्त होय, तथा जे (अत्तपन्नहा) आप्तप्रज्ञाहा—आप्त एटले सद्बोध करनार होवाथी आलोक अने परलोकने विषे हितकारक एवी

प्रज्ञाने एटले स्वपरनी सद्बुद्धिने कुतर्कवडे हणनार होय अर्थात् तत्त्वबुद्धिने हणनार होय, तथा जे (वुग्गहे) व्युद्ग्रहने विषे एटले दंडादिक युद्धने विषे रक्त होय तथा जे (कलहे) वाणी संबंधी क्लेशने विषे (रत्ते) रक्त होय, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. १२.

अथिरासणे कुक्कुइए, जत्थ तत्थ निसीअई । आसणम्मि अणाउत्ते, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ १३ ॥

अर्थ---तथा जे साधु (अथिरासणे) आसनपर स्थिर रहे नहीं, तथा जे (कुक्कुइए) हास्य विकथादिक करी भांडनी जेवी चेष्टा करे, तथा जे (जत्थ तत्थ) ज्यां त्यां सचित्त पृथ्व्यादिक उपर (निसीअई) बेसे, तथा जे (आसणम्मि) आसनने विषे (अणाउत्ते) उपयोगवाळो न होय, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. १३.

ससरक्खपाओ सुअइ, सिज्जं न पडिलेहइ । संथारए अणाउत्ते, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ १४ ॥

अर्थ--तथा जे (ससरक्खपाओ) सरजस्कपाद एटले धूळथी खरडायेला पगवाळो ज---पगनी प्रमार्जना कर्या विना ज (सुअइ) संथारामां शयन करे, तथा जे (सिज्जं) शय्याने एटले वसति–उपाश्रयने (न पडिलेहइ) सम्यक् प्रकारे न पडिलेहे, तथा जे (संथारए) कंबलादिक संथारामां सुतो सतो (अणाउत्ते) अनायुक्त होय एटले " कुक्कुडिपायपसारण " "कुकडीनी जेम पग उंचो राखी सुवुं " इत्यादि आगमना अर्थनो उपयोग न राखे अथवा पोरसी भणाव्या विना अविधिए शयन करे, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. १४.

हवे तपना विषयमां पापश्रमण केवा होय ? ते कहे छे.—

दुद्धदही विगईओ, आहारेइ अभिक्खणं । अरए अ तवोकम्मे, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ १५ ॥

अर्थ—तथा जे (दुद्धदही) दूध, दहीं अने उपलक्षणथी बीजी पण (विगईओ) विकार करनार होवाथी विकृतिओने (अभिक्खणं) वारंवार कारण विना पण (आहारेइ) आहार करे–खाय (अ) अने तेथी करीने ज (तवोकम्मे) अनशनादिक तपक्रियाने विषे (अरए) प्रीतिवाळो न होय–आसक्त न होय, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. १५.

अत्थंतम्मि अ सूरम्मि, आहारेइ अभिक्खणं । चोइओ पडिचोएइ, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ १६ ॥

अर्थ—(अ) तथा जे साधु (सूरम्मि) सूर्य (अत्थंतम्मि) अस्त पामे सते–अस्त समय लगभग (अभिक्खणं) वारंवार (आहारेइ) आहार करे, तथा (चोइओ) जो कोइ गीतार्थ गुर्वादिक तेने प्रेरणा करे के–"हे आयुष्मान् ! केम आ प्रमाणे केवळ आहारमां ज तत्पर रहो छो ? फरीथी आवी धर्मसामग्री मळवी दुर्लभ छे, माटे आवी सामग्री पामीने तो तपमां उद्यम करवो योग्य छे." आ प्रमाणे प्रेरणा कर्यो सतो (पडिचोएइ) सामी प्रेरणा करे–सामुं बोले के–"तमे उपदेश आपवामां ज डाह्या छो, परंतु पोते तो करता नथी, नहीं तो आवुं जाणता छतां तमे केम उत्कृष्ट तप करता नथी ?" आ प्रमाणे सामो जवाब आपे, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. १६.

आयरियपरिच्चाई, परपासंडसेवए । गाणंगणिए दुब्भूए, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ १७ ॥

अर्थ—तथा जे (आयरियपरिचाई) आचार्यनो त्याग करनार होय, एटले " आ गुरु तो तप ज करावे छे अने कांइ सारो आहार आव्यो होय तो ते पण ग्लानादिक साधुओने अपावी दे छे. " आ प्रमाणे विचारी आहारपरनी अति लोलुपताने लीधे आचार्यनो त्याग करे छे, तथा (परपासंडसेवए) पर पाखंडीओनी सेवा करे छे एटले निरंतर आहारमां ज आसक्त रहेनारा बौद्धादिकनो सेवक थाय छे, तथा जे (गाणंगणिए) गाणंगणिक–छ मासनी अंदर ज एक गच्छमांथी बीजा गच्छमां जाय छे, अने तेथी करीने ज (दुब्भूए) दुर्भूत–दुराचारे करीने निंदाने पात्र थयो होय छे ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. १७.

सयं गेहं परिचज्ज, परगेहंसि वावरे । निमित्तेण य ववहरइ, पावसमणे त्ति वुच्चई ॥ १८ ॥

अर्थ—तथा जे साधु (सयं गेहं) दीक्षा समये पोताना घरनो (परिचज्ज) त्याग करीने पछी (परगेहंसि) आहारादिकना लोभथी बीजाना–गृहस्थीओना घरने विषे (वावरे) व्यापार करे–तेना घरना कामकाज करे, (य) तथा (निमित्तेण) शुभाशुभ निमित्तशास्त्र कहेवावडे (ववहरइ) व्यवहार करे–द्रव्य उपार्जन करे, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. १८.

सन्नाइपिंडं जेमेइ, नेच्छई सामुदाणिअं । गिहिनिसिज्जं च वाहेइ, पावसमणे त्ति, वुच्चई ॥ १९ ॥

अर्थ—तथा जे (सन्नाइपिंडं) बंधु विगेरे पोताना संबंधीओए प्रीतिथी आपेला पिंडने–आहारने (जेमेइ) जमे, तथा

(सामुदाणिअं) घर घरथी आणेली सामुदायिक भिक्षाने (नेच्छइ) इच्छे नहीं, (च) तथा (गिहिनिसिज्जं) गृहस्थीना पलंग विगेरे आसनपर (वाहेइ) सुखशीळीयापणाथी बेसे, ते (पावसमणे त्ति वुच्चई) पापश्रमण छे एम कहेवाय छे. १९.

हवे आ अध्ययननो उपसंहार करतां उपर कहेला दोषने सेववाथी अने त्याग करवाथी जे फळ थाय छे ते बतावे छे.—

एआरिसे पंचकुसीलसंवुडे, रूवंधरे मुणिपवराण हिट्ठिमे ।
अयंसि लोए विसमेव गरहिए, न से इहं नेव परत्थलोए ॥ २० ॥

अर्थ—(एआरिसे) आवा प्रकारनो (पंचकुसीलसंवुडे) ओसन्नो, पासत्थो, कुशीळीयो, संसत्तो अने यथाछंदो ए पांच प्रकारना कुशीळीयानी जेवा असंवृत एटले संवर रहित—अजितेंद्रिय, तथा (रूवंधरे) साधुना रूपने-वेषने धारण करनार तथा (मुणिपवराण) उत्तम मुनिओनी (हिट्ठिमे) नीचे वर्तनार एटले अत्यंत जघन्य एवा संयमस्थानने विषे रहेला, तथा (अयंसि लोए) आलोकने विषे (विसमेव) विषनी जेम (गरहिए) गर्हा करवा लायक एटले विषनी जेम निंद्य होवाथी त्याग करवा लायक छे, (से) तेवा साधु (इहं) आलोकने विषे सामान्य जनोए पण (न) वखाणवा लायक नथी, अने (परत्थलोए) परलोकने विषे पण (नेव) वखाणवा लायक नथी. २०.

जो वज्जए एए सया उ दोसे, से सुव्वए होइ मुणीण मज्झे ।
अयंसि लोए अमयं व पूइए, आराहए लोगमिणं तहा परं ति बेमि ॥ २१ ॥

ध्यानमां तत्पर थयेला अने (तवोघणे) तपरूपी धनवाळा (अणगारे) एक अणगार–मुनि (धम्मज्झाणं) धर्मध्यानने (झियायइ) ध्यावे छे–ध्यान करता हता. ४.

अप्फोवमंडवंसि, झायइ झविआसवे । तस्सागए मिए पासं, वहेइ से नराहिवे ॥ ५ ॥

अर्थ—(झविआसवे) चय कर्या छे हिंसादिक आश्रवो जेणे एवा ते मुनि (अप्फोवमंडवंसि) अफोव एटले वृक्षादिकवडे व्याप्त एवा नागवल्ली विगेरेना मंडपने विषे (झायइ) धर्मध्यान करता हता. (तस्स) ते मुनिनी (पासं) पासे (आगए) आवीने रहेला (मिए) मृगोने (से) ते (नराहिवे) राजा (वहेइ) हणतो हतो. ५.

अह आसगओ राया, खिप्पमागम्म सो तहिं । हए मिए उ पासित्ता, अणगारं तत्थ पासई ॥६॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (आसगओ) अश्वपर चढेलो (सो) ते संजय नामनो (राया) राजा (खिप्पं) शीघ्रपणे (तहिं) ते लतामंडपमां (आगम्म) आवीने (हए) हणेला (मिए उ) मृगोने (पासित्ता) जोइने (तत्थ) त्यां रहेला (अणगारं) एक मुनिने पण (पासई) जोतो हवो. ६.

ते वखते ते राजाए शुं कर्युं ? ते कहे छे.—

अह राया तत्थ संभंतो, अणगारो मणाहओ । मए उ मंदपुण्णेणं, रसगिद्धेण घण्णुणा ॥ ७ ॥

अर्थ—(अह) हवे (तत्थ) ते मुनिने जोवाथी (संभंतो) संभ्रांत थयेलो एटले भय पामेलो (राया) राजा विचार

करवा लाग्यो के-(रसगिद्धेण) मांसना रसमां लुब्ध थयेला अने (घण्णुणा) घात-हिंसा करवाना स्वभाववाळा (मए उ) में (मंदपुण्णेणं) मंद पुण्यवाळाए-पापीए (अणगारो) आ मुनि (मणाहओ) मनाक् अहतः-जराक न हण्या, एटले हमणांज माराथी तेओ हणाइ जात. कारण के तेनी पासे ज रहेलो आ मृग हणायो छे, तेथी आ मुनिने हणवामां जराक ज छेटुं रही गयुं छे. ७.

आसं विसज्जइत्ता णं, अणगारस्स सो निवो । विणएणं वंदए पाए, भगवं एत्थ मे खमे ॥८॥

अर्थ—एम विचार करीने पछी (आसं) अश्वने (विसज्जइत्ता णं) तजीने एटले अश्वपरथी नीचे उतरीने (सो निवो) ते राजाए (विणएणं) विनयवडे (अणगारस्स) ते मुनिना (पाए) पादने (वंदए) वंदना करी अने कह्युं के (भगवं) हे भगवान ! (एत्थ) आ मृगना वधने विषे (मे) मने एटले मारा अपराधने (खमे) आप क्षमा करो. ८.

अह मोणेणं सो भयवं, अणगारो झाणमस्सिओ । रायाणं न पडिमंतेइ, तओ राया भयदुओ ॥९॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी एटले राजाए मुनिने वंदना कर्या पछी (मोणेण) मौनवडे करीने (झाणमस्सिओ) धर्मध्यानने आश्रित थयेला (सो ते (भयवं) ज्ञानना अतिशयवाळा भगवान (अणगारो) मुनिए (रायाणं) राजाने (न पडिमंतेइ) कांइ पण प्रत्युत्तर आप्यो नहीं, (तओ) तेथी करीने (राया) राजा (भयदुओ) भयद्रुत एटले अत्यंत भयभीत थयो. ९.

अर्थ—(जो) जे साधु (सया उ) सदैव-हमेशां (एए) आ पूर्वे कहेला (दोसे) दोषोने (वज्जए) वर्जे छे, (से) ते (मुणीण मज्झे) मुनिओ मध्ये (सुव्वए) सुव्रत एटले वखाणवा लायक व्रतवाळा (होई) होय छे एटले वखणाय छे. तथा ते (अयंसि लोए) आ लोकने विषे (अमयं व) अमृतनी जेम (पूईए) लोकोए पूजित एवा छता (इणं) आलोक (तहा) तथा (परं लोगं) परलोकने (आराहए)) आराधे छे-साधे छे. (त्ति बेमि) ए प्रमाणे हुं कहुं छुं. २१.

इति सप्तदशमध्ययनम्. १७.

अथ संयतीय नामनुं अढारमुं अध्ययन. १८

सत्तरमा अध्ययनमां पापस्थानको वर्जवानुं कह्युं, ते वर्जवुं संजय राजानी जेम भोग-समृद्धिनो त्याग करवाथी थाय छे. ए संबंधथी प्राप्त थयेला आ अढारमा अध्ययननुं प्रथम सूत्र कहे छे.—

कंपिल्ले नयरे राया, उदिण्णबलवाहणे । नामेणं संजए नामं, मिगव्वं उवनिग्गए ॥ १ ॥

अर्थ—(कंपिल्ले) कांपील्य नामना (नयरे) नगरमां (उदिण्णबलवाहणे) बळ एटले चतुरंग सैन्य अने शिबिका विगेरे वाहन जेना उदय पामेला छे एटले पुष्कळ छे एवो (राया) राजा (संजए) संजय (नामेणं) नामे (नामं) प्रसिद्ध हतो, ते एकदा (मिगव्वं) मृगया करवा माटे (उवनिग्गए) नगरमांथी बहार नीकळ्यो. १.

ते राजा केवी रीते नीकळ्यो ? अने तेणे शुं कर्युं ? ते कहे छे.--

हयाणीए गयाणीए, रहाणीए तहेव य । पायत्ताणीए महया, सव्वओ परिवारिए ॥ २ ॥

अर्थ—ते राजा (महया) मोटा (हयाणीए) अश्वना सैन्यवडे (गयाणीए) हाथीना सैन्यवडे (रहाणीए) रथना सैन्यवडे (तहेव य) तथा वळी (पायत्ताणीए) पदातिना सैन्यवडे (सव्वओ) चोतरफथी (परिवारिए) परिवरेलो नगर बहार नीकळ्यो. २.

मिए छुभित्ता हयगओ, कंपिल्लुज्जाणकेसरे । भीए संते मिए तत्थ, वहेइ रसमुच्छिए ॥ ३ ॥

अर्थ--(रसमुच्छिए) मांसना रसमां लुब्ध थयेलो ते राजा (हयगओ) अश्वपर आरूढ थयो थको (कंपिल्लुज्जाणकेसरे) कांपील्य नगरना केसर नामना उद्यानमां रहेला (मिए) मृगोने (छुभित्ता) प्रेरणा करीने एटले ते मृगोनी पाछळ पोतानो अश्व दोडावीने (तत्थ) त्यां (भीए) भय पामेला एटले त्रास पामेला अने (संते) श्रांत थयेला एटले ग्लानि पामेला (मिए) ते मृगोने (वहेइ) हणतो हवो. ३.

ते वखते त्यां शुं थयुं ? ते कहे छे.--

अह केसरम्मि उज्जाणे, अणगारे तवोधणे । सज्झायज्झाणसंजुत्ते, धम्मज्झाणं झियायइ ॥ ४ ॥

अर्थ—(अह) ते वखते (केसरम्मि) ते केसर नामना (उज्जाणे) उद्यानमां (सज्झायज्झाणसंजुत्ते) स्वाध्याय

ध्यानमां तत्पर थयेला अने (तवोधणे) तपरूपी धनवाळा (अणगारे) एक अणगार—मुनि (धम्मज्झाणं) धर्मध्यानने (झियायइ) ध्यावे छे-ध्यान करता हता. ४.

अप्फोवमंडवंसि, झायइ झविआसवे । तस्सागए मिए पासं, वहेइ से नराहिवे ॥ ५ ॥

अर्थ—(झविआसवे) क्षय कर्या छे हिंसादिक आश्रवो जेणे एवा ते मुनि (अप्फोवमंडवंसि) अप्फोव एटले वृक्षादिकना व्याप्त एवा नागवल्ली विगेरेना मंडपने विषे (झायइ) धर्मध्यान करता हता. (तस्स) ते मुनिनी (पासं) पासे (आगए) आवीने रहेला (मिए) मृगोने (से) ते (नराहिवे) राजा (वहेइ) हणतो हतो. ५.

अह आसगओ राया, खिप्पमागम्म सो तहिं । हए मिए उ पासित्ता, अणगारं तत्थ पासई ॥६॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (आसगओ) अश्वपर चढेलो (सो) ते संजय नामनो (राया) राजा (खिप्पं) शीघ्रपणे (तहिं) ते लतामंडपमां (आगम्म) आवीने (हए) हणेला (मिए उ) मृगोने (पासित्ता) जोइने (तत्थ) त्यां रहेला (अणगारं) एक मुनिने पण (पासई) जोतो हवो. ६.

ते वखते ते राजाए शुं कर्युं ? ते कहे छे.—

अह राया तत्थ संभंतो, अणगारो मणाहओ । मए उ मंदपुण्णेणं, रसगिद्धेण घण्णुणा ॥ ७ ॥

अर्थ—(अह) हवे (तत्थ) ते मुनिने जोवाथी (संभंतो) संभ्रांत थयेलो एटले भय पामेलो (राया) राजा विचार

४

करवा लाग्यो के-(रसगिद्धेण) मांसना रसमां लुब्ध थयेला अने (घण्णुणा) घात-हिंसा करवाना स्वभाववाळा (मए उ) में (मंदपुण्णेणं) मंद पुण्यवाळाए-पापीए (अणगारो) आ मुनि (मणाहओ) मनाक् अहतः-जराक न हणाया, एटले हमणांज माराथी तेओ हणाइ जात. कारण के तेनी पासे ज रहेलो आ मृग हणायो छे, तेथी आ मुनिने हणावामां जराक ज छेटुं रही गयुं छे. ७.

आसं विसज्जइत्ता णं, अणगारस्स सो निवो । विणएणं वंदए पाए, भगवं एत्थ मे खमे ॥८॥

अर्थ—एम विचार करीने पछी (आसं) अश्वने (विसज्जइत्ता णं) तजीने एटले अश्वपरथी नीचे उतरीने (सो निवो) ते राजाए (विणएणं) विनयवडे (अणगारस्स) ते मुनिना (पाए) पादने (वंदए) वंदना करी अने कह्युं के (भगवं) हे भगवान ! (एत्थ) आ मृगना वधने विषे (मे) मने एटले मारा अपराधने (खमे) आप क्षमा करो. ८.

अह मोणेण सो भयवं, अणगारो झाणमस्सिओ । रायाणं न पडिमंतेइ, तओ राया भयदुओ ॥९॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी एटले राजाए मुनिने वंदना कर्या पछी (मोणेण) मौनवडे करीने (झाणमस्सिओ) धर्मध्यानने आश्रित थयेला (सो) ते (भयवं) ज्ञानना अतिशयवाळा भगवान (अणगारो) मुनिए (रायाणं) राजाने (न पडिमंतेइ) कांइ पण प्रत्युत्तर आप्यो नहीं, (तओ) तेथी करीने (राया) राजा (भयदुओ) भयद्रुत एटले अत्यंत भयभीत थयो. ९.

एटले फरीथी राजा आ प्रमाणे बोल्यो.—

संजओ अहमस्सीति, भयवं वाहराहि मे । कुद्धो तेएण अणगारे, दहिज्ज नरकोडिओ ॥ १० ॥

अर्थ—(भयवं) हे भगवान ! (अहं) हुं (संजओ) संजय नामनो राजा (अस्सि) छुं, कोइ नीच जातिनो मनुष्य नथी, (इति) ए कारण माटे (मे) मारी साथे (वाहराहि) तमे बोलो. कारण के (कुद्धो) क्रोध पामेला (अणगारे) मुनि (तेएण) तेजवडे एटले पोतानी तेजोलेश्यावडे (नरकोडिओ) करोडो मनुष्योने (दहिज्ज) बाळी शके छे. तेथी हुं भयभीत थयो छुं. १०.

आ प्रमाणे राजाए कह्युं, त्यारे मुनि ध्यानथी निवृत्त थइने बोल्या के.—

अभओ पत्थिवा तुब्भं, अभयदाया भवाहि अ । अणिच्चे जीवलोगम्मि, किं हिंसाए पसज्जसि ? ॥११॥

अर्थ—(पत्थिवा) "हे राजा ! (तुब्भं) तने (अभओ) अभय छे." अर्थात् तने कोइ मारतुं नथी. आ प्रमाणे राजाने धीरज आपीने पछी मुनि तेने उपदेश आपे छे के—"हे राजा ! (अभयदाया) तुं अभयदान आपनार (भवाहि अ) था. जेम तने मृत्युनो भय लागे छे तेम सर्व प्राणीओने मृत्युनो भय होय छे, तेथी (अणिच्चे) आ अनित्य एवा (जीवलोगम्मि) जीवलोकने विषे (हिंसाए) प्राणीओनी हिंसा करवामां तुं (किं) केम (पसज्जसि) आसक्त थाय छे ? आ हिंसा नरकनो हेतु होवाथी करवा योग्य नथी. ११.

जया सव्वं परिच्चज्ज, गंतव्वमवसस्स ते । अनिच्चे जीवलोगम्मि, किं रज्जम्मि पसज्जसि ? ॥१२॥

अर्थ—(जया) ज्यारे (सव्वं) खजानो, अंतःपुर विगेरे सर्वनो (परिचज्ज) त्याग करीने (अवसस्स) अवश एटले पराधीन एवा (ते) तारे अवश्य (गंतव्वं) परभवमां जवानुं ज छे, तो (अनिच्चे) आ अनित्य एवा (जीवलोगम्मि) जीवलोकने विषे (रज्जम्मि) राज्य उपर (किं) केम तुं (पसज्जसि) आसक्त थाय छे ? १२.

वळी संसारनी अनित्यताने ज बतावे छे.—

जीविअं चेव रूवं च, विज्जुसंपायचंचलं । जत्थ तं मुज्झसी रायं, पेच्चत्थं नावबुज्झसे ॥ १३ ॥

अर्थ—(रायं) हे राजा ! (जत्थ) जे जीवित अने रूपने विषे (तं) तुं (मुज्झसी) मोह पमे छे, ते (जीविअं चेव) जीवित-आयुष्य अने (रूवं च) रूप एटले शरीरनुं सौंदर्य (विज्जुसंपायचंचलं) वीजळीना चमकारा जेवुं चंचळ छे, तथा तुं (पेच्चत्थं) परलोकना कार्यने (नावबुज्झसे) जाणतो नथी. १३.

दाराणि अ सुआ चेव, मित्ता य तह बंधवा । जीवंतमणुजीवंति, मयं नाणुव्वयंति अ ॥ १४ ॥

अर्थ—हे राजा ! (दाराणि अ) स्त्रीओ, तथा (सुआ चेव) पुत्रो, तथा (मित्ता य) मित्रो, (तह) तथा (बंधवा) बंधु विगेरे ज्ञातिजनो ए सर्वे (जीवंतं) जीवतानी (अणुजीवंति) पाछळ जीवे छे एटले जीवता एवा धनवाननी पाछळ पोताना उदरनिर्वाहने करे छे-तेनुं धन तेओ भोगवे छे, परंतु (मयं) ते पुरुष ज्यारे मरी जाय छे त्यारे (नाणुव्व-

यंति अ) तेनी पाछळ मरता नथी–जता नथी, तो सहायभूत तो क्यांथी ज थाय, माटे तेवा कृतघ्नीओने विषे आदर करवो योग्य नथी. १४.

निहंरंति मयं पुत्ता, पिअरं परमदुक्खिआ । पिअरोऽवि तहा पुत्ते, बंधू रायं तवं चरे ॥ १५ ॥

अर्थ—(पुत्ता) पुत्रो (परमदुक्खिआ) अत्यंत दुःखी थया छतां पण (मयं) मरी गयेला (पिअरं) पिताने (निहरंति) घर बहार काढे छे, (तहा) तथा (पिअरोऽवि) पिताओ पण (पुत्ते) मरी गयेला पुत्रोने घर बहार काढे छे, तथा (बंधू) बंधुओ पण मरी गयेला बंधुओने घर बहार काढे छे–घरमां राखता नथी तेथी करीने (रायं) हे राजा ! तुं (तवं) तपनुं (चरे) आचरण कर–सेवन कर. १५.

तओ तेणऽज्जिए दव्वे, दारे अ परिरक्खिए । कीलंतन्ने नरा रायं, हट्ठतुट्ठा अलंकिआ ॥ १६ ॥

अर्थ—(तओ) त्यारपछी एटले घरनी बहार काढ्या पछी (रायं) हे राजा ! (तेण) ते पित्रादिके के पुत्रादिके (अज्जिए) उपार्जन करेला अने (परिरक्खिए) समस्त प्रकारे चोर अने अग्नि विगेरे थकी रक्षण करेला (दव्वे) द्रव्ये करीने, पाछळ रहेला आनंद करे छे. (अ) तथा (दारे) तेनी स्त्री साथे (अन्ने नरा) बीजा मनुष्यो (हट्ठतुट्ठा) हृष्ट एटले बहारथी रोमांचित थयेला, तथा तुष्ट एटले हृदयमां आनंद पामेला, तथा (अलंकिआ) अलंकारोवडे विभूषित थया थका (कीलंति) क्रीडा करे छे. पोते ज्यांसुधी जीवे छे, त्यांसुधी धन उपार्जन करी तेनुं प्राणनी जेम रक्षण करे छे,

तथा स्त्रीनुं पण तेवीज रीते रक्षण करे छे, परंतु मरी गया पछी तेना धन अने स्त्रीवडे बीजाओ ज क्रीडा करीने आनंद मेळवे छे. १६.

मरेला माणसनुं शुं थाय छे ? ते कहे छे—

तेणावि जं कयं कम्मं, सुहं वा जइ वाऽसुहं । कम्मुणा तेण संजुत्तो, गच्छइ उ परं भवं ॥१७॥

अर्थ—(तेणावि) ते मरनार माणसे पण (जं) जे (सुहं वा) शुभ (जइ वा) अथवा (असुहं) अशुभ (कम्मं) कर्म (कयं) कर्युं होय, (तेण उ) ते ज (कम्मुणा) कर्मे करीने (संजुत्तो) युक्त एवो ते (परं भवं) पर भवने विषे (गच्छइ) जाय छे. अर्थात् जीवनी साथे बीजुं कांइ पण जतुं नथी. मात्र एक पोते करेलुं शुभाशुभ कर्म ज जाय छे, तेथी हे राजा ! तपनुं आचरण कर. " १७.

सोऊण तस्स सो धम्मं, अणगारस्स अंतिए । महयासंवेगनिव्वेअं, समावन्नो नराहिवो ॥ १८ ॥

अर्थ—आ प्रमाणे (तस्स) ते (अणगारस्स) मुनिनी (अंतिए) समीपे (धम्मं) धर्मने (सोऊण) सांभळीने (सो) ते (नराहिवो) संजय राजा (महयासंवेगनिव्वेअं) मोटा संवेगने एटले मोक्षना अभिलाषने अने निर्वेदने एटले संसारथी उद्वेगपणाने (समावन्नो) पाम्यो. १८.

संजओ चइउं रज्जं, निक्खंतो जिणसासणे । गद्दभालिस्स भगवओ, अणगारस्स अंतिए ॥१९॥

अर्थ—त्यारपछी (संजओ) ते संजय नामना राजाए तरतज (रज्जं) राज्यनो (चइउं) त्याग करीने (भगवओ) भगवान (गद्दभालिस्स) श्री गर्दभालि नामना (अणगारस्स) मुनिनी (अंतिए) पासे (जिणसासणे) जिनशासनने विषे एटले वीतरागना धर्मने विषे ज (निक्खंतो) दीक्षा ग्रहण करी. १६.

अहीं वृद्धसंप्रदाय आ प्रमाणे छे–ते संजय नामना राजर्षि गर्दभालि नामना आचार्यना शिष्य थया, पछी आगमनो अभ्यास करी ते गीतार्थ थया, अने साधुना समग्र आचार विचारमां निपुण थया, एटले गुरुनी आज्ञाथी ते राजर्षि एकाकी विहार करता कोइ गाममां आव्या. ते गाममां तेने एक क्षत्रिय मुनि मळ्या. ते क्षत्रिय मुनि पूर्व जन्ममां वैमानिक देव हता, त्यांथी चवीने कोइ क्षत्रियना कुळमां उत्पन्न थयेला हता. त्यां कोइ निमित्तने लइने तेने जातिस्मरण ज्ञान थयुं हतुं, तेथी वैराग्य उत्पन्न थवाने लीधे राज्यनो त्याग करी तेणे दीक्षा ग्रहण करी हती. तेनुं नाम ठरावेलुं न होवाथी क्षत्रिय मुनिना नामथी ते प्रसिद्ध थया हता. ते जातिस्मरण ज्ञानवाळा क्षत्रिय मुनिए संजय नामना राजर्षिने जोइ तेमना ज्ञाननी परीक्षा करवा माटे आ प्रमाणे कह्युं.—

चिच्चा रट्ठं* पव्वइए, खत्तिए परिभासई । जहा ते दीसई रूवं, पसन्नं ते तहा मणो ॥ २० ॥

अर्थ—(रट्ठं) राष्ट्रनो एटले देशनो अथवा राज्यनो (चिच्चा) त्याग करीने (पव्वइए) प्रव्रज्याने पामेला (खत्तिए)

* रज्जं इति वा पाठः

क्षत्रिय मुनिए (परिभासई) संजय राजर्षिने कह्युं के-(जहा) " जेम (ते) तमारुं (रूवं) बाह्य रूप—आकार प्रसन्न—सुंदर (दीसई) देखाय छे, (तहा) तेम (ते) तमारुं (मणो) मन पण (पसन्नं) प्रसन्न छे एम जणाय छे, कारण के अंदर कलुषता वगेरे होय तो बहारथी आवा प्रकारनी चित्तप्रसन्नता देखाय नहीं. २०.

किंनामे किंगोत्ते, कस्सट्टाए व माहणे । कहं पडिअरसी बुद्धे, कहं विणीए त्ति वुच्चसी ॥ २१ ॥

अर्थ—(किंनामे) तमारुं नाम शुं छे ? तथा (किंगोत्ते) तमारुं गोत्र शुं छे ? (व) अथवा (कस्सट्ठाए) कया प्रयोजनने माटे (माहणे) तमे माहण थया छो एटले प्रव्रज्या लीधी छे ? तथा (बुद्धे) आचार्यादिकनी (कहं) केवी रीते (पडिअरसी) सेवा करो छो ? तथा (कहं) केवी रीते (विणीए त्ति) 'तमे विनीत छो' एम (वुच्चसी) कहेवाओ छो ?"२१.

आ प्रमाणे क्षत्रिय मुनिए पूछ्युं, त्यारे संजय राजर्षि तेमने प्रत्युत्तर आपे छे के—

संजयो नाम नामेणं, तहा गोत्तेण गोअमो । गद्दभाली ममायरिआ, विज्जाचरणपारगा ॥ २२ ॥

अर्थ—" (नामेणं) नामे करीने हुं (संजयो नाम) संजय नामनो छुं, (तहा) तथा (गोत्तेण) गोत्रवडे हुं (गोअमो) गौतम गोत्री छुं, तथा (विज्जाचरणपारगा) विद्या एटले श्रुत अने चरण एटले चारित्रना पारगामी एवा (गद्दभाली) गर्दभालि नामना (मम) मारा (आयरिआ) आचार्य एटले गुरु छे. भावार्थ आ प्रमाणे छे.—गर्दभालि नामना आचार्ये मने जीवहिंसाथी निवृत्त कर्यो, तेनी निवृत्तिमां मने तेओए मुक्तिरूप फळ बताव्युं, तेथी मुक्ति मेळववाने

माटे हुं माहण–साधु थयो छुं, जे प्रमाणे ते गुरुए मने उपदेश आप्यो छे–समजाव्यो छे ते प्रमाणे हुं तेमनी सेवा करुं छुं, अने तेमना उपदेशनुं सेवन करवाथी हुं विनीत कहेवाउं छुं. २२. ”

आ प्रमाणे संजय राजर्षिनुं वचन सांभळी ते क्षत्रिय मुनिनुं चित्त तेमनापर आकर्षायुं, तेथी ते क्षत्रिय मुनि बोल्या के–

किरिअं अकिरिअं विणयं, अन्नाणं च महामुणी। एएहिं चउहिं ठाणेहिं, मेअंसे किं पभासति ॥२३॥

अर्थ—(महामुणी) हे महामुनि संजय ! (किरिअं) क्रिया, (अकिरिअं) अक्रिया, (विणयं) विनय (च) अने (अन्नाणं) अज्ञान (एएहिं) ए (चउहिं) चार (ठाणेहिं) स्थानोवडे (मेअन्ने) मेयज्ञ—मेय एटले जीवादि ज्ञेय वस्तुने जाणनाराओ (किंपभासति) कुत्सित एटले असत्य–मिथ्या बोले छे. अहीं केटलाक अन्यमतिओ अस्तिक्रिया सहित जीवनुं लक्षण माने छे एटले के वस्तुनी जे सत्ता तेज जीव एम माने छे, ते क्रियावादी कहेवाय छे. १. केटलाक अक्रियावादी छे, तेओ जीवादिक पदार्थोने नास्तिरूपे एटले नथीज ए प्रमाणे माने छे. २. केटलाएक विनयवादी छे, तेओ नाना, मोटा, उंच, नीच सर्वने नमस्कारादिक विनय करवो तेने ज धर्म माने छे. ३. तथा केटलाएक अज्ञानवादी छे, तेओ सर्व पदार्थोने नहीं जाणवा तेज सारुं माने छे. ४. आ चारे मतवाळा एकांतवादी होवाथी मिथ्यात्वी छे. तेओनुं एवुं एकांतपणे मानवुं युक्तियुक्त नथी, तेथी तेमनुं भाषित मिथ्या छे. कारणके अस्तिक्रिया एटले सत्ता अर्थात् वस्तुनुं होवापणुं, ते तो दरेक वस्तुमां छे, तेथी अजीव पण जीव कहेवाशे. १. एकांतपणे नास्तिपणुं मानवाथी आत्मानुं पण नास्तिपणुं थशे, अने तेथी करीने जीव, अजीव विगेरे सर्व पदार्थो नास्तिपणाए करीने सरखा ज कहेवाशे. २. सर्व ठेकाणे तुल्य विनय क-

रवाथी निर्गुणनो पण विनय करवो पडशे अने निर्गुणना विनयनुं तो अशुभ फळ कह्युं छे, गुणीने विषेज विनय करवाथी शुभ फल प्राप्त थाय छे, तेथी एकांत विनय पण सारो नथी. ३. तथा अज्ञान तो मुक्तिना साधनभूत छे ज नहीं, केमके मुक्तिनुं कारण तो ज्ञान ज कह्युं छे, हेय अने उपादेय पदार्थो ज्ञानथी ज जाणी शकाय छे, अने ज्ञानविना हिताहित पण जाणी शकातुं नथी. तेथी अज्ञानवादीओ पण मिथ्याभाषी ज छे. ४. आ चारे प्रकारना पाखंडीओना कुल त्रणसो ने त्रेसठ भेदो थाय छे. तेमां क्रियावादीओना १८० भेदो छे, अक्रियावादीओना ८४ छे, विनयवादीओना ३२ छे अने अज्ञानवादीओना ६७ भेदो छे. आनो विस्तार अन्य ग्रंथमांथी जाणी लेवो. २३.

ए चारे प्रकारना वादीओनुं मिथ्याभाषित हुं मारी बुद्धिथी ज कहेतो नथी, परंतु भगवानना वचनथी कहुं छुं.

इइ पाउकरे बुद्धे, नायए परिनिव्वुडे । विज्जाचरणसंपन्ने, सच्चे सच्चपरक्कमे ॥ २४ ॥

अर्थ—(इइ) आ क्रियावादी विगेरेने (बुद्धे) तत्त्वने जाणनारा, (परिनिव्वुडे) कषायरूपी अग्नि बुझावाथी शीतळ थयेला, (विज्जाचरणसंपन्ने) क्षायिक ज्ञान अने क्षायिक चारित्रवडे युक्त, (सच्चे) सत्य वचनवाळा अने (सच्चपरक्कमे) सत्य वीर्यवाळा (नायए) ज्ञातक एटले ज्ञातपुत्र श्री महावीरस्वामीए मिथ्याभाषीपणे (पाउकरे) प्रगट कर्या छे—कह्या छे. २४.

ते क्रियावादी विगेरेनुं फळ कहे छे.—

पडंति नरए घोरे, जे नरा पावकारिणो । दिव्वं च गइं गच्छंति, चरित्ता धम्ममारिअं ॥२५॥

अर्थ—(जे नरा) जे मनुष्यो (पावकारिणो) अहीं प्रस्तावने लीधे पाप एटले असत्यरूपणा, तेने करवाना स्वभाववाळा होय छे, तेओ (घोरे) भयंकर एवा (नरए) नरकमां (पडंति) पडे छे. (च) अने (आरिअं) आर्य एटले सत्यरूपणारूप उत्तम (धम्मं) धर्मनुं (चरित्ता) आचरण करीने एटले आचरण करनारा मनुष्यो (दिव्वं) देव संबंधी अथवा सर्व गतिमां प्रधान एवी सिद्धि नामनी (गइं) गतिने (गच्छंति) पामे छे. तेथी हे राजर्षि ! तमारे असत्यरूपणानो त्याग करी सत्यरूपणामां ज प्रवर्तवुं. २५.

ते क्रियावादी विगेरे पापकारी केम कहेवाय ? ते उपर कहे छे.—

मायावुइअमेअं तु, मुसाभासा निरत्थिआ । संजममाणो वि अहं, वसामि इरिआमि अ ॥२६॥

अर्थ—(एअं) आ क्रियावादी विगेरेनुं वचन (मायावुइअं तु) मायावडे एटले शठतावडे ज कहेलुं होय छे, तेथी तेओनी (मुसाभासा) मृषा भाषा (निरत्थिआ) निरर्थक–अर्थ विनानी छे. ते कारण माटे हे संजय मुनि ! (संजममाणो वि) ते पाखंडीओनी असत्यरूपणारूप पापथकी निवृत्ति पाम्यो सतो ज (अहं) हुं (वसामि) निरवद्य–दोषरहित उपाश्रयादिकमां वसुं छुं. अहीं संजय राजर्षिने स्थिर करवा माटे " हुं वसुं छुं " एम पोतानुं ज दृष्टांत आपीने कह्युं छे. एटले के जेम हुं असत्यरूपणाथी निवृत्त थयो छुं तेम तमारे पण निवृत्त थवुं. कारण के जे साधु पोते साधुमार्गमां रहेलो होय ते बीजाने पण साधुमार्गमां स्थापन करी शके छे. (अ) तथा वळी हुं (इरिआमि) गोचर्यादिकने विषे इर्यासमितिवडे चालुं छुं. २६.

હવે સંજય રાજર્ષિ ક્ષત્રિયમુનિને પૂછે છે કે—" તમે તે પાખંડીઓના વચનથી કેવી રીતે નિવૃત્ત થયા ? " તેનો તે જવાબ આપે છે.—

सव्वे ते विइआ मज्झं, मिच्छादिट्ठी अणारिआ। विज्जमाणे परे लोए, सम्मं जाणामि अप्पयं ॥२७॥

અર્થ—(से सव्वे) તે સર્વે પાખંડીઓ (मज्झं) મારા (विइआ) જાણેલા છે. કે તેઓ (मिच्छादिट्ठी) મિથ્યાદૃષ્ટિ છે અને તેથી કરીને (अणारिआ) અનાર્ય એટલે પશુહિંસાદિક અનાર્ય કર્મ કરનારા છે. તેવા પ્રકારના તેમને શી રીતે જાણ્યા ? તે ઉપર કહે છે.—(परे लोए) પરલોક (विज्जमाणे) વિદ્યમાન સતે (अप्पयं) મારા આત્માને (सम्मं जाणामि) હું સમ્યક્ પ્રકારે જાણું છું. મારો આત્મા પરલોકથી એટલે બીજા ભવમાંથી અહીં આવ્યો છે એમ હું જાતિસ્મરણ જ્ઞાનથી જાણું છું. તેથી પરલોક પણ છે અને આત્મા પણ છે એમ સારી રીતે જાણવાથી તેની ના પાડનારા પાખંડીઓના મિથ્યાવચનથી હું નિવૃત્ત થયો છું; માટે તમે પણ નિવૃત્ત થાઓ. ૨૭.

તમારો આત્મા પરભવથી અહીં આવ્યો છે એમ તમે શી રીતે જાણો છો ? તે ઉપર કહે છે.—

अहमासि महापाणे, जुइमं वरिससओवमे। जा सा पाली महापाली, दिव्वा वरिससओवमा ॥ २८ ॥

અર્થ—(अहं) હું (महापाणे) મહાપ્રાણ નામના પાંચમા બ્રહ્મદેવલોકના એક વિમાનને વિષે (जुइमं) દ્યુતિમાન એટલે તેજસ્વી અને (वरिससओवमे) સો વર્ષની આયુષ્યવાળા મનુષ્યની ઉપમાવાળો (आसि) હતો. એટલે કે જેમ

वर्तमान काळे अहीं सो वर्षनी आयुष्यवाळो मनुष्य पूर्ण आयुष्यवाळो कहेवाय छे, तेम हुं पण त्यां पूर्ण आयुष्यवाळो देव हतो. तेमां (या) जे (पाली) पालि अने (महापाली) महापालि एवी (वरिससओवमा) सो सो वर्षे एक एक केशनो उद्धार करीए एवी उपमावाळी बे प्रकारनी (दिव्वा) दीव्य—देवभव संबंधी स्थिति छे, तेमांथी (सा) ते महापालि नामनी मारी दीव्य स्थिति हती. एटले दश सागरोपमनी स्थिति हती. अहीं पालि एटले पाळना जेवी पाळ. जेम पाळ जळने धारण करी राखे छे तेम आ पालि पण जीवित रूपी जळने धारण करी राखे छे. अर्थात् पालि एटले भवस्थिति कहेवाय छे. तेमां पालि एटले पल्योपमनी स्थिति अने महापालि एटले सागरोपमनी स्थिति जाणवी. २८. (पालाना दृष्टांते पल्योपमनी स्थिति कही छे ते पालि समजवी.)

से चुए बंभलोआओ, माणुस्सं भवमागओ । अप्पणो अपरेसिं च, आउं जाणे जहा तहा ॥ २९ ॥

अर्थ—(से) ते हुं (बंभलोआओ) ब्रह्मदेवलोक थकी (चुए) चव्यो थको (माणुस्सं) मनुष्य संबंधी (भवं) भवने (आगओ) पाम्यो छुं. तथा (अप्पणो) पोतानुं (च) अने (अपरेसिं) बीजा जीवोनुं (जहा) जे प्रकारे (आउं) आयुष्य होय (तहा) ते प्रकारे (जाणे) हुं जाणुं छुं. जेनुं जे प्रकारे-जेटलुं आयुष्य होय तेनुं ते ज प्रकारे-तेटलुं हुं जाणुं छुं, पण विपरीतपणे जाणतो नथी. २९.

आ प्रमाणे क्षत्रिय मुनिए पूछ्या विना पण प्रसंगथी पोतानो वृत्तांत कह्यो, हवे उपदेश आपवाने माटे कहे छे.—

णाणारुइं च छंदं च, परिवज्जिज्ज संजए। अणट्ठा जे अ सव्वत्था, इइ विज्जामणुसंचरे ॥ ३० ॥

अर्थ—(संजए) साधु (णाणारुइं च) अनेक प्रकारनी रुचिने एटले क्रियावादी विगेरेना मतवाळी इच्छाने वर्जे, तथा (छंदं च) अनेक प्रकारना पोतानी मतिए कल्पना करेला अभिप्रायने (परिवज्जिज्ज) वर्जे, तथा (जे) जे (अणट्ठा) प्रयोजन विनाना व्यापारो होय (अ) अने जे (सव्वत्था) हिंसादिक बीजा सर्व कार्यो होय ते सर्वने पण वर्जे. अथवा (सव्वत्था) सर्वत्र एटले सर्व क्षेत्रादिकने विषे जे प्रयोजन विनाना व्यापारो होय तेने वर्जे. (इइ) आ प्रकारनी (विज्जां) सम्यक् ज्ञान रूप विद्याने (अणुसंचरे) लक्ष्य करीने एटले आश्रीने हे राजर्षि! तमारे संयममार्गमां चालवुं. हुं पण आवी विद्याने ज अंगीकार करी संयममार्गमां चालुं छुं, माटे तमारे पण ते ज प्रमाणे चालवुं. ३०.

फरीथी क्षत्रियमुनि पोतानो ज आचार बतावे छे.—

पडिक्कमामि पसिणाणं, परमंतेहिं वा पुणो। अहो उट्ठिए अहोरायं, इइ विज्जा तवं चरे ॥ ३१ ॥

अर्थ—हे राजर्षि! हुं (पसिणाणं) शुभाशुभने जणावनारा अंगुष्ठप्रश्नादिकथी (पडिक्कमामि) निवृत्ति पाम्यो छुं, (वा पुणो) तथा वळी (परमंतेहिं) परना एटले गृहस्थीओना मंत्रोथकी एटले गृहकार्योना विचारोथी पण हुं निवृत्ति पाम्यो छुं. (अहो) आश्चर्य छे के आ प्रमाणे (अहोरायं) दिवस ने रात (उट्ठिए) धर्म प्रत्ये उद्यमवाळा कोइक ज महात्मा होय छे. (इइ) ए प्रमाणे (विज्जा) जाणता एवा तमे (तवं चरे) तपनुं ज आचरण करो. पण प्रश्नादिकनुं

सेवन न करो. ३१.

हवे संजय[1] नामना राजर्षिए पूछ्युं के—" तमे आयुष्यने शी रीते जाणो छो ? " तेनो उत्तर क्षत्रियमुनि आपे छे.—

जं च मे पुच्छसी काले, सम्मं सुद्धेण चेअसा। ताइं पाउकरे बुद्धे, तं नाणं जिणसासणे ॥३२॥

अर्थ—(सम्मं) सम्यक् प्रकारे (सुद्धेण) शुद्ध-निर्मळ (चेअसा) चित्तवाळा तमे (मे) मने (जं च) जे (काले) काळना विषयवाळुं आयुष्य (पुच्छसी) पूछो छो, (ताइं) ते आयुष्यने (बुद्धे) श्री महावीरस्वामीए अथवा श्रुतज्ञानीए (पाउकरे) प्रगट कर्युं छे, तेथी करीने हुं जाणुं छुं. (तं) ते (नाणं) ज्ञान (जिणसासणे) जिनशासनने विषे ज छे, बीजा बौद्धादिकना शासनमां नथी. तेथी तमारे जिनशासनने विषे ज उद्यम करवो, के जेथी हुं जिनशासनमां रह्यो थको तेना प्रसादथी जेम जाणुं छुं तेम तमे पण जाणी शकशो. ३२.

फरीथी उपदेश आपे छे.—

किरिअं रोअए धीरो, अकिरिअं परिवज्जए। दिट्ठीए दिट्ठिसंपन्ने, धम्मं चर सुदुच्चरं ॥ ३३ ॥

अर्थ—(धीरो) धीर एवो साधु (किरिअं) क्रियाने एटले जीवसत्ताने–जीवना होवापणाने (रोअए) पोताना आत्मा प्रत्ये रुचावे–खात्री करावे, तथा बीजाओने पण तेनी रुचि उपजावे. अथवा क्रिया एटले मोक्षमार्गनी साधनभूत

१ संजयने बदले संयत नाम पण केटलीक वार आवे छे.

प्रतिक्रमण, प्रतिलेखना आदि सम्यक् ज्ञानसहित सम्यक् अनुष्ठानरुप क्रियाने रुचावे-तेनापर रुचि करावे, तथा (अकिरिअं) जीवना नास्तिपणारूप अक्रियाने अथवा मिथ्यात्वीओए कल्पेली अज्ञानकष्टरूप अक्रियाने (परिवज्जए) सर्वथा वर्जे, तेथी धीर एवा साधु (दिट्ठीए) सम्यग्दर्शनवडे करीने (दिट्ठिसंपन्ने) सम्यक् ज्ञान सहित थाय. हे राजर्षि ! तमे पण सम्यग्दर्शने करीने सम्यक् ज्ञान सहित थइने (सुदुचरं) अत्यंत दुष्कर एवा (धम्मं) चारित्र धर्मने (चर) अंगीकार करो. ३३.

फरीथी क्षत्रियमुनि ज संजय राजर्षिने महापुरुषना दृष्टांतवडे स्थिर करवा माटे कहे छे.—

एअं पुण्णपयं सोच्चा, अत्थधम्मोवसोहिअं । भरहो वि भारहं वासं, चिच्चा कामाइं पव्वए ॥३४॥

अर्थ—(अत्थधम्मोवसोहिअं) जे प्रार्थना कराय ते अर्थ एटले स्वर्ग अने मोक्ष, तथा धर्म एटले ते स्वर्ग अने मोक्ष मेळववाना कारणभूत जिनभाषित धर्म, ते बन्नेवडे शोभतुं एवुं (एअं) आ (पुण्णपयं) पुण्यपद-उत्तम उपदेश (सोच्चा) सांभळीने (भरहो वि) भरतचक्रीए पण (भारहं वासं) भरतक्षेत्रने तथा (कामाइं) कामभोगने (चिच्चा) तजीने (पव्वए) प्रव्रज्या लीधी हती. अहीं " पुण्णपयं " ना अर्थ आ प्रमाणे करवा.—पुण्य एटले पवित्र-कलंक रहित-दूषण रहित एवुं पद एटले जिनेश्वरे कहेलुं सूत्र, अथवा पुण्य एटले पुण्यना कारणभूत पद एटले क्रियावादी विगेरे मत उपर रुचिनो त्याग करी शुद्ध धर्मनो प्ररूपणा करनार सूत्र. अथवा पूर्ण एटले संपूर्ण एवुं पद एटले ज्ञान, तेने सांभळीने भरत चक्री के जे सर्व राजाओमां मुख्य हता, तेणे पण आ चारित्रधर्मरूपी मार्गनो ज आश्रय कर्यो हतो, तेथी करीने तमारे पण

आ जिनभाषित मार्गनो ज आश्रय करवो योग्य छे.

भरत चक्रीनी संक्षिप्त कथा.

इंद्रनी आज्ञाथी कुबेरे अयोध्या नामनी नगरी बनावी. तेमां श्रीऋषभदेव स्वामी रहेता हता. तेमणे चारित्र ग्रहण कर्युं, त्यारे तेमना ज्येष्ठ पुत्र श्रीभरत चक्रवर्ती तेमां रहेता हता. ते चक्रीने चौद रत्नो अने नव निधिओ हता, बत्रीश हजार राजाओ तेनी सेवा करता हता, चोराशी लाख अश्व, रथ अने हाथीओ तेना सैन्यमां हता, छन्नु करोड पत्तिओ (पदाति) हता अने छन्नु करोड गामोना ते अधिपति हता, ते बत्रीश हजार देशोनुं पालन करता हता, अडतालीश हजार पत्तनोना स्वामी हता, बहोंतेर हजार पुरना अधीश्वर हता, नव्वाणुं हजार द्रोणमुखनुं ते रक्षण करता हता अने सोळ हजार यक्षो निरंतर तेनी सेवा करता हता. आ प्रमाणे छ खंड भरतक्षेत्रनुं ते अखंड रीते राज्य करता हता, तथा चोसठ हजार अंतःपुरनी स्त्रीओ साथे क्रीडा करता ते पूर्वना पुण्यरूपी वृक्षना पुष्पसदृश सुखने भोगवता हता. अष्टापद पर्वत उपर श्री ऋषभदेव स्वामीना निर्वाणने स्थाने तेमणे एक चैत्य करावी तेनी अंदर चोवीशे तीर्थंकरोनी पोतपोताना शरीरना प्रमाण अने वर्णवाळी प्रतिमाओ स्थापन करी हती तथा निरंतर तेमनी वंदना अर्चा करता हता. तेमज अति प्रीतिथी निरंतर साधर्मिकवात्सल्य करता हता. आ रीते ते भरतचक्रीए छ लाख पूर्व व्यतीत कर्या.

एकदा प्रातःकाळे अभ्यंगन, उद्वर्तन अने स्नान करी भरतचक्री सर्व वस्त्र अलंकार धारण करी आदर्शभवनमां गया. त्यां अरिसामां पोतानुं शरीर जोतां तेणे एक आंगळी मुद्रिका रहित होवाथी शोभा विनानी जोई, तेथी तेणे बीजी आंग-

ळीमांथी पण मुद्रिका काढी नांखी त्यारे ते पण शोभा रहित जोइ. पछी धीमे धीमे एक एक अलंकार उतारतां छेवटे तेणे समग्र अलंकारो उतार्या. त्यारे तेणे पोतानुं शरीर कमळ विनाना सरोवरनी जेवुं तद्दन शोभा रहित जोयुं. ते जोइ चक्रीए विचार्युं के—" अहो ! आ शरीर मात्र आगंतुक पदार्थो वडे ज शोभे छे, परंतु ते स्वभावथी तो कांइ पण सुंदर नथी. आ शरीरने स्नानादिक वडे संस्कार करी वस्त्र आभूषणो विगेरे पहेरावीए तोज ते शोभे छे, आवा असार देहने मूढ लोको सुंदर माने छे. वळी मनोहर अन्न, जळ, पुष्प, गंध, वस्त्र विगेरे उत्तम वस्तुओ पण स्त्रीना संगथी ब्रह्मचर्यनी जेम आ अशुचि शरीरना संगथी नाश पामे छे—अपवित्र थाय छे. तो मोटुं आश्चर्य छे के पंडितो पण बाळकनी जेम विवेक रहित थइ आवा असार शरीरने माटे अनेक प्रकारना पाप कर्मो करे छे ! परंतु मोक्षने आपनारुं आ मनुष्यपणुं पामीने घूतवडे चिंतामणिनी जेम शरीरने अर्थे कराता पापो वडे मारे तो आ मनुष्यपणुं हारी जवुं योग्य नथी." इत्यादि शुभ ध्यान करतां अधिक अधिक संवेगने पामेला ते चक्री मोक्षरूपी महेलनी नीसरणी समान क्षपकश्रेणिपर आरूढ थया. तरत ज चार घातीकर्मनो क्षय करी भाव चारित्रने पामी अज्ञानरूपी अंधकारनो नाश करवामां सूर्यसमान केवळज्ञानने पाम्या. ते वखते शक्र इंद्रे आवी चक्रीने कह्युं के—" हे पूज्य ! द्रव्यलिंगने अंगीकार करो, जेथी अमे दीक्षामहोत्सव तथा केवळज्ञाननो महोत्सव करीए." ते सांभळी तेमणे पोताना मस्तकपर पंचमुष्टि लोच करी शासनदेवताए आपेलो साधुवेष[1] अंगीकार कर्यो. पछी वादळांमांथी सूर्यनी जेम ते राजर्षि घर बहार नीकळ्या. तेमने व्रत अंगीकार करेला जोइ

---

१ इंद्रे पोतेज साधु वेष आप्यो एम पण मत्यंतरमां छे.

बीजा दश हजार राजाओए पण संसारनी वासना क्षीण थवाथी तेमनी साथे ज दीक्षा ग्रहण करी. पछी इंद्रादिक देवो तेमनो ज्ञान संबंधी महोत्सव करी पोतपोताने स्थाने गया. भगवान राजर्षि भव्यप्राणीओने बोध करता पृथ्वीपर विचरवा लाग्या.

भरतराजा कुमार अवस्थामां सीत्तोतेर लाख पूर्व रह्या, एक हजार वर्ष मांडलिक राजापणे रह्या, एक हजारे ओछा एवा छ लाख पूर्व चक्रवर्तीपणामां रह्या अने एक लाख पूर्व केवळीपणायुक्त दीक्षापर्यायमां रह्या. ए रीते कुल चोराशी लाख पूर्वनुं आयुष्य भोगवी भरतराजर्षि सर्व कर्मनो क्षय करी मोक्षपद पाम्या.

इति भरतचक्री कथा.

सगरो वि सागरंतं, भरहवासं नराहिवो । इस्सरिअं केवलं हिच्चा, दयाए परिनिव्वुए ॥ ३५ ॥

अर्थ—तथा (सगरो) सगर नामना (नराहिवो) नराधिप एटले चक्रवर्ती (वि) पण (सागरंतं) पूर्वादिक त्रण दिशामां सागर पर्यंत अने उत्तरदिशामां हिमवानपर्वत पर्यंत (भरहवासं) छ खंड भरतक्षेत्रने तथा (केवलं) परिपूर्ण (इस्सरिअं) ऐश्वर्यने (हिच्चा) तजीने (दयाए) दयाधर्मवडे (परिनिव्वुए) निर्वृत्ति—मोक्ष पाम्या. ३५.

सगर चक्रीनी संक्षिप्त कथा.

अयोध्या नामनी नगरीमां इक्ष्वाकु वंशमां जितशत्रु नामे राजा हता. तेने विजया नामनी राणी हती. ते राजाने

सुमित्र नामे नानो भाइ युवराज हतो, तेने यशोमती नामनी पत्नी हती. जितशत्रु राजानी राणी विजयाने एकदा चौद स्वप्नथी सूचित पुत्र उत्पन्न थयो, तेनुं अजित नाम पाड्युं. ते तीर्थंकर थया. सुमित्र युवराजनी पत्नी यशोमतीए पण चौद स्वप्नथी सूचित पुत्र प्रसव्यो. तेनुं सगर नाम पाड्युं. ते चक्रवर्ती थया. ते बन्ने कुमार युवावस्थाने पाम्या त्यारे तेमना मातापिताए महोत्सवपूर्वक तेमने राजकन्याओ परणावी. केटलेक काळे जितशत्रुराजाए पोताना राज्यपर अजितने स्थापन कर्या अने सगरने युवराज पदवी आपी. पछी जितशत्रु राजाए नाना भाइ सुमित्र सहित दीक्षा अंगीकार करी.

अजित राजाए केटलोक काळ राज्यनुं रक्षण करी सर्वतीर्थ प्रवर्तावना माटे सगरने राज्यपर स्थापन करी पोते चारित्र ग्रहण कर्युं. अनुक्रमे सगर राजाने राज्य करतां तेना राज्यमां चौद रत्नो उत्पन्न थयां, ते वडे छ खंड भरतक्षेत्रने साधी ते चक्रवर्ती थया. ते चक्रीने साठ हजार पुत्रो थया. तेओमां सर्वथी मोटो पुत्र जन्हु नामे हतो. एकदा जन्हुकुमारे सगर चक्रीने कोइक प्रकारे संतुष्ट कर्या, तेथी चक्रीए जन्हुकुमारने कह्युं के–" जे तारी इच्छा होय ते माग." जन्हुए माग्युं के–" हे पिता ! आपनी आज्ञाथी सर्व भाइओ सहित हुं चौदे रत्नो अने सर्व सैन्य साथे लइ पृथ्वीपर पर्यटन करुं एवी मारी इच्छा छे." ते तेनी इच्छा सगरचक्रीए मान्य करी. शुभ मुहूर्ते भाइओ सहित जन्हुकुमारे रत्नो अने सैन्य-साथे लइ प्रयाण शरु कर्युं. अनुक्रमे अनेक देशोमां फरतो फरतो ते अष्टापद पर्वत पासे आव्यो. त्यां पर्वतनी नीचे सर्व सैन्य मूकी पोते भाइओ अने परिवार सहित पर्वतपर चड्यो. त्यां भरतचक्रीए करावेलुं, मणिसुवर्णमय अने

सो स्तूपथी परिवरेलुं चैत्य जोयुं, तेनी अंदर रहेली चोवीशे तीर्थंकरोनी प्रतिमाओने जोइ तेने विधिपूर्वक वंदना करी. पछी जन्हुकुमारे मंत्रीओने पूछ्युं के—" कया पुण्यवंत पुरुषे आ अतिरमणीय जिनभवन कराव्युं छे ? " मंत्रीए कह्युं के—" हे कुमार ! तमारा पूर्वज भरत नामना चक्रवर्तीए आ चैत्य कराव्युं छे." ते सांभळी जन्हुकुमारे कह्युं के-" आवो अष्टापद जेवो बीजो कोइ पर्वत होय तो त्यां आपणे पण आवुं चैत्य करावीए. " एम कही ते कुमारे तेवो पर्वत शोधवा माटे चारे दिशामां पोताना पुरुषो मोकल्या. तेओ समग्र पृथ्वीपर भ्रमण करी पाछा आव्या अने कुमारने कह्युं के—" हे स्वामी ! आवो पर्वत कोइ पण ठेकाणे नथी. "

त्यारे जन्हुकुमारे कह्युं के—" जो आवो बीजो पर्वत न होय तो आपणे आ तीर्थनी ज रक्षा करीए. कारण के आ क्षेत्रमां काळना क्रमे करीने भविष्यमां लोको लोभी अने शठ थशे, तेथी तेओ आ तीर्थनो विनाश करनारा थशे. माटे नवुं कराववा करतां जूनानुं पालन करवुं एज मोटुं श्रेयकारक छे. " एम कही सर्व भाइओ सहित जन्हुकुमार दंडरत्न लइ ते वडे पर्वतनी चोतरफ खाइ खोदवा लाग्यो. ते वखते ते दंडरत्ने हजार योजन पृथ्वीने भेदी पाताळमां ज्यां नागकुमार- नां भवनो हतां तेमने पण भेदी नाख्यां. ते उपद्रवथी भय पामेला सर्व नागकुमारो शरणनी गवेषणा करतां नागराज ज्वलनप्रभ पासे गया, अने तेनी पासे पोताना भवनना उपद्रवनो वृत्तांत कह्यो. ते सांभळी ज्वलनप्रभ पण एकदम संभ्रांत थइ उभो थयो अने अवधिज्ञानवडे ते स्वरूप जाणी क्रोधथी धमधमतो सगर राजाना पुत्रो पासे आव्यो. तेणे तेओने कह्युं के—" हे राजपुत्रो ! तमे दंडरत्नवडे पृथ्वीने विदारतां अमारा भवनोमां उपद्रव कर्यो, ते तमे अवि-

चार्युं काम कर्युं छे." ते सांभळी नागराजना कोपने शांत करवा माटे जन्हुकुमारे तेने कह्युं के—" हे नागराज! अमारा पर प्रसन्न थाओ, कोपने संहरी ल्यो, अने अमारो आ एक अपराध क्षमा करो. अमोए आ कार्य तमारा भवनोने उपद्रव करवा माटे कर्युं नथी, परंतु आ अष्टापद तीर्थनी रक्षा करवा माटे तेनी फरती खाइ खोदी छे. हवे फरीथी अमे आवुं कार्य नहीं करीए." ते सांभळी शांत थयेलो ज्वलनप्रभ पोताने स्थाने गयो.

पछी जन्हुकुमारे पोताना भाइओने कह्युं के—" जो के आ खाइने कोइ ओळंगे तेम नथी, तो पण ते पाणी विना शोभती नथी, तेथी आ खाइने जळथी भरी दइए." एम कही दंडरत्नवडे गंगानदीना प्रवाहने वाळी ते खाइमां नांख्यो अने जळवडे ते खाइ भरी दीधी. ते जळ नागकुमारना भवनोमां पण पहोंच्युं. ते जळना प्रवाहथी त्रास पामेला नागकुमारना देवो अने देवीओ आमतेम नासवा लाग्यां. तेमने तेवी स्थितिवाळा जोइ ज्वलनप्रभ अवधिज्ञानना उपयोगथी सगरना पुत्रोनुं आ कार्य जाणी अति क्रोध पाम्यो, तेथी तेणे विचार कर्यो के—" अहो ! आ जन्हु विगेरे कुमारो महापापी छे, तेमनो एकवार अपराध तो में माफ कर्यो, तोपण तेओए फरीथी आ मोटो उपद्रव कर्यो, माटे हवे तेमना अविनयनुं फळ देखाडुं." एम विचारी ज्वलनप्रभे तेमनो विनाश करवा माटे मोटा दृष्टिविष सर्पो मोकल्या. तेओए खाइना जळमांथी बहार नीकळी ते कुमारो साहमुं जोयुं एटले तरत ज ते सर्वे सगर राजाना पुत्रो भस्मसात् थइ गया. ते जोइ समग्र सैन्यमां हाहाकार थइ रह्यो. तेमनो शोक दूर करवा माटे मुख्य मंत्रीए तेमने कह्युं के—" आ कुमारो तीर्थनी रक्षा करता हता, तेमां अवश्य भाविपणाने लीधे तेओनी आवी मरण अवस्था थइ छे, परंतु तेओ सद्गतिने ज पाम्या हशे, तो हवे शोक

शामाटे करो छो ? हवे तो आपणे शीघ्रपणे आपणा स्वामी पासे जवुं योग्य छे. " आ प्रमाणे मंत्रीनुं वचन सर्व सैन्ये अंगीकार कर्युं. पछी त्यांथी शीघ्र प्रयाण करी अनुक्रमे ते सैन्य अयोध्यापुरीनी समीपे आवी पहोंच्युं. त्यां सामंत राजाओए अने मंत्रीओए परस्पर विचार कर्यो के—" सर्व कुमारोना अकस्मात् विनाशनो वृत्तांत आपणे चक्री पासे शी रीते कही शकशुं ? ते सर्व कुमारो वळी मुवा अने आपणे अक्षत शरीरवाळा पाछा आव्या, ए वात पण आपणाने अत्यंत लज्जा उपजावे तेवी छे. तेथी आपणे सर्वे अग्निमां प्रवेश करीए. " आ प्रमाणे तेओ विचार करता हता, तेवामां तेमनी पासे एक वृद्ध ब्राह्मण आव्यो, तेणे ते सामंतो अने मंत्रीओ विगेरेने कह्युं के—" हे वीर पुरुषो ! तमे शा माटे आम आकुळ-व्याकुळ थया छो ? खेदने मूकी द्यो. आ संसारमां सुख के दुःख प्राप्त थवुं ते कांइ अद्भुत एटले नवाइनुं नथी. आ संसारमां कर्मने वश थयेला जीवो अनादिकाळथी सुख दुःख पाम्या ज करे छे. माटे तमे शोकनो त्याग करो. सगर राजा पासे कुमारोना विनाशनो वृत्तांत हुं ज कहीश. " ते सांभळी सामंतादिके ते ब्राह्मणनुं वचन अंगीकार कर्युं.

त्यारपछी ते ब्राह्मण कोइ मरी गयेला बाळकनुं मडदुं उपाडी " हा हा ! हुं लुंटायो. " एम बोलतो चक्रवर्तीना सभाद्वार पासे गयो. चक्रीए तेना विलापनो शब्द सांभळी तेने सभामां बोलाव्यो, अने पूछ्युं के—" हे ब्राह्मण ! तारुं शुं अने कोणे लुंट्युं छे ? " ब्राह्मण बोल्यो के—" हे देव ! मारे एक ज पुत्र हतो, ते सर्पदंश थवाथी मरण पाम्यो. ते दुःखथी हुं विलाप करुं छुं. माटे हे दयाना सागर ! तमे एने जीवाडो. " त्यारे चक्रवर्तीए वैद्यो अने मांत्रिकोने बोलावी ते बाळकने साजो करवा कह्युं. तेओए राजपुत्रोनुं मरण सांभळ्युं हतुं तेथी तेमांथी एक वैद्ये कह्युं के—" हे देव ! जेना घरमां

आज सुधी एक पण मनुष्यनुं मरण थयुं न होय तेने घेरथी राख मंगावो, एटले आ बाळकने अमे जीवतो करीशुं. ” ते सांभळी राजाए पोताना सेवकोने नगरीमां तेवी राख लाववा मोकल्या. तेओ आखी नगरीमां घेर घेर फरी फरीने पाछा आव्या अने तेमणे राजाने कह्युं के—“ हे स्वामी ! अमे दरेक घेर जइ तेवी राख मागी, त्यारे दरेक घरना माणसोए जवाब आप्यो के—आ घरमां अमारी माता मरी गइ छे, पिता मरी गया छे, बंधु मरी गयो छे, बहेन मरी गइ छे, स्त्री मरी गइ छे, भर्तार मरी गयो छे, विगेरे अनेकना मरण थयानुं जणाव्युं. कोइ पण एवुं घर न नीकळ्युं के ज्यां मनुष्योनां मरण थयां न होय. ” ते सांभळी राजाए ब्राह्मणने कह्युं के—“ हे विप्र ! आ प्रमाणे ज्यारे दरेक घेर अनेकनां मरण नीपजे छे त्यारे कोनो शोक करवो ? माटे हे ब्राह्मण ! तुं शोक मूकी दे, रुदन न कर, आत्महितनुं चिंतवन कर, तुं पण काळे करीने मरण पामीश. ” त्यारे विप्र फरीथी बोल्यो के—“ हे देव ! आप जे कहो छो ते हुं पण जाणुं छुं, परंतु हमणां तो पुत्र रहित थवाथी मारा कुळनो क्षय थयो छे, तेथी हुं अति दुःखी छुं. आप अनाथना नाथ छो अने दुःखीना वत्सल छो तथा आपनो प्रताप अस्खलित छे, तेथी मारा पुत्रने जीवाडी मने मनुष्यनी भिक्षा आपो. ” राजाए कह्युं—“ हे भद्र ! आनो प्रतिकार अशक्य छे. जेमां मंत्र, तंत्र, औषध के पराक्रम चाली शकतां नथी एवा अदृश्य विधातारूप शत्रु उपर कयो विद्वान पराक्रम करी शके ? माटे हे विप्र ! तुं शोक मूकी दे. परलोकनुं हित कर. जे मूर्ख होय ते ज मरेलानो के नष्ट थयेलानो शोक करे. ” ब्राह्मण बोल्यो—“ हे महाराजा ! आप कहो छो ते सत्य छे, के पुत्रना मरणथी पण तेना पिताए शोक करवो नहीं. तो आपने पण असंभवित एवा शोकनुं कारण थयुं छे, तेथी आप पण शोक करशो

नहीं." ते सांभळी संभ्रांत चित्ते राजाए पूछयुं के–" हे विप्र! मारे केवा प्रकारनुं शोकनुं कारण थयुं छे?" ब्राह्मणे कह्युं के—" हे देव! आपना साठ हजार कुमारो एकी वखते काळधर्म पाम्या छे."

आ वचन सांभळी चक्री जाणे वज्रथी हणायो होय तेम तत्काळ चेतना रहित थइ सिंहासनपरथी पृथ्वीपर पडी मूर्छित थया. सेवकोए शीतोपचार करी चक्रीनी मूर्छा दूर करी, त्यारे चक्री खुल्ले कंठे रुदन करी आ प्रमाणे विलाप करवा लाग्या के—" हा पुत्रो! हा हृदयवल्लभो! हा बंधुओने वहाला! हा शुभ स्वभाववाळा! हा विनयवंत पुत्रो! हा समग्र गुणोना निधान पुत्रो! मने अनाथने मूकी तमे केम गया? तमारा विरहथी पीडायेला मने एकवार तमारुं दर्शन आपो. हा निर्दय पापी विधाता! एकी वखते सर्व पुत्रोनो संहार करता तारा शा मनोरथ पूर्ण थया? हा कठोर हृदय! पुत्रोना मरणना असह्य दुःखथी ताप पाम्या छतां तारा सेंकडो ककडा केम नथी थता?" आ प्रमाणे विलाप करता चक्रीने ते ज ब्राह्मणे कह्युं के—" हे स्वामी! तमे हमणां ज मने उपदेश करता हता अने तमे ज केम शोक करो छो? कह्युं छे के—बीजानुं दुःख जोइ संसारनी असारता सुखे करीने कही शकाय छे, परंतु ज्यारे पोताना ज बंधुजनोना विनाशनुं दुःख पोताने प्राप्त थाय त्यारे तेनी सर्व धीरता चाली जाय छे. हे देव! एक पुत्रनुं मरण पण दुःसह छे, तो एकी साथे साठ हजार पुत्रोना मरणनुं शुं कहेवुं? तोपण सत्पुरुषो ज व्यसनने–दुःखने सहन करे छे, पृथ्वी ज वज्रपातने सहन करे छे. माटे धैर्यनुं अवलंबन करी शोकने दूर करो. विलाप करवाथी शुं फळ छे? कह्युं छे के–

शोक करवाथी कांइ रक्षण थतुं नथी, परंतु उलटो कर्मबंध थाय छे, तेथी करीने संसारनुं स्वरूप जाणनार पंडितो कदापि शोक करता नथी." आवां वचनोवडे ते ब्राह्मणे राजाने शांत कर्या. ते वखते पेला मंत्री अने सामंतोए पण शोक करता करता राजसभामां प्रवेश कर्यो. तेमने राजाए पुत्रोनो वृत्तांत पूछ्यो, एटले तेओए जे रीते बन्युं हतुं तेवी रीते सर्व स्वरूप यथार्थ कही बताव्युं अने प्रधान पुरुषोए राजाने धीरज आपी, एटले राजा अनुक्रमे उचित कार्यमां प्रवृत्त थया.

एकदा अष्टापद पासेना गाममां वसनारा लोकोए आवी चक्रीने प्रणाम करी विज्ञप्ति करी के—"हे देव ! आपना कुमारोए अष्टापदनी रक्षा माटे जे गंगानो प्रवाह आण्यो छे ते प्रवाह खाइथी बहार नीकळी वधीने नजीकना गामोने उपद्रव करे छे. तेथी आप ते उपद्रवनुं निवारण करो. कारण के आप सिवाय बीजा कोइनी तेवी शक्ति नथी." ते सांभळी चक्रीए पोताना पौत्र भगीरथने कह्युं के—"हे वत्स ! नागराजनी आज्ञा लइ दंडरत्नवडे खेंचीने गंगाना प्रवाहने समुद्रमां लइ जा." आ प्रमाणे पितामहनी आज्ञा अंगीकार करी भगीरथ अष्टापद पासे गयो. त्यां तेणे अट्ठम तप करी नागराजनी आराधना करी. त्यारे ते नागराजे प्रत्यक्ष थइ तेने कह्युं के—"हे वत्स ! हुं तने शुं करी आपुं ?" भगीरथे प्रणामपूर्वक विज्ञप्ति करी के—"आपनी अनुज्ञा होय तो हुं आ गंगाना प्रवाहने समुद्रमां लइ जाउं. कारण के अहींना लोकोने तेनो महा उपद्रव छे." ते सांभळी नागराजे तेने कह्युं के—"निर्भयपणे तुं तारुं इच्छित कर. हुं भरतखंडमां रहेनारा नागोने तने उपद्रव करतां अटकावीश." एम कही ते नागराज पोताने स्थाने गया. भगीरथे बळिदान अने पुष्पा-

दिकवडे सर्व नागोनी पूजा करी. त्यारथी लोकमां नागपूजा करवानी प्रवृत्ति थइ. पछी भगीरथे दंडरत्नवडे गंगाने खेंची घणा पर्वतो अने अरण्योने ओळंगी पूर्व समुद्रमां उतारी. जे ठेकाणे गंगा अने सागरनो संगम थयो ते स्थळे गंगासागर नामनुं तीर्थ थयुं. प्रथम जन्हुकुमारे गंगा नदी आणी तेथी तेनुं नाम जान्हवी कहेवाय छे अने पछी भगीरथे समुद्रमां पहोंचाडी तेथी तेनुं नाम भागीरथी पण कहेवाय छे. पछी नागोथी पूजातो भगीरथ अयोध्यामां आव्यो. तेना कार्यथी प्रसन्न थयेला चक्रीए तेनुं बहुमान करी तेने राज्यपर स्थापन कर्यो, अने पोते श्री अजितनाथ स्वामी पासे दीक्षा ग्रहण करी. सत्य प्रतिज्ञावाळा सगर राजर्षिए दुस्तप तप करी केवळज्ञान प्राप्त कर्युं, अने अनुक्रमे बोंतेर लाख पूर्वनुं कुल आयुष्य भोगवी छेवट कर्मनो क्षय करी मोक्षे गया.

एकदा भगीरथ राजाए कोइ ज्ञानी मुनिने पूछ्युं के—" हे भगवान ! जन्हु विगेरे साठ हजार भाइओ एकी वखते मरण पाम्या तेनुं शुं कारण ? ते कृपा करीने कहो. " त्यारे मुनि बोल्या के—" हे राजा सांभळो.—

एकदा कोइ मोटो संघ संमेतशिखरनी यात्रा करवा जतो हतो. ते मार्गमां मोटा अरण्यने ओळंगी पासेना गाममां आव्यो. ते गाममां सर्वे अनार्य लोको रहेता हता, तेथी तेओए संघने घणो उपद्रव कर्यो अने दुर्वचनो बोली तेमनां वस्त्र, अन्न अने धन विगेरे सर्व लूंटी लीधुं. आवुं महापाप करी ते गामना सर्व लोकोए ते संबंधी अशुभ कर्म बांध्युं. ते वखते त्यां एक भद्रिक परिणामवाळो कुंभार रहेतो हतो, तेणे गामना सर्व लोकोने कह्युं के—" आ यात्राळु लोकोने तमे उपद्रव

न करो. बीजा कोइ पण निरपराधी जनने उपद्रव करवामां महा पाप छे तो आ धार्मिक जनोने उपद्रव करवामां केटलुं बधुं पाप लागे ? तेथी करीने जो कदाच आ संघनी योग्य भक्ति करवानी तमारी शक्ति न होय तो भले भक्ति न करो, पण उपद्रव शा माटे करो छो ? " आ प्रमाणे कही ते कुंभारे गामलोकोने वार्या, तोपण तेओए संघने लुंट्यो. पछी संघ महाकष्टवडे त्यांथी छूटीने आगळ गयो. एकदा ते गामना रहीश कोइ आदमीए नजीकना नगरमां जइ चोरी करी. तेनी शोध करतो कोटवाळ तेने पगले पगले ते गाम सुधी आव्यो. पछी राजानी आज्ञाथी ते कोटवाळे ते गामना दरवाजा बंध करी चोतरफ अग्नि मूकी ते आखुं गाम बाळी नांख्युं. तेमां साठ हजार माणसो बळी गया. मात्र ते एक कुंभार ज ते दिवसे बहारगाम गयो हतो तेथी ते बच्यो. ते साठ हजार जीवो विराट देशना अंतिम (छेडे रहेला) गाममां कोद्रव नामना धान्यरूपे उत्पन्न थया. ते कोद्रानो एक मोटो ढग कर्यो हतो, तेटलामां त्यां एक मोटो हाथी आव्यो, तेना चरणना मर्दनथी ते सर्वे एकी वखते मरण पाम्या. पछी विविध प्रकारनी अति दुःखवाळी योनिओमां चिरकाळ सुधी तेमणे परिभ्रमण कर्युं. छेवटे कांइक सुकृत उपार्जन कर्युं तेथी ते सर्वे सगर चक्रीना पुत्रोपणे उत्पन्न थया. ते साठ हजार पुत्रो पूर्वनुं कर्म कांइक बाकी रहेलुं होवाथी आवा प्रकारनुं आकस्मिक मरण पाम्या.

पेलो कुंभार पण ते भवनुं आयुष्य पूर्ण थये मरीने कोइ नगरमां समृद्धिवाळो वणिक थयो. त्यां सुकृत करी मरण पामीने बीजा भवमां राजा थयो. त्यां राज्य भोगवी शुभकर्मना उदयथी मुनिधर्म अंगीकार करी शुद्ध चारित्र पाळी स्वर्गे

१ अरण्यमां मातृवाहक जातिना जीवपणे उत्पन्न थया. एम प्रत्यंतरमां छे.

गयो. त्यांथी आयुष्य पूर्ण थये च्चवीने हे भगीरथ राजा ! तमे अहीं जन्हुना पुत्र थया छो." आ प्रमाणे ज्ञानी मुनिना मुखथी सर्व वृत्तांत सांभळी भगीरथ राजा श्रावक धर्म अंगीकार करी पोताने स्थाने गयो.

इति सगर चक्री कथा.

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्डिओ । पव्वज्जमब्भुवगओ, मघवं नाम महायसो ॥ ३६ ॥

अर्थ—(महिड्डिओ) चौद रत्नो, नव निधान, वैक्रिय लब्धि विगेरे मोटी ऋद्धिवाळा अने (महायसो) मोटा यशवाळा (मघवं नाम) मघवा नामना (चक्कवट्टी) त्रीजा चक्रवर्तीए (भारहं वासं) छ खंड भरतक्षेत्रनो (चइत्ता) त्याग करी (पव्वज्जं) प्रव्रज्याने (अब्भुवगओ) अंगीकार करी. ३६.

मघवा चक्रीनी संक्षिप्त कथा.—

आ ज भरतक्षेत्रमां श्रावस्ती नामनी नगरीमां लक्ष्मीवडे समुद्रनो विजय करनार समुद्रविजय नामे राजा हतो. तेने भद्रा नामनी राणी हती. एकदा रात्रिने छेल्ले पहोरे ते राणीए चौद महास्वप्नो जोयां. जोइने तरत ज जागी गयेली राणीए हर्षथी ते वृत्तांत राजाने कह्यो. राजाए कह्युं के—" हे देवी ! आ स्वप्नोथी तुं चक्रवर्ती पुत्रने प्रसवीश." अनुक्रमे गर्भ समय पूर्ण थये राणीए पुत्र प्रसव्यो. राजाए मोटा उत्सवपूर्वक तेनुं मघवा नाम पाड्युं. ते अनुक्रमे युवावस्था पाम्यो त्यारे समुद्रविजय राजाए तेने राज्यपर स्थापन कर्यो. ते मघवा राजा राज्य करता हता तेवामां तेनी आयुधशाळामां

चक्ररत्न उत्पन्न थयुं. तेवडे ते छ खंड भरतक्षेत्र साधी त्रीजा चक्रवर्ती थया. पछी घणा काळ सुधी राज्यऋद्धिने भोगवता तेने एकदा संसारपरथी वैराग्य उत्पन्न थयो. तेथी तेणे विचार कर्यो के—" आ सर्वे रमणीय पदार्थो कर्मबंधना हेतु छे तथा अस्थिर छे. विद्युत्ना विलासनी जेम क्षणमां नाश पामनारा छे. तेथी मारे हवे आत्मकार्य साधवामां उद्यम करवो योग्य छे." इत्यादि विचार करी पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी मघवा चक्रीए प्रव्रज्या ग्रहण करी. अनुक्रमे चारित्रनुं पालन करी उग्र तप तपी कुल पांच लाख वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी ते राजर्षि सनत्कुमार नामना त्रीजा देवलोकमां देव थया.

इति मघवा चक्रीनी कथा.

सणंकुमारो मणुस्सिंदो, चक्कवट्टी महिड्ढिओ । पुत्तं रज्जे ठवित्ता णं, सो वि राया तवं चरे ॥३७॥

अर्थ—(महिड्ढिओ) मोटी ऋद्धिवाळो अने (मणुस्सिंदो) मनुष्योनो इंद्र एवो (सणंकुमारो) सनत्कुमार नामनो (चक्कवट्टी) चक्रवर्ती थयो हतो. (सो वि राया) ते चक्रीए पण (पुत्तं) पुत्रने (रज्जे) राज्यपर (ठवित्ता णं) स्थापन करी (तवं) तपनुं–चारित्रनुं (चरे) आचरण कर्युं हतुं. ३७.

सनत्कुमार चक्रीनी संक्षिप्त कथा.

आ ज भरतक्षेत्रमां कुरुजंगल नामना देशमां हस्तिनापुर नामनुं नगर छे. तेमां अश्वसेन नामे राजा हतो. तेने

सहदेवी नामनी राणी हती. तेणीए एकदा रात्रिने छेल्ले पहोरे चौद महास्वप्नो जोयां. ते जोइ राणीए राजाने कह्युं, त्यारे राजाए तेणीने चक्रवर्ती पुत्रनो जन्म थशे एम कही आनंदित करी. अनुक्रमे समय पूर्ण थये राणीए श्रेष्ठ पुत्र प्रसव्यो. राजाए महोत्सवपूर्वक तेनुं सनत्कुमार नाम पाड्युं. ते कुमार अनुक्रमे कल्पवृक्षना अंकुरनी जेम वृद्धि पामवा लाग्यो. ते कुमारनी साथे रमनारो महेंद्रसिंह नामनो तेने मित्र हतो. ते बन्ने कलाचार्य पासे साथे ज सर्व कळाओ शीख्या. अनुक्रमे सनत्कुमार युवावस्था पाम्यो.

एकदा वसंत ऋतुमां अनेक राजपुत्रो अने नगरना जनो सहित सनत्कुमार क्रीडा करवा माटे उद्यानमां गयो. त्यां अश्वक्रीडा करती वखते सर्व राजपुत्रो पोतपोताना अश्वपर आरूढ थइ अश्वक्रीडा करवा लाग्या. ते वखते सनत्कुमार पण पोताना जलधिकल्लोल नामना अश्वपर आरूढ थयो. पछी सर्व कुमारोए पोतपोताना अश्वो दोडाव्या. तेमां विपरीत शिक्षावाळो सनत्कुमारनो अश्व एटलो बधो वेगथी दोड्यो के जेथी बीजा सर्व कुमारोना अश्वो पाछळ रही गया. थोडा समयमां ज कुमार अश्व सहित अदृश्य थयो. ते वृत्तांत सांभळी राजा परिवार सहित तेनी पाछळ चाल्यो. परंतु ते वखते सखत वायु वावा लाग्यो, तेथी अत्यंत धूळ उडवाने लीधे मार्गमां कुमारना अश्वना पगलां पण लोपाइ गयां. तेथी राजा थाकीने निराश थइ पाछो वळ्यो.

त्यारपछी सनत्कुमारनी शोध माटे राजानी आज्ञा लइ महेंद्रसिंह एकलो ज चाल्यो. उन्मार्गे चालतां एक मोटा अरण्यमां आव्यो. त्यां एक वर्ष सुधी ते चोतरफ भम्यो. तेवामां एकदा तेणे एक मोटुं सरोवर जोयुं. तेमां रहेला कमळोना

सुगंधथी ते आनंद पाम्यो. ते वखते थोडेक दूर मधुर गीत अने वेणुनो शब्द तेना सांभळवामां आव्यो. तेथी महेंद्रसिंह ते शब्दने अनुसारे आगळ गयो. तो त्यां केटलीक तरुण स्त्रीओनी मध्यमां रहेला सनत्कुमारने तेणे जोयो. ते जोइ मनमां आश्चर्य पामी महेंद्रसिंहे विचार कर्यो के—" शुं आ हुं जोउं छुं ते भ्रांति छे के सत्य छे ? " आ प्रमाणे ते विचार करतो हतो, तेटलामां तेणे बंदीजनोनी आ प्रमाणे वाणी सांभळी.—" हे कुरुवंशना अलंकार ! सौभाग्यवडे कामदेवने जीतनार ! अश्वसेन राजाना पुत्र ! हे सनत्कुमार ! तमे चिरकाळ जय पामो. " आ प्रमाणे सांभळी महेंद्रसिंहे निश्चय कर्यो के—" आ सनत्कुमार ज छे. " पछी ते महेंद्रसिंह धीमे धीमे सनत्कुमारनी सन्मुख चाल्यो. पोताना मित्रने सामे आवतो जोइ सनत्कुमार पण हर्षथी तत्काळ उभो थइ तेनी सन्मुख चाल्यो. पासे आवतां महेंद्रसिंह कुमारना पगमां पड्यो, सनत्कुमारे तेने उभो करी गाढ आलिंगन कर्युं. बन्ने मित्रो अत्यंत हर्षित थया. पछी विद्याधरे आपेला आसन उपर ते बन्ने बेठा, अने विद्याधरो तेमनी पासे सन्मुख बेठा. पछी जेनां नेत्रोमांथी आनंदनां अश्रु झरतां हतां एवा सनत्कुमारे मित्रने पूछ्युं के—" हे मित्र ! तुं एकलो आ अटवीमां शी रीते आव्यो ? अने हुं अहीं छुं एम तें शी रीते जाण्युं ? मारा विरहमां मारा मातापिता शुं करे छे ? " आ प्रमाणे कुमारना पूछवाथी महेंद्रसिंहे सर्व वृत्तांत कुमारने कह्यो. पछी स्नान भोजन करी बन्ने मित्रो आनंदथी बेठा.

ते वखते महेंद्रसिंहे कुमारने पूछ्युं के—" हे कुमार ! ज्यारे तमने ते अश्व हरी गयो त्यारे तमे क्यां गया ? क्यां रह्या ? अने आवी समृद्धि शी रीते पाम्या ? " ते कहो. ते सांभळी सनत्कुमारे विचार्युं के—" मारे मारा मुखथी ज मारुं

चरित्र कहेवुं योग्य नथी. " एम विचारी पोते परणेली विद्याधरनी पुत्री विपुलमती नामनी प्रियाने तेणे संज्ञा करी ' ते कहेशे ' एम निश्चे कह्युं अने पोते गुप्त थयो.

त्यारपछी विपुलमती प्रज्ञप्ति विद्याना बळथी कुमारनुं वृत्तांत जाणी महेंद्रसिंहने कहेवा लागी के—" ते वखते तमारा देखतां ज कुमारने ते अश्व एक मोटा वनमां लइ गयो. रात दिवस निरंतर चालतो ते अश्व बीजे दिवसे मध्यान्ह समय सुधी चाल्यो. ते वखते भूख अने तरसने लीधे तथा थाकने लीधे ते अश्वना मुखमांथी जिव्हा बहार नीकळी गइ. तरत ज ते पृथ्वीपर पड्यो अने मृत्यु पाम्यो. त्यारपछी कुमार तेनापरथी उतरी पगवडे ज चालवा लाग्या. अत्यंत तृषा लागवाथी जळने माटे चोतरफ भमवा लाग्या. लांबा मार्गना श्रमथी तेम ज शरीरना कोमळपणाथी चालवामां पण ते अशक्त थया. तेवामां थोडे दूर एक सप्तच्छद वृक्ष तेना जोवामां आव्यो. त्यां महाकष्टथी पहोंची तेनी छायामां बेठा, अने आंखे अंधारां आववाथी त्यां ज पडी गया. आ अवसरे कुमारना पुण्यप्रभावथी वनमां रहेनारा कोइ यक्षे शीतळ जळ लावी कुमारना सर्व अंगे जळ छांटी तेने सचेतन कर्या. पछी कुमारे ते जळनुं पान करी यक्षने पूछयुं के—"तमे कोण छो ? अने आ जळ तमे क्यांथी लाव्या ?" यक्षे जवाब आप्यो के—" हुं आ वनमां रहेनार यक्ष छुं. आ जळ हुं मानस सरोवरमांथी लाव्यो छुं. " कुमारे कह्युं—" जो तमे मने ते सरोवर देखाडो तो हुं तेमां स्नान करी शांत थाउं. " ते सांभळी ते यक्ष कुमारने पोताना हस्ततळमां राखी मानस सरोवरे लइ गयो. त्यां असिताक्ष नामे एक यक्ष रहेतो हतो. ते कुमारनो पूर्वभवनो वैरी हतो. तेथी कुमारने जोइ ते यक्ष

---

१ भावविजयजीनी टीकामां बकुलमती नाम आवे छे.

क्रोध पाम्यो. तेणे कुमारने कष्टमां नांखवा माटे प्रथम मोटा वृक्षोने पण उखेडी नांखे एवो वायु विकुर्व्यो, अने कुमार उपर एक मोटुं वृक्ष उपाडीने नांख्युं, ते वृक्षने कुमारे आवतां ज मुठी मारीने दूर फेंकी दीधुं. पछी यक्षे धूळवडे आखुं विश्व अंधकारमय करी दीधुं. भयंकर अट्टहासने मूकता, धूमाडा जेवा श्याम शरीरवाळा, जाज्वल्यमान ज्वाळावडे विकराळ मुखवाळा अने भयंकर आकृतिवाळा पिशाचो विकुर्व्या. तेनाथी पण कुमार भय पाम्या नहीं, त्यारे ते अधम यक्षे नागपाशथी तमारा मित्रने बांधी लीधा. ते नागपाशने तरत ज कुमारे जीर्ण रज्जुने जेम हाथी तोडी नांखे तेम तोडी नांख्या. पछी यक्ष हाथना प्रहारवडे कुमारने मारवा आव्यो, तेने कुमारे एक मुठी मारी पाडी दीधो. तरत ज यक्षे सावधान थइ अत्यंत क्रोधथी कुमारने लोहना मुद्गरवडे प्रहार कर्यो. ते प्रहारथी छेदायेला वृक्षनी जेम आर्यपुत्र पृथ्वीपर पडी गया. तेनापर ते पापी यक्षे मोटो पर्वत उपाडीने नांख्यो. तेनाथी कुमारनुं शरीर अत्यंत पीडावाथी ते मूर्छा पाम्या. थोडा वखत पछी सावधान थइ कुमार ते यक्षनी साथे बाहुयुद्ध करवा लाग्या. तेमां कुमारे हाथरूपी मुद्गरथी ते यक्षने एवो प्रहार कर्यो के ते यक्ष तत्काळ प्रचंड वायुथी हणायेला वृक्षनी जेम पृथ्वीपर पडी गयो अने जाणे मृत्यु पाम्यो होय तेम चेष्टा रहित थइ गयो, परंतु देव होवाथी ते मरण पाम्यो नहीं. पछी बूम पाडीने ते यक्ष एवी रीते नाशी गयो के फरीथी कोइ पण वखत ते देखायो ज नहीं.

ते वखते जे विद्याधरो कौतुकथी तेमनुं युद्ध जोता हता. तेओए कुमारना मस्तक उपर पुष्पवृष्टि करी अने बोल्या के– " आ कुमारे यक्षनो पराभव कर्यो. " त्यारपछी कुमारे इच्छा प्रमाणे ते सरोवरमां क्रीडापूर्वक स्नान कर्युं. त्यांथी बहार

नीकळी कुमार आगळ चाल्या. तेटलामां थोडे दूर जतां ते ज वनमां रहेली विद्याधरोनी आठ पुत्रीओ तेना जोवामां आवी. ते कन्याओए पण कुमारने स्नेहयुक्त दृष्टिवडे जोया. ते वखते कुमारे विचार्युं के—" आ कन्याओ अहीं क्यांथी आवी हशे ? तेमनो वृत्तांत हुं पूछी जोउं." एम विचारी कुमार तेमनी पासे गया अने मधुर वाणीथी तेमने पूछ्युं के—" हे बाळाओ ! तमे क्यांथी आवी छो ? अने आ शून्य अरण्यमां केम रही छो ?" तेओ बोली के—" हे भाग्यशाळी ! अहीं पासे ज प्रियसंगमा नामनी अमारी नगरी छे. तमे पण त्यां चालो." एम कही दासीए कुमारने मार्ग बताव्यो, ते मार्गे कुमार नगरीमां गया. त्यां कंचुकी पुरुषो कुमारने राजमंदिरमां लइ गया. ते नगरीमां भानुवेग नामे राजा छे. तेणे कुमारने जोइ उभा थइ आसन आपी तेनो सत्कार कर्यो. पछी राजाए कुमारने कह्युं के—" हे भाग्यवंत ! तमे आ मारी आठ कन्याना पति थाओ. कारण के पहेलां अहीं एक अर्चिमाळी नामना मुनि आव्या हता. तेमणे मने कह्युं हतुं के—" असिताक्ष नामना यक्षनो जे पराभव करशे ते आ आठे कन्याओनो स्वामी थशे. माटे तमे आ कन्याओने परणो." ते सांभळी कुमारे तेनुं वचन अंगीकार कर्युं. एटले राजाए मोटा उत्सवपूर्वक पोतानी आठे पुत्रीओ साथे तेनां लग्न कर्यां. ते ज रात्रिए हाथे बांधेला कंकण सहित कुमार ते आठे प्रियाओनी साथे शयनगृहमां पर्यंक उपर सुता हता त्यांथी तेने उपाडी पेला यक्षे दूर फेंकी दीधा. प्रातःकाळे कुमार जागीने जुए छे तो तेणे पोताने अरण्यमां पृथ्वीपर पडेलो जोयो. तेथी आश्चर्य पामी कुमारे विचार्युं के—" आ सर्व विवाहादिक सत्य के असत्य छे ?" एम विचारतां हाथपर दृष्टि नांखी तो हाथे कंकण बांधेलुं जोयुं. पछी खेद पामी कुमार ते ज अरण्यमां आगळ चाल्या. केटलेक दूर गया त्यारे तेणे एक पर्वतना

शिखरपर मणिमय स्तंभवाळो एक मनोहर प्रासाद जोयो. ते जोइ कुमारे विचार्युं के—“ आ पण कोइ माया ज हशे. ” एम विचारी कुमार ते तरफ चाल्या. पासे जतां कुमारे ते महेलमां करुणस्वरे रोती कोइ स्त्रीनो शब्द सांभळ्यो. पछी कुमार ते महेलमां पेठा, अने अनुक्रमे सातमे माळे पहोंच्या. त्यां तेणे एक कन्याने रोती जोइ. ते कन्या रोती रोती बोलती हती के—“ कुरुवंशरूपी आकाशतळमां चंद्र समान हे सनत्कुमार ! आ भवमां तमे मारा पति न थया तो आवता भवमां मारा भर्ता थजो. ” एम वारंवार बोलती ते रुदन करती हती. कुमारने जोइ तेणीए रोतां रोतां ज तेने आसन आप्युं. कुमारे तेनी उपर बेसी ते कन्याने पूछ्युं के—“ हे भद्रे ! सनत्कुमारनी साथे तारे शो संबंध छे के जेथी तुं तेनुं आ प्रमाणे स्मरण करे छे ? ” त्यारे ते बोली के—“ हे कुमार ! मारा मनोरथ मात्रथी ज भर्ता छे. ते एवी रीते के—“ साकेतपुरमां सुरथ नामे राजा छे अने तेने चंद्रयशा नामनी राणी छे. तेनी कुक्षिथी उत्पन्न थयेली हुं सुनंदा नामनी तेमनी पुत्री छुं. हुं युवावस्थाने पामी त्यारे मारा पिताए मारे माटे अनेक राजपुत्रोनां चित्रो दूतो मारफत मंगावी मने देखाड्यां. परंतु कोइ पण राजपुत्र तरफ मारुं मन आकर्षायुं नहीं. एकदा सनत्कुमारनुं चित्र दूते लावीने मने देखाड्युं. ते जोइ मारुं चित्त आनंद पाम्युं. मने तेनापर अत्यंत मोह थवाथी तेनुं ज ध्यान धरती हुं मारे घेर रहेली हती. तेटलामां मने कोइ विद्याधर कुमार हरीने अहीं लाव्यो, अने मने अहीं विद्याथी विकुर्वेला महेलमां मूकी पोते कोइक ठेकाणे गयो छे. ” आ प्रमाणे ते कन्याए पोतानो वृत्तांत कह्यो, तेटलामां तेने उपाडी लावनार अशनिवेग विद्याधरनो पुत्र वज्रवेग त्यां आव्यो. तेणे कुमारने जोइ क्रोध पामी तेने आकाशमां उछाळ्या. ते जोइ ते कन्या हाहाकार करती मूर्छा खाइ पृथ्वीपर पडी, तेटलामां

सनत्कुमारे आकाशमांथी गाढ त्रासी; ते विद्याधर कुमारे एक मुठीना प्रहारथी ज मरणने शरण कर्यो. पछी कुमारे ते कन्याने पोतानो वृत्तांत कही तेनुं पाणिग्रहण कर्युं. ते सुनंदा आगळ जतां सनत्कुमारनुं स्त्रीरत्न थइ.

त्यारपछी त्यां ते वज्रवेगनी बहेन संध्यावळी आवी. तेणी प्रथम तो पोताना भाइने मारेलो जोइ कुमारपर अत्यंत कोप पामी, पण पछी तरत ज तेने निमित्तियानुं कहेलुं वचन याद आव्युं के—" तारा भाइनो जे वध करशे, ते तारो पति थशे. " आ वचन स्मरणमां आववाथी शांत थयेली तेणीए कुमारने विज्ञप्ति करी के—" हे स्वामी ! हुं अहीं तमारी साथे लग्न करवा आवी छुं, माटे मने अंगीकार करो. " त्यारे कुमार तेणीने पण त्यां ज परण्या. आ अवसरे कुमारनी पासे जे विद्याधर राजाओ आव्या तेओए कुमारने प्रणाम करी कह्युं के—" हे देव ! अशनिवेग विद्याधरे विद्याना बळथी पोताना पुत्रनुं मरण जाण्युं छे तेथी ते तमारी साथे युद्ध करवा आवे छे. आ वृत्तांत तमने जणाववा माटे चंद्रवेग अने भानुवेग नामना विद्याधरोए पोताना पुत्रो हरिश्चंद्र अने चंद्रवेग नामना अमने बेने तमारी पासे मोकल्या छे अने आ कवच तथा रथ तेमणे मोकल्या छे. तथा ते बन्ने भाइओ चंद्रवेग अने भानुवेग के जे तमारा ससरा थाय छे तेओ पण मोटा सैन्य सहित हमणां ज तमारी सेवा करवा माटे अहीं आवे छे. " आ प्रमाणे तेओ वात करता हता तेटलामां ते चंद्रवेग अने भानुवेग पण सैन्य सहित आवी पहोंच्या. पछी संध्यावळीए पोताना पति सनत्कुमारने प्रज्ञप्ति नामनी महाविद्या आपी. त्यारपछी चंद्रवेग अने भानुवेग सहित सनत्कुमार संग्राम करवा चाल्यो,

एटलामां ते अशनिवेग मोटुं सैन्य लइ तेनी सन्मुख आव्यो. तेनी साथे प्रथम चंद्रवेग अने भानुवेग युद्ध करवा लाग्या. तेमणे चिरकाळ युद्ध करी अशनिवेगनुं सैन्य भांग्युं, त्यारे अशनिवेग पोते युद्ध करवा लाग्यो. तेनी सामे सनत्कुमारे पोते युद्ध कर्युं. तेमां अशनिवेगे प्रथम कुमार उपर महोरग शस्त्र मूक्युं, तेने कुमारे गरुडास्त्र वडे कापी नांख्युं. फरीथी अशनिवेगे आग्नेय शस्त्र मूक्युं, तेने कुमारे वारुणास्त्र वडे कापी नांख्युं. फरीथी तेणे वायव्यास्त्र मूक्युं तेने कुमारे शैलास्त्र वडे कापी नांख्युं. पछी अशनिवेग धनुष लइ कुमार उपर बाणोनी वृष्टि करवा लाग्यो, त्यारे कुमारे अर्धचंद्र बाण मूकी तेना धनुषनी प्रत्यंचा ज कापी नांखी. त्यारपछी हाथमां खड्ग लइ ते अशनिवेग कुमार तरफ दोड्यो, तेना आवतांनी साथे ज तमारा मित्रे तेनो हाथ कापी नांख्यो. तोपण क्रोधथी अंध थयेलो ते अशनिवेग कुमार सामे दोड्यो त्यारे विद्याए आपेला चक्रवडे आर्यपुत्रे तेनुं मस्तक छेदी नांख्युं. ते वखते ते विद्याधर राजानी सर्व राज्यलक्ष्मी प्रतिवासुदेवनी लक्ष्मी जेम वासुदेव पासे जाय तेम मारा पतिने प्राप्त थइ.

आ प्रमाणे अशनिवेगने हणी चंद्रवेग अने भानुवेग सहित सनत्कुमार आकाश मार्गे रथमां बेसी ते महेलमां आव्या. त्यां जय मेळवीने आवेला पोताना पतिने जोइ हर्षित थयेली सुनंदा अने संध्यावळीए तेनुं स्वागत कर्युं. पछी ते बन्ने प्रियाओने साथे लइ मारा पति चंद्रवेगादिक सहित वैताढ्य पर्वतपर आव्या. त्यां सर्व विद्याधरोए मळी कुमारनो महाराज्याभिषेक कर्यो. त्यां विद्याधर राजाओथी सेवाता तमारा मित्र केटलोक वखत सुखे रह्या.

एकदा मारा पिता चंद्रवेगे कुमारने विज्ञप्ति करी के—" हे स्वामी सनत्कुमार ! पहेलां अर्चिमाळी नामना ज्ञानी

मुनिए मने कह्युं हतुं के–तारी सो कन्याने तथा भानुवेगनी आठ कन्याने जे परणशे ते सनत्कुमार अवश्य चोथा चक्रवर्ती थशे. ते आजथी एक महिने मानससरोवरे आवशे. तापथी अने श्रमथी व्याकुळ थयेला तेने असिताक्ष नामनो पूर्व भवनो वेरी यक्ष जोशे." आटलुं सांभळी कुमारे चंद्रवेगने पूछयुं के—"ते यक्ष मारो पूर्व भवनो वैरी शी रीते थयो छे? ते तमे जाणता हो तो कहो." त्यारे चंद्रवेगे मुनिना मुखथी तेनो पूर्व भव सांभळ्यो हतो, तेथी तेणे आ प्रमाणे तेनो पूर्व भव कह्यो.

आ भरत क्षेत्रमां कांचनपुर नामनुं नगर छे. तेमां पराक्रमवडे पृथ्वीनुं आक्रमण करनार विक्रमयशा नामे राजा हतो. ते राजाने विश्वमां मनोहर एवी पांच सो राणीओ हती. ते नगरमां नागदत्त नामे एक धनवान सार्थवाह हतो. तेने रूप, लावण्य, सौभाग्य अने यौवनना गुणोवडे देवांगनानो पण पराभव करनारी विष्णुश्री नामनी भार्या हती. एकदा राजाए ते मनोहर स्त्रीने जोइ कामातुर थवाथी तेणीनुं हरण करी तेणीने पोताना अंतःपुरमां राखी. पोतानी प्रियानुं हरण कर्युं जाणी वियोगथी व्याकुळ थयेलो नागदत्त रात्रिदिवस चिंता करवाथी उन्मत्त थइ प्रलाप करवा लाग्यो के—"हा चंद्रमुखी! तुं क्यां गइ? मने दर्शन आप." इत्यादिक बोलतो ते नगरमां भमवा लाग्यो. विक्रमयशा राजा समग्र लोकापवादनो त्याग करी निर्लज्ज पणे ते विष्णुश्रीनी साथे क्रीडा करवा लाग्यो. तेमां एवो लीन थइ गयो के पोताना अंतःपुरमां रहेली पांचसो राणीओमांथी कोइनुं नाम पण लेतो नहोतो. एकदा ते सर्व राणीओए विचार करी कांइ कार्मणादिक करी ते विष्णुश्रीने मारी नांखी. तेणीना मरणथी राजा अत्यंत शोकातुर थयो, ते पण नागदत्तनी जेम उन्मत्त

थयो, तेथी विष्णुश्रीना शरीरने अग्निदाह करवा दीधो नहीं. तेथी मंत्रीओए विचार करी राजानी दृष्टि चूकावी ते विष्णुश्रीनुं शरीर त्यांथी उपडावी एक अरण्यमां मूकाव्युं. तेनुं शरीर नहीं जोवाथी राजाए अन्न जळनो त्याग कर्यो. ते जोइ मंत्रीओए विचार्युं के—" आ राजा ! विष्णुश्रीनुं शरीर जोया विना मरण पामशे. " एम विचारी राजाने वनमां लइ जइ तेओए तेनुं शरीर बताव्युं. ते वखते ते शरीरमांथी दुर्गंधी पाणी नीकळतुं हतुं, आखा शरीरमां कीडा पडी गया हता, गीध पक्षीओए तेना स्तन ठोली नांख्या हता, कागडाओए तेनां नेत्रो काढी नांख्यां हतां, शीयाळोए तेनां आंतरडां खेंची काढ्यां हतां, अने आखे शरीरे कीडीओ चटकती हती. आवुं विष्णुश्रीनुं बीभत्स शरीर जोइ राजाए विचार कर्यो के " अहो ! आ असार संसारमां कांइ पण सारवाळी वस्तु देखाती नथी. में आ विष्णुश्रीना शरीरने चिरकाळ सुधी साररूप मान्युं हतुं ते मारी मूढताने धिक्कार छे. रे जीव ! जेने माटे तें कुळ, शीळ, यश, लज्जा ए सर्वनो त्याग कर्यो, तेनी आज आवी दशा थइ, ते हे उन्मत्त ! तुं जो. प्रिया मानीने जेने एक क्षणवार पण में मारा शरीरथी दूर करी नहोती तेने पण जोइने अत्यारे मारुं शरीर जाणे टाढ चडी होय तेम कंपे छे. हवे आ पापरूपी पंकथी मलिन थयेला मारा आत्माने धर्मक्रियारूपी जळवडे मारे निर्मळ करवो योग्य छे. " आ प्रमाणे विचार करी वैराग्य पामी राजाए राज्य, देश, अंतःपुर अने स्वजनवर्ग ए सर्वनो त्याग करी सुव्रत नामना आचार्य पासे जैनी दीक्षा ग्रहण करी. पछी उपवास, छठ्ठ, अट्ठम विगेरे विचित्र तपवडे आत्माने भावता ते राजर्षि छेवटे संलेखना करी आयुष्यने क्षये सनत्कुमार नामना त्रीजा देवलोकमां देव थया. त्यांथी आयुष्य पूर्ण थये चवीने रत्नपुर नामना नगरमां जिनधर्म नामे श्रेष्ठीपुत्र थयो. ते बाल्या-

यथार्थीज श्रावकधर्मनुं पालन करतो हतो.

अहीं नागदत्त सार्थवाहे विष्णुश्री पत्नीना विरहथी दुःख पामी आर्तध्यानथी मरण पामी अनेक वार तिर्यंच योनिमां भ्रमण कर्युं. पछी सिंहपुर नामना नगरमां ते अग्निशर्मा नामनो ब्राह्मण थयो. एकदा पुण्यनी आशाथी ते त्रिदंडी थयो. पछी द्विमासादिकनो तप करतो ते फरतो फरतो एकदा रत्नपुर नगरे आव्यो. त्यां ते वखते नरवाहन नामे राजा हतो, ते त्रिदंडीनो भक्त हतो. तेथी आ तपस्वी छे एम जाणी राजा पोताने घेर तेने पारणुं करवा लइ गयो. ते वखते त्यां दैवयोगे जिनधर्म आवेलो हतो तेने ते त्रिदंडीए जोयो. तेने जोतां ज तत्काळ पूर्वभवना वेरने लीधे ते त्रिदंडी तेना पर अत्यंत क्रोध पाम्यो. पछी त्रिदंडीए राजाने कह्युं के—" हे राजा ! अत्यंत उष्ण पायसनो भरेलो थाळ आ श्रेष्ठीनी पीठपर मूकी मने जमाडो तो हुं जमुं. " ते सांभळी राजाए कह्युं—" हे पूज्य ! बीजा कोइ माणसनी पीठपर थाळ मूकीने तमने हुं जमाडुं, पण आ श्रेष्ठीने माटे तमे आग्रह न करो. " ते सांभळी क्रोध पामेला त्रिदंडीए फरीथी कह्युं के—" आनी ज पीठपर थाळ मूकीने जमीश, नहीं तो अहीं जमीश नहीं, बीजे ठेकाणे जइश. " ते सांभळी राजा तेनो भक्त हतो, तेथी तेणे तेनुं वचन अंगीकार कर्युं. पछी राजानी आज्ञा थवाथी जिनधर्म श्रेष्ठीए पोतानी पीठ तेनी पासे धरी, एटले ते तापस तेनापर अत्यंत उष्ण पायसनो थाळ मूकी खावा लाग्यो. ते विशुद्ध बुद्धिवाळा श्रावके पण ते थाळनो ताप शांतिथी सहन कर्यो, अने 'आ पोताना ज कर्मनो विपाक—उदय छे' एम विचारी पोते समभावमां रह्यो. ज्यारे ते त्रिदंडी जमी रह्यो त्यारे राजाना सेवकोए श्रेष्ठीनी पीठपरथी ते थाळ लइ लीधो—उपाडयो, तेनी साथे ते श्रेष्ठीनी पीठनी

त्वचा, रुधिर अने मांस पण उखडी गयां. त्यारपछी शेठ पोताने घेर गयो. त्यां स्वजनो तथा नगरजनोनो यथायोग्य सत्कार करी ते सर्वने खमावी जिनधर्मे तत्काळ गुरु पासे जइ जैनी दीक्षा ग्रहण करी. पछी नगर बहार जइ पर्वतना शिखर-पर चडी ते मुनि अनशन करी पंदर दिवस सुधी पूर्वदिशा सन्मुख कायोत्सर्गे उभा रह्या. ए रीते एक एक पखवाडीयुं अनुक्रमे बीजी त्रण दिशामां कायोत्सर्गे रह्या. ते वखते तेनी पीठनुं मांस कागडा, शीयाळ विगेरे खावा लाग्या, तेनी तीव्र वेदना सहन करी मरण पामीने सौधर्म देवलोकमां इंद्र थया. ते तापस पण मरण पामी पोते करेला आभियोग्य कर्मवडे ते ज इंद्रनुं वाहन ऐरावण हाथी थयो. त्यांथी चवीने ते त्रिदंडीनो जीव मनुष्य अने तिर्यंचोमां भ्रमण करी हाल असिताक्ष नामनो यक्ष थयो छे, अने इंद्र पण त्यांथी चवी हस्तिनापुरमां सनत्कुमार नामे चक्री थया छे. आ प्रमाणे ते मुनिना कहेवाथी में तमारो पूर्वभव तमने कह्यो. तथा असिताक्ष यक्षना वैरनुं कारण पण कह्युं.

तो हे स्वामी सनत्कुमार! भानुवेगनी आठ कन्या तमे परण्या छो. हवे मारी सो कन्याओने परणी मने कृतार्थ करो." आ प्रमाणे चंद्रवेगनुं वचन सांभळी कुमारे तेनी मागणी अंगीकार करी. एटले मारा पिता चंद्रवेग कुमारने लइ पोताना नगरमां आव्या. त्यां तमारा मित्र हुं विगेरे सो कन्याओने परण्या. त्यांथी कुमार सो पत्नीओने लइ अहीं आव्या अने कुल एक सो ने दश प्रियाओ साथे भोग भोगववा लाग्या. त्यारपछी आजे कुमारे कह्युं के—"अमे यक्षने जे ठेकाणे जीत्यो हतो त्यां आजे जवुं छे." एम कही ते अमने सर्वने लइ अहीं आव्या. अहीं रहेला कुमार नाटक जोता हता तेटलामां हे महेंद्रसिंह! तमे अहीं आवी पहोंच्या एटले तमने कुमारनो तथा अमारो मेळाप थयो."

આ પ્રમાણે વિપુલમતીએ મહેંદ્રસિંહને કુમારનો સર્વ વૃત્તાંત કહ્યો, તેટલામાં સનત્કુમાર જાગૃત થયા. પછી મહેંદ્રસિંહને સાથે લઇ કુમાર સર્વ વિદ્યાધરો અને પરિવાર સહિત વૈતાઢ્ય પર્વતપર ગયા. ત્યાં અવસર પામીને મહેંદ્રસિંહે કુમારને વિજ્ઞપ્તિ કરી કે– " હે કુમાર ! તમારા માતપિતા તમારા વિરહથી મહાકષ્ટે કાળ નિર્ગમન કરે છે. માટે તેમના દર્શન માટે પ્રસન્ન થઇને ત્યાં પધારો." આ પ્રમાણે મિત્રનું વચન સાંભળતાં જ કુમાર માતાપિતાનાં દર્શન કરવામાં ઉત્કંઠિત થયો. તેથી તરત જ સર્વ પ્રિયાઓ અને મિત્ર સહિત કુમાર અનેક વિદ્યાધરોને સાથે લઇ સંખ્યાબંધ વિમાનોવડે આકાશમાં સેંકડો સૂર્યોને દેખાડતો ચાલ્યો. આકાશ માર્ગે અનેક હસ્તી અને અશ્વાદિકપર આરૂઢ થઇ ઇંદ્રની ફરતા દેવોની જેમ અનેક વિદ્યાધર રાજાઓ પોતપોતાના સૈન્ય સહિત કુમારની ફરતા ચાલતા હતા. તે વખતે વાજિંત્રોના શબ્દવડે આકાશ શબ્દમય થઇ રહ્યું હતું. આ રીતે મોટા ઉત્સવ સહિત કુમાર હસ્તિનાપુરમાં આવ્યા. ત્યાં પોતાના દર્શનથી કુમારે માતાપિતાને તથા પુરજનોને અત્યંત આનંદ આપ્યો. કુમારની આવી અસાધારણ સમૃદ્ધિ જોઇ અશ્વસેન રાજા વાણીથી કહી ન શકાય તેવો હર્ષ અને વિસ્મય પામ્યા. પછી રાજાના પૂછવાથી મહેંદ્રસિંહે કુમારનો અને પોતાનો સર્વ વૃત્તાંત કહી રાજા વિગેરે સર્વને આશ્ચર્ય પમાડ્યા. ત્યારપછી અશ્વસેન રાજાએ કુમારને પોતાના રાજ્યપર સ્થાપન કર્યો અને મહેંદ્રસિંહને તેના સેનાપતિનું પદ આપ્યું. પછી રાજાએ પોતે શ્રી ધર્મનાથ સ્વામીના તીર્થના સ્થવિર મુનિની પાસે વૈરાગ્યથી ચારિત્ર ગ્રહણ કરી પોતાનો જન્મ કૃતાર્થ કર્યો.

અનુક્રમે સનત્કુમાર રાજા રાજ્ય કરતા હતા તે વખતે તેને ચક્ર વિગેરે ચૌદ રત્નો પ્રાપ્ત થયાં. ત્યારપછી ચક્રના માર્ગને અનુસરીને ભરતક્ષેત્રના છ ખંડ સાધી તથા નવ નિધાન પ્રાપ્ત કરી એક હજાર વર્ષે સનત્કુમાર પોતાના પુરમાં પાછા આવ્યા.

पछी ज्यारे ते राजा पुरप्रवेश करता हता ते वखते सौधर्म इंद्रे अवधिज्ञानथी जाण्युं के—"पूर्व भवमां आ राजा अहींज मारे स्थाने मारो जेवा ज इंद्र हतो." एम विचारी तेमनापर अत्यंत स्नेह थवाथी इंद्रे कुबेरने आज्ञा करी के—"आ चोथा चक्रवर्ती मारा मित्र छे, तेथी त्यां जइने तेनो राज्याभिषेक करो." आ प्रमाणे कही इंद्रे चक्रवर्तीने आपवा माटे धनदने बे चामर, छत्र, हार, मुगट, बे कुंडळ, सिंहासन, पादपीठ, बे देवदूष्य वस्त्रो अने बे पादुका एटली चीजो आपी, तथा रंभा अने तिलोत्तमा विगेरे अप्सराओने धनदनी साथे मोकली. ते सर्व लइ धनद हस्तिनापुर गयो, अने चक्रीनी पासे पोताने इंद्रे करेली आज्ञा निवेदन करी. पछी चक्रीनी अनुमति लइ धनदे एक योजन विस्तारवाळी मणिमयनी पीठ विकुर्वी, तेनापर मणिमय मंडप कर्यो, तेनी वच्चे मणिना पादपीठ सहित सिंहासन मूक्युं, देवो पासे क्षीरसागरनुं जळ मंगाव्युं, पछी बहुमान पूर्वक चक्रीने ते सिंहासनपर बेसाडी इंद्रे मोकलेली सर्व वस्तु तेनी पासे भेट मूकी, अने क्षीरसागरना जळवडे सर्व देवोए तेनो चक्रवर्तीपणानो अभिषेक कर्यो. ते वखते देवताओ मंगळवाजित्रोना शब्द करवा लाग्या, किन्नरनां मिथुनो मंगळ गीतो गावा लाग्या अने रंभा तथा तिलोत्तमा विगेरे अप्सराओ नाटक करवा लागी. पछी चक्रीने दीव्य वस्त्र, आभूषण अने विलेपनादिकवडे शणगारी हस्तीपर बेसाडी नगरमां प्रवेश कराव्यो. पछी रत्नादिकनी वृष्टिवडे पोतानी अलकानगरी जेवुं ते पुर करी धनद चक्रीनी रजा लइ स्वर्गे गयो. त्यारपछी सर्व राजाओए बार वर्ष सुधी तेनो चक्रवर्तीपणानो महोत्सव कर्यो. सनत्कुमार चक्री न्यायवडे प्रजानुं पालन करवा लाग्या अने मनोहर प्रियाओ साथे पांच इंद्रियोना सुख भोगवता तेणे घणा वर्षोने दिवसनी जेम व्यतीत कर्या.

एकदा सुधर्मा सभामां बेठेला इंद्र सौदामिनि नामनुं नाटक करावता हता, ते वखते ईशान देवलोकमांथी संगम नामनो देव सुधर्मा सभामां आव्यो. तेनी रूपकांतिवडे सर्व देवोनी कांति ढंकाइ जइ झांखी पडी गइ. पछी ज्यारे ते देव त्यांथी गयो त्यारे सर्व देवोए आश्चर्य पामी शक्र इंद्रने पूछ्युं के—" हे स्वामी ! आ देवनुं रूप अने तेज सर्व देवोना रूप अने तेजना गर्वने हरण करे तेवुं केम छे ? " इंद्रे कह्युं के—" आ देवे पूर्वभवमां आचाम्लवर्धमान नामनो तप कर्यो हतो, तेथी तेनुं रूप अने तेज उत्कृष्ट छे. " फरी देवोए पूछ्युं के—" त्रण भुवनमां बीजो पण कोइ उत्कृष्ट रूप अने तेजवाळो छे ? " इंद्रे कह्युं—" भरतक्षेत्रमां हस्तिनापुरने विषे सनत्कुमार चक्री छे, तेनुं रूप अने तेज देवोथी पण अधिक छे. " आवा इंद्रना वचनपर श्रद्धा नहीं थवाथी विजय अने वैजयंत नामना बे देवो तेना रूपने जोवा माटे विप्रनुं रूप लइ चक्रीना महेल पासे आव्या. ते वखते चक्रीए स्नान करवानुं प्रारंभ्युं हतुं, तोपण द्वारपाळनी विनंतिथी राजाए ते परदेशी ब्राह्मणोने पोतानी पासे बोलाव्या. ते वखते इंद्रना कह्या करतां पण तेनुं अधिक रूप जोइ ते देवो विस्मय पाम्या, अने बोल्या के—" अहो ! आ राजानुं तेज सूर्यथी पण अधिक छे, आना जे जे अंग उपर दृष्टि स्थापन करीए छीए ते ते अंगमां जाणे चोंटी गइ होय तेम ते दृष्टि महाकष्टे खेंची शकाय छे. इंद्रे आना रूपनुं जे वर्णन कर्युं ते जरा पण मिथ्या नथी. आपणे तेना वचनपर अश्रद्धा करी हती पण आजे आनुं रूप जोवाथी आपणे कृतार्थ थया छीए अने इंद्रना वचनो सत्य हता एवी प्रतीति थइ छे. " पछी चक्रीए तेमने पूछ्युं के—" हे विप्रो ! तमे शा कारणथी अहीं आव्या छो ? " त्यारे तेओ बोल्या के—" हे महाराजा ! जगतमां आपना रूप अने तेजनी प्रशंसा सांभळी अमे ते जोवा माटे ज अहीं

આવ્યા છીએ, અને અમે તમારું રૂપ જેવું સાંભળ્યું છે તેવું જ બલકે તેથી પણ અધિક અત્યારે પ્રત્યક્ષ જોઇએ છીએ.” તે સાંભળી રાજાએ રૂપના ગર્વથી કહ્યું કે—“ હે ઉત્તમ બ્રાહ્મણો ! અત્યારે સ્નાન વખતે તમે મારું રૂપ જુઓ છો તેમાં શી શોભા હોય ? પરંતુ સ્નાનાદિક કરી વસ્ત્ર આભૂષણ ધારણ કરી જે વખતે હું સભામાં બેઠો હોઉં તે વખતે તમારે મારું રૂપ બરાબર જોવું.” એમ કહી તે વિપ્રોને બીજે ઠેકાણે મોકલી પોતે સ્નાન કરી વસ્ત્રાલંકારવડે શરીર શણગારી સભામાં જઇ સિંહાસનપર બેઠા. પછી રાજાએ તે વિપ્રોને બોલાવ્યા. તેઓએ આવી રાજાનું રૂપ જોયું તો પ્રથમના કરતાં ઘણું જ નિસ્તેજ જોયું, તેથી તેઓ ખેદ પામી વિચારવા લાગ્યા કે—“ અહો મનુષ્યનું રૂપાદિક સર્વ અતિ ચંચળ છે.” તેમને ખેદયુક્ત જોઇ રાજાએ પૂછ્યું કે—“ પહેલાં મને જોઇને તમે હર્ષ પામ્યા હતા અને અત્યારે તમારું મુખ શ્યામ કેમ દેખાય છે ?” ત્યારે તેઓ બોલ્યા કે—“ હે રાજા ! અમે દેવો છીએ. ઇંદ્રે વર્ણન કરેલા તમારા રૂપ ઉપર શ્રદ્ધા નહીં થવાથી તેની પરીક્ષા કરવા માટે આવ્યા છીએ. પહેલાં સ્નાન કરતી વખતે તમારું રૂપ ઇંદ્રે કહેલાથી પણ અધિક જોઇ અમે હર્ષ પામ્યા હતા, પરંતુ અત્યારે તેવું નથી તેથી ખેદયુક્ત થયા છીએ. આટલા અલ્પ કાળમાં જ તમારા શરીરમાં વ્યાધિઓરૂપી રાક્ષસો ઉત્પન્ન થયા છે, તેથી તમારું રૂપ, લાવણ્ય અને કાંતિ વિગેરે ઝાંખાં પડી ગયાં છે.” આ પ્રમાણે કહી તે દેવો તત્કાળ અદૃશ્ય થઇ ગયા.

ચક્રીએ પોતાના શરીરપર દૃષ્ટિ નાંખી તો ધૂળથી ઢંકાયેલા સૂર્યની જેમ તેણે પોતાનું શરીર નિસ્તેજ જોયું. તે વખતે તેણે વિચાર કર્યો કે—“ જે શરીરને વિવિધ પ્રકારના વ્યાધિઓ બાધા કરે છે, તેવા શરીર ઉપર પંડિતોએ શી શ્રદ્ધા

राखवी ? जे रूपादिक गुणो व्याधिथी भय पाम्या होय तेम नाशी जाय छे, ते रूपादिकनो गर्व डाह्यो माणस केम करे ? जे विषयो निरंतर सेवाता छतां पण चणवारमां जाणे रोष पाम्या होय तेम नष्ट थइ जाय छे, ते विषयोपर बुद्धिमान जनो शो मोह राखे ? जे परिग्रहथी वैराग्य अने विनय विगेरे गुणो नाश पामे छे तेवा परिग्रह उपर पंडितोनो आग्रह क्यांथी होय ? तेथी करीने आज मारे मारा दामभारा आ शरीरादिक उपरनो ममतानो त्याग करी शाश्वत सुख आपनार चारित्रनो हुं स्वीकार करुं. " इत्यादिक विचार करी चक्रीए पोताना राज्यपर पोताना पुत्रने स्थापन करी विनयंधर सूरिनी पासे दीक्षा ग्रहण करी.

चक्रीउपरना गाढ स्नेहने लीधे सर्व रत्नो, सर्व राणीओ, सर्वे राजाओ, सर्व निधिओ, सर्व यक्षो अने सर्व प्रधानो तेनी पाछळ छ मास सुधी फर्या अने कहेवा लाग्या के—" हे स्वामी अपराध विना तमे अमने केम तजो छो ? " ते सांभळीने राजर्षिए सिंहावलोकननी जेम पाछळ दृष्टि करीने तेमनी सन्मुख जोयुं पण नहीं. छेवट थाकीने ते सर्वे पोतपोताने स्थाने गया. उग्र तपस्या करता एवा ते राजर्षि छट्ठने पारणे गोचरी गया. त्यांथी चणा अने बकरीना दूधनी छाश तेमने मळी. ए रीते निरंतर छट्ठने पारणे अंतप्रांत–नीरस आहार करवाथी तेमना शरीरमां–कंडू १, कुक्षिपीडा २, नेत्रपीडा ३, कास ४, श्वास ५, ज्वर ६ अने अरुचि ७ ए सात व्याधिओ उत्पन्न थया. तेने तेणे सातसो वर्ष सुधी सहन कर्या. ए रीते बीजा पण सर्व परीषहोने सहन करता, तीव्र तप करता अने कोइ साथे वार्ता मात्र पण नहीं करता ते राजर्षिने मलौषधि १, आमर्पौषधि २, शकृदौषधि ३, मूत्रौषधि ४, कफौषधि ५, सर्वौषधि ६ अने संभिन्नश्रोत ७ ए नामनी सात लब्धिओ प्राप्त

थइ. तोपण ते महर्षिए पोताना व्याधिनी कांइपण चिकित्सा करी नहीं.

एकदा शक्र इंद्रे सुधर्मा सभामां सर्व देवो समक्ष कह्युं के—" अहो ! आ सनत्कुमार महर्षिनुं धैर्य मेरुपर्वतथी पण अधिक छे के जे चक्रवर्त्तीनी लक्ष्मीनो त्याग करी उग्र तप करे छे. रोगरूपी अग्निने बुझववामां मेघनी माळा समान अनेक लब्धिओ पाम्या छतां पण कायाने विषे तद्दन निस्पृह थयेला ते मुनि पोताना व्याधिनी चिकित्सा पण करता नथी." आवा इंद्रना वचनपर श्रद्धा नहीं थवाथी प्रथमना ज बे देवो वैद्यनुं रूप करी ते राजर्षि पासे आव्या अने बोल्या के—" हे साधु ! जो आपनी अनुज्ञा होय तो अमे धर्मवैद्यो छीए ते तमारा व्याधिनी चिकित्सा करीए." आ प्रमाणे तेमणे मुनिनी सन्मुख आवीने वारंवार कह्युं, त्यारे मुनिए कह्युं के—" तमे कर्मरोगनी चिकित्सा करो छो के शरीरना रोगनी चिकित्सा करो छो ?" त्यारे तेओ बोल्या के—" हे मुनिराज ! अमे शरीरना रोगनी चिकित्सा करीए छीए." ते सांभळी मुनिए पामा (खरज-खस) थी सडी गयेली पोतानी एक आंगळीने पोतानुं थुंक चोपडी सुवर्ण जेवा वर्णवाळी बनावी तेमने देखाडी कह्युं के—" शरीरना रोगने तो हुं पोते पण आ प्रमाणे चिकित्सा करी शकुं छुं, पण ते करवानी मारी इच्छा नथी. तेथी जो तमे कर्मरोगनी चिकित्सा करी शकता हो तो ते करो." ते जोइ आश्चर्य पामी तेओ बोल्या के—" कर्मरूपी व्याधिनो नाश करवामां तो हे मुनि ! तमे ज समर्थ छो." एम कही चक्रीमुनिने नमस्कार करी तेओ फरीथी बोल्या के—" लब्धि पाम्या छतां धीर एवा सनत्कुमार राजर्षि पोताना व्याधिनी पण चिकित्सा करता नथी. इत्यादिक इंद्रे करेली आपनी प्रशंसा सांभळीने अमे के जे प्रथम तमारुं रूप जोवा आव्या हता ते ज देवो आपना सत्त्वनी परीक्षा करवा अत्यारे

पण आव्या छीए. अने अमे तमारुं धैर्य मेरुपर्वत जेवुं अचळ स्पष्टपणे जोयुं छे." आ प्रमाणे कही तेमनी स्तुति करी ते देवो अदृश्य थया.

सनत्कुमार राजर्षि कुमार अवस्थामां पचास हजार वर्ष रह्या, मांडलिकपणामां पचास हजार वर्ष रह्या, लाख वर्ष चक्रवर्तीपणामां रह्या अने लाख वर्ष चारित्रपर्यायमां रह्या. ए प्रमाणे कुल त्रण लाख वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी छेवट संमेतशिखरपर जइ अनशन ग्रहण करी आयुष्यने क्षये ते महर्षि, सनत्कुमार नामना त्रीजा देवलोकमां देव थया. त्यांथी च्यवी महाविदेह क्षेत्रमां मनुष्य जन्म धारण करी मोक्षे जशे.

इति सनत्कुमार चक्री कथा.

चइत्ता भारहं वासं, चक्कवट्टी महिड्डिओ । संती संतिकरो लोए, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ३८ ॥

अर्थ—(महिड्डिओ) मोटी समृद्धिवाळा, (चक्कवट्टी) चक्रवर्ती, (लोए) लोकने विषे (संतिकरो) शांतिने करनार (संती) शांतिनाथ स्वामी (भारहं वासं) भरतक्षेत्रनो—तेना राज्यनो (चइत्ता) त्याग करी (अणुत्तरं गइं) अनुत्तर गतिने एटले मुक्तिने (पत्तो) पाम्या छे.

श्री शांतिनाथनी कथा.

आ ज जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रने विषे रत्नपुर नामनुं पुर छे. त्यां श्रीषेण नामे राजा हतो. ते समग्र गुणोनो निधि

हतो. ते राजाने अभिनंदिता अने शिखिनंदिता नामनी बे राणीओ हती. तेमां अभिनंदितानी कुक्षिमांथी उत्पन्न थयेला इंदुषेण अने बिंदुषेण नामना तेने बे पुत्रो हता. ते श्रीषेण राजाए विमळबोध नामना गुरु पासे धर्मोपदेश सांभळी समकित सहित श्रावक धर्म अंगीकार कर्यो हतो.

ते रत्नपुर नगरमां सत्यबुद्धिवाळा सत्यकि नामे एक उपाध्याय हता. तेने जंबुका नामनी प्रिया हती अने तेमने सत्यभामा नामनी पुत्री हती.

आ अवसरे मगध देशमां अचळ नामना गाममां वेद अने वेदांगना पारने पामेलो धरणिजट नामनो प्रसिद्ध ब्राह्मण हतो. तेने यशोभद्रा नामनी पत्नी हती अने तेनी कुक्षिथी उत्पन्न थयेला नंदीभूति अने श्रीभूति नामना बे पुत्रो हता. तथा ते ब्राह्मणने कपिला नामनी दासी साथे चिरकाळ क्रीडा करतां तेणीनी कुक्षिथी उत्पन्न थयेलो कपिल नामे त्रीजो पुत्र पण हतो. ते हीन कुळनो होवाथी धरणिजट विप्र पोताना कुळवंत बे पुत्रोने ज निरंतर वेदाभ्यास करावतो हतो. परंतु कपिल बुद्धिमान हतो तेथी तेमने भणतां सांभळीने ज पोते पण सर्व भणी जतो हतो. ए रीते सांभळी सांभळीने ज ते कपिल सर्व विद्यामां कुशळ थयो. पछी ते गाममां दासीपुत्र होवाथी पोताने मान मळशे नहीं एम धारी ते कपिल ते गाममांथी नीकळी बे यज्ञोपवीतने धारण करी उत्तम ब्राह्मण तरीके पोतानी ओळखाण आपतो पृथ्वीपर विचरवा लाग्यो. अनुक्रमे ते रत्नपुरमां गयो, त्यां फरतां फरतां सत्यकि ब्राह्मणनी पासे गयो. सत्यकिए तेने पूछ्युं के—" तुं कोण छे ? अने क्यांथी आवे छे ?" ते बोल्यो के—" अचळ गाममां धरणिजट नामे ब्राह्मण छे, तेनो हुं कपिल नामनो पुत्र छुं. कौतुकथी पृथ्वीने जोतो जोतो

हुं अहीं आव्यो छुं." पछी ते सत्यकि पासे भणनारा विद्यार्थीओ वेदना विषयनी शंकाओ सत्यकिने पूछवा लाग्या. ते सर्वेना जवाब कपिले आपी तेमना संशयो दूर कर्या. ते सांभळी तेनी उत्तम विद्वत्ताथी खुशी थयेला सत्यकिए पोतानी पुत्री सत्यभामाने तेनी साथे परणावी अने छात्रोने भणाववानुं काम पण तेने ज सोंप्युं. ते कपिल पण सत्यभामानी साथे निरंतर सुख भोगववा लाग्यो अने लोकोमां मान्य थवाथी तेओए आपेला द्रव्यवडे ते थोडा काळमां ज समृद्धिवाळो थयो.

एकदा वर्षाऋतुमां कपिल कोइ ठेकाणे नाटक जोइ त्यांथी पाछो घर तरफ चाल्यो. ते वखते वरसाद वरसवा लाग्यो. मार्गमां घणो अंधकार होवाथी तथा निर्जनपणुं होवाथी ते कपिल वस्त्रोने काखमां नांखी नग्न थइ पोताने घेर गयो. घरना द्वार पासे आवी लुगडां पहेरी ते घरमां गयो. तेनां वस्त्रो भींजायां हशे एम धारी सत्यभामा बीजां वस्त्रो लावी. तेणीने कपिले कह्युं के—" हे प्रिया ! विद्याशक्तिथी मारां वस्त्रो भींजायां नथी, तेथी बीजां वस्त्रोनी जरुर नथी."

ते वखते विजळीना प्रकाशथी सत्यभामाए तेनां वस्त्रो सुकां जोयां पण शरीर भीनुं जोयुं. तेथी तेणीए विचार्युं के—"विद्यावडे जे वस्त्रोनुं रचण करे, ते शरीरनुं रचण केम न करे ? तेथी खरेखर आ मार्गमां नग्न ज आव्या छे. आ उपरथी ते शुद्ध ब्राह्मण होवा न जोइए. कारण के कुलिननी आवी बुद्धि कदापि थाय ज नहीं. वळी आ वेद भणेला छे, ते तो सारी बुद्धिने लीधे सांभळी सांभळीने भणया जणाय छे." आ प्रमाणे विचार थवाथी ते सत्यभामानो स्नेह तेनापरथी उतरी गयो. तेथी मन विना मात्र व्यवहारथी तेनी साथे सरखाइथी वर्तवा लागी.

एकदा धरणिजट ब्राह्मण दैवयोगे दरिद्रताने पाम्यो. ते कपिलनी समृद्धि सांभळी धननी आशाथी त्यां आव्यो. कपिले स्नान, भोजन विगेरेवडे तेनी भक्ति करी. " अन्य अतिथि पण पंडितोने पूजवा योग्य छे, तो पितानी भक्ति करवी तेमां शुं आश्चर्य ? " भोजन वखते कांइ मिष करीने कपिल पितानी साथे भोजन करवा बेठो नहीं, तेथी तेमज बीजा पण आचार विचारमां पिता अने पुत्र वच्चे मोटो तफावत जोवाथी शंका पामेली सत्यभामाए एकांतमां श्वशुरने पूछ्युं के—" हे पूज्य पिता ! तमने ब्रह्महत्याना सोगन आपीने हुं पूछुं छुं के—आ तमारा पुत्रनां माता अने पिता ए बन्ने पण शुद्ध छे के केम ? ते सत्य कहो." ते सांभळी सोगनथी भय पामता तेणे सत्य हकिकत कही. पछी कपिले पितानो सत्कार करी तेने विदाय कर्या एटले ते पोताने गामे गया.

त्यारपछी सत्यभामाए श्रीषेण राजा पासे जइने कह्युं के—" हे देव ! मारा स्वामी दैवयोगे अकुलीन जणाया छे, तेथी मने तेनाथी मुक्त करावो, के जेथी हुं दीक्षा ग्रहण करुं. " ते सांभळी राजाए कपिलने बोलावी कह्युं के—" आ तारी स्त्री ताराथी विरक्त थइ छे अने ते धर्मकर्म करवा इच्छे छे, तेथी तेने तुं छोडी दे. आ विरक्त थयेलीथी तने शुं भोगनुं सुख मळे तेम छे ? " त्यारे कपिल बोल्यो के—" हे देव ! ते मारी भार्या छे, तेने हुं छोडीश नहीं. तेना विना हुं जीवित धारण करवा समर्थ नथी. " ते सांभळी सत्यभामा बोली के—" जो ते मने नहीं छोडे तो हुं आपघात करीश." त्यारे राजाए कपिलने कह्युं के—" हे कपिल ! आनुं फोगट मरण न थाओ, एटला माटे केटलोक समय धर्मक्रियामां तत्पर थइ मारे घेर तेने मारी पुत्री तरिके रहेवा दे." ते सांभळी बळात्कारे लइ जवामां असमर्थ एवा कपिले राजानुं वचन

માન્ય કર્યું. રાજાએ સત્યહૃદયવાળી સત્યભામાને પોતાની બન્ને રાણીઓ પાસે રાખી. ત્યાં સ્વચ્છ મનવાળી તે દુસ્તપ તપ કરતી રહી.

એકદા અનંતમતિકા નામની મનોહર વેશ્યાને જોઇ રાજાના બન્ને પુત્રો ઇંદુષેણ અને બિંદુષેણ તેણીને વિષે આસક્ત થયા. તે વેશ્યાની ઇચ્છા રાખતા તે બન્ને ભાઇઓ છતાં પણ પરસ્પર ઇર્ષ્યાથી યુદ્ધ કરવા લાગ્યા. તેમનું યુદ્ધ જોવાને કે તેમને યુદ્ધથી નિવર્તન કરવાને અસમર્થ થયેલો શ્રીષેણ રાજા લજ્જાને લીધે વિષમિશ્રિત કમળને સુંઘી મરણ પામ્યો. તેજ પ્રમાણે અભિનંદિતા અને શિખિનંદિતાએ પણ પોતાના પ્રાણનો ત્યાગ કર્યો, એટલે કપિલથી ભય પામતી સત્યભામાએ પણ તેમના જ માર્ગનો આશ્રય કર્યો. આ રીતે ચારે જણા મરણ પામીને તેઓ અત્યંત સરળ આશયવાળા હોવાથી આ જંબૂદ્વીપના ઉત્તરકુરુ ક્ષેત્રને વિષે યુગલીયા થયા. તેમાં શ્રીષેણ રાજા અને અભિનંદિતાનું એક યુગલ થયું, તથા શિખિનંદિતા અને સત્યભામાનું બીજું યુગલ થયું. (શિખિનંદિતાનો જીવ પુરુષ થયો.) તે સર્વેનું શરીર ત્રણ કોશ ઉંચું હતું, તેઓ ત્રણ પલ્યોપમના આયુષ્યવાળા હતા, અને ચોથે દિવસે આહાર કરનારા હતા. તેઓએ ત્યાં કેવળ સુખમય સમય નિર્ગમન કર્યો. (ભવ બીજો.)

અહીં શ્રીષેણ રાજાના બન્ને કુમારો યુદ્ધ કરતા હતા, તેવામાં ત્યાં વિમાનમાં બેસીને કોઇ વિદ્યાધર આવ્યો, તેણે તેમને કહ્યું કે—હે રાજપુત્રો ! તમો અજ્ઞાનપણાને લીધે તમારી બહેનને જ ભોગવવા તૈયાર થઇ ફોગટ યુદ્ધ ન કરો, હું તમારો હિતેચ્છુ છું, માટે હું કહું તે તમે સાંભળો:—

આ જ જંબૂદ્વીપમાં મહાવિદેહ ક્ષેત્રને વિષે પુષ્કલાવતી નામે વિજય છે. તેમાં રહેલા વૈતાઢ્ય પર્વતની ઉત્તરશ્રેણિમાં આદિત્યાભ નામનું શ્રેષ્ઠ પુર છે. તેમાં સુકુંડલી નામે રાજા છે, તેને અજિતસેના નામની પ્રિયા છે. તેમનો હું મણિકું-

डली नामनो पुत्र छुं. एकदा हुं आकाश मार्गे थइने पुंडरीकिणी नगरीमां गयो. त्यां अमितयशा नामना तीर्थंकरने में भक्तिथी वंदना करी. पछी में प्रभुने पूछ्युं के—" हुं विद्याधर शा पुण्यथी थयो ? " त्यारे तीर्थंकर महाराज अमृत जेवी मधुर वाणीथी बोल्या के.—

पुष्करवरद्वीपना पश्चिम अर्ध भागमां शीतोदा नदीने दक्षिण कांठे सलिलावती नामना विजयमां वीतशोका नामनी श्रेष्ठ नगरी छे. त्यां कामदेवनी जेवा रूपवाळो रत्नध्वज नामे चक्रवर्ती हतो. तेने हेममालिनी अने कनकश्री नामनी बे प्रियाओ हती. तेमां पहेलीए पद्मा नामनी पुत्री प्रसवी अने बीजीए कनकलता तथा पद्मलता नामनी बे पुत्रीने जन्म आप्यो. लक्ष्मीनी जेवा अद्वितीय रूपवाळी पद्माए युवावस्थामां पण अजितसेना नामनी आर्या पासे दीक्षा ग्रहण करी. ते पद्मा साध्वी उपवास विगेरे दुष्कर तप करवा लागी. तेणीए एकदा कोइ वेश्याने माटे युद्ध करता बे राजपुत्रोने जोइ विचार कर्यो के—" अहो ! आ वेश्यानुं सौभाग्य अद्भुत छे, के जेने माटे आवा कामदेव जेवा रूपवाळा बे राजकुमारो युद्ध करे छे. तो जो आ मारा तपनुं कांइ फळ होय तो तेना प्रभावथी आवता जन्ममां हुं पण आवा ज सौभाग्यवाळी थाउं " आ प्रमाणे ते पद्मा साध्वीए नियाणुं कर्युं. पछी आयुष्यने छेडे ते नियाणानी आलोचना कर्या विना अनशन करी काळधर्म पामी सौधर्म देवलोकमां देवी थइ. ते भवमां तेनी जे कनकश्री नामनी विमाता हती, तेणे त्यांथी मरी संसारमां केटलाक भव करी आ जन्मथी पूर्वना जन्ममां कांइक दानपुण्य कर्युं. तेना प्रभावथी तुं आ भवमां मणिकुंडली नामनो विद्याधर थयो छे. हवे ते कनकश्रीनी बे पुत्रीओ जे कनकलता अने पद्मलता हती ते संसारमां केटलाक भवो भमी पूर्वभवमां विविध प्रकारनुं शुभ-

कर्म करी आ जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां रत्नपुर नामना नगरमां श्रीषेण राजाना इंदुषेण अने बिंदुषेण नामना बे पुत्रो थया छे. ते अवसरे पद्मा साध्वीनो जीव सौधर्म देवलोकथी चवीने ते ज रत्नपुरमां गणिका थयो छे, अने तेणीने ज माटे हमणां इंदुषेण अने बिंदुषेण परस्पर युद्ध करे छे."

आ प्रमाणे तीर्थंकरना मुखथी आपणा सर्वेना पूर्वभवोने सांभळी हुं तमने युद्धथी निवर्तन करवा अहीं आव्यो छुं. माटे तमे बोध पामो अने बहेनने माटे थइने युद्ध न करो. हुं तमारा पूर्वभवनी माता छुं अने आ वेश्या तमारी पूर्वभवनी बहेन छे तो मोहनो त्याग करो अने तमारा आ दुष्कृत्यथी लज्जा पामी तमारा मातापिता पण विषप्रयोगथी मृत्यु पाम्या छे तेनो ख्याल करी आ पापनी शुद्धि माटे तमे चारित्र व्रत ग्रहण करो."

आ प्रमाणे ते मणिकुंडली नामना विद्याधरना मुखथी पोताना पूर्वभवोनुं वृत्तांत सांभळी इंदुषेण अने बिंदुषेण बोल्या के—" हे विद्याधर मित्र ! तमे अमने ठीक प्रतिबोध कर्यो." एम कही ते बन्ने भाइओए चार हजार राजाओ सहित धर्मरुचि गुरुनी पासे चारित्र ग्रहण कर्युं. त्यां निरतिचार चारित्र पाळी उग्र तप करी ते बन्ने बुद्धिमान मोक्षपद पाम्या.

अहीं श्रीषेण विगेरे चारे युगलीयाओ आयुष्य पूर्ण करी सौधर्म देवलोकमां गया. (ए त्रीजो भव).

आ ज जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां वैताढ्य पर्वत उपर श्री रथनूपुरचक्रवाल नामनुं नगर छे. तेमां महा बळवान अर्ककीर्ति नामनो खेचर राजा हतो. तेने चंद्रने रोहिणीना जेवी ज्योतिर्माला नामनी प्रिया हती. ते अर्ककीर्ति राजाने स्वयंप्रभा नामनी बहेन हती. तेणीने पोतनपुरनो राजा अचळनो नानो भाइ त्रिपृष्ठ नामनो पहेलो वासुदेव परण्यो हतो. एकदा

श्रीषेण राजानो जीव प्रथम स्वर्गथी च्यवीने छीपने विषे मुक्ताफळनी जेम ज्योतिर्मालानी कुक्षिमां अवतर्यो. ते वखते तेणीए स्वप्नमां अमित (घणा) तेजवाळो सूर्य जोयो. अनुक्रमे समय पूर्ण थये तेणीए श्रेष्ठ लक्षणवाळा पुत्रने जन्म आप्यो. उगता सूर्यनी जेवा तेजवाळा ते पुत्रनुं नाम राजाए स्वप्नने अनुसारे अमिततेजा पाड्युं. पछी सत्यभामानो जीव स्वर्गथी च्यवीने अर्ककीर्तिनी प्रिया ज्योतिर्मालानी कुक्षिथी सुतारा नामनी पुत्री थइ. अभिनंदितानो जीव स्वर्गथी च्यवी त्रिपृष्ठ वासुदेवनी राणी स्वयंप्रभानी कुक्षिमां पुत्रपणे उत्पन्न थयो. तेनुं नाम श्रीविजय पाड्युं. तथा शिखिनंदितानो जीव स्वर्गथी च्यवीने स्वयंप्रभानी कुक्षिमां पुत्रीपणे उत्पन्न थयो. तेनुं नाम त्रिपृष्ठ वासुदेवे ज्योतिष्प्रभा पाड्युं. ते कपिलनो जीव संसारमां भमीने चमरचंचा नामनी नगरीमां अशनिघोष नामनो विद्याधर राजा थयो. अर्ककीर्तिए पोतानी सुतारा पुत्रीने त्रिपृष्ठना पुत्र श्रीविजयनी साथे परणावी. तथा त्रिपृष्ठे पण पोतानी पुत्री ज्योतिष्प्रभाने आनंदथी अमिततेजा साथे परणावी.

एकदा अभिनंदन अने जगन्नंदन नामना चारणमुनिनी पासे धर्मदेशना सांभळी अर्ककीर्ति राजाए पोताना राज्यपर अमिततेजाने स्थापन करी मुक्तिना सरल मार्गरूप प्रव्रज्याने अंगीकार करी. त्यारपछी विद्याधर राजाओना मुगट-वडे नमस्कार कराता महाबळवान अमिततेजा राज्यनुं पालन करवा लाग्यो. अहीं पोतनपुरना राजा त्रिपृष्ठ वासुदेव पण मरण पाम्या, त्यारे बळभद्र अचळे वैराग्य पामी राज्यपर श्रीविजयने स्थापन करी पोते प्रव्रज्या ग्रहण करी.

एकदा पोतानी बहेन सुतारा अने श्रीविजयने जोवानी उत्कंठा थवाथी अमिततेजा पोतनपुर गयो. ते वखते ते

पुरमां उंचां तोरणो अने ध्वजो बांधेलां हतां, तथा आखुं नगर आनंदमय देखातुं हतुं, तेमज राजकुळ विशेषे करीने हर्ष पामेलुं देखातुं हतुं, ते जोइ अमिततेजा विस्मय पाम्यो. तेने आकाशमांथी उतरतो जोइ श्रीविजय राजा हर्षथी तेनी सन्मुख उभो थयो. परस्पर साळा बनेवी एवा ते बन्नेए अन्योन्य गाढ आलिंगन कर्युं. पछी ते बन्ने सिंहासनपर बेठा. त्यारे अमिततेजाए श्रीविजयने पूछ्युं के—" आजे शा निमित्ते उत्सव छे ? " त्यारे श्रीविजय बोल्यो के—

आजथी आठमा दिवस उपर अहीं एक नैमित्तिक आव्यो हतो. तेने में आववानुं कारण पूछ्युं, त्यारे ते बोल्यो के—" हे प्रभु ! हुं निमित्त कहेवा माटे आव्यो छुं; ते तमे सावधान चित्ते सांभळो.—आजथी सातमे दिवसे मध्यान्ह समये पोतनपुरना राजा उपर उग्र वीजळीनो पात थशे. " आवुं तेनुं कटुक वचन सांभळी क्रोध पामेला मुख्य मंत्रीए तेने कह्युं के—" ते वखते तारा माथापर शुं पडशे ? " त्यारे दैवज्ञ बोल्यो के—" हे मंत्रीश्वर ! शास्त्रदृष्टिए में जेवुं जोयुं तेवुं कह्युं छे, तेमां मारापर शा माटे कोप करो छो ? ते दिवसे मारा मस्तक उपर तो सुवर्ण अने रत्ननी वृष्टि पडशे. " आ प्रमाणे ते दैवज्ञे कह्युं, त्यारे में तेने पूछ्युं के—" हे दैवज्ञ ! आवुं निमित्त तमे क्यांथी शीख्या छो ? " त्यारे ते बोल्यो के—" ज्यारे अचळ स्वामीए दीक्षा ग्रहण करी त्यारे मारा पिता साथे में पण बाल्यावस्था छतां दीक्षा लीधी हती. त्यां में अष्टांग महानिमित्तनो अभ्यास कर्यो हतो. पछी हुं युवान थयो त्यारे विहारना क्रमे हुं पद्मिनीखंड नामना पुरमां गयो. त्यां हिरण्यलोमिका नामनी मारी फुइ रहे छे. तेणीए बाल्यावस्थामां ज तेनी पुत्री चंद्रयशा मने आपी हती. परंतु में तो प्रव्रज्या लीधी तेथी तेणीने हुं परण्यो नहोतो. अत्यारे तेणीने युवावस्थावाळी जोइ हुं अत्यंत मोह पाम्यो अने

तेणीना भाइना कहेवाथी हुं व्रतनो त्याग करी तेणीने परण्यो. पछी धननी इच्छाथी में निमित्त विद्यावडे जोयुं तो आ महा वृत्तांत मारा जाणवामां आव्युं. तेमां मने घणो द्रव्यलाभ थशे एम जाणी हुं आ वृत्तांत आपने कहेवा अहीं आव्यो छुं. हवे जेम उचित लागे तेम करो."

आ प्रमाणे निमित्तियानुं वचन सांभळी सर्व जनो विचारमां पडया के 'आ बाबत शो उपाय करवो ?' तेमां एक मंत्री बोल्यो के—"समुद्रमां वीजळी पडती नथी, तेथी सात दिवस सुधी स्वामी नावमां आरूढ थइ समुद्रमां ज रहे तो विघ्न दूर थाय." ते सांभळी बीजो मंत्री बोल्यो के—"जो के समुद्रना जळमां वीजळी पडे नहीं, परंतु वहाणमां कदाच वीजळी पडे तो तेने कोण रोकी शके ? तेथी वैताढ्य पर्वतनी गुफामां जइने सात दिवस स्वामीए रहेवुं, एम मने ठीक लागे छे." ते सांभळी त्रीजो मंत्री बोल्यो के—"आ उपाय पण मने सारो लागतो नथी. कारण के जे अवश्य थवानुं होय ते गमे ते स्थाने पण थइ शके छे. तेथी हुं तो एम धारुं छुं के—आपणे सर्वेए सर्व उपद्रवोने नाश करनार तप करवो योग्य छे, कारण के तपवडे निकाचित कर्म पण क्षीण थाय छे." ते सांभळी चोथो मंत्री बोल्यो के—"आ नैमित्तिके पोतनपुरना स्वामी उपर वीजळीनो पात कह्यो छे, परंतु श्रीविजय स्वामीना उपर कह्यो नथी. तेथी सात दिवस सुधी आपणे पोतनपुरनो स्वामी बीजो करीए, तेम करवाथी वीजळी तेना पर पडशे अने श्रीविजय स्वामी अक्षत रहेशे." आवुं तेनुं वचन सांभळी दैवज्ञे अने बीजा सर्व मंत्रीओए तेम करवानुं पसंद कर्युं. अने तेना मतिज्ञाननी प्रशंसा करी. त्यारे में कह्युं के—"मारा प्राण बचाववानी खातर हुं बीजाना प्राणनो घात करावीश नहीं. कारण के सर्वने पोताना प्राण प्रिय होय छे."

ते सांभळी विचार करी मंत्रीओ बोल्या के—"हे स्वामी! ए विचार आप मूकी द्यो. अमे धनद यक्षनी प्रतिमानो राज्याभिषेक करशुं. तेम करवाथी देवना माहात्म्यने लीधे जो उपद्रव नहीं थाय तो सर्व सारुं ज छे, अने जो तेनापर वीजळी पडशे तो पण आपने जीवहिंसानुं पाप लागशे नहीं, अने यक्षनी प्रतिमा बीजी सारी पण करावी शकाशे." आ प्रमाणे तेमनुं युक्तियुक्त वचन सांभळी में ते अंगीकार कर्युं. पछी हुं (अंतःपुर सहित) जिनचैत्यमां जइ पौषध ग्रहण करी दर्भना संथारा पर शुभध्याने रह्यो, अने राज्यपर अभिषेक करेला यक्षनी प्रतिमाने सर्व पुरजनो सेववा लाग्या. अनुक्रमे दिवसो जतां सातमे दिवसे मध्यान्ह वखते आकाशमां गर्जना करतो मेघ चडी आव्यो, अने वडवाग्नि जेवो प्रचंड विद्युत्दंड तत्काळ यक्षनी मूर्तिपर पड्यो. ते वखते प्रसन्न थयेला सर्व जनोए दैवज्ञना मस्तकपर रत्ननी वृष्टि करी. पछी हुं पण पौषध पारी चैत्य बहार नीकळ्यो, एटले प्रजाजनोए मने फरीथी राज्याभिषेक कर्यो. में पण प्रसन्न थइ ते नैमित्तिकने पद्मिनीखंड नामनुं पुर इनाममां आपी विदाय कर्यो. कारणके तेणे मारापर घणो उपकार कर्यो हतो. पछी में धनदयक्षनी नवी उत्तम प्रतिमा करावी स्थापन करी. आ रीते मारी उपरनुं विघ्न शांत थयुं, ते प्रसंगने लइने पुरजनो आ उत्सव करे छे."

आ प्रमाणे उत्सवनुं वृत्तांत सांभळी अमिततेजा पण आनंद पाम्यो. पछी पोतानी बहेन सुतारानो दिव्य वस्त्र तथा आभूषणोथी सत्कार करी ते पोताने घेर गयो.

एकदा श्रीविजय राजा सुतारा देवी सहित क्रीडा करवा माटे ज्योतिर्वन नामना उद्यानमां गयो. ते वखते कपिलनो

जीव के जे अशनिघोष नामनो विद्याधर राजा थयो हतो, ते आकाश मार्गे जतो हतो, तेणे पोताना पूर्वभवनी स्त्री सुताराने जोइ. पूर्वभवना संस्कारने लीधे तेणीपर ते अत्यंत आसक्त थयो, तेथी तेणीनुं हरण करवा माटे तेणे तेनी पासे विद्यावडे सुवर्णनो मृग विकुर्वीने मूक्यो. तेने अति मनोहर जोइ सुताराए प्रियने कह्युं के—"हे स्वामी! मने क्रीडा करवा माटे आ मृग लावी आपो." ते सांभळी तेने पकडवा माटे दोडतो राजा दूर गयो, त्यारे एकली पडेली सुताराने ते अधम अशनिघोष हरी गयो. तथा श्रीविजय राजाने हणवा माटे तेणे प्रतारणी नामनी विद्याने आदेश कर्यो, एटले तेणे सुतारानुं रूप धारण करी उंचे स्वरे बूम पाडी के—"हे प्रिय! मने कुक्कुट सर्प डस्यो छे. जलदी आवीने मारुं रक्षण करो." ते सांभळी अत्यंत आकुळ व्याकुळ थयेलो राजा तेणीनी पासे आव्यो, तेटलामां तो ते पृथ्वीपर पडी राजाना देखतां ज मरण पामी. ते जोइ राजा पण मूर्छा खाइ पृथ्वीपर पड्यो. तेवामां तेना सेवकोए आवी तेने चंदनरस छांटी सावधान कर्यो.

राजा चेतना पामी विलाप करवा लाग्यो के—"हा प्रिया! तारी आ शी दशा थइ? हुं आजे सुवर्णना हरणथी ठगायो, अन्यथा हुं समीपे होउं तो शेषनाग पण तने करडवा समर्थ नथी. हे प्रिया! तारा विना हुं क्षणवार पण जीवी शकुं तेम नथी. शुं पाणी विना माछलुं जीवी शके? तारा वियोगथी उत्पन्न थयेला दुःखने हुं सहन करवा शक्तिमान नथी, तेथी हे जीवितेश्वरी! शीघ्रपणे तारी पाछळ आ मारा प्राणो चाल्या जाओ." आ प्रमाणे कही सेवको पासे चिता करावी मोहथी मूढ थयेलो राजा प्रिया सहित ते चितामां पेठो. तेमां जेटलामां अग्नि सळगाव्यो, तेवामां त्यां बे विद्याधरो

आव्या. तेमांथी एक अधार पाणी मंत्री चितामां छांटयुं, एटले तरत ज ते प्रतारणी विद्या अट्टहास करी शीघ्र नाशी गइ. ते जोइ राजाए विचार कर्यो के—“ आ स्त्री कोण ? मारी कांता क्यां गइ ? अने ते अग्नि क्यां गयो ? ” ए प्रमाणे विचारी राजाए ते विद्याधर पुरुषोने पूछयुं के—“ आ शुं ? ” त्यारे तेओए राजाने नमस्कार करी कह्युं के—“ अमे अमिततेजा राजाना सेवको छीए. अमे अरिहंतने नमवा माटे नीकळ्या छीए. आ तरफ आवतां मार्गमां अमे आ प्रमाणे वाणी सांभळी के—“ हा ! बंधु अमिततेजा ! हा ! प्राणनाथ श्रीविजय ! मने सुताराने आ विद्याधर थकी मूकावो. ” आवी वाणी सांभळतां ज अमे ते तरफ दोड्या, तो अमे तमारी प्रिया अने अमारा स्वामीनी बहेन सुताराने अशनिघोषे हरण करातो जोइ. तेणीने मूकाववा माटे अमे युद्ध करवा सज्ज थइ बोल्या के—“हे दुष्ट ! उभो रहे, उभो रहे.” तेटलामां सुताराए अमने कह्युं के—“ तमे हमणां ज्योतिर्वनमां जाओ. त्यां प्रतारणी विद्याथी छेतराता मारा पति श्रीविजय राजानुं रक्षण करो.” ते सांभळी तरत ज अमे अहीं आव्या, चितामां मंत्रेलुं पाणी छांटी अग्नि बुझाव्यो अने प्रतारणी विद्याने नसाडी दीधी.”

आ प्रमाणे सुताराने हरण करेली जाणी श्रीविजय राजा खेद पाम्यो. पछी तेने धीरज आपी पेला विद्याधरो तेने आग्रह पूर्वक वैताढ्य पर्वतपर लइ गया. तेने जोइ अमिततेजा एकदम उभो थयो, अने तेनो आदरसत्कार करी आववानुं कारण पूछयुं. त्यारे श्रीविजयना कहेवाथी ते बन्ने विद्याधरोए सुताराना हरण संबंधी सर्व वृत्तांत कही संभळाव्यो. ते सांभळी अमिततेजा अत्यंत क्रोध पामी बोल्यो के—“तमारी प्रिया अने मारी बहेनने हरी जइने ते अशनिघोष केटलुं जीवशे ? ”

एम कही तेणे श्रीविजयने शस्त्रावरणी, बंधनी अने मोचनी ए त्रण महाविद्याओ आपी. पछी सैन्य सहित पोताना पांचसो पुत्रोथी परिवरेला श्रीविजयने अमिततेजाए सुताराने लाववा माटे अशनिघोष साथे लडाइ करवा मोकल्या. श्रीविजय राजा विद्याधरना सैन्यवडे आकाशने आच्छादन करता शीघ्रपणे चमरचंचा नगरी पासे जइ पहोंच्या. अहीं अमिततेजा अशनिघोषने घणी विद्यावाळो जाणी परविद्याना बळने नाश करनारी महाज्वाळा नामनी महाविद्या साधवा माटे पोताना सहस्ररश्मि नामना पुत्रने साथे लइ हिमवंत गिरि उपर गयो. त्यां सहस्ररश्मिथी रक्षण करातो ते महा पराक्रमी अमिततेजा एक मासना उपवासनो नियम लइ विद्या साधवा बेठो.

अहीं चमरचंचा नगरी पासे आवीने श्रीविजय राजाए पोताना दूतने अशनिघोष पासे मोकल्यो. तेणे जइ तेने कह्युं के—' हे राजा ! प्रतारणी विद्यावडे श्रीविजय राजाने छेतरी तेनी प्रिया सुताराने हरण करतां वीरमानी एवा तने शुं कांइपण लज्जा आवी नहीं ? अथवा तो हीन पराक्रमवाळाने छळ ज बळ होय छे. परंतु सूर्य समान श्रीविजय राजा छतां अंधकार जेवा तारी शक्ति शी रीते स्फुरायमान थवानी छे ? माटे हवे श्रीविजय राजाने नमस्कार करी तेनी प्रिया सुतारा तेने पाछी सोंप. अन्यथा तारा प्राण सहित ते राजा पोतानी प्रियाने ग्रहण करशे. " ते सांभळी क्रोध पामी अशनिघोष बोल्यो के—" रे दूत ! तुं अत्यंत धृष्ट अने उद्धत छे, तें कह्युं ते जाण्युं. जो मंदबुद्धिवाळो श्रीविजय अहीं आव्यो छे तो तेथी शुं थयुं ? ते बिचारो मारा पराक्रमना एक अंशने पण सहन करी शकवानो नथी. शुं सूर्यना प्रकाशनो एक लेश पण घुवड सहन करी शके ? माटे ते श्रीविजय जेम आव्यो तेम ज पाछो चाल्यो जाय तो ठीक छे, अन्यथा सुताराने तो पामशे

नहीं, पण उलटी विशेष विगोपना पामशे." आ प्रमाणे तेनां वचन सांभळी ते दूत श्रीविजय राजा पासे आव्यां, अने तेणे सर्व वृत्तांत तेने कह्यो.

ते सांभळी अत्यंत क्रोध पामेला श्रीविजय राजाए युद्धने माटे सर्व सैन्य सज्ज कर्युं. ते जाणी अशनिघोषे सैन्य सहित पोताना अश्वघोष विगेरे पुत्रोने युद्ध करवा मोकल्या. रणसंग्रामना वाजित्रोना शब्दथी आकाश पूर्ण थयुं, अने बन्ने सैन्यो वच्चे महा घोर युद्ध प्रवर्त्युं. ते वखते ते युद्ध जोवा माटे देवताओ आकाशमां आवी उभा रह्या, तेमने केटलाक वीरोए बाणोनो मंडप करी जोवामां विघ्न कर्युं. केटलाक वीरोए वर्डानी जेम शत्रुओने भालामां परोवी उंचा कर्या, केटलाक सुभटोए दंडवडे पर्वतनी जेवा हाथीओना दांत भांगी नांख्या, केटलाक योद्धाओए घडानी जेम रथोने मुद्गरवडे मर्दन कर्या, केटलाके परिघवडे शत्रुओने चणानी जेम कुट्या, केटलाके खड्गवडे कोळानी जेम शत्रुओने फाडी नांख्या, केटलाके गदावडे नाळीयेरनी जेम शत्रुना मस्तको भेदी नांख्यां, केटलाक वीरो आयुध खूटी जवाथी शत्रुना हाथीना दांत उखेडी तेवडे प्रहार करवा लाग्या, अने केटलाक महाबळवान योद्धाओ द्वंद्वयुद्ध करवा लाग्या, ए रीते हमेशां शस्त्र, अस्त्र, मंत्र अने मायावडे युद्ध करतां ते बन्ने सैन्योनो लगभग एक मास थवा आव्यो, ते वखते श्रीविजयना सुभटोए अशनिघोषना पुत्रोनो पराजय कर्यो. त्यारे अशनिघोष राजा पोते युद्ध करवा आव्यो. अने इक्षुने जेम बळद भांगी नांखे तेम तेणे अमिततेजाना पुत्रोने भांगी नांख्या–हराव्या, त्यारे श्रीविजय राजा पोते युद्धमां उतर्यो. ते बन्ने महा पराक्रमी परस्परना प्रहारोने छेतरता चिरकाळ सुधी युद्ध करवा लाग्या. ते जोइ देवो पण आश्चर्य पाम्या. छेवटे श्रीविजय राजाए खड्ग वडे

शत्रुना बे ककडा कर्या, त्यारे ते बे अशनिघोषरूप थया. श्रीविजये ते बन्नेना चार ककडा कर्या, त्यारे चार अशनिघोष थया. फरीथी ते चारेना श्रीविजये बबे ककडा कर्या, त्यारे आठ अशनिघोष थया. आ प्रमाणे श्रीविजय अशनिघोषना जेटला ककडा करतो तेटला अशनिघोष थवा लाग्या. तेथी श्रीविजय राजा हवे शुं करवुं? एम विचारमां मूढ बनी गयो. तेटलामां विद्या सिद्ध करीने अमिततेजा पोते आवी पहोंच्यो.

सिंहनी जेवो तेने आवतो जोइ हाथीनी जेम अशनिघोष तत्काळ नाशी गयो. तेने पकडी लाववा माटे अमिततेजाए महाज्वाळा नामनी विद्याने हुकम कर्यो, एटले आखा विश्वने जीतनारी ते विद्या अशनिघोषनी पाछळ दोडी. नासता अशनिघोषे कोइ पण ठेकाणे शरण जोयुं नहीं, तेथी ते अत्यंत आकुळ व्याकुळ थइ दक्षिण भरतार्धमां गयो. त्यां ममता तेणे सीमनग पर्वत उपर बळदेव मुनिने जोया. ते मुनिने तत्काळ केवळज्ञान उत्पन्न थयुं हतुं अने तेनी चोतरफ देवताओ परिवरेला हता. एटले ते अशनिघोषे ते केवळीनुं ज शरण कर्युं, त्यारे महाज्वाळा विद्या तेनो त्याग करी पाछी आवी अने तेणीए सर्व वृत्तांत अमिततेजाने कह्यो. ते सांभळी अमिततेजा अने श्रीविजय ए बन्ने अत्यंत हर्ष पाम्या. त्यारपछी सुताराने लाववा माटे मारीच नामना दूतने मोकली ते बन्ने राजा सैन्य सहित विमानमां बेसी सीमनग पर्वत उपर गया, अने त्यां बन्नेए भक्तिथी अचळ बळदेव केवळीने वंदना करी. मारीच विद्याधर पण चमरचंचा नगरीमां गयो, अने तेणे अशनिघोषनी माने कह्युं के—" सुताराने लइ जवा माटे मने अमिततेजा राजाए अहीं मोकल्यो छे." पछी तेनी माना कहेवाथी सुताराने लइ ते मारीच पण सीमनग पर्वतपर आव्यो, अने तेणे श्रीविजय तथा अमिततेजाने सुतारा सोंपी. ते वखते

अशनिघोषे हर्षथी श्रीविजय अने अमिततेजाने खमाव्या. पछी तेमनी पासे अचल केवळीए धर्मदेशना आपी. देशनाने अंते अशनिघोष राजाए महर्षिने कह्युं के—"हे प्रभु! में दुष्ट अभिप्रायथी आ सुतारानुं हरण कर्युं नहोतुं, परंतु प्रतारणी नामनी विद्याने साधी हुं घर तरफ जतो हतो, तेवामां ज्योतिर्वनने विषे आ सुताराने में श्रीविजय राजानी पासे रहेली जोइ, ते वखते कोइ पण कारणथी तेणीना उपर मारो अत्यंत राग थयो के जेथी तेणीने छोडीने हुं आगळ जवा असमर्थ बन्यो. परंतु श्रीविजयनी पासे रहेली होवाथी हुं तेणीने हरी शक्यो नहीं. तेथी प्रतारणी विद्यावडे श्रीविजयने छेतरी तेने छुटो पाडी दूर मोकलीने में तेणीनुं हरण कर्युं. पछी पाप रहित अने आकुळ व्याकुळ थयेली तेने में मारी मातानी पासे मूकी. वाणीथी पण में तेने अनुचित वचन कह्युं नथी. तो हे भगवान! आने विषे मारो प्रेम शाथी थयो? ते कहो."

त्यारे मुनि तेमनी पासे तेमना पूर्वभवनी श्रीषेण विगेरे सर्वनी कथा कहीने बोल्या के—"श्रीषेण, सत्यभामा, अभिनंदिता अने शिखिनंदिता मरीने युगलिया थया, त्यांथी मरीने देव थया, अने त्यांथी चवीने श्रीषेणनो जीव आ अमिततेजा थयो छे अने शिखिनंदितानो जीव आनी पत्नी ज्योतिष्प्रभा थयो छे. जे अभिनंदितानो जीव हतो ते चवीने आ श्रीविजय थयो छे अने सत्यभामानो जीव चवीने तेनी भार्या सुतारा थयो छे. तथा कपिलनो जीव चिरकाळ सुधी तिर्यंच योनिमां भमी कोइ तापसनो पुत्र धर्मिल नामे धर्मिष्ठ थयो. ते बाल्यावस्थाथी ज तीव्र अज्ञानतप करतो हतो. एकदा आकाशमां जता मोटी समृद्धिवाळा कोइ विद्याधरने जोइ तेणे नियाणुं कर्युं के—"आ मारा तपनो जो प्रभाव होय तो हुं

आवो विद्याधर थाउं." आ प्रमाणे नियाणुं करवाथी ते तापस कुमार मरीने तुं अशनिघोष थयो छे. पूर्वभवना संबंधथी सुताराने विषे तारो स्नेह थयो छे, कारण के स्नेह अने वैरना संस्कार सेंकडो भव सुधी चाले छे."

आ प्रमाणे केवळीना मुखथी पोताना पूर्वभवना वृत्तांत सांभळी अमिततेजा विगेरे सर्वे मनमां विस्मय पाम्या. पछी अमिततेजाए भगवानने पूछयुं के—"हे पूज्य ! हुं भव्य छुं के नहीं ?" मुनि बोल्या के—"आ भवथी नवमे भवे आ ज भरतक्षेत्रमां तमे शांतिनाथ नामना पांचमा चक्रवर्ती अने सोळमा तीर्थंकर थशो. ते भवे आ श्रीविजय तमारो मोटो पुत्र तथा प्रथम गणधर थशे." ते सांभळीने ते बन्ने राजाओए श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. त्यारपछी अशनिघोषे मुनिने कह्युं के—"सन्मार्गने देखाडनार सद्गुरु विना मूढ पथिक अरण्यमां जेम भटके तेम हुं आ संसारमां चिरकाळ सुधी भटक्यो छुं. मोटा भाग्ये आज सिद्धिपुरीना मार्गने देखाडनारा तमने में जोया छे. तो हे प्रभु ! मारापर प्रसन्न थइ मने साधुधर्म आपो." ते सांभळी मुनिए तेने चारित्र आपवानी अनुज्ञा आपी, एटले ते बुद्धिमान अशनिघोषे पोताना पुत्र अश्वघोषने अमिततेजाना उत्संगमां स्थापन करी कह्युं के—"आ मारा पुत्रने तमे पोताना पुत्रनी जेम राखजो." ए प्रमाणे कही अचळ स्वामीनी पासे तेणे दीक्षा ग्रहण करी. पछी श्रीविजय अने अमिततेजा ऋषिने वंदना करी परिवार सहित पोताने स्थाने गया. बीजा जनो पण हर्ष पामी पोतपोताने स्थाने गया. खेचरेंद्र अमिततेजाए तथा नरेंद्र श्रीविजये श्राद्धधर्मनुं पालन करतां अने जिनशासननी प्रभावना करता घणो काळ निर्गमन कर्यो.

एकदा श्रीविजय अने अमिततेजा साथे मळीने मेरुपर्वतपर शाश्वत जिनेश्वरोने वांदवा गया. त्यां जिनप्रतिमाओने

ांदी एक सुवर्णनी शिलापर ध्यानमां बेठेला विपुलमति अने महामति नामना बे चारण मुनिओने नम्या. ते वखते ते महर्षिओए देशनामां सर्व अनित्यता देखाडी. ते सांभळी ते बन्ने राजाओए पूछ्युं के—"हे प्रभु! अमारुं आयुष्य केटलुं शेष छे?" मुनिओए तेमने कह्युं के—"तमारुं आयुष्य आजथी छवीश दिवसनुं शेष छे." ते सांभळी ते बन्ने धर्मकृत्यमां उत्सुक थइ पोतपोताने घेर गया. त्यां जिनचैत्योमां अष्टाह्निका महोत्सव करी, दीनादिकने दान आपी, पोतपोताना पुत्रोने राज्यपर स्थापन करी, अभिनंदन अने जगन्नंदन नामना गुरु पासे दीक्षा ग्रहण करी, हर्षथी पादपोपगमन नामनुं अनशन ग्रहण कर्युं. ते वखते श्रीविजये पोताथी अधिक ऋद्धिवाळा पोताना पितानुं स्मरण करी नियाणुं कर्युं के—"आ तपना प्रभावथी आवता भवमां हुं मारा पिता जेवो थाउं." पछी आयुष्य पूर्ण थये अमिततेजा अने श्रीविजय मुनि काळधर्म पामी प्राणत नामना स्वर्गमां वीश सागरोपमना आयुष्यवाळा उत्तम देवो थया.

आ ज जंबूद्वीपना पूर्व महाविदेह क्षेत्रने विषे रमणीय नामना विजयमां शुभा नामनी श्रेष्ठ पुरी छे. तेमां गुणरूपी रत्नोवडे परिपूर्ण स्तिमितसागर नामनो राजा हतो. तेने सुंदर रूपवाळी वसुंधरा अने अनुद्धरा नामनी बे प्रियाओ हती. प्राणत नामना स्वर्गथी अमिततेजानो जीव चवीने वसुंधरा देवीनी कुक्षिमां पुत्रपणे अवतर्यो. ते वखते सुखे सुतेली ते कमळना सरखा मुखवाळी वसुंधराए स्वप्नमां पोताना मुखमां प्रवेश करता हाथी, वृषभ, चंद्र अने सरोवर ए चार पदार्थो जोया. तरत ज जागृत थयेली तेणीए तेनुं फळ राजाने पूछ्युं, त्यारे राजाए कह्युं के—"हे प्रिया! आ स्वप्नोवडे तारो पुत्र बळदेव थशे." ते सांभळी हर्ष पामेली राणीए गर्भ धारण कर्यो. अनुक्रमे समय पूर्ण थये तेणीए शुभलक्षणवाळा

अने श्वेतवर्णवाळा पुत्रने जन्म आप्यो. राजाए महोत्सवपूर्वक तेनुं अपराजित नाम पाड्युं. पछी श्रीविजयनो जीव पण प्राणतकल्पमांथी चवी अनुद्धरा राणीनी कुक्षिमां अवतर्यो. ते वखते सिंह, लक्ष्मी, सूर्य, कुंभ, समुद्र, रत्नराशि अने निर्धूम अग्नि ए सात पदार्थो राणीए स्वप्नमां पोताना मुखमां प्रवेश करता जोया. तरत ज जागृत थइने राणीए राजाने स्वप्नोनुं फळ पूछ्युं, त्यारे राजाए कह्युं के —" हे प्रिया ! आ स्वप्नोथी तारो पुत्र वासुदेव थशे." पछी अनुक्रमे समय पूर्ण थये राणीए श्याम वर्णवाळो मनोहर पुत्र प्रसव्यो. तेनुं नाम राजाए महोत्सव पूर्वक अनंतवीर्य पाड्युं.

ते बन्ने भाइओ अनुक्रमे वृद्धि पामता निरंतर प्रेमपूर्वक साथे ज क्रीडा करवा लाग्या. योग्य समये गुरु पासेथी सर्व कळाओ शीख्या. पछी वसंतऋतुरूपे आम्रवृक्षनी जेम यौवनरूपे पुष्पित थयेला ते बन्ने भाइओ भमरीनी जेम युवतिओनी दृष्टिने मोह पमाडवा लाग्या.

एकदा स्तिमितसागर राजा अश्वक्रीडा करवा नगरीनी बहार गयो. त्यां उद्यानमां रहेला स्वयंप्रभ नामना मुनिने जोइ तेणे तेमने वंदना करी. पछी मुनिनी पासे बेसी तेमनी देशना सांभळी राजा प्रतिबोध पाम्यो. एटले पोताना राज्यपर अनंतवीर्यने स्थापन करी ते मुनिनी पासे तेणे दीक्षा ग्रहण करी. ते राजर्षिए मनोहर चारित्रनुं पालन कर्युं. परंतु छेवट व्रतनी कांइक विराधना करी, तेथी ते काळधर्म पामी चमर नामनो असुरेंद्र थयो.

उत्तम पराक्रमवाळो अनंतवीर्य राजा पोताना मोटाभाइ सहित इंद्रनी जेम साम्राज्य भोगववा लाग्यो. एकदा कोइ

विद्याधरनी साथे ते बन्ने भाइओने मित्राइ थइ. तेमने ते विद्याधरे सर्व विद्याओ आपी, पछी ते विद्याधर वैताढ्य पर्वतपर गयो. अनंतवीर्यनी पासे किराती अने बर्बरी नामनी बे दासीओ हती, ते गीत नाट्यादिकनी कळावडे जगतना चित्तने हरण करती हती, एकदा सभामां ते बन्ने भाइओ पासे ते दासीओ नाट्य करती हती, ते वखते नारद त्यां आवी चड्या. परंतु ते बन्ने भाइओनुं चित्त नाटक जोवामां तन्मय थयुं हतुं, तेथी तेमणे नारदनुं सन्मान कर्युं नहीं. एटले नारद मनमां क्रोध पामी त्यांथी नीकळी वैताढ्य पर्वतपर गया. त्यां सर्व विद्याधरनो राजा दमितारि नामे प्रतिवासुदेव हतो, तेनी पासे नारद गया. तेने जोइ दमितारि राजाए उभा थइ आदरपूर्वक सिंहासनपर बेसाड्या. नारदे सिंहासनपर बेसी तेने आशीर्वाद आप्यो. तेने राजाए पूछ्युं के—"हे पूज्य ! तमे समग्र पृथ्वीपर स्वेच्छाए अटन करो छो, तेथी कांइपण अद्भुत जोयुं होय तो ते कहो." ते सांभळी नारदे हर्ष पामी कह्युं के—"हे राजा ! हुं शुभापुरीमां अनंतवीर्य राजानी पासे गयो हतो. त्यां किराती अने बर्बरी नामनी बे दासीओनुं नाटक में जोयुं, तेवुं नाटक देवोने पण दुर्लभ छे, ते दासीओ विना हे राजा ! आ तमारुं समग्र राज्य घी विनाना भोजननी जेवुं तुच्छ लागे छे." आ प्रमाणे कही कलिप्रिय नारद आकाशमार्गे पोताने स्थाने गया.

त्यारपछी दमितारि राजाए पोतानो दूत अनंतवीर्य राजा पासे मोकल्यो. ते दूते शुभापुरीमां जइ मोटाभाइ सहित अनंतवीर्यने नमस्कार करी कह्युं के—"हे राजा ! आ अर्ध विजयमां जे कांइ उत्तम पदार्थ होय ते सर्व दमितारि राजाने ज योग्य छे. तेथी तमारी पासे जे बे दासीओ नाट्य करवामां कुशळ छे, तेमने दमितारि राजा पासे मोकलो." ते

सांभळी राजाए कह्युं के—" हे दूत ! तुं हमणां जा. हुं कांइक विचार करीने ते बन्ने दासीओने शीघ्रपणे मोकलीश." ते सांभळी दूत त्यांथी गयो, त्यारे ते बन्ने भाइओए विचार कर्यो के–"आ दमितारि राजा विद्याशक्तिथी आपणापर हुकम चलावे छे, तेथी आपणे पण विद्याधर मित्रे आपेली सर्व विद्याओ साधी ऐथी बळवान थइए." आ प्रमाणे ते बन्ने भाइओ विचार करता हता, ते ज वखते प्रज्ञप्ति विगेरे सर्व विद्यादेवीओ तेमनी पासे आवीने बोली के—" तमे जेने साधवा इच्छो छो ते अमे सर्व विद्यादेवीओ जाते ज तमारी पासे आवी छीए. पूर्वभवमां तमे अमने साधी छे, तेथी अत्यारे साधवानी जरुर नथी. मात्र अमने तमारा शरीरमां प्रवेश करवानी अनुज्ञा आपो." ते सांभळी ते बन्ने भाइओए तेमने अनुज्ञा आपी, एटले ते सर्व विद्यादेवीओए तेमना शरीरमां प्रवेश कर्यो, पछी ते बन्ने भाइओए हर्ष पामी तेमनी श्रेष्ठ पूजा करी.

एवा अवसरे दमितारि राजाए फरीथी दूत मोकल्यो, तेणे आवी ते बन्ने भाइओने कह्युं के—" दासीओने मोकलवानुं कहीने पण तमे मोकली नहीं. तेथी एम जणाय छे के—तमने तमारा प्राणो करतां पण ते दासीओ वधारे प्रिय छे. हजु पण जो तमने तमारा प्राण वहाला होय तो ते दासीओने शीघ्र मोकलो, नहीं तो क्रोध पामेला स्वामी तमारा प्राणोने हरण करशे." ते सांभळी ते बन्ने भाइओ बोल्या के—" स्वामीने तो घणा धनवडे पण संतुष्ट करवा जोइए, तो जो मात्र आ बे दासीओथी ज तेने संतोष थतो होय, तो ते दासीओने काले सवारे ज तमे लइने जाओ." आ प्रमाणे कही तेमणे दूतने प्रसन्न कर्यो. पछी ते दूत तेमणे आपेला उतारामां गयो. पछी बुद्धिमान ते बन्ने भाइओ राज्यनो भार मंत्रीओने सोंपी प्रातःकाळे विद्यावडे ते दासीओनुं रूप धारण करी दूतनी पासे गया, अने तेने कह्युं के—" अमने अनंतवीर्य अने

तेना मोटाभाइए तमारी पासे मोकली छे. " पछी ते दूत तेमने लइ हर्ष सहित वैताढ्य पर्वतपर गयो अने दमितारि राजाने ते बन्नेनी भेट करी हाथ जोडी बोल्यो के—" हे स्वामी ! अपराजित अने अनंतवीर्य ए बन्ने आपनी आज्ञाने आधीन ज छे. तेथी तेमणे आ बे दासीओ आपने भेट तरीके मोकली छे. " ते सांभळी प्रसन्न थइ दमितारि राजाए ते बन्नेने नाट्य करवानी आज्ञा करी. एटले तेमणे पूर्वरंग विगेरेना अनुक्रमे समग्र विश्वने मोह पमाडे तेवुं रसिक नाट्य करी बताव्युं. तेमनुं अद्भुत नाट्य जोइ दमितारि राजाए ते बन्ने दासीओने त्रण जगतना साररूप मानी. पछी दमितारि राजाए रूपलक्ष्मीवडे समग्र विश्वने जीतनारी पोतानी कनकश्री नामनी पुत्रीने नाट्य शीखववा माटे ते बन्ने दासीओने सोंपी, त्यारे ते मायावी दासीओ अनंतवीर्यना रूपादिक गुणोनुं अद्भुत गायन गाती सती ते कनकश्रीने नाट्य शीखववा लागी. एकदा ते राजकन्याए तेमने पूछ्युं के—" तमे हमेशां जेना गुणो गाओ छो ते कोण छे ? " ते सांभळी मायाथी चेटी थयेला अपराजिते कह्युं के—" ते शुभापुरीनो राजा छे, तेनुं रूप कामदेवना रूपनो तिरस्कार करे तेवुं छे, कोइपण शत्रुथी पराभव न पामे तेवो महा पराक्रमी छे, ते अपराजितनो नानो भाइ छे, तेनुं नाम अनंतवीर्य छे, वयमां पण ते युवान छे, तेना गुण अमे गाइए छीए, जे युवतिए तेने जोयो नथी, तेनो जन्म वृथा ज छे." ते सांभळी कनकश्रीनुं शरीर रोमांचथी उल्लास पाम्युं, ते मनथी अनंतवीर्यपर आसक्त थइ अने ' ते प्रियने हुं क्यारे जोइश ? ' एम ते चिरकाळ सुधी विचारमां ज रही. तेणीना इंगिताकारथी तेणीनुं मन जाणी अपराजिते पूछ्युं के—" हे मृगाक्षी ! विश्वना अलंकाररूप ते अनंतवीर्यने शुं तुं जोवाने इच्छे छे ? " कनकश्री बोली के—" मने तेनुं दर्शन क्यांथी थाय ? मंद भाग्यवाळा प्राणी-

ओने चिंतामणि रत्न दुर्लभ ज होय छे." अपराजिते कह्युं—"हे कमळना सरखा नेत्रवाळी ! तुं शोक न कर. तारे माटे *हुं विद्यार्थी ते युवानने तेना मोटाभाइ सहित अहीं लावी आपुं." ते सांभळीने हर्षथी गद्गद् वाणीए कनकश्री बोली के—* "हे कळावाळी ! तारुं वचन सफळ कर." ते सांभळी ते बन्ने विद्याधरे पोतपोतानुं मूळ स्वरूप धारण करी प्रगट थया. पछी अपराजिते तेणीने कह्युं के—"हे पुण्यशाळी ! आ ज अनंतवीर्य छे. में तने तेना रूपादिक जेवां कह्यां छे, तेवां ज छे के नहीं ? तेनी तुं पोते ज खात्री कर." ते सांभळी ते चतुर कन्या पण निमेष रहित दृष्टिवडे अनंतवीर्यनी सामुं जोइ ज रही. त्यारपछी ते दमितारिनी पुत्री कामदेवथी पीडा पामी, तेथी लज्जानो त्याग करी तथा मानने दूर करी बोली के—"हे मनोहर ! आजसुधी में घणा युवानो जोया छे, परंतु तमारा विना कोइने विषे मारुं मन आनंद पाम्युं नथी. तो हवे मारापर प्रसन्न थइने शीघ्रपणे मारुं पाणिग्रहण करो अने मारापर अनुग्रह करो. तमारी जेवा सत्पुरुषो अनुरागी जननी उपेक्षा करे ज नहीं." ते सांभळी अनंतवीर्ये कह्युं के—"हे सुंदरी ! जो तारी तेवी इच्छा छे तो चाल. आपणे शुभापुरीमां जइए." त्यारे ते बोली के—"हे कांत ! हुं तमारी साथे आवीश ज. परंतु मारो पिता तमने अनर्थ करशे." अनंतवीर्ये कह्युं—"हे भीरु ! तेनाथी तारे जरापण भय राखवो नहीं." एम कही तेणे तरत ज विद्यावडे विमान विकुर्व्युं. तेमां ते बन्ने भाइओ साथे कनकश्री हर्षथी बेठी. पछी विमानने चलावी अनंतवीर्य उंचे स्वरे आ प्रमाणे बोल्यो के—"हुं अनंतवीर्य दमितारिनी आ पुत्रीने हरी जाउं छुं. जे कोइ शूरमानी होय तेणे पोतानुं बळ देखाडवुं."

ते सांभळी क्रोध पामेला दमितारि राजाए तेने हणवा माटे पोताना सुभटो मोकल्या. ते वखते ते बन्ने भाइओ

पासे एक चक्ररत्न सिवाय बीजां सर्व रत्नो प्रगट (उत्पन्न) थयां. पछी महारथी एवा ते बळदेव अने वासुदेवे क्रोधथी शस्त्रोनी वृष्टि करनारा ते दमितारिना सुभटोनो शीघ्र पराजय कर्यो. त्यारे सैन्यवडे आकाशने ढांकतो अने तेजस्वी शस्त्रो-वडे वीजळीना उद्योतने करतो दमितारि राजा पोते युद्ध करवा चाल्यो. तेने आवतो जोइ कनकश्री अत्यंत भय पामी. तेने धीरज आपी बळदेव सहित वासुदेव तेनी साथे युद्ध करवा पाछा वळ्या. पछी वासुदेवे तेना सैन्यथी बमणुं सैन्य विद्यावडे विकुर्वीने ते दमितारिना सुभटो साथे युद्ध शरु कर्युं. अनुक्रमे दमितारिना सैन्ये अनंतवीर्यना सैन्यनो पराभव कर्यो, ते जोइ वासुदेवे युद्धरूपी नाटकनी नांदीनो जाणे नाद होय एवो पंचजन्य शंखनो नाद कर्यो. ते नाद सांभळतां ज दमितारिना सर्व सुभटो भय पामी नाशी गया. त्यारे दमितारिए पोते अनंतवीर्य साथे चिरकाळ युद्ध कर्युं. छेवट अनंत-वीर्यने दुर्जय जाणी दमितारिए चक्ररत्ननुं स्मरण कर्युं, एटले जाणे बीजो सूर्य होय एवुं तेजस्वी ते चक्र दमितारिना हाथमां प्राप्त थयुं. तरत ज तेणे ते चक्र अनंतवीर्य उपर मूक्युं. तेथी अनंतवीर्य छातीमां ते चक्रना तुंबनो आघात थवाथी मूर्छा खाइ पृथ्वीपर पड्यो, परंतु एक क्षणवारमां ज पाछो स्वस्थ थइ ते ज चक्र हाथमां लइ तेणे दमितारि उपर मूक्युं, तेनाथी ते प्रतिवासुदेव प्राण रहित थइ गयो. ते वखते आकाशमां रहेला देवोए वासुदेवना मस्तक उपर पुष्पवृष्टि करीने कह्युं के—" हे जनो ! आ अनंतवीर्य वासुदेव छे अने तेना मोटा भाइ बळदेव छे, तेमनी तमे सर्वे सेवा करो. " ते सांभळी सर्व विद्याधरो वासुदेवने नम्या.

त्यारपछी विद्याधर राजाओथी परिवरेला वासुदेव अने बळदेव पोतानी पुरी तरफ चाल्या. मार्गमां कनकगिरि नामनो पर्वत आव्यो. त्यारे खेचरेन्द्रोए वासुदेवने कह्युं के—"हे स्वामी! आ पर्वतपर जिनेश्वरोनां चैत्यो छे, तेमने वांदीने आगळ चालो." ते सांभळी वासुदेव सर्व परिवार सहित ते पर्वतपर उतर्या, त्यां चैत्योमां जिनप्रतिमाओने वंदन करी ते सर्व बहार नीकळ्या. तेवामां कोइ स्थाने तत्काळ उत्पन्न थयेला केवळज्ञानवाळा कीर्तिधर नामना मुनिने जोया. ते केवळीने नमस्कार करी वासुदेवे परिवार सहित धर्मदेशना सांभळी. देशनाने अंते कनकश्रीए केवळीने पूछ्युं के—"हे प्रभु! मारे बंधुओनो विरह अने मारा पितानो घात कया कर्मने लीधे थयो? ते कृपा करीने कहो." त्यारे मुनिराज बोल्या के—

धातकीखंडना भरतक्षेत्रमां शंख नामनुं गाम छे, तेमां श्रीदत्ता नामनी अति दुःखी, गरीब अने अन्यना घरमां कामकाज करीने आजीविका करनारी एक स्त्री हती. एकदा ते श्रीपर्वत उपर गइ. त्यां सत्ययशा नामना मुनिने जोइ तेमने वंदना करी. मुनिए तेणीने धर्माशिष आपी. पछी तेणीए मुनिने कह्युं के—"हे पूज्य! हुं अत्यंत दुःखी स्थितिवाळी छुं, तो एवो धर्म बतावो के जेथी आलोक अने परलोकमां हुं सुखी थाउं." त्यारे साधुए तेणीने धर्मचक्रवाळ नामनो तप करवा

---

१ आ तपमां प्रथम अट्ठम करी, पारणुं करी, पछी एकांतर साडत्रीश उपवास करवा अने छेवट अट्ठम करवो. आ तपमां कुल बाशी दिवस थाय छे. बीजी रीत एवी छे के प्रथम छट्ठ करी पछी एकांतर साठ उपवास करवा आ रीते करवाथी कुल १२३ दिवस थाय छे.

कह्युं. ते तप अंगीकार करीने ते पोताने घेर गइ. ते तपना प्रभावथी तेणीने पारणा नेदिवसे सारुं भोजन मळवा लाग्युं. एकदा पोताना घरनी भींतनो थोडो भाग पडी गयो, तेमांथी घणुं सुवर्ण नीकळ्युं, ते जोइ श्रीदत्ता आनंद पामी. पछी तपने छेडे तेणीए पेला द्रव्यवडे मोटा उत्सव पूर्वक उत्तम उद्यापन कर्युं, ते दिवसे मासक्षपमणने पारणे कोइ मुनि त्यां आवी चड्या, तेमने तेणीए भक्तिथी आहार पाणी वहोराव्यां, पछी मुनि आहार करी रह्या त्यारे ते श्रीदत्ता ते मुनिनी पासे गइ. तेमना मुखथी धर्मोपदेश सांभळी तेणीए श्राद्धधर्म अंगीकार कर्यो. त्यारपछी एकदा तेणीए विचार कर्यो के—"आ धर्मथी मने कांइ फळ थशे के नहीं ?" आ रीते धर्मने विषे विचिकित्सा करी तेनी आलोचना कर्या विना ज मरण पामीने हे वत्सा कनकश्री ! ते श्रीदत्ता तुं ज मारा पुत्र दमितारिनी पुत्री थइ छे. ते विचिकित्सानुं आ फळ तने प्राप्त थयुं छे, कारण के धर्मनी थोडी पण विराधना घणुं दुःख आपे छे."

आ प्रमाणे केवळीना मुखथी पोतानो पूर्वभव सांभळी कनकश्री वैराग्य पामी, तेथी तेणे वासुदेवने कह्युं के—"हे महाभाग्यवान् ! हुं संसारथी भय पामुं छुं, माटे मने व्रत ग्रहण करवानी आज्ञा आपो." ते सांभळी विस्मय पामी अनंतवीर्ये कह्युं के—"हे कल्याणी ! हमणां तो तुं शुभापुरीमां चाल. पछी त्यां श्रीस्वयंप्रभ जिनेश्वरनी पासे मोटा उत्सव पूर्वक दीक्षा ग्रहण करजे." आ प्रमाणे कही ते वासुदेव तेणीने साथे लइ मुनिने भक्तिथी प्रणाम करी परिवार सहित शुभापुरीए गया. ते वखते त्यां प्रथमथी प्रतिवासुदेवे मोकलेला विद्याधर राजाओनी साथे वासुदेवना पुत्रने युद्ध करता जोइ महा बळवान बळभद्र तेमनी सन्मुख दोड्या, अने पोताना सीर (हळ) नामना हथियारने चोतरफ भमाडवा लाग्या.

तेनाथी भय पामेला दमितारिना सुभटो तत्काळ जूदी जूदी दिशाओमां नाशी गया. पछी अनंतवीर्य पोताने घेर गया. त्यां सर्व राजाओए मळी वासुदेवनो राज्याभिषेक कर्यो.

एकदा श्रीस्वयंप्रभ जिनेश्वर शुभापुरीए पधार्या. ते सांभळी वासुदेव मोटा भाई सहित कनकश्रीने साथे लइ तीर्थंकरने वांदवा गया. त्यां जइ प्रभुने वांदी तेणे धर्मदेशना सांभळी. पछी हरिनी आज्ञा लइ कनकश्रीए महोत्सव पूर्वक जिनेश्वर पासे दीक्षा ग्रहण करी, अने अनुक्रमे निरतिचार चारित्रनुं पालन करी तथा उग्र तप करी सर्व कर्मनो क्षय करी मोक्षे गइ.

समकितवडे शासननो उद्योत करता ते वासुदेव अने बळदेवे चिरकाळ सुधी राज्य भोगव्युं. चोराशी लाख पूर्वनुं आयुष्य पूर्ण करी वासुदेव उग्रकर्मने योगे पहेली नरक पृथ्वीमां उत्पन्न थया. त्यां तेनुं आयुष्य बेंतालीश हजार वर्षनुं हतुं. तेटलो काळ छेदन भेदनादिक दुःसह पीडा तेणे भोगवी. ते वखते तेना पूर्वभवना पिता के जे चमरेंद्र थया हता, तेणे तेनी पासे आवी कर्मनुं फळ शांतिथी भोगववा उपदेश आप्यो.

वासुदेवना मरणथी शोकमग्न थयेला बळदेवे पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी सोळ हजार राजाओ सहित जयधर नामना गणधरनी पासे दीक्षा ग्रहण करी अने अनुक्रमे दीक्षानुं पालन करी उग्र तप करी ते बळदेव मुनि आयुष्यने अंते काळधर्म पामी अच्युतेंद्र थया.

आ जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रने विषे वैताढ्य पर्वत उपर गगनवल्लभ नामनुं नगर छे. तेमां खेचर राजा मेघवाहन राज्य करतो हतो. तेनी प्रियानी कुक्षिमां अनंतवीर्यनो जीव नरकमांथी पुत्रपणे उत्पन्न थयो. तेनुं नाम मेघनाद पाड्युं. ते युवावस्थाने पाम्यो त्यारे मेघवाहने तेने राज्यपर स्थापन कर्यो. मेघनाद राजाए अनुक्रमे वैताढ्यनी बन्ने श्रेणिओ साधीने पोताने आधीन करी. पछी तेणे देशोना विभाग करीने पोताना पुत्रोने ते वहेंची आप्या. एकदा ते मेघनाद मेरुपर्वतपर नंदनवनमां रहेला शाश्वत चैत्योने वांदवा गया. त्यां अच्युतेंद्र पण आव्या हता. तेणे अवधिज्ञानथी मेघनादने ओळखी हर्षथी प्रतिबोध कर्यो. ते वखते त्यां अमरगुरु नामना चारणमुनि पधार्या. तेमनी पासे ते खेचराधीश मेघनादे त्यांज दीक्षा ग्रहण करी. ते मेघनाद मुनि तीव्र व्रतनुं पालन करी परीषहो सहन करी अंते अनशनवडे काळधर्म पामी अच्युत देवलोकमां इंद्रना सामानिक देव थया.

आ ज जंबूद्वीपना पूर्व महाविदेहक्षेत्रना भूषणरूप मंगलावती नामनी विजयमां रत्नसंचया नामनी नगरी छे. तेमां विश्वना जीवोनुं क्षेमकुशळ करनार क्षेमंकर नामे राजा हतो. तेने सद्गुणोवडे शोभती रत्नमाळा नामनी प्रिया हती. अन्यदा बावीश सागरोपमनुं आयुष्य पूर्ण करी अच्युत देवलोकथी चवीने अपराजितनो जीव रत्नमाळानी कुक्षिमां अवतर्यो. ते वखते रात्रिमां सुखे सुतेली तेणीए चौद महास्वप्नो जोयां, तथा पंदरमुं वज्रनुं स्वप्न जोयुं. तरत ज जागृत थयेली राणीए ते वृत्तांत राजाने कह्यो. राजाए तेणीने कह्युं के—" हे प्रिया ! तारे चक्रवर्ती पुत्र थशे." ते सांभळी राणी हर्ष पामी, अने ते दिवसथी तेणीए गर्भ धारण कर्यो. अनुक्रमे समय पूर्ण थये रत्नमाळाए त्रण जगतने मनोहर एवा पुत्रने

प्रसव्यो. राजाए महोत्सवपूर्वक तेनुं पंदरमा स्वप्नने अनुसारे वज्रायुध नाम पाड्युं. अनुक्रमे ते युवावस्थाने पाम्यो त्यारे मोटा उत्सवथी लक्ष्मीवती नामनी राजपुत्रीने परण्यो. त्यारपछी अनंतवीर्यनो जीव अच्युत कल्पथी चवीने लक्ष्मीवती देवीनी कुक्षिमां अवतर्यो, अने समय पूर्ण थये तेणीए पुत्ररत्नने जन्म आप्यो. पिताए तेनुं नाम महोत्सवपूर्वक सहस्रायुध पाड्युं. ते कुमार पण अनुक्रमे वृद्धि पामी समग्र कळाओनो अभ्यास करी कामदेवना क्रीडोद्यान समान यौवनने पाम्यो.

एकदा क्षेमंकर राजा पुत्र सहित सभामां बेठा हता, ते समये ईशानकल्पना इंद्रे पोतानी सभामां वज्रायुधना समकितनी अति श्लाघा करी, ते उपर श्रद्धा न थवाथी चित्रचूल नामनो एक मिथ्यात्वी देव विवाद करवा माटे क्षेमंकर राजानी सभामां आव्यो. त्यां ते देव मिथ्यात्वनो आश्रय करी बोल्यो के—" पुण्य, पाप, परभव, आत्मा विगेरे कांइपण छे नहीं. " ते सांभळी अवधिज्ञानवाळा वज्रायुधे तेने हर्षथी कह्युं के—" हे देव ! तुं ज अवधिज्ञानवडे तारो पूर्वभव जो. ते भवमां तें आवा देवसंपत्तिना कारणरूप धर्मकर्म कर्युं हतुं, तेनुं ज फळ तने मळ्युं छे, ते तुं ज प्रत्यक्ष जो. आ प्रमाणे पुण्य अने पूर्वभव सिद्ध थवाथी जीव तो सिद्ध थाय ज छे. केमके ते विना परभवमां कोण जाय ? अने सुखदुःख कोण पामे? आम छतां तुं पुण्य पापादिकनो अभाव केम कहे छे ? " आ प्रमाणे वज्रायुधनुं वचन सांभळी चित्रचूल देव बोल्यो के—" हे कुमार ! मने कोइ प्रकारे बोध थाय तेम नहोतुं, छतां तमे श्रेष्ठ युक्तिपूर्वक मने तत्त्वनो बोध पमाड्यो ते बहु सारुं कर्युं. तो हवे मारापर प्रसन्न थइने मने मिथ्यामतिने शीघ्र बोधिरत्न आपो. केमके इर्ष्याथी पण सत्पुरुषनुं करेलुं दर्शन

निष्फळ थतुं नथी." त्यारे वज्रायुधे ते देवने समकितनो बोध कर्यो. तेथी प्रसन्न थइ ते देवे निःस्पृह एवा पण ते वज्रायुधने दिव्य आभूषणो आप्यां, पछी ईशानेंद्रनी सभामां जइ तेणे इंद्रने कह्युं के–" हे स्वामी ! तमे वज्रायुधना समकितनी श्लाघा करी ते युक्त ज छे."

एकदा लोकांतिक देवोए आवी क्षेमंकर प्रभुने तीर्थ प्रवर्तावबानो बोध कर्यो, एटले ते प्रभुए वार्षिक दान आप्युं, तथा वज्रायुधने राज्य आप्युं. पछी वज्रायुधे तथा देवोए प्रभुनो दीक्षामहोत्सव कर्यो. प्रभु पण चारित्र ग्रहण करी अनुक्रमे केवळज्ञान पाम्या. प्रभुना केवळज्ञाननी वार्ता सांभळी वज्रायुध राजा सर्व परिवार सहित प्रभु पासे जइ देशना सांभळी घेर आव्या. ते वखते आयुधशाळाना रक्षके राजना पासे आवी चक्ररत्ननी उत्पत्ति कही. तथा ते ज वखते बीजां पण सर्व रत्नो उत्पन्न थयां. पछी वज्रायुध राजाए मोटा उत्सवपूर्वक चक्ररत्ननी पूजा करी. त्यारपछी चक्ररत्नने अनुसरी तेणे मंगलावती विजयना छए खंड साध्या अने अखंड आज्ञावाळा ते चक्रीए चिरकाळ सुधी छ खंडनुं राज्य भोगव्युं.

एकदा क्षेमंकर जिनेश्वर रत्नसंचया नगरीना उद्यानमां समवसर्या. तेना खबर उद्यानपाळोए चक्रीने आप्या. ते सांभळी चक्रीए तेओने हर्षथी साडाबार करोड सुवर्णनुं प्रीतिदान आप्युं. पछी ते चक्री परिवार सहित जिनेश्वर पासे जइ तेमने वांदी तेमना मुखथी धर्मदेशना सांभळी वैराग्य पामी तत्काळ घेर आव्या अने तेणे आदरपूर्वक सहस्रायुधने राज्यपर स्थापन कर्यो. पछी चार हजार पोतानी राणीओ, चार हजार राजाओ अने सातसो पुत्रो सहित लोकोए पूजेला वज्रायुधे क्षेमंकर प्रभुनी पासे जइ चारित्र ग्रहण कर्युं, अने तीव्र तप करता पृथ्वीपर विचरवा लाग्या. केटलोक काळ गया

पछी सहस्त्रायुध राजाए पण पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी पिहिताश्रव नामना गणधरनी पासे चारित्र ग्रहण कर्युं. ते सहस्त्रायुध राजर्षि श्रुतना पारगामी थइ पृथ्वीपर विचरता एकदा वज्रायुध राजर्षिने मळ्या. त्यारपछी स्वाध्याय ध्यानमां तत्पर अने शुभ अंतःकरणवाळा ते बन्ने पितापुत्र चिरकाळ सुधी साथे ज विचर्या. एकदा ते बन्नेए ईषत्प्राग्भार नामना पर्वतपर चडी पादपोपगम नामनुं अनशन ग्रहण कर्युं, अने आयुष्य पूर्ण थये त्रीजा ग्रैवेयकमां पचीश सागरोपमना आयुष्यवाळा देदीप्यमान देवो थया.

आ जंबूद्वीपमां पूर्व महाविदेहने विषे पुष्कलावती नामनी विजयमां मोटी समृद्धिवाळी पुंडरीकिणी नामनी नगरी छे. तेमां शत्रु राजाओना तेजरूपी अग्निने बुझाववामां अद्वितीय मेघ समान अने अद्भुत पराक्रमवाळो घनरथ नामे राजा हतो. महादेवने गंगा अने गौरीनी जेम ते राजाने प्रीतिमती अने मनोरमा नामनी बे प्रियाओ हती. हवे वज्रायुधनो जीव ग्रैवेयकथी चवीने प्रीतिमती देवीनी कुक्षिमां अवतर्यो. ते वखते तेणीए स्वप्नमां पोताना मुखमां प्रवेश करतो वीजळीवाळो, गर्जना करतो अने अमृतवृष्टिने वरसावतो मेघ जोयो. तरत ज जागृत थइने तेणीए ते स्वप्ननुं फळ राजाने पूछयुं, त्यारे तेणे कह्युं के—" हे प्रिया ! मेघनी जेम पृथ्वीना संतापने दूर करनार एवो पुत्र तारे थशे. " त्यारपछी सहस्त्रायुधनो जीव पण ग्रैवेयकथी चवीने मनोरमा देवीना उदरमां अवतर्यो. ते वखते तेणीए स्वप्नमां मनोहर रथ जोइ पतिने तेनुं फळ पूछयुं, त्यारे राजाए कह्युं के—" हे प्रिया ! तारो पुत्र महारथी थशे. " पछी समय पूर्ण थये ते बन्ने राणीओए अद्भुत पुत्रोने जन्म आप्यो. ते पुत्रो जाणे के क्रीडा करवाना मिषथी मनुष्यभवमां आवेला इंद्र अने उपेंद्र होय तेवा शोभता हता. पछी राणी-

श्रोना स्वप्नने अनुसारे राजाए पहेलानुं मेघरथ अने बीजानुं दृढरथ नाम पाडयुं. ते बन्ने पुत्रो मेरुनी जेम ते नृपकुळने शोभावता हता अने बाळ कल्पवृक्षनी जेम वृद्धि पामता हता. अनुक्रमे रत्नवडे सुवर्णनी जेम अने वसंत ऋतुवडे उद्याननी जेम यौवनवडे ते बन्नेनुं रूप अत्यंत शोभा पाम्युं.

आ अवसरे सुमंदिर नामना नगरमां जितशत्रु नामना राजाने जाणे त्रण भुवननी लक्ष्मी हरण करीने आणी होय एवी त्रण पुत्रीओ हती. तेमां पहेलीनुं नाम प्रियमित्रा, बीजीनुं मनोरमा अने त्रीजीनुं नाम सुमति हतुं. तेमांथी पहेली बे पुत्रीओ राजाए मेघरथने आपी अने एक नानी पुत्री दृढरथ कुमारने आपी. देवीओनी साथे देवोनी जेम ते प्रियाओ साथे विषयसुख भोगवता ते बन्ने कुमारोए घणो काळ व्यतीत कर्यो.

एकदा लोकांतिक देवोए आवी श्रीघनरथ राजाने बोध कर्यो, एटले तेणे वार्षिक दान आप्युं अने बन्ने कुमारोने अनुक्रमे राज्य तथा युवराज पदवी आपी. पछी चारित्र ग्रहण करी केवळज्ञान पामी भव्य जीवोने प्रतिबोध करता श्रीघनरथ तीर्थंकर पृथ्वीपर विचरवा लाग्या.

नमता एवा राजाओना मस्तकपरथी पडता पुष्पोवडे जेना चरणकमळ पूजाता हता, एवा मेघरथ राजा स्वर्गने इंद्रनी जेम पृथ्वीनुं शासन करवा लाग्या. एकदा ते राजा पौषधशाळामां पौषध ग्रहण करीने रहेला हता, तेवामां कोइएक पारापत (पारेवुं) भयथी व्याकुळ थइ राजाना उत्संगमां आवीने पडयुं. ते पक्षीए मनुष्यनी भाषा बोली राजानुं शरण

माग्युं. त्यारे राजाए तेने कह्युं के—" तुं कोइना तरफथी भय पामीश नहीं. हुं तारुं रक्षण करीश. " ते सांभळी ते पारापत तेना उत्संगमां सुखे रह्युं. तेटलामां तेनी पाछळ सर्पनी पाछळ गरुडनी जेम एक श्येन पक्षी आव्युं, ते मनुष्यभाषाए बोल्युं के—" हे देव ! आ मारुं भोजन छे, तेने तमे मूकी द्यो. " राजाए तेने जवाब आप्यो के—" हे श्येन ! आ मारे आशरे आवेलाने हुं आपीश नहीं. कारणके क्षत्रियो प्राणांते पण शरणे आवेलाने मूकता नथी. वळी विवेकी एवा तारे पण आ प्रमाणे परना प्राणनो नाश करी पोताना प्राणनी तृप्ति करवी ए योग्य नथी. जेम तने तारुं जीवित इष्ट छे, तेम बीजाने पण पोतानुं जीवित इष्ट ज होय छे, तेथी करीने जेम तुं तारा आत्मानी रक्षा करे छे तेम अन्यना आत्मानी पण रक्षा कर. तेम ज आ पक्षीने खावाथी तने मात्र क्षणिक तृप्ति ज थशे अने आ पक्षीना तो आखा जीवितनो नाश थशे. बीजो आहार करवाथी पण क्षुधानी व्यथानो नाश थइ शके छे, परंतु प्राणीवध करवाथी जे नरकनी व्यथा प्राप्त थाय छे, तेनो चिरकाळे पण नाश थतो नथी. तेथी करीने हे बुद्धिमान् ! प्राणीहिंसानो त्याग करी धर्मनो आश्रय कर, के जेथी आलोक अने परलोकमां उत्तम सुख प्राप्त थाय. " ते सांभळी श्येन पक्षीए मनुष्य भाषाथी राजाने कह्युं के—" हे स्वामी ! आ कपोत माराथी भय पामीने तमारे शरणे आव्यो छे, तो क्षुधानी पीडाथी पीडित थयेलो हुं कोने शरणे जाउं ? ते कहो. तेथी जेम तमे तेनुं रक्षण करो छो तेम मारुं पण रक्षण करो. प्राणीओने धर्म अधर्मनो विचार सुखी अवस्थामां ज थइ शके छे. बाकी भूख्यो प्राणी शुं पाप न करे ? ए तमे शुं सांभळ्युं नथी ? वळी हे राजा ! बीजा भोजनथी मने तृप्ति थती नथी, केमके हुं निरंतर तत्काळ

हणेला प्राणीना मांसना स्वादमां ज आसक्त छुं, तेथी करीने हे देव! क्षुधानी पीडाथी मरता एवा मने आ पक्षी आपी दो, कारण के महात्मा पुरुषो सर्व प्राणीओ उपर कृपाळु होय छे." ते सांभळी राजाए तेने कह्युं के—" हे श्येन ! आ कपोतना शरीरमां जेटलुं मांस छे, तेटलुं मांस हुं तने मारा शरीरमांथी कापी आपुं, तुं फोगट क्षुधाथी मर नहीं." ते सांभळी श्येन पक्षीए तेम करवानी हा कही. त्यारे राजाए त्राजवां मंगावी एक छाबडामां पारापतने मूक्युं अने बीजा छाबडामां पोतानुं मांस कापी कापीने नांखवा मांड्युं. जेम जेम राजाए पोतानुं मांस कापी कापीने नांख्युं, तेम तेम ते पारापतनुं वजन वधवा लाग्युं. तेथी थाकीने छेवट शुभमतिवाळा राजाए पोतानुं आखुं शरीर ते छाबडामां मूक्युं, ते वखते हाहाकार करता मुख्य मंत्रीओ गद्गद् स्वरे राजाने कहेवा लाग्या के—" हे पृथ्वीपति ! आ शरीरवडे आखी पृथ्वीनुं रक्षण करवानुं छे, तो ते शरीरने एक पक्षीना रक्षणने माटे केम फोगट तजो छो ? वळी आ एक पक्षीनो भार आटलो वधे कोइ रीते संभवतो नथी, परंतु आ कोइ मायावी सुर के असुर होवो जोइए." आ प्रमाणे ते मंत्रीओ बोलता हता, तेटलामां तरत ज त्यां दिव्य अलंकारवडे शोभतो कोइ देव प्रगट थइ हाथ जोडी राजा प्रत्ये बोल्यो के-" हे राजा ! ईशान इंद्रे पोतानी सभामां तमारी स्तुति करी के—" अहो ! मेघरथ राजाने देवताओ पण धर्मथी चलायमान करवा समर्थ नथी." आवी प्रशंसा सांभळी माराथी ते सहन थइ नहीं. तेथी आ बे पक्षीओ चिरकाळथी युद्ध करता हता तेमना शरीरनो आश्रय करीने में आ तमारी परीक्षा करी छे. तो हे महासत्त्ववाळा राजा ! तमने धन्य छे के जेथी तमे परप्राणीनी रक्षा करवामां तमारा प्रिय प्राणोने पण तृण समान गणो छो." एम कही राजानुं शरीर साजुं बनावी ते देव स्वर्गे गयो. ते सर्व जोइ

मंत्री विगेरे सर्व अत्यंत विस्मय पाम्या, अने तेओए राजाने पूछ्युं के—" हे स्वामी ! आ देव कोण हतो? अने आ पक्षीओने पहेलेथी शुं वैर हतुं ? ते कहो. " त्यारे अवधिज्ञानथी जाणीने राजाए कह्युं के—

" आ भवथी पहेलां पांचमे भवे हुं अपराजित नामनो बळराम हतो अने आ दृढरथ अनंतवीर्य नामनो वासुदेव हतो. ते वखते अमे दमितारि नामना प्रतिवासुदेवने मार्यो हतो. ते संसारमां भ्रमण करी कांइक अज्ञानकष्टने लीधे आ देव थयो छे. तथा जंबूद्वीपना ऐरवत क्षेत्रमां पद्मिनीखंड नामना नगरमां सागरदत्त नामना इभ्यने धन अने नंदन नामना बे पुत्रो हता. ते बन्ने भाइओ एकदा वेपारने माटे नागपुर नामना पुरमां गया. त्यां जेम बे गीध पक्षीओ मांसना पिंडने जुए तेम तेमणे एक रत्न जोयुं. ते रत्न लेवानी इच्छाथी ते बन्ने भाइओ छतां परस्पर युद्ध करवा लाग्या. कारण के एक पदार्थनो जे बेने अभिलाष ते ज वैरनुं कारण छे. ते बन्ने भाइओ नदीने कांठे युद्ध करता करता नदीमां पड्या अने मरीने महा अटवीमां तेओ आ पारापत अने श्येन थया छे. पूर्वभवना वेरने लीधे आ भवमां पण तेओ युद्ध करता हता. तेमने जोइ पेला देवे तेमनो आश्रय करी मारी परीक्षा करी छे. "

आ प्रमाणे राजानुं वचन सांभळी ते पक्षीओ पण तत्काळ जातिस्मरण पामी पोतानी भाषाथी बोल्या के—" हे राजा ! पूर्वभवमां रत्ननी जेम अमारो मनुष्य भव पण अमे लोभथी हारी गया छीए, तो हवे अमारी योग्यता प्रमाणे अमने धर्म कहीने अमारो अनुग्रह करो. " राजाए अवधिज्ञानवडे तेमनो अभिप्राय जाणी तेमने अनशन ग्रहण करवानुं कह्युं. ते तेमणे भावथी अंगीकार कर्युं, अने अनुक्रमे मरीने ते बन्ने भवनपति देव थया.

एकदा मेघरथ राजा अट्ठम तप करी प्रतिमाए रह्या हता. ते वखते 'तमने नमस्कार हो' एम बोली ईशानेंद्रे मेघरथने हर्षथी नमस्कार कर्या, ते जोइ इंद्रनी राणीओए तेने पूछ्युं के---" हे स्वामी ! तमे त्रण विश्वने वंद्य छो, छतां तमे कोने नमस्कार कर्या ?" त्यारे इंद्रे कह्युं के—" पुंडरीकिणी नगरीमां मेघरथ नामना राजा प्रतिमाए रहेला छे, ते जिनेश्वर थवाना छे. तेमने जोइ में भक्तिथी नमस्कार कर्या छे. मेरुनी जेम निश्चळ अने ध्यानमां रहेला महा सत्त्ववाळा तेने चलाववा माटे इंद्रोसहित देवताओ अने असुरो पण शक्तिमान नथी." आ प्रमाणे ते राजानी प्रशंसा सुरूपा अने अतिरूपा नामनी तेनी बे पट्टराणीओए सहन करी नहीं. तेथी ते देवीओ राजाने क्षोभ पमाडवा माटे त्यां आवी. पछी तेमणे कामरूपी वृक्षोनी नीक समान घणी स्त्रीओ विकुर्वीने ते राजाने अनुकूळ उपसर्गो करवा आरंभ्या. तेमां कोइ चतुर स्त्री कटाक्षरूपी बाणोवडे तेने वींधवा लागी, कोइ स्त्री लज्जानो त्याग करी भृकुटिना विलास करवा लागी. पुष्ट-मोटा स्तनवाळी कोइ स्त्री पोताना केशपाश बांधवाना मिषथी हाथ उंचा करी सुवर्णना कुंभ जेवा पोताना कुचकुंभ देखाडवा लागी, श्रेष्ठ कटिभागवाळी कोइ स्त्री त्रिवळीए करीने मनोहर एवा उदरने देखाडवा लागी, कोइ स्त्री वापीना जेवी उंडी पोतानी नाभिने वारंवार प्रगट करवा लागी, कोइक स्त्री " आ मारा नितंब उपर नखक्षत थयेला होवाथी त्यां कटीमेखला (कंदोरो) घसावाथी बहु बाधा थाय छे." एम माया-कपटथी बोलती पोताना नितंबने प्रगट करवा लागी, कोइ स्त्री " हे सखी ! मने अहीं ममरी करडी गइ." एवो मिष करी पहेरेलुं वस्त्र उंचुं करी साथळनुं मूळ देखाडवा लागी, कोइ स्त्री शृंगार रसरूपी वृक्षना पुष्पो जेवुं उज्ज्वळ स्मित करवा

लागी, कोइ स्त्री विकाररूपी अंकुराने मेघ समान गीतो गावा लागी, कोइ स्त्री पतिना संयोग अने वियोगनी कथा कहेवा लागी, कोइ स्त्री पोतानी अनुभवेली कामक्रीडानुं वर्णन करवा लागी अने केटलीक स्त्रीओ तेनी पासे जइ कहेवा लागी के—" हे स्वामी ! अमने प्रिय वचन कहो, मनोहर दृष्टिथी अमारी सामुं जुओ अने अमारा कंठमां तमारा हाथ स्थापन करो." आ प्रमाणे ते स्त्रीओए आखी रात्रि सुधी राजाने क्षोभ पमाडवा माटे घणी कुचेष्टाओ करी, परतुं तेथी तो उलटुं तेनुं ध्यान पाणीथी वाडवाग्निनी जेम अधिक देदीप्यमान थयुं. मेरु पर्वतने विषे वायुनी जेम ते राजाने विषे विकुर्वेली ते सर्व स्त्रीओ निष्फळ थइ. तेथी ते रूपोने संहरी ते बन्ने देवीओ राजाने नमस्कार करी स्वर्गे गइ.

आ प्रमाणे रात्रिना वृत्तांतथी राजाने संसारपरथी अधिक वैराग्य थयो. पछी अनुपम क्षमावाळा ते राजा प्रतिमाने पारी पोताने घेर गया.

त्यां एकदा घनरथ तीर्थंकर समवसर्या. तमने वांदवा माटे मेघरथ राजा पोताना नाना भाइ सहित उद्यानमां गया. त्यां प्रभुना मुखथी वैराग्यनी माता एटले वैराग्यने उत्पन्न करनारी देशना सांभळी ते राजा पोताने घेर आव्या, अने तेणे नाना भाइने कह्युं के—" हे बंधु ! मारे दीक्षा ग्रहण करवी छे, तेथी तुं आ राज्य ग्रहण कर." त्यारे ते बोल्यो के—" हे ज्येष्ठ बंधु ! मने संसारपर जरा पण प्रीति नथी, तेथी तमारी साथेज हुं पण दीक्षा लेवानो छुं." ते सांभळी राजाए पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन कर्यो. पछी नाना भाइ दृढरथ सहित, सात सो पोताना पुत्रो सहित अने चार हजार राजाओ सहित ते मेघरथे तीर्थंकर पासे जइ प्रव्रज्या अंगीकार करी. पछी अग्यार अंगनो अभ्यास करी मेघरथ राजर्षि पृथ्वीपर

विचरवा लाग्या. आर्जवताए करीने युक्त ते राजर्षिए अरिहंत अने सिद्धनी सेवा आदि वीश स्थानकोना आराधनवडे तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन कर्युं. साधुओमां सिंह समान ते राजर्षिए सिंहनिष्क्रीडित नामनो तप कर्यो, एक लाख पूर्व सुधी उग्र चारित्रनुं पालन कर्युं, पछी अंबरतिलक नामना गिरिपर आरोहण करी अनशन ग्रहण करी आयुषने क्षये सर्वार्थसिद्ध नामना विमानमां ते देव थया. तेना भाइ दृढरथ मुनि पण केटलोक काळ गया पछी अनशन करी ते ज विमानमां देव थया.

आ जंबूद्वीपना भरत क्षेत्रमां मोटी समृद्धिवडे इंद्रनी नगरी जेवुं श्रीहस्तिनापुर नामनुं पुर छे. अलका नगरीमां कुबेरनी जेम ते नगरमां विश्वसेन नामे राजा हता. अग्निने स्वाहानी जेम ते राजाने अचिरा नामनी प्रिया हती. ते रूपवडे इंद्राणीने पण जीतनारी अने शीळरूपी अलंकारने धारण करनारी हती. एकदा मेघरथनो जीव सर्वार्थसिद्धथी चवीने कमळने विषे हंसनी जेम अचिरादेवीनी कुक्षिमां अवतर्यो. ते वखते सुखे सुतेली ते देवीए श्रेष्ठ आकारने धारण करनारा चौद शुभ स्वप्नो पोताना मुखमां प्रवेश करता जोया. तत्काळ जागृत थइ देवीए राजाने ते स्वप्नोनुं फळ पूछयुं, त्यारे राजाए कह्युं के—“ हे प्रिया ! आ स्वप्नोथी तने तीर्थंकर के चक्रवर्ती पुत्र थशे. ” पछी प्रभु गर्भमां आव्या पहेलां अनेक शांतिना कर्मवडे पण जे रोगो तथा मरकी विगेरे उपद्रवो शांत थया नहोता ते प्रभुना प्रभावथी आखा कुरुदेशमां शांत थइ गया. अनुक्रमे गर्भनो समय पूर्ण थयो त्यारे मध्यरात्रि समये अचिरादेवीए सुखे करीने सुवर्ण जेवा वर्णवाळा अने मृगना लांछनवाळा पुत्रने जन्म आप्यो. ते वखते त्रणे भुवनमां उद्योत थयो अने नारकीओने पण क्षणवार सुख थयुं. ‘सर्व काळे सर्व तीर्थंकरोना सर्व कल्याणकोमां आ प्रमाणे थाय ज छे.’

ते वखते आसन कंपवाथी जिनेश्वरनो जन्म जाणी छप्पन दिक्कुमारीओए शीघ्रपणे त्यां आवी सूतिकर्म कर्यां. पछी आसन कंपवावडे अवधिज्ञानना उपयोगथी अरिहंतनो जन्म जाणी शक्र इंद्र परिवार सहित स्वामी पासे आव्या. जिनेश्वरने नमस्कार करी, जिनेश्वरनी माताने पोतानुं नाम जणावी, तेणीने अवस्वापिनी निद्रा आपी, तेणीनी पासे प्रभुनुं विकुर्वेलुं बीजुं प्रतिबिंब स्थापन करी इंद्रे पोतानां पांच रूप कर्यां. एक रूपवडे जिनेश्वरने पोताना हाथमां लइ, बे रूपवडे चामरने धारण करी, एक रूपवडे प्रभुपर छत्र राखी, तथा एक रूपवडे प्रभुनी आगळ वजने उछाळी ते इंद्र क्षणवारमां मेरुपर्वतना शिखरपर रहेली अतिपांडुकबला नामनी शिलापर आव्या. त्यां शक्र इंद्र पोताना उत्संगमां प्रभुने राखी सिंहासनपर बेठा. ते वखते बीजा त्रेसठ इंद्रो पण आसन कंपवाथी जिनेश्वरनो जन्म जाणी पोतपोताना परिवार सहित आव्या. तेमांथी प्रथम अच्युतेंद्रे तीर्थनां जळवडे तीर्थंकरने अभिषेक कर्यो. अने त्यारपछी अनुक्रमे बीजा सर्व इंद्रोए अभिषेक कर्यो. त्यार-पछी ईशानेंद्रना उत्संगमां प्रभुने स्थापन करी शक्रइंद्रे प्रभुनी चारे बाजुमां चार वृषभो विकुर्व्या, तेमना शींगडामांथी नीकळेला जळवडे तेमणे प्रभुनुं स्नात्र कर्युं, अने पछी चंदन, पुष्प अने अलंकारवडे प्रभुनी पूजा करी तेमनी स्तुति करी. त्यारपछी जिनेश्वरने प्रथमनी जेम लइ शक्रइंद्रे अचिरा देवीनी पासे जइ मूक्या, अने अवस्वापिनी निद्रा तथा प्रभुनुं प्रति-बिंब हरी लीधुं. पछी प्रभुना विनोदने माटे तेमनी उपर उंचे श्रीदामगंडक अने ओशीका उपर रेशमी वस्त्र अने बे कुंडळ मूक्या. पछी " जिनेश्वर अने जिनेश्वरनी मातानुं कोइ पण अशुभ चिंतवन करशे, तेनुं मस्तक आर्जकनी मंजरीनी जेम सात प्रकारे भेदाइ जशे. " ए प्रमाणे देवताओ पासे आघोषणा करावी तथा कुबेर पासे सुवर्ण अने रत्ननी वृष्टि करावी शक्रइंद्र

नंदीश्वर द्वीप उपर गया. त्यां अरिहंतोनां शाश्वत चैत्योमां शक्रइंद्र तथा बीजा पण सर्व इंद्रो अष्टाह्निका महोत्सव करी पोतपोताने स्थाने गया.

अहीं हस्तिनापुरमां अचिरादेवी जाग्या अने पुत्रने जोयो त्यारे तेनी दासीओए विश्वसेन राजा पासे जइ पुत्रजन्मनी वधामणी आपी. ते सांभळी राजाए तेमने पुष्कळ प्रीतिदान आपी मोटो जन्मोत्सव कर्यो. पछी " आ पुत्र गर्भमां हतो त्यारे रोगादिक उपद्रवोनी शांति थइ हती. " एम धारी राजाए तेनुं शांति नाम पाड्युं. पछी शक्रइंद्रे अंगुठामां संक्रमावेला अमृतनुं पान करता अनुपम तेज अने रूपवाळा ते जगत्पति वृद्धि पामवा लाग्या. मातापिता ते पुत्रने जोवाथी, आलिंगन करवाथी अने मस्तकपर सुंघवाथी जाणे ब्रह्मानंदमां मग्न थया होय तेवुं सुख अनुभववा लाग्या. देवोने पण प्रिय लागे तेवा ते कुमारना मन्मन आलाप सांभळी जाणे अमृतपान करता होय तेम मातापिता अत्यंत आनंद पामवा लाग्या. अनुक्रमे स्वामी मनोहर पगलां भरवावडे जाणे जंगम कल्पवृक्ष होय तेम राजमंदिरना आंगणाने शोभाववा लाग्या. बाळकनां रूप धारण करीने आवेला देवोनी साथे प्रभु मनोहर बाळक्रीडा करता हता. ' बाल्यावस्थामां एवी क्रीडा शोभे ज छे. '

अनुक्रमे पोताना शरीरनो संबंध करवाथी यौवनने शोभावता प्रभु चाळीश धनुष उंचा थया सता समग्र विश्वने आनंद आपवा लाग्या. त्यारपछी मातापितानी आज्ञाने लीधे जिनेश्वर यशोमती आदि राजकन्याओने परण्या. ते कन्याओ तेवा पतिने पामी पोताना आत्माने धन्य मानवा लागी. प्रभु पचीश हजार वर्षना थया त्यारे राजाए प्रभुने राज्य आपी पोते

आत्मकार्य साध्युं. त्यारपछी ते शांतिनाथ नामना राजा नीतिथी राज्यनुं पालन करता सता स्त्रीओ साथे उत्तम भोग भोगववा लाग्या. ' भोगफळ आपनारुं निकाचित कर्म ए ज रीते क्षीण थाय छे. '

एकदा दृढरथनो जीव सर्वार्थसिद्ध विमानथी चवीने यशोमती राणीनी कुक्षिमां अवतर्यो. ते वखते यशोमतीए स्वप्नमां चक्र जोयुं. ते स्वप्ननुं फळ पूछवाथी जगत्पतिए कह्युं के—" हे देवी ! तने उत्तम पुत्र थशे. " त्यारपछी समय पूर्ण थये राणीए शुभ लक्षणवाळा पुत्रने जन्म आप्यो. स्वामीए स्वप्नने अनुसारे तेनुं चक्रायुध नाम पाड्युं. ते कुमार अनुक्रमे वृद्धि पामी युवावस्थाने पाम्यो, त्यारे स्वयंवर तरिके आवेली घणी राजपुत्रीओने ते परण्यो.

श्री शांतिनाथ राजाने राज्य करतां पचीश हजार वर्ष व्यतीत थया त्यारे एकदा आयुधशाळामां चक्ररत्न प्रगट थयुं. ते वखते चक्रनी पूजा करी पछी ते चक्रने मार्गे अनुसरी प्रभुए लीला मात्रमां ज छखंड भरत क्षेत्र साधी लीधुं. बत्रीश हजार राजाओथी जेमना चरणकमळ सेवाता हता एवा श्रीशांतिनाथ चक्री शत्रुओनी शांति करी हस्तिनापुरमां आव्या. पछी देवोए अने सर्व राजाओए मळीने बार वर्ष सुधी तेमने चक्रवर्तीपणानो अभिषेक कर्यो. पछी अंतःपुरनी स्त्रीओनी जेम चक्रवर्तीनी लक्ष्मीने भोगवता प्रभुए पचीस हजार वर्ष व्यतीत कर्या. ते वखते लोकांतिक देवोए आवी प्रभुने कह्युं के—" हे स्वामी ! धर्मतीर्थ प्रवर्तावो. " त्यारपछी प्रभुए वार्षिक दान दीधुं अने राज्यने विषे चक्रायुधने स्थापन करी सर्वार्थ नामनी शिबीकामां बेसी सुरेंद्रो, असुरेंद्रो अने नरेंद्रोए जेमनो दीक्षा महोत्सव कर्यो छे एवा प्रभुए सहस्राम्रवन नामना वनमां आवी शिबिकाथी उतरी ईशान दिशाए रही वस्त्राभूषणनो त्याग करी हजार राजाओ साथे दीक्षा अंगीकार

करी. तेज वखते प्रभुने मनःपर्यव ज्ञान उत्पन्न थयुं. पछी वायुनी जेम अप्रतिबंधपणे प्रभु पृथ्वीपर विचरवा लाग्या.

अनुक्रमे एक वर्ष फरीथी प्रभु तेज सहस्राम्रवनमां पधार्या. त्यां शुक्लध्यानना आश्रयथी प्रभुने केवळज्ञान प्राप्त थयुं. ते वखते आसननो कंप थवाथी प्रभुनुं केवळज्ञान जाणी सर्व सुरेंद्रो तथा असुरेंद्रोए पोतपोताना परिवार सहित आवी मनोहर त्रण प्राकारवाळुं समवसरण रच्युं. तेमां पूर्वद्वारे प्रवेश करी पूर्वाभिमुखे सिंहासनपर प्रभु बिराज्या. ते वखते व्यंतरोए प्रभुना ज माहात्म्यथी बीजी त्रण दिशाए प्रभुनां त्रण रूप विकुर्व्यां. उद्यानपाळोए चक्रायुध राजा पासे जइ प्रभुना केवळज्ञान-नी वधामणी आपी. तेओने पुष्कळ प्रीतिदान आपी चक्रायुध राजा अत्यंत उत्सुकताथी प्रभु पासे सर्व परिवार सहित आव्या. त्यां विधिपूर्वक प्रभुने वांदी तेणे एक चित्ते स्वामीनी मधुर देशना सांभळी. देशनाने अंते प्रभुने नमस्कार करी चक्रायुध राजाए कह्युं के–" हे स्वामी ! करुणारूपी अमृतना सागर समान आपना दर्शन मने आजे थयां ते मारुं अहो भाग्य छे. आ छळनी गवेषणा करनार संसाररूपी राक्षसथी हुं अत्यंत भय पाम्यो छुं तेथी मने दीक्षारूपी रक्षा आपीने मारापर अनुग्रह करो." आ प्रमाणे तेणे विज्ञप्ति करी त्यारे प्रभुए तेने अनुमति आपी, एटले राजाए पोताना राज्यपर पोताना पुत्रने स्थापन करी पांत्रीश राजाओ सहित जिनेश्वर पासे आवीने दीक्षा अंगीकार करी. ते छत्रीश मुनिओने श्री शांतिनाथे गणधरो कर्या. तेओए त्रिपदीने अनुसारे द्वादशांगी रची ते वखते बीजा पण घणा जनोए दीक्षा ग्रहण करी अने केटलाएके श्राद्धधर्म अंगीकार कर्यो. ए प्रमाणे जिनेश्वरे चार प्रकारना तीर्थनी स्थापना करी. त्यार पछी आकाशमां

१ समवायांग सूत्रमां श्री शांतिनाथना नेवुं गणधरो कह्या छे अने आवश्यक आदि घणा ग्रंथोमां छत्रीश कहेला छे. सत्य वात ज्ञानीगम्य.

सूर्यनी जेम कुमत-मिथ्यात्वरूपी अंधकारनो नाश करता अने भव्य प्राणीओरूपी कमळोने विकस्वर करता स्वामी चिरकाळ सुधी पृथ्वीपर विचर्या.

श्री शांतिनाथ स्वामीने बासठ हजार साधुओ, एकसठ हजार अने छ सो साध्वीओ, बे लाख ने नेवु हजार श्रावको तथा त्रण लाख ने त्राणुं हजार श्राविकाओ, एटलो गुणना सागर समान चतुर्विध संघनो परिवार थयो, ते चारे दिशामां चार प्रकारना धर्मनी प्रभावना करनार हतो. दीक्षाना दिवसथी पचीश हजार वर्ष गया त्यारे भगवान विहारना क्रमे संमेतशिखरपर पधार्या. त्यां भगवाने नव सो साधुओ सहित अनशन ग्रहण कर्युं, अने एक मासे शांतिनाथ स्वामी सिद्धि-पदने पाम्या. पचीश हजार वर्ष कुमारपणामां, पचीश हजार मांडलिकपणामां, पचीश हजार चक्रवर्तीपणामां अने पचीश हजार वर्ष चारित्रमां ए रीते परिपूर्ण एक लाख वर्षनुं प्रभुनुं आयुष्य हतुं. त्रण जगतना दुःखने शांत करनार श्री शांति-नाथना निर्वाणनो महिमा सुरेंद्रोए अने असुरेंद्रोए आवीने कर्यो. अनुक्रमे केवळज्ञान पामेला श्री चक्रायुद्ध गणधर पण सिद्धिवधूने वर्या.

इति श्रीशांतिनाथ चरित्र.

इक्खागरायवसभो, कुंथू नाम नराहिवो ।
विक्खायकित्ती भयवं, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ३९ ॥

अर्थ-(इक्खागरायवसभो) इक्ष्वाकु वंशना राजाओमां वृषभ समान (कुंथू) कुंथु (नाम) नामना (नराहिवो) चक्रवर्ती

राजा थया, ते (विक्खायकित्ती) विख्यात छे कीर्ति जेनी एवा (भयवं) भगवान एटले तीर्थंकर थइने (अणुत्तरं गइं) अनुत्तर गतिने एटले मोक्षने (पत्तो) पाम्या. २६.

श्री कुंथुनाथनुं संक्षिप्त चरित्र.

आ जंबूद्वीपने विषे पूर्वमहाविदेह क्षेत्रमां आवर्त नामना विजयमां खड्गि नामनी नगरी छे. तेमां सिंहावह नामे राजा हतो. तेणे एकदा वैराग्य पामी श्रीसंवराचार्यनी पासे दीक्षा ग्रहण करी. जिनसेवादिक वीश स्थानकोनी सेवाथी तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन कर्युं. चिरकाळ सुधी पवित्र चारित्रनुं अतिचार रहित पालन करी अंते अनशन ग्रहण करी आयुष्यने छेडे काळधर्म पामीने सर्वार्थसिद्ध विमानमां देव थया.

आ जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां हस्तिनापुर नामनुं पुर छे. तेमां सूर नामे राजा हतो अने तेने श्री नामनी प्रिया हती. एकदा ते सिंहावहनो जीव सर्वार्थसिद्ध विमानमांथी चवी श्रीदेवीनी कुक्षिमां अवतर्यो. ते वखते राणीए चौद शुभ स्वप्नो जोयां. अनुक्रमे ते देवीए छागना चिन्हवाळा अने कांचन जेवा वर्णवाळा पुत्रने जन्म आप्यो. ते वखते आसनकंपथी जिनेश्वरनो जन्म जाणी छप्पन दिक्कुमारीओए आवी सूतिकर्म कर्युं. पछी सर्व इंद्रोए आवी मेरुपर्वतपर लइ जइ प्रभुनो जन्माभिषेक कर्यो. पछी सूर राजाए पण पुत्रजन्मनो महोत्सव कर्यो. पछी आ प्रभु गर्भमां आव्या त्यारे राजाना सर्व शत्रुओ कुंथु जेवा एटले अल्पसत्ववाळा थइ गया, तथा माताए स्वप्नमां कुस्थ एटले पृथ्वीपर रहेला रत्नना स्तूपने (संचयने–ढगलाने) जोयो हतो, तेथी महोत्सवपूर्वक राजाए तेमनुं कुंथु नाम पाडयुं. अनुक्रमे सर्व उत्तम गुणोना आधाररूप ते भगवान वृद्धि

पामी युवावस्था पाम्या, त्यारे राजाए तेमने घणी राजकन्याओ परणावी, तथा तेमने राज्य सोंपी पोते दीक्षा ग्रहण करी.

कुंथुराजा राज्य करता हता तेवामां एकदा आयुधशाळामां चक्ररत्न उत्पन्न थयुं. तेनी पूजा करी तेना मार्गने अनुसरी कुंथुराजाए भरतना छ खंड साध्या. पछी स्त्रीरत्ननी जेम चक्रवर्तीनी लक्ष्मी तेणे चिरकाळ सुधी भोगवी. एकदा लोकांतिक देवोए तीर्थ प्रवर्ताववा बोध करेला कुंथुस्वामीए पोताना पुत्रने राज्य सोंपी वार्षिक दान दइ देवेंद्रो अने नरेंद्रोना करेला उत्सव सहित शिबिकामां आरूढ थइ सहस्राम्रवनमां जइ हजार राजाओ सहित चारित्र ग्रहण कर्युं. ते ज वखते तेमने मनःपर्यवज्ञान उत्पन्न थयुं. पछी ते प्रभु भारंड पक्षीनी जेम अप्रमत्तपणे पृथ्वीपर विहार करी सोळ वर्षे फरीथी ते ज सहस्राम्रवनमां आव्या. त्यां घातीकर्मोनो क्षय थतां स्वामीने केवलज्ञान प्राप्त थयुं. एटले सर्व इंद्रोए आवी समवसरण रच्युं. तेमां पूर्व सन्मुख सिंहासनपर बेसी पांत्रीश धनुषनी कायावाळा प्रभुए पांत्रीश गुणवाळी मधुर वाणीवडे देशना देवानो प्रारंभ कर्यो, ते देशना सांभळी घणा जनोए प्रभु पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी. तेमांथी श्रीजिनेश्वरे पांत्रीश गणधरो स्थापन कर्या. भगवानना परिवारमां साठ हजार मुनिओ, साठ हजार ने छसो साध्वीओ, एक लाख ने ओगणाएंशी हजार श्रावको तथा त्रण लाख ने एकाशी हजार श्राविकाओ आ प्रमाणे प्रभुने चतुर्विध संघ थयो. कुंथुनाथ प्रभुनुं कुल आयुष्य पंचाणु हजार वर्षनुं हतुं. तेमां कुमार अवस्थामां, मांडलिकपणामां, चक्रवर्तीपणामां अने चारित्र पर्यायमां समान अंशे एटले के पोणी चोवीश हजार वर्षो दरेकमां पसार कर्या. छेवट हजार मुनिओ सहित संमेतशैलपर जइ एक मासना अनशनवडे प्रभु मोक्षे गया. पछी देवेंद्रोए आवी प्रभुना निर्वाण कल्याणकनो महोत्सव कर्यो. इति कुंथुनाथ कथा.

सागरंतं चेइत्ता णं, भरहं नरवरीसरो । अरो वि अरयं पत्तो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४० ॥

अर्थ—(सागरंतं) समुद्रपर्यंत मर्यादावाळा (भरहं) भरतक्षेत्रने (चइत्ता णं) तजीने (अरो वि) अर नामना (नरवरीसरो) नरेश्वर चक्रवर्ती (अरयं) रजना एटले कर्मना अभावने (पत्तो) पाम्या सता (अणुत्तरं गइं) अनुत्तर गतिने एटले मोक्ष गतिने (पत्तो) पाम्या छे. ४०.

अरनाथनी संक्षिप्त कथा.

आ जंबूद्वीपना पूर्वमहाविदेह क्षेत्रमां वत्स नामना विजयमां सुसीमा नामनी पुरी छे, तेमां निःसीम पराक्रमवाळो धनपति नामे राजा हतो. तेणे एकदा संवर नामना मुनि पासे दीक्षा ग्रहण करी. अरिहंत आदि वीश स्थानोना सेवनवडे तेमणे जिननामकर्म उपार्जन कर्युं. चिरकाळ सुधी तीव्र तप करी उत्तम व्रतनुं पालन करी छेवट अनशनवडे काळ धर्म पामी नवमा ग्रैवेयकने विषे ते राजर्षि श्रेष्ठ देवपणे उत्पन्न थया.

आ जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां हस्तिनापुर नगरने विषे जेनुं दर्शन लोकोने आनंद आपनारुं छे एवो सुदर्शन नामे राजा हतो. तेने देवीना जेवी सुंदर देवी नामनी राणी हती. एकदा ते धनपतिनो जीव नवमा ग्रैवेयकथी चवीने देवीनी कुक्षिमां अवतर्यो. ते वखते देवीए चौद महास्वप्नो जोयां. अनुक्रमे त्रण ज्ञानने धारण करनार गर्भ पण वृद्धि पामवा लाग्यो. समय पूर्ण थये नंदावर्तना चिन्हवाळा अने कांचनवर्णवाळा पुत्रने देवीए जन्म आप्यो. ते जाणी दिक्कुमारीओए आवी तेनुं सूतिकर्म कर्युं, अने देवेंद्रोए आवी मेरुपर्वतपर लइ जइ जन्मोत्सव कर्यो. प्रभु गर्भमां हता त्यारे माताए स्वप्नमां रत्नना अर—चक्रना आरा

दीठा हता, तेने अनुसरीने राजाए महोत्सवपूर्वक अर नाम पाड्युं. ते प्रभु अनुक्रमे वृद्धि पामी त्रीश धनुषनी कायावाळा थइ युवावस्था पाम्या. ते वखते राजाए तेमने घणी राजकन्याओ परणावी. एकदा पितानी आज्ञाथी प्रभुए राज्यधुरा अंगीकार करी. पछी चक्रादिक रत्नो उत्पन्न थवाथी तेमणे भरतना छ खंड साधी आसक्ति रहितपणे जेम योगी भोजन करे तेम चक्रवर्तीनी लक्ष्मीने भोगवी. एकदा लोकांतिक देवोए तीर्थ प्रवर्तावना बोध कर्यो त्यारे ते प्रभुए संवत्सरी दान आप्युं. पछी पुत्रने विषे राज्यनुं स्थापन करी शिबिकामां आरूढ थइ सुर, असुर अने मनुष्योना परिवार सहित सहस्राम्रवनमां गया. ते वखते तेमने चोथुं मनःपर्यव ज्ञान प्राप्त थयुं. पछी सिंहनी जेम भय रहित पृथ्वीपर विचरता प्रभु अनुक्रमे त्रण वर्ष फरीथी ते ज सहस्राम्रवनमां आव्या. त्यां प्रभुने केवळज्ञानरूपी सूर्यनो उदय थयो, एटले सर्व देवेंद्रोए आवी समवसरण रच्युं. तेमां पूर्वाभिमुखे सिंहासनपर बेसी एक योजन विस्तारवाळा सर्व भाषाने अनुसरनारी वाणीवडे जिनेश्वरे धर्मनो उपदेश आप्यो. ते सांभळी अनेक मनुष्योए जिनेंद्र पासे चारित्र ग्रहण कर्युं. तेमांथी स्वामीए तेत्रीश गणधरो स्थाप्या. अरनाथस्वामीने कुल पचास हजार साधुओ साठ हजार साध्वीओ, एक लाख चोराशी हजार श्रावको अने त्रण लाख ने बोंतेर हजार श्राविकाओनो परिवार थयो. आ प्रमाणे भव्य प्राणीओनो अनुग्रह करवा माटे पृथ्वीपर विचरता प्रभुने गुणरूपी मणिओनो निधानरूप चतुर्विध संघ थयो. कुमारपणा[1] आदिक चार स्थानोमां थइने समान भागे भगवंते कुल चोराशी हजार वर्षनुं आयुष्य व्यतीत कर्युं छेवटे पोतानो निर्वाण समय जाणी प्रभु संमेतशैल पर्वतपर जइ हजार साधुओ सहित अनशन करी

१ कुमारपणामां, मंडळिकपणामां, चक्रवर्तीपणामां ने चारित्रपर्यायमां—

एक मासे मोक्षपद पाम्या. ते वखते सर्व देवेंद्रोए आवी प्रभुना निर्वाण कल्याणकनो महिमा कर्यो.

इति श्री अरनाथ कथा.

चइत्ता भारहं वासं चक्कवट्टी महिड्ढीओ । चइत्ता उत्तमे भोए, महापउमो तवं चरे ॥ ४१ ॥

अर्थ—(भारहं वासं) भरतक्षेत्रनो (चइत्ता) त्याग करी तथा (उत्तमे भोए) उत्तम भोगोने (चइत्ता) तजी (महापउमो) महापद्म नामना (महिड्ढीओ) मोटी ऋद्धिवाळा (चक्कवट्टी) चक्रवर्तीए पण (तवं चरे) तपनुं आचरण कर्युं–चारित्र ग्रहण कर्युं. ४१

महापद्म चक्रीनी संक्षिप्त कथा.

आ जंबूद्वीपना भरत क्षेत्रने विषे श्रीहस्तिनापुर नामनुं पुर छे. तेमां इक्ष्वाकु वंशरूपी सरोवरमां पद्म समान पद्मोत्तर नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने ज्वाळा नामनी जिनधर्मने विषे रक्त राणी हती. तेणीने सिंहना स्वप्नथी सूचित एवो विष्णु नामे एक पुत्र थयो, तथा बीजो लक्ष्मीना घररूप महापद्म नामे पुत्र थयो. बीजो पुत्र गर्भमां आव्यो त्यारे तेनी माताए चौद महास्वप्नो जोयां हतां. ते बन्ने कुमारो अनुक्रमे वृद्धि पामी कळाचार्य पासे समग्र कळानो समूह भणीने अनुपम शोभाना मित्र समान बीजी वयने एटले युवावस्थाने पाम्या. तेमां महापद्मकुमार वधारे पराक्रमी होवाथी पद्मोत्तर राजाए तेने युवराज पदवी आपी. कारण के ब्राह्मणोमां जे बुद्धिमान होय अने क्षत्रियोमां जे कन्यने

जीते एवो होय ते ज प्रशंसापात्र थवाय छे.

आ अवसरे उज्जयिनी नगरीमां श्रीधर्मा नामे राजा राज्य करतो हतो. तेने वितंडावाद करवामां चतुर अने नास्तिक एवो नमुचि नामनो प्रधान हतो. एकदा ते नगरीनी बहार उद्यानमां मुनिसुव्रत स्वामीना शिष्य सुव्रत नामना सूरिराज पधार्या. तेमने नमवा माटे जता लोकोने जोइ प्रासाद उपर बेठेला राजाए ' आ लोको क्यां जाय छे ? ' एम नमुचिने पूछ्युं. त्यारे नमुचिए जवाब आप्यो के-" हे देव ! आजे नगरीनी बहार उद्यानमां कोइ साधु आवेला छे, तेने नमवा माटे तेना भक्तजनो जाय छे." ते सांभळी राजाए कह्युं के-" त्यारे आपणे पण त्यां जइए." त्यारे नमुचि बोल्यो के-" जो जवुं होय तो चालो जइए. परतुं त्यां आपे तो मध्यस्थ ज रहेवुं. हुं ज ते सर्व पाखंडीओने वादमां जीती लइश." त्यारे राजा ' बहु सारुं ' एम कही मंत्री सहित उद्यानमां गया. त्यां नमुचिए मुनिने कह्युं के-" जो तमे धर्मने जाणता हो तो कहो." ते सांभळी ' आ कोइ नीच माणस छे. ' एम जाणी आचार्य महाराज मौन रह्या. त्यारे ते अधम मंत्री जिनशासननी निंदा करतो आचार्यने उद्देशीने बोल्यो के-" आ तो बळदीया जेवो छे, तेने धर्मनी शी खबर पडे ?" ते सांभळी गुरु बोल्या के-" जो तारा मुखमां खरज आवती होय तो अमे कांइक बोलीए." आ प्रमाणे गुरु बोल्या त्यारे तेमना एक क्षुल्लक साधुए गुरुने कह्युं के-" हे पूज्य ! आ धृष्टनी साथे आपने जाते बोलवुं योग्य नथी, तेने हुं ज जीतीश. ते पोतानो जे पक्ष बोलवो होय ते भले बोले." ते सांभळी नमुचि क्रोधथी बोल्यो के-" जेओ वेदधर्मथी बाह्य होय अने शौचधर्मथी रहित होय तेमने देशमां वसवा देवा ज योग्य नथी. ए मारो पक्ष छे." ते सांभळी क्षुल्लक साधुए कह्युं के-

" અહો ! વેદમાં પાણીનો ઘડો (પાણીયારું), ચૂલો, સાવરણી, ઘંટી અને ખાંડણીયો એ પાંચ શૂના એટલે પ્રાણીઓનાં વધ-સ્થાનો કહેલાં છે. તથા જેઓ આ પાંચ શૂનાને સેવનારા હોય તેજ વેદબાહ્ય કહેવાય છે, અમે તો તે પાંચેથી રહિત છીએ, તો કેમ વેદબાહ્ય કહેવાઇએ ? તથા અત્યંત અશૌચ તો મૈથુન કહેવાય છે, તે મૈથુનની જે સેવા કરે તેને અશુચિ કહેલો છે, અને અમે તો તે મૈથુનથી વિરતિ પામેલા છીએ, તેથી અમે અશુચિ કેમ કહેવાઇએ ? " આ રીતે તે મંત્રીને ક્ષુલ્લકે નિરુત્તર કર્યો, તેથી તે મંત્રી સાધુઓ ઉપર મોટું વૈર ધારણ કરી રાજા સહિત ઘેર ગયો. પછી રાત્રીએ મુનિને હણવા માટે ક્રોધથી અંધ થયેલો તે નમુચિ ઉદ્યાનમાં ગયો, ત્યાં જેટલામાં તે દુષ્ટ નમુચિ મુનિને હણવા જાય છે, તેટલામાં મુનિ ઉપર ભક્તિવાળી દેવીએ તેને સ્તંભિત કર્યો. પ્રાતઃકાળે તેવી સ્થિતિમાં તેને જોઇ સર્વે નગરના જનો તથા રાજા પણ વિસ્મય પામ્યા. પછી સૂરિ પાસેથી ધર્મનું શ્રવણ કરી તે સર્વે ઉપશમને પામ્યા. સર્વે લોકોએ નમુચિની અત્યંત નિંદા કરી, તેથી તે બહુજ લજ્જા પામ્યો. દેવીએ તેને મુક્ત કર્યો એટલે તે ત્યાંથી નીકળીને હસ્તિનાપુરમાં ગયો. ત્યાં તે મહાપદ્મ યુવરાજને મળ્યો, અને પૂર્વના પુણ્યથી તેનો મંત્રી થયો.

અહીં હસ્તિનાપુરના રાજ્યના સીમાડામાં દુર્ગમ એવા દુર્ગ (કિલ્લા) નો આશ્રય કરીને રહેલો સિંહની જેવા ઉત્કટ પરાક્રમવાળો સિંહબળ નામનો રાજા હતો. તે વારંવાર પદ્મોત્તર રાજાના દેશમાં ધાડ પાડીને પોતાના દુર્ગમાં પેસી જતો હતો. તેથી તેને કોઇ પકડી શકતો નહોતો. એકદા ક્રોધ પામેલા પદ્મોત્તર રાજાએ નમુચિને પૂછ્યું કે—" આ સિંહબળને પ-કડવાનો કાંઇ પણ ઉપાય તું જાણે છે ? " ત્યારે નમુચિએ હા કહી. પછી મહાપદ્મની આજ્ઞાથી તે નમુચિ શીઘ્રપણે સૈન્ય

साथे त्यां जइ तेना दुर्गने भांगी तेने बांधीने लइ आव्यो. ते जोइ हर्ष पामेला महापद्मे नमुचिने कह्युं के—" तारी इच्छामां आवे ते माग." नमुचिए कह्युं–" हे स्वामी! समय आवे हुं मागीश." आ प्रमाणे तेना वचनने महापद्मे अंगीकार कर्युं. पछी महापद्मे चिरकाळ सुधी युवराज पदवीनुं पालन कर्युं.

एकदा महापद्मनी माता ज्वाळादेवीए जैनरथ कराव्यो. ते वखते तेनी सपत्नी लक्ष्मी के जे मिथ्यादृष्टि हती तेणे ब्रह्मरथ कराव्यो. पछी ते लक्ष्मीए राजाने कह्युं के–" आ मारा ब्रह्मरथने नगरमां पहेलो भमाडो." ते जाणी ज्वाळादेवीए राजाने कह्युं के " जो मारो जैनरथ नगरमां पहेलो नहीं भमे तो हुं अनशन करीश." ते सांभळी बन्ने राणीओने क्लेश न थाय एवा हेतुथी राजाए बन्नेनी रथयात्रानो निषेध कर्यो. तेथी ज्वाळादेवीने महा दुःख थयुं. ते जाणी महापद्मे अत्यंत आतुर थइ विचार्युं के–" मारी जेवो पुत्र छतां जेम कंजुस माणसनी लक्ष्मी पृथ्वीमां विलय पामे तेम मारी मातानी इच्छा मनमां ज लय पामी जाय, अने जे पुत्र शक्तिमान छतां माताना शुभ मनोरथने पूर्ण न करे, ते सत्पुत्रपणानुं अभिमान शी रीते करी शके? वळी पिताए पण मारी मातानुं कांइपण विशेष मान राख्युं नहीं. बीजी राणीओ समान ज गणी. तेथी मानी एवा मारे मान विना अहीं रहेवुं योग्य नथी." एम विचारी रात्रिए सर्व लोको सुता हता, त्यारे ते पोताना पुरमांथी नीकळी स्वेच्छाए पृथ्वीपर भ्रमण करतो एक अरण्यमां तापसोना आश्रममां गयो. त्यां तापसोए तेनो सारो सत्कार कर्यो, तेथी ते महापद्म पोताना घरनी जेम सुखे करीने त्यां ज रह्यो.

आ अवसरे चंपा नामनी नगरीमां जनमेजय नामे राजा हतो. तेने काळ नामना राजाए लडाइमां हराव्यो. तेथी

ते नाशी गयो. त्यारे काळ राजाना सैनिकोए चंपानगरी भांगी, ते वखते सर्व लोको सर्व दिशाओमां नाशी गया. अंतःपुरनी स्त्रीओ पण कोइ रक्षक नहीं होवाथी आकुळ व्याकुळ थइ. तेमां चंपापतिनी राणी नागवती पोतानी पुत्री मदनावळीने साथे लइ नाशीने ते ज तापसना आश्रममां आवी के ज्यां महापद्म रहेलो हतो. त्यां महापद्म अने मदनाने परस्पर दर्शन थतां लज्जाने मंद करनारो परस्पर राग–प्रेम थयो. ते जाणी नागवतीए मदनावळीने कह्युं के–" हे पुत्री ! जे ते पुरुषने जोइ तेनापर तुं राग केम करे छे ? तुं चक्रवर्तीनी मुख्य स्त्री थवानी छे एवुं ज्ञानीनुं वचन शुं तुं भूली गइ के जेथी आवी रीते उत्सुक थाय छे ?" आ ज रीते कुलपतिए पण मदनावळीने कह्युं, तो पण 'आ बन्ने परस्पर रागी थवाथी कांइक उपद्रव करशे' एम धारी कुलपतिए पद्मने कह्युं के—" तुं तारी इच्छा होय त्यां जा." ते सांभळी मनमां कांइक दुःख पामी पद्म त्यांथी नीकळी गयो. 'प्रियजननो वियोग मोटा पुरुषोने पण दुःखदायक होय छे.' पछी पद्मे विचार कर्यो के—" हुं चक्रवर्ती थवानो छुं, तेथी आ मारी ज स्त्री थशे, तो हुं क्यारे आ भरतक्षेत्रने साधी तेने परणीश ? तथा अरिहंतना चैत्योवडे समग्र पृथ्वीने भूषित करी मारी माताना रथयात्रानो मनोरथ हुं क्यारे पूर्ण करीश ?" आ प्रमाणे मनोरथरूपी रथपर आरूढ थयेलो ते राजपुत्र फरतो फरतो श्रीसिंधुनंदन नामना पुरना उपवनमां गयो. ते वखते ते उद्यानमां उजाणी करवा माटे नगरना जनो आवेला हता तथा स्त्रीओ पण आवेली हती. तेवामां ते पुरना महासेन नामना राजानो पट्टहस्ती आलान स्तंभने उखेडी नगरमां तोफान करी ते उद्यानमां आव्यो अने जाणे रोगथी व्याकुळ थयो होय तेम ते नगरनी स्त्रीओ सन्मुख दोड्यो, तेने आवतो जोइ भयभीत थयेली स्त्रीओ नासवाने शक्तिमान नहीं होवाथी बूम पाडवा

लागी के—" जे कोइ अहीं वीर पुरुष होय ते अमारुं रक्षण करो." आ प्रमाणे तेमनी बूम सांभळी पद्मकुमार एकदम हाथी तरफ गयो अने तेणे तेनी तर्जना करी. त्यारे ते हाथी पण पाछो वळी कुमार तरफ दोड्यो. तेने आवतो अटकाववा माटे कुमारे तेनी सन्मुख पोतानुं उत्तरीय वस्त्र फेंक्युं. ते वस्त्रने मनुष्य धारी क्रोधांध थयेलो हाथी तेनापर दंतप्रहार करवा लाग्यो. तेवामां त्यां स्त्रीओनो कोळाहळ सांभळी पुरजनो एकठा थया हता तथा महासेन राजा पण सामंतो अने मंत्रीओ सहित आवी पहोंच्यो हतो. तेथी ते राजाए उंचा हाथ करी कुमारने कह्युं के—" हे वीर ! यमराजनी जेवा क्रोध पामेला आ हाथीथी तुं शीघ्रपणे पाछो हठी जा." ते सांभळी पद्मकुमारे कह्युं के—" हे महाराजा ! एक क्षणवार स्वस्थ चित्ते जुओ. हमणां ज आ मदोन्मत्त हाथीने स्त्रीनी जेम हुं वश करी लउं छुं." एम कही कुमारे एकज मुठीना प्रहारथी ते हाथीनुं मुख नमावी दीधुं, एटले ते हाथी वस्त्रने तजी कुमारने पकडवा उंचो थयो, तेटलामां वीजळीनी जेम फलंग मारी कुमार तेनापर चडी गयो, अने तेणे चिरकाळ सुधी हाथ, पगना अंगुठा अने वचनरूपी अंकुशवडे ते हाथीने अत्यंत खेद पमाड्यो. एक नाना हाथीना बच्चानी जेम ते मत्त हाथीने क्रीडा करावता ते कुमारने जोइ सर्व लोको तथा राजा पण अत्यंत आश्चर्य पाम्या. आ रीते ते हाथीने वश करी कुमारे तेना मावतने सोंप्यो, अने पोते पर्वतपरथी सिंहनी जेम ते हाथीपरथी नीचे उतर्यो. ते कुमारनुं रूप अने पराक्रम जोइ राजाए तेने श्रेष्ठ कुळनो पुत्र जाण्यो, तेथी तेने बहुमानपूर्वक पोताने त्यां लइ गयो. त्यां तेनुं मोटुं गौरव करी राजाए तेने पोतानी सो कन्याओ परणावी. ' आवो जमाइ अगण्य पुण्यवडे ज प्राप्त थाय छे.' पछी ते राजपुत्रीओ साथे स्वेच्छाए क्रीडा करता छतां पण ते कुमार मदनावळीने भूली गयो नहीं. 'कदाच ममरो

लविंगलताना पुष्पोनो भोग करे तो पण शुं ते कमलिनीने भूले ! न ज भूले.'

एकदा पद्मकुमार रात्रिए सुखे सुतो हतो, तेवामां वेगवती नामनी विद्याधरीए तेनुं हरण कर्युं. ते जाग्यो त्यारे तेणे पोतानी मूठी दृढ रीते बांधीने "अरे ! तुं कोण छे ?" एम तेणीने पूछ्युं. त्यारे ते बोली के—"हे वीर ! तमारुं में हरण कर्युं छे, पण तेनुं कारण सांभळो, क्रोध न करो. वैताढ्य पर्वत उपर सूरोदय नामनुं श्रेष्ठ नगर छे. तेमां इंद्रधनु नामे राजा राज्य करे छे. तेने श्रीकांता नामनी प्रिया छे. तेमने जयचंद्रा नामनी मनोहर पुत्री छे. ते पुत्रीने योग्य पति नहीं मळवाथी ते पुरुषद्वेषिणी थइ छे. 'जो स्त्रीओने पोताथी हीन पति मळे तो ते अत्यंत दुःखदायक छे.' पछी में भरतक्षेत्रना समग्र राजाओनां स्वरूपो चीत्री चीत्रीने तेणीने बताव्यां, परंतु तेणीने कोइ पण रुच्यो नहीं. एकदा में तमारुं स्वरूप आळेखीने तेणीने बताव्युं, ते जोइ अयस्कांत मणि जेम लोढानुं आकर्षण करे तेम तमारा स्वरूपे तेणीना मननुं आकर्षण कर्युं. पछी तमारी प्राप्ति दुर्लभ जाणीने तेणीए प्रतिज्ञा करी के—"जो आ पति मने नहीं मळे तो हुं अग्निमां प्रवेश करीश." आवी तेणीनी प्रतिज्ञा में शीघ्रपणे तेणीना मातापिताने कही, तेथी आनंद पामीने तेओए तमने लाववा मने मोकली. ते कन्याने धीरज आपवा माटे में तेनी पासे प्रतिज्ञा करी के—"जो हुं ते पद्मकुमारने न लावुं तो अग्निमां प्रवेश करुं." एम कहीने हुं अहीं आवी अने ते पद्मिनीने आनंद पमाडवा माटे प्रभाकर (सूर्य) समान तमने हुं लइ जाउं छुं. तमे ज तेणीना अने मारा जीवितरूप छो, तेथी तमे प्रसन्न थाओ." आ प्रमाणे ते वेगवतीना मुखथी हकीकत सांभळी कुमारे तेनी इच्छा प्रमाणे करवानी अनुज्ञा आपी, एटले ते तेने सूरोदय पुरमां लइ गइ. प्रातःकाळे सूर्यनी जेम ते

कुमारनी इंद्रधनु राजाए पूजा करी. त्यारपछी "जे विधाताए आने उत्पन्न कर्यो छे तेनी हुं अनृण (देवा रहित) केवी रीते थाउं ?" एम विचार करती जयचंद्राने ते कुमार विधिथी परण्यो.

आ अवसरे ते जयचंद्राना मामाना पुत्रो गंगाधर अने महीधर नामना विद्याधरो के जेओ महाविद्यावाळा हता अने जयचंद्राने परणवा इच्छता हता, तेओए पद्मनी साथे परणेली तेणीने सांभळी, तेथी तेओ क्रोध पामी युद्ध करवा तैयार थइ सर्व सैन्य सहित सूरोदय पुरमां आव्या. ते जाणी महा पराक्रमी पद्मकुमार पण विद्याधरना सैन्य सहित पुर बहार नीकळी तेमना सैन्य साथे युद्ध करवा लाग्यो. युद्ध करता पद्मकुमारनी सन्मुख कोइ पण रथी, अश्ववार, हस्तीस्वार के पदाति रही शक्यो नहीं. नैर्ऋत दिशाना वायुवडे वादळोनी जेम पद्मकुमारवडे चोतरफ पोतानुं सैन्य वीखरायेलुं जोइ ते बन्ने खेचरो नाशी गया. त्यारपछी पद्मकुमारने त्यां ज चक्र विगेरे रत्नो उत्पन्न थयां, तेने अनुसारे तेणे भरतना छ खंड लीला मात्रथी साधी लीधा. एक स्त्रीरत्न विना सर्व चक्रीनी संपदाने ते पाम्यो, तो पण मदनावळी विना ते सर्व संपत्तिने पद्मराजा निःसार मानवा लाग्यो.

एकदा पद्म चक्री क्रीडाथी फरता फरता ते तापसना आश्रममां आव्या. त्यां तापसोए फळ, पुष्पादिकवडे तेनो सारो सत्कार कर्यो. तेवामां जनमेजय राजा पण फरतो फरतो त्यां ज आवी चढ्यो. तेणे हर्षथी पोतानी मदनावळी पुत्रीने पद्मचक्री साथे परणावी.

त्यारपछी संपूर्ण चक्रवर्तीनी लक्ष्मीने धारण करता पद्मचक्रीए पोताना नगरमां जइ हर्षथी मातापिताने नमस्कार

कर्यो. तेने आवी समृद्धिवाळो जोइ तथा तेनुं अद्भुत चरित्र सांभळी तेना मातापिता पण अत्यंत हर्ष पाम्या. आ अवसरे श्री सुव्रतस्वामीना शिष्य सुव्रत नामना आचार्य विहारना क्रमथी ते नगरनी बहार आव्या. तेमनुं आगमन सांभळी पद्मोत्तर राजा परिवार सहित तेमनी पासे गया. गुरुने वांदी तेमना मुखथी मोहरूपी हिमनो नाश करवामां सूर्यनी प्रभा जेवी धर्मदेशना सांभळी राजाए हाथ जोडी कह्युं के—" हे पूज्य ! हुं मारा पुत्रने राज्यपर स्थापन करी व्रत–चारित्र ग्रहण करवा अहीं आवुं, त्यांसुधी आप अहीं ज स्थैर्य कृपा करशो." ते सांभळी सूरिए कह्युं के—" हे राजा शुभकार्यमां विलंब करवो नहीं." आ प्रमाणे गुरुनुं वचन अंगीकार करी राजा नगरमां गया. त्यां मंत्रीओ अने सामंतो विगेरे सर्व परिवारने तथा विष्णु नामना मोटा पुत्रने बोलावी पद्मोत्तर राजाए कह्युं के—" श्री सुव्रत नामना आचार्य पासेथी संसारनी असारता सांभळीने आटलो काळ में व्रत विना निष्फळ गुमाव्यो एम हुं मानुं छुं. तेथी आजे ज हुं ते पूज्य गुरुनी पासे व्रतनो स्वीकार करीश, तेथी आ मारा राज्यपर महा पराक्रमी एवा विष्णुकुमारने हुं स्थापन करुं छुं." ते सांभळी तत्काळ विष्णुकुमारे नम्रताथी कह्युं के—" हे पिता ! किंपाकना फळ जेवा आ भोगोवडे मारे सर्युं. पापकर्मनो नाश करवा माटे हुं पण तमारी साथे ज दीक्षा ग्रहण करीश." ते सांभळी राजाए पद्मने बोलावी आग्रहथी कह्युं के—" हे पुत्र ! आ राज्य तुं ग्रहण कर." त्यारे पद्मे कह्युं के—" हे प्रभु ! आ प्रभाववाळा मारा मोटा भाइ विष्णुने राज्याभिषेक करो अने हुं तो तेनुं युवराजपणुं अंगीकार करीश." ते सांभळी राजाए कह्युं—" हे कुशळ पुत्र ! तेने तो प्रथम ज में राज्य लेवानुं कह्युं, परंतु ते ग्रहण करवा इच्छतो नथी. पण मारी साथे दीक्षा लेवा इच्छे छे." ते सांभळी पद्म काइ बोल्यो नहीं,

एटले राजाए तेनो राज्याभिषेक कर्यो. पछी मोटा उत्सवपूर्वक सुव्रत आचार्यनी पासे जइ पद्मोत्तर राजाए विष्णुकुमार सहित दीक्षा ग्रहण करी.

त्यारपछी पद्म चक्रीए माताना हर्षने माटे जैनरथने आखा नगरमां फेरव्यो. तेने सर्व पौरजनोए पूज्यो. ते चक्रीए पोताना वंशनी जेम जिनशासननी उन्नति करी, तेथी घणा भव्य प्राणीओए जैनधर्म अंगीकार कर्यो. जैनधर्मना परम भक्त चक्रीए दरेक गाम.नगर, पुर अने आकर विगेरे स्थळे उंचां करोडो जिनचैत्यो कराव्यां.

केटलेक काळे पद्मोत्तर राजाए केवळज्ञान पामी मोक्षे गया, अने विष्णुकुमार मुनि उग्र तपस्या करी अनेक लब्धिओ पाम्या, तेथी ते पोतानुं शरीर मेरुनी जेवुं (लाख योजन) उंचुं–मोटुं करवा शक्तिमान हता, गरुडनी जेम आकाशमां उडी शकता हता, देवनी जेम अनेक रूप विकुर्वी शकता हता अने कामदेवथी पण अधिक पोतानुं शरीर रूपवान करी शकता हता. इत्यादिक अनेक शक्तिओ (लब्धिओ) तेने प्राप्त थइ हती. परंतु योगीजनोने कारण विना लब्धिओनो उपयोग करता नथी.

एकदा सुव्रत नामना आचार्य महाराज पोताना मोटा परिवार सहित हस्तिनापुरमां वर्षाचोमासुं रहेवा आव्या. ते जाणी पूर्वनुं वेर लेवाना हेतुथी नमुचिए चक्रीने विनंति करी के—" हे स्वामी ! तमे मने पूर्वे जे वरदान आप्युं हतुं, ते आज हुं मागुं छुं. " त्यारे राजाए तेने कह्युं के—" तारी जे इच्छा होय ते खुशीथी मागी ले. " आ प्रमाणे राजाए कह्युं, त्यारे तेणे माग्युं के—" हे स्वामी ! मारे यज्ञ करवो छे, तेथी ते यज्ञ संपूर्ण थाय त्यांसुधी मने तमारुं राज्य आपो. " ते सांभळी

सत्य प्रतिज्ञावाळा राजाए ते नमुचिने राज्यपर स्थापन कर्यो, अने पोते शुद्ध हृदयवाळा थइ अंतःपुरमां जइने रह्या.

त्यारपछी बगलानी जेवा मायावी ते नमुचिए पुरनी बहार जइ यज्ञपाटकमां कपटथी यज्ञनी दीक्षा लीधी. तेनो राज्याभिषेक थयेलो होवाथी ते निमित्ते समग्र प्रजा तेनी पासे आवी. तथा जैन मुनिओ विना बीजा सर्व लिंगीओ (धर्मगुरुओ) तेनी पासे वर्धापन करवा-हर्ष करवा आव्या. ते वखते "सर्व लिंगीओ मारी पासे आव्या छे, परंतु जैन साधुओ आव्या नथी." एम इर्ष्याथी बोलता नमुचिए ते जैन साधुओनो मोटो अपराध गणयो. पछी सुव्रताचार्यने बोलावी ते अनार्य नमुचिए कह्युं के—"जे वखते जे नवो राजा थाय ते वखते सर्व लिंगीओए तेनी पासे जवुं जोइए, कारणके राजा तपोवनोनुं पण रक्षण करे छे, तेथी तपस्वीओ राजा पासे जाय छे. आवी दुनियानी स्थिति छे. छतां तमे तो गर्विष्ट छो, लोकमर्यादाथी रहित छो अने मारी निंदा करनारा छो, तेथी मारी पासे आव्या नथी, माटे तमारे मारा राज्यमां रहेवुं नहीं. बीजे ठेकाणे जाओ. जो कदाच तमारामांथी कोइपण मारा राज्यनी हदमां रहेशे, तो ते शठनो हुं अवश्य वध करीश. तमारी जेवा लोकविरोधी अने राजविरोधीने कोण वसवा दे!" आ प्रमाणे तेनुं वचन सांभळी सूरि बोल्या के—"अमारो आचार नहीं होवाथी अमे तमारी पासे आव्या नथी, परंतु तमारा अभिषेक बाबत अमे कांइपण निंदा करता नथी." ते सांभळी दुष्ट बुद्धिवाळो नमुचि क्रोधथी बोल्यो के—"घणुं कहेवाथी सर्युं. आजथी सात दिवस पछी जो तमने कोइने हुं अहीं जोइश, तो अवश्य चोरनी जेम तमारो घात करीश."

आ प्रमाणे तेनी उग्र आज्ञा सांभळी आचार्य महाराज पोताने उपाश्रये आव्या. पछी सर्व मुनिओने एकत्र करी सर्व

वृत्तांत कही पूछ्युं के—"हवे आपणे शुं करवुं ?" ते सांभळी एक मुनि बोल्या के—"जे छ हजार वर्षो दुस्तप तपस्या करे छे, ते विष्णुकुमार मुनि हालमां मेरुपर्वत उपर छे. ते पद्मराजाना मोटा भाइ होवाथी तेनी वाणीवडे आ नमुचि शांत थशे. माटे ते विष्णुकुमार ऋषिने बोलाववा तेवी लब्धिवाळा कोइ मुनिने अहींथी आपणे मोकलीए." ते सांभळी एक मुनि बोल्या के—"आकाश मार्गे मेरुपर्वतपर जवानी मारी शक्ति छे, पण त्यांथी पाछा आववानी शक्ति नथी. तेथी जो मारुं कार्य होय तो मने आज्ञा आपो." त्यारे गुरु महाराज बोल्या के—"विष्णुकुमार ज तमने अहीं लावशे, माटे तमे त्यां जाओ." ते सांभळी ते मुनि तत्काळ त्यांथी आकाशमां उडी क्षणवारमां विष्णुकुमार पासे गया. तेने आवता जोइ विष्णुकुमार मुनिए विचार्युं के—" अवश्य कांइक संघनुं मोटुं कार्य होवुं जोइए, अन्यथा वर्षाकाळमां आ साधु अहीं केम आवे ? " आ प्रमाणे ते विचार करता हता, तेटलामां ते मुनिए आवी तेमने नमस्कार कर्या, अने आववानुं प्रयोजन कह्युं. ते सांभळी तत्काळ विष्णुमुनि ते साधुने लइ हस्तिनापुरमां आव्या, अने तेमणे गुरुने नमस्कार कर्या. पछी घणा साधुओने साथे लइ विष्णु मुनि नमुचि पासे गया. त्यां एक नमुचि विना बीजा सर्व सामंत राजाओए अने मंत्रीओ विगेरेए तेमने नमस्कार कर्या. पछी विष्णुमुनिए प्रथम धर्मोपदेश आपी नमुचिने कह्युं के—" ज्यां सुधी वर्षाकाळ छे त्यां सुधी आ सर्व साधुओने आ नगरमां वसवा आपो. आ मुनिओ पोते ज एक ठेकाणे वधारे वखत रहेता नथी; परंतु वर्षाऋतुमां पृथ्वी जीवाकुळ होवाथी साधुओ विचरता नथी. आ मोटा नगरमां भिक्षावृत्तिथी आजीविका करनारा अमारी जेवा घणा भिक्षुओ वसे, तेथी हे कुशळ नमुचि ! तमने शुं नुकसान छे ? पहेलां तो भरतादिक मोटा राजाओ पण मुनिओने नमता हता. तमे तेवुं

न करता हो तो भले, पण तेमने काढी शामाटे मूको छो?" आ प्रमाणे विष्णुकुमारनुं वचन सांभळी नमुचि क्रोधथी बोल्यो के—" वारंवार कहेवाथी शुं फळ छे? जो पांच दिवस पछी तमने कोइने पण हुं जोइश तो तेनो अवश्य हुं निग्रह करीश." विष्णुमुनिए कह्युं—" आ मुनिओने पुरनी बहार उद्यानमां वसवानी छुट आपो." त्यारे क्रोध पामेलो नमुचि पथ्थर जेवा कठोर वचनथी बोल्यो—" पुर के उद्यान तो दूर रहो, परंतु मारा समग्र राज्यमां पण सर्वथा प्रकारे ए अधम पाखंडी श्वेतभिक्षुओने रहेवानुं नथी. तेथी करीने जो तमने तमारुं जीवित प्रिय होय तो मारुं राज्य शीघ्रपणे मूकी दो." आवां तेनां कठोर वचनथी विष्णुकुमारने कांइक क्रोध आव्यो, तेथी ते बोल्या के—" हे नमुचि! अमने मात्र त्रण पगलांज पृथ्वी आपो, तो तेमां पण अमे रही शकशुं." ते सांभळी तत्काळ नमुचि बोल्यो के—" बहु सारुं. तमने त्रण पगलां पृथ्वी आपी. परंतु तेटली जग्याथी बहार जो कोइ पण रहेशे, तो तेने हुं तत्काळ हणी नांखीश." आवुं तेनुं वचन कबुल करी कोप पामेला विष्णुकुमारे वैक्रियलब्धिथी पोतानुं शरीर वधारवा मांड्युं. तेमां मुगट, कुंडळ अने माळा सहित वज्र, धनुष अने खड्गने धारण कर्यां. प्रलय काळना वायुनी जेम मोटा भयंकर फूत्कार मूकवा लाग्या, पगना पछाडवावडे समग्र पृथ्वीने कंपाववा लाग्या, समुद्रने उछाळवा लाग्या, पर्वतोना शिखरोने पाडवा लाग्या, धात्रीफळना समूहनी जेम चंद्र, सूर्य, नक्षत्रादिक ज्योतिश्चक्रने दूर खसेडवा लाग्या, विविध प्रकारनां रूपोवडे सुर, असुर अने मनुष्योने क्षोभ पमाडवा लाग्या, ए रीते अनुपम शक्तिवाळा ते मुनि अनुक्रमे वृद्धि पामीने मेरुपर्वत जेवडा थया. त्रण जगतनो जय करनामां समर्थ एवा ते विष्णु मुनि ते दुष्ट नमुचिने पृथ्वीपर पाडीने एक पग पूर्व समुद्रने कांठे अने बीजो

पण पश्चिम समुद्रने कांठे राखी उभा रह्या. ते वखते त्रण जगतनो क्षोभ जोइ शक्र इंद्रे ते मुनिने शांत करवा अप्सराओ मोकली एटले तेओ आवीने मुनिना कर्ण पासे मधुर स्वरे आ प्रमाणे कहेवा लागी के—" हे पूज्य! धर्मरूपी वृक्षमां अग्नि समान क्रोध पोताने अने परने दाह करनार छे, आ भवमां स्वार्थनो नाश करे छे अने परभवमां दुर्गति पामे छे, तेथी करीने कांइ पण विनाश नहीं करनार शांतरसरूपी अमृतनुं पान करो." आ प्रमाणेना अर्थवाळा गायनने मुनिनी पासे गावा लागी तथा तेमने प्रसन्न करवा माटे नृत्य करवा लागी. आ वातनी खबर थतां महापद्म चक्री पण शंका अने भयथी आकुळ व्याकुळ थइ परिवार सहित मुनिनी पासे आवी पृथ्वीतळ सुधी मस्तक नमावी तेमने वंदना करी बोल्या के—" आ मारा अधम मंत्रीए श्रीसंघनी आशातना करी, तेना खबर मने कोइए आप्या नहीं, तेथी कांइ पण जाणवामां आव्युं नहोतुं. हे पूज्य! पोताने अने परने अनुताप करनारा आ पापी मंत्रीना क्रोधने लीधे त्रण जगतना जीवो प्राणसंकटमां आवी पड्या छे. तेमनुं रक्षण करो. आ प्रमाणे बीजा राजाओ, देवो, असुरो तथा समग्र संघ ए सर्व ते मुनिने विविध प्रकारनां वचनोवडे शांति पमाडवा लाग्या.

ते वखते सर्वनां मस्तकोवडे स्पर्श करायेला पोताना पग जोइने विष्णुमुनिए विचार कर्यो के—" आ पूज्य सकळ संघ, पद्म राजा अने देवो विगेरे सर्व भय पाम्या जणाय छे, अने तेथी करीने मारो कोप दूर करवा माटे तेओ वारंवार मने सांत्वन करे छे, तो मारे आ संघ मानवा लायक छे अने पद्म राजा विगेरे सर्व पण अनुकंपा करवा लायक छे." आ प्रमाणे विचारी ते मुनि शरीरवृद्धिनो संकोच करी पूर्वनी अवस्थावाळा थया. त्यारथी ते मुनि जगतमां त्रिविक्रम नामे

थयो. अनुक्रमे चंद्रनी जेम वृद्धि पामतो ते कुमार समग्र कळामां निपुण थयो अने पंदर धनुषना देहमानवाळो ते युवावस्थाने पाम्यो. एकदा पिताए तेने राज्यपर स्थापन कर्यो. त्यारपछी केटलेक दिवसे तेने चक्रादिक चौद रत्नो उत्पन्न थयां, एटले चक्रने अनुसरी तेणे छ खंड भरत क्षेत्र पोताने वश कर्युं. सर्व राजाओए मळी तेना चक्रवर्तीपणानो अभिषेक कर्यो. त्यारपछी चिरकाळ सुधी तेणे भोग भोगव्या. एकदा लघुकर्मी होवाथी संसारथी विरक्त थयेला तेणे विचार कर्यो के—" मने पूर्वना पुण्यथी आ मोटी समृद्धि प्राप्त थइ छे, तेथी फरीने पण पुण्य उपार्जन करवानो उद्यम करुं. कारण के नवुं उपार्जन कर्या विना मूळ धन क्षय पामवाथी दरिद्रता प्राप्त थाय छे." इत्यादि विचार करी पुत्रने राज्यपर स्थापन करी पोते सद्गुरु पासे दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे उग्र तपरूपी अग्निवडे कर्मरूपी घासने भस्म करी नांख्युं. कुल दश हजार वर्षनुं पूर्ण आयुष्य भोगवी श्रीहरिषेण चक्री मुनि घातीकर्मनो क्षय करी केवळज्ञान प्राप्त करी महानंदपदने—मोक्षने पाम्या.

इति हरिषेण चक्री कथा.

अन्निओ रायसहस्सेहिं, सुपरिच्चाइ दमं चरे । जयनामो जिणक्खायं, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४३ ॥

अर्थ—(रायसहस्सेहिं) हजार राजाओ वडे (अन्निओ) अन्वित एटले सहित तथा (सुपरिच्चाइ) सम्यक् प्रकारे राज्यादिकनो त्याग करनार (जयनामो) जय नामना चक्रवर्तीए (जिणक्खायं) जिनेश्वरे कहेला (दमं) इंद्रिय अने नोइंद्रियना दमनरूप चारित्रनुं (चरे) आचरण कर्युं. तथा (अणुत्तरं गइं) अनुत्तर गतिने एटले मोक्षगतिने (पत्तो) पाम्या. ४३.

प्रसिद्ध थया. पछी संघना आग्रहथी विष्णुमुनिए नमुचिने पूरी दीधो. पछी पद्मचक्रीए ते अधम मंत्रीने देशनिकाल कर्यो. आ प्रमाणे संघनुं कार्य करी महामुनिविष्णुकुमार आलोचना अने प्रतिक्रमण करी चिरकाळ तपस्या करी केवळज्ञान पामी अनुक्रमे मोक्षे गया.

पछी पद्मचक्रीए चिरकाळ सुधी मोटी समृद्धि भोगवी, छेवट राज्यनो त्याग करी दश हजार वर्षसुधी तीव्र व्रतनुं पालन कर्युं. मोटा पराक्रमवाळा ते महापद्म महाराजानुं कुल त्रीश हजार वर्षनुं आयुष्य हतुं अने तेनी काया वीश धनुषनी हती. अनुक्रमे ते महामुनि घातिकर्मनो क्षय करी केवळज्ञान पामी सिद्धिपदने पाम्या.

इति महापद्म चक्रीनी कथा.

एगच्छत्तं पसाहित्ता, महिं माणनिसूरणो । हरिसेणो मणुस्सिंदो, पत्तो गइमणुत्तरं ॥ ४२ ॥

अर्थ—(एगच्छत्तं) एक छत्रवाळी (महिं) पृथ्वीने (पसाहित्ता) साधीने एटले वश करीने (माणनिसूरणो) शत्रुना माननो–गर्वनो नाश करनार (हरिसेणो) हरिषेण नामना (मणुस्सिंदो) मनुष्येन्द्र–चक्रवर्ती राजा (अणुत्तरं गइं) अनुत्तर गतिने एटले मोक्षने (पत्तो) पाम्या. ४२.

हरिषेण चक्रीनी संक्षिप्त कथा.

आ जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रने विषे कांपील्य नामनुं नगर छे. तेमां महाहरि नामे राजा हतो. तेने मेरा नामनी राणी हती. तेणीनी कुक्षिथी चौद महास्वप्नवडे सूचित विश्वने आनंद पमाडनार अने देवनी जेवी कांतिवाळो हरिषेण नामे पुत्र

जय चक्रीनी संक्षिप्त कथा—

आ ज जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां संपत्तिना गृहरूप राजगृह नामे नगर छे. तेमां यशरूपी अमृतना समुद्ररूप समुद्रविजय नामे राजा हतो. तेने पवित्र लावण्यवाळी, शीलरूपी अलंकारने धारण करनारी अने मनोहर गुणश्रेणिना वप्र (किल्ला) समान वप्रा नामनी प्रिया हती. तेमने चौद महास्वप्नोए सूचवेल जय नामे पुत्र थयो. ते शरीरनी लक्ष्मीवडे जयन्तना रूपने जीतनार हतो. ते यमुना नदीनुं अमृत समान जळ पीने[1] अनुक्रमे युवावस्थाने पाम्यो. तेनुं शरीर बार धनुष उंचुं थयुं ते वखते तेणे पितानुं राज्य धारण कर्युं. पछी चक्र विगेरे रत्नो उत्पन्न थयां त्यारे तेणे भरतना छ खंड साधी स्त्रीरत्ननी जेम चक्रीनी लक्ष्मी चिरकाळ सुधी भोगवी. एकदा संसार उपर वैराग्य थवाथी तेणे विचार कर्यो के—

" सुचिरमपि उषित्वा स्यात् प्रियैर्विप्रयोगः, सुचिरमपि चरित्वा नास्ति भोगेषु तृप्तिः ।
सुचिरमपि सुपुष्टं याति नाशं शरीरं, सुचिरमपि विचिन्त्यो धर्म एकः सहायः ॥ "

" चिरकाळ सुधी साथे रह्या छतां प्रियजनोनो वियोग थाय ज छे, चिरकाळ सुधी भोगव्या छतां भोगोने विषे तृप्ति थती ज नथी, चिरकाळ सुधी सारी रीते पुष्ट–पोषण कर्या छतां शरीर नाश पामे ज छे. (अर्थात् जीवने कोइ पण सहाय-

१ राजगृह पासे यमुना नदी होवाथी आम कह्युं छे.

भूत थतुं नथी.) तेथी करीने चिरकाळ सुधी सहायरूप थनारो एक धर्म ज चिंतववा (करवा) योग्य छे."

आ प्रमाणे विचारवडे तीव्र वैराग्य पामी पुत्रने राज्य सोंपी ते जयचक्रीए संवेगी गुरु पासे चारित्र ग्रहण कर्युं. अनुक्रमे तपरूपी वायुवडे कर्मरूपी मेघनो नाश करी केवळज्ञान पामी जयचक्रीमुनि कुल त्रण हजार वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी मोक्षे गया.

इति जयचक्री कथा.

दंसण्णरज्जं मुइअं, चइत्ता णं मुणी चरे । दसण्णभद्दो निक्खंतो, सक्खं सक्केण चोइओ ॥ ४४ ॥

अर्थ—(सक्खं) साक्षात् (सक्केण) शक्र इंद्रे (चोइओ) अधिक संपत्ति देखाडवावडे प्रेरणा करायेला एवा (दसण्णभद्दो) दशार्णभद्र राजा (मुइअं) मुदित एटले समृद्धिवाळा (दसण्णरज्जं) दशार्ण देशना राज्यनो (चइत्ता णं) त्याग करीने (निक्खंतो) घरथी बहार नीकळ्या सता तथा (मुणी) मुनि थया सता (चरे) विचरता हवा.

दशार्णभद्र राजानी संक्षिप्त कथा.

आज भरतक्षेत्रने विषे दशार्ण नामना देशमां दशार्णपुर नामे नगर छे. तेमां भद्रपणानी खाणरूप दशार्णभद्र नामे राजा हतो. शुद्ध आत्मावाळो ते राजारूपी हंस सत्पुरुषोना चित्तरूपी कमळोमां वसतो हतो अने ते राजाना चित्तमां जिनेश्वरकहेलो धर्म वसतो हतो. तेना अंतःपुरमां मनोहर रूपवाळी पांचसो राणीओ हती. तेनी प्राप्तिनी चिंतावडे-इच्छावडे

ज देवताओ निद्रा लेता नथी, एम तर्क कराय छे. ते राजाने समुद्रना जळनी जेम आखी पृथ्वीने ढांकी दे तेटली मोटी सेना हती तो पण समुद्र जेवो गंभीर ने राजा मर्यादानुं उल्लंघन करतो नहोतो.

ए समये वराड देशमां धान्यना समूहथी भरेलुं धान्यपुर नामनुं पुर हतुं. तेमां कोइ धनवान महत्तर पुत्र रहेतो हतो. तेने एक स्त्री हती, ते कुलटा हती. ते तेनो स्वामी ज्यारे बहार जतो त्यारे एक संन्यासी साथे इच्छापूर्वक क्रीडा करती हती. एकदा ते नगरमां कोइ नटोए आवी नाटक प्रारंभ्युं, तेमां एक जुवान नट स्त्रीनो वेष पहेरी नृत्य करतो हतो. तेने ते दंभ जाणवामां निपुण एवी कुलटाए कोइक रीते पुरुष छे एम जाणी लीधो. तेथी तेनापर ते अत्यंत आसक्त थइ. ' कुलटा स्त्रीने वायुनी जेम क्यांइ पण प्रतिबंध होतो नथी के स्थिरता होती नथी. तेने तो जे कोइ युवान अने दृढ शरीरवाळो पुरुष होय ते प्रिय लागे छे. ' तेथी ते कुलटाए लज्जानो त्याग करी गुप्त रीते तेना नायकने कह्युं के—" जो आ तमारो नट तेज वेषने धारण करी मारी साथे क्रीडा करे तो हुं तमने उत्तम किंमती मनोहर वस्त्र बक्षीश तरीके आपुं. " ते सांभळी नटाधिपतिए हर्षथी तेनुं वचन अंगीकार कर्युं. प्राये करीने नट लोको कुशीळीया ज होय छे. तेमां पण स्त्रीओए ज प्रार्थना करी एटले तो पछी कहेवुं ज शुं ! पछी ते नटना स्वामीए तेणीने कह्युं के—" आ नट हमणां ज तारी साथे आवे, परंतु तारुं घर क्यां छे ? " त्यारे तेणीए पोतानुं घर तेने देखाडयुं. पछी ते कुलटाए घेर जइ ते नटने माटे खीर तैयार करी, तेटलामां ते नट पण स्त्रीवेषे ज तेणीने घेर आव्यो. तेने ते कुलटाए प्रथम भोजन करवा बेसाड्यो. तेनी पासे मोटो थाळ मूकी तेमां खीर, घी अने खांड पीरसी. जेटलामां ते नटे खावानो आरंभ कर्यो, तेटलामां तेणीना जार

संन्यासीए द्वार पासे आवी कह्युं के—" हे प्रिया ! द्वार उघाड. " ते सांभळी व्याकुळ थयेली कुलटाए धीमेथी नटने कह्युं के—" आ तल भरेला घरमां दूर खुणामां जइने तुं पेसी जा. " त्यारे ते नट पण त्यां जइ छुपाइ गयो. पछी तेणीए द्वार उघाड्युं, एटले ते संन्यासी घरमां आव्यो. त्यां खीरनो पीरसेलो थाळ जोइ तेणे पूछ्युं के—' आ शुं छे ? ' ते मायाथी बोली के—" हुं भूखी थइ छुं, तेथी खावा बेसती हती त्यां तमे आव्या. " ते सांभळी संन्यासी बोल्यो के—" हुं भूख्यो छुं, माटे आ तो हुं ज खाइश. " एम कही ते संन्यासी बळात्कारे खावा बेठो, तेटलामां घरना स्वामीए आवी ' द्वार उघाड. ' एम कह्युं. घरधणीने आव्यो जाणी ' हवे हुं क्यां जाउं ? ' एम संन्यासीए तेणीने पूछ्युं, त्यारे ते बोली के—" आ तल भरेला घरमां जइ संताइ जाओ, पण तेमां दूर जशो नहीं. केमके तेना खुणामां सर्प रहेलो छे. तेथी जीवितनी इच्छावाळा तमारे आघा जवुं नहीं. " ते सांभळी बहु सारुं कही ते संन्यासी जार पण ते ज घरमां पेठो. त्यारपछी ते कुलटाए तरत ज द्वार उघाड्युं, सरळ प्रकृतिवाळो तेनो स्वामी घरमां आव्यो. तेणे पण पेलो थाळ पीरसेलो जोइ पूछ्युं के—" आ थाळमां खीर केम पीरसी छे ? " त्यारे ते बोली के—" हुं भूखी थइ छुं, तेथी खावा बेसती हती. " ते सांभळीने ते बोल्यो के—" मारे पाछुं कार्य माटे जवुं छे, तेथी हुं ज जमी लउं. " त्यारे ते बोली के—" आजे आठम छे, तेथी स्नान कर्या विना शी रीते खाशो ? " त्यारे ते बोल्यो—" हे प्रिया ! तें स्नान कर्युं छे एटले में पण स्नान कर्युं छे एम जाणी ले. " ते सांभळी ते बोली.—" आपणो एवो धर्म नथी, माटे तमे एम न करो. आपणे शिवधर्मी छीए, तेथी स्नान कर्या विना भोजन थइ शके नहीं. " आ प्रमाणे तेणीना कह्या छतां पण ते स्नान कर्या विना ज

चळात्कार अथवा घेठो.

अहीं तलना घरमां छुपायेला नटे विचार कर्यो के—" हुं अहीं भूख्यो शा माटे बेसी रहुं ? " एम विचारी तलने बे हाथवडे मसळीने तथा फुंकी फुंकीने ते खावा लाग्यो. ते वखते पेला संन्यासीए तेनी फुंको सांभळी विचार्युं के—" अहीं सर्प फुंफाडा मारतो जणाय छे, तेथी आ मारो स्वामी भोजन करवामां व्यग्र छे, तेटलामां हुं ते न जाणे तेम बहार नीकळी जाउं. " एम विचारी ते शीघ्रपणे घरमांथी नीकळी नासी गयो. ते जोइ ' मारो पण आ समय छे. ' एम धारी नट पण तेनी पाछळ नाठो. तेमने नीकळता जोइ गृहस्वामीए स्वच्छ हृदयथी पोतानी स्त्रीने पूछ्युं के—" आ बे स्त्री पुरुष गया ते कोण छे ? " त्यारे तात्कालिक बुद्धिवाळी ते कुलटा बोली के—" में तमने प्रथम ज कह्युं हतुं के स्नान कर्या विना भोजन न करो. में निरंतर सेवा करीने आपणा घरमां पार्वती अने शंकरने राख्या हता, ते अत्यारे तमारुं स्नान रहित भोजन जोइने बन्ने नासी गया. ते सांभळी " में आ बहु खोटुं कर्युं. " एम पश्चात्ताप करी तेणे प्रियाने कह्युं—" हे प्रिया ! आ देवो फरीथी शी रीते पाछा आपणे घेर आवे ? " ते सांभळी—" जो आ मारा पति परदेश जाय, तो हुं स्वेच्छाए क्रीडा करी शकुं. " एम विचारी पतिनी वैरिणी एवी ते स्वेच्छाचारी कुलटाए कह्युं के—" जो तमे सारा उद्यमथी न्यायोपार्जित घणा द्रव्यवडे पार्वती अने शंकरनी पूजा करो, तो तेओ पाछा आपणे घेर आवे. " आ प्रमाणे प्रियानुं वचन अंगीकार करी ते महत्तरपुत्र वधारे द्रव्य मेळववा माटे दशार्ण देशमां गयो. ' धर्मना छळथी चतुर माणस पण छेतराय, तो बीजानुं शुं कहेवुं ! '

त्यां कोइना क्षेत्रमां ते काम करवा रह्यो. तेमां तेणे केटलाक दिवसे दस गदीयाणा सुवर्ण उपार्जन कर्युं. तेटला अल्प

द्रव्यथी तेने संतोष थयो नहीं. तोपण तेने प्रियानुं स्मरण थतां ते घर तरफ जवा नीकळ्यो. मध्यान्ह समये कोइ ठेकाणे वनमां एक वृक्षनी नीचे ते विश्रांति लेवा बेठो. आ अवसरे दशार्णभद्र राजा विपरीत शिक्षावाळा अश्वथी हरण कराइने फरतो फरतो पाणीनी शोध करतो ते वृक्ष पासे आव्यो. तेने जोइ " आ अतिथिसत्कारने लायक कोइ महापुरुष छे. " एम विचारी ते महत्तरपुत्रे राजाने आवकार आपी जळ आप्युं. राजा पण ते जळनुं पान करी अश्वपरथी पर्याणने नीचे उतारी चणवार विश्रांति लेवा बेठो. पछी स्वस्थ थयेला राजाए 'तुं कोण छे ?' एम तेने पूछ्युं, त्यारे तेणे पोतानो सर्व वृत्तांत कह्यो. ते सांभळी बुद्धिमान राजाए विचार कर्यो के—" आनी स्त्री अवश्य कुलटा छे, तेथीज तेणीए आने छेतर्यो छे. परंतु आनुं धार्मिकपणुं जोइ मने मनमां आश्चर्य थाय छे, के जे द्रव्य रहित छतां पण द्रव्यने उपार्जन करी पोताना देवनी पूजा करवा इच्छे छे. कुशळ पुरुषो द्रव्य छतां पण तेनो व्यसनादिकमां दुरुपयोग करे छे, अने आ मुग्ध छतां पण धर्मने माटे धन उपार्जन करवा क्लेश सहन करे छे. तेथी आ धार्मिक पुरुषनो हुं शो प्रत्युपकार करुं ? " आ प्रमाणे राजा विचार करतो हतो, तेटलामां अश्वना पगलांने अनुसरतुं तेनुं सैन्य आवी पहोंच्युं. पछी राजा ते उपकारी पुरुषने साथे लइ पोताना नगरमां गयो. त्यां तेनो भोजनादिकवडे सारो सत्कार कर्यो.

ते वखते वनपाळक पुरुषोए आवी राजाने वधामणी आपी के—" हे देव ! आजे आपणा उद्यानमां छेल्ला तीर्थंकर महावीरस्वामी समवसर्या छे. " आ प्रमाणे कर्णने अमृत समान तेमनुं वचन सांभळी राजाना शरीरमां रोमांचरूपी कंचुक व्याप्त थया, अने तरत ज आसनपरथी उभा थइ तेणे जिनेंद्रनी दिशा तरफ पृथ्वी सुधी मस्तक नमावी प्रभुने नमन कर्युं. पछी ते उद्यानपालकोने घणुं प्रीतिदान आपी सत्पुरुषोमां अग्रेसर एवा ते श्रेष्ठ राजाए विचार कर्यो के—आ परदेशी

पुरुष तथाप्रकारना विवेक रहित छतां पण पोताना देवने सर्व संपत्तिवडे पूजवा इच्छे छे, तो सर्व सामग्रीवडे सहित अमारी जेवा विवेकी पुरुषोए विशेषे करीने अरिहंतनी पूजा करवी योग्य छे." आ प्रमाणे विचारी राजाए हाथी विगेरेना अधिकारीओने बोलावी आज्ञा आपी के—"प्रातःकाळे जगद्गुरुने वांदवा जवुं छे, तेथी सर्व सैन्य विगेरेनी उंचामां उंची शोभा थाय तेम करजो." आ प्रमाणे आज्ञा आपीने पछी आखा नगरमां आघोषणा करावी के—"प्रभात काळे सर्वज्ञने वांदवा जवा माटे सर्व सामंतो, मंत्रीओ अने पुरजनोए पण श्रेष्ठ सामग्री तैयार करवी, ने ते सहित राजा साथे वांदवा आववुं." पछी राजाए पोताना सेवको पासे नगरना मार्गो तृण, छाण, राख विगेरे कचरो कढावी साफ कराव्या, तेमां चंदन मिश्रित जळ छंटावी पुष्पना समूहोवडे विचित्र रचना करावी, ठेकाणे ठेकाणे जाणे लक्ष्मीने क्रीडा करवानां हींचोळाखाट होय तेवी वंदनमाळाओ—तोरणनी श्रेणीओ—बंधावी. तेनापर जाणे कलंक रहित चंद्रो मूक्या होय तेवा रुपाना कळशो मूकाव्या. ते वखते ठेकाणे ठेकाणे करेला सुगंधी धूपना धूमाडाने लीधे जाणे अकाळे मेघ चड्यो होय तेम ते नगरमां देखावा लाग्युं अने माणिक्यनां तोरणो बंधाववाथी जाणे इंद्रधनुषने धारण कर्युं होय एवुं आकाश जणावा लाग्युं. मंगळना हेतुरूप करोडो ध्वजाओवडे आखु नगर शोभितुं कराव्युं अने स्थाने स्थाने मनोहर मांचाओ मंडाववाथी ते नगर विमाननी जेम शोभवा लाग्युं. राजानी आज्ञाथी जल्ल, मल्ल अने नट विगेरे जनो स्थाने स्थाने पोतपोतानी कळाओ देखाडवा लाग्या. आ रीते राजाए अधिकारीओ पासे साक्षात् स्वर्गना नगर जेवुं पोतानुं नगर बनाव्युं. त्यारपछी प्रातःकाळे राजाए स्नान कर्युं, चंदनवडे शरीरने विलेपन कर्युं, बे देवदूष्य वस्त्रो धारण कर्यां, शरीरे देदीप्यमान

अलंकारो पहेर्या.

पछी " क्यारे सुधी कोइए न वांद्या होय एवी रीते हुं आजे प्रभुने वांदीश. " एम अभिमानयुक्त विचार करी राजा पट्टहस्तीपर आरूढ थयो, तेना मस्तकपर पूर्णचंद्र जेवुं उज्वळ छत्र धारण करवामां आव्युं, चारे बाजु फीणनी जेवा उज्वळ चार चामरो तेने वींझावा लाग्या. तेनी फरता हजारो सामंत राजाओ श्रेष्ठ शणगार धारण करी पोत पोताना हाथीओपर आरूढ थइ जेम इंद्रने सामानिक देवो वींटाइ वळे तेम वींटाइ गया. त्यारपछी ते श्रेष्ठ राजाए हाथीने पगवडे प्रेरणा करी एटले ते हाथी जाणे के 'मारा चालवाथी पृथ्वी भांगी जशे ' एम धारतो होय तेम धीमे धीमे चाल्यो. ते वखते मणिना आभूषणोथी शणगारेला बीजा हजारो हाथीओ जाणे चालता पर्वत होय तेम चाल्या. तेनी पाछळ सूर्यना अश्वोना जाणे सहोदर होय तेवा अने घणा आभूषणोथी शणगारेला एवा लाखो अश्वो शोभामां वृद्धि करता चाल्या. तेनी पाछळ घोडा जोडेला, मनोहर लक्ष्मीवाळा जाणे सूर्यना ज रथ होय एवा हजारो रथो चाल्या. तेमनी पाछळ विपक्षिनो नाश करनारा, विविध आयुधने धारण करनारा तथा अति पराक्रमवाळा करोडो पत्तिओ[1] चाल्या. तेमनी पाछळ पांच सो राणीओना मीयानाओ जाणे देवीओ सहित विमानो होय तेम चाल्या. ते वखते शब्द करती घुघरीओना अवाजथी दिशाओने वाचाळ करता एवा अने आकाश सुधी उंचा एवा पांच वर्णना हजारो ध्वजो साथे चालता शोभी रह्या हता. भंभा, भेरी विगेरे लाखो वाजित्रो एक साथे वागता हता, तेथी आखुं जगत शब्दमय थयुं होय एम जणातुं हतुं. मंगलपाठको

१. चालता सीपाइओ.

हर्षथी मांगलिक वचनो बोलता हता, अने गवैयाओ कर्णने अमृत समान संगीत गाता हता. अप्सराओनी जेवी वेश्याओ राजानी आगळ पगले पगले भगवानना गुणोना गायन सहित नृत्य करती चालती हती.

आ रीते मोटी ऋद्धिवडे भव्यजनोना मनने आनंद आपतो, सद्भावरूपी अमृतवडे पुण्यरूपी वृक्षोने सींचतो, कल्पवृक्षनी जेम याचकोने अत्यंत दान आपतो अने अहंकारथी पोताने उत्कृष्ट संपत्तिनुं स्थान मानतो ते दशार्णभद्र राजा सर्व परिवार, पुरजनो अने ते महत्तरपुत्र सहित समवसरणनी समीपे जइ पहोंच्यो. त्यां हस्तीपरथी उतरी छत्र, चामरादिक राजचिन्होनो त्याग करी सर्व परिवार सहित जिनेश्वरने त्रण प्रदक्षिणा करी विधिपूर्वक भगवानने नम्यो. पछी हर्षथी गद्गद् वाणीए मोटा अर्थवाळा स्तोत्रोवडे जिनाधीशनी स्तुति करीने ते जनाधीश (राजा) योग्यस्थाने बेठो.

आ वखते अवधिज्ञानवडे दशार्णभद्रनो तेवो गर्वमय अभिप्राय जाणी शक्र इंद्रे विचार कर्यो के—" अहो ! दशार्णभद्रनी प्रभुविषे अनुपम भक्ति छे, परंतु आ बाबतमां गर्व करवो तेने योग्य नथी. केमके त्रणे भुवनवडे पण भगवाननी संपूर्ण भक्ति थइ शके तेम नथी. " आ प्रमाणे विचार करी संपत्तिना अधिकपणाथी उत्पन्न थयेला तेना मानने हरवा माटे तथा तेने बोध करवा माटे शक्र इंद्रे ऐरावण नामना देवने आज्ञा करी, तेथी तेणे उज्वलपणाथी अने उंचाइथी कैलास पर्वतनो पण पराभव करे एवा चोसठ हजार हाथीओ विकुर्व्या. एक एक हाथीने पांच सो ने बार बार मुख विकुर्व्यां, दरेक मुखे आठ आठ दांत विकुर्व्या, दरेक दांते आठ आठ मनोहर वावो विकुर्वी, दरेक वावमां आठ आठ कमळो विकुर्व्यां, दरेक कमळने एक एक लाख पत्रो विकुर्व्यां, दरेक पत्रमां बत्रीशबद्ध नाटक विकुर्व्युं. तेम ज ते दरेक कमळनी

मध्यनी कर्णिकाए चार मुखवाळा प्रासादो विकुर्व्या. ते सर्व प्रासादोमां इंद्र आठ आठ पट्टराणीओ सहित बेसीने ते सर्व नाटको जोवा लाग्या. आ रीते करवाथी दरेक हाथीने कुल ५१२ मुख, तेना ४०९६ दांत, तेनापर ३२७६८ वावो, तेमां २६२१४४ कमळो, तेटला ज प्रासादो अने इंद्रो, तेनाथी आठ गुणी एटले २०९७१५२ इंद्राणीओ तथा २६२१४४००००० कमळना पत्रो अने तेटला ज बत्रीशबद्ध नाटको हतां. आटलो एक हाथीनो विस्तार हतो, तेवा चोसठ हजार हाथीओवडे आकाशने व्याप्त करतो इंद्र शीघ्रपणे जिनेश्वरना समवसरणमां आव्यो. तेणे हाथी उपर बेसीने ज जिनेश्वरने प्रदक्षिणा करी अने पोताना शरीरनी कांतिवडे सूर्यनो पण पराभव करनार ते इंद्रे प्रभुने वंदना करी.

आवा प्रकारनी इंद्रनी समृद्धि जोइ बुद्धिमान दशार्णभद्र राजाए विचार कर्यो के—" अहो ! तुच्छपणाने लीधे में मारी संपत्तिनो वृथा गर्व कर्यो. आ इंद्रनी आवी संपदा पासे मारी संपदा कइ गणतरीमां छे ? सूर्यनी कांति पासे पतंगीयाना बच्चानी कांति केटलीक होय ? तेथी हुं धारुं छुं के नीच जनोने तुच्छ संपत्तिथी पण मद प्राप्त थाय छे. केमके देडकाओ कादववाळुं जळ पामीने पण अत्यंत आनंदथी नाद करे छे. आ इंद्रे पण आवी समृद्धि पुण्यना प्रभावथी ज मेळवी छे, जो धर्माराधन सिवाय आवी संपत्ति मळती होय तो सर्व प्राणीओने आवी ज संपत्ति केम न मळे ? तेथी हवे मारे ते विषेनो खेद न करतां निर्मळ धर्मनो ज आश्रय करवो योग्य छे, अने तेम करवाथी मारो गर्व पण कृतार्थ थशे." आ प्रमाणे विचार करी दशार्णभद्र राजाए बे हाथ जोडी नम्रताथी जिनेश्वरने विज्ञप्ति करी के—' हे प्रभु ! हुं संसारपरथी उद्वेग पाम्यो छुं, तेथी मने दीक्षा आपी मारापर अनुग्रह करो." आ प्रमाणे कहीने ते राजाए पोताने हाथे ज मस्तकपरना केशनो लोच कर्यो, पछी

प्रतना अर्थी एवा ते राजाने विश्ववत्सल प्रभुए पोते ज दीक्षा आपी. तेनी पाछळ तत्काळ ते महत्तर पुत्रे पण दीक्षा ग्रहण करी. ' सत्पुरुषोनो संग कल्याण आपवामां कामदुघा सदृश छे. ' त्यारपछी ते राजर्षिने प्रणाम करी शक्र इंद्रे कह्युं के —" हे मुनि ! तमे आवी मोटी समृद्धिनो सहसा त्याग कर्यो, माटे तमने धन्य छे. हे सत्य प्रतिज्ञावाळा ! मोटा साम्राज्यनो त्याग करी व्रत अंगीकार करवाथी तमे तमारी प्रतिज्ञा पण सत्य करी छे. केमके जिनेश्वरनी अर्चा करवी ते द्रव्यपूजा छे अने जे चारित्र ग्रहण करवुं ते भावपूजा छे, द्रव्यपूजा करनार करतां भावपूजा करनारने अत्यंत अधिक मानेलो छे, तेथी तमे भावपूजा करीने मने जीती लीधो छे. मारी बीजी घणी शक्ति छे, पण व्रत लेवानी मारी शक्ति नथी." आ प्रमाणे ते राजर्षिनी स्तुति करी शक्र इंद्र स्वर्गे गयो अने ते राजर्षि उग्र तप करी सर्व कर्मनो क्षय करी मुक्तिपुरीमां गया.

इति श्रीदशार्णभद्र राजर्षि कथा.

नमी नमेहि अप्पाणं, सक्खं सक्केण चोइओ । चइऊण गेहं वइदेही, सामण्णे पज्जुवट्ठिओ ॥ ४५॥

अर्थ—(वइदेही) विदेह देशना स्वामी (नमी) नमि नामना राजा (सक्खं) साक्षात् (सक्केण) शक्र इंद्रे (चोइओ) प्रेर्या सता एटले ज्ञानचर्याने विषे परीक्षा कर्या सता (अप्पाणं) पोताना आत्माने (नमेहि) नीतिमां स्थापन करता हवा एटले जरा पण कषाय करता न हवा, तथा (गेहं) गृहवासनो (चइऊण) त्याग करीने (सामण्णे) साधुपणामां—चारित्र धर्मने विषे (पज्जुवट्ठिओ) स्थिर थया एटले उद्यमवंत थया. ४५.

करकंडु कलिंगेसु, पंचालेसु अ दुम्मुहो । नमिराया विदेहेसु, गंधारेसु अ नग्गई ॥ ४६ ॥
एए नरिंदवसहा, निक्खंता जिणसासणे । पुत्ते रज्जे ठवेऊणं, सामण्णे पज्जुवट्ठिआ ॥ ४७ ॥

अर्थ—(कलिंगेसु) कलिंग देशमां (करकंडु) करकंडु राजा हता, (पंचालेसु अ) तथा पांचाळ देशमां (दुम्मुहो) द्विमुख राजा हता, तथा (विदेहेसु) विदेह देशमां (नमिराया) नमि राजा हता, (गंधारेसु अ) तथा गंधार देशमां (नग्गई) नग्गति नामना राजा हता. (एए) ए चारे (नरिंदवसहा) श्रेष्ठ राजाओ (पुत्ते) पोतपोताना पुत्रोने (रज्जे) राज्य उपर (ठवेऊणं) स्थापन करीने (जिणसासणे) जिनशासनने विषे ज (निक्खंता) प्रव्रज्या लेता हवा, तथा (सामण्णे) साधुधर्मने विषे (पज्जुवट्ठिआ) स्थिर थया—उद्यमवंत थया. ४६–४७.

(आ चारे प्रत्येकबुद्धनी कथा प्रथम एटले नवमा अध्ययनमां कही गया छीए, तेथी अहीं लखता नथी.)

सोवीररायवसहो, चइत्ताण मुणी चरे । उदायणो पव्वइओ, पत्तो गईमणुत्तरं ॥ ४८ ॥

अर्थ—(सोवीररायवसहो) सौवीर देशने विषे राजवृषभ एटले श्रेष्ठ राजा (उदायणो) उदायन नामना हता. ते (चइत्ताण) राज्यने तजीने (मुणी) मुनि थया सता (चरे) विचरता हवा. तेथी (पव्वइओ) प्रव्रजित थया सता (अणुत्तरं गइं) अनुत्तर गतिने एटले मोक्ष गतिने (पत्तो) पामता हवा. ४८.

श्री उदायन राजानी संक्षिप्त कथा.

आ ज जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रमां सिंधुसौवीर नामनो देश छे, तेमां सार्थक नामवाळुं वीतभय नामनुं नगर छे. तेमां उदायन नामे राजा राज्य करतो हतो. ते राजा सुकृतना उदयने करनार हतो तथा स्वाभाविक एवा शौर्य, धैर्य अने औदार्यादिक गुणोवडे विराजित हतो. ते वीतभय विगेरे त्रणसो ने त्रेसठ पुरनो तथा सिंधुसौवीर विगेरे सोळ देशोनो पालक हतो. ते महासेन विगेरे दश महा पराक्रमी राजाओथी सेवातो हतो. ए रीते ते उदायन राजा लक्ष्मीए करीने जाणे बीजो इंद्र होय तेम काळ निर्गमन करतो हतो. तेने चेटक राजानी पुत्री प्रभावती नामनी प्रिया हती. ते निरंतर पोताना मनमां पतिनी जेम श्रीजैनधर्मने धारण करती हती. ते राजाने प्रभावतीनी कुक्षिथी उत्पन्न थयेलो अभिची नामनो युवराज पुत्र हतो, अने ते राजानी बहेननो पुत्र केशी नामनो हतो. ते बन्ने कुमार साथे क्रीडा करता हता.

आ समये चंपा नामनी पुरीमां मोटो धनवान कुमारनंदी नामनो एक सोनी हतो, तेनुं मन निरंतर स्त्रीओमां ज आसक्त हतुं. कोइपण ठेकाणे कोइ पण सुंदर कन्याने ते जोतो तो तेणीने ते पांच सो सोनामहोर आपीने परणतो हतो. ए रीते ते पांच सो स्त्रीओने परण्यो हतो, तो पण तेने तृप्ति थइ नहोती. 'प्राये करीने स्त्री धन, आयुष्य अने भोजनने विषे प्राणीओ अतृप्त ज रहे छे.' 'आ मारी स्त्रीओ बीजा कोइ पुरुषने मळी न जाओ.' एम विचारी ते सोनी एक स्तंभना महेल उपर सर्व प्रियाओने राखी तेमनी साथे रात्रि दिवस विलास करतो हतो.

आ अवसरे समुद्रनी मध्ये रहेला पंचशैल नामना द्वीपमां विद्युन्माली नामनो महर्धिक व्यंतर हतो, ते एकदा पोतानी प्रिया हासा अने प्रहासा नामनी देवीओ सहित इंद्रनी आज्ञाथी नंदीश्वर द्वीपे जतो हतो. त्यां मार्गमां ज आयुष्य

पूर्ण थतां ते चवी गयो. एटले तेनी प्रियाओए चिंतातुर थइ विचार कर्यो के—" आपणे कोइ स्त्रीलुब्ध पुरुषने लोभ पमाडीए, जेथी ते मरण पामीने आपणो पति थाय." एम विचारी ते बन्ने देवीओ पृथ्वीपर सर्वत्र जोवा लागी, तेटलामां महेलना उपरना भागमां पांच सो स्त्रीओ साथे रमता ते सोनीने जोयो. तेने जोइ 'आ ज आपणने योग्य छे.' एम निश्चय करी ते देवीओए जगतने मोह पमाडे एवुं दिव्य रूप तेने बताव्युं, ते जोइ अत्यंत मोह पामीने तेणे तेमने पूछयुं के—" तमे कोण छो ?" ते सांभळी विलास-हावभाव सहित ते बन्ने बोली के—" अमे मोटी समृद्धिवाळी हासा अने प्रहासा नामनी देवीओ छीए. जो तमे अमने वांछता हो तो पंचशैल नामना द्वीप उपर आवजो." एम कही वीजळीना चमकारानी जेम ते बन्ने देवीओ तत्काळ अदृश्य थइ-आकाशे उडी गइ. ते जोइ शून्य मनवाळो थयेलो ते सोनी चिरकाळ सुधी तेज दिशा सामुं जोइ रह्यो. पछी तेणे विचार कर्यो के—" आ पांच सो स्त्रीओथी मारे शुं फळ छे. नेत्रना जेवी ते बे विना आ आखुं विश्व मने शून्य भासे छे. रत्न जेवुं तेमनुं रूप जोइने आ काच जेवी स्त्रीओने विषे कोण रंजन थाय ? तेथी ते बे देवीओने माटे ज हुं शीघ्र प्रयास करुं." आ प्रमाणे विचार करी ते सोनीए राजसभामां जइ घणुं धन भेट करी राजानी आज्ञा मेळवीने आखा नगरमां आघोषणा करावी के—" जे कोइ श्रेष्ठ नाविक कुमारनंदी सोनीने पंचशैल द्वीप उपर लइ जशे, तो तेने ते कुमारनंदी कोटि द्रव्य आपशे." आवी आघोषणा सांभळी एक अति वृद्ध नाविक के जे जीववानी स्पृहावाळो नहोतो तेणे ते पडह अंगीकार करी भातुं पाणी भरीने वहाण तैयार कर्युं. पछी पोताना पुत्रोने ते कोटि द्रव्य आपी ते वृद्ध नाविक कुमारनंदीने लइ वहाणमां चड्यो. केटलेक दिवसे ते वहाण समुद्रमां घणे दूर गयुं, त्यारे ते वृद्ध नाविके कुमारनं-

दीने कह्युं के—" आगळ दूर तुं कांइ देखे छे ? " तेणे कह्युं—" कांइक काळुं काळुं देखाय छे. " नाविके कह्युं—" ते समुद्रने कांठे रहेला पर्वतना नितंबमां उगेलो वटवृक्ष छे. आ आपणुं वहाण अवश्य ते वट वृक्षनी नीचे जशे. ते वखते तुं कूदीने ते वृक्षपर चडी जजे. रात्रिए ते पर्वतपर भारंडपक्षीओ वसे छे, तेओ प्रातःकाले चरवा माटे पंचशैल पर्वतपर जाय छे, ते पक्षीओ सुइ जाय त्यारे कोइ पण पक्षीना त्रण पगमांथी वचेना पगे एक वस्त्रवडे तुं तारा शरीरने बांधीने पड्यो रहेजे. प्रातःकाळे ते पक्षीओ उडशे. ते तने पंचशैल पर्वतपर लइ जशे. हुं वृद्ध होवाथी ते वटवृक्ष पकडी शकीश नहीं. परंतु वडनी आगळ मोटा आवर्त छे, तेमां आ वहाण पडशे, तेथी तेमां वहाण सहित मारो विनाश थशे, तेथी तुं पण जो व्यग्रताने लीधे ते वटवृक्षने ग्रहण नहीं करे तो तुं पण मारी साथे ज मरण पामीश". आ प्रमाणे ते नाविक कहेतो हतो, तेटलामां ते वहाण ते वटवृक्षनी नीचे पहोंच्युं. एटले तरत ज ते सोनी वटवृक्षने वळगी गयो. पछी नाविकना कहेवा प्रमाणे करी ते पंचशैल पर्वतपर पहोंच्यो. भोगमां उत्कंठित थयेला तेने आवेलो जोइ ते देवीओए तेने कह्युं के—" आ मनुष्यना शरीरवडे तुं अमारी साथे भोग भोगववा लायक नथी. कान पण वींधावानी व्यथाने सहन करे छे तो ज ते अलंकार पहेरी शके छे अने दाहादिकने सहन करे छे तो ज सुवर्ण पण मणिने पामी शके छे. माटे तुं पण तारे घेर जइ दीन, हीन विगेरेने घणुं दान आपी अग्निप्रवेशनुं कष्ट सहन करी नीयाणुं करीने आ द्वीपनी लक्ष्मीनो अने अमारो पण स्वामी था. मोटा लाभने माटे कांइक कष्ट पण सहन करवुं जोइए. " ते सांभळी ते रागवाळा सोनीए कह्युं के—" हुं अहींथी मारे घेर शी रीते जइ शकुं ? " ते सांभळी तरत ज ते देवीओए ते कामांध सोनीने उपाडीने चंपापुरीमां मूकी दीधो. तेने जोइ नगरजनोए पूछ्युं के—" हे कुमार-

नंदी! तुं शी रीते पाछो आव्यो? त्यां तें शुं आश्चर्य जोयुं?" त्यारे ते सोनी "अहो! ते हासा अने प्रहासा क्यां गइ?" ए प्रमाणे वारंवार बोलवा लाग्यो. त्यारपछी ते मूर्ख इंगिनीमरणवडे मरवा तैयार थयो. तेने तेना मित्र नागिल नामना श्रावके कह्युं के— "हे मित्र! सिंहने घास खावुं अयोग्य छे, तेम तारे आवुं कुपुरुषने लायक कार्य करवुं योग्य नथी. वळी अत्यंत तुच्छ भोगने माटे आ दुर्लभ मनुष्य भवने तुं हारी न जा. जो कदाच तने भोगनी इच्छा होय तोपण तुं कल्पवृक्षनी जेम इष्ट वस्तुने आपनार धर्मनुं ज आचरण कर." आवा मित्रना उपदेशने पण ते उन्मत्ते गणकार्यो नहीं. तेथी तेणे पगथी मस्तक पर्यंत आखुं शरीर बकरीनी लींडीओथी ढांकी दीधुं. पछी तेमां अग्नि सळगावी ते बन्ने देवीओनुं ज स्मरण करी मरण पामी ते विद्युन्माली नामनो देव थयो. आ प्रमाणे इंगिनीमरणथी मरण पामेला तेने जोइ नागिल श्रावक वैराग्य पाम्यो, अने "अहो! मूढ पुरुषो भोगने माटे केटलुं कष्ट भोगवे छे!" इत्यादि विचार करतो ते नागिल दीक्षा ग्रहण करी शुभ ध्याने मरण पामी अच्युत नामना स्वर्गमां देव थयो. त्यांथी तेणे अवधिज्ञानवडे पोताना पूर्वभवना मित्रने जोयो.

एकदा नंदीश्वर द्वीपनी यात्रानो महोत्सव प्राप्त थयो. ते वखते पटह वगाडवानुं काम ते विद्युन्मालीने करवानुं हतुं, तोपण ते पटह वगाडवाने इच्छतो नहोतो, तेथी ते आम तेम नाशी जवा लाग्यो, तोपण बळात्कारे पटह तेना कंठमां आवीने वळगी गयो. ते वखते हासा अने प्रहासाए तेने कह्युं के—"जे अमारो स्वामी होय तेणे अवश्य पटह वगाडवानो ज छे, माटे तमे केम नाशी जाओ छो?" ते सांभळी विद्युन्माली व्यंतर शांत थयो अने शक्र इंद्रनी आगळ पटह वगाडतो नंदीश्वर द्वीपपर गयो, त्यां आ नागिल श्रावकदेव पण आव्यो हतो, तेणे तेने जोयो. तेथी ते श्रावकदेव जेम जेम ते व्यंत-

रनी पासे जवा लाग्यो, तेम तेम एनुं तेज सहन नहीं थवाथी ते व्यंतर दूर दूर नासवा लाग्यो. त्यारे ते श्रावक देवे पोतानुं तेज संहरीने तेने कहुं के—" तुं मने जाणे छे ? " ते बोल्यो के—" इंद्रादिक देवोने कोण न जाणे ? " ते सांभळी ते श्राद्धदेवे पोतानुं पूर्वभवनुं रूप देखाडी तेने कहुं के—" हुं नागिल नामनो तारो पूर्वभवनो मित्र छुं. ते वखते तारुं कुमरण जोइ में वैराग्यथी दीक्षा ग्रहण करी हती, तेथी हुं आवी लक्ष्मी पाम्यो छुं. ते वखते में तने निषेध कर्यो छतां तुं बाळमरणवडे मरण पामी आवुं कुदेवपणुं पाम्यो छे. परंतु जो तें ते वखते जिनधर्म अंगीकार कर्यो होत, तो मारी जेम तुं पण आवी स्वर्गलक्ष्मी पाम्यो होत." आ प्रमाणे तेनुं वचन सांभळी प्रतिबोध पामी ते विद्युन्माली बोल्यो के—"गयेली बाबतनो शोक करवाथी शुं फळ छे ? हवे कांइक तेवुं कहो, के जेथी परभवमां मने शुभ फळ प्राप्त थाय." त्यारे श्राद्धदेवे तेने कहुं के—" श्री महावीर स्वामीनी प्रतिमा तुं बनाव. तेथी ज तने बीजा भवमां बोधिरत्न–समकित सुलभ थशे. अरिहंतनी प्रतिमा करनारने दारिद्र्य, दुर्गति अने दुःख प्राप्त थतां नथी अने स्वर्ग तथा मोक्षना सुखने आपनार धर्म प्राप्त थाय छे." आ प्रमाणे ते श्राद्धदेवनो उपदेश अंगीकार करी ते विद्युन्माली देव क्षत्रियकुंड नामना गाममां श्रीमहावीरस्वामी पासे गयो. त्यां शरीरपर अलंकारो धारण करेला, विकार रहित, सुंदर आकृतिवाळा, सद्गुणना निधानरूप अने भावयतिपणुं साधता होवाथी गृहस्थाश्रममां पण कायोत्सर्गे रहेला श्रीवर्धमानस्वामीने जोइ तेणे प्रणाम कर्या. त्यारपछी ते देव तरत ज महाहिमवान पर्वतपर गयो, अने त्यांथी तेणे अत्यंत सुगंधवडे विश्वने आनंद आपे तेवुं गोशीर्ष चंदननुं काष्ठ ग्रहण कर्युं. ते वडे जेवुं जोयुं हतुं तेवुं प्रभुनुं प्रतिबिंब बनावी जेम हारने दाभडामां नांखे तेम ते प्रतिमाने एक काष्ठना संपुटमां स्थापन करी.

पछी ते विद्युन्माली देवे समुद्रमां दृष्टि करी तो त्यां उत्पातने लीधे छ मासथी आम तेम अथडातुं एक वहाण जोयुं. तेमां बेठेला सांयात्रिक लोको आकुळ व्याकुळ थयेला हता. आवी स्थिति जोइ ते देवे तरत ज उत्पातनुं हरण करी सांयात्रिक लोकोने प्रत्यक्ष थइ तेमने ते काष्ठसंपुट आपी कह्युं के–" हे लोको! आ संपुटमां देवाधिदेवनी चंदनमय प्रतिमा स्थापन करेली छे. आने तमारे वीतभय नामना पत्तनमां लइ जइ त्यांना राजाने आपी कहेवुं के–" आ संपुट हर्षथी देवाधिदेवनुं नाम लेवाथी भेदाय तेम छे. " तमारो छ मासनो उत्पात में हरण कर्यो छे, तेथी आटलुं मारुं कार्य तमारे करवानुं छे. " आ प्रमाणे देवनुं वचन ते सांयात्रिकोए हर्षथी अंगीकार कर्युं. पछी विद्युन्माली देव तत्काळ अदृश्य थयो.

अनुक्रमे ते सांयात्रिको समुद्रनो पार पामी वीतभय पत्तनमां गया. त्यां तापसना धर्ममां भक्तिवाळा उदायन राजानी पासे ते संपुट लइ गया, अने देवे कहेलुं वृत्तांत पण तेओए राजाने जणाव्युं. ते सांभळी घणा ब्राह्मणो अने योगीओ विगेरे त्यां एकठा थया. तेमांथी केटलाक बोल्या के–" वेद अने सृष्टिना रचनार होवाथी ब्रह्मा ज देवाधिदेव छे, तेथी तेना नामथी आ संपुट भेदी शकाशे. " एम कही तेओए ब्रह्मानुं नाम लइ ते संपुटनी वच्चे तीक्ष्ण कुठार नांख्यो, परंतु शास्त्र भूली जवाथी जेम पंडित स्खलना पामे तेम ते कुठार स्खलना पाम्यो. पछी बीजा केटलाक बोल्या के–" जे देव युगने अंते जगतने पोताना उदरमां धारण करे छे, तथा दुनियाना शत्रुरूप दैत्योनो जे विनाश करे छे, ते विष्णु ज देवाधिदेव छे. " एम कही तेनुं नाम लइ तेओए पण कुठार चलाव्यो, परंतु ते पण निष्फळ थयो. पछी बीजा केटलाक बोल्या के–"

ब्रह्मा अने विष्णु पण जेना अंशरूप छे, जे पोतानी मेळे उत्पन्न थयेला छे अने जे सर्व विश्वनुं कारण छे ते महादेव ज देवाधिदेव छे." एम कही तेनुं नाम लइ तेओए पण ते संपुटपर कुठारनो प्रहार कर्यो. परंतु सिंहना पुच्छवडे पर्वतना तटनी जेम ते कुठारवडे ते संपुट भेदायुं नहीं. त्यारपछी ते सर्वे विलखा थइने विचार करवा लाग्या. तेटलामां ते वृत्तांत सांभळी प्रभावती राणी पण कौतुकथी त्यां आवी. तेणीए विधि प्रमाणे ते संपुटनी पूजा करी अमृत जेवी मधुर वाणीथी कह्युं के-" जेणे राग द्वेष अने मोहनो सर्वथा विनाश कर्यो छे, तथा जे अष्ट महाप्रातिहार्योवडे युक्त छे, ते देवाधिदेव सर्वज्ञ जिनेश्वर मने दर्शन आपो." आ प्रमाणे कही ते राणीए कुठारवडे ते संपुटनो जराक स्पर्श कर्यो के तरत ज सूर्यना किरणवडे कमळनी जेम ते संपुट विकास पाम्युं-उघडी गयुं, एटले तेमांथी समुद्रमांथी लक्ष्मीनी जेम नहीं करमायेला पुष्पनी माळाने धारण करती अने सर्व अंगे मनोहर एवी श्री महावीरस्वामीनी मूर्ति प्रगट थइ. तेने जोइ प्रभावती राणी वचनथी न कही शकाय तेवा हर्षने पामी. पछी भक्तिवडे ते प्रतिमानी पूजा करी रसिक स्तवनोवडे तेनी स्तुति करी. आ प्रमाणे प्रत्यक्ष आश्चर्य थवाथी लोकोमां जैनधर्मनी महा प्रभावना थइ अने उदायन राजा पण जैनशासनमां कांइक रुचिवाळो थयो. तेथी ते राजाए अन्तःपुरमां ज मनोहर चैत्य करावी महोत्सव पूर्वक तेमां ते सर्वज्ञनी प्रतिमा स्थापन करी. पछी हमेशां प्रभावती राणी भक्तिथी तेनी त्रिकाळ पूजा करवा लागी, अने पूजाने अंते ते राणी प्रभुनी पासे नृत्य करती. ते वखते राजा पोते वीणा वगाडतो हतो.

एकदा प्रभावती राणी विधिपूर्वक प्रभुनी पूजा करी तेनी पासे नृत्य करवा लागी. ते वखते राजाए तेणीनुं मस्तक

जोयुं नहीं. तेथी व्यग्र थयेला राजाना हाथमांथी वीणांनी कंबा नीचे पडी गइ. ते वखते नृत्यमां भंग थवाथी कोपायमान थयेली राणीए राजाने कह्युं के–" शुं मारा नृत्यमां कांइपण दोष आव्यो के जेथी तमे वीणा वगाडवानो त्याग कर्यो ?" ते सांभळी राजाए कांइपण प्रत्युत्तर आप्यो नहीं. त्यारे राजाने आग्रहथी पूछयुं, एटले राजाए तेणीने सत्य हकीकत कही. ते सांभळी महा सत्त्ववाळी राणी बोली के–" हे स्वामी ! हुं चिरकाळथी श्रावकधर्मनुं सेवन करुं छुं, तेथी मारे मृत्युनो भय नथी, तो आ अल्प आयुष्यने सूचवनारा निमित्तथी तमे शामाटे खेद पामो छो ?" आ प्रमाणे कही तेणीए राजाने शांत कर्यो.

एकदा प्रभावती राणीए स्नान करी पूजाने माटे वस्त्रो लाववानुं दासीने कह्युं, त्यारे ते दासी संभ्रमथी–उतावळथी श्वेत वस्त्रने बदले रातां वस्त्र लावी. ते जोइ क्रोध पामेली राणीए कह्युं के—" जिनेश्वरनी पूजा करवा माटे चैत्यमां मारे जवुं छे, ते वखते आ रातां वस्त्रो मने केम आपे छे !" एम कही राणीए दासी उपर पोताना हाथमां रहेला दर्पणनो प्रहार कर्यो, ते तेणीने मर्मस्थानमां लागवाथी ते तत्काळ मरण पामी. ते जोइ पश्चात्ताप करती राणीए विचार कर्यो के—" आ निरपराधी दासीनो घात करवाथी मारा व्रतनो भंग थयो. तेथी हवे अनशन ग्रहण करीने आ पापनो हुं नाश करुं. कारण के व्रतनो भंग थवाथी विवेकी माणसे जीववुं योग्य नथी." आ प्रमाणे विचारी राणीए पोतानो अभिप्राय राजाने कह्यो. ते सांभळी राजाए कह्युं के—" हे देवी ! मारुं जीवित तारे आधीन छे, तेथी हुं तने अनुमति आपतो नथी." ते सांभळी देवीए कह्युं के–"हे स्वामी ! ते वखतना दुर्निमित्तथी तमे मारुं अल्प आयुष्य जाणो छो, छतां मारा स्वार्थनो तमे

विनाश केम करो छो ?" त्यारे राजाए कह्युं के–"हे प्रिया! जो तुं देवपणुं पामीने मने सारी रीते जैनधर्ममां प्रतिबोध पमाडे, तो हुं तने रजा आपुं." ते सांभळी राजानुं वचन अंगीकार करी प्रभावती राणी अनशन ग्रहण करी स्वर्गे गइ. "श्राद्धधर्मनी आराधना करनारने आ स्वर्गप्राप्तिरूप फळ मळे ते तो प्रासंगिक फळ छे, मुख्य फळ तो तेनुं मोक्ष छे." त्यारपछी देवदत्ता नामनी कुब्जा दासी निरंतर भक्तिपूर्वक ते जिनप्रतिमानी पूजा करवा लागी.

हवे ते प्रभावती देव स्वप्नादिकवडे राजाने प्रतिबोध करवा लाग्यो परंतु ते राजाए तापसनी भक्तिनो त्याग कर्यो नहीं. त्यारे ते देव एकदा तापसनुं रूप लइ राजानी पासे आव्यो, अने तेने मनोहर अमृतफळ आप्यां. तेनो स्वाद लइ आनंद पामेला राजाए तेने पूछ्युं के–" हे पूज्य ! आवां फळो क्यां थाय छे"? तेणे कह्युं के–"हे राजा! आ नगरथी थोडे दूर अमारो आश्रम छे, त्यां आवां फळो घणां थाय छे." ते सांभळी राजाए विचार कर्यो के–"एक वखत तृप्ति थाय त्यां सुधी आवां फळो खाउं तो ठीक." एम विचारी ते तापसनी साथे ज राजा तेना आश्रममां गयो. त्यां मनोहर फळो जोइ राजा ते लेवा गयो, तेटलामां त्यां रहेला बीजा मायावी तापसो आक्रोश सहित बोल्या के–"अरे! तुं कोण छे? केम अहीं आव्यो ?" इत्यादिक कही क्रोधथी राजाने मारवा दोड्या. ते जोइ राजा भय पाम्यो, अने "आ तापसोनो परिचय करवो सारो नथी." एम विचारी तेओना मारथी बचवा माटे एकदम नाठो. मार्गमां कोइ उद्यानमां मुनिओने जोइने राजा तेमने शरणे गयो, अने बोल्यो के—"हे पूज्यो ! आ पापी तापसोथी मारुं रक्षण करो." मुनिओ बोल्या के—"हे राजा! तमे भय पामशो नहीं." आ प्रमाणे मुनिओए कह्युं के तरत ज जाणे लज्जा पाम्या होय तेम ते तापसो पाछा वळी पोताने

स्थाने चाल्या गया. त्यारपछी निर्भय थयेला वीतभय नगरना स्वामीने मुनिश्रोए अमृत जेवां वचनोवडे जैनधर्मनो उपदेश आप्यो. ते सांभळी प्रतिबोध पामी राजाए श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. 'देवनो करेलो उपाय प्रातःकाळना मेघनी गर्जनानी जेम निष्फळ थतो नथी.' पछी ते देव तत्काळ प्रगट थइ राजाने धर्ममां स्थिर करी स्वर्गे गयो. राजाए पण तरत ज पोताने सभामां बेठेलो जोयो. त्यारपछी ते राजा निरंतर नवी नवी पूजाओवडे मोटा वैभवथी ते प्रतिमानी पूजा करवा लाग्यो.

आ अवसरे गांधार नामनो कोइ श्रावक चारित्र ग्रहण करवानी इच्छा थवाथी जिनेश्वरनां कल्याणकोनां सर्व स्थानो वांदवा नीकळ्यो. अनुक्रमे वैताढ्य पर्वतपर रहेली शाश्वती प्रतिमाओने वांदवानी इच्छा थवाथी तेणे उपवास करी शासनदेवीनी आराधना करी. तेथी तुष्टमान थयेली देवीए तेने ते प्रतिमाओनां दर्शन कराव्यां, अने सकळ वांछितनी सिद्धि करनार सो गुटिकाओ तेने आपी. त्यांथी पाछा फरेला ते श्रावके देवनी आपेली ते चंदननी प्रतिमा सांभळी, तेथी तेने वांदवा माटे ते वीतभय पत्तनमां आव्यो. त्यां ते दैवयोगे मांदो पड्यो. ते वखते ते कुब्जा दासीए पितानी जेम तेनी सारी भक्ति करी. केटलेक दिवसे ते श्रावक सारो थयो, त्यारे ते सर्व गुटिकाओ कुब्जा दासीने आपी तेणे दीक्षा ग्रहण करी. पछी दासीए हर्ष पामी विचार्युं के—"आ गुटिकाना प्रभावथी हुं सुंदर आकृतिवाळी अने सुवर्ण जेवा वर्णवाळी थाउं." एम विचारी तेणीए एक गोळी खाधी. तत्काळ ते देवी जेवी मनोहर थइ गइ. तेथी ते सुवर्णगुलिका नामथी प्रसिद्ध थइ. एकदा तेणीए विचार कर्यो के—"आ मारुं रूप पति विना अरण्यना पुष्पनी जेम निष्फळ छे. आ राजा तो मारा पिता समान होवाथी तेनापर मने राग थतो नथी, तेथी मोटी समृद्धिवाळो चंडप्रद्योत राजा मारा भर्ता थाओ." एम विचारी तेणीए

एक गुटिका खाधी. तेना प्रभावथी देवीए चंडप्रद्योत राजा पासे जइ सुवर्णगुलिकाना रूपनुं वर्णन कर्युं. ते सांभळी प्रद्योत राजाए तेणीने बोलावी लाववा माटे पोताना एक दूतने वीतभय पत्तनमां मोकल्यो. ते दूते जइ तेणीने राजानो संदेशो कह्यो, त्यारे ते बोली के—" जो मने लइ जवी होय तो प्रद्योत राजा पोते मने तेडवा आवे, कारण के में तेमने कोइ पण वखते जोया नथी." आ प्रमाणे तेणीनुं वचन दूते जइ प्रद्योत राजाने कह्युं. त्यारे ते राजा पण अनलगिरि नामना गंधहस्तीपर आरूढ थइ रात्रिने वखते वीतभयपत्तनमां आवी तेणीने मळ्या. तेने जोइ सुवर्णगुलिका तेनापर आसक्त थइ अने बोली के—" हे राजा ! जो आ प्रभुनी प्रतिमा तमे साथे लइ ल्यो, तो हुं तमारी साथे आवुं." ते सांभळी प्रद्योते कह्युं के—" आने ठेकाणे बीजी एवी ज प्रतिमा मूकवी जोइए, माटे ते लइने हुं आवुं छुं." एम कही ते अवंतीपति तत्काळ अवंती नगरीमां गया. अने तेना जेवी ज नवी वीरप्रभुनी प्रतिमा भरावी कपिल नामना महर्षि पासे तेनी प्रतिष्ठा करावी फरीथी गंधहस्ती पर आरूढ थइ रात्रिने समये वीतभयपत्तनमां आव्यो. हस्तीने नगर बहार मूकी ते नवी प्रतिमाने लइ प्रद्योत राजा राजमहेलमां गयो. त्यां नवी प्रतिमा मूकी आगळनी प्रतिमाने लइ सुवर्णगुलिका सहित ते प्रद्योत राजा हस्तीपर आरूढ थइ एकदम अवंती नगरीमां आव्यो. ते वखते ते गंधहस्तीए वीतभय पत्तननी बहार विष्टा तथा मूत्र कर्यां हतां, तेना गंधथी ते पत्तनना सर्व हस्तीओनो मद नाश पाम्यो. प्रातःकाळे वकरा जेवा थइ गयेला ते हाथीओने जोइ भयभ्रांत थयेला महावतोए ते हकीकत राजाने कही. त्यारे राजाए पोताना सेवकोने तेनो निर्णय करवा हुकम कर्यो, एटले तेओए अवंतीना मार्गमां हाथीनां पगलां जोइ पाछा आवी राजाने कह्युं के—" खरेखर अनलगिरि हस्तीपर आरूढ

थइ चंडप्रद्योत राजा अहीं आव्यो होवो जोइए. केमके तेना विना बीजा कोइ पासे गंधहस्ती छे एम सांभळ्युं नथी. ते हस्तीना ज गंधथी आपणा हाथीओ सर्वे मदरहित थइ गया छे." आ प्रमाणे तेओ वात करे छे, तेटलामां कोइ कंचुकीए आवी राजाने कह्युं—"आपणा महेलमां आजे सुवर्णगुलिका दासी नथी." ते सांभळी राजाए कह्युं के—"ते राजा पोते आवी सुवर्णगुलिका दासीने हरी गयो जणाय छे, तेमां आपणने काइ हरकत नथी. परंतु ते प्रभुनी प्रतिमा छे के नथी? तेनी तपास करो." सेवकोए स्थूळदृष्टिए जोइने कह्युं के—" प्रतिमा तो ते ठेकाणे छे." पछी पूजाने समये राजा पोते चैत्यमां गयो, त्यां करमाइ गयेला पुष्पनी माळा जोइ खेद पामी राजाए विचार्युं के—" जे मूळ प्रतिमा हती तेने स्थाने आ बीजी प्रतिमा मूकी छे, तेम न होय तो आ पुष्पो कदापि करमाय नहीं." त्यारपछी राजाए पोतानो दूत प्रद्योत राजा पासे मोकल्यो. तेणे जइ प्रद्योतने कह्युं के—" श्री उदायन राजा मारा मुखवडे तमने कहेवरावे छे के—चोरनी जेम दासीने अने प्रतिमाने लइ जतां तमने लज्जा केम आवी नहीं? अथवा दासीपर आसक्त थयेला तमारी आवी चेष्टा होय ते योग्य ज छे. तोपण कार्याकार्यने जाणनारा मारे दासीनुं कांइ पण प्रयोजन नथी. मात्र मारी प्रतिमानुं ज हुं कुशळ इच्छुं छुं. माटे ते शीघ्रपणे मोकली आपो. जो ते प्रतिमाने नहीं आपो तो श्रीउदायन राजा प्रलयकाळना उछळता समुद्र जेवी सेना सहित अहीं आवशे. एम तमारे नक्की जाणवुं." ते सांभळी क्रोध पामेलो चंडप्रद्योत राजा बोल्यो के—" हे दूत! खरेखर तुं निर्लज्ज छे, के जेथी मारी पासे पण आवां वचन बोले छे. रत्नरूप प्रतिमा अने दासीनुं हरण करतां मने लज्जा शानी? गमे ते प्रकारे रत्नने पोतानुं करवुं एम शुं तें सांभळ्युं नथी? दासीने के प्रतिमाने पाछी आपवा माटे हुं हरी लाव्यो नथी. छतां तेने

ग्रहण करवा जो तारो स्वामी इच्छा करशे, तो ते अवश्य मारा हाथथी मरण पामशे, माटे तेने अहीं आववानो प्रयास करवो निष्फळ छे, छतां आवशे तो मने ते जीती शकवानो नथी. हाथी अति बळवान होय तो पण कांइ पर्वतने चलावी शकतो नथी." आ प्रमाणे तेनां वचनो दूते जइ उदायन राजाने कह्यां. ते सांभळी राजाए तत्काळ यात्रानी भेरी वगडावी. ते वखते जेष्ठ मास हतो तोपण उदायन राजाए सर्व सैन्य अने दश मुकुटबद्ध राजाओ सहित अवंती तरफ प्रयाण कर्युं. अनुक्रमे सैन्यवडे पृथ्वीने अने धूळवडे दिशाओने आच्छादन करतो ते राजा निर्जळ प्रदेशवाळी मरुभूमिमां आव्यो. त्यां जळ विना समग्र सैन्य कंठप्राण थइ गयुं. ते वखते राजाए प्रभावती देवनुं स्मरण कर्युं, एटले तत्काळ ते देवे आवी त्रण सरोवर जळथी भरी दीधां. तेमांथी शीतळ जळपान करी सर्व सैन्य स्वस्थ थयुं. "अन्न विना जीवी शकाय छे, पण जळ विना जीवी शकातुं नथी." पछी राजानी रजा लइ ते देव स्वस्थाने गयो. अने उदायन राजा पण अनुक्रमे अवंती पहोंच्यो. तेणे प्रद्योतने दूतद्वारा कहेवराव्युं के—"घणा मनुष्योनो विनाश करवाथी शुं फळ छे? आपणा बन्नेनुं परस्पर युद्ध हो. तेमां पण तमे रथ, अश्व के हस्तीपर आरूढ थइने के वाहन विनाज जे रीते युद्ध करवा इच्छता हो, ते कहो, के जेथी हुं पण ते ज प्रमाणे युद्धमां उतरुं." ते सांभळीने प्रद्योते कह्युं के— "रथमां बेसीने आपणुं युद्ध थाओ" आवुं वचन दूतना कहेवाथी जाणी उदायन राजा रथमां आरूढ थयो. अहीं प्रद्योत राजाए विचार कर्यो के—"रथमां बेसीने हुं उदायन राजाने जीती शकीश नहीं." एम विचारी अनलगिरीने सज्ज करी तेनापर बेसीने अवंतीस्वामी युद्धमां आव्यो. तेने गजारूढ जोइ उदायन राजाए कह्युं के—"हे पापी! तुं तारी प्रतिज्ञानो लोप करी हाथीपर चडीने आव्यो

छे, तो पण हुं तने छोडीश नहीं." एम कही बुद्धिमान उदायन पोताना रथने गोळ मंडळरूपे भमाडवा लाग्यो. अने प्रद्योत पण पोताना हाथीने रथनी पाछळ पाछळ भमाडवा लाग्यो. तेमां ते गंधहस्ती चालतां चालतां जे जे पग उंचो करतो हतो ते ते पगने उदायन राजा तीक्ष्ण बाणोवडे वींधवा लाग्यो. सर्व पगो वींधाइ जवाथी ते हस्ती नीचे पड्यो के तरत ज बळवान उदायने ते राजाने हाथीपरथी नीचे पाडी बांधी लीधो. पछी ते प्रद्योतना कपाळमां 'आ मारी दासीनो पति छे' एवा अक्षरो लखी हर्षथी ते दिव्य प्रतिमा लेवा गयो. प्रतिमानी नमस्कारपूर्वक पूजा करीने तेने उपाडवानो घणो उद्यम कर्यो, पण ते प्रतिमा जरा पण चलायमान थइ नहीं. ते वखते आकाशवाणी थइ के—"वीतभय पत्तन धूळनी वृष्टिथी स्थळरूप थइ जवानुं छे, तेथी हे राजा! हुं त्यां आवीश नहीं." ते सांभळी उदायन राजा पाछो फरी प्रद्योत राजाने साथे ज लइ पोताना देश तरफ चाल्यो. मार्गमां जतां वर्षाकाळ आव्यो, तेथी प्रयाण न थइ शकवाने लीधे राजाए त्यां ज सैन्यनो पडाव नाख्यो. ते वखते चोतरफ धूळनो किल्लो करी ते दश राजाओ तेनी रक्षा करवा लाग्या. त्यां वेपार करवा माटे घणा वेपारीओ पण आवीने रह्या. ते शिबिरनुं नाम कोइ पूछतुं त्यारे लोको तेने दशपुर कहेता हता.

उदायन राजा हमेशां चंडप्रद्योत राजाने पोतानी साथे ज भोजनादिक करावतो हतो. तेवामां पर्युषणा पर्व आव्युं, त्यारे उदायन राजाए ते दिवसे उपवास कर्यो. तेथी राजानी आज्ञाथी रसोइयाए प्रद्योतने "आजे तमारे शुं भोजन करवुं छे?" एम पूछ्युं, ते सांभळी तेणे विचार कर्यो के—"कोइ दिवस मने भोजनादिक माटे पूछ्युं नथी, अने आजे ज पूछ्युं, माटे जरुर मने आजे विषादिक खवरावी मारी नाखवो हशे." एम विचारी तेणे रसोइयाने पूछ्युं के—"तुं मने

मारे केम पूछे छे ? " रसोइयाए कह्युं के—" आजे सांवत्सरिक पर्व होवाथी अमारा स्वामीए परिवार सहित उपवास कर्यो छे. तेथी आजे मात्र तमे ज जमवाना होवाथी तमने पूछुं छुं." ते सांभळी अवंतीपतिए कह्युं के—"तें मने आजे वार्षिक पर्व संभारी आप्युं ते बहु ठीक थयुं. मारे पण आजे उपवास छे. केमके मारा मातापिता पण श्रावक हता." आवुं प्रद्योतनुं वचन रसोइयाए उदायन राजाने कह्युं. ते सांभळी तेणे कह्युं के—" ते केवो श्रावक छे ? ते हुं जाणुं छुं, परंतु ते मायावी श्रावक पण बंधनमां हशे त्यांसुधी मारुं पर्युषणा पर्वनुं प्रतिक्रमण शुद्ध थशे नहीं. " एम कही तेणे प्रद्योतने छोडी मूक्यो. क्षमा अने पराक्रमना स्थानरूप उदायन राजाए तेना कपाळना अक्षरो ढांकवा माटे तेने कपाळे पट्टबंध कर्यो. त्यारथी राजाओने ते पट्टबंध लक्ष्मीनां (शोभानां) स्थानरूप थयो. पछी उदायन राजा तेने ते देश आपी वर्षाकाळ उतर्या पछी पोताना वीतभयपत्तने गयो. वेपारने माटे आवेला वणिग्जनो त्यां ज रह्या, तेथी त्यां दशपुर नामनुं नगर थयुं.

एकदा उदायन राजा पौषध करीने पौषधशाळामां रह्या हता, त्यां रात्रिए धर्मजागरण करतां तेने विचार थयो के—" ते नगर, गाम, आकर अने द्रोण विगेरे धन्य छे के जेने जगद्गुरु श्री वर्धमानस्वामी पोताना चरणवडे पवित्र करे छे. जेओ वीरप्रभुनी वाणी सांभळी श्रावकधर्मने अने चारित्रने ग्रहण करे छे ते राजाओने पण धन्यवाद घटे छे. जो कदाच प्रभु पोताना चरणकमळवडे आ वीतभयपत्तनने पवित्र करे तो हुं तेमनी पासे दीक्षा ग्रहण करी कृतार्थ थाउं. " आवा तेना विचारने जाणी श्रीवीरप्रभु चंपानगरीथी विहार करी वीतभयपत्तनना उद्यानमां समवसर्या. प्रभुनुं आगमन सांभळी हर्ष पामेला उदायन राजाए प्रभु पासे आवी वंदना करीने देशना सांभळी. पछी आ प्रमाणे विनंति करी के—

“ हे पूज्य ! मारा पुत्रने राज्य सोंपी हुं दीक्षा लेवा आपनी पासे आवुं, त्यांसुधी आप कृपा करीने अहीं ज रहेजो. ” स्वामीए कह्युं—“ आ बाबतमां प्रमाद करवो नहीं. ” ते सांभळी राजा स्वामीने नमी घेर आवी विचार करवा लाग्यो के—“ जो हुं मारा अभीचि नामना पुत्रने राज्य आपीश तो ते राज्यमां मूर्छा पामशे अने तेथी ते चिरकाळ सुधी भवभ्रमण करशे. तेथी करीने प्रारंभमां मनोहर अने परिणामे भयंकर एवुं आ विषफळनी जेवुं राज्य हुं मारा पुत्रने नहीं आपुं. ” एम विचारी तेणे पोतानी बहेनना पुत्र केशिने राज्यपर स्थापन कर्यो अने केशिए करेला उत्सवपूर्वक राजाए प्रभुपासे दीक्षा ग्रहण करी. पछी एक उपवासथी आरंभीने मासक्षपण पर्यंतना दुस्तप तपवडे ते राजर्षि कर्मनुं अने कायानुं शोषण करीने विचरवा लाग्या. एकदा अंतप्रांत आहार करवाथी तेमना शरीरमां अनेक रोग उत्पन्न थया. ते वखते तेने वैद्योए ते रोगनुं औषध दहीं छे एम कह्युं. तेथी ते राजर्षि गोकुळमां विचरवा लाग्या. केमके त्यां निर्दोष दहींनी भिक्षा सुलभ होय छे.

एकदा उदायन राजर्षि विहारना क्रमे वीतभयपत्तनमां गया. ते वखते अकारण शत्रुरूप मंत्रीओए केशिराजाने कह्युं के—“ हे राजा ! आ तमारा मामा परिषहोथी पराभव पाम्या छे, तेथी राज्य लेवानी इच्छाथी अहीं आव्या छे, तेनो तमारे विश्वास करवो नहीं. ” ते सांभळी केशि राजा बोल्यो के—“ ते राज्यना स्वामी पोतानुं राज्य ले, तो तेमां मारे शुं ? शेठ पोतानुं धन ग्रहण करे, तेमां वाणोतरने कोप शानो ? ” ते सांभळी प्रधानो बोल्या के—“ आ क्षत्रियोनो धर्म नथी. केमके क्षत्रियो तो पिता पासेथी पण बळात्कारे राज्य लइ ले छे. तेथी तमे तेने राज्य पाछुं आपो ते योग्य नहीं. एवी रीते कोइ पण पाछुं आपे ज नहीं. ” ते सांभळी केशिए तेमने पूछ्युं के—“ त्यारे मारे शुं करवुं ? ”

ते दुष्टोए जवाब आप्यो के—" तेने कोइनी मारफत विष अपावो." आ प्रमाणे मंत्रीओना भरमाववाथी ते मंदबुद्धिवाळा केशिए तेमनुं वचन अंगीकार कर्युं. पछी केशिराजाए कोइ आभिरी पासे ते राजर्षिने विषमिश्रित दहीं अपाव्युं. परंतु देवीए तेमांथी विषने हरी लीधुं अने कह्युं के—" हे मुनि! विषमिश्रित दहीं तमने मळशे, माटे तमे दहींनो त्याग करो." त्यारे तेणे दहींनो त्याग कर्यो एटले दहीं विना तेनो व्याधि वधवा लाग्यो. तेथी मुनिए फरी दहीं लेवा मांडयुं. तेमां पण विष आव्युं, ते देवीए हरी पूर्वनी जेम दहींनो निषेध कर्यो. त्रीजीवार पण देवीए विष हरी लीधुं, अने ते मुनिनी भक्तिमां लीन थयेली होवाथी ते तेनी पाछळ ज भमवा लागी. एकदा देवी प्रमादमां रही, ते वखते मुनिए दहीं खाधुं. " जे थवानुं होय ते कोइ पण प्रकारे थाय ज छे." त्यारपछी मुनिए पोताना अंगनी व्याकुळता जोइ विषभक्षण थयानुं जाणी तत्काळ समताभावमां रही अनशन ग्रहण कर्युं. त्रीश दिवस सुधी अनशन पाळी समाधिमां रही केवळज्ञान पामी ते राजर्षि मोक्षे गया.

ते उदायन राजर्षि मुक्ति पाम्या पछी देवी तेनी पासे आवी अने मुनिने काळधर्म पाम्या जोइ ते मनमां अत्यंत क्रोध पामी. तेथी धूळनी वृष्टि करीने ते देवीए वीतभयपत्तनने स्थळरूप बनावी दीधुं. मात्र एक कुंभार के जे मुनिनो शय्यातर होवाथी निरपराधी हतो तेने ते देवी त्यांथी सिनपल्लीमां लइ गइ, ते ज मात्र एक जीवतो रह्यो. त्यां तेना नामथी ते देवीए कुंभकारकृत नामनुं नगर वसाव्युं. देवनी शक्तिथी शुं न थाय?

अहीं जे वखते उदायन राजाए केशिने राज्यपर स्थापन कर्यो, ते वखते मनमां खेद पामेला अभीचिए विचार कर्यो के—

" हुं प्रभावतीनी कुक्षिमांथी उत्पन्न थयो छुं, नीतिवाळो छुं अने भक्तिमान पण छुं; छतां राजाए केशिने राज्य आप्युं, ते मारा पिताए विवेकी छतां योग्य कर्युं नथी. "भाणेजने घरमां लाववो नहीं" एम लोकमां पण कहेवत छे ते सत्य छे. पुत्रने छोडी भाणेजने राज्य आपतां मारा पिताने केम कोइए वार्यं पण नहीं ? तेम ज तेने केम अपशुकन पण थयां नहीं ? अथवा तो मारा पिता प्रभु छे तेथी तेणे पोतानी इच्छा प्रमाणे कर्युं, तो भले कर्युं, परंतु हुं उदायन राजानो पुत्र थइने मारे केशिनी सेवा करवी ते योग्य नथी." एम विचारी ते अभीचि नगरमांथी नीकळी चंपानगरीमां पोतानी मासीना पुत्र कूणिक राजा पासे गयो. त्यां कूणिक राजाए तेनो सारो सत्कार कर्यो, तेथी ते मोटी समृद्धिने पाम्यो. तेणे चिरकाळ सुधी अतिचार रहित श्राद्धधर्मनुं पालन कर्युं, परंतु पिताना तिरस्कारनुं स्मरण थवाथी तेनापरना वैरनो तेणे त्याग कर्यो नहीं. ते अभीचि घणा वर्षो सुधी श्रावकधर्मने पाळी पितापरना वैरनी आलोचना कर्या विना एक पक्षनुं अनशन करी काळधर्म पाम्यो अने असुरकुमारने विषे एक पल्योपमना आयुष्यवाळो ते महर्द्धिक देव थयो. त्यांथी आयुष्यने क्षये च्यवी महाविदेहमां जन्म पामी ते अभीचिनो जीव सिद्धिपदने पामशे.

इति श्री उदायन राजर्षि कथा.

तहेव कासीराया, सेओसच्चपरक्कमे । कामभोगे परिच्चज, पहणे कम्ममहावणं ॥ ४९ ॥

अर्थ—(तहेव) तेज प्रमाणे (सेओसच्चपरक्कमे) अत्यंत प्रशंसा करवा लायक एवा सत्यने विषे एटले चारित्रने विषे पराक्रमवाळा (कासीराया) काशी देशना नंदन राजाए (कामभोगे) कामभोगनो (परिच्चज) त्याग करीने (कम्म-

महावर्ण) कर्मरूपी महावननो (पहणे) नाश कर्यो. ४९.

काशीराजनी कथा.

वाराणसी नगरीमां अग्निशिख नामे राजा हतो. तेने जयंती नामनी प्रिया हती. तेनी कुक्षिथी सातमो बळदेव पुत्र उत्पन्न थयो. तेनुं नंदन नाम पाड्युं. त्यारपछी ते ज राजानी शेषवती नामनी बीजी राणीथी दत्त नामनो वासुदेव पुत्र उत्पन्न थयो. अवसरे राजाए दत्तने राज्य आप्युं. तेणे नंदननी सहायथी अर्ध खंड भरत साध्युं. चिरकाळ सुधी छवीश धनुष्नी कायावाळा बन्ने भाइओए राज्यलक्ष्मी भोगवी. अनुक्रमे छप्पन हजार वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी दत्त वासुदेव पांचमी नरकपृथ्वीमां गयो. तेना मरण पछी वैराग्य पामेला नंदने दीक्षा ग्रहण करी. छेवट केवळज्ञान प्राप्त करी पांसठ हजार वर्षनुं आयुष्य भोगवी नंदन मुनि मोक्षपद पाम्या.

इति काशीराजकथा.

तहेव विजओ राया, अणट्ठाकित्ति पव्वए । रज्जं तु गुणसमिद्धं, पयहित्तु महायसो ॥ ५० ॥

अर्थ—(तहेव) तेमज वळी (अणट्ठाकित्ति) नाश पामी छे अपकीर्ति जेनी अथवा ' आणट्ठा ' एटले आर्त्तध्यान रहित अने ' कित्ति ' कीर्तिवाळो तथा (महायसो) महा यशस्वी एवो (विजओ) विजय नामनो (राया) राजा बीजो बळदेव (गुणसमिद्धं तु) गुणे करीने समृद्धिवाळा एवा पण (रज्जं) राज्यनो (पयहित्तु) त्याग करीने (पव्वए) प्रव्रजित

थयो. अहीं गुणे करीने समृद्धिवाळुं राज्य कह्युं तेमां गुण एटले स्वामी, अमात्य, मित्र, कोश, राष्ट्र, दुर्ग अने सैन्य—ए सप्तांग राज्य जाणवुं अथवा गुण एटले कामभोग जाणवा. ५०.

विजयराजानी कथा.

द्वारका नगरीमां ब्रह्मराजनो पुत्र सुभद्रानी कुक्षिथी उत्पन्न थयेलो विजय नामनो बीजो बळदेव हतो. तेनो नानो भाइ द्विपृष्ठ वासुदेव हतो. ते बोंतेर लाख वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी मरण पामी नरके गयो, त्यारे विजये वैराग्यथी दीक्षा अंगीकार करी, अनुक्रमे केवळज्ञान उत्पन्न करी पंचोतेर लाख वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी विजयमुनि मोक्षपद पाम्या. आ बन्नेनुं देहमान सीत्तेर धनुष्य हतुं.

इति विजयराजकथा.

तहेवुग्गं तवं किच्चा, अव्वक्खित्तेण चेअसा । महब्बलो रायरिसी, आदाय सिरसा सिरिं ॥५१॥

अर्थ—(तहेव) तथा वळी (महब्बलो) महाबळ नामना (रायरिसी) राजर्षि (सिरसा) मस्तकवडे (सिरिं) चारित्रलक्ष्मीने (आदाय) ग्रहण करी एटले माथा साटे अर्थात् जीवितनी अपेक्षा रहितपणे चारित्रलक्ष्मी ग्रहण करीने (अव्वक्खित्तेण) व्यग्रता रहित—स्थिर (चेअसा) चित्तवडे (उग्गं) उग्र (तवं) तप (किच्चा) करीने त्रीजे भवे मोक्ष पाम्या. (ए अध्याहार छे.) ५१.

महाबळ राजानी कथा.

आ ज भरतक्षेत्रमां हस्तिनापुर नामना नगरने विषे अतुल बळवाळो बळ नामे राजा हतो. तेने देदीप्यमान कांतिवाळी प्रभावती नामनी राणी हती. एकदा रात्रे सुखे सुतेली ते राणीए स्वप्नमां सिंह जोयो. तत्काळ जागृत थइ हर्ष पामीने तेणीए राजाने ते स्वप्न कही तेनुं फळ पूछयुं. राजाए कह्युं—" या स्वप्नथी तने आपणा कुळरूपी समुद्रनो उल्लास करवामां चंद्र समान पुत्र थशे. " ते सांभळी हर्ष पामेली राणीए गर्भ धारण कर्यो. अनुक्रमे समय पूर्ण थये राणीए शुभ लग्नयोगवडे संपूर्ण पुत्र प्रसव्यो. त्यारे बळराजाए हर्षथी मोटो उत्सव करी तेनुं महाबळ नाम पाडयुं. पांच धात्रीओथी लालन पालन करातो ते कुमार कळाना समूहने प्राप्त करी मनोहर युवावस्थाने पाम्यो. त्यारे राजाए तेने जाणे आठे दिशाओनी लक्ष्मी होय तेवी आठ राजकन्याओ महोत्सवथी एक दिवसे परणावी. पछी राजाए कुमारने तथा वहुओने घणी समृद्धि आपी. तेथी ते कुमार सद्गुणवडे मनोहर एवी ते आठे प्रियाओ साथे इच्छा प्रमाणे कामभोग भोगववा लाग्यो.

एकदा ते नगरना उद्यानमां पांचसो शिष्योना परिवार सहित श्री विमळनाथ तीर्थंकरनी पट्टपरंपरामां थयेला धर्मघोष नामना आचार्य महाराज पधार्या. तेमनुं आगमन सांभळी आनंद पामेलो महाबळ कुमार गुरु पासे गयो. तेमने वंदना करी कर्मरूपी मळने धोवामां जळसमान धर्मदेशना सांभळी. तेथी ते कुमार मंदभाग्यवाळा प्राणीओने दुर्लभ एवो वैराग्य पाम्यो. एटले तेणे गुरुने प्रणाम करी विज्ञप्ति करी के—" हे पूज्य ! रोगी माणसने जीवाडे तेवा औषधनी जेम मने आ धर्म रुच्यो छे, तेथी हुं मारा मातापितानी रजा लइ दीक्षा लेवा माटे अहीं आवुं, त्यांसुधी आप मारापर कृपा

करी अहीं ज रहेजो." ते सांभळी आचार्य महाराजे कह्युं के—"हे राजकुमार! तमारो विचार योग्य छे. माटे आ बाबतमां विलंब करवो नहीं." पछी कुमारे घेर जइ मातापिताने प्रणाम करी कह्युं के—"हुं धर्मघोष गुरुनी धर्मदेशना सांभळी आनंद पाम्यो छुं. तेथी आप पूज्योनी अनुज्ञाथी हुं तेमनी पासे दीक्षा लेवा इच्छुं छुं. वहाण मळ्या पछी कयो माणस समुद्रमां डुबतो रहे?" आ प्रमाणे कुमारनुं वचन सांभळी प्रभावती राणी पृथ्वीपर मूर्छा खाइने पडी गइ. पछी शीतोपचारथी सावधान थइ सती ते रुदन करती बोली के—"हे पुत्र! अमे तारा वियोगने सहन करवा शक्तिमान नथी. तेथी ज्यांसुधी अमे जीवीए छीए त्यांसुधी तुं गृहस्थाश्रममां ज रहे. पछी दीक्षा ग्रहण करजे." कुमारे कह्युं—"आ जगतमां सर्व संयोगो स्वप्ननी जेवा क्षणिक अने असत् छे, तथा मनुष्यनुं आयुष्य वायुथी हलता दर्भना अग्रभागपर रहेला जळना बिंदु जेवुं चंचळ छे. तेथी हुं नथी जाणतो के पहेलुं कोण जशे? माटे मने आजे ज प्रव्रज्या लेवानी आज्ञा आपो." माताए कह्युं—"हे वत्स! आ तारुं यौवन वयवाळुं शरीर अति मनोहर अने कोमळ छे, माटे हमणां सुख भोगव अने पछी वृद्धावस्थामां दीक्षा ग्रहण करजे." कुमारे कह्युं—"हे माता! आ शरीर रोगोथी व्याप्त छे, अशुचिथी भरेलुं छे, मळथी मलिन छे, अने कारागृहनी जेवुं असार छे. आवा शरीरथी मनुष्यने शुं सुख छे? वळी शरीरमां शक्ति होय त्यारे ज चारित्र लेवुं योग्य छे, वृद्धावस्थामां शरीर अशक्त थवाथी चारित्र बराबर पाळी शकातुं नथी, अथवा ते वखते मन न होय तो पण व्रत जेवुं ज छे, माटे युवावस्थामां ज दीक्षा सफळ थाय छे." प्रभावती माता बोली—"समग्र गुणना स्थानरूप आ आठ स्त्रीओनी साथे हमणां तुं भोग भोगव. हमणां व्रत लेवाथी शुं?" महाबळ कुमार बोल्यो—

" कष्टथी साधी शकाय तेवा, अज्ञानी जनोए सेवेला, दुःखना अनुबंधवाळा अने विषफळनी उपमावाळा भोगोथी शुं फळ छे ? वळी मोक्षने आपनारा आ मनुष्य भवने कयो डाह्यो माणस भोगने माटे हारी जाय ? एक कोडीने माटे रत्नने कोण गुमावे ? " माता बोली—" हे पुत्र ! आ वंश परंपराथी आवेला द्रव्यनो भोगवटो कर, आ पण पुण्यरूपी वृक्षनुं ज फळ छे. " कुमारे कह्युं—" हे माता ! जे धन चणवारमां गोत्रिओ, चोर अने अग्नि विगेरेने आधीन थाय छे, ते धनथी मने लोभ केम पमाडो छो ? वळी अनंत सुखने आपनारो धर्म परभवमां पण साथे आवे छे, अने धन तो तेनाथी विपरीत छे, तेनी तुल्यता शी रीते थइ शके ? " माताए कह्युं—" हे पुत्र ! चारित्र तो अग्निनी ज्वाळानुं पान करवा जेवुं दुष्कर छे, ते तुं सुकुमार अंगवाळो शी रीते पाळी शकीश ? " कुमार हसीने बोल्यो—" हे माता ! एवुं शुं बोलो छो ? कायर पुरुषोने ज व्रत दुष्कर होय छे. जे वीर पुरुषो होय ते तो प्राणनो नाश थाय तोपण पोतानी प्रतिज्ञानुं पालन करे छे. तेवा परलोकना अर्थीने ते व्रत कांइपण दुष्कर नथी. तो हे पूज्य मातुश्री ! मारापरना मोहनो त्याग करी मने चारित्र लेवानी आज्ञा आपो. बीजो पण कोइ धर्मनुं आचरण करवा इच्छतो होय तेने उत्साह आपवो जोइए, तो पोताना पुत्रने उत्साह आपवो तेमां शुं कहेवुं ? " आ प्रमाणे उत्कट वैराग्यने पामेला ते कुमारने तेना माता पिता समजावी शक्या नहीं, एटले निरुपाय थइ तेने व्रत लेवानी आज्ञा आपी.

त्यारपछी ते महाबळ कुमारने तीर्थना जळवडे अभिषेक कर्यो, चंद्रिकानी जेवा चंदनना द्रव्यवडे तेना शरीरने विलेपन कर्युं, अश्वना मुखना फीण जेवा उज्वळ बे देवदुष्य वस्त्रो तेने पहेराव्यां, पगथी मस्तक पर्यंत मणिमय आभूषणोवडे तेने

शयागारथामां आव्यो, विकस्वर कमळनी जेवुं श्वेत छत्र तेना मस्तकपर धारण करवामां आव्युं, बन्ने बाजु उछळता जळतरंगोनी जेवा चपळ चामरो वींझावा लाग्या, ए रीते हजार मनुष्योए वहन करेली शिबिकामां ते कुमार बेठो. तेनी पाछळ बळराजा सर्व सैन्य सहित चाल्यो. ते वखते भेरी विगेरे वाजित्रोना नादवडे मेघगर्जनानी भ्रांतिथी क्रीडामयूरो पण नृत्य करवा लाग्या. "जे नवा यौवनवाळो छतां मनोहर राज्यलक्ष्मीनो त्याग करी दीक्षा ग्रहण करे छे, ते आ महाबळ कुमारनो जन्म कृतार्थ छे." इत्यादिक अनेक प्रकारे सर्व लोको तेनी प्रशंसा करवा लाग्या. आ रीते चिंतामणिनी जेम अर्थीओने वांछित दान आपतो महाबळ कुमार नगरनी बहार नीकळी आचार्ये पवित्र करेला उद्यानमां आव्यो.

पछी कुमार शिबिकामांथी नीचे उतर्यो. तेने आगळ करीने राजा तथा राणी गुरुपासे जइ हाथ जोडी बोल्या के—"आ अमारो प्रिय पुत्र विरक्त थयो छे, तेथी आपनी पासे दीक्षा ग्रहण करवा आव्यो छे, तेथी अमे पण आपने शिष्यरूप भिक्षा आपीए छीए." ते सांभळी गुरुए 'बहु सारुं' एम कह्युं, एटले ते कुमारे ईशान खूणामां जइ सर्व अलंकारोने जाणे विकार होय तेम दूर कर्या. ते अलंकारोने ग्रहण करती प्रभावती राणी मुक्ताफळ जेवा अश्रुना बिंदुओने मूकती बोली के—"हे वत्स! तुं कदापि धर्मकार्यमां प्रमाद करिश नहीं, अने उत्तम मंत्रनी जेम निरंतर गुरुमहाराजनी आराधना करजे." पछी गुरुमहाराजने नमस्कार करी राणी सहित राजा पोताने घेर गया, महाबळ कुमारे जाते पोताना केशनो पंचमुष्टि लोच कर्यो, अने धर्मघोष गुरुने भक्तिवडे नमस्कार करी विज्ञप्ति करी के—"हे पूज्य! संसारसागरमां डूबता मने दीक्षारूपी नाव आपो." त्यारे सूरिमहाराजे तेने विधिपूर्वक दीक्षा आपी. महा बुद्धिमान ते महाबळ मुनिए तीव्र व्रतनुं पालन करतां

चौद पूर्वनो अभ्यास कर्यो. बार वर्ष सुधी अति उग्र तप करी छेवट एक मासनुं अनशन करी पांचमा देवलोकमां ते देव थयो. त्यां दश सागरोपमनुं आयुष्य पूर्ण करी त्यांथी च्यवी वाणिज नामना गाममां सुदर्शन नामे श्रेष्ठ श्रेष्ठी थयो. त्यां समकित दर्शनवडे पवित्र आत्मावाळा ते सुदर्शन श्रेष्ठीए चिरकाळ सुधी श्रावकधर्मनुं पालन कर्युं.

एकदा ते गाममां श्री महावीर स्वामी समवसर्या. ते सांभळी श्रेष्ठी अत्यंत आनंद पाम्यो. पछी जिनेश्वर पासे जइ तेमने वंदना करी तेमनी पासे धर्म सांभळी प्रतिबोध पामी विरक्त थयेला सुदर्शन श्रेष्ठीए अर्थीजनोने वांछित द्रव्य आपी प्रभु पासे दीक्षा ग्रहण करी. पछी ते श्रेष्ठीमुनि सर्व पूर्वनो अभ्यास करी उग्र तप करी अंते सर्व कर्मनो क्षय करी मोक्षपद पाम्या.

इति महाबलर्षि कथा.

आ प्रमाणे महापुरुषोना दृष्टांतवडे ज्ञानपूर्वक क्रियानुं फळ बतावी हवे उपदेश आपे छे—

कहं धीरे अहेऊहिं, उम्मत्तो व्व महिं चरे । एए विसेसमादाय, सूरा दढपरक्कमा ॥ ५२ ॥

अर्थ—(सूरा) शूरवीर अने (दढपरक्कमा) दढ पराक्रमवाळा (एए) आ भरतादिक महापुरुषोए (विसेसं) अन्य दर्शनो करतां जैन दर्शनमां उत्तमतारूप विशेष छे एम (आदाय) ग्रहण करीने—जाणीने तेनो ज आश्रय कर्यो छे, माटे (धीरे) धीर पुरुष (अहेऊहिं) क्रिया, अक्रिया, विनय अने अज्ञानरूप कुहेतुवडे (उम्मत्तो व्व) उन्मत्तनी जेम (कहं) केम (महिं) पृथ्वीपर (चरे) विचरे ? सत्तत्त्वनो अपलाप करी असत्यरूपणानुं प्रतिपादन करी पृथ्वीपर केम विचरे ?

न ज विचरे. तेथी करीने धीर पुरुषे आ जिनशासनने विषे ज दृढ चित्त करवुं, ए उपदेश छे. ५२.

अच्चंतनिआणखमा, सच्चा मे भासिआ वई। अतरिंसु तरंतेगे, तरिस्संति अणागया ॥ ५३ ॥

अर्थ—जिनशासन ज आश्रय करवा लायक छे ए प्रमाणे (मे) में जे (सच्चा) सत्य (वई) वाणी (भासिआ) कही छे, ते वाणीवडे ज (अच्चंतनिआणखमा) अत्यंत निदान—कर्ममळनुं शोधन, तेने विषे समर्थ एवा पूर्वना जनो (अतरिंसु) आ संसारसमुद्रने तरी गया छे, वर्तमान काळना (एगे) केटलाक जनो (तरंति) महाविदेहमां संसारसमुद्रने तरे छे, अने (अणागया) अनागत काळमां अनेक जनो (तरिस्संति) संसारसमुद्रने तरी जशे. अहीं निदाननी व्युत्पत्ति आ प्रमाणे छे—नितरां दीयते-शोध्यते पवित्रीक्रियते आत्माऽनेनेति निदानं. 'दैप् शोधने' इत्यस्य रूपम् ॥ ५३ ॥

तेथी करीने—

कहं धीरे अहेऊहिं, अत्ताणं परिआवसे। सव्वसंगविणिम्मुक्के, सिद्धे हवइ नीरए त्ति बेमि ॥५४॥

अर्थ—(धीरे) धीर एवो साधु (अहेऊहिं) अहेतुवडे एटले क्रियावादी विगेरे कुमतिओना वचननी युक्तिवडे (अत्ताणं) पोताना आत्माने (कहं) केम (परिआवसे) वासित करे ? एटले कुत्सित हेतुना स्थानमां केम वास करावे ? न ज करावे. आ रीते करवाथी शुं फळ थाय ? ते कहे छे—(सव्वसंगविणिम्मुक्के) द्रव्य अने भाव एम सर्व संगथी विनिर्मुक्त एटले धन धान्यादिक द्रव्य अने क्रियावादादिक भावसंगथी रहित, तथा (नीरए) कर्मरूपी रजथी रहित थयो थको (सिद्धे) सिद्ध

(इवइ) थाय छे–सिद्धपणाने पामे छे. आ प्रमाणे उपदेश आपीने ते क्षत्रियमुनि पृथ्वीपर विचरवा लाग्या, अने संयतमुनि पण निरतिचार चारित्रनुं पालन करी मोक्षपदने पाम्या. (त्तिबेमि) एम हुं कहुं छुं, एम सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. ५४.

इत्यष्टादशमध्ययनम् १८.

अथ मृगापुत्रीय नामनुं ओगणीशमुं अध्ययन. १९

अढारमा अध्ययनमां भोगनी ऋद्धिनो त्याग करवानुं कह्युं. ते त्याग अप्रतिकर्मपणाथी एटले शरीरनी शुश्रूषा–सेवा न करवाथी थाय छे. तेथी आ अध्ययनमां मृगापुत्रना दृष्टांतवडे अप्रतिकर्मताने कहे छे—

सुग्गीवे नयरे रम्मे, काणणुज्जाणसोहिए । राया बलभद्द त्ति, मिआ तस्सग्गमाहिसी ॥ १ ॥

अर्थ—(काणणुज्जाणसोहिए) कानन एटले मोटा वृक्षोवाळा वनो अने उद्यान एटले क्रीडा करवाना बगीचाओवडे शोभित तथा (रम्मे) मनोहर एवा (सुग्गीवे) सुग्रीव नामना (नयरे) नगरने विषे (बलभद्द त्ति) बळभद्र एवा नामनो (राया) राजा हतो. (तस्स) ते राजाने (मिआ) मृगा नामनी (अग्गमाहिसी) पट्टराणी हती. १.

तेसिं पुत्ते बलसिरी, मिआपुत्ते त्ति विस्सुए । अम्मापिऊण दइए, जुवराया दमीसरे ॥ २ ॥

अर्थ—(तेसिं) ते बळभद्र राजा तथा मृगा राणीने (बलसिरी) बळश्री नामे (पुत्ते) पुत्र हतो, एटले तेना माता-

पिताए तेनुं नाम बळश्री पाडयुं हतुं, तथा (मिआपुत्ते त्ति) लोकमां मृगापुत्र एवा नामे (विस्सुए) प्रसिद्ध हतो, एटले लोकोए मृगा राणीनो पुत्र होवाथी तेनुं मृगापुत्र नाम पाडयुं हतुं. ते पुत्र (अम्मापिऊण) मातापिताने (दइए) अत्यंत वल्लभ हतो, तथा (जुवराया) युवराज पदवीने पामेलो हतो. पिता जीवतां छतां राजने योग्य जे कुमार होय ते युवराज कहेवाय छे. तथा ते कुमार (दमीसरे) दमी एटले इंद्रियोने दमन करनारा साधुओनो ईश्वर—स्वामी हतो. अहीं आ कुमार साधुनो स्वामी थवानो छे माटे भावीने विषे भूतकाळनो निर्देश करीने आ विशेषण आप्युं छे, अथवा द्रव्यनिक्षेपाने आश्रीने आ विशेषण आप्युं छे. २.

नंदणे सो उ पासाए, कीलए सह इत्थिहिं । देवो दोगुंदगो चेव, निच्चं मुइअमाणसो ॥ ३ ॥

अर्थ—(उ) तु पुनः (सो) ते कुमार (निच्चं) निरंतर (मुइअमाणसो) हर्ष पाम्युं छे मन जेनुं एवो सतो (नंदणे) वास्तुशास्त्रमां कहेला लक्षणवाळो होवाथी समृद्धिवाळा नंदन नामना (पासाए) प्रासादने विषे (दोगुंदगो) दोगुंदक जातिना (देवो चेव) देवोनी जेम (इत्थिहिं) स्त्रीओनी (सह) साथे (कीलए) क्रीडा करतो हतो. निरंतर भोगमां ज तत्पर रहेता त्रायस्त्रिंश देवोने पण दोगुंदक कहे छे. ३.

मणिरयणकुट्टिमतले, पासायालोअणे ठिओ । आलोएइ नयरस्स, चउक्कतिगचच्चरे ॥ ४ ॥

अर्थ—ते कुमार एकदा (मणिरयणकुट्टिमतले) मणि अने रत्नोथी जडेलुं छे तळीयुं जेनुं एवा (पासायालोअणे)

प्रासादना गवाक्षमां (ठिओ) बेठो थको (नयरस्स) नगरना (चउक्कतिगच्चरे) चतुष्क, त्रिक अने चत्वरोने (आलोएइ) जोतो हतो. चतुष्क एटले चार मार्ग एकठा थता होय ते स्थान, त्रिक एटले त्रण मार्ग एकठा थता होय ते स्थान अने चत्वर एटले बजार–चौटुं तेने जोतो हतो. ४.

ते वखते शुं थयुं ? ते कहे छे—

अह तत्थ अइच्छंतं, पासई समणसंजयं । तवनियमसंजमधरं, सीलड्ढं गुणआगरं ॥ ५ ॥

अर्थ—(अह) ते वखते (तत्थ) त्यां त्रिकादिक मार्गने विषे (अइच्छंतं) गमन करता, (तवनियमसंजमधरं) उपवासादि तप, द्रव्यादिकना अभिग्रहरूप नियम अने सतर प्रकारना संयमने धारण करनारा, तेथी करीने ज (सीलड्ढं) शीळ एटले अढार हजार शीलांगे करीने सहित, अने तेथी करीने ज (गुणआगरं) ज्ञानादिक गुणोनी खाणरूप एवा (समणसंजयं) संयत साधुने तेणे (पासई) जोया. ५.

तं देहइ मियापुत्ते, दिट्ठीए अणिमिसाए उ । कहिं मन्नेरिसं रूवं, दिट्ठपुव्वं मए पुरा ॥ ६ ॥

अर्थ—(मियापुत्ते) ते मृगापुत्र (अणिमिसाए उ) निमेष रहित एवी ज (दिट्ठीए) दृष्टिवडे (तं) ते मुनिने (देहइ) जोतो हवो. जोइने तेणे विचार कर्यो के (मन्ने) हुं मानुं छुं के (एरिसं) आवुं (रूवं) रूप (मए) में (पुरा) पूर्वे जन्ममां (कहिं) क्यांक (दिट्ठपुव्वं) प्रथम जोयेलुं छे ? एम विचारतां तेने हर्ष थयो. ६.

साहुस्स दरिसणे तस्स, अज्झवसाणम्मि सोहणे । मोहं गयस्स संतस्स, जाईसरणं समुप्पन्नं ॥७॥

अर्थ—(तस्स) ते (साहुस्स) साधुना (दरिसणे) दर्शन थये सते (सोहणे) शोभन एटले प्रशस्त एवा (अज्झवसाणम्मि) अध्यवसायने विषे एटले मनना परिणामने विषे अर्थात् क्षायोपशमिक भावने विषे वर्तता में आवुं रूप क्यां जोयुं छे ? एवुं चिंतवन करतां (मोहं) मूर्छाने (गयस्स संतस्स) पाम्या सता ते मृगापुत्रने (जाईसरणं) जातिस्मरण ज्ञान (समुप्पन्नं) उत्पन्न थयुं, एटले के प्रथम साधुनुं दर्शन थयुं, पछी मनना शुभ परिणाम थया, पछी ते संबंधी ऊहापोह करतां मूर्छा आवी अने ते मूर्छा वळी एटले जातिस्मरण ज्ञान थयुं. ७.

ते जातिस्मरण ज्ञान केवुं होय छे ? ते कहे छे.—

देवलोगचुओ संतो, माणुस्सं भवमागओ । सन्निनाणे समुप्पन्ने, जातिस्सरणं पुराणयं ॥ ८ ॥

अर्थ—(देवलोगचुओ संतो) हुं देवलोकथी चव्यो सतो (माणुस्सं) मनुष्य संबंधी (भवं) भवने विषे (आगओ) आव्यो छुं. ए प्रमाणे (सन्निनाणे) संज्ञीज्ञान एटले गर्भज पंचेंद्रियने थतुं ज्ञान ते (समुप्पन्ने) उत्पन्न थये सते (पुराणयं) पूर्वभवनुं (जातिस्सरणं) जातिस्मरण ज्ञान कहेवाय छे. ८.

जाईसरणे समुप्पन्ने, मिआपुत्ते महिड्ढिए । सरइ पोराणिअं जाइं, सामण्णं च पुराकडं ॥ ९ ॥

अर्थ—(जाईसरणे) जातिस्मरण ज्ञान (समुप्पन्ने) उत्पन्न थये सते (महिड्ढिए) महा ऋद्धिवाळो एटले राजलक्ष्मीवडे युक्त एवो (मियापुत्ते) मृगापुत्र (पोराणिअं) पूर्वनी (जाइं) जातिने–भवने (च) तथा (पुराकडं) पूर्व भवमां करेला–पाळेला (सामण्णं) चारित्रने (सरइ) स्मरण करतो हवो. ९.

त्यारपछी तेणे शुं कर्युं ? ते कहे छे.—

विसएसु अरज्जंतो, रज्जंतो संजमम्मि अ। अम्मापिअरं उवागम्म, इमं वयणमब्बवी ॥ १० ॥

अर्थ—(विसएसु) विषयोने विषे (अरज्जंतो) रागी नहीं थतो (अ) अने (संजमम्मि) संयमने विषे (रज्जंतो) रागी थतो एवो ते मृगापुत्र (अम्मापिअरं) माता पिता पासे (उवागम्म) आवीने (इमं) आ प्रमाणे (वयणं) वचन (अब्बवी) बोल्यो. १०.

जे वचन बोल्यो, ते कहे छे.—

सुआणि मे पंच महव्वयाणि, नरएसु दुक्खं च तिरिक्खजोणिसु ।
निव्विण्णकामो म्हि महण्णवाओ, अणुजाणह पव्वइस्सामि अम्मो ! ॥ ११ ॥

अर्थ—(मे) में (पंच) पांच (महव्वयाणि) महाव्रतो पूर्व भवमां (सुआणि) सांभळ्यां छे. तथा (नरएसु) नरकने विषे (दुक्खं) जे दुःख (च) अने (तिरिक्खजोणिसु) तिर्यंच योनिने विषे पण जे दुःख ते में सांभळ्युं छे

अथवा अनुभव्युं छे, तथा उपलक्षणथी देव अने मनुष्यने विषे जे दुःख छे ते पण में सांभळ्युं छे. तेथी करीने (महण्णवाओ) महार्णव थकी एटले संसाररूपी समुद्रथकी (निव्विण्णकामो) नाश पाम्यो छे अभिलाष जेनो एवो (म्हि) हुं थयो छुं. तो (अम्मो) हे माता ! (अणुजाणह) मने अनुज्ञा आपो. (पव्वइस्सामि) हुं प्रव्रज्या ग्रहण करीश. ११.

कदाच मातापिता भोग भोगववानुं कहेश एम धारी तेनो निषेध करवा कहे छे.—

अम्मताय ! मए भोगा, भुत्ता विसफलोवमा । पच्छा कडुअविवागा, अणुबंधदुहावहा ॥ १२ ॥

अर्थ—(अम्मताय) हे माता पिता ! (मए) में (विसफलोवमा) विषना फळनी उपमावाळा एटले विषना फळ जेवा (भोगा) कामभोगो पूर्वे (भुत्ता) भोगव्या छे. ते भोगो पहेलां भोगने समये मधुर लागे छे, परंतु (पच्छा) भोगव्या पछी (कडुअविवागा) कटुक विपाकवाळा एटले परिणामे कडवां फळ आपनारा छे, तथा (अणुबंधदुहावहा) निरंतर दुःखने वहन करनारा–आपनारा छे. १२.

इमं सरीरं अणिच्चं, असुइ असुइसंभवं । असासयावासमिणं, दुक्खकेसाण भायणं ॥ १३ ॥

अर्थ—हे माता पिता (इमं सरीरं) आ शरीर (अणिच्चं) अनित्य छे, (असुइ) अशुचि एटले अपवित्र छे, (असुइसंभवं) अपवित्र एवा शुक्र अने शोणितथी उत्पन्न थनारुं छे, (असासयावासं) अनित्य निवासवाळुं एटले तेमां जीवनो निवास पण अनित्य छे, तथा (इणं) आ शरीर (दुक्खकेसाण) दुःखना हेतुरूप जे क्लेशो एटले

ज्वरादिक रोगो तेमनुं अथवा दुःख एटले जन्म, जरा, मृत्यु विगेरे अने क्लेशो एटले धनहानि, स्वजन-वियोग विगेरे, तेनुं (मानवं) भाजन एटले स्थान छे. १३

असासए सरीरम्मि, रइं नोवलभामि हं । पच्छा पुरा य चइअव्वे, फेणबुब्बुअसन्निभे ॥ १४ ॥

अर्थ—तेथी करीने हे माता पिता ! (पच्छा) भोग भोगव्या पछी (य) अथवा (पुरा) भोग भोगव्या पहेलां (चइअव्वे) त्याग करवा लायक तथा (फेणबुब्बुअसन्निभे) पाणीना फीणना परपोटा जेवा (असासए) अनित्य (सरीरम्मि) आ शरीरने विषे (हं) हुं (रइं) प्रीतिने (न उवलभामि) पामतो नथी. १४.

माणुसत्ते असारम्मि, वाहीरोगाणं आलए । जरामरणघत्थम्मि, खणं पि न रमामि हं ॥ १५ ॥

अर्थ—वळी हे माता पिता ! (वाहीरोगाण) व्याधि एटले अगाध पीडाना हेतुरूप कुष्ठादिक अने रोग एटले वात, पित्त अने कफथी उत्पन्न थता ज्वरादिक तेमना (आलए) स्थानरूप, तथा (जरामरणघत्थम्मि) जरा अने मरणवडे ग्रस्त-व्याप्त एवा आ (असारम्मि) सार रहित (माणुसत्ते) मनुष्य भवने विषे (खणं पि) क्षणवार पण (हं) हुं (न रमामि) आनंद पामतो नथी. १५.

जम्मं दुक्खं जरा दुक्खं, रोगा य मरणाणि अ । अहो दुक्खो हु संसारो, जत्थ कीसंति जंतुणो ॥१६॥

अर्थ—(जम्मं) जन्म थवो ते (दुक्खं) दुःख छे, (जरा) वृद्धावस्था थाय ते (दुक्खं) दुःख छे, (रोगा य)

रोगो, तथा (मरणाणि अ) मरण पण दुःख ज छे, (अहो) अहो ! (हु) निश्चे (संसारो) संसार ज (दुक्खो) दुःखरूप छे, के (जत्थ) जे संसारमां (जंतुणो) जंतुओ (कीसंति) क्लेश पामे छे. १६.

खित्तं वत्थुं हिरंण्णं च, पुत्तदारं च बंधवे । चइत्ता णं इमं देहं, गंतव्वमवसस्स मे ॥ १७ ॥

अर्थ—(खित्तं) क्षेत्रने, (वत्थुं) वास्तु एटले घर, हाट विगेरेने, (हिरण्णं च) सुवर्णने, तथा (पुत्तदारं च) पुत्र, स्त्री विगेरेने, तथा (बंधवे) भाइ, काका विगेरे बांधवोने, तथा (इमं) आ (देहं) देहने पण (चइत्ता णं) तजीने (अवसस्स) परवश एवा (मे) मारे (गंतव्वं) परभवने विषे जवानुं छे. १७.

जहा किंपागफलाणं, परिणामो न सुंदरो । एवं भुत्ताण भोगाणं, परिणामो न सुंदरो ॥ १८ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (किंपागफलाणं) किंपाकना फळखावानुं (परिणाम) परिणामो (न सुंदरो) सारुं नथी, (एवं) एज प्रमाणे (भुत्ताण) भोगव्या एवा (भोगाणं) कामभोगनुं (परिणामो) परिणाम पण (न सुंदरो) सारुं नथी. किंपाकना फळो जोवामां मनोहर होय छे अने खातां अति स्वादिष्ट लागे छे, तेज रीते विषयो पण जोवामां मनोहर अने भोगवतां पण सुखकारक लागे छे, परंतु परिणामे किंपाकना फळनी जेम मरण तथा नरकादिक गतिने आपे छे. १८.

आ प्रमाणे भोगादिकनी असारता कही. हवे बे दृष्टांतवडे पोतानो अभिप्राय प्रगट करे छे—

अद्धाणं जो महंतं तु, अपाहिज्जो पवज्जई । गच्छंतो सो दुही होइ, छुहातण्हाहिं पीडिए ॥ १९ ॥

अर्थ—(जो) जे मनुष्य (महंतं तु) मोटा—लांबा (अद्धाणं) मार्ग प्रत्ये (अपाहिज्जो) भाता विना (पवज्जई) गमन करे छे, अने तेवी रीते (गच्छंतो सो) जतो एवो ते (छुहातण्हाहिं) क्षुधा अने तृषावडे (पीडिए) पीडा पाम्यो सतो (दुही होइ) दुःखी थाय छे. १९.

एवं धम्मं अकाऊणं, जो गच्छइ परं भवं । गच्छंतो सो दुही होइ, वाहिरोगेहिं पीडिए ॥ २० ॥

अर्थ—(एवं) एज प्रमाणे एटले धर्मरूपी भाता विनाना मार्गे जता पुरुषनी जेम (जो) जे पुरुष (धम्मं) धर्मने (अकाऊणं) नहीं करीने (परं भवं) पर भव प्रत्ये (गच्छइ) जाय छे, तो (गच्छंतो) जतो एवो (सो) ते पुरुष (वाहिरोगेहिं) व्याधि अने रोगोवडे (पीडिए) पीडा पाम्यो सतो (दुही) दुःखी (होइ) थाय छे. २०.

अद्धाणं जो महंतं तु, सपाहिज्जो पवज्जइ । गच्छंतो सो सुही होइ, छुहातण्हाविवज्जिओ ॥ २१ ॥

अर्थ—(जो) जे पुरुष (महंतं तु) मोटा—लांबा एवा (अद्धाणं) मार्ग प्रत्ये (सपाहिज्जो) भाता सहित (पवज्जइ) गति करे छे, तो (गच्छंतो सो) जतो एवो ते (छुहातण्हाविवज्जिओ) क्षुधा अने तृषाथी रहित एवो सतो (सुही) सुखी (होइ) थाय छे. २१.

एवं धम्मं पि काऊणं, जो गच्छइ परं भवं । गच्छंतो सो सुही होइ, अप्पकम्मे अवेअणे ॥ २२ ॥

अर्थ—(एवं) एज प्रमाणे (धम्मं पि) धर्मने पण (काऊणं) करीने (जो) जे प्राणी (परं भवं) पर भव प्रत्ये

(गच्छइ) जाय छे, तो (गच्छंतो) जतो एवो (सो) ते प्राणी (अप्पकम्मे) कर्म रहित—अल्प अशुभ कर्मवाळो अने (अवेअणे) वेदना रहित एटले असातावेदनीय रहित थयो सतो (सुही होइ) सुखी थाय छे. २२.

जहा गेहे पलित्तम्मि, तस्स गेहस्स जो पहू । सारभंडाइं नीणेइ, असारं अवउज्झइ ॥ २३ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (गेहे) कोइ घर (पलित्तम्मि) अग्निवडे बळवा मांड्ये सते (तस्स) ते (गेहस्स) घरनो (जो) जे (पहू) स्वामी होय ते (सारभंडाइं) सारभूत एटले महा मूल्यवाळां भांडो एटले वस्त्राभरणादिक किंमती वस्तुओने (नीणेइ) बहार काढे छे, अने (असारं) असार एवा भांडोने (अवउज्झइ) तजी दे छे—जता करे छे. २३.

एवं लोए पलित्तम्मि, जराए मरणेण य । अप्पाणं तारइस्सामि, तुब्भेहिं अणुमन्निओ ॥ २४ ॥

अर्थ—(एवं) ते ज प्रमाणे (लोए) आ लोक (जराए) जरावस्थावडे (य) तथा (मरणेण) मरणवडे (पलित्तम्मि) बळते सते एटले आकुळ व्याकुळ थये सते (तुब्भेहिं) तमारा वडे (अणुमन्निओ) आज्ञा अपायो एवो हुं (अप्पाणं) सारभूत मारा आत्माने (तारइस्सामि) तारीश एटले संसारमांथी बहार काढीश अने असार एवा कामभोगादिकनो त्याग करीश. तेथी मने तमे आज्ञा आपो. २४.

हवे वीश गाथावडे मातापिता जवाब आपे छे—

तं बिंतम्मापिअरो, सामण्णं पुत्त ! दुच्चरं । गुणाणं तु सहस्साइं, धारेअव्वाइं भिक्खुणो ॥ २५ ॥

अर्थ—हवे (अम्मापिअरो) माता पिता (तं) ते मृगापुत्रने (बिंति) कहेता हवा, के (पुत्त) हे पुत्र ! (सामण्णं) साधुधर्म (दुच्चरं) दुःखे आचरी शकाय तेवो छे, केमके (गुणाणं तु) गुणोना (सहस्साइं) सहस्रोने—हजारो गुणोने (भिक्खुणो) भिक्षुए (धारेअव्वाइं) धारण करवाना छे. २५.

समया सव्वभूएसु, सत्तुमित्तेसु वा जगे । पाणाइवायविरई, जावज्जीवाइ दुक्करं ॥ २६ ॥

अर्थ—हे पुत्र ! (सव्वभूएसु) सर्व जीवोने विषे (वा) अथवा (जगे) जगतमां (सत्तुमित्तेसु) शत्रु अने मित्र उपर (समया) समता धारण करवानी छे, तथा (जावज्जीवाए) जावजीव पर्यंत (पाणाइवाइविरई) प्राणातिपात—जीव-हिंसानी विरति धारण करवानी छे, ते (दुक्करं) अति दुष्कर छे. २६.

निच्चकालऽप्पमत्तेणं, मुसावायविवज्जणं । भासिअव्वं हिअं सच्चं, निच्चाउत्तेण दुक्करं ॥ २७ ॥

अर्थ—वळी हे पुत्र ! (निच्चकालऽप्पमत्तेणं) निरंतर अप्रमत्तपणे (मुसावायविवज्जणं) मृषावादनुं पण वर्जन करवानुं छे, तथा (हिअं) जीवोने हितकारक एवुं (सच्चं) सत्यवचन ज (भासिअव्वं) बोलवानुं छे, तथा (निच्चाउत्तेण) निरंतर आयुक्तपणाए करीने एटले तेवा सत्यताना उपयोगे करीने सहित रहेवानुं छे, ते (दुक्करं) दुष्कर छे. २७.

दंतसोहणमाइस्स, अदिण्णस्स विवज्जणं । अणवज्जेसणिज्जस्स, गिण्हणा अवि दुक्करं ॥ २८ ॥

अर्थ—हे पुत्र ! (दंतसोहणमाइस्स) दांतने शोधवानी—खोतरवानी सळी विगेरे (अदिण्णस्स) अदत्त वस्तुने (विव-

अणां) वर्जवानी छे. तृणनी सळी जेवी चीज पण कोइना दीधा विना ग्रहण करवानी नथी. तथा (अणवज्जेसणिज्जस्स) दीधेली वस्तुमां पण निर्दोष अने एषणीय वस्तुनुं ज (गिण्हणा) ग्रहण करवानुं छे. (अवि) ते पण (दुक्करं) दुष्कर छे. २८.

विरई अबंभचेरस्स, कामभोगरसण्णुणा । उग्गं महव्वयं बंभं, धारेअव्वं सुदुक्करं ॥ २९ ॥

अर्थ—हे पुत्र ! (कामभोगरसण्णुणा) कामभोगना रसने जाणनार एवा तारे (अबंभचेरस्स) अब्रह्मचर्यनी एटले मैथुननी (विरई) विरति करवी ते अति दुष्कर छे, तथा (उग्गं) उग्र एवुं (बंभं) ब्रह्मचर्यरूप (महव्वयं) महाव्रत (धारेअव्वं) धारण करवानुं छे, ते (सुदुक्करं) अति दुष्कर छे. २९.

धणधन्नपेसवग्गेसु, परिग्गहविवज्जणा । सव्वारंभपरिच्चाओ, निम्ममत्तं सुदुक्करं ॥ ३० ॥

अर्थ—(धणधन्नपेसवग्गेसु) धन, धान्य अने नोकरवर्गने विषे (परिग्गहविवज्जणा) परिग्रहनो एटले ए सर्वनो त्याग करवानो छे, तथा (सव्वारंभपरिच्चाओ) सर्व प्रकारना आरंभनो त्याग करवानो छे, तथा (निम्ममत्तं) ममता रहित-पणे रहेवानुं छे, ते सर्व (सुदुक्करं) अति दुष्कर छे. ३०.

चउव्विहे वि आहारे, राईभोअणवज्जणा । संनिहिसंचओ चेव, वज्जेअव्वो सुदुक्करं ॥ ३१ ॥

अर्थ—हे पुत्र ! वळी (चउव्विहे वि) चारे प्रकारना (आहारे) आहारने विषे (राईभोअणवज्जणा) रात्रिभोजननुं वर्जन करवानुं छे, (चेव) तथा (संनिहिसंचओ) घी, गोळ विगेरे उचित काळथी वधारे वखत राखवा, ते संनिधि कहे-

वाय छे, तेनो संचय एटले संग्रह (वज्जेअव्वो) वर्जवानो छे एटले पासे एवी कोइ चीज राखी शकाती नथी, ते पण (सुदुकरं) अति दुष्कर छे. ३१.

आ प्रमाणे छ व्रतनी दुष्करता कही. हवे परीषहोनी दुष्करता कहे छे.—

छुहा तण्हा य सीउण्हं, दंसमसगवेअणा । अक्कोसा दुक्खसिज्जा य, तणफासा जल्लमेव य ॥ ३२ ॥

अर्थ—वळी हे पुत्र ! (छुहा) क्षुधा, (तण्हा य) तृषा, तथा (सीउण्हं) शीत, उष्ण, (दंसमसगवेअणा) दंश अने मच्छरनी वेदना सहन करवानी छे, तथा (अक्कोसा) आक्रोश एटले बीजानां दुर्वचनो (दुक्खसिज्जा य) दुःखशय्या एटले उपाश्रयनुं दुःख, तथा (तणफासा) संथाराने विषे तृणना स्पर्शनुं दुःख, (य) अने (जल्लमेव) मळनो परीषह, ए सर्व सहन करवानुं छे. ते अति दुष्कर छे. ३२.

तालणा तज्जणा चेवं, वहबंधपरीसहा । दुक्खं भिक्खायरिया, जायणा य अलाभया ॥ ३३ ॥

अर्थ—(तालणा) हस्तादिवडे कोइ ताडन करे तो ते सहन करवानुं छे, (तज्जणा) आंगळी आदिक वडे तर्जना करे तो ते सहन करवानी छे, (चेव) तथा (वहबंधपरीसहा) वध एटले यष्टि विगेरेना मार अने दोरडा आदिकना बंधनरूप परीषहो सहन करवाना छे, ते दुष्कर छे, वळी (भिक्खायरिया) भिक्षाचर्या करवी ते पण (दुक्खं) दुःखरूप छे तथा (जायणा य) याचना करवी अने तेमां पण (अलाभया) लाभ न थाय ते सहन करवुं अति दुष्कर छे. ३३.

कावोआ जा इमा वित्ती, केसलोओ अ दारुणो । दुक्खं बंभव्वयं घोरं धारेउं अ महप्पणा ॥३४॥

अर्थ—वळी हे पुत्र ! साधु धर्मने विषे (जा) जे (इमा) आ (कावोआ) कपोत संबंधी (वित्ती) वृत्ति छे, ते अति दुष्कर छे. जेम कपोत एटले पारेवा निरंतर शंका सहित ज भक्ष्य ग्रहण करवामां प्रवर्ते छे, अने खाधा पछी कांइ पण साथे राखता नथी, ते ज प्रमाणे साधुओ पण आहारना दोषनी शंकावाळा सदा ज आहार ग्रहण करवा प्रवर्ते छे, अने आहार कर्या पछी कांइ पण संचय करता नथी–राखी मूकता नथी ते (अ) तथा साधुने (केसलोओ) केशनो लोच करवो पडे छे ते (दारुणो) भयंकर छे, (अ) तथा (महप्पणा) महात्मा एटले उत्तम साधुए (घोरं) अल्प सत्त्ववाळाने भयंकर एवुं (बंभव्वयं) ब्रह्मचर्यव्रत (धारेउं) धारण करवुं ते पण (दुक्खं) अति दुःखरूप छे. उपर २६ मी गाथामां ब्रह्मव्रतने दुष्कर कह्युं हतुं अने अहीं फरीथी तेने ज दुष्कर कह्युं ते तेनुं अति दुष्करपणुं जणाववा कह्युं छे. ३४.

हवे ते व्रतादिकनी दुष्करतानो उपसंहार करे छे–समाप्त करे छे.—

सुहोइओ तुमं पुत्ता !, सुकुमालो अ सुमज्जिओ । न हु सि पहू तुमं पुत्ता !, सामण्णमणुपालिआ ।३५।

अर्थ—(पुत्ता) हे पुत्र ! (तुमं) तुं (सुहोइओ) सुखने उचित छे–सुखनो भोक्ता छे. (सुकुमालो) अति सुकुमाल छे (अ) तथा (सुमज्जिओ) सारी रीते अभ्यंगनादि पूर्वक स्नान करनारो छे, तथा उपलक्षणथी सर्व अलंकारवडे अलंकृत रहेनारो छे, तेथी (पुत्ता) हे पुत्र ! (तुमं) तुं (सामण्णं) चारित्रने (अणुपालिआ) पाळवाने (हु) निश्चे (पहू) समर्थ (न सि) नथी. ३५.

असमर्थपणाने ज दृष्टांतवडे सिद्ध करे छे.—

जावज्जीवमविस्सामो, गुणाणं तु महब्भरो। गरुओ लोहभारु व्व, जो पुत्ता! होई दुव्वहो ॥३६॥

अर्थ—(पुत्ता) हे पुत्र! (जो) जे (गुणाणं तु) चारित्रना मूळ अने उत्तर गुणोनो (महब्भरो) मोटो भार छे, ते (लोहभारु व्व) लोढाना भारनी जेम (गरुओ) मोटो-अत्यंत (दुव्वहो होइ) दुर्वह छे-वहन करवो अशक्य छे, केमके ते गुणोनो भार (जावज्जीवं) जावजीव पर्यंत (अविस्सामो) विश्रांति रहित छे. जो कदाच बीजो कोइ भार वहन न करी शकाय तो ते कोइ ठेकाणे नीचे उतारी वीसामो लइ शकाय छे. परंतु चारित्रना गुणनो भार तो कदी पण उतारातो नथी. ते तो जीवित पर्यंत वहन करवानो ज छे. ३६.

आगासे गंगसोउ व्व, पडिसोउ व्व दुत्तरो। बाहाहिं सागरो चेव, तरिअव्वो गुणोदही ॥३७॥

अर्थ—(आगासे) आकाशमां रहेली (गंगसोउ व्व) गंगा नदीनो प्रवाह जेम दुस्तर छे-दुःखे तरी शकाय तेवो छे तथा (पडिसोउ व्व) बीजी नदीओनो प्रतिश्रोत एटले सामो प्रवाह-सामे पूरे तरवुं ते जेम (दुत्तरो) दुस्तर होय छे, (चेव) तथा (बाहाहिं) बे हाथवडे (सागरो) समुद्र तरवो दुष्कर छे, तेम (गुणोदही) ज्ञानादिक गुणोनो समुद्र (तरिअव्वो) तरवानो छे एटले ते तरवो अति दुष्कर छे. ३७.

वालुआकवले चेव निरस्साए उ संजमे। असिधारागमणं चेव, दुक्करं चरिउं तवो ॥३८॥

अर्थ—(चेव*) जेम (वालुआकवले) वेळुना कोळीया नीरस छे, तेम (संजमे) संयम (निरस्साए उ) नीरस–स्वाद रहित छे. (चेव) तथा जेम (असिधारागमणं) खड्गनी धारपर गमन करवुं दुष्कर छे, तेम (तवो) चारित्ररूपी तप (चरिउं) आचरवुं, ते (दुक्करं) दुष्कर छे. ३८.

अही वेगंतदिट्ठीए, चरित्ते पुत्त! दुच्चरे। जवा लोहमया चेव, चावेयव्वा सुदुक्करं ॥३९॥

अर्थ—(पुत्त) हे पुत्र ! (दुच्चरे) दुःखे करीने आचरी शकाय तेवा (चरित्ते) चारित्रमार्गने विषे (अही व) सर्पनी जेम (एगंतदिट्ठीए) एकांत–निश्चय दृष्टिवडे चालवानुं छे, जेम सर्प एकाग्र दृष्टिए चाल्यो जाय छे, आडुं अवळुं जोतो नथी, तेम साधुए पण मोक्ष प्रत्ये ज एकाग्र दृष्टि राखीने चारित्रमार्गमां चालवानुं छे, तेथी ते चारित्रमार्ग दुःखे करीने आचरी शकाय तेवो छे. (चेव) तथा जेम (लोहमया) लोहमय एटले लोढाना (जवा) जव (चावेयव्वा) चाववा ते (सुदुक्करं) अति दुष्कर छे, तेम चारित्र पण पाळवुं ते अति दुष्कर छे. ३९.

जहा अग्गिसिहा दित्ता, पाउं होइ सुदुक्करं। तह दुक्करं करेउं जे, तारुण्णे समणत्तणं ॥ ४० ॥

अर्थ—(जहा) जेम (दित्ता) देदीप्यमान एवी (अग्गिसिहा) अग्निनी ज्वाळा (पाउं) पीवी ते (सुदुक्करं) अति दुष्कर (होइ) छे, (तह) तेम (तारुण्णे) युवावस्थामां (समणत्तणं) चारित्र (करेउं) पाळवुं ते (दुक्करं) अति दुष्कर छे. (जे) ' जे ' शब्द पादपूर्ति माटे छे. ४०.

---

* ' च ' पादपूर्त्ति माटे छे, अने ' इव ' उपमाना अर्थमां छे. ए ज रीते सर्वत्र जाणवुं.

जहा दुक्खं भरेउं जे, होई वायस्स कुत्थलो। तहा दुक्करं करेउं जे, कीवेणं समणत्तणं ॥ ४१ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (कुत्थलो) वस्त्रनो कोथळो (वायस्स) वायुथी (भरेउं) भरवो ते (दुक्खं) दुःखरूप एटले दुष्कर (होइ जे) छे, (तहा) तेम (कीवेणं) सत्त्व रहित प्राणीए (समणत्तणं) चारित्र (करेउं) पाळवुं ते (दुक्करं जे) दुष्कर छे. ४१.

जहा तुलाए तोलेउं, दुक्करं मंदरो गिरी । तहा निहुअनीसंकं, दुक्करं समणत्तणं ॥ ४२ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (मंदरो) मेरु (गिरी) पर्वत (तुलाए) त्राजवावडे (तोलेउं) तोळवो ते (दुक्करं) दुष्कर छे, (तहा) तेम (समणत्तणं) श्रमणपणुं एटले चारित्र शरीरवडे पाळवुं (निहुअनीसंकं) निश्चळपणे अने निःशंकपणे (दुक्करं) दुष्कर छे. ४२.

जहा भुजाहिं तरिउं, दुक्करं रयणायरो । तहा अणुवसंतेणं, दुक्करं दमसायरो ॥ ४३ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (रयणायरो) रत्नाकर एटले समुद्र (भुजाहिं) बे भुजावडे (तरिउं) तरवो (दुक्करं) दुष्कर छे, (तहा) तेम (अणुवसंतेणं) अनुपशांत एटले उपशमने नहीं पामेला अर्थात् कषायवाळा पुरुषे (दमसायरो) दम एटले चारित्ररूपी सागर तरवो (दुक्करं) दुष्कर छे. ४३.

भुंज माणुस्सए भोए, पंचलक्खणए तुमं । भुत्तभोगी तओ जाया ! पच्छा धम्मं चरिस्ससि ॥४४॥

अर्थ—तेथी करीने (जाया) हे पुत्र ! (तुमं) तुं (माणुस्सए) मनुष्य संबंधी (पंचलक्खणए) पांच प्रकारना (भोए) भोगोने (भुंज) भोगव, (तओ पच्छा) त्यारपछी (भुत्तभोगी) भोगव्या छे भोग जेणे एवो थइने एटले भोग भोगवीने (धम्मं) चारित्र धर्मनुं (चरिस्ससि) आचरण करजे. ४४.

आ प्रमाणे मातापिताए कह्युं त्यारे मृगापुत्रे तेमने जे कह्युं ते एकत्रीश गाथावडे कहे छे.—

सो बिंतम्मापिअरो !, एवमेअं जहाफुडं । इह लोए निप्पिवासस्स, नत्थि किंचि वि दुक्करं ॥ ४५ ॥

अर्थ—(सो) ते मृगापुत्र (बिंति) कहे छे के (अम्मापिअरो) हे मातापिता ! (एवमेअं) ए एमज छे, जेम तमे कहो छो ते तेमज छे (जहाफुडं) प्रगटपणे प्रव्रज्या दुष्कर छे ए वात सत्य छे. परंतु (इह लोए) आ लोकने विषे (निप्पिवासस्स) तृष्णा रहित एटले निःस्पृह एवा पुरुषने (किंचि वि) कांइपण (दुक्करं) दुष्कर (नत्थि) नथी. कह्युं छे के—"निःस्पृहस्य तृणं जगत्" निस्पृहने आखुं जगत तृण समान छे. जे स्पृहावाळो होय तेने परिग्रहनो त्याग करवो दुष्कर छे, परंतु निःस्पृहने तो साधुधर्म सुकर ज छे. हुं निःस्पृह छुं तेथी मारे साधुधर्म पाळवो सुकर छे. ४५.

निःस्पृह थवानुं कारण कहे छे.—

सारीरमाणसा चेव, वेअणाओ अणंतसो । मए सोढाओ भीमाओ, असइं दुक्खभयाणि अ ॥ ४६ ॥

अर्थ—हे माता पिता ! (मए) में (अणंतसो) अनंतवार (चेव) निश्चे (सारीरमाणसा) शरीर अने मन

संबंधी (भीमाओ) भयंकर (वेअणाओ) वेदनाओ (य) तथा (असइं) वारंवार (दुक्खभयाणि) दुःखने उत्पन्न करनारां भयो अथवा दुःख अने भयो (सोढाओ) सहन कर्यां छे. ४६.

जरामरणकंतारे, चाउरंते भयागरे । मए सोढाणि भीमाणि, जम्माणि मरणाणि अ ॥ ४७ ॥

अर्थ—(जरामरणकंतारे) जरा अने मरणरूपी गाढ अरण्यवाळा, तथा (चाउरंते) देव, मनुष्य, तिर्यंच अने नरक ए चार अवयववाळा, तथा (भयागरे) भयनी खाणरूप आ संसारने विषे (मए) में (भीमाणि) भयंकर एवा (जम्माणि) जन्मो (अ) अने (मरणाणि) मरणो (सोढाणि) सहन कर्यां छे. ४७.

जहा इहं अगणी उण्हो, एत्तोऽणंतगुणा तहिं। नरएसु वेअणा उण्हा, असाया वेइआ मए ॥४८॥

अर्थ—(इहं) आ मनुष्य लोकमां (जहा) जेवो (अगणी) अग्नि (उण्हो) उष्ण छे, (एत्तो) तेथी-ते करतां (तहिं) ते (नरएसु) नरकोने विषे (अणंतगुणा) अनंत गुणी (उण्हा) उष्ण (असाया) असाता-दुःख उपजावनारी (वेअणा) वेदना (मए) में (वेइआ) अनुभवी छे. नरकमां बादर अग्निनो अभाव छे, परंतु ते पृथ्वीनो स्पर्श ज तेवा प्रकारनो उष्ण छे. अर्थात् तेनी वेदना अग्निनी वेदना तुल्य छे. ४८.

जहा इहं इमं सीअं, एत्तोऽणंतगुणा तहिं । नरएसु वेअणा सीआ, असाया वेइआ मए ॥४९॥

अर्थ—(इहं) आ मनुष्य लोकमां (जहा) जेवुं (इमं) आ (सीअं) शीत छे, (एत्तो) तेनाथी पण (तहिं)

ते (नरएसु) नरकोमां (अणंतगुणा) अनंतगुणी (असाया) असाता–दुःख उपजावनारी (सीआ) शीत (वेअणा) वेदना (मए) में (वेइआ) अनुभवी छे. ४९.

कंदंतो कंदुकुंभीसु, उड्ढपाओ अहोसिरो । हुआसणे जलंतम्मि, पक्कपुव्वो अणंतसो ॥ ५० ॥

अर्थ—(कंदंतो) आक्रंद करतो, (उड्ढपाओ) उंचा पगवाळो अने (अहोसिरो) नीचे मस्तकवाळो एवो हुं (कंदुकुंभीसु) लोढानी कुंभीने विषे (जलंतम्मि) देदीप्यमान (हुआसणे) अग्निमां (अणंतसो) अनंतवार (पक्कपुव्वो) पूर्वे पकावायो हतो. ५०.

महादवग्गिसंकासे, मरुम्मि वइरवालुए । कलंबवालुआए अ, दड्ढपुव्वो अणंतसो ॥ ५१ ॥

अर्थ—(महादवग्गिसंकासे) महा दावानळनी जेवा तथा (मरुम्मि) मरुदेशनी रेती जेवा (वइरवालुए) वज्रवालुका नदीने कांठे (अ) अने (कलंबवालुआए) कलंबवालुका नदीने कांठे (अणंतसो) अनंतीवार (दड्ढपुव्वो) हुं पूर्वे नरकमां बळ्यो छुं–शेकायो छुं. ५१.

रसंतो कंदुकुंभीसु, उड्ढं बद्धो अबंधवो । करवत्तकरकयाईहिं, छिन्नपुव्वो अणंतसो ॥ ५२ ॥

अर्थ—हे माता पिता ! (रसंतो) आक्रंद करतो (अबंधवो) बंधु रहित एवो हुं (कंदुकुंभीसु) कंदुकुंभीने विषे (उड्ढं) उंचे वृक्षनी शाखामां (बद्धो) बंधायो सतो (करवत्तकरकयाईहिं) करवत अने क्रकच नामनी नानी करवत वडे

(अर्णंतसो) अनंतीवार (छिन्नपुव्वो) पूर्वे छेदायो छुं. हुं नाशी जइ न शकुं तेटला माटे मने उंचो बांधी कंदुकुंभीमां नांखी करवतवडे ज्ञाफकाथी जेम मने अनंतीवार छेद्यो छे-वेर्यो छे. ५२.

अइतिक्खकंटयाइण्णे, तुंगे सिंवलिपायवे । खेविअं पासबद्धेणं, कड्ढोकड्ढाहिं दुक्करं ॥ ५३ ॥

अर्थ—(अइतिक्खकंटयाइण्णे) अति तीक्ष्ण कांटाए करीने व्याप्त अने (तुंगे) उंचा एवा (सिंवलिपायवे) शंबलि-शाल्मलि वृक्ष उपर (पासबद्धेणं) पाशथी बंधायेला में (कड्ढोकड्ढाहिं) परमाधामीए करेला आकर्षण अने अपकर्षणवडे (दुक्करं) दुःखे सहन थइ शके तेवो (खेविअं) खेद अनुभव्यो छे एटले पूर्वे उपार्जन करेला कर्मनुं फळ भोगव्युं छे. ५३.

महाजंतेसु उच्छू व, आरसंतो सुभेरवं । पीलिओमि सकम्मेहिं, पावकम्मो अणंतसो ॥ ५४ ॥

अर्थ—(सुभेरवं) अत्यंत भयानक (आरसंतो) आक्रंद करतो अने (पावकम्मो) पाप कर्मवाळो हुं (सकम्मेहिं) मारा पोताना कर्मे करीने (अणंतसो) अनंतीवार (महाजंतेसु) महा यंत्रोने विषे (उच्छू व) शेरडीनी जेम (पीलिओमि) पीलायो छुं. ५४.

कूयंतो कोलसुणएहिं, सामेहिं सबलेहि अ । पाडिओ फालिओ छिन्नो, विप्फुरंतो अणेगसो ॥५५॥

अर्थ—(कूयंतो) आक्रंद करता एवा मने (कोलसुणएहिं) भुंड अने कुतराना रूपने धारण करता (सामेहिं)

श्याम नामना (अ) तथा (सबलेहिं) शबल नामना परमाधामीओए (अणेगसो) अनेकवार (पाडिओ) पृथ्वीपर पाडी नांख्यो छे, तथा (फालिओ) जीर्ण वस्त्रनी जेम फाड्यो छे अने (विप्फुरंतो) तडफडता एवा मने (छिन्नो) अनेकवार छेद्यो भेद्यो छे. ५५.

असीहिं अयसिवण्णाहिं, भल्लीहिं पट्टिसेहि अ। छिन्नो भिन्नो विभिन्नो अ, उववण्णो पावकम्मुणा ॥५६॥

अर्थ—(पावकम्मुणा) पापकर्मे करीने (उववन्नो) नरकमां उत्पन्न थएलो हुं (अयसिवण्णाहिं) अतसीपुष्पनी जेवा श्याम वर्णवाळा (असीहिं) खड्गोवडे, तथा (भल्लीहिं) भालाओवडे (अ) तथा (पट्टिसेहिं) पट्टिश नामना शस्त्रवडे अनेकवार (छिन्नो) छेदायो छुं, तथा (भिन्नो) भेदायो छुं, (अ) अने (विभिन्नो) विशेष भेदायो छुं एटले सूक्ष्म ककडा करायो छुं. ५६.

अवसो लोहरहे जुत्तो, जलंते समिलाजुए। चोइओ तोत्तजोत्तेहिं, रोज्झो वा जह पाडिओ ॥ ५७ ॥

अर्थ—कोइ वखत परमाधामीए (जलंते) अग्निवडे जाज्वल्यमान अने (समिलाजुए) धुसरी अने जोतरे करीने सहित एवा (लोहरहे) लोढाना रथने विषे (अवसो) पराधीन एवा मने (जुत्तो) जोड्यो छे. पछी (तोत्तजोत्तेहिं) परोणा अने राशवडे—नासिकाए बांधेला दोरडावडे (चोइओ) मने हांकवामां आव्यो छे अने पछी (रोज्झो वा) रोझ नामना पशुनी (जह) जेम (पाडिओ) मने पाडी दीधो छे एटले लाकडी विगेरेथी कुटीने मने पृथ्वीपर पाडी दीधो छे. ५७.

हुआसणे जलंतम्मि, चिआसु महिसो विव । दड्ढो पक्को अ अवसो, पावकम्मेहिं पाविओ ॥५८॥

अर्थ—हे मातापिता ! (पावकम्मेहिं) पाप कर्मे करीने (पाविओ) व्याप्त अथवा नरकने पामेला एवा अने (अवसो) पराधीन एवा मने (चिआसु) परमाधामीए रचेली चिताने विषे (महिसो विव) पाडानी जेम (जलंतम्मि) जाज्वल्यमान एवा (हुआसणे) अग्निमां (दड्ढो) बाळवामां आव्यो छे. (अ) अने (पक्को) रांधवामां आव्यो छे. ५८.

बला संडासतुंडेहिं, लोहतुंडेहिं पक्खिहिं । विलुत्तो विलवंतोऽहं, ढंकगिद्धेहिं ऽणंतसो ॥ ५९ ॥

अर्थ—(संडासतुंडेहिं) सांडसी जेवा मुखवाळा अने (लोहतुंडेहिं) लोढाना एटले वज्र जेवा मुखवाळा (ढंकगिद्धेहिं) परमाधामीए विकुर्वेला ढंक अने गीध (पक्खिहिं) पक्षीओए (विलवंतोऽहं) विलाप करता एवा मने (अणंतसो) अनंतीवार (बला) बळात्कारे (विलुत्तो) विविध प्रकारे छेद्यो छे. ५९.

तण्हाकिलंतो धावंतो, पत्तो वेअरणिं नइं । जलं पाहं ति चिंतंतो, खुरधाराहिं विवाइओ ॥६०॥

अर्थ—(तण्हाकिलंतो) तृषावडे व्याप्त थयेलो हुं (धावंतो) दोडतो दोडतो (वेअरणिं) वैतरणी (नइं) नदीए (पत्तो) गयो. त्यां (जलं) जळने (पाहं) हुं पीउं (ति) एम (चिंतंतो) विचार करतो हतो तेटलामां (खुरधाराहिं) क्षुरनी धारावडे (विवाइओ) हुं हणायो. वैतरणी नदीना जळना तरंगो क्षुरनी धारा जेवा छे तेथी पाणी पीवानो विचार करतां ज हुं तेनाथी छेदायो. ६०.

उण्हाभितत्तो संपत्तो, असिपत्तं महावणं । असिपत्तेहिं पडंतेहिं, छिन्नपुव्वो अणेगसो ॥ ६१ ॥

अर्थ—(उण्हाभितत्तो) वज्रवालुकादिकना तापथी तपेलो एवो हुं (असिपत्तं) खड्ग जेवा पत्रवाळा वृक्षो होवाथी असिपत्र नामना (महावणं) महा वनमां (संपत्तो) आकाशे मार्गे प्राप्त थयो–गयो, तो त्यां वृक्षोपरथी (पडंतेहिं) पडतां एवां (असिपत्तेहिं) खड्ग जेवां तीक्ष्ण धारवाळां पांदडांओवडे (अणेगसो) अनेक वार (छिन्नपुव्वो) पूर्वे छेदायो छुं. ६१.

मुग्गरेहिं मुसंढीहिं, सूलेहिं मुसलेहि अ । गयासं भग्गगत्तेहिं, पत्तं दुक्खमणंतसो ॥ ६२ ॥

अर्थ—(भग्गगत्तेहिं) गात्रने एटले शरीरने भांगी नाखनारा (मुग्गरेहिं) मुद्गरवडे, तथा (मुसंढीहिं)मुसंढी नामना शस्त्रवडे, तथा (सूलेहिं) त्रिशूलवडे, (अ) तथा (मुसलेहि) मुशळवडे (गयासं) रक्षणनी आशा रहितपणे में (अणंतसो) अनंतीवार (दुक्खं) दुःख (पत्तं) प्राप्त कर्युं छे. ६२.

खुरेहिं तिक्खधाराहिं, छुरिआहिं कप्पणीहि अ । कप्पिओ फालिओ छिन्नो, उक्कित्तो अ अणेगसो ॥६३॥

अर्थ––(तिक्खधाराहिं) तीक्ष्ण धारवाळा (खुरेहिं) क्षुर नामना मस्तक मुंडवाना शस्त्रवडे, तथा (छुरिआहिं) छुरिकावडे, (अ) तथा (कप्पणीहि) कातरवडे (अणेगसो) अनेक वार (कप्पिओ) हुं कपायो छुं, तथा (फालिओ) वस्त्रनी जेम फडायो छुं, तथा (छिन्नो) छेदायो छुं, (अ) तथा (उक्कित्तो) चामडी दूर करवा वडे उतरडायो छुं. ६३.

पासेहिं कूडजालेहिं, मिओ वा अवसो अहं । वाहिओ बद्धरुद्धो अ, बहुसो चेव विवाइओ ॥६४॥

अर्थ—हे माता पिता! (मिओ वा) मृगनी जेम (अवसो) पराधीन एवो (अहं) हुं (पासेहिं) पाशवडे तथा (कूडजालेहिं) कूट एटले कपटयुक्त जाळवडे (बहुसो) घणीवार (वाहिओ) ठगायो छुं, (बद्धरुद्धो अ) तथा बंधनवडे बंधायो छुं अने बहार जइ न शकुं तेम रुंधायो छुं (चेव) तथा (विवाइओ) विनाश करायो छुं. ६४.

गलेहिं मगरजालेहिं, मच्छो वा अवसो अहं। उल्लिओ फालिओ गहिओ, मारिओ अ अणंतसो॥६५॥

अर्थ—(अवसो) पराधीन एवो (अहं) हुं (मच्छो वा) मत्स्यनी जेम (गलेहिं) बडिशवडे एटले मत्स्यना गळाने वींधे तेवी मांस युक्त सोयवडे, तथा (मगरजालेहिं) मगरादिकने पकडवानी जाळवडे अने तेमज करेली तेने पकडवानी जाळवडे (अणंतसो) अनंती वार (उल्लिओ) विंधायो छुं, (फालिओ) लाकडानी जेम चीरायो छुं, (गहिओ) ग्रहण करायो छुं अने (मारिओ अ) मरायो—कुटायो छुं. ६५.

विदंसएहिं जालेहिं, लिप्पाहिं सउणो विव। गहिओ लग्गो अ बद्धो अ, मारिओ अ अणंतसो।६६।

अर्थ—(सउणो विव) पक्षीनी जेम हुं (विदंसएहिं) विशेषे करीने दंश करनारा श्येनादिक पक्षीओवडे, तथा (जालेहिं) जाळवडे, तथा (लिप्पाहिं) वज्रलेपादिक लेपवडे अनुक्रमे (अणंतसो) अनंतीवार (गहिओ) ग्रहण करायो छुं (लग्गो अ) तथा लेप वडे आश्लेष करायो छुं (बद्धो अ) तथा जाळवडे बंधायो छुं अने (मारिओ अ) सर्ववडे मरायो छुं. ६६.

कुहाडपरसुमाईहिं, वड्ढइहिं दुमो विव। कुट्टिओ फालिओ छिन्नो, तच्छिओ अ अणंतसो॥६७॥

अर्थ—(दुमो विव) वृक्षनी जेम हुं (कुहाडपरसुमाईहिं) कुहाडा अने परशु विगेरे वडे, (वड्ढइहिं) परमाधामीए विकुर्वेला सुथारोथी (अणंतसो) अनंतीवार (कुट्टिओ) कुटायो एटले सूक्ष्म ककडा करायो छुं (फालिओ) फडायो छुं (छिन्नो) छेदायो छुं (तच्छिओ अ) तथा छोलायो छुं. ६७.

चवेडमुट्ठिमाईहिं, कुमारेहिं अयं पि व। ताडिओ कुट्टिओ भिन्नो, चुण्णिओ अ अणंतसो ॥६८॥

अर्थ—(कुमारेहिं) लुहारोए घण विगेरेवडे (अयं पि व) लोढाने कुटे तेम मने परमाधामीओए (चवेडमुट्ठिमाईहिं) चपेटा एटले लात अने मुठी विगेरेवडे (अणंतसो) अनंतीवार (ताडिओ) ताडना करी छे (कुट्टिओ) कुट्यो छे (भिन्नो) भेद्यो छे (चुण्णिओ अ) तथा चूर्णरूप कर्यो छे. ६८.

तत्ताइं तंबलोहाइं, तउआणि सीसगाणि अ। पाइओ कलकलंताइं, आरसंतो सुभेरवं ॥ ६९ ॥

अर्थ—(सुभेरवं) अति भयंकर (आरसंतो) आक्रंद करता एवा मने परमाधामीओए विकुर्वेला (तत्ताइं) तपावेला अने (कलकलंताइं) कलकल शब्द करता एटले अत्यंत उकाळेला—खदखदता (तंबलोहाइं) तांबा, लोढा (तउआणि) कथीर (सीसगाणि अ) अने सीसानो रस (पाइओ) अनेकवार पायो छे. ६९.

तुहं पिआइं मंसाइं, खंडाइं सोल्लगाणि अ। खाइओमि समंसाइं, अग्गिवण्णाइं णेगसो ॥ ७० ॥

अर्थ—"(तुहं) तने (मंसाइं) मांस (पिआइं) बहु प्रिय हतुं," ए प्रमाणे मने परमाधामीए पूर्वभवनुं स्मरण

करावीने पछी (समंसाइं) मारा पोताना ज मांसने (खंडाइं) ककडारूप करी (सोल्लगाणि अ) शेकी तथा (अग्गिवण्णाइं) अग्निनी जेवा वर्णवाळुं करी (णेगसो) अनेकवार (खाइओमि) मने खवराव्युं छे. ७०.

तुहं पिआ सुरा सीहू, मेरओ अ महूणि अ । *पाइओमि जलंतीओ, वसाओ रुहिराणि अ ॥७१॥

अर्थ—" (तुहं) तने (सुरा) सुरा–चंद्रहास नामनी मदिरा, तथा (सीहू) सीधु–ताड वृक्षथी बनेली मदिरा –ताडी तथा (मेरओ अ) मेरक–लोटनी बनेली मदिरा, तथा (महूणि अ) मधु–पुष्पनी बनेली मदिरा (पिआ) पूर्वभवमां बहु प्रिय हती. " ए प्रमाणे स्मरण करावीने मने परमाधामीओए (जलंतीओ) जाज्वल्यमान एटले तपावेली (वसाओ) मारी पोतानी ज चरबी (रुहिराणि अ) तथा रुधिर (पाइओमि) पायां छे. ७१.

निच्चं भीएण तत्थेणं, दुहिएणं वहिएण य । परमा दुहसंबद्धा, वेअणा वेइआ मए ॥ ७२ ॥

अर्थ—हे माता पिता ! (निच्चं) निरंतर (भीएण) भय पामेला, (तत्थेणं) त्रास पामेला, (दुहिएणं) दुःखी थयेला (वहिएण य) तथा व्यथा पामेला एटले सर्व अंगे कंपता एवा (मए) में नरकने विषे (दुहसंबद्धा) दुःखना संबंधवाळी (परमा) उत्कृष्ट (वेअणा) वेदना (वेइआ) वेदी छे–अनुभवी छे. ७२.

तिव्वचंडप्पगाढाओ, घोराओ अइदुस्सहा । महाभयाओ भीमाओ, नरएसु वेइआ मए ॥ ७३ ॥

* ' पज्जिओमि ' इत्यपि पाठः

अर्थ—हे मातापिता ! (मए) में (नरएसुं) नरकने विषे (तिव्वचंडप्पगाढाओ) तीव्र—अधिक रसवाळी, चंड—कही न शकाय तेवी उत्कट, प्रगाढ—घणी स्थितिवाळी, (घोराओ) घोर—जे सांभळवाथी पण शरीर कंपे तेवी भय आपनारी, (अइदुस्सहा) अत्यंत दुःसह, तेथी करीने ज (महाभयाओ) महा भय आपनारी तथा (भीमाओ) भीम—सांभळी थकी पण भय आपनारी एवी वेदनाओ अनेकवार (वेइआ) वेदी छे—अनुभवी छे. आ तीव्र विगेरे सर्व विशेषणो नरकनी वेदनानी कर्कशता सूचवनारा एक ज अर्थवाळा छे. ७३.

वळी ते तीव्रादिक वेदना केवी छे ? ते कहे छे—

जारिसा माणुसे लोए, ताया ! दीसंति वेअणा । एत्तो अणंतगुणिआ, नरएसुं दुक्खवेअणा ॥७४॥

अर्थ—(ताया) हे पिता ! (माणुसे लोए) आ मनुष्यलोकमां (जारिसा) जेवा प्रकारनी (वेअणा) शीतोष्णादि वेदना (दीसंति) जोवामां आवे छे, (एत्तो) तेनाथी (अणंतगुणिआ) अनंतगुणी (नरएसुं) नरकने विषे (दुक्खवेअणा) दुःखनी वेदनाओ छे. ७४.

केवळ नरकने विषे ज में दुःखवेदना अनुभवी छे एटलुंज नहीं, परंतु सर्व गतिने विषे पण अनुभवी छे. ते उपर कहे छे.

सव्वभवेसु असाया, वेअणा वेईआ मए । निमेसंतरमित्तं पि, जं साया नत्थि वेअणा ॥ ७५ ॥

अर्थ—हे मातापिता ! (मए) में (सव्वभवेसु) सर्व त्रस अने स्थावर भवोने विषे (असाया वेअणा) असाता

वेदना (वेयणा) अनुभवी छे. (जं) जे कारण माटे (निमेसंतरमित्तं पि) निमेषनुं आंतरुं पडे तेटलो वखत पण (साया) साता (वेयणा) वेदना (नत्थि) वेदीज नथी. विषयसंबंधी सुख पण इर्ष्यादिक अनेक दुःखोवडे व्याप्त होवाथी तथा परिणामे कडुक होवाथी दुःखरूप ज छे. आ आखा प्रकरणनो अभिप्राय ए छे जे—में आवा प्रकारनां दुःखो अनुभव्यां छे, तेथी हुं तत्त्वथी सुखने योग्य के सुकुमाळ केम होइ शकुं ? जेणे आवी वेदनाओ सहन करी छे, तेने दीक्षा दुष्कर शी रीते होय ? तेथी मारे दीक्षा ग्रहण करवी ए ज योग्य छे. ७५.

आ प्रमाणे कहीने मृगापुत्र मौन रह्या. ते वखते—

तं बिंतऽम्मापिअरो, छंदेणं पुत्त ! पव्वया । नवरं पुण सामण्णे, दुक्खं निप्पडिकम्मया ॥ ७६ ॥

अर्थ—(अम्मापिअरो) माता पिता (तं) ते मृगापुत्रने (बिंति) कहेता हवा, के (पुत्त) हे पुत्र ! (छंदेणं) तारी इच्छा प्रमाणे (पव्वया) तुं प्रव्रज्या ग्रहण कर. (पुण) परंतु (नवरं) विशेष कहेवानुं ए छे जे—(सामण्णे) चारित्रने विषे (निप्पडिकम्मया) निःप्रतिकर्मता एटले रोगादिक उत्पन्न थया छतां पण तेनो प्रतिकार—औषधादिक उपाय करवानो नथी, ए (दुक्खं) अति दुःख छे. ७६.

आ प्रमाणे मातापिताए कह्युं, त्यारे—

सो बिंतऽम्मापिअरो !, एवमेअं जहाफुडं । परिकम्मं को कुणइ, अरण्णे मिअपक्खिणं ? ॥७७॥

अर्थ—(सो) ते मृगापुत्र (बिंति) कहे छे के—(अम्मापियरो) हे माता पिता ! (एवं) आ तमे कह्युं ते (एवं) ए ज प्रमाणे (जहाफुडं) सत्यज छे. परंतु (अरण्णे) अरण्यने विषे (मिअपक्खिणं) मृग एटले पशु अने पक्षीओना (परिकम्मं) प्रतिकारने एटले चिकित्साने (को कुणइ) कोण करे छे ? वनमां रहेता पशुपक्षीओ व्याधिथी पीडाय छे त्यारे तेमने कोइ पण चिकित्सा करतुं नथी. ७७.

तेथी करीने—

एगभूओ अरण्णे वा, जहा उ चरई मिगो। एवं धम्मं चरिस्सामि, संजमेण तवेण य ॥ ७८ ॥

अर्थ—(जहा उ) जेम (अरण्णे) अरण्यने विषे (मिगो) मृग (एगभूओ) एकलो स्वेच्छाए करीने (चरई) विचरे छे, (एवं) ए ज प्रमाणे हुं पण (संजमेण) सतर प्रकारना संयमवडे (तवेण य) तथा बार प्रकारना तपवडे (धम्मं) चारित्र धर्मनुं (चरिस्सामि) आचरण करतो विचरीश. ७८.

जया मिअस्स आयंको, महारण्णम्मि जायई। अच्छंतं रुक्खमूलम्मि, को णं ताहे तिगिच्छई ॥७९॥

अर्थ—(जया) ज्यारे (महारण्णम्मि) मोटा अरण्यमां (मिअस्स) मृगने (आयंको) आतंक-रोग (जायई) उत्पन्न थाय छे, (ताहे) त्यारे (रुक्खमूलम्मि) वृक्षना मूळने विषे (अच्छंतं) रहेला एवा तेने (को णं) कयो वैद्य (तिगिच्छई) चिकित्सा करे छे ? ७९.

को वा से ओसहं देइ ?, को वा से पुच्छई सुहं ?। को वा से भत्तपाणं च, आहरित्तु पणामए ? ।८०।

अर्थ—(वा) अथवा (को) कोण (से) तेने (ओसहं) औषध (देइ) आपे छे ? (वा) अथवा (को) कोण (से) तेने (सुहं) सुख साता (पुच्छई) पूछे छे ? (वा) अथवा (को) कोण (से) तेने (भत्तपाणं च) भात पाणी-आहार (आहरित्तु) लावीने (पणामए) आपे छे ? कोइ ज नहीं. ८०.

त्यारे तेनो निर्वाह शी रीते थतो हशे ? ते उपर कहे छे.—

जया य से सुही होइ, तया गच्छइ गोअरं । भत्तपाणस्स अट्ठाए, वल्लराणि सराणि अ ॥ ८१ ॥

अर्थ—(जया य)अने ज्यारे (से) ते मृग (सुही) सुखी एटले रोग रहित (होइ) होय छे–थाय छे, (तया) त्यारे (गोअरं) गायनी जेम चरवाने स्थाने (गच्छइ) जाय छे, अने त्यां (भत्तपाणस्स) भोजन पाणीने (अट्ठाए) अर्थे (वल्लराणि) लीला घासना स्थानोने (सराणि अ) तथा सरोवरोने शोधे छे. ८१.

खाइत्ता पाणिअं पाउं, वल्लरेहिं सरेहि अ । मिगचारिअं चरित्ता णं, गच्छई मिअचारिअं ॥ ८२ ॥

अर्थ—हे मातापिता ! ते व्याधि रहित मृग (मिगचारिअं) मृगनी चर्यावडे एटले मृगने खावा पीवानी विधिवडे (चरित्ता णं) चरीने (वल्लरेहिं) लीला घासना प्रदेशथी (सरेहि अ) तथा सरोवरथी (खाइत्ता) खाइने अने (पाणिअं पाउं) पाणी पीने (मिअचारिअं) मृगने विश्रांति लेवानी भूमि प्रत्ये (गच्छई) जाय छे. ८२.

आ प्रमाणे दृष्टांत कहीने हवे बे गाथावडे उपसंहार करे छे—

एवं समुट्ठिए भिक्खू, एवमेव अणेगगो। मिगचारिअं चरित्ता णं, उड्ढं पक्कमई दिसिं ॥ ८३ ॥

अर्थ—(एवं) ए ज प्रमाणे (समुट्ठिए) चारित्रनी क्रिया पाळवामां उद्यमवंत थयेलो एटले मृगनी जेम रोगनी उत्पत्ति सते पण चिकित्सा नहीं करनार तथा (एवमेव) ए ज प्रमाणे एटले मृगनी जेम (अणेगगो) अनेक ठेकाणे अनियमित रीते रहेनार (भिक्खू) साधु (मिगचारिअं) मृगना जेवी चर्याने (चरित्ता णं) आचरण करीने–पाळीने सर्व कर्मनो नाश करी (उड्ढं दिसिं) ऊर्ध्व दिशा प्रत्ये एटले मोक्ष प्रत्ये (पक्कमई) जाय छे. ८३.

मृगचर्याने ज स्पष्ट करे छे.—

जहा मिए एग अणेगचारी, अणेगवासे धुवगोअरे अ।
एवं मुणी गोअरिअं पविट्ठे, नो हीलए नो वि अ खिंसइज्जा ॥ ८४ ॥

अर्थ—(जहा मिए)जेम मृग (एग) एकलो–सहाय रहित, तथा (अणेगचारी) अनियत विहार करनार, तथा (अणेगवासे) अनेक स्थाने निवास करनार (अ) तथा (धुवगोअरे) निश्चित गोचरवाळो एटले निरंतर गोचरमां ज मळेली वस्तुनो आहार करनार होय छे, (एवं) एज रीते (मुणी) मुनि पण तेवा ज विशेषणवाळो (गोअरिअं) गोचरीने विषे (पविट्ठे) गयो थको (नो हीलए) कोईनी हीलना न करे एटले कदन्नादिक मळे तो ते अन्ननी के तेना आपनारनी निंदा न करे (वि अ)

तेमज वळी (नो क्लिसइज्जा) निंदा न करे. एटले आहारनी प्राप्ति न थाय तो ते प्रसंगे पण पोतानी के परनी निंदा न करे. ८४.

आ प्रमाणे मृगचर्यानुं स्वरूप कहीने मृगापुत्रे जे कह्युं, तथा मातापिताए जे कह्युं, अने पछी मृगापुत्रे जे कर्युं ते हवे कहे छे.—

मिगचारिअं चरिस्सामि, एवं पुत्ता जहासुहं । अम्मापिईहिंऽणुण्णाओ, जहाइ उवहिं तओ ॥८५॥

अर्थ—(मिगचारिअं) "शरीरनी चिकित्सा न करवी ए आदि मृगचर्याने (चरिस्सामि) हुं आचरीश." ए प्रमाणे मृगापुत्रे कह्युं, त्यारे मातापिताए जवाब आप्यो के—(पुत्ता) "हे पुत्र ! (एवं) जो एवी तारी इच्छा छे तो (जहासुहं) जेम सुख उपजे तेम तुं कर." ए प्रमाणे (अम्मापिईहिं) मातापिताए (अणुण्णाओ) अनुज्ञा आपी. (तओ) त्यारे ते मृगापुत्रे (उवहिं) सर्व परिग्रहनो (जहाइ) त्याग कर्यो. ८५.

उपर कहेला अर्थने ज विस्तारथी कहे छे.—

मिअचारिअं चरिस्सामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं। तुब्भेहिं समणुण्णाओ, गच्छ पुत्त ! जहासुहं ।८६।

अर्थ—मृगापुत्रे कह्युं के—हे मातापिता ! (तुब्भेहिं) तमोए (समणुण्णाओ) अनुज्ञा आप्यो एवो हुं (सव्वदुक्खविमोक्खणिं) सर्व दुःखनो नाश करनारी (मिअचारिअं) मृगचर्याने-दीक्षाने (चरिस्सामि) आचरीश." त्यारे मातापिताए

कहुं के—(पुत्त) हे पुत्र ! (जहासुहं) जेम सुख उपजे तेम (गच्छ) तुं जा–मृगचर्यानुं आचरण कर. ८६.

एवं से अम्मापिअरो, अणुमाणित्ता ण बहुविहं । ममत्तं छिंदई ताहे, महानागुव्व कंचुअं ॥८७॥

अर्थ—(एवं) आ प्रमाणे (स) ते मृगापुत्र (अम्मापिअरो) मातापिताना (अणुमाणित्ता ण) अनुज्ञा लइने (ताहे) ते वखते (महानागु) मोटो सर्प (व्व) जेम (कंचुअं) कांचळीनो त्याग करे तेम (बहुविहं) घणा प्रकारना (ममत्तं) ममत्वने (छिंदई) छेदतो हवो–त्याग करतो हवो. आ गाथावडे आभ्यंतर उपधिनो त्याग कह्यो. ८७.

हवे बाह्य उपधिनो त्याग कहे छे.—

इड्ढी वित्तं च मित्ते अ, पुत्त दारं च नायओ । रेणुअं व पडे लग्गं, निध्धुणित्ता ण निग्गओ ।८८।

अर्थ—(पडे) वस्त्रने विषे (लग्गं) लागेली–चोंटेली (रेणुअं व) रजनी जेम (इड्ढी) समृद्धिने, (वित्तं च) धनने तथा (मित्ते अ) मित्रोने तथा (पुत्त) पुत्रोने तथा (दारं च) स्त्रीओने तथा (नायओ) ज्ञातिने (निध्धुणित्ता ण) तजीने (निग्गओ) ते मृगापुत्र गृह बहार नीकळ्या. ८८.

त्यारपछी ते मृगापुत्र केवा थया ? अने तेने केवुं फळ प्राप्त थयुं ? ते कहे छे.—

पंचमहव्वयजुत्तो, पंचहिं समिओ तिगुत्तिगुत्तो अ । सब्भिंतरबाहिरए, तवोवहाणम्मि उज्जुत्तो ।८९।

अर्थ—(पंचमहव्वयजुत्तो) पांच महाव्रतोथी युक्त, तथा (पंचहिं) पांच समितिवडे (समिओ) सहित, तथा (तिगुत्ति-

गुत्तो अ) त्रण गुप्तिवडे गुप्त, तथा (सब्भिंतरबाहिरए) आभ्यंतर सहित बाह्य एवा (तवोवहाणम्मि) तप संबंधी उपधानने विषे-कर्तव्यने विषे (उज्जुत्तो) उद्यमवंत थया. ८९.

निम्ममो निरहंकारो, निस्संगो चत्तगारवो । समो अ सव्वभूएसु, तसेसु थावरेसु अ ॥ ९० ॥

अर्थ--तथा (निम्ममो) ममता रहित, (निरहंकारो) अहंकार रहित, (निस्संगो) बाह्य अने आभ्यंतर संग रहित, (चत्तगारवो) त्रण गारव रहित, (अ) तथा (सव्वभूएसु) सर्व प्राणीओने विषे एटले (तसेसु) त्रस प्राणीओने विषे (थावरेसु अ) अने स्थावर प्राणीओने विषे (समो) समान परिणामवाळा थया. ९०.

लाभालाभे सुहे दुक्खे, जीविए मरणे तहा । समो निंदापसंसासु, समो माणावमाणओ ॥ ९१ ॥

अर्थ--(लाभालाभे) लाभ अने अलाभने विषे, (सुहे) सुख अने (दुक्खे) दुःखने विषे, (जीविए) जीवित अने (मरणे) मरणने विषे, (तहा) तथा (निंदापसंसासु) निंदा अने प्रशंसाने विषे (समो) समान, तथा (माणावमाणओ) मान अने अपमानने विषे (समो) समान थया. ९१.

गारवेसु कसाएसु, दंडसल्लभएसु अ । निअत्तो हाससोगाओ, अनिआणो अबंधणो ॥ ९२ ॥

अर्थ--(गारवेसु) त्रण गारव थकी (निअत्तो) निवृत्त थया, तथा (कसाएसु) चार कषायथी निवृत्त थया, तथा (दंडसल्लभएसु अ) त्रण दंड, त्रण शल्य अने सात भयथी निवृत्त थया, तथा (हाससोगाओ) हास्य अने शोकथी निवृत्त थया,

तथा (अनिआणो) नियाणा रहित थया, तथा (अबंधणो) राग द्वेषना बंधन रहित थया. ९२.

अणिस्सिओ इहं लोए, परलोए अणिस्सिओ । वासीचंदणकप्पो अ, असणे अणसणे तहा ॥९३॥

अर्थ--(इहं लोए) आ लोकने विषे पण (अणिस्सिओ) कोइनी निश्रा एटले सहाय रहित, तथा (परलोए) परलोकने विषे पण (अणिस्सिओ) निश्रा रहित अर्थात् आ लोकमां राज्यादिकनी अने परलोकमां स्वर्गसुखनी वांछा रहित थया. (वासीचंदणकप्पो अ) तथा वासी अने चंदनने विषे समान एटले कोइ पुरुष वांसलावडे छेदे अथवा कोइ माणस चंदनवडे पूजा करे ते बन्नेने विषे समान दृष्टिवाळा थया, (तहा) तथा (असणे) आहारने विषे अने (अणसणे) अनशनने विषे पण समान एटले आहार करवामां अने नहीं करवामां अथवा आहार मळे के न मळे तोपण ते बन्नेमां समान दृष्टिवाळा थया. ९३.

अप्पसत्थेहिं दारेहिं, सव्वओ पिहिआसवो । अज्झप्पज्झाणजोगेहिं, पसत्थदमसासणो ॥९४॥

अर्थ—(अप्पसत्थेहिं) अप्रशस्त एटले कर्म उपार्जन करवाना हेतुरूप हिंसादिक (दारेहिं) द्वारोथी निवृत्त थया, तेथी करीने ज (सव्वओ) चोतरफथी (पिहिआसवो) रुंध्या छे आश्रव एटले पापव्यापारो जेणे एवा थया, तथा (अज्झप्पज्झाणजोगेहिं) आत्माने विषे शुभ ध्यानना व्यापारोवडे (पसत्थदमसासणो) प्रशस्त छे दम एटले उपशम अने शासन एटले सर्वज्ञनो सिद्धांत जेने एवा थया. अर्थात् उपशमवाळा अने शासनना आराधक थया. ९४.

एवं नाणेण चरणेणं, दंसणेण तवेण य । भावणाहि य सुद्धाहिं, सम्मं भावित्तु अप्पयं ॥ ९५ ॥

अर्थ—(एवं) एज प्रमाणे (नाणेण) मति, श्रुत विगेरे ज्ञानवडे, (चरणेणं) यथाख्यात नामना चारित्रवडे, (दंसणेण) शुद्ध समकितवडे, (तवेण य) तथा बार प्रकारना तपवडे (अ) तथा (सुद्धाहिं) शुद्ध एटले नियाणादिक दोषरहित एवी (भावणाहिं) महाव्रत संबंधी पचीश भावनावडे अथवा अनित्यादिक बार भावनावडे (अप्पयं) पोताना आत्माने (सम्मं) सम्यक् प्रकारे (भाविसु) भावीने एटले निर्मळ करीने—९५

बहुआणि उ वासाणि, सामण्णमणुपालिआ । मासिएण उ भत्तेणं, सिद्धिं पत्तो अणुत्तरं ॥ ९६ ॥

अर्थ—(बहुआणि उ) घणा (वासाणि) वर्षो सुधी (सामण्णं) चारित्रने (अणुपालिआ) पाळीने (मासिएण उ) एक मासना (भत्तेणं) अनशनवडे (अणुत्तरं) सर्वोत्कृष्ट एवी (सिद्धिं) सिद्धिने (पत्तो) पाम्या. ९६

हवे अध्ययननो उपसंहार करता उपदेश आपे छे.—

एवं करंति संबुद्धा, पंडिआ पविअक्खणा । विणिअट्टंति भोगेसु, मिअापुत्ते जहा मिसी ॥ ९७ ॥

अर्थ—(संबुद्धा) सम्यक् प्रकारे तत्त्वना जाण, तथा (पंडिआ) पंडित एटले हेय अने उपादेय जाणनारा, तथा (पविअक्खणा) अति विचक्षण एवा पुरुषो (एवं) उपर कह्या प्रमाणे (करंति) करे छे, तेथी (भोगेसु) भोग थकी (विणिअट्टंति) पाछा वळे छे. (जहा) जेम (मिसी) ऋषि (मिअापुत्ते) मृगापुत्र भोगथी निवृत्त थइ चारित्र ग्रहण करी मोक्षे गया तेम. ९७. बीजी रीते उपदेश आपे छे.

महापभावस्स महाजसस्स, मिआपुत्तस्स निसम्म भासिअं ।
तवप्पहाणं चरिअं च उत्तमं, गइप्पहाणं च तिलोअविस्सुअं ॥ ९८ ॥

अर्थ--(महापभावस्स) मोटा प्रभाववाळा, तथा (महाजसस्स) मोटा यशवाळा (मिआपुत्तस्स) मृगापुत्रना (भासिअं) संसारनुं असारपणुं विगेरे जणावनारा वचनने (निसम्म) सांभळीने (च) तथा (तवप्पहाणं) तप छे प्रधान–मुख्य जेमां एवुं तथा (उत्तमं) उत्तम एवुं, तथा (गइप्पहाणं च) मोक्षरूप गतिए करीने प्रधान एवुं, तथा (तिलोअविस्सुअं) त्रण जगतमां प्रसिद्ध एवुं (चरिअं) ते मृगापुत्रनुं चरित्र सांभळीने---९८.

विआणिआ दुक्खविवड्ढणं धणं, ममत्तबंधं च महब्भयावहं ।
सुहावहं धम्मधुरं अणुत्तरं, धारेह निव्वाणगुणावहं महं ॥ ९९ ॥ त्ति बेमि ॥

अर्थ--तथा (धणं) धन (दुक्खविवड्ढणं) दुःखने वधारनार छे, (च) तथा (ममत्तबंधं) ममत्वनुं बंधन छे अने (महब्भयावहं) महा भयने वहन करनार छे एम (विआणिआ) जाणीने (सुहावहं) सुखने आपनार, (अणुत्तरं) सर्वोत्कृष्ट, (निव्वाणगुणावहं) मोक्ष प्राप्त करावनारा गुण जे अनंत ज्ञान, दर्शन, चारित्र अने वीर्य तेने धारण करनार थाओ तथा (महं) मोटी एवी (धम्मधुरं) धर्मधुराने (धारेह) धारण करो. (त्ति बेमि) ए प्रमाणे सुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहेता हवा. ९९.

इति एकोनविंशतितममध्ययनम् ॥ १९ ॥

अथ महानिर्ग्रन्थीय नामनुं वीशमुं अध्ययन. २०

ओगणीशमा अध्ययनमां निःप्रतिकर्मपणुं एटले शरीरनी सारवार न करवी एम कह्युं. ते अनाथपणा विना पाळी शकाय नहीं. तेथी आ वीशमा अध्ययनमां अनेक प्रकारनुं अनाथपणुं कहे छे. आ संबंधथी आवेला आ अध्ययननुं प्रथम सूत्र कहे छे.—

सिद्धाण नमोकिच्चा, संजयाणं च भावओ । अत्थधम्मगइं तच्चं, अणुसिट्ठिं सुणेह मे ॥ १ ॥

अर्थ—(सिद्धाण) तीर्थंकरादिक पंदर प्रकारना सिद्धोने (संजयाणं च) तथा संयतोने एटले आचार्य, उपाध्याय अने साधुओने (भावओ) भावथी (नमोकिच्चा) नमस्कार करीने (अत्थधम्मगइं) प्रार्थना करवा लायक धर्मनुं ज्ञान छे जेने एवी अने (तच्चं) सत्य एवी (मे) माराथी कहेवाती एवी (अणुसिट्ठिं) शिक्षाने-उपदेशने (सुणेह) तमे सांभळो. १.

आ सूत्रमां धर्मकथानुयोग होवाथी धर्मकथाना द्वारवडे ज उपदेश आपे छे.—

पभूअरयणो राया, सेणिओ मगहाहिवो । विहारजत्तं निज्जाओ, मंडिकुच्छिंसि चेइए ॥ २ ॥

अर्थ—(पभूअरयणो) गज अश्वादिक अथवा वैडुर्यादिक घणां रत्नोवाळो (मगहाहिवो) मगध देशनो अधिपति (सेणिओ) श्रेणिक नामनो (राया) राजा एकदा (विहारजत्तं) विहार यात्राए एटले अश्वक्रीडा करवा माटे नगरथी (निज्जाओ) नीकळ्यो थको (मंडिकुच्छिंसि) मंडितकुक्षि नामना (चेइए) चैत्यने विषे-वनने विषे गयो. २.

ते उद्यान केवुं हतुं ? ते कहे छे.—

नाणादुमलयाइण्णं, नाणापक्खिनिसेविअं । नाणाकुसुमसंछन्नं, उज्जाणं नंदणोवमं ॥ ३ ॥

अर्थ—(नाणादुमलयाइण्णं) विविध प्रकारना वृक्षो अने लताओवडे व्याप्त, (नाणापक्खिनिसेविअं) विविध पक्षीओए सेवेलुं तथा (नाणाकुसुमसंछन्नं) विविध जातिना पुष्पो सहित एवुं (उज्जाणं) ते उद्यान (नंदणोवमं) नंदन वननी जेवुं हतुं. ३.

तत्थ सो पासई साहुं, संजयं सुसमाहिअं । निसन्नं रुक्खमूलम्मि, सुकुमालं सुहोइअं ॥ ४ ॥

अर्थ—(तत्थ) ते उद्यानमां (सो) ते श्रेणिक राजाए (संजयं) सम्यक् प्रकारे यतना करता, (सुसमाहिअं) सारी समाधिवाळा, (रुक्खमूलम्मि) वृक्षना मूळमां (निसन्नं) बेठेला, (सुकुमालं) अति कोमळ अने (सुहोइअं) सुखने एटले सुख भोगववाने योग्य एवा एक (साहुं) साधुने (पासई) जोया. ४.

तस्स रूवं तु पासित्ता, राइणो तम्मि संजए । अच्चंतं परमो आसि, अउलो रूवविम्हओ ॥ ५ ॥

अर्थ—(तस्स) ते मुनिनुं (रूवं तु) रूप (पासित्ता) जोइने (राइणो) श्रेणिक राजाने (तम्मि संजए) ते मुनिने विषे (अच्चंतं) अत्यंत (परमो) उत्कृष्ट (अउलो) अतुल—कोइनी उपमा न अपाय एवो (रूवविम्हओ) रूपना विषयवाळो विस्मय (आसि) थयो. ५

ते विस्मयने ज बतावे छे.—

अहो ! वण्णो ! अहो ! रूवं !, अहो ! अज्जस्स सोमया ! ।
अहो ! खंती ! अहो ! मुत्ती !, अहो ! भोगे असंगया ! ॥ ६ ॥

अर्थ—राजा विचार करे छे के—(अहो) अहो ! आ मुनिना शरीरनो (वण्णो) वर्ण ! (अहो रूवं) अहो एनुं रूप ! (अहो) अहो ! (अज्जस्स) आ आर्यनी–पूज्यनी (सोमया) चंद्रमा जेवी सौम्यता–सुंदरता ! (अहो खंती) अहो ! आनी क्षमा ! (अहो मुत्ती) अहो ! आनी मुक्ति—निर्लोभता ! (अहो भोगे असंगया) अहो ! भोगने विषे आनी निःस्पृहता ! सर्व अति आश्चर्यकारक छे. ६.

तस्स पाए उ वंदित्ता, काऊण य पयाहिणं । नाइदूरमणासन्ने, पंजली पडिपुच्छइ ॥ ७ ॥

अर्थ—एम विचारी (तस्स) ते मुनिना (पाए उ) पादने (वंदित्ता) वंदन करीने (य) तथा (पयाहिणं) प्रदक्षिणा (काऊण) करीने (नाइदूरं) अति दूर नहीं तेमज (अणासन्ने) अति समीपे नहीं एवी रीते बेसीने (पंजली) बे हाथ जोडी (पडिपुच्छइ) राजाए प्रश्न कर्यो. ७.

तरुणोऽसि अज्जो ! पव्वइओ, भोगकालम्मि संजया ! । उवट्ठिओऽसि सामण्णे, एअमट्ठं सुणेमि तो* ॥८॥

---

* ते इति वा पाठः

अर्थ—(अज्जो) हे आर्य ! (तरुणोऽसि) तमे युवान छो, (संजया) हे मुनि ! (भोगकालम्मि) भोग भोगववाने समये (पव्वइओ) तमे प्रव्रज्या लीधी छे, (सामण्णे) चारित्रने विषे (उवट्ठिओऽसि) उद्यमवंत थया छो. (एअमट्ठं) आ अर्थने एटले आ युवावस्थामां प्रव्रज्या लेवाना कारणने (ता) प्रथम (ते) तमारी पासे (सुणामि) हुं सांभळुं—सांभळवा इच्छुं छुं. अने पछी तमे बीजुं जे कहेशो ते पण सांभळीश. ८.

हवे ते मुनि जवाब आपे छे.—

अणाहोमि महाराय !, नाहो मज्झ न विज्जई । अणुकंपगं सुहिं वा वि, कंची नाभिसमेमहं ॥९॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा ! (अणाहोमि) हुं अनाथ छुं. (मज्झ) मारो कोइ (नाहो) नाथ (न विज्जइ) नथी. (वा) अथवा (अणुकंपगं) दयाने चितवनार (कंची) कोइ (सुहिं) सुहृद्–मित्रने (वि) पण (नाभिसमेमहं) हुं पाम्यो नथी. आ कारणथी में प्रव्रज्या लीधी छे. ९. आ प्रमाणे मुनिए कह्युं त्यारे—

तओ सो पहसिओ राया, सेणिओ मगहाहिवो । एवं ते इड्ढिमंतस्स, कहं नाहो न विज्जई ॥१०॥

अर्थ—(तओ) ते वखते (सो) ते (मगहाहिवो) मगध देशनो अधिपति (सेणिओ) श्रेणिक (राया) राजा (पहसिओ) हस्यो के—(एवं) आ प्रकारे (इड्ढिमंतस्स) ऋद्धिवाळा एवा (ते) तमारो (नाहो) नाथ (कहं) केम (न विज्जई) नथी ? अहीं सर्वत्र ते काळनी अपेक्षाए वर्तमानकाळ लखेलो छे. ११.

जो व्रत अंगीकार करवामां अनाथता ज कारण होय तो—

होमि नाहो भयंताणं, भोगे भुंजाहि संजया !। मित्तनाईपरिवुडो, माणुस्सं खु सुदुल्लहं ॥११॥

अर्थ—(भयंताणं) पूज्य एवा आपनो हुं (नाहो) नाथ (होमि) थाउं. (संजया) हे मुनि ! (मित्तनाईपरिवुडो) मित्र अने ज्ञातिथी परिवर्या थका (भोगे) भोगोने (भुंजाहि) भोगवो. कारण के (माणुस्सं) मनुष्यपणुं पामवुं (खु) खरेखर (सुदुल्लहं) अत्यंत दुर्लभ छे. ११.

ते सांभळी मुनि बोल्या.—

अप्पणा वि अणाहोऽसि, सेणिआ ! मगहाहिवा !। अप्पणा अणाहो संतो, कहं नाहो भविस्ससि ? ॥१२॥

अर्थ—(मगहाहिवा) हे मगधना अधिपति (सेणिआ) श्रेणिक राजा ! (अप्पणा वि) तमे पोते ज (अणाहोऽसि) अनाथ—नाथ रहित छो. (अप्पणा) तेथी पोते ज (अणाहो संतो) अनाथ सता (कहं) केवी रीते मारा (नाहो) नाथ (भविस्ससि) थशो ? १२.

एवं वुत्तो नरिंदो सो, सुसंभंतो सुविम्हिओ । वयणं अस्सुअपुव्वं, साहुणा विम्हयं निओ ॥१३॥

अर्थ—(एवं) आ प्रमाणे (साहुणा) मुनिए (अस्सुअपुव्वं) पूर्वे नहीं सांभळेला (वयणं) वचन प्रत्ये (वुत्तो) कहेवायो एवो (सो) ते (नरिंदो) श्रेणिक राजा (सुसंभंतो) अत्यंत संभ्रांत अने (सुविम्हिओ) अत्यंत विस्मित थइ

(विम्हयं निओ) आश्चर्य पाम्यो. प्रथम ते मुनिना रूपादिक जोइने राजा आश्चर्य पाम्यो हतो, ते फरीथी आवुं अपूर्व वचन सांभळी वधारे आश्चर्य पाम्यो. १३.

पछी राजा आ प्रमाणे बे गाथावडे बोल्यो.—

अस्सा हत्थी मणुस्सा मे, पुरं अंतेउरं च मे। भुंजामि माणुसे भोए, आणाइस्सरियं च मे ॥१४॥

अर्थ—हे मुनि ! (मे) मारे (अस्सा) घणा अश्वो छे, तथा (हत्थी) हाथीओ छे, तथा (मणुस्सा) मनुष्यो-सेवको अने स्वजनादिक छे, (च) तथा (मे) मारे (पुरं) नगर छे, तथा (अंतेउरं) राणीओनो समूह छे, तथा हुं (माणुसे) मनुष्य संबंधी (भोए) कामभोगोने (भुंजामि) भोगवुं छुं, (च) तथा (मे) मारे (आणाइस्सरियं) अस्खलित शासनरूप आज्ञा अने ऐश्वर्य एटले समृद्धि-स्वामीपणुं छे. मारा राज्यमां कोइ पण मारी आज्ञानो भंग करतुं नथी. १४.

एरिसे संपयग्गम्मि, सव्वकामसमप्पिए। कहं अणाहो भवइ, मा हु भंते ! मुसं वए ॥ १५ ॥

अर्थ—(एरिसे) आवा प्रकारनी (सव्वकामसमप्पिए) सर्व मनवांछितने पूर्ण करनार (संपयग्गम्मि) संपदानो प्रकर्ष-मोटी समृद्धि सते (कहं) केवी रीते हुं (अणाहो) अनाथ (भवइ) थाउं ? कारण के हुं सर्व संपत्तिनो नाथ छुं. (हु) तेथी करीने (भंते) हे पूज्य ! आप (मुसं) मृषा (मा वए) न बोलो. १५.

त्यारे मुनि आ प्रमाणे बोल्या.—

ण तुमं जाणे अणाहस्स, अत्थं पोत्थं च पत्थिवा ! । जहा अणाहो हवइ, सणाहो वा नराहिवा ! ॥१६॥

अर्थ—(पत्थिवा) हे राजा ! (तुमं) तमे (अणाहस्स) अनाथ शब्दना (अत्थं) अर्थने (पोत्थं च) तथा प्रोत्थानने एटले कया अभिप्रायथी में अनाथ शब्द कह्यो तेनी मूळ उत्पत्तिने (ण जाणे) तमे जाणता नथी, के (जहा) जे प्रकारे (अणाहो) अनाथ (वा) के (सणाहो) सनाथ (हवइ) होय, ते प्रकारे (नराहिवा) हे नराधिप ! तमे जाणता नथी. १६.

सुणेह मे महाराय !, अव्वक्खित्तेण चेअसा । जहा अणाहो भवति, जहा मे अ पवत्तिअं ॥१७॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा ! (जहा) जे प्रकारे मनुष्य (अणाहो) अनाथ (भवति) थाय छे, (अ) अने (जहा) जे प्रकारे (मे) में ते अनाथपणुं (पवत्तिअं) प्रवर्तात्र्युं एटले प्ररूप्युं-कह्युं छे, ते प्रकारे (मे) कहेता एवा मारा थकी तमे (अव्वक्खित्तेण) अव्याक्षिप्त-स्थिर (चेअसा) चित्तवडे (सुणेह) सांभळो. १७.

आ प्रमाणे कहीने पछी मुनि पोतानी कथा कहेवा लाग्या.—

कोसंबी नाम नयरी, पुराणपुरभेअणी । तत्थ आसी पिआ मज्झं, पभूअधणसंचओ ॥ १८ ॥

अर्थ—(पुराणपुरभेअणी) जूनां नगरोने भेदनारी एटले जूनां नगरोथी पण अधिक शोभावाळी (कोसंबी नाम)

कौशांबी नामनी (नयरी) नगरी छे. (तत्थ) तेमां (पभूअधणसंचओ) घणा धननो संचय-संग्रह करनार धनसंचय नामे (मज्झं) मारो (पिआ) पिता (आसी) हतो. प्राये करीने जूनां नगरोमां वसनारा लोको चतुर, धनवान, घणा अनुभवी अने विवेकी होय छे एवुं रहस्य जणाववा माटे जूना नगरने भेदनारी आ नगरी कही छे. १८.

पढमे वए महाराय!, अउला मे अच्छिवेअणा। अहोत्था विउलो दाहो, सव्वगत्तेसु पत्थिवा! ॥१९॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराज! (पढमे वए) पहेली वयमां एटले युवावस्थामां (मे) मने एकदा (अउला) अतुल एवी (अच्छिवेअणा) नेत्रनी पीडा (अहोत्था) थइ, तेथी (पत्थिवा) हे राजा! (सव्वगत्तेसु) मारा सर्व अवयवोने विषे (विउलो) विपुल-मोटो (दाहो) दाह थवा लाग्यो. १९.

सत्थं जहा परमतिक्खं, सरीरविवरंतरे। आवीलिज्ज अरी कुद्धो, एवं मे अच्छिवेअणा ॥२०॥

अर्थ—(जहा) जेम कोइ (कुद्धो अरी) क्रोध पामेलो शत्रु (सरीरविवरंतरे) कर्ण, नासिका विगेरे शरीरना विवरोनी मध्ये (परमतिक्खं) अत्यंत तीक्ष्ण (सत्थं) शस्त्रने (आवीलिज्ज) गाढ रीते नांखे अने तेथी जेवी वेदना थाय (एवं) एवी असह्य (मे) मने (अच्छिवेअणा) नेत्रनी पीडा थती हती. २०.

तिअं मे अंतरिच्छं च, उत्तिमंगं च पीडई। इंदासणीसमा घोरा, वेअणा परमदारुणा ॥ २१ ॥

अर्थ—(मे) मारा (तिअं) कटिभागने, तथा (अंतरिच्छं) खान, पान, रमण विगेरे अंदरनी इच्छाने, तथा

(उत्तिमंगं च) मस्तकने ते (इंदासणीसमा) इंद्रना वज्र जेवी अति दाह उत्पन्न करनारी (घोरा) भयंकर एटले बीजाने पण भय उत्पन्न करनारी अने (परमदारुणा) पोताने अत्यंत दुःख उत्पन्न करनारी (वेअणा) वेदना (पीडई) पीडा करवा लागी. २१.

उवट्ठिआ मे आयरिआ, विज्जामंततिगिच्छगा । अबीआ* सत्थकुसला, मंतमूलविसारया ॥ २२ ॥

अर्थ—ते वखते (मे) मने-मारी पासे (आयरिआ) आचार्यो एटले वैद्यो (उवट्ठिआ) प्राप्त थया एटले मारी चिकित्सा करवा आव्या. ते वैद्यो (विज्जामंततिगिच्छगा) विद्या अने मंत्रवडे चिकित्सा करनारा हता, तथा (अबीआ) अद्वितीय एटले तेमनी जेवा बीजा कोइ निपुण नहोता, अथवा (अधीआ) सारी रीते भणेला हता, तेथी ज (सत्थकुसला) शास्त्रने विषे कुशळ हता, तथा (मंतमूलविसारया) देव अधिष्ठित मंत्रो अने जडीबुट्टी आदि मूळीयामां विचक्षण हता, एटले मंत्र अने मूळना गुणोने जाणनारा हता. २२.

ते मे तिगिच्छं कुव्वंति, चाउप्पायं जहाहिअं । न य दुक्खा विमोअंति, एसा मज्झ अणाहया ॥२३॥

अर्थ—(ते) ते वैद्यो (जहाहिअं) जेम हित थाय तेम (चाउप्पायं) चार प्रकारे (मे) मारी (तिगिच्छं) चिकित्सा (कुव्वंति) करवा लाग्या. अहीं वैद्य, औषध, रोगी अने सारवार करनार, अथवा वमन, विरेचन, मर्दन अने

* अधीआ इति वा पाठः

स्वेदन–परसेवो आवे तेवुं, अथवा अंजन, बंधन, लेपन अने मर्दन ए रीते शास्त्रमां कहेली चार चार प्रकारनी चिकित्सा जाणवी. ए रीते गुरुपरंपरा प्रमाणे चिकित्सा करवा लाग्या, (य) तोपण तेओए मने (दुक्खा) दुःखथी (न विमोयंति) मुक्त कर्यो नहीं–मुक्त करी शक्या नहीं. (एसा) ए ज (मज्झ) मारी (अणाहया) अनाथता छे. २३.

पिआ मे सव्वसारं पि, दिज्जाहि मम कारणा। न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥२४॥

अर्थ—(मे) मारा (पिआ) पिताए (मम कारणा) मारे कारणे ते वैद्योने (सव्वसारं पि) घरनो सर्व सार–सर्व धनादिक सार वस्तु (दिज्जाहि) आपी. (य) तोपण तेणे मने (दुक्खा) दुःखथी (न विमोएइ) मुक्त कर्यो नहीं. (एसा) ए (मज्झ) मारी (अणाहया) अनाथता छे. अर्थात् सर्वस्व आपीने पण मारा पिता मारुं दुःख दूर करी शक्या नहीं, ए ज मारी अनाथता छे. २४.

माया वि मे महाराय ! पुत्तसोगदुहट्टिआ*। न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥२५॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा ! (पुत्तसोगदुहट्टिआ) पुत्रना शोकरूपी दुःखमां रहेली अथवा (दुहट्टिआ) दुःखे करीने पीडायेली (मे) मारी (माया वि) माता पण (दुक्खा) दुःखथी मने (न य विमोएइ) मूकावी शकी नहीं, (एसा मज्झ अणाहया) ए ज मारी अनाथता छे. २५.

* दुहट्टिआ इति वा.

भायरो मे महाराय !, सगा जिट्ठकणिट्ठगा । न य दुक्खा विमोअंति, एसा मज्झं अणाहया ॥२६॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा ! (जिट्ठकणिट्ठगा) मोटा अने नाना (सगा) सहोदर (मे) मारा (भायरो) भाइओ मने (दुक्खा) दुःखथी (न य विमोअंति) मूकावी शक्या नहीं, (एसा मज्झ अणाहया) ए मारी अनाथता छे. २६.

भइणिओ मे महाराय ! सगा जिट्ठकणिट्ठगा । न य दुक्खा विमोअंति, एसा मज्झ अणाहया ॥२७॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा ! (जिट्ठकणिट्ठगा) मोटी अने नानी (सगा) सहोदरी (मे) मारी (भइणिओ) बहेनो मने (दुक्खा) दुःखथी (न य विमोअंति) मूकावी न शकी, (एसा मज्झ अणाहया) ए मारी अनाथता छे. २७.

भारिया मे महाराय !, अणुरत्ता अणुव्वया । अंसुपुण्णेहिं नयणेहिं, उरं मे परिसिंचइ ॥ २८ ॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा ! (अणुरत्ता) प्रीतिवाळी अने (अणुव्वया) पतिव्रता एवी (मे) मारी (भारिया) भार्या (अंसुपुण्णेहिं) अश्रुवडे पूर्ण एवा (नयणेहिं) नेत्रोवडे (मे उरं) मारा उरःस्थळने (परिसिंचइ) सिंचती हती. परंतु ते पण मने दुःखथी मूकावी शकी नहीं. ए मारी अनाथता छे. २८.

अन्नं पाणं च ण्हाणं च, गंधमल्लविलेवणं । मए णायमणायं वा, सा बाला नोवभुंजइ ॥२९॥

अर्थ—(सा बाला) ते मारी भार्या (मए) में (णायं) जाण्युं (अणायं वा) के न जाण्युं तेम एटले मारा

जाणता के न जाणता (अन्नं) अन्न, (पाणं च) पाणी, तथा (ण्हाणं च) स्नान, तथा (गंधमल्लविलेवणं) गंध, पुष्पमाळा अने विलेपन एमांनुं कांइ पण (न उवभुंजइ) भोगवती नहोती, मारा दुःखथी सर्व भोगो तेणीए पण तज्या हता. २९.

खणं पि मे महाराय !, पासओ वि न फिट्टई। न य दुक्खा विमोएइ, एसा मज्झ अणाहया ॥३०॥

अर्थ—(महाराय) हे महाराजा ! (खणं पि) एक क्षणवार पण (मे) मारी (पासओ वि) पासेथी–समीप भागथी जरा पण (न फिट्टई) दूर जती नहोती, (य) तोपण ते मने (दुक्खा) दुःखथी (न विमोएइ) मूकावी शकी नहीं, (एसा मज्झ अणाहया) आ मारी अनाथता छे. ३०.

तओ हं एवमाहंसु, दुक्खमा हु पुणो पुणो। वेअणा अणुभविउं जे, संसारम्मि अणंतए ॥३१॥

अर्थ—(तओ) त्यारपछी एटले सर्व उपायो निष्फळ थया पछी (हं) हुं (एवं) आ प्रमाणे (आहंसु) बोल्यो के—(हु) निश्चे (जे) " जे (वेअणा) वेदना (अणुभविउं) अनुभववाने (दुक्खमा) दुःसह छे, ते वेदना (अणंतए) आ अनंत एवा (संसारम्मि) संसारने विषे (पुणो पुणो) वारंवार में भोगवी छे. ३१.

तेथी करीने—

सइं च जइ मुच्चिज्जा, वेअणा विउला इओ। खंतो दंतो निरारंभो, पव्वए अणगारिअं ॥ ३२ ॥

अर्थ--(जइ) जो (सइं च) एक वार हुं (इओ) आ (विउला) मोटी (वेअणा) वेदनाथी (मुच्चिआ) मूकाउं, तो हुं (खंतो) क्षमावाळो, (दंतो) इंद्रिय अने नोइंद्रियना दमनवाळो अने (निरारंभो) सर्व सावद्य आरंभ रहित एवो थइने (अणगारिअं) साधुपणाने-चारित्रने (पव्वए) अंगीकार करीश. के जेथी संसारनो ज नाश थवाथी कोइ वखत पण फरीने वेदना प्राप्त थशे ज नहीं. " ३२.

एवं च चिंतइत्ताणं, पसुत्तोमि नराहिवा !। परिअत्तंतीइ राईए, वेअणा मे खयं गया ॥ ३३ ॥

अर्थ—(नराहिवा) हे नराधिप ! केवळ आ प्रमाणे बोलीने ज नहीं, परंतु (एवं च) ए प्रमाणे (चिंतइत्ताणं) मनमां चिंतवन करीने (पसुत्तोमि) हुं सुइ गयो, तेवामां (राईए) रात्रि (परिअत्तंतीइ) अतिक्रमण थतां एटले जेम जेम रात्रि जवा लागी तेम तेम (मे) मारी (वेअणा) वेदना (खयं गया) क्षय पामी. ३३.

तओ कल्ले पभायम्मि, आपुच्छित्ता ण बंधवे । खंतो दंतो निरारंभो, पव्वइओ अणगारिअं ॥३४॥

अर्थ—(तओ) त्यारपछी एटले वेदनानो क्षय थया पछी (कल्ले) रोग रहित थयेला में (पभायम्मि) प्रातःकाळने विषे ज (बंधवे) बांधवोने (आपुच्छित्ता ण) पूछीने एटले तेमनी रजा लइने (खंतो) क्षमावान, (दंतो) इंद्रियोना दमनवाळो अने (निरारंभो) आरंभ रहित थइ (अणगारिअं) चारित्रने (पव्वइओ) अंगीकार कर्युं. ३४.

तओ हं नाहो जाओ, अप्पणो अ परस्स य । सव्वेसिं चेव भूआणं, तसाणं थावराण य ॥ ३५ ॥

अर्थ—(तओ) त्यार पछी एटले दीक्षा ग्रहण कर्या पछी (हं) हुं (अप्पणो अ) पोतानो एटले मारो अने (परस्स य) परनो एटले बीजानो (नाहो जाओ) योग क्षेम करनारो नाथ थयो छुं. ए प्रमाणे (सव्वेसिं चेव) सर्व एवा ज (तसाणं) त्रस (थावराण य) अने स्थावर (भूआणं) प्राणीओनो हुं नाथ थयो छुं. ३५.

दीक्षा ग्रहण कर्या पछी केम नाथ थया ? पहेलां केम न थया ? ते उपर कहे छे.—

अप्पा नई वेअरणी, अप्पा मे कूडसामली । अप्पा कामदुहा धेणू, अप्पा मे नंदणं वणं ॥ ३६ ॥

अर्थ— हे राजा ! (अप्पा) मारो आत्मा ज (वेअरणी) नरकमां रहेली वैतरणी नामनी (नई) नदीरूप छे, (मे) मारो (अप्पा) आत्मा ज (कूडसामली) नरकमां रहेलुं कूटशाल्मली नामनुं वृक्ष छे. (अप्पा) मारो आत्मा ज (कामदुहा धेणू) कामदुघा गाय छे, तथा (मे) मारो (अप्पा) आत्मा ज (नंदणं वणं) नंदन वनरूप छे. अर्थात् स्वर्ग नरकादिक आपनार आत्मा ज छे. ३६.

अप्पा कत्ता विकत्ता य, दुहाण य सुहाण य । अप्पा मित्तममित्तं च, दुप्पट्ठिअ सुपट्ठिओ ॥ ३७ ॥

अर्थ—हे महाराजा ! (अप्पा) आत्मा ज (दुहाण य) दुःखनो अने (सुहाण य) सुखनो (कत्ता) कर्ता—करनार अने (विकत्ता य) विकर्ता एटले नाश करनार पण छे, तथा (अप्पा) आत्मा ज (मित्तं) मित्र (अमित्तं च) अने अमित्र पण छे, तथा आत्मा ज (दुप्पट्ठिअ) दुःप्रस्थित एटले दुराचारी अने (सुपट्ठिओ) सुप्रस्थित एटले सदाचारी छे. तेमां दुराचारी सतो समग्र दुःखनो हेतु होवाथी वैतरणी नदी आदि जेवो छे अने सदाचारी सतो समग्र सुखनो हेतु होवाथी

કામધેનુ સદૃશ છે. તેથી કરીને પ્રવ્રજ્યાને વિષે જ સદાચારીપણું હોવાથી તથા સ્વપરનું યોગ ક્ષેમ કરવાપણું હોવાથી હું નાથરૂપ થયો છું. ૩૭.

ફરીથી બીજે પ્રકારે અનાથપણું કહે છે.—

इमा हु अन्ना वि अणाहया निवा !, तमेगचित्तो निहुओ सुणाहि ।
निग्गंठधम्मं लहियाण वी जहा, सीदंति एगे बहु कायरा नरा ॥३८॥

અર્થ—(નિવા) હે રાજા! (ઇમા) આ એટલે હમણાં હું કહીશ તે (હુ) નિશ્ચે (અન્ના વિ) બીજી પણ (અણાહયા) અનાથતા છે, (તં) તેને તમે (એગચિત્તો) એકાગ્ર ચિત્તવાળા અને (નિહુઓ) નિશ્ચળ એવા સતા (સુણાહિ) સાંભળો. (જહા) તે એ કે-(એગે) કેટલાએક (બહુ કાયરા) ઘણા કાયર (નરા) મનુષ્યો (નિગ્ગંઠધમ્મં) સાધુધર્મને (લહિયાણ વી) પામીને પણ (સીદંતિ) સીદાય છે—સાધુના આચાર પાળવામાં શિથિલ થાય છે. તેઓ સીદાતા થકા પોતાનું અને પરનું રક્ષણ કરવા સમર્થ થતા નથી, તેથી તેમની આ સીદન નામની બીજી અનાથતા જાણવી. ૩૮.

તે જ બતાવે છે.—

जो पव्वइत्ता ण महव्वयाइं, सम्मं च नो फासयई पमाया ।
अणिग्गहप्पा य रसेसु गिद्धे, न मूलओ छिंदइ बंधणं से ॥ ३९ ॥

अर्थ—हे राजा ! (जो) जे मनुष्य (पव्वइत्ता ण) प्रव्रज्या ग्रहण करीने पछी (पमाया) प्रमादथी (महव्वयाइं) पांच महाव्रतोने (सम्मं च) सम्यक् प्रकारे (नो फासयई) सेवतो नथी, (से) ते मनुष्य (अणिग्गहप्पा) नथी वश कर्यो आत्मा जेणे एवो (य) तथा (रसेसु) मधुरादिक रसने विषे (गिद्धे) गृद्धिवाळो सतो (बंधणं) संसारना कारणरूप रागद्वेषना लक्षणवाळा कर्मबंधनने (मूलओ) मूळथी (न छिंदइ) छेदी शकतो नथी–सर्वथा प्रकारे रागद्वेषने निवारी शकतो नथी. ३९.

आउत्तया जस्स य नत्थि काई, ईरिआइ भासाइ तहेसणाए ।
आयाणनिक्खेव दुगंछणाए, न धीरजायं अणुजाइ मग्गं ॥ ४० ॥

अर्थ—(जस्स य) वळी जे साधुने (इरिआइ) ईर्याने विषे एटले गमनागमननी समितिने विषे, तथा (भासाइ) भाषासमितिने विषे, (तहा एसणाए) तथा एषणा–आहार ग्रहण करवानी समितिने विषे, तथा (आयाणनिक्खेव) उपगरण आदि वस्तु लेवा अने मूकवानी समितिने विषे, तथा (दुगंछणाए) परिष्ठापनानी समितिने विषे (काई) कांइ पण (आउत्तया) उपयोग (नत्थि) नथी, ते साधु (धीरजायं) धीरयात एटले धीर पुरुषोए पामेला (मग्गं) मोक्षमार्गने (न अणुजाइ) पामतो नथी. ४०.

चिरं पि से मुंडरुई भवित्ता, अथिरव्वए तवनिअमेहि भट्ठे ।
चिरं पि अप्पाण किलेसइत्ता, न पारए होई हु संपराए ॥ ४१ ॥

अर्थ—(से) ते पूर्वे कहेलो पंच समिति रहित साध्वाभास (अथिरव्वए) अस्थिर व्रतवाळो तथा (तवनिअमेहि) अनशनादिक तप अने अभिग्रहादिक नियमथी (भट्ठे) भ्रष्ट—रहित एवो सतो (चिरं पि) चिरकाळ सुधी (मुंडरुई) मात्र मुंडनने विषे ज—लोचने विषे ज रुचिवाळो (भवित्ता) थइने (चिरं पि) चिरकाळ सुधी (अप्पाणं) पोताना आत्माने (किलेसइत्ता) क्लेश पमाडीने (संपराए) संसारनो (पारए) पारगामी (न होइ हु) थतो ज नथी. ४१.

पोल्लेव मुट्ठी जह से असारे, अयंतिए कूडकहावणे वा ।
राढामणी वेरुलियप्पगासे, अमहग्घए होइ हु जाणएसु ॥ ४२ ॥

अर्थ—(से) ते मुंडरुचिवाळो द्रव्यसाधु (पोल्लेव) पोली ज (मुट्ठी जह) मुठीनी जेम (असारे) असार छे—अंतःकरणमां धर्म नहीं होवाथी खाली मुठीनी जेवो सार रहित ज छे, तथा (कूडकहावणे वा) कूट कार्षापण—खोटा रुपीयानी जेम (अयंतिए) अनियंत्रित एटले अनादर करवा लायक—उपेक्षा करवा लायक छे. (हु) कारण के (वेरुलिअप्पगासे) वैडूर्य मणिनी जेवा प्रकाशवाळो छतां पण (राढामणी) काचमणि (जाणएसु) मणिनी परीक्षा जाणनाराओने विषे (अमहग्घए होइ) अमहार्घ थाय छे—मूल्यवान थतो नथी. ४२.

कुसीललिंगं इह धारइत्ता, इसिज्झयं जीविय वूहइत्ता ।
असंजए संजयलप्पमाणो, विणिघायमागच्छइ से चिरं पि ॥ ४३ ॥

अर्थ—(से) साधुना आचार रहित एवो ते (कुसीललिंगं) पासत्थादिक कुशीळीयाना लिंगने (धारइत्ता) धारण करीने तथा (जीविय) आजीविकाने माटे (इसिज्झयं) ऋषिध्वजने एटले रजोहरणने अने मुखवस्त्रिकाने (वूहइत्ता) वृद्धि पमाडीने एटले आ वेष ज मुख्य छे एम कहीने (असंजए) संयमी नहीं छतां पण (संजयलप्पमाणो) 'हुं संयमी छुं' एम बोलतो सतो (इह) आ संसारमां (चिरं पि) चिरकाळ सुधी (विणिघायं) विविध प्रकारनी पीडाने (आगच्छइ) पामे छे. ४३.

तेनुं कारण बतावे छे.—

विसं पिबित्ता जह कालकूडं, हणाइ सत्थं जह कुग्गहीअं ।
एमेव धम्मो विसओववन्नो, हणाइ वेआल इवाविवन्नो ॥ ४४ ॥

अर्थ—(जह) जेम (कालकूडं) काळकूट नामनुं (विसं) विष (पिबित्ता) पीधुं सतुं प्राणने (हणाइ) हणे छे, तथा (जह) जेम (सत्थं) शस्त्र (कुग्गहीअं) खराब रीते एटले विपरीतपणे ग्रहण कर्युं सतुं पोताने ज हणे छे, (एमेव) ए ज प्रमाणे (धम्मो) धर्म पण (विसओववन्नो) शब्दादिक विषयोथी युक्त सतो आत्माने (हणाइ) हणे छे. कोनी जेम ? ते कहे छे–(अविवन्नो) मंत्रादिकवडे नहीं वश करेलो (वेआल इव) वेताळ–पिशाच जेम उलटो हणनार थाय छे तेम. ४४.

जो लक्खणं सुविण पउंजमाणे, निमित्तकोऊहलसंपगाढे ।
कुहेडविज्जासवदारजीवी, न गच्छई सरणं तम्मि काले ॥ ४५ ॥

अर्थ—(जो) जे साधु (लक्खणं) स्त्रीपुरुषना लक्षणना शास्त्रनो तथा (सुविण) स्वप्नशास्त्रनो एटले स्वप्नना शुभाशुभ फळ कहेनारा शास्त्रनो (पउंजमाणे) उपयोग करतो होय, तथा जे साधु (निमित्तकोऊहलसंपगाढे) भूकंपादिक निमित्त कहेवुं अने कौतुक एटले पुत्रादिक थवा माटे जे स्नानादिक बतावयुं, तेमां आसक्त होय, तथा जे साधु (कुहेडविज्जा-सवदारजीवी) कुहेटक विद्या एटले खोटा आश्चर्य बतावनारा मंत्र तंत्रादिकनी विद्या, ते ज कर्मबंधनो हेतु होवाथी आश्रव-द्वार कहेवाय छे, ते कुहेटक विद्यारूपी आश्रवद्वारवडे आजीविका करवाना स्वभाववाळो होय, ते साधु (तम्मि काले) ते लक्षणादिकनो उपयोग करवाथी बंधायेला कर्मना उदयकाळे एटले नरकादिकनां दुःख भोगवती वखते (सरणं) ते दुःखथी रक्षा करनार कोइ पण शरणने (न गच्छई) पामतो नथी. ४५.

आ ज अर्थने विस्तारथी कहे छे.—

तमंतमेणेव उ से असीले, सया दुही विप्परिआसुवेइ ।
संधावइ नरगतिरिक्खजोणी, मोणं विराहित्तु असाहुरूवे ॥ ४६ ॥

अर्थ—(असीले) कुशीळीयो एवो (से) ते द्रव्य साधु (तमंतमेणेव उ) अत्यंत अज्ञानवडे करीने ज (सया) सदा

(दुही) दुःखी थयो सतो (विप्परियास उवेइ) तत्त्वने विषे विपरीतपणाने पामे छे, तथा (असाहुरूवे) असाधुरूप एवो ते द्रव्यसाधु (मोणं) चारित्रनी (विराहित्तु) विराधना करीने (नरगतिरिक्खजोणी) नरक अने तिर्यंचनी योनि प्रत्ये (संपधावइ) निरंतर दोडे छे-जाय छे. अर्थात् चारित्रनी विराधनाथी दुर्गतिनो अनुबंध-वारंवार संबंध थाय छे. ४६.

शी रीते चारित्रनी विराधना करे छे ? अथवा शी रीते नरक अने तिर्यग्गति प्रत्ये दोडे छे ? ते कहे छे.—

उद्देसिअं कीअगडं निआगं, न मुंचई किंचि अणेसणिज्जं ।
अग्गी विवा सव्वभक्खी भवित्ता, इओ चुओ गच्छइ कट्टु पावं ॥ ४७ ॥

अर्थ—जे साधु (उद्देसिअं) औद्देशिक एटले साधुने उद्देशीने करेलो, (कीअगडं) क्रीत एटले साधुने माटे खरीद करेलो, आहृत एटले साधुनी सन्मुख आणेलो, (निआगं) नित्यक एटले हमेशां एक ज गृहस्थने घेरथी लीधेलो-एवो (किंचि) कांइ पण-कोइपण रीते (अणेसणिज्जं) अनेषणीय एटले साधुने न कल्पे एवो जे आहार तेने (न मुंचई) मूके नहीं-तजे नहीं, ते (अग्गी विवा) अग्निनी जेम (सव्वभक्खी) सर्वने भक्षण करनारो (भवित्ता) थइने (इओ) आ मनुष्य भवथी (चुओ) चव्यो थको-मरण पाम्यो थको (पावं) पाप (कट्टु) करीने, दुर्गतिमां (गच्छइ) जाय छे. ४७.

न तं अरी कंठछित्ता करोति, जं से करे अप्पणिआ दुरप्पा ।
से नाहिई मच्चुमुहं तु पत्ते, पच्छाणुतावेण दयाविहूणो ॥ ४८ ॥

अर्थ—(से) तेवा पापी साधुने (अप्पणिआ) पोतानी ज (दुरप्पा) दुरात्मता-दुष्टता (जं) जे अनर्थने (करे) करे छे, (तं) तेवा अनर्थने (कंठछित्ता) कंठने छेदनार (अरी) शत्रु पण (न करोति) करी शकतो नथी. (तु) वळी (दयाविहूणो) दया रहित एवो (से) ते साधु (मच्चुमुहं) मृत्युना समयने (पत्ते) पामे छे त्यारे (पच्छाणुतावेण) पश्चात्तापे करीने (नाहिई) 'हा ! में बहु दुष्कृत कर्यां !' ए प्रमाणे कदी पोतानी दुष्टताने जाणशे. केमके दुष्टता अनर्थनुं कारण छे अने पश्चात्तापनुं पण कारण छे. परंतु पछी जाण्युं काम आवशे नहीं. तेथी पहेलेथी ज तेने जाणीने तेनो त्याग करवो उचित छे. ४८.

जे कोइ मरण समये पण मोहने लीधे पोतानी दुरात्मताने जाणे नहीं, तो तेनुं शुं थाय ? ते कहे छे.—

निरट्ठिआ नग्गरुई उ तस्स, जे उत्तिमट्ठं विवज्जासमेई ।
इमे वि से नत्थि परे वि लोए, दुहओ वि से झिज्झइ तत्थ लोए ॥ ४९ ॥

अर्थ—(जे) जे द्रव्यसाधु (उत्तिमट्ठं) उत्तमार्थे एटले अंत समयनी आराधनाने विषे पण (विवज्जासं एइ) विपर्यासने पामे छे एटले दुरात्माने पण सुंदरपणे माने छे, (तस्स) तेनी (नग्गरुई) नाग्न्यरुचि एटले चारित्रनी रुचि

(निरट्ठिआ उ) निरर्थक ज छे. (से) तेवा साधुने (इमे वि) आलोक पण नथी अने (परे वि लोए) परलोक पण (नत्थि) नथी. (तत्थ) ते उभय लोकनो अभाव सते (लोए) जगतने विषे (दुहओ वि) आलोक अने परलोकना अभावने लीधे बन्ने प्रकारे (से) ते साधु (झिज्झइ) क्षीण थाय छे-सुखथी भ्रष्ट थाय छे. अने आलोकमां तथा परलोकमां संपत्तिवाळा जीवोने जोइने 'बन्ने लोकथी भ्रष्ट थयेला मने धिक्कार छे.' एम पश्चात्ताप करतो सतो विशेष क्षीण थाय छे. ४९.

त्यारपछी ते जे प्रकारे पश्चात्ताप पामे छे, ते बतावे छे.—

एमेवहाछंदकुसीलरूवे, मग्गं विराहित्तु जिणुत्तमाणं ।
कुररी विवा भोगरसाणुगिद्धा, निरट्ठसोआ परितावमेइ ॥ ५० ॥

अर्थ—(एमेव) ए ज रीते एटले महाव्रतनी विराधनादिक प्रकारे करीने (अहाछंदकुसीलरूवे) यथाछंद एटले इच्छा प्रमाणे वर्तनार अने कुशीलरूप एटले दुष्ट शीळना स्वभाववाळो साधु (जिणुत्तमाणं) जिनेश्वरोना (मग्गं) मार्गने (विराहित्तु) विराधना करीने (भोगरसाणुगिद्धा) भोगना-जिव्हाने स्वाद आपनार मांसना रसमां लुब्ध थयेली अने (निरट्ठसोआ) निरर्थक शोकवाळी (कुररी विवा) पक्षिणीनी जेम (परितावं एइ) पश्चात्तापने पामे छे. जेम मांसमां लुब्ध थइने जेणे मुखमां मांसनी पेशी नांखी छे एवी पक्षिणी बीजा मोटा पक्षीओथी विपत्ति पामे छे त्यारे ते शोक करे छे, अने ते वखते तेने कांइपण आपत्तिनो प्रतिकार सूझतो नथी, तेम भोगरसमां लुब्ध थयेलो साधु पण आलोक अने परलोकना

कष्ट प्राप्त थाय त्यारे शोक करे छे, पण ते स्वपरनुं रक्षा करवामां असमर्थ होवाथी अनाथ छे. ५०.

हवे जे करवा लायक छे, ते कहे छे.—

सोच्चाण मेहावि सुभासिअं ईमं, अणुसासणं नाणगुणोववेअं ।
मग्गं कुसीलाण जहाय सव्वं, महानिअंठाण वए पहेणं ॥ ५१ ॥

अर्थ—(मेहावि) हे बुद्धिमान् राजा ! (सुभासिअं) सारी रीते कहेला अने (नाणगुणोववेअं) ज्ञानगुणे करीने सहित एवा (इमं) आ (अणुसासणं) उपदेशनां वचनो (सोच्चाण) सांभळीने (कुसीलाण) कुशीलीयाना (सव्वं) सर्व (मग्गं) मार्गने (जहाय) तजीने, तमे (महानिअंठाण) महा निर्ग्रंथना (पहेणं) मार्गे (वए) चालो. ५१. (आ उपदेश सर्वने माटे छे; मात्र राजा माटे नथी.)

तेम करवाथी शुं फळ थाय ? ते कहे छे.—

चरित्तमायारगुणन्निए तओ, अणुत्तरं संजम पालिआणं ।
निरासवे संखविआण कम्मं, उवेइ ठाणं विउलुत्तमं धुवं ॥ ५२ ॥

अर्थ—(तओ) ते महानिर्ग्रंथना मार्गे जवाथी (चरित्तमायारगुणन्निए) चारित्राचार एटले चारित्रनुं सेवन अने गुण एटले ज्ञान, शील विगेरे गुणो, तेणे करीने सहित, तथा (निरासवे) आश्रव रहित एवो साधु (अणुत्तरं) सर्वोत्तम

एवा (संजम) सतर प्रकारना संयमने (पालिआणं) पाळीने तथा (कम्मं) आठ प्रकारना कर्मने (संखविआण) खपावीने (विउलुत्तमं) विशाळ, उत्तम अने (धुवं) निश्चळ एवा (ठाणं) मोक्षस्थानने (उवेइ) पामे छे. ५२.

हवे मुनि पोतानुं कहेवुं समाप्त करे छे.—

एवुग्गदंते वि महातवोधणे, महामुणी महापइण्णे महायसे ।

महानियंठिज्जमिणं महासुअं, से काहए महया वित्थरेणं ॥ ५३ ॥

अर्थ—(एव) आ प्रमाणे (उग्गदंते वि) कर्मरूपी शत्रु प्रत्ये उग्र-भयंकर, तथा दांत एटले इंद्रियो अने मनने दमन करनार, तथा (महातवोधणे) महा तपरूपी धनवाळा, तथा (महापइण्णे) महा प्रतिज्ञावाळा एटले दृढ व्रतवाळा, तथा (महायसे) महा यशवाळा एवा (से) ते (महामुणी) महामुनिए (महानियंठिज्जं) महानिर्ग्रंथीय एटले साधुओने हितकारक (इणं) आ (महासुअं) उपर कहेलुं महाश्रुत (महया) मोटा (वित्थरेणं) विस्तारथी (काहए) कह्युं छे. ५३.

त्यार पछी.—

तुट्ठो अ सेणिओ राया, इणमुदाहु कयंजली । अणाहत्तं जहाभूयं, सुट्ठु मे उवदंसिअं ॥ ५४ ॥

अर्थ—(तुट्ठो अ) तुष्टमान थयेला (सेणिओ राया) श्रेणिक राजा (कयंजली) हाथ जोडीने (इणं उदाहु)

आ प्रमाणे बोल्या के—हे महामुनि ! (जहाभूयं) यथार्थ–सत्य एवुं (अणाहत्तं) अनाथपणुं तमे (मे) मने (सुट्ठु) सारुं (उवदंसिअं) देखाड्युं छे–समजाव्युं छे. ५४.

तुब्भं सुलद्धं खु मणुस्सजम्मं, लाभा सुलद्धा य तुमे महेसी ।
तुब्भे सणाहा य सबंधवा य, जं भे ठिआ मग्गि जिणुत्तमाणं ॥ ५५ ॥

अर्थ—(महेसी) हे महर्षि ! (तुब्भं) तमारो (मणुस्सजम्मं) मनुष्य भव (सुलद्धं खु) सारो प्राप्त थयेलो ज छे–सफळ ज छे; (य) तथा (तुमे) तमने (लाभा) रूप, वर्ण, विद्या विगेरे लाभो (सुलद्धा) सारा प्राप्त थयेला छे, (य) तथा (तुब्भे) तमे ज (सणाहा) सनाथ–आत्माना नाथ होवाथी नाथ सहित छो, (य) तथा (सबंधवा) तमे ज ज्ञाति कुटुंबादिक बंधु सहित छो. (जं) कारण के (भे) तमे (जिणुत्तमाणं) जिनेश्वरना (मग्गि) मार्गने विषे (ठिआ) रहेला छो. ५५.

तं सि णाहो अणाहाणं, सव्वभूआण संजया । खामेमि ते महाभाग !, इच्छामु अणुसासिउं ॥ ५६ ॥

अर्थ—(संजया) हे मुनीश्वर ! (तं) तमे (अणाहाणं) नाथ रहित एवा (सव्वभूआण) त्रस अने स्थावर सर्व प्राणीओना (णाहो) नाथ (सि) छो. (महाभाग) हे महा भाग्यवान ! (ते) तमने हुं (खामेमि) खमावुं छुं. में प्रथम तमारो मारुं सनाथपणुं कहीने जे अपराध कर्यो तेनी हुं क्षमा मागुं छुं, अने (अणुसासिउं) मारा आत्माने अनुशा-

सन करवा (इच्छामु) इच्छुं छुं, एटले तमे मने शिक्षा–उपदेश आपो, एम इच्छुं छुं. हुं तमारी आज्ञामां छुं. ५६.

फरीथी विशेषे करीने क्षमा मागे छे.—

पुच्छिऊण मए तुब्भं, झाणविग्घो उ जो कओ। निमंतिआ य भोगेहिं, तं सव्वं मरिसेह मे ॥५७॥

अर्थ—हे महर्षि ! (मए) में (तुब्भं) तमने (पुच्छिऊण) दीक्षा लेवानुं कारण पूछीने (जो) जे (झाणविग्घो उ) तमारा ध्यानमां विघ्न (कओ) करेल छे, (य) तथा (भोगेहिं) भोगोवडे–भोग भोगववा (निमंतिआ) तमने में निमंत्रण कर्युं छे, (तं सव्वं) ते सर्व (मे) मारा अपराधने (मरिसेह) क्षमा करो. ५७,

हवे आ अध्ययनने समाप्त करतां कहे छे.—

एवं थुणित्ताण स रायसीहो,–ऽणगारसीहं परमाइ भत्तिए ।
सओरोहो सपरिअणो सबंधवो, धम्माणुरत्तो विमलेण चेअसा ॥ ५८ ॥

अर्थ—(एवं) आ प्रकारे (स) ते (रायसीहो) राजाओना मध्यमां सिंह समान श्रेणिक राजा (अणगारसीहं) मुनिओने विषे सिंह समान एवा ते मुनिने (परमाइ भत्तिए) उत्कृष्ट भक्तिवडे (थुणित्ताए) स्तवीने–स्तुति करीने (सओरोहो) अंतःपुर सहित, तथा (सपरिअणो) परिवार सहित, तथा (सबंधवो) बंधुजन सहित (विमलेण चेअसा) निर्मळ चित्तवडे (धम्माणुरत्तो) धर्मने विषे अनुरक्त–रागी थयो. ५८,

ऊससिअरोमकूवो, काऊण य पयाहिणं । अभिवंदित्ता सिरेसा, अतिजातो नराहिवो ॥ ५९ ॥

अर्थ—(ऊससिअरोमकूवो) मुनिना दर्शनथी तथा तेना वाक्य श्रवण करवाथी विकस्वर थया छे रोमकूप एटले रोमांच जेना एवो (नराहिवो) नराधिप एटले श्रेणिक राजा (पयाहिणं) ते मुनिने प्रदक्षिणा (काऊण य) करीने तथा (सिरसा) मस्तकवडे (अभिवंदित्ता) तेमना चरणने वांदीने (अतिजातो) अतियात: एटले पोताने स्थाने गयो. ५९.

इअरो वि गुणसमिद्धो, तिगुत्तिगुत्तो तिदंडविरओ अ ।

विहग इव विप्पमुक्को, विहरइ वसुहं विगयमोहो त्ति बेमि ॥ ६० ॥

अर्थ—(इअरो वि) श्रेणिक राजानी अपेक्षाए इतर-बीजा एटले ते महर्षि पण (गुणसमिद्धो) मुनिना सत्तावीश गुणे करीने सहित, तथा (तिगुत्तिगुत्तो) मन, वचन अने काया ए त्रण गुप्तिथी गुप्त, तथा (तिदंडविरओ अ) मन, वचन अने कायाना त्रण दंडे करीने एटले अशुभ व्यापारे करीने रहित, तथा (विहग इव) पक्षीनी जेम (विप्पमुक्को) कोइ पण ठेकाणे प्रतिबंध रहित एटले परिग्रह रहित, तथा अनुक्रमे (विगयमोहो) मोह रहित एटले मोहनीय कर्मनो क्षय करवाथी केवळज्ञानवाळा थया सता (वसुहं) पृथ्वीपर (विहरइ) विचरवा लाग्या. (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं. ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. ६०.

॥ इति विंशतितममध्ययनम् ॥ २० ॥

अथ समुद्रपालीय नामनुं एकवीशमुं अध्ययन. २१.

वीशमा अध्ययनमां अनाथपणुं कह्युं. तेनो विचार विविक्त-एकांत चर्यावडे थइ शके छे, तेथी आ एकवीशमा अध्ययनमां समुद्रपाळना दृष्टांते करीने विविक्त चर्या कहे छे.—

चंपाए पालिए नामं, सावए आसि वाणिए। महावीरस्स भगवओ, सीसे सो उ महप्पणो ॥ १ ॥

अर्थ—(चंपाए) चंपा नगरीमां (पालिए नामं) पालित नामनो (सावए) श्रावक एटले देशविरतिने धारण करतो (वाणिए) वणिक (आसि) हतो. (सो उ) ते (महप्पणो) महात्मा (महावीरस्स) श्रीमहावीर (भगवओ) भगवानना (सीसे) शिष्य हतो. महावीरस्वामीए तेने प्रतिबोध करी श्रावक कर्यो हतो तेथी तेमनो ते शिष्य कहेवाय छे. १.

निग्गंथे पावयणे, सावए से विकोविए। पोएण ववहरंते, पिहुंडं नगरमागए ॥ २ ॥

अर्थ—(निग्गंथे) साधुना एटले वीतरागना (पावयणे) सिद्धांतमां (विकोविए) अत्यंत पंडित एवो (से) ते (सावए) पालित श्रावक एकदा (पोएण) वहाणवडे (ववहरंते) वेपार करतो सतो (पिहुंडं) पिहुंड नामना (नगरं) नगरने विषे (आगए) आव्यो. चंपा नगरीथी वहाणमां बेसीने वेपारने माटे पिहुंड नगरे आव्यो. २.

पिहुंडे ववहरंतस्स, वाणिओ देइ धूअरं। तं ससत्तं पइगिज्झ, संदेसमह पत्थिओ ॥ ३ ॥

અર્થ—(પિહુંડે) પિહુંડ નગરમાં (વવહરંતસ્સ) વેપાર કરતા એવા તે પાલિતને તેના ગુણથી રંજન થયેલા કોઇ (વાણિઓ) વણિકે (ધૂઅરં) પોતાની પુત્રી (દેઇ) આપી–પરણાવી. (અહ) ત્યારપછી ત્યાં કેટલોક વખત રહીને (સસત્તં) ગર્ભવતી થયેલી (તં) તેણીને (પઇગિજ્ઝ) સાથે લઇ તે પાલિત (સદેસં) પોતાના દેશ તરફ (પત્થિઓ) ચાલ્યો. ૩.

અહ પાલિઅસ્સ ઘરણી, સમુદ્દમ્મિ પસવઇ । અહ દારએ તહિં જાએ, સમુદ્દપાલો ત્તિ નામએ ॥૪॥

અર્થ—(અહ) ત્યારપછી (પાલિઅસ્સ) પાલિતની (ઘરણી) સ્ત્રીને (સમુદ્દમ્મિ) સમુદ્રને વિષે જ (પસવઇ) પ્રસવ થયો. (અહ) તેથી (તહિં) ત્યાં સમુદ્રમાં (દારએ) પુત્ર (જાએ) ઉત્પન્ન થયે સતે (સમુદ્દપાલો ત્તિ) સમુદ્રપાળ એવું (નામએ) તેનું નામ પાડ્યું. ૪.

ખેમેણ આગએ ચંપં, સાવએ વાણિએ ઘરં । સંવડ્ઢઇ ઘરે તસ્સ, દારએ સે સુહોઇએ ॥ ૫ ॥

અર્થ—(વાણિએ) તે વણિક (સાવએ) શ્રાવક (ખેમેણ) ક્ષેમ કુશળતાથી (ચંપં) ચંપા નગરીમાં (ઘરં) પોતાને ઘેર (આગએ) આવે સતે (સુહોઇએ) સુખને ઉચિત એવો (સે) તે (દારએ) બાળક–સમુદ્રપાળ (તસ્સ ઘરે) તે પાલિતને ઘેર (સંવડ્ઢઇ) વૃદ્ધિ પામવા લાગ્યો. ૫.

બાવત્તરિં કલાઓ અ, સિક્ખએ નીઇકોવિએ । જોવ્વણેણ ય સંપન્ને, સુરૂવે પિઅદંસણે ॥ ૬ ॥

अर्थ—(अ) तथा ते समुद्रपाळ (बावत्तरिं) बहोंतेर (कलाओ) कळाओने (सिक्खिए) शीख्यो सतो (नीइ-कोविए) नीतिमां निपुण थयो एटले लोकनीति अने धर्मनीतिमां चतुर थयो, (य) तथा (जोव्वणेण) युवावस्थाए करीने (सुरूवे) सारा रूपवाळो अने (पिअदंसणे) मनोहर दर्शनवाळो (संपत्ते) थयो. ६.

तस्स रूववइं भज्जं, पिआ आणेइ रूविणिं । पासाए कीलए रम्मे, देवो दोगुंदगो जहा ॥ ७ ॥

अर्थ—(तस्स) ते समुद्रपाळनो (पिआ) पिता (रूववइं) रूपवाळी (रूविणिं) रूपिणी नामनी (भज्जं) भार्याने—कन्याने समुद्रपाळ माटे (आणेइ) लाव्यो अने ते रूपिणी नामनी कन्या साथे समुद्रपाळने परणाव्यो पछी ते(रम्मे) मनोहर (पासाए) प्रासादने विषे (दोगुंदगो) दोगुंदक जातिना (देवो) देवनी (जहा) जेम (कीलए) इच्छा प्रमाणे तेणीनी साथे क्रीडा करवा लाग्यो. ७.

अह अन्नया कयाइ, पासायालोयणे ठिओ । वज्झमंडणसोभागं, वज्झं पासइ वज्झगं ॥ ८ ॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (अन्नया) एकदा (कयाइ) कदाचित (पासायालोयणे) प्रासादना आलोकनमां एटले गोखमां (ठिओ) बेठेला एवा ते समुद्रपाळे (वज्झमंडणसोभागं) राता चंदन अने करवीरना पुष्पनी माळा विगेरे वध्यना भूषणोथी शोभावेला तथा (वज्झगं) वध्यभूमि तरफ लइ जवाता एक (वज्झं) वध्यने—चोरने (पासइ) जोयो. ८.

तं पासिऊण संवेगं, समुद्दपालो इणमब्बवी । अहो असुहाण कम्माणं, निज्जाणं पावगं इमं ॥ ९ ॥

अर्थ—(तं) ते वध्यने (पासिऊण) जोइने (संवेगं) वैराग्य पामेलो (समुद्दपालो) समुद्रपाळ (इणं) आ प्रमाणे (अब्बवी) बोल्यो के (अहो) अहो ! (असुहाण) अशुभ (कम्माणं) कर्मोनो (इमं) आ (पावगं) अशुभ (निज्जाणं) निर्याण—अवसानं एटले उदय केवो आश्चर्यकारक छे ! के जेथी आ बिचारो वधने माटे आ प्रमाणे लइ जवाय छे. ९.

संबुद्धो सो तहिं भयवं, परमं संवेगमागओ । आपुच्छऽम्मापिअरो, पव्वए अणगारिअं ॥ १० ॥

अर्थ—(सो) ते समुद्रपाळ (भयवं) भगवान—पूज्य (तहिं) ते गवाक्षमां ज (संबुद्धो) बोध पाम्या सता तथा (परमं) अत्यंत (संवेगं) वैराग्यने (आगओ) पाम्या सता (अम्मापिअरो) मातापिताने (आपुच्छ) पूछीने—तेमनी रजा लइने (अणगारिअं) अनगारपणाने—चारित्रने (पव्वए) अंगीकार करता हवा. १०.

प्रव्रज्या लइने तेणे जे रीते आत्माने शिक्षा आपी तथा जे रीते प्रवृत्ति करी ते कहे छे.—

जहित्तु संगं च महाकिलेसं, महंतमोहं कसिणं भयावहं ।
परिआयधम्मं चऽभिरोयइज्जा, वयाणि सीलाणि परीसहे अ ॥ ११ ॥

अर्थ—ते विचारे छे के—हे आत्मा ! (महाकिलेसं) महा क्लेशकारक, तथा (महंतमोहं) महामोहवाळा, तथा (कसिणं) समग्र अथवा कृष्णलेश्यानुं कारण होवाथी कृष्ण, तथा (भयावहं) भयदायक एवा (संगं च) स्वजनादिक

संबंधने (जहित्तु) तजीने (परिआयधम्मं च) पर्याय धर्मने विषे-चारित्रधर्मने विषे (अभिरोयइज्जा) तुं रुचिवाळो था, एटले के (वयाणि) मूळगुणरूपी पांच महाव्रतोने विषे, तथा (सीलाणि) पिंडविशुद्ध्यादिक उत्तरगुणोरूपी शीळने विषे, (अ) तथा (परीसहे) बावीश परीषहो सहन करवाने विषे रुचिवाळो था. ११.

त्यारपछी जे करवानुं छे ते कहे छे.—

अहिंस सच्चं च अतेणगं च, तत्तो य बंभं अपरिग्गहं च ।
पडिवज्जिआ पंच महव्वयाइं, चरिज्ज धम्मं जिणदेसिअं विऊ ॥ १२ ॥

अर्थ—(अहिंस) अहिंसा, (सच्चं च) सत्य, तथा (अतेणगं च) अचौर्य, तथा (तत्तो य) त्यारपछी (बंभं) ब्रह्मचर्य, (अपरिग्गहं च) तथा अपरिग्रह, ए (पंच) पांच (महव्वयाइं) महाव्रतोने (पडिवज्जिआ) अंगीकार करीने हे आत्मा ! (विऊ) विद्वान एवो तुं (जिणदेसिअं) जिनेश्वरे कहेला (धम्मं) धर्मनुं (चरिज्ज) आचरण-सेवन कर. १२.

सव्वेहिं भूएहिं दयाणुकंपी, खंतिक्खमे संजयबंभयारी ।
सावज्जजोगं परिवज्जयंतो, चरेज्ज भिक्खू सुसमाहिइंदिए ॥ १३ ॥

अर्थ—(सव्वेहिं) सर्व (भूएहिं) प्राणीओने विषे (दयाणुकंपी) हितोपदेशरूप अने रक्षणरूप दयाए करीने

अनुकंपाना स्वभाववाळो, तथा (खंतिक्खमे) क्षांतिए करीने बीजाना दुर्वचनादिकने सहन करनार, तथा (संजय) साधुना आचारने पाळनार, तथा (बंभयारी) ब्रह्मचर्यने धारण करनार एवो (भिक्खू) भिक्षुरूप तुं हे आत्मा ! (सावज्जजोगं) सावद्य योगने (परिवज्जयंतो) वर्जतो–त्याग करतो सतो (सुसमाहिइंदिए) सारी रीते वश करी छे इंद्रियो जेणे एवो (चरेज्ज) चारित्रमार्गने विषे विचर–विहार कर. १३.

कालेण कालं विहरिज्ज रट्ठे, बलाबलं जाणिअ अप्पणो अ।
सीहो व सद्देण न संतसिज्जा, वयजोग सुच्चा ण असब्भमाहु ॥ १४ ॥

अर्थ—हे आत्मा ! (कालेण) पौरुषी–पोरसी आदिक काळे (कालं) काळने उचित एवी पडिलेहणादिक क्रियाने करीने (अ) तथा (अप्पणो) पोताना (बलाबलं) बळाबळने एटले उपसर्गादिकने सहन करवापणुं अने नहीं सहन करवापणुं तेने (जाणिअ) जाणीने (रट्ठे) देशने विषे तथा उपलक्षणथी ग्रामादिकने विषे (विहरिज्ज) तुं विचर, जेम संयमयोगनी हानि न थाय तेम विहार करवो तथा (सीहो व) सिंहनी जेम (सद्देण) भयानक शब्दवडे–शब्द सांभळीने (न संतसिज्जा) त्रास पामीश नहीं, तथा (वयजोग) अशुभ एवा वचनयोगने (सुच्चा) सांभळीने पण (असब्भं) असभ्य वचन–अयोग्य वचन (ण आहु) बोलीश नहीं. १४.

त्यारे शुं करवुं ? ते कहे छे.—

उवेहमाणो उ परिव्वएज्जा, पियमप्पिअं सव्व तितिक्खएज्जा ।
न सव्व सव्वत्थऽभिरोअइज्जा, न यावि पूअं गरहं च संजए ॥ १५ ॥

अर्थ—(उ) तु पुनः वळी (उवेहमाणो) परना कहेला अशुभ वचननी उपेक्षा करता सता तारे (परिव्वएज्जा) विचरवुं. तथा (पिअं अप्पिअं) लोकोना प्रिय के अप्रिय (सव्व) सर्व वचनोने (तितिक्खएज्जा) सहन करवां, तथा (सव्व) सर्व वस्तुने विषे (सव्वत्थ) सर्व ठेकाणे (न अभिरोअइज्जा) रुचि-इच्छा करवी नहीं. (यावि) तथा वळी (पूअं) लोकोनी करेली पूजाने-स्तुतिने (गरहं च) अने निंदाने (संजए) संयमवाळा तारे (न) इच्छवी नहीं-तेना पर तारे रागद्वेष करवो नहीं. १५.

अहीं कोइने शंका थाय के-भिक्षुने पण शाथी अन्यथा भाव होय ? के जेथी आत्माने आ प्रमाणे शिक्षा आपवी पडे ? ते उपर कहे छे.-

अणेग छंदा मिह माणवेहिं, जे भावओ संपकरेइ भिक्खू ।
भयभेरवा तत्थ उइंति भीमा, दिव्वा मणुस्सा अदुवा तिरिच्छा ॥ १६ ॥

अर्थ—(मिह) आ जगतने विषे (माणवेहिं) मनुष्योने (अणेग) अनेक (छंदा) अभिप्रायो-इच्छाओ थाय छे. के (जे) जे अभिप्रायोने (भिक्खू) कर्मने वश रहेलो साधु पण (भावओ) भावथी -मनथी (संपकरेइ) अत्यंत करे छे.

वडी (तत्थ) ते साधुपणाने विषे (भयभेरवा) भय उत्पन्न करवावडे करीने भयंकर अने (भीमा) अति रौद्र एवा (दिव्वा) देवसंबंधी, (मणुस्सा) मनुष्यसंबंधी (अदुवा) अथवा (तिरिच्छा) तिर्यंचसंबंधी उपसर्गो (उइंति) उदयमां आवे छे—उत्पन्न थाय छे. १६.

तथा.—

परीसहा दुव्विसहा अणेगे, सीदंति जत्था बहुकायरा नरा ।
से तत्थ पत्ते न वहिज्ज भिक्खू, संगामसीसे इव नागराया ॥ १७ ॥

अर्थ—(दुव्विसहा) दुःखे करीने सहन थइ शके तेवा (अणेगे) अनेक (परीसहा) परीषहो पण उत्पन्न थाय छे, के (जत्था) जे उपसर्गो अने परीषहो उत्पन्न थये सते (बहुकायरा) घणा कायर (नरा) मनुष्यो (सीदंति) सीदाय छे एटले चारित्र पाळवामां शिथिल थाय छे. (से) हवे (तत्थ) ते उपसर्ग अने परीषहोने विषे (पत्ते) प्राप्त थयेलो अथवा उपसर्गो अने परीषहो प्राप्त थये सते (भिक्खू) साधु थयेलो तुं (संगामसीसे) संग्रामना मोखरामां प्राप्त थयेला (नागराया इव) हाथीनी जेम (न वहिज्ज) व्यथा पामीश नहीं—सत्त्वथी चलायमान थइश नहीं. १७.

सीतोसिणा दंसमसा य फासा, आयंका विविहा फुसंति देहं ।
अकुक्कुओ तत्थऽहियासएज्जा, रयाइं खवेज्ज पुरेकडाइं ॥ १८ ॥

अर्थ—(सीतोसिणा) शीत, उष्ण, (दंसमसा य) दंश, मशक, (फासा) तृणादिकना स्पर्शो, तथा (विविहा) विविध प्रकारना (आयंका) व्याधिओ विगेरे सर्व परीषहो (देहं) दास शरीरने (फुसंति) स्पर्श करे छे—पीडा उपजावे छे. (तत्थ) ते शीतादिक परीषहोनो स्पर्श थये सते (अकुक्कुओ) आक्रंद कर्या विना ज तारे (अहियासएज्जा) ते परीषहोने सहन करवा. एम करवाथी तुं (पुरेकडाइं) पूर्वे करेला (रयाइं) कर्मरूपी रजने (खवेज्ज) क्षय करी शकीश. १८.

पहाय रागं च तहेव दोसं, मोहं च भिक्खू सययं वियक्खणो ।
मेरु व्व वाएणे अकंपमाणो, परीसहे आयगुत्ते सहेज्जा ॥ १९ ॥

अर्थ—(सययं) निरंतर (वियक्खणो) विचक्षण एटले तत्त्वना विचारमां तत्पर एवो (भिक्खू) साधु (रागं च) रागने (तहेव) तथा (दोसं) द्वेषने (मोहं च) तथा मोहने (पहाय) तजीने (वाएण) वायुवडे (मेरु व्व) मेरु पर्वतनी जेम परीषहोवडे (अकंपमाणो) नहीं कंपतो सतो तथा (आयगुत्ते) काचबानी जेम आत्माने एटले इंद्रियोने गुप्त करतो सतो (परीसहे) परीषहोने (सहेज्जा) सहन करे छे. १९.

अणुन्नए नावणए महेसी, न यावि पूयं गरिहं च संजए ।
से उज्जुभावं पडिवज्ज संजए, निव्वाणमग्गं विरए उवेइ ॥ २० ॥

अर्थ—(अणुन्नए) अनुन्नत एटले अभिमान रहित अने (नावणए) नावनत एटले दीनता रहित एवा जे (महेसी) महर्षि (पूअं) पूजानो–स्तुतिनो (गरिहं च) तथा गर्हानो–निंदानो (न यावि संजए) संग न ज करे एटले स्तुति अने निंदानो प्रसंग न करे, अर्थात् साधु पोतानी स्तुति सांभळी हर्ष न करे अने निंदा सांभळी दुःख न पामे. (से) ते (संजए) साधु (उज्जुभावं) सरळताने (पडिवज्ज) अंगीकार करीने (विरए) पापथी विराम पाम्या सता (निव्वाणमग्गं) मोक्षमार्गने (उवेइ) पामे छे. २०.

वळी ते साधु केवा थइने शुं करे छे ? ते कहे छे.—

अरइरइसहे पहीणसंथवे, विरए आयहिए पहाणवं ।
परमट्ठपएहिं चिट्ठई, छिन्नसोए अममे अकिंचणे ॥ २१ ॥

अर्थ—(अरइरइसहे) संयममां अरति अने असंयममां रति तेने सहन करनार एटले नाश करनार, तथा (पहीण-संथवे) नाश पाम्यो छे संस्तव एटले पूर्वनो अने पछीनो गृहस्थ साथेनो परिचय जेनो एवा, तथा (विरए) पापक्रियाथी निवृत्त थयेला, तथा (आयहिए) आत्मा अने सर्व जीवोने हितकारक, तथा (पहाणवं) प्रधान एटले संयमवाळा, तथा (छिन्नसोए) नाश कर्यो छे शोक अथवा मिथ्यात्वादिक श्रोतस् जेणे एवा, ए ज कारण माटे (अममे) ममता रहित अने ए ज कारण माटे (अकिंचणे) परिग्रह रहित एवा ते साधु (परमट्ठपएहिं) परमार्थना–मोक्षना स्थानोने विषे (चिट्ठई) रहे छे–रहेता हवा. २१.

विवित्तलयणाणि भइज्ज ताई, निरुवलेवाइँ असंथडाइं ।
इसीहिँ चिण्णाइँ महायसेहिं, कायेण फासेज्ज परीसहाइं ॥ २२ ॥

अर्थ—(ताई) छकाय जीवनी रक्षा करनार ते समुद्रपालित मुनि (निरुवलेवाइं) द्रव्यथी छाण विगेरेना लेप रहित अने भावथी राग एटले ममतारूपी लेप रहित, तथा (असंथडाइं) असंस्कृत एटले शालि विगेरे बीजना संघट्टा रहित, तथा (महायसेहिं) महा यशवाळा (इसीहिं) मुनिओए (चिण्णाइं) सेवेलां एवां (विवित्तलयणाणि) विविक्त एटले स्त्री, पशु, पंडक रहित एवां आलय एटले उपाश्रयने (भइज्ज) सेवता हवा, तथा (कायेण) कायावडे (परीसहाइं) परीषहोने (फासेज्ज) स्पर्श एटले सहन करता हवा. २२.

त्यारपछी ते केवा थया ? ते कहे छे.—

स नाणनाणोवगए महेसी, अणुत्तरं चरिउं धम्मसंचयं ।
अणुत्तरनाणधरे जसंसी, ओभासई सूरिइ वंतलिक्खे ॥ २३ ॥

अर्थ—(नाणनाणोवगए) ज्ञान एटले श्रुतज्ञान, तेणे करीने जे ज्ञान एटले सम्यक् प्रकारे क्रियाना समूहनुं जाणवुं, तेणे करीने सहित अर्थात् श्रुतज्ञान अने क्रियाना ज्ञाने करीने सहित एवा (स) ते समुद्रपाळ नामना (महेसी) महर्षि (अणुत्तरं) सर्वोत्तम (धम्मसंचयं) धर्मना समूहने एटले क्षान्त्यादिक दश प्रकारना चारित्रधर्मने (चरिउं) सेवीने

(अणुत्तरेणाणधरे) सर्वोत्तम ज्ञान ज केवळज्ञान तेने धारण करनारा तथा (जंससी) यशस्वी थया संता (अंतलिक्खे) आकाशने विषे (सूरिए व) सूर्यनी जेम (ओभासई) प्रकाशता हवा-शोभता हवा. २३.

हवे उपसंहार-समाप्त करवा पूर्वक तेनुं ज फळ कहे छे.—

दुविहं खवेऊण य पुण्णपावं, निरंगणे सव्वओ विप्पमुक्के ।
तरित्ता समुद्दं व महाभवोहं, समुद्दपालो अपुणागमं गए त्ति बेमि ॥ २४ ॥

अर्थ—(य) तथा (दुविहं) घाती अने भवोपग्राहि—अघाती एम बे प्रकारना (पुण्णपावं) शुभ अने अशुभ प्रकृतिरूप कर्मने (खवेऊण) खपावीने-क्षय करीने (निरंगणे) निरंगन-थयुं छे अंगन एटले चालवुं जेनाथी एटले संयममां निश्चळ तथा (सव्वओ) सर्वथी एटले बाह्य अने आभ्यंतर परिग्रहथी (विप्पमुक्के) रहित एवा (समुद्दपालो) समुद्रपाळ मुनि (समुद्दं व) समुद्रनी जेवा (महाभवोहं) मोटा स्वर्गादिक भवना समूहने (तरित्ता) तरीने (अपुणागमं) जेनाथी पाछुं आववानुं नथी एवा अपुनरागमने एटले मोक्षने (गए) पाम्या. (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं. ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. २४.

इति एकविंशमध्ययनम् ॥ २१ ॥

अथ रथनेमीय नामनुं बावीशमुं अध्ययन. २२

एकवीशमा अध्ययनमां विविक्तचर्या कही, ते धैर्यवंतने सुखेथी पाळी शकाय छे, छतां कदाचित् कोइक प्रकारे मनना परिणाम धर्मथी भ्रष्ट थाय ते वखते रथनेमिनी जेम चारित्रने विषे धृति करवी, एम जणाववा माटे आ अध्ययन रच्युं छे. तेनुं आ प्रथम सूत्र छे.—

सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिड्ढिए । वसुदेव त्ति नामेणं, रायलक्खणसंजुए ॥ १ ॥

अर्थ—(सोरियपुरम्मि) शौर्यपुर नामना (नयरे) नगरमां (महिड्ढिए) मोटी ऋद्धिवाळा तथा (रायलक्खणसंजुए) हाथ पगना तळीयामां चक्र, स्वस्तिक, अंकुश विगेरे अथवा औदार्य, धैर्य, गांभीर्य विगेरे राजानां लक्षणोवडे युक्त (वसुदेव त्ति नामेणं) वसुदेव एवा नामे (राया) राजा (आसि) हता. जो के शौर्यपुरमां समुद्रविजय विगेरे दश दशार्हो, दश भाइओ हता, तेमां वसुदेव सौथी नाना हता, तोपण वसुदेवना पुत्र कृष्ण थया छे तेथी अहीं वसुदेवनुं वर्णन कर्युं छे. १.

तस्स भज्जा दुवे आसि, रोहिणी देवई तहा । तासिं दोण्हं पि दो पुत्ता, इट्ठा रामकेसवा ॥२॥

अर्थ—(तस्स) ते वसुदेवने (रोहिणी) रोहिणी नामनी (तहा) तथा (देवई) देवकी नामनी (दुवे) बे (भज्जा) भार्या (आसि) हती. जो के वसुदेवने बहोंतेर हजार स्त्रीओ हती. तोपण अहीं बेनी ज जरूर होवाथी बे ज लखी छे.

(तासिं) ते (दोण्हं पि) बन्ने भार्याओने (अइट्ठा) अत्यंत इष्ट–वल्लभ एवा (रामकेसवा) बळराम अने केशव–कृष्ण नामना (दो पुत्ता) बे पुत्रो थया. राम अने केशव प्रथम उत्पन्न थया हता तथा श्रीनेमिनाथना विवाहादिक कार्यमां तेमनी जरूर छे तेथी तेमने प्रथम लख्या छे. २.

सोरियपुरम्मि नयरे, आसि राया महिड्डिए । समुद्दविजए नामं, रायलक्खणसंजुए ॥ ३ ॥

अर्थ—(सोरियपुरम्मि) शौर्यपुर नामना (नयरे) नगरमां (महिड्डिए) मोटी ऋद्धिवाळा अने (रायलक्खणसंजुए) राजानां लक्षणोए करीने युक्त एवा (समुद्दविजए नामं) समुद्रविजय नामना (राया) राजा (आसि) हता. अहीं वसुदेव अने समुद्रविजय साथे ज रहेता हता एवुं जणाववा माटे फरीथी शौर्यपुर लख्युं छे. ३.

तस्स भज्जा सिवा नाम, तीसे पुत्ते महायसे । भयवं अरिट्ठनेमि त्ति, लोगनाहे दमीसरे ॥ ४ ॥

अर्थ—(तस्स) ते समुद्रविजयने (सिवा नाम) शिवा नामनी (भज्जा) भार्या हती. (तीसे) ते शिवादेवीना (पुत्ते) पुत्र (भयवं) भगवान (अरिट्ठनेमि त्ति) श्रीअरिष्टनेमि एवा नामना (महायसे) महा यशवाळा, (लोगनाहे) त्रण लोकना नाथ अने (दमीसरे) मुनिओना स्वामी हता. ४. (हवे पछी थवाना होवाथी ते अपेक्षाए दमीश्वरनुं विशेषण आप्युं छे.)

अहीं प्रसंगने लीधे श्रीनेमिनाथनुं चरित्र संक्षेपथी कहे छे.—

आ ज भरतक्षेत्रमां अचलपुर नामनुं पुर छे. तेमां श्रीविक्रमधन नामे राजा हतो. तेने धारिणी नामनी राणी हती. तेमने धन नामनो पुत्र हतो. ते सर्व कळाना समूहने पामीने अनुक्रमे युवावस्था पाम्यो, त्यारे ते कुसुमपुरना राजा सिंहनी धनवती नामनी कन्याने परण्यो. लक्ष्मीनी साथे विष्णुनी जेम ते धनवतीनी साथे क्रीडा करतो ते धनकुमार एकदा ग्रीष्म ऋतुमां मध्याह्न समये क्रीडा करवा माटे उद्यानमां गयो. त्यां तेणे पृथ्वीपर मूर्छित थयेला एक मुनिने जोया. ते मुनिनुं तालवुं तृषाथी सुकाइ गयुं हतुं, तपवडे तेनुं शरीर अति कृश हतुं, अने गुणवडे तो ते शांतरसना समुद्र हता. तेमनी आवी स्थिति जोइ ते बन्ने दंपतीए तेमनी पासे जइ शीतळ उपचार करी शीघ्रपणे तेमने स्वस्थ कर्या. पछी विनयथी मुनिने वंदना करी धनकुमारे तेमने पूछयुं के—" हे भगवान् ! आपनी आवी अवस्था केम थइ ? " मुनिए जवाब आप्यो के—" हुं मुनिचंद्र नामनो साधु छुं. मोटा गच्छनी साथे विहार करतां सार्थथी भ्रष्ट थयो, तेथी आ वनमां दिशा नहीं सूझवाथी आमतेम भ्रमण करवा लाग्यो. अनुक्रमे क्षुधा अने तृषाथी पीडा पाम्यो, चालतां चालतां थाकी गयो, अने आ ग्रीष्म ऋतुना तापथी अकळाइ गयो, तेथी अहीं मूर्छा आववाथी पडी गयो हतो. तेटलामां तमारा आववाथी, ने तमे करेला उपचारथी हुं चेतना पाम्यो छुं. तेथी धर्ममां सहाय आपनारा तमने धर्मलाभ हो. वळी हे महानुभाव ! जेम प्रतिमा विना देवालय शोभतुं नथी, तेम धर्म विना आ मनुष्यभव शोभतो नथी, तेथी बुद्धिमान पुरुषोए निरंतर धर्ममां उद्यम करवो योग्य छे. " आ प्रमाणे कहीने मुनिए ते दंपतीनी पासे समकित सहित श्रावकधर्मनो उपदेश आप्यो. ते सांभळी प्रतिबोध पामी ते बन्नेए ते मुनि पासे श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. पछी मुनिने निमंत्रणा करी पोताने घेर लइ जइ तेमने अन्न पाणी

महोराव्यां, अने धर्म शीखवा माटे मुनिने थोडा दिवस त्यां ज राख्या. मुनिए पण केटलाक दिवस त्यां रही तेमने धर्ममां दृढ करी अन्यत्र विहार कर्यो.

ते दंपती पण परस्परना प्रेमनी जेम अखंडपणे श्राद्धधर्मनुं पालन करवा लाग्या. अनुक्रमे ते धनकुमारने तेना पिताए राज्यपर स्थापन कर्यो, एटले ते धनराजा नीतिथी राज्यनुं पालन करतो श्रावकधर्मनुं सेवन करवा लाग्यो. एकदा वसुंधर नामना मुनि त्यां पधार्या. तेमने धनराजा पोतानी धनवती प्रिया सहित वांदवा गयो. विधिपूर्वक मुनिने वांदी तेमना मुखथी संसारसमुद्रने तरवामां नाव समान धर्मदेशना सांभळी ते राजा संसारथी विरक्त थयो. एटले तेणे पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी पोतानी प्रिया सहित ते ज गुरुनी पासे दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे शास्त्रनो अभ्यास करी धनराजर्षि गीतार्थ थया. पछी आचार्यपद प्राप्त करी धर्मदेशनावडे भव्य प्राणीओनो उपकार करी छेवट अनशन ग्रहण करी ते धनराजर्षि धनवती साध्वी सहित काळधर्म पामी सौधर्म देवलोकमां इंद्रना सामानिक देव थया.

आ ज भरतक्षेत्रमां वैताढ्य पर्वतनी उत्तरश्रेणिने विषे सूरतेज नामनुं नगर छे. तेमां सूर नामे विद्याधर राजा हतो. तेने विद्युन्मती नामनी प्रिया हती. धननो जीव सौधर्ममांथी चवीने विद्युन्मतीनी कुक्षिमां अवतर्यो. पछी समय पूर्ण थये त्यारे ते राणीए शुभ लक्षणवाळो पुत्र प्रसव्यो. राजाए महोत्सवपूर्वक तेनुं चित्रगति नाम पाड्युं. अनुक्रमे वृद्धि पामतो ते कुमार गुरु पासेथी समग्र कळाओने ग्रहण करी युवावस्थाने पाम्यो.

हवे ते ज वैताढ्य पर्वत उपर दक्षिण श्रेणिमां शिवमंदिर नामनुं नगर छे. तेमां अनंगसिंह नामनो राजा हतो.

तेने चंद्रनी प्रभा जेवा उज्वळ गुणवाळी शशिप्रभा नामनी प्रिया हती. तेणीनी कुक्षिमां धनवतीनो जीव स्वर्गथी चवीने अवतर्यो. अनुक्रमे शशिप्रभाए उत्तम रूपवाळी पुत्रीने जन्म आप्यो. तेना पिताए तेनुं रत्नवती नाम पाड्युं. अनुक्रमे वृद्धि पामती ते कन्या समग्र कळामां निपुण थइ युवावस्थाने पामी. एकदा राजाए कोइ ज्ञानी मुनिने पूछ्युं के—" आ मारी पुत्रीनो पति कोण थशे ? " मुनिए कह्युं के—" हे राजा ! जे तारा हाथमांथी दिव्य खड्गने हरण करी लेशे, तथा जेना उपर नित्यचैत्यने विषे पुष्पवृष्टि थशे, ते नररत्न तमारी कन्याने परणशे. " ते सांभळी राजाए विचार्युं के—" जे मारा हाथमांथी खड्गने खुंचवी ले तेवो महा बळवान मारो जमाइ थशे." एम विचारीने ते पोताना मनमां घणो हर्ष पाम्यो.

आ ज भरतक्षेत्रने विषे चक्रपुर नामनुं नगर छे. तेमां सुग्रीव नामे राजा हतो. तेने यशस्विनी अने भद्रा नामनी बे राणीओ हती. तेमां पहेली राणीने सुमित्र नामे पुत्र थयो, ते जैनधर्ममां रक्त, गुणवान अने सज्जनोरूपी कमळोने हर्ष आपवामां सूर्यनी जेवो सज्ज–तैयार हतो. बीजी राणीने पद्म नामनो पुत्र थयो, ते कपटनुं घर अने गुण रहित हतो. एकदा भद्राए विचार्युं के—"ज्यां सुधी आ सुमित्र हयात छे, त्यां सुधी मारा पुत्रने स्वप्नमां पण राज्य मळवुं दुर्लभ छे." एम विचारी तेणीए गुप्त रीते सुमित्रने उग्र विष आप्युं. तेथी सुमित्र मूर्छा पाम्यो. ते जोइ राजा अत्यंत व्याकुळ थयो अने तत्काळ मंत्रादिकवडे तेना उपाय कराववा लाग्यो. परंतु कुमारने कोइपण रीते जरा पण चेतना आवी नहीं, त्यारे सर्व परिवार अने पुरना जनो सहित राजा पुत्रना गुणोने संभारी संभारीने शोक करवा लाग्यो. 'आ कुमारने भद्राए विष आप्युं छे' एम लोकोना जाणवामां आव्युं, तेथी लोको तेणीनी निंदा करवा लाग्या. ते जाणी भद्रा त्यांथी नाशी गइ. ' लसणनी

गंधनी जेम पापीनुं पाप छानुं रही शकतुं नथी.'

आ अवसरे दैवयोगे ते चित्रगति विद्याधर राजपुत्र आकाशमार्गे त्यांथी नीकळ्यो. तेणे राजा अने लोकोने विलाप करता जोइ, विषनुं वृत्तांत जाणी, तेमनी पासे पाणी मंत्रित जळवडे ते सुमित्रकुमारने अभिषेक कर्यो, तेथी तत्काळ सुमित्र चेतना पाम्यो अने राजादिक सर्वेने शोकातुर जोइ ' आ बधुं शुं छे ? ' एम तेणे पूछ्युं, त्यारे राजाए कह्युं के—"हे वत्स! तारी विमाताए तने विष आप्युं हतुं, ते आ निष्कारण बंधुए शमन कर्युं छे." ते सांभळी सुमित्रे ते विद्याधरकुमारने हाथ जोडी कह्युं के— " हे भाइ ! तमारुं नाम अने वंश कहीने अमारा कान पवित्र करो. कारण के तमारी जेवा उपकारीनुं नामादिक सांभळ्युं होय तो तेथी पण घणुं पुण्य प्राप्त थाय छे." ते सांभळी चित्रगतिनी साथे ज आवेला तेना मित्रे चित्रगतिनुं नाम, कुळ विगेरे कह्युं, ते सांभळी सुमित्र हर्ष पामी बोल्यो के—" अहो ! विष अने विघ्ना आपनारे मारा उपर घणो उपकार कर्यो, के जेथी वादळा विनाना अमृतना वरसादनी जेम मने अकस्मात् तमारा दर्शन थयां. जीवितने आपनार तथा बाळमृत्युथी उत्पन्न थती दुर्गतिथी रक्षण करनार तमारो हुं शी रीते प्रत्युपकार करी शकुं ? जगतना लोको मेघनो शो प्रत्युपकार करी शके ? " आवां तेनां वचनो सांभळी चित्रगति तेना गुणोथी आनंद पाम्यो. पछी मित्रपणाने पामेला ते सुमित्र पासे विद्याधरकुमारे पोताना नगर तरफ जवानी रजा मागी. त्यारे सुमित्रे तेने कह्युं के—" हे मित्र ! सुयशा नामना केवळी भगवान विहारना क्रमथी आज काल अहीं पधारवाना छे, तेमने वंदना करीने पछी तमे जाओ, एम हुं इच्छुं छुं. " आ प्रमाणे सुमित्रना कहेवाथी चित्रगति त्यां रोकायो.

बीजे दिवसे सुमित्र अने चित्रगति उद्यानमां गया. त्यां देवोथी परिवरेला अने सुवर्णकमळपर बेठेला ते केवळीने जोया. तेमने हर्षथी वंदना करी ते बन्ने मित्रो तेमनी पासे बेठा. सुग्रीव राजा पण ते वृत्तांत सांभळी हर्षथी परिवार अने पुरजनो सहित मुनिनी पासे आव्यो अने विधिपूर्वक केवळीने वंदना करी योग्य स्थाने बेठा. ते वखते जगतने हितकारक एवा मुनीश्वरे तेमने धर्मोपदेश आप्यो. ते सांभळी आनंद पामेला चित्रगतिए गुरुने कह्युं के—" हे भगवान ! आ मित्रना प्रसादथी आपनी धर्मदेशना सांभळी हुं प्रतिबोध पाम्यो छुं, तेथी हे प्रभु ! आपनी पासे समकित सहित श्रावकधर्मने हुं ग्रहण करुं छुं." एम कही धर्ममां वीर्यना उल्लासवाळा अने पापकर्मथी विराम पामेला ते विद्याधरकुमारे देशविरति अंगीकार करी.

त्यारपछी सुग्रीव राजाए हाथ जोडी मुनीश्वरने पूछयुं के—" हे प्रभु ! मारा पुत्रने विष आपीने ते मारी राणी क्यां गइ ?" मुनि बोल्या के—" ते अहींथी नाशीने एक अरण्यमां गइ. त्यां चोरोए तेनां आभरणो उतारी लइ तेने पल्लीपतिने सोंपी. पल्लीपतिए धन लइ कोइ वेपारीने वेचाती आपी. कोइ वखत लाग मळवाथी वेपारी पासेथी नाशीने ते अरण्यमां गइ. त्यां दावानळ वडे बळीने पहेली नरके गइ. ' पापीनी सद्गति क्यांथी होय ? ' पछी पहेली नरकमांथी नीकळीने ते कोइक चंडाळनी स्त्री थशे. त्यां सपत्नी साथे कजीओ थतां सपत्नीथी हणाइने त्रीजी नरकमां जशे. त्यांथी नीकळीने ते तिर्यंच गतिमां अनेक दुःखो पामशे." आ प्रमाणे सांभळी वैराग्य पामेला राजाए गुरुने कह्युं के—" जेने माटे तेणीए आवुं कृत्य कर्युं, ते तेणीनो पुत्र तो अहींज छे, परंतु ते पोते ज नरकमां गइ. तो आवा असार संसारने धिक्कार छे."

आ प्रमाणे कही ते राजाए सुमित्रने राज्य सोंपी तेज केवळीनी पासे दीक्षा ग्रहण करी. पछी सुमित्र मित्रसहित पोताना नगरमां गयो, अने पोताना नाना भाइ पद्मने केटलाक गाम आप्या. परंतु ते निर्बुद्धि एकलो क्यांइ पण जतो रह्यो. पछी एकदा चित्रगति विद्याधरकुमार सुमित्रराजानी रजा लइ पोताना नगरमां गयो. परंतु मित्रनी जेम धर्मकार्यने ते कदापि विसरतो नहोतो.

एकदा सुमित्रनी बहेन के जे कलिंग देशना राजानी प्रिया हती, तेने अनंगसिंहनो पुत्र अने रत्नवतीनो भाइ कमळ हरी गयो. ते सांभळीने सुमित्र राजा व्याकुळ थयो. ते वृत्तांत विद्याधरना मुखथी चित्रगतिना जाणवामां आव्यो, त्यारे ते बोल्यो के—" मारा मित्रनी बहेनने हुं शीघ्रपणे शोधीने लइ आवीश. " पछी विद्याना प्रभावथी तेणीने कमळे हरण करी छे एम जाणी ते महा बळवान चित्रगति तत्काळ शिवमंदिर पुरमां गयो. त्यां तेणे कमळनी साथे विग्रह करी तेनो निग्रह कर्यो. ते जाणी कमळनो पिता अनंगसिंह क्रोध पामी सिंहनी जेम चित्रगति उपर धस्यो. बन्नेनुं परस्पर भयंकर युद्ध थयुं. तेमां चित्रगतिने दुर्जय जाणी अनंगसिंहे पोताना दिव्य खड्गनुं स्मरण कर्युं, एटले तरत ज ज्वाळानी श्रेणीथी व्याप्त अने शत्रुना मदनो नाश करनार देवनुं आपेलुं खड्गरत्न तेना हाथमां प्राप्त थयुं. पछी अनंगसिंहे चित्रगतिने कह्युं के—" हे मूर्ख ! शा माटे फोगट मरवा इच्छे छे ? अहींथी जतो रहे. नहीं तो आ खड्गथी हमणां ज तुं मरणने शरण थइश." ते सांभळी चित्रगति बोल्यो के—" आ लोढाना खड्गथी तुं जे मद करे छे तेज प्रगटपणे तारुं बळहीनपणुं सूचवे छे. " ए प्रमाणे कही तेणे विद्याथी तत्काळ तमस्काय जेवुं गाढ अंधकार विकुर्व्युं, तेथी कोइपण मनुष्य पोताना हाथमां रहेली वस्तुने

पण जोइ शकतो नहोतो. आवा गाढ अंधकारमां ते चित्रगति तत्काळ अनंगसिंह पासे जइ तेना हाथमांथी ते खड्ग खुंचवी लइ तथा सुमित्रनी बहेनने लइ जतो रह्यो. पछी एक क्षणवारमां अंधकारनो नाश थयो, ते वखते अनंगसिंहे पोताना हाथमां खड्गरत्न जोयुं नहीं, तेम ज पासे रहेला शत्रुने पण जोयो नहीं. तेथी ते क्षणवार खेद करवा लाग्यो, तेटलामां ज्ञानीनुं वचन याद आववाथी ते संतुष्ट थयो अने 'ज्ञानी वधारे खात्री शाश्वत चैत्यमां थशे' एम विचारी अनंगसिंह पोताने स्थाने गयो.

चित्रगतिए सुमित्रने अखंड शीळवाळी तेनी बहेन सोंपी. ते ज वखते बहेनना हरणना दुःखथी विरक्त थयेला सुमित्रे पोताना पुत्रने राज्य सोंपी सुयशा नामना मुनि पासे दीक्षा ग्रहण करी. चित्रगति पोताने स्थाने गयो.

हवे सुमित्रराजर्षि कांइक न्यून नव पूर्वनो अभ्यास करी गुरुनी आज्ञाथी एकाकी विहार करता मगध देशमां गया. त्यां कोइ गामनी बहार ते कायोत्सर्गे रह्या. तेवामां त्यां तेमनो सापत्न भाइ पद्म आव्यो. तेणे मुनिने ओळखी क्रोध पामी तरत ज तेना हृदयमां तीक्ष्ण बाण मार्युं. परंतु मुनिए तेनापर जरापण क्रोध नहीं करतां विचार्युं के-" मारो ज आ दोष छे के जेथी ते वखते आ मारा भाइने में राज्य आप्युं नहीं, तेथी हमणां हुं आने तथा बीजा सर्व प्राणीओने खमावुं छुं." आ प्रमाणे विचारी अनशन ग्रहण करी ते सुमित्रराजर्षि शुभ ध्यानथी मरण पामी ब्रह्मलोक नामना पांचमा देवलोकमां इंद्रनो सामानिक देव थयो, अने पद्म ते ज रात्रे सर्पदंशथी मरण पामी तमस्तमा नामनी सातमी नरके गयो. चित्रगति सुमित्रना मरणथी अत्यंत शोकातुर थयो.

एकदा चित्रगति यात्रामहोत्सव करवा सिद्धायतनमां गयो. त्यां बीजा पण घणा विद्याधरो एकठा थया हता. ते वखते अनंगसिंह पण पोतानी कन्या रत्नवती सहित आव्यो. त्यां चित्रगति भक्तिथी जिनप्रतिमानी पूजा करी स्तुति करवा लाग्यो. ते वखते सुमित्र देव पण मित्रने जोवा माटे त्यां आव्यो अने चित्रगतिना मस्तकपर तेणे विचित्र पुष्पोनी वृष्टि करी. ते जोइ अनंगसिंहे तेने पोतानी पुत्रीनो थनार पति जाण्यो. ते वखते सुमित्र देवे पण प्रत्यक्ष थइ 'मने तुं ओळखे छे?' एम चित्रगतिने पूछ्युं. त्यारे 'तमे महर्द्धिक देव छो' एम चित्रगति बोल्यो, त्यारे तेनी ओळखाणने माटे देवे पोतानुं पूर्व भवनुं स्वरूप बताव्युं. तरत ज आनंदथी तेने आलिंगन करी चित्रगतिए कह्युं के—"हे महाभाग्यवान! तमारा प्रसादथी अमने आ धर्म प्राप्त थयो छे." देवे कह्युं—"ते वखते मारुं विष उतारी मने जीवित आपवाथी आ देवनी लक्ष्मी पण तमे ज मने आपी छे, नहीं तो ते ज वखते मारुं कुमरण थवाथी मारी आ गति क्यांथी थात?" आ प्रमाणे परस्परना उपकारोने कहेता ते बन्नेने जोइ सूरचक्री विगेरे सर्व विद्याधरो हर्ष पाम्या.

ते वखते चित्रगति रत्नवतीना नेत्रमार्गे थइने तेणीना हृदयमां पेठो अने तेनी स्पर्धाथी ज कामदेवे पण त्यां ज पोतानुं स्थान कर्युं. कामग्रहथी व्याकुळ थयेली तेणीए तत्काळ लज्जारूपी वस्त्रनो त्याग करी विविध प्रकारनी चेष्टावडे पोतानो भाव प्रगट कर्यो. तेणीने कामातुर जोइ अनंगसिंहे विचार्युं के—"आ महा मनवाळाए मारा खड्गनी जेम आ मारी पुत्रीनुं मन पण हरण कर्युं छे, तेथी आने अहीं ज हुं मारी कन्या आपुं. फोगट काळक्षेप शा माटे करवो? परंतु आ धर्मने स्थाने आवुं व्यावहारिक कार्य करवुं योग्य नथी." ए प्रमाणे विचारी ते पोताने घेर गयो. चित्रगति पण मित्रदेवने वि-

दाय करी पिता सहित पोताने घेर गयो.

पछी अनंगसिंहे पोतानी पुत्री आपवा माटे पोताना मंत्रीने मोकल्यो. तेणे सुरचक्री पासे जइ प्रणाम पूर्वक कह्युं के— " हे स्वामी ! आ चित्रगति अने मारा स्वामीनी पुत्री रत्नवती ए बन्ने अधिक गुणवान छे, तेथी ते बन्नेना परस्पर संबंधथी ते आनंद पामो. " ते सांभळी सुरचक्रीए ते अंगीकार कर्युं. पछी मोटा उत्सवथी ते बन्नेना विवाह थया. चित्रगति तेणीनी साथे यथावसरे धर्म अने सांसारिक सुख भोगववा लाग्यो, एकदा सूरराजा चित्रगतिने राज्य सोंपी चारित्र ग्रहण करी अनुक्रमे मोक्षे गया.

त्यारपछी आश्चर्यकारक विद्या अने बळनी समृद्धिवाळा चित्रगति राजाए चिरकाळ सुधी विद्याधरचक्रीनुं पद अनुभव्युं. एकदा पोताना सामंत राजाना बे पुत्रो राज्यने माटे परस्पर युद्ध करीने मरण पाम्या, ते जोइ चित्रगतिने परम वैराग्य थयो. तेथी पोताना पुत्रने राज्य सोंपी ते चित्रगति राजाए प्रिया सहित दमधर नामना मुनि पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी. अनुक्रमे चिरकाळ सुधी विहार करी छेवट अनशनवडे काळ करी रत्नवती सहित ते चोथा देवलोकमां देव थया.

पश्चिम महाविदेह क्षेत्रमां पद्म नामनी विजयमां सिंहपुर नामे पुर छे. तेमां हरिनंदी नामे राजा हतो. तेने यथार्थ नामवाळी प्रियदर्शना नामनी राणी हती. तेनी कुक्षिमां चित्रगतिनो जीव स्वर्गथी चवीने उतर्यो. खाणनी पृथ्वी रत्नने प्रसवे तेम तेणीए समय पूर्ण थये पुत्र प्रसव्यो, तेनुं नाम राजाए अपराजित पाड्युं. अनुक्रमे वृद्धि पामतो ते कुमार समग्र कळाने ग्रहण करी युवावस्था पाम्यो. तेने सचिवनो पुत्र विमलबोध नामनो मित्र हतो. एकदा ते बन्ने कुमारोनुं वक्रगति-

वाळा अश्वे हरण कर्युं, तेथी तेओ एक मोटा वनमां आवी पहोंच्या. त्यां अपराजित कुमारे मंत्रीपुत्रने कह्युं के–" आपणे अश्वथी हरण करेला अहीं आव्या ते ठीक थयुं, केमके आपणे पितानी आज्ञाने आधीन होवाथी तेमनी आज्ञा विना बहार जइने आपणे देशांतर जोइ शकत नहीं. अने तेओ आपणी उपरना प्रेमथी आपणने आज्ञा आपत नहीं. हवे तो आपणा मातपिता आपणा विरहने सहेजे सहन करशे ज, तेथी आपणे हवे घेर नहीं जतां पृथ्वीपर फरीने कौतुक जोशुं." ते सांभळी मंत्रीपुत्रे तेना मतने संमति आपी. तेटलामां ' रक्षण करो. रक्षण करो. " एवी वाणी बोलतो एक पुरुष त्यां आव्यो. भयभीत थयेला तेने राजकुमारे ' तुं कोइथी भय पामीश नहीं. ' एम कह्युं, तेटलामां त्यां हाथमां खड्ग धारण करनार केटलाक योद्धाओ आव्या. तेओ बोल्या के—" आ अमारा नगरनो चोर छे, तेने अमे हणशुं, माटे हे पथिको ! तमे अहींथी चाल्या जाओ. " ते सांभळी कुमारे कह्युं के—" मारा आश्रितने हणवा इंद्र पण शक्तिमान नथी, तो बीजानी शक्ति क्यांथी होय ? " आवुं कुमारनुं वचन सांभळी ते सुभटो तेने ज मारवा दोड्या. एटले कुमारे खड्ग खेंची ते सर्वने नसाडी मूक्या. तेओए जइ पोताना स्वामी कोशळा नगरीना राजाने ते वृत्तांत कह्यो. त्यारे राजाए पोतानुं समग्र सैन्य मोकल्युं. तेनो पण कुमारे पराजय कर्यो. त्यारपछी राजा चतुरंग सैन्य सहित आव्यो, त्यारे कुमारे मंत्री-पुत्रने ते चोर सोंप्यो अने पोते युद्ध करवा तैयार थयो. पछी एक हाथीना दांतपर पग दइ तेनापर चडी तेना मावतने हणी ते कुमार भयंकर युद्ध करवा लाग्यो. ते वखते ते राजाना कोइ मंत्रीए ते कुमारने प्रथम जोयेलो होवाथी ओळखीने राजाने कह्युं, त्यारे राजाए सैन्यने युद्धथी निवारी कुमारने कह्युं के–" अहो वत्स ! शुं तुं मारा मित्र हरिनंदि

राजानो पुत्र छे ? हे वीर ! आवा पराक्रमथी तें तारा पिताने लजव्यो नथी. तुं आजे मारो अतिथि थयो ते सारुं थयुं अने तने आजे में जोयो ते पण घणुं सारुं थयुं. " आ प्रमाणे कही पोताना हाथीपर कुमारने बेसाडी राजाए तेने आलिंगन कर्युं. पछी मंत्रीपुत्र सहित तेने पोताने घेर लइ जइ पोतानी कनकमाला नामनी पुत्रीने तेनी साथे परणावी. त्यां ते केटलाक दिवस सुखे रह्यो.

एकदा कुमार मित्रसहित प्रयाणमां विघ्नना भयथी राजानी रजा लीधा विना ज रात्रिने समये त्यांथी नीकळी गयो. जतां जतां एक मोटा अरण्यमां ते आव्यो. तेटलामां तेणे 'हा ! हा ! आ पृथ्वी वीरपुरुष रहित ज छे' एम करुणस्वरवाळुं रुदन सांभळ्युं. तेथी ते वीरकुमार शब्दने अनुसारे ते तरफ गयो. आगळ जतां तेणे एक जाज्वल्यमान अग्निना कुंडनी पासे रहेली कोइ स्त्रीने तथा तेनी पासे खड्ग खेंचीने उभेला एक पुरुषने जोयो. ते कुमारने जोइ ते स्त्री बोली के—" जो अहीं कोइपण वीरपुरुष होय तो ते आ अधम विद्याधरथी मारुं रक्षण करो. " ते सांभळी कुमारे तेनी पासे जइ कह्युं के—" अरे दुष्ट गर्ववाळा ! युद्धने माटे तैयार था. अबळा उपर बळनो गर्व शुं करे छे ? " ते सांभळी ते विद्याधर बोल्यो के—" तुं पण परलोकमां आ स्त्रीनो सथवारो था. " एम बोली उद्धत एवो ते युद्ध करवा तैयार थयो. प्रथम ते बन्ने वीरोए चिरकाळ सुधी खड्गवडे युद्ध कर्युं. पछी बाहुयुद्ध कर्युं. तेमां ते विद्याधरे ते कुमारने नागपाशवडे बांध्यो, तेने कुमारे जीर्ण रज्जुने हाथीनी जेम तत्काळ तोडी नांख्या. पछी विद्याधरे अपराजित उपर विद्यामंत्रित शस्त्रोवडे घणा प्रहारो कर्या. परंतु पुण्यशाळी ते कुमारने ते प्रहारो कांइपण करी शक्या नहीं. छेवट सूर्योदय वखते कुमारे विद्याधरना मस्तकपर

खड्गनो प्रहार कर्यो, तेथी तत्काळ ते मूर्छित थइ पृथ्वीपर पड्यो. कुमारे तेने स्वस्थ करी फरी युद्ध करवा कह्युं, ते वखते ते खेचर बोल्यो के—" हे महाभुज ! तें मने जीती लीधो ते ठीक कर्युं छे. हे मित्र ! मारा वस्त्रनी गांठे मणि अने मूळिका बांधेली छे. तेमां मणिना जळवडे मूळिकाने घसीने मारा प्रहारपर लगाड." ते सांभळी कुमारे ते प्रमाणे कर्युं, एटले ते खेचर साजो थयो. पछी अपराजितना पूछवाथी ते विद्याधरे पोतानुं वृत्तांत आ प्रमाणे कह्युं.—

आ कन्या अमृतसेन नामना विद्याधरराजानी पुत्री छे, तेनुं नाम रत्नमाळा छे, तेने कोइ ज्ञानीए कह्युं हतुं के—"तारो भर्ता अपराजित थशे." त्यारपछी एकदा में तेना विवाह माटे प्रार्थना करी, त्यारे तेणीए मने कह्युं के—" मारा भर्तार अपराजित थशे अथवा मारा देहने अग्नि बाळशे." ते सांभळी मने तेनापर क्रोध चड्यो. हुं श्रीषेण नामना विद्याधर-राजानो सूरकांत नामनो पुत्र छुं. पछी में आने माटे थइने घणी दुःसाध्य विद्याओ साधी, अने आनी घणे प्रकारे याचना करी, परंतु तेणीए मारुं मान्य राख्युं नहीं. त्यारे 'आनी अग्निदाहनी प्रतिज्ञा पूर्ण थाओ.' एम धारीने क्रोधथी आने अहीं लावी अग्निमां नांखवा तैयार थयो, तेवामां आना अने मारा पुण्यनी प्रेरणाथी तमे अहीं आवी पहोंच्या अने माराथी आनुं रक्षण कर्युं, तेम ज स्त्रीहत्याने लीधे थती दुर्गतिथी मारुं पण रक्षण कर्युं. परंतु हे परोपकारी ! तमे कोण छो ? ते कहो." आ प्रमाणे तेना पूछवाथी मंत्रीपुत्रे ते राजकुमारनुं नाम विगेरे कह्युं. ते सांभळी रत्नमाळा चित्तमां अत्यंत आनंद पामी अने कामदेवना बाणना विषयने पामी, अर्थात् कामातुर थइ. तेवामां रत्नमाळाना मातपिता पण तेणीने शोधता शोधता

त्यां आव्या, अने तेमना पूछवाथी मंत्रीपुत्रे तेमने सर्व वृत्तांत कह्यो. ते सांभळी अमृतसेन राजा अने तेनी राणी हर्ष पाम्या अने तरत ज तेमणे पोतानी पुत्री राजकुमारने परणावी. पछी कुमारना कहेवाथी राजाए सूरकांतने अभयदान आप्युं. सूरकांते पण ते मणि अने मूलिका तथा वेष बदलवानी गुटिकाओ आग्रहथी राजकुमारने आपवा मांडी, परंतु ते निःस्पृह कुमारे कांइ पण लीधुं नहीं, त्यारे तेणे ते सर्व वस्तु मंत्रीपुत्रने आपी. पछी कुमारे अमृतसेनने कह्युं के—"हुं मारा नगरमां जाउं त्यारे आ तमारी पुत्रीने लावजो." एम कही कुमार त्यांथी आगळ चाल्यो, अने कुमारनुं स्मरण करता ते खेचरो पोतपोताने स्थाने गया.

आगळ चालतां अपराजितकुमार एक मोटा अरण्यमां गया. त्यां तृषातुर थवाथी तेने आम्रवृक्षनी नीचे बेसाडी मंत्रीपुत्र जळ लेवा गयो. थोडीवारे मंत्रीपुत्र जळ लइने पाछो आव्यो, त्यारे ते स्थाने ते कुमारने जोयो नहीं, तेथी अत्यंत शोकातुर थइ तेने चोतरफ शोधवा लाग्यो, परंतु तेनो पत्तो नहीं लागवाथी ते मंत्रीपुत्र शोकथी मूर्छा पाम्यो. थोडीवारे सावधान थइ अत्यंत विलाप करी कांइक धैर्यने पकडी ते मंत्रीपुत्र फरीथी कुमारने शोधवा लाग्यो. अनुक्रमे फरतो फरतो ते नंदिपुरना उद्यानमां आवी उत्कंठापूर्वक बेठो. तेटलामां त्यां बे विद्याधरोए आवी तेने कह्युं के—"हे भद्र! अहीं भुवनभानु नामे प्रसिद्ध विद्याधरराजा छे. तेने कमलिनी अने कुमुदिनी नामनी बे पुत्रीओ छे. ते बन्नेनो पति तमारो मित्र अपराजित थशे एम ज्ञानीए कह्युं हतुं, तेथी तेने लाववा माटे अमने अमारा स्वामीए आज्ञा आपी. एटले अमे ते अरण्यमां तमने बन्नेने जोया, तेटलामां तमे जळ लेवा दूर गया, अने अमे तमारा मित्रने हरीने अमारा स्वामी

पासे गया. त्यां भुवनभानुए तेने आसनपर बेसाडी पोताना पुत्रोओ परणवानी प्रार्थना करी, परंतु तमारा वियोगना शोकथी कुमार कांइपण बोल्या नहीं. ते जाणी तमने लाववा माटे अमारा स्वामीए अमने आज्ञा करी, तेथी अमे तमने अहीं रहेला जोया ते बहु सारुं थयुं. माटे हे भाग्यवान! क्रीडावडे वनमां महेल करीने रहेला अमारा स्वामी पासे तमे चालो." ते सांभळी मंत्रीपुत्र हर्षथी तेमनी साथे त्यां गयो. पछी कुमार ते बन्ने कन्याओने हर्षथी परण्यो, अने केटलोक काळ त्यां रह्यो.

पछी प्रथमनी जेम भुवनभानुनी रजा लइ ते बन्ने मित्रो त्यांथी नीकळी श्रीमंदिर नामना नगरमां गया. त्यां थोडाक दिवस अर्थात् विद्याधरे आपेला मणिना प्रभावथी पूर्ण मनोरथवाळा ते बन्ने सुखेथी रह्या. एकदा ते नगरमां लोकोनो कोलाहळ सांभळी कुमारे 'आ शेनो कोलाहळ छे?' एम मित्रने पूछ्युं, त्यारे तेणे तपास करी कुमारने कह्युं के—"आ नगरमां सुप्रभ नामे राजा छे. तेने कोइए छळ कपटथी शस्त्रवडे प्रहार कर्यो छे. ते राजाने राज्य भोगवे तेवो एक पण पुत्र नथी. तेथी नगरना लोको शोकथी आ कोलाहळ करे छे." ते सांभळी कुमार बोल्यो के—"कोइ शत्रुए घा कर्यो हशे." एम कही कुमार दुःखी थयो होय तेम खेद करवा लाग्यो.

हवे ते सुप्रभ राजाने अनेक उपायो कर्या छतां शांति थइ नहीं. त्यारे कामलता नामनी गणिकाए एकांतमां सचिवोने कह्युं के—"आ आपणा नगरमां कोइ परदेशी पुरुष तेना मित्र सहित रहेलो छे. ते कांइपण उद्यम करतो नथी, तोपण तेना सर्व मनोरथो सिद्ध थाय छे. तेनी पासे कांइपण चमत्कारी औषध होवुं जोइए." ते सांभळी मंत्रीओ आदरपूर्वक ते कुमारने राजा पासे लइ गया. त्यां जइ दयाळु कुमारे मित्र पासेथी मणि अने मूलिका लइ मणिना जळमां मूलिकाने घसी तेना

प्रहार उपर ते लगाडी. तरत ज राजानुं शरीर सज्ज थयुं, एटले राजाए कुमारने पूछ्युं के—" हे भाग्यवान ! कारण विना बंधुरूप तुं क्यांथी आवे छे ?" ते सांभळी तेना मित्रे कुमारनो वृत्तांत कह्यो, त्यारे राजाए फरीथी कह्युं के—" अहो ! तुं तो मारा मित्रनो पुत्र छे. घणुं ज ठीक थयुं के पोताने ज घेर तुं आव्यो छे." एम कही राजाए पोतानी रंभा नामनी पुत्री तेने परणावी. पछी त्यां घणा काळ सुधी रहीने प्रथमनी जेम कुमार मित्र सहित त्यांथी नीकळी गयो.

अनुक्रमे चालतां ते अपराजित कुमार मित्र सहित कुंडपुर नगरना उद्यानमां आव्यो. त्यां सुवर्णकमळपर बेठेला केवळीने जोइ तेमने भक्तिथी वंदना करी योग्य स्थाने बेसी देशना सांभळी. पछी कुमारे हाथ जोडी केवळीने पूछ्युं के —" हे भगवान् ! हुं भव्य छुं ? के अभव्य छुं ? " मुनीश्वरे कह्युं—" तुं भव्य छे, अने आ ज जंबूद्वीपना भरतक्षेत्रने विषे आ भवथी पांचमे भवे तुं बावीशमो तीर्थंकर थइश. तथा आ तारो मित्र ते वखते तारो गणधर थशे. " आ प्रमाणे सांभळी ते बन्ने मित्रोए आनंद पामी चिरकाळ सुधी ते केवळीनी भक्ति करी. पछी मुनिए त्यांथी विहार कर्यो त्यारे ते मित्रो ग्रामादिकमां जइ चैत्योने नमवा लाग्या.

आ अवसरे जनोने आनंद करनारा श्री जनानंद नामना नगरमां जितशत्रु नामे राजा हतो. तेने धारिणी नामनी राणी हती. तेणीनी कुक्षिमां रत्नवतीनो जीव स्वर्गथी चवीने अवतर्यो. समय पूर्ण थये राणीए पुत्रीने जन्म आप्यो. तेनुं प्रीतिमती नाम पाड्युं. अनुक्रमे वृद्धि पामती ते कन्या समग्र कळाने ग्रहण करी यौवनवयने पामी. तेणीनी पासे विद्वान पण मूर्ख जेवो लागतो हतो, तेथी ते कोइपण पुरुषनी उपर जरापण रंजित थती नहोती. एकदा राजाए तेणीने पूछ्युं

के—" तने कयो पति इष्ट छे ? " त्यारे ते बोली के—" मने वादमां जे जीते, ते मारो पति थाओ. " आवी तेनी इच्छाने अंगीकार करी राजाए स्वयंवर मंडप कराव्यो, अने सर्व राजाओने दूतद्वारा बोलाव्या, तेमां पुत्रना वियोगथी दुःखी थता एक हरिनंदी राजा विना बीजा सर्व राजाओ पोतपोताना कुमारो सहित आव्या. ते सर्वे मंडपमां आवी मांचाओ उपर अनुक्रमे बेठा. ते वखते दैवयोगे भ्रमण करतो अपराजित कुमार पण मित्र सहित त्यां आव्यो, अने ' आपणने कोइ ओळखो नहीं ' एम धारी गुटिकाना प्रयोगथी सामान्य रूप धारण करी ते मंडपमां गयो. पछी मनोहर वस्त्रादिक धारण करी सखीओ अने दासीओथी परिवरेली प्रीतिमती कन्या जाणे के बीजी लक्ष्मी होय तेम ते मंडपमां आवी. मालती नामनी तेनी सखी आंगळीवडे राजाओ अने राजकुमारोने देखाडती बोली के—" हे सखी ! आ सर्वे खेचरो तथा भूचरो तने वरवा माटे अहीं आव्या छे. तेमांथी जे तने इष्ट होय तेने तुं वर. " ते सांभळी प्रीतिमती जे जे राजा के राजकुमार उपर पोतानी दृष्टि नाखती, तेना तेना उपर कामदेव पण पोताना बाणो नाखतो हतो. पछी ते कन्याए मधुर स्वरे पूर्वपक्ष कर्यो, ते सांभळीने ' शुं आ साक्षात् सरस्वती देवी ज छे ? ' एम माणसोए तर्क कर्यो. तेणीना प्रश्ननो जवाब आपवा कोइपण राजकुमार समर्थ थयो नहीं, तेथी सर्वे विलखा थइने पृथ्वी साम्हुं–नीचुं ज जोवा लाग्या, अने परस्पर कहेवा लाग्या के—" आ कन्याए रूपे करीने ज अमारुं मन हरी लीधुं छे, तेथी मन विना अमे शी रीते उत्तर आपी शकीए ? " त्यारपछी जितशत्रु राजाए विचार कर्यो के—" आ सर्वे राजाओमां मारी पुत्रीने लायक वर नथी, तो हवे शुं थशे ? " आ प्रमाणे विचार करता राजाने जोइ एक बुद्धिमान मंत्रीए कह्युं के—" हे स्वामी ! खेद न करो. पृथ्वीपर घणां रत्नो होय

छे. माटे राजा, राजपुत्र के बीजो कोइपण आ कन्याने वादमां जीतशे ते तेनो पति थशे एम अहीं सर्वत्र आघोषणा करावो." ते सांभळी राजाए ते प्रमाणे कर्युं, त्यारे अपराजित कुमार प्रीतिमती पासे आव्यो. तेने कुत्सित वेषवाळो जोया छतां पण पूर्वना प्रेमने लीधे प्रीतिमती हर्ष पामी पूर्वपक्ष बोली, एटले तरत ज अपराजिते तेनो उत्तर आप्यो. ते सांभळी तत्काळ तेना कंठमां कन्याए वरमाळा आरोपण करी. ते जोइ सर्व राजाओ क्रोध पामी सुभटोने युद्ध करवा माटे तैयार करवा लाग्या, अने बोल्या के—"अमे राजाओ छतां आ वाणीथी ज शूरो सामान्य मनुष्य आ कन्याने शी रीते परणी जाय ?" एम बोली तेओए युद्ध आरंभ्युं. ते वखते कुमार कोइ मावतने मारी तेना हाथीपर चडी जइ युद्ध करवा लाग्यो. वळी कोइ रथीने मारी तेना रथमां बेसी युद्ध करवा लाग्यो. ए ज प्रमाणे ते कुमारे सादी[1] अश्वचार थइ, पत्ति थइ, रथी थइ अने निषादी थइ युद्ध करी सर्वनो पराजय कर्यो. पछी "शास्त्रवडे स्त्रीथी जीताया अने शस्त्रवडे आनाथी जीताया" एम विचारी लज्जा पामेला ते सर्व राजाओ फरीथी एकत्र थइ युद्ध करवा आव्या. ते वखते कुमार सोमप्रभ राजाना हाथीपर चडी गयो. तेने ते राजाए तेना तिलकादिक चिन्होथी ओळखी हर्ष पामी कह्युं के—"हे महापराक्रमी भाणेज ! बहु सारुं थयुं के में तने ओळख्यो." एम कही ते राजाए तेने आलिंगन कर्युं. पछी सोमप्रभ राजाए ते कुमारनो वृत्तांत सर्वने कह्यो, ते सांभळी सर्व राजाओ युद्धथी निवृत्त थया, अने कुमारे पण पोतानुं मूळ स्वरूप प्रगट कर्युं. पछी जितशत्रु

१ हाथी स्वार.

राजाए महोत्सवपूर्वक तेने प्रीतिमती साथे परणाव्यो, अने सर्व राजाओने सत्कारपूर्वक विदाय कर्या. पछी अपराजित कुमार प्रीतिथी प्रीतिमती साथे क्रीडा करतो सुखेथी रहेवा ज रह्यो.

एकदा हरिनंदी राजानो दूत त्यां आव्यो. आलिंगन करी कुमारे मातापितानी कुशळता पूछी. त्यारे दूत बोल्यो के– " हे कुमार ! मात्र देहने धारण करवाथी तेओ कुशळ छे; परंतु तमे प्रवास कर्यो त्यारथी तेमनां नेत्रोमां पाणी सुकातुं नथी. तमारुं आ वृत्तांत सांभळीने मातापिताए तमने बोलाववा माटे मने मोकल्यो छे. तो हवे तेमने तमारुं दर्शन आपी आनंद पमाडो. " ते सांभळी मातापिताने मळवा उत्सुक थयेलो कुमार तरत ज ससरानी रजा लइ प्रीतिमतीने साथे राखी मित्र सहित चाल्यो. ते कुमार प्रथम जे जे राजानी कन्याओ परण्यो हतो, ते ते राजाओ पोतपोतानी पुत्रीओने लइने हर्षथी तेनी पासे आव्या. एटले सैन्य सहित भूचर अने खेचर राजाओ अने पोतानी प्रियाओथी शोभतो ते कुमार अनुक्रमे सिंहपुर पहोंच्यो. ते वखते हरिनंदी राजा हर्षथी तेनी सन्मुख आव्यो. कुमारे तेने विनयथी नमस्कार कर्या अने राजाए तेने प्रीतिथी आलिंगन कर्युं. माताए पण ते नमता एवा कुमारने पोताना हाथवडे स्पर्श कर्यो. पछी सर्व स्त्रीओ पण सासु ससराने पगे लागी. त्यारपछी विमलबोध मित्रे राजा तथा राणी पासे कुमारनो सर्व वृत्तांत कह्यो, ते सांभळीने ते बन्ने अति हर्ष पाम्या. पछी शहेरमां प्रवेश करी कुमारे सर्व खेचर अने भूचर राजाओने सत्कार पूर्वक विदाय कर्या. अन्यदा हरिनंदी राजा अपराजित कुमारने राज्य सोंपी प्रव्रज्या ग्रहण करी तेनुं आराधन करीने मोक्षे गया. पछी अपराजित राजाए जिनेश्वरोनां चैत्यो वडे पृथ्वीने शणगारी चिरकाळ सुधी राज्यनुं पालन कर्युं.

एकदा अपराजित राजा उद्यानमां क्रीडा करवा गयो. त्यां तेणे मित्रो अने स्त्रीओथी परिवरेला कोइ महेभ्यने जोयो, तेनी पासे मनोहर संगीत थतुं हतुं, तथा ते अर्थीओने इच्छित दान आपतो हतो. तेने जोइ राजाए "आ कोण छे ?" एम पोताना सेवकोने पूछ्युं, त्यारे तेओ बोल्या के—"हे स्वामी ! आ समुद्रपाळ नामना सार्थवाहनो अनंगदेव नामनो पुत्र छे." ते सांभळी राजाए विचार कर्यो के—"अहो ! मारा राज्यमां वणिको पण आवा उदार अने समृद्धिवाळा छे, तेथी मने पण धन्य छे." एम विचारी राजा पोताने घेर गयो. पछी बीजे ज दिवसे राजाना प्रासाद पासे थइने घणा मनुष्योथी वहन करातुं एक शब नीकळ्युं. ते जोइ राजाए 'आ कोण मरी गयुं ?' एम पोताना सेवकोने पूछ्युं, त्यारे तेओ बोल्या के—"हे स्वामी ! काले ज आपे जे अनंगदेवने उद्यानमां क्रीडा करतो जोयो हतो ते ज विसूचिकाना व्याधिथी अकस्मात् मरण पाम्यो छे." ते सांभळी—"अहो ! संध्याकाळना रंगनी जेम आ विश्वमां सर्व पदार्थ अनित्य छे." एम विचारी राजा अत्यंत वैराग्य पाम्यो. तेवामां प्रथम कुंडपुर नगरमां ते राजाए जे केवळीने जोया हता, ते केवळी ज्ञानथी तेने दीक्षा योग्य जाणी त्यां पधार्या. तेमनी पासे जइ धर्मदेशना सांभळी प्रतिबोध पामी अपराजित राजाए पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी प्रीतिमती अने विमळबोध सहित दीक्षा ग्रहण करी. अने चिरकाळ सुधी तीव्र तप करी ते त्रणे काळधर्म पामीने अग्यारमा देवलोकमां इंद्रना सामानिक देव थया.

आ ज भरतक्षेत्रमां श्रीहस्तिनापुर नामना नगरमां श्रीषेण नामे राजा हतो. तेने श्रीमती नामनी राणी हती. तेमनी कुक्षिमां अपराजितनो जीव अवतर्यो. ते वखते राणीए स्वप्नमां शंख जेवो उज्वळ पूर्ण चंद्र जोयो. समय पूर्ण थये

राणीए पुत्रने जन्म आप्यो, तेनुं नाम शंख राखवामां आव्युं. पांच धात्रीओवडे पालन करातो ते कुमार वृद्धि पामी अनुक्रमे सर्व कळाओमां निपुण थयो.

ए ज रीते विमळबोधनो जीव पण स्वर्गथी चवी श्रीषेण राजाना मंत्री गुणनिधिनो पुत्र मतिप्रभ नामे थयो. ते शंखकुमारनो मित्र थयो. ते बन्ने मित्रो अनुक्रमे मनोहर युवावस्थाने पाम्या.

एकदा श्रीषेण राजा पासे प्रजाजनोए आवी कह्युं के—" हे देव ! तमारा देशना सीमाडामां एक महा दुर्गम दुर्ग छे. तेमां समरकेतु नामनो पल्लीपति रहे छे, ते निरंतर अमने लुंटे छे अने हेरान करे छे. तेथी तमे अमारुं रक्षण करो." ते सांभळी राजा तत्काळ त्यां जवा उत्सुक थया ते वखते शंखकुमारे नम्रताथी विज्ञप्ति करी के—" हे पिता ! सर्पना वधा उपर गरुडना उद्यमनी जेम ते पल्लीपति उपर तमारो आ उद्यम योग्य नथी. तेथी तेनो जय करवा माटे मने आज्ञा आपो." ते सांभळी राजाए तेने आज्ञा आपी, एटले शंखकुमार सैन्य सहित पल्ली तरफ चाल्यो. तेने आवतो जाणी पल्लीपति दुर्गनो त्याग करी कोइ गाढ वनमां पेठो. ते जाणी बुद्धिमान कुमारे पण एक सामंतने ते दुर्गमां प्रवेश कराव्यो, अने पोते दुर्गनी बहार सैन्य सहित कोइ गुप्त स्थाने छुपाइने रह्यो. ते वात नहीं जाणता पल्लीपतिए तत्काळ आवी ते दुर्गने रुंधी लीधो, तेटलामां कुमारे पण प्रगट थइ पोताना सैन्यथी तेने घेरी लीधो. पछी दुर्गमां पेठेला सामंतना सैन्ये अंदरथी अने कुमारना सैन्ये बहारथी एम बन्ने बाजुथी मध्यमां रहेला पल्लीपतिनी उपर प्रहारो कर्या. एटले कइ दिशामां नासी जवुं ए नहीं सूझवाथी व्याकुळ थयेलो पल्लीपति पोताना कंठपर कुठार राखी कुमारने शरणे जइ हाथ जोडीने बोल्यो के—

" हे बुद्धिमान् ! मारी मायाना जाळने तोडनार तमे एक ज छो. माटे हुं तमारो दास छुं. मारुं सर्वस्व ग्रहण करी मारापर प्रसन्न थाओ. " पछी तेणे जेटलुं धन लोकोनुं लुंट्युं हतुं तेटलुं लइ तेना स्वामीओने आपी कुमार पल्लीपतिने साथे लइ पोताना नगर तरफ चाल्यो. मार्गमां रात्रि समये कोइ ठेकाणे सैन्यनो पडाव नांखी कुमार रह्यो हतो, तेवामां कोइनुं रुदन सांभळी कुमार हाथमां खड्ग लइ ते शब्दने अनुसारे ते तरफ चाल्यो. केटलेक दूर गयो, तेटलामां एक वृद्ध स्त्रीने रुदन करती जोइ. कुमारे तेने रोवानुं कारण पूछ्युं, त्यारे ते बोली के—" अंगदेशमां चंपा नामनी नगरी छे. तेमां जितारि नामे राजा छे. तेने कीर्तिमती नामनी प्रियाने विषे उत्पन्न थयेली यशोमती नामनी पुत्री छे. ते समग्र कळामां कुशळ अने युवावस्थाने पामेली छे. ते पोताने योग्य वर नहीं जोवाथी कोइ पण ठेकाणे रागवाळी थती नथी. एकदा श्रीषेण राजाना पुत्र शंखकुमारना गुणो सांभळी ' मारा पति शंख ज हो ' एम तेणीए प्रतिज्ञा करी. आवी तेनी प्रतिज्ञा जाणी जितारि राजा " आ पुत्री योग्य वरने विषे रागवाळी थइ छे. " एम विचारी अत्यंत हर्ष पाम्या. पछी एकदा मणिशेखर नामना खेचरे ते कन्यानी याचना करी त्यारे जितारि राजाए तेने उत्तर आप्यो के—" आ मारी कन्या शंखकुमार सिवाय बीजा पतिने वरवा इच्छती नथी. तेथी तेवी इच्छावाळी ते कन्या बीजे केम आपी शकाय ? " ते सांभळी ए खेचर क्रोध पाम्यो, एटले एकदा तेणे ते कन्यानुं हरण कर्युं. ते वखते हुं तेणीनी पासे हती तेथी तेणीनी साथे मारुं पण हरण कर्युं. हुं ते कन्यानी धात्री छुं. मार्गमां मने अहीं तजी दइने ते खेचर ते कन्याने लइने क्यांइक जतो रह्यो छे, तेथी हे वीर ! हुं रुदन करुं छुं, के ते कन्यानुं हवे शुं थशे ? "

આ પ્રમાણે સાંભળી શંખકુમારે તે વૃદ્ધાને કહ્યું કે—" હે માતા ! તમે ધીરજ રાખો. હમણાં જ હું તે ખેચરને જીતી કન્યાને લઇ આવું છું. " એમ કહી વનમાં ભમતો ભમતો કુમાર પ્રાતઃકાળ થતાં એક પર્વતપર ગયો. ત્યાં " હે મૂઢ ! મને શંખ જ પરણશે, તું ફોગટ ક્લેશ શા માટે કરે છે ? " એમ વિદ્યાધરને કહેતી તે કન્યાને તેણે જોઇ. તે વખતે શંખકુમારને જોયો. એટલે હસીને ખેચર બોલ્યો કે—" હે જડ ! તું જેને વરવાને ઇચ્છે છે, તે પોતે જ મરવાની ઇચ્છાથી અહીં આવ્યો છે, જો, આને તારી આશા સહિત હણીને હમણાં જ હું યમરાજને ઘેર મોકલું છું અને તને હર્ષથી બળાત્કારે મારે ઘેર લઇ જાઉં છું." આ પ્રમાણે તેનું વચન સાંભળી શંખકુમારે તેને કહ્યું કે—"રે દુષ્ટ ! ઉઠ, તૈયાર થા, તારા મસ્તકની સાથે તારી આ દુષ્ટ ઇચ્છાનું હું હરણ કરું છું. " તે સાંભળી ખેચર તેની સાથે ખડ્ગવડે યુદ્ધ કરવા લાગ્યો. તેમાં કુમારને દુર્જય જાણી વિદ્યાધિષ્ઠિત શસ્ત્રોનો પ્રહાર કરવા લાગ્યો. પરંતુ તે શસ્ત્રો પુણ્યશાળી કુમાર ઉપર પ્રહાર કરવાને સમર્થ થયા નહીં. એ રીતે યુદ્ધ કરીને થાકી ગયેલા વિદ્યાધર પાસેથી તેનું જ ધનુષ ખુંચવી લઇને કુમારે તેનાવડે તેને બાણ માર્યું, તેથી તે મૂર્છા ખાઇ પૃથ્વીપર પડ્યો. તે જોઇ કુમારે તેને ઉપચાર કરી સજ્જ કર્યો અને ફરીથી યુદ્ધ કરવાનો તેને ઉત્સાહ આપ્યો. ત્યારે તે પ્રસન્ન થઇને કુમાર પ્રત્યે બોલ્યો કે—" હે વીર ! અત્યાર સુધી મને કોઇએ જીત્યો નથી, આજે તેં મને જીત્યો છે, તે બહુ સારું થયું છે, હું તારું પરાક્રમ જોઇ તારો દાસ થયો છું. માટે મારો આ અપરાધ તું ક્ષમા કર. "

તે સાંભળી કુમારે તેને કહ્યું કે—" હે ખેચર ! તારી ભક્તિથી હું પ્રસન્ન થયો છું, તેથી તારી જે ઇચ્છા હોય તે કહે. " ત્યારે તે બોલ્યો કે—" હે પુણ્યવાન કુમાર ! શાશ્વત ચૈત્યોને વાંદવા તથા મારાપર અનુગ્રહ કરવા તું મારી સાથે વૈતાઢ્ય

पर्वतपर चाल." ते सांभळी कुमारे तेनुं वचन अंगीकार कर्युं. ते वखते शंखकुमारने सर्व गुणोवडे उत्कृष्ट जोइ 'हुं श्रेष्ठ वरने वरी छुं' एम विचारी यशोमती कन्या अत्यंत हर्ष पामी. तेटलामां त्यां ते मणिशेखरना विद्याधर सेवको आव्या. तेमांथी बे विद्याधरोने मोकली कुमारे पोताना सैन्यने पोताना नगर तरफ जवा कहेवराव्युं, अने बीजा विद्याधरने मोकली पेली वृद्ध धात्रीने बोलावी ते धात्री, कन्या अने खेचर सहित शंखकुमार वैताढ्य पर्वतपर गयो. त्यां तेमणे शाश्वत चैत्योमां रहेला जिनेश्वरोनी प्रणामपूर्वक पूजा करी. पछी मणिशेखरे कुमारने पोताना नगरमां लइ जइ तेनी घणी भक्ति करी. बीजा पण खेचरोए कुमारना पराक्रमथी खुशी थइ तेने पोतपोतानी कन्याओ आपी. त्यारे कुमारे तेमने कह्युं के—"आ यशोमतीने प्रथम परणया पछी हुं तमारी कन्याओने परणीश." त्यारपछी मणिशेखर विगेरे विद्याधरो पोतपोतानी कन्याओ सहित यशोमतीने अने कुमारने लइ चंपानगरीए आव्या. ते सर्वने आवता जाणी जितारि राजा तेमनी सन्मुख आवी महोत्सवपूर्वक तेमने पोताने घेर लइ गयो. पछी त्यां शंखकुमार यशोमतीने तथा बीजी विद्याधर-कन्याओने हर्षथी विधिपूर्वक परण्यो अने भक्तिथी श्रीवासुपूज्यस्वामीना चैत्यनी यात्रा करी. पछी सर्व विद्याधरोने विदाय करी शंखकुमार केटलाक दिवस चंपानगरीमां रही सर्व प्रियाओ सहित हस्तिनापुरमां आव्यो.

एकदा श्रीषेण राजाए शंखने राज्यपर स्थापन करी दीक्षा ग्रहण करी. शंखराजा पण इंद्रनी जेम मोटा राज्यनुं पालन करवा लाग्यो. केटलेक काळे श्रीषेण राजर्षिने केवळज्ञान उत्पन्न थयुं. एकदा विहारना क्रमथी ते केवळी हस्तिनापुरमां पधार्या. तेमनुं आगमन सांभळी शंखराजा परिवार सहित मुनीश्वरने वांदवा आव्या. केवळीना मुखथी धर्मदेशना

सांभळी शंख राजा वैराग्य पाम्या. एटले पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी ते केवळी पासे दीक्षा ग्रहण करी. तेनी साथे मतिप्रभ मंत्रीए तथा यशोमती राणीए पण दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे शंख राजर्षि श्रुतना पारगामी थया, अने दुस्तप तपवडे अर्हत् भक्ति विगेरे स्थानकोनुं सेवन करी तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन कर्युं. छेवट यशोमती साध्वी अने मंत्रीमुनि सहित शंखराजर्षि अनशन करी अपराजित विमानमां देवपणे उत्पन्न थया.

आ ज भरतक्षेत्रने विषे शौर्यपुर नामना नगरमां दशार्हना मोटा भाइ समुद्रविजय नामे राजा हता. तेने सर्व प्राणीओनुं कल्याण करनारी शिवा नामनी राणी हती. देवायु पूर्ण थतां योग्य समये अपराजित नामना स्वर्गथी चवीने शंख राजानो जीव शिवादेवीना गर्भमां अवतर्यो. ते वखते सुखे सुतेली देवीए चौद महास्वप्नो तथा रिष्टरत्नमय नेमिचक्र जोइ जागृत थइ राजाने ते वृत्तांत कह्यो. एटले राजाए प्रातःकाळे स्वप्नपाठकोने बोलावी ते स्वप्नोनुं फळ पूछ्युं, त्यारे तेओए कह्युं के—" तमारे चक्री के धर्मचक्री पुत्र थशे. " पछी समय पूर्ण थये राणीए उत्तम पुत्रने जन्म आप्यो. ते वखते दिक्कुमारीओए आवी सूतिकर्म कर्युं, इंद्रोए आवी मेरुपर्वतपर तेनो स्नात्रमहोत्सव कर्यो. पछी राजाए पण हर्षथी पोताना नगरमां जन्मनो महोत्सव कर्यो. भगवान गर्भमां आव्या त्यारे माताए स्वप्नमां रिष्टनेमि जोयो हतो, तेथी राजाए तेनुं अरिष्टनेमि नाम पाड्युं. इंद्रे आदेश करेली धात्रीओथी लालन पालन कराता भगवान जगतना हर्षनी साथे वृद्धि पामी आठ वर्षना थया. आ अवसरे यशोमतीनो जीव स्वर्गमांथी चवीने उग्रसेन राजानी धारिणी नामनी राणीनी कुक्षिथी पुत्रीपणे उत्पन्न थयो. तेनुं राजीमती नाम पाड्युं. ते पण

अनुक्रमे वृद्धि पामी कळाना समूहने ग्रहण करी पवित्र युवावस्थाने पामी.

अहीं मथुरापुरीमां वसुदेवना पुत्र कृष्णे जरासंध नामना राजाना जमाइ कंसने हण्यो, त्यारे सर्वे यादवो क्रोध पामेला जरासंधना भयथी नैमित्तिकना वचनवडे पश्चिम समुद्रने कांठे जइने रह्या. त्यां कृष्ण वासुदेवे कुबेरनी आराधना करी, तेथी ते देवे समुद्र मध्ये नव योजन पहोळी अने बार योजन लांबी द्वारकापुरी बनावी आपी. लंकानगरीनी शंका करावती ते सुवर्णमय नगरीने विषे बळराम, श्री कृष्ण, दशार्ह अने बीजा सर्व यादवो सुखेथी रह्या. अनुक्रमे प्रतिवासुदेव जरासंधने हणी तथा भरतार्धने साधी राम अने कृष्ण बळदेव अने वासुदेव थइ उत्तम राज्य भोगववा लाग्या. त्यां भगवान नेमिनाथ पण इच्छा प्रमाणे क्रीडा करता पवित्र युवावस्थाने पाम्या. पण तेओ भोगने विषे पराङ्मुख ज हता.

हवे सूत्रकार महाराजा भगवानना रूपादिकनुं वर्णन करे छे.—

सो रिट्ठनेमिनामो उ, लक्खणस्सरसंजुओ। अट्ठसहस्सलक्खणधरो, गोअमो कालगच्छवी ॥ ५ ॥

अर्थ—(सो) ते (रिट्ठनेमिनामो उ) अरिष्टनेमि नामना भगवान (लक्खणस्सरसंजुओ) माधुर्य, लावण्य विगेरे स्वरना लक्षणो सहित हता, तथा (अट्ठसहस्सलक्खणधरो) हस्त पाद विगेरे स्थाने शंख, चक्र, गदा स्वस्तिक विगेरे एक हजार ने आठ लक्षणोने धारण करनारा हता तथा (गोअमो) गौतम गोत्री हता, तथा (कालगच्छवी) श्याम कांतिवाळा हता. ५.

वज्जरिसहसंघयणो, समचउरंसो झसोदरो । तस्स राइमइं कन्नं, भज्जं जाएइ केसवो ॥ ६ ॥

अर्थ— तथा (वज्जरिसहसंघयणो) वज्रर्षभनाराच संघयणवाळा हता, तथा (समचउरंसो) समचतुरस्र संस्थानवाळा हता, (झसोदरो) मत्स्यना जेवा उदरवाळा हता. (तस्स) ते नेमिनाथनी (भज्जं) भार्या करवा माटे (केसवो) वासुदेवे (राइमइं) राजीमती नामनी (कन्नं) कन्यानी तेना पिता पासे (जाएइ) याचना करी. ६.

ते राजीमती कन्या केवी हती ते कहे छे.—

अह सा रायवरकन्ना, सुसीला चारुपेहिणी । सव्वलक्खणसंपन्ना, विज्जुसोआमणिप्पहा ॥ ७ ॥

अर्थ—(अह) हवे (सा) ते (रायवरकन्ना) उग्रसेन राजानी श्रेष्ठ कन्या (सुसीला) सारा शीळवाळी हती, तथा (चारुपेहिणी) मनोहर जोनारी-दृष्टिवाळी हती, तथा (सव्वलक्खणसंपन्ना) सर्व शुभ लक्षणोए करीने युक्त हती, तथा (विज्जुसोआमणिप्पहा) विद्युत् एटले विशेष कांतिवाळी सौदामिनी एटले वीजळीनी जेवी प्रभावाळी-कांतिवाळी हती. ७,

राजीमतीनी याचना करवानो जे प्रसंग प्राप्त थयो तेनी हकीकत आ प्रमाणे छे.—

एकदा श्रीनेमिनाथ प्रभु क्रीडा करतां वासुदेवनी आयुधशाळामां गया, त्यां वासुदेवनुं शार्ङ्ग नामनुं धनुष लेवा लाग्या. ते वखते तेना आरक्षकोए कह्युं के—" हे कुमार ! आ धनुषने चढाववा विष्णु विना बीजो कोइ समर्थ नथी.

तेथी आने ग्रहण करवानो आग्रह मूकी द्यो." ते सांभळी प्रभुए कांइक हसी ते धनुष पोताना हाथमां लीधुं, अने तरत नेतरनी सोटीनी जेम अनायासे ज वाळीने तेनापर प्रत्यंचा चडावी. पछी इंद्रधनुष जेवा ते धनुषवडे शोभता मेघ जेवा ते नेमिनाथे तेनो टंकार करी तेनी गर्जनावडे समग्र विश्व पूरी दीधुं. पछी धनुषने मूकी कांतिवडे देदीप्यमान चक्रने हाथमां लइ कुंभारना चक्रनी जेम तेने आंगळीना अग्रभागवडे भमाडयुं. पछी चक्रनो त्याग करी जेने ग्रहण करतां वासुदेवने पण घणो प्रयास थतो हतो एवी गदाने प्रभुए लाकडीनी जेम ग्रहण करीने फेरवी. पछी तेने पण तजी प्रभुए पांचजन्य नामनो शंख लइ पोताना मुख पासे राख्यो, ते वखते ते शंख विकस्वर काळा कमळनी पासे रहेला राजहंसनी जेम शोभवा लाग्यो. पछी स्वामीए ते शंख वगाडयो, तेना शब्दथी समग्र विश्व बधिर थइ गयुं, सर्व पर्वतो कंपवा लाग्या, पृथ्वी पण चळाचळ थइ, समुद्रो क्षोभ पाम्या अने वीरो मूर्छा खाइ पृथ्वीपर पडया. घणुं कहेवाथी शुं ? ते शब्दथी देवो पण त्रास पाम्या. सिंहना नादथी हाथीनी जेम ते शंखनादथी वासुदेवे पण क्षोभ पामी विचार कर्यो के—" कया बळवाने आ शंख वगाडयो ? हुं ज्यारे शंख वगाडुं छुं त्यारे सामान्य मनुष्यो ज क्षोभ पामे छे, परंतु आ नादवडे तो मने पण अत्यंत क्षोभ थयो छे. तो शुं इंद्र, चक्रवर्ती के बीजो कोइ वासुदेव आव्यो छे ? जो एम ज होय तो हुं आ राज्यनुं रक्षण शी रीते करी शकीश ?" आ प्रमाणे सभामां बेठेला वासुदेव विचार करता हता, तेटलामां आयुधशाळाना रक्षकोए आवी सर्व वृत्तांत कह्यो. ते सांभळी शंकाथी आकुळ व्याकुळ थयेला विष्णुए बळरामने कह्युं के—" जेनी क्रीडाथी पण आ प्रमाणे आखा विश्वने क्षोभ थयो, ते अरिष्टनेमि आपणुं राज्य ग्रहण करे, तो तेने कोण निषेध करी शके ?" ते सांभळी बळदेव बोल्या

के—" हे भाइ ! तमे खोटी शंका न करो. पूर्वेना तीर्थंकरोए आ आपणा भाइनो वृत्तांत एवो कह्यो छे के—यादववंशरूपी समुद्रनो उल्लास करवामां चंद्र समान बावीशमा तीर्थंकर श्री अरिष्टनेमि राज्यलक्ष्मीने भोगव्या विना ज दीक्षा ग्रहण करशे. वळी अत्यारे पण समुद्रविजय विगेरे सर्वे तेने घणी प्रार्थना करे छे, तोपण ते बुद्धिमान एक कन्याने पण परणता नथी, तो ते श्रीनेमि शुं आ राज्यने ग्रहण करे ? " आ प्रमाणे बळरामे कह्या छतां हरिना हृदयमांथी शंका गइ नहीं.

एकदा श्रीनेमिकुमार उद्यानमां क्रीडा करवा गया हता. कृष्ण साथे हता. त्यां कृष्ण वासुदेवे तेने कह्युं के—" हे भाइ ! आपणे आपणा बळनी परीक्षा करवा माटे द्वंद्वयुद्ध करीए. " नेमिकुमारे कह्युं के—" सामान्य माणसने उचित एवुं द्वंद्वयुद्ध आपणे करवुं योग्य नथी. परंतु बळनी परीक्षा तो मात्र बाहु वाळवाथी पण थइ शके छे. " आवुं तेनुं वचन अंगीकार करी हरिए पोतानो बाहु लांबो कर्यो. तेने प्रभुए कमळना नाळनी जेम तत्काळ नमावी दीधो अने पोतानो वज्र जेवो बाहु लांबो कर्यो. तेने वाळवा माटे वासुदेवे पोतानुं सर्व बळ वापर्युं, तोपण ते शाखापर लटकेला बाळकनी जेम ते हाथपर टींगाइ गया. ते वखते हरिए विचार कर्यो के—" जेने राज्य लेवानी इच्छा होय, ते आटलुं बधुं बळ छतां आटलो विलंब करे ज नहीं. " एम विचारी राज्यना अपहारनी चिंता दूर करी वासुदेव पोताने घेर गया.

एकदा समुद्रविजये श्रीकृष्णने कह्युं के—" सर्वे कुमारो पोतपोतानी स्त्रीओ साथे क्रीडा करे छे, पण नेमिकुमार तो ते सर्वथी विलक्षण छे, तेथी अमने अत्यंत खेद थाय छे. तो हे वत्स ! कोइपण उपायथी आ नेमिकुमार विवाह करे एवुं कर. " आवुं समुद्रविजयनुं वचन अंगीकार करी श्रीकृष्णे कामदेवना दिव्य शस्त्ररूप सत्यभामा अने रुक्मिणी विगेरे

पोतानी प्रियाओने ते कार्य माटे आज्ञा करी. ते वखते विश्वना जनोने उत्सवना कारणरूप वसंतोत्सव पण प्रवर्ततो हतो, तेथी सत्यभामा विगेरे स्त्रीओ उद्यानमां क्रीडा करवा गइ, तमनी साथे विष्णुना आग्रहथी श्रीनेमिनाथ पण कामविकार रहित ज ते स्त्रीओनी साथे ऋतुने उचित एवी क्रीडावडे रमवा लाग्या. वसंतऋतु वीत्या पछी ग्रीष्मऋतु आव्यो. त्यारे पण वासुदेवना आग्रहथी भगवान तेनी प्रियाओनी साथे क्रीडापर्वत उपर क्रीडा करवा लाग्या. त्यां विश्वना अलंकाररूप निर्विकार जगद्गुरु श्रीनेमिनाथ कृष्णना आग्रहथी जळक्रीडादिक क्रीडा करवा लाग्या. पछी एकदा वासुदेवनी प्रियाए अवसर जोइ प्रीति, नम्रता अने हास्य सहित नेमिकुमारने कह्युं के—" हे दियर ! तमारुं रूप इंद्रथी पण अधिक छे, तमारुं शरीर सदा आरोग्य अने सौभाग्यादिक गुणे करीने युक्त छे, अने आ तमारी युवावस्था इंद्राणीने पण कामातुर बनावे तेवी छे, तो योग्य कन्याने परणीने ते सर्व सफळ करो. आ तमारुं रूपादिक सर्व भोग विना अवकेशि वृक्षनी जेम निष्फळ छे. केमके स्त्री विना भोग शा कामना ? स्त्री ज भोगनुं स्थान छे, स्त्री विना स्नानादिक शरीरनी शुश्रूषा थती नथी, स्त्री रहित एवा पुरुषने निर्धननी जेम मनवांछित भोजन क्यांथी मळे ? जेम खाण विना रत्न न होय तेम स्त्री विना पुत्र पण होता नथी. भिक्षुकना घरनी जेम स्त्री रहितना अन्नने अतिथि पण खातो नथी. युवति विना युवाननी रात्रि पण शी रीते जाय ? जुओ, चक्रवाकनी रात्रि चक्रवाकी विना वर्ष जेवडी थाय छे. योग्य स्त्रीना संयोग विना कोइपण पुरुष शोभतो नथी. जुओ, रात्रि विनाना चंद्रने कांति क्यांथी होय ? तेथी हे गुणसागर ! कोइपण कन्यानुं पाणिग्रहण करी दशार्हादिक सर्व यादवोनुं मनवांछित पूर्ण करो. जन्मथी ज आरंभीने स्वच्छंदपणे फरनारा सांढ जेम गाडीनी धुंसरी वहन न करी

शके तेम जन्मथी आरंभीने स्वेच्छाए फरनारा तमे पण वधूनो निर्वाह करी शको तेम नहीं होय, तेथी ज विवाहने अंगीकार करता नथी एम हुं धारुं छुं. जो ए ज कारण होय तो ते पण अयुक्त छे. केमके तमारा भाइ वासुदेव जेम अमारो (१६ हजारनो) निर्वाह करे छे, तेम तेनो पण निर्वाह करशे. समग्र पृथ्वीनो भार धारण करनार शेषनागने कांइ लतानो भार वधी जतो नथी. वळी निर्वाणनी प्राप्ति नहीं थवाना भयथी जो भोगनो त्याग करता हो, तो ते पण खोटुं छे. केमके ऋषभादिक जिनेश्वरो भोग भोगवीने पण सिद्ध थया छे. शृष्णाथी मुंगा थयेला तमे उत्तर आपो के न आपो; परंतु विवाह अंगीकार कर्या विना अमाराथी तमे छुटी शकशो नहीं."

आ प्रमाणे ते कृष्णनी प्रियाओ प्रार्थना करती हती, ते वखते बळराम अने कृष्ण विगेरेए आवीने तेज प्रमाणे प्रार्थना करी. बंधुओए मनोहर वचनो वडे अत्यंत आग्रह कर्यो, त्यारे भाविभावने विचारता स्वामीए विवाहनी संमति आपी तेथी हर्ष पामता वासुदेवे समुद्रविजय पासे जइ ते वृत्तांत कह्यो, एटले ते पण अत्यंत हर्षित थया, अने तेणे कृष्णने कह्युं के—" हे महा बुद्धिमान ! तुं ज नेमिकुमार माटे योग्य कन्यानी शोध कर." त्यारे वासुदेव पोते योग्य कन्यानी शोध करवा लाग्या, तेटलामां सत्यभामाए तेने कह्युं के—" हे प्रिय ! कमळना सरखा नेत्रवाळी मारी बेन राजीमती ज नेमिकुमारने योग्य छे." ते सांभळी श्रीकृष्ण हर्ष पामी पोते ज उग्रसेन राजाने घेर गया. वासुदेवने पोताने घेर आवेला जोइ उग्रसेन हर्ष पामी, उभा थइ, आसन आपी हाथ जोडीने बोल्या के—" आजे स्वामीए जाते अहीं आववानो प्रयास शा माटे कर्यो ? पोताना सेवकने मोकली मने ज केम न बोलाव्यो ? आ मारुं घर, धन, शरीर अने पुत्री विगेरे सर्व आपनुं ज

छे एम आप जाणजो. हे स्वामी ! आपनी जे इच्छा होय ते कहो." कृष्णे कह्युं के—"हे राजा ! मारा भाइ नेमीकुमारने आ तमारी राजीमती पुत्री आपो." आ प्रमाणे हरिए राजीमतीनी याचना करी ते जाणी पोताने धन्य मानता उग्रसेन राजाए जे कह्युं, ते सुत्रकार ज कहे छे —

अहाह जणओ तीसे, वासुदेवं महिड्ढिअं । इहागच्छउ कुमारो, जा से कन्नं दलामहं ॥ ८ ॥

अर्थ—(अह) याचना कर्या पछी (तीसे) ते राजीमतीना (जणओ) पिताए (महिड्ढिअं) मोटी ऋद्धिवाळा (वासुदेवं) वासुदेवने (आह) कह्युं के–(कुमारो) नेमिकुमार (इह आगच्छउ) अहीं आवे, (जा) जेथी (से) तेने (अहं) हुं (कन्नं) मारी कन्या (दलामि) आपुं. ८.

आ प्रमाणे उग्रसेन राजाए कह्युं, एटले बन्ने कुळमां वर्धापन थयां, अने जोशीए बतावेलुं विवाहनुं लग्न नजीक आव्युं, ते वखते जे थयुं, ते कहे छे.—

सव्वोसहिहिं ण्हविओ, कयकोउअमंगलो । दिव्वजुअलपरिहिओ, भूसणेहिं विभूसिओ ॥ ९ ॥

अर्थ—(सव्वोसहिहिं) सर्व औषधिओए करीने (ण्हविओ) नेमिकुमारने स्नान कराव्युं–अभिषेक कर्यो तथा (कयकोउअमंगलो) कौतुक अने मंगळ करवामां आव्युं तथा (दिव्वजुअलपरिहिओ) मनोहर बे देवदूष्य वस्त्र धारण कराव्या, तथा (भूसणेहिं) आभूषणो वडे (विभूसिओ) विभूषित कर्यो. ९. पछी.

मत्तं च गंधहत्थिं, वासुदेवस्स जिट्ठगं । आरूढो सोहई अहिअं, सिरे चूडामणी जहा ॥ १० ॥

अर्थ—(वासुदेवस्स) वासुदेवना (जिट्ठगं) अत्यंत प्रशस्त (मत्तं च) अने मदोन्मत्त एवा (गंधहत्थिं) गंधहस्ती उपर (आरूढो) आरूढ थयेला ते नेमिकुमार (सिरे) मस्तकपर (चूडामणी) चूडामणि—मुकुट(जहा) जेम शोभे तेम (अहिअं) अधिक (सोहई) शोभवा लाग्या. १०.

अह ऊसिएण छत्तेण, चामराहि अ सोहिओ । दसारचक्केण य सो, सव्वओ परिवारिओ ॥ ११ ॥

अर्थ— (अह) त्यारपछी (ऊसिएण) माथे धारण करेला (छत्तेण) छत्रवडे (चामराहि अ) तथा वींझाता एवा चामरो वडे (सोहिओ) शोभता (य) तथा (दसारचक्केण) समुद्रविजयादिक दश दशार्होना समूहोवडे (सो) ते नेमिकुमार (सव्वओ) चोतरफथी (परिवारिओ) परिवरेला. ११.

चतुरंगिणीए सेणाए, रइआए जहक्कमं । तुडिआणं सन्निनाएणं, दिव्वेणं गयणंफुसे ॥ १२ ॥

अर्थ—(जहक्कमं) अनुक्रमे (रइआए) गोठवेली (चतुरंगिणीए) चतुरंगी (सेणाए) सेनावडे, तथा (दिव्वेणं) दिव्य अने (गयणंफुसे) आकाशने स्पर्श करता एवा (तुडिआणं) वाजिंत्रोना (सन्निनाएणं) गाढ शब्दवडे जणाता—

एआरिसीए इड्ढीए, जुत्तीए उत्तमाए अ । निअगाओ भवणाओ, निज्जाओ वण्हिपुंगवो ॥ १३ ॥

अर्थ—तथा (एआरिसीए) आवा प्रकारनी उपर कही तेवी (इड्ढीए) समृद्धिए करीने (अ) तथा (उत्तमाए) उत्तम एवी

(जुईए) दीप्तिवडे करीने शोभता एवा (वण्हिपुंगवो) यादवोने विषे श्रेष्ठ एवा नेमिकुमार (निग्गाओ) पोताना (भवणाओ) घरथकी (निजाओ) नीकल्या अने मंडपना समीप देशमां आव्या. १३.

ते वखते पोताना घरनी बारीमां बेठेली राजीमती कन्या नेमिकुमारने आवता जोई वचनथी न कही शकाय तेवा आनंदने पामी आ प्रमाणे विचारवा लागी के—" शुं आ ते नागेन्द्रकुमार छे ? के सूर्य छे ? के कामदेव छे ? के इंद्र छे ? के मनुष्यना देहनो आश्रय करीने आवेलो मारा ज पुण्यनो समूह छे ? जे बुद्धिमान विधाताए आ मारा पतिने बनाव्या छे, ते महात्मानो हुं शो प्रत्युपकार करी शकीश ?" आ रीते विचारतां तेणीने श्रीनेमिना दर्शनथी उत्पन्न थयेला हर्षवडे " हुं कोण छुं ? आ शुं थाय छे ? आ कयो समय छे ? अने हुं क्यां रहेली छुं ? " इत्यादिक कांइपण खबर रही नहीं. तेटलामां राजीमतीनुं जमणुं नेत्र फरक्युं, तेथी मनमां उद्वेग पामी तेणीए तरत ज ते वात पोतानी सखीओने कही. त्यारे सखीओ बोली के—" हे मोटा आशयवाळी ! तारुं पाप हणाई जाओ. आटली पृथ्वी सुधी आवेला आ नेमिकुमार हवे पाछा नहीं वळे. " राजीमती अधीरी थइने बोली के—" हुं मारा भाग्यपरथी जाणुं छुं के—आ मारा नाथ अहीं सुधी आव्या छे, तोपण ते पाछा ज जशे अने मारुं पाणिग्रहण करशे नहीं. "

आ अवसरे जे थयुं ते सूत्रकार ज बतावे छे.—

अह सो तत्थ निज्जंतो, दिस्स पाणे भयदुए । वाडेहिं पंजरेहिं च, संनिरुद्धे सुदुक्खिए ॥ १४ ॥

अर्थ—(अह) हवे (सो) ते अरिष्टनेमि (तत्थ) त्यां एटले मंडपनी समीपे (निज्जंतो) गया सता (वाडेहिं)

वाडाओवडे (पंजरेहिं च) अने पांजराओवडे एटले वाडाओमां अने पांजराओमां (सन्निरुद्धे) रुंधेला एटले पूरेला, एज कारणथी (सुदुक्खिए) अत्यंत दुःखी थतां अने (भयदुए) भयथी त्रास पामेला एवा (पाणे) प्राणीओने (दिस्स) जोइने. १४

जीविअंतं तु संपत्ते, मंसट्ठा भक्खिअव्वए । पासित्ता से महापण्णे, सारहिं पडिपुच्छइ ॥ १५ ॥

अर्थ—(जीविअंतं तु) जीवितना अंतने एटले मरण अवस्थाने (संपत्ते) पामेला, तथा (मंसट्ठा) मांसने माटे एटले प्राणीओने खावाथी खानारनां शरीरमां मांसनी पुष्टी थाय छे एटला माटे (भक्खिअव्वए) अविवेकी जनोए भक्षण करवा लायक एवा ते प्राणीओने (पासित्ता) जोइने एटले हृदयमां धारण करीने (महापण्णे से) महा बुद्धिमान एटले अवधिज्ञानवाळा ते भगवान (सारहिं) सारथिने एटले महावतने (पडिपुच्छइ) पूछता हवा. १५.

कस्स अट्ठा इमे पाणा, एए सव्वे सुहेसिणो । वाडेहिं पंजरेहिं च, संनिरुद्धे अ अच्छहिं ॥ १६ ॥

अर्थ—(कस्स अट्ठा) शाने अर्थे एटले शा कारणथी (एए सव्वे) आ सर्वे (सुहेसिणो) सुखना अभिलाषी-सुखने इच्छनारा (इमे पाणा) आ प्राणीओ (वाडेहिं) वाडाओवडे (पंजरेहिं च) अने पांजराओवडे (सन्निरुद्धे अ) रुंध्या सता (अच्छहिं) रहेला छे ? १६.

आ प्रमाणे भगवाने पूछ्युं त्यारे—

अह सारही तओ भणइ, एए भद्दा उ पाणिणो । तुब्भं विवाहकज्जम्मि, भुंजावेउं बहुं जणं ॥१७॥

अर्थ—(अह) हवे (तओ) त्यारपछी (सारही) सारथिए (भणइ) कह्युं के (एए) आ (भद्दा उ) उत्तम जातिना ज (पाणिणो) प्राणीओने (तुब्भं) तमारा (विवाहकज्जम्मि) विवाहना कार्यमां (बहुं जणं) घणा जनोने एटले यादवोने (भुंजावेउं) खवराववा माटे रुंध्या छे. १७.

आ प्रमाणे सारथिए कह्युं, त्यारे प्रभुए शुं कर्युं ? ते कहे छे.—

सोऊण तस्स वयणं, बहुपाणविणासणं । चिंतेइ से महापण्णे, साणुक्कोसे जिएहि उ ॥ १८ ॥

अर्थ—(बहुपाणविणासणं) घणा प्राणीओने विनाश करनारुं (तस्स) ते सारथिनुं (वयणं) वचन (सोऊण) सांभळीने (महापण्णे) महा बुद्धिमान अने (जिएहि उ) जीवोने विषे (साणुक्कोसे) करुणावाळा (से) ते भगवान (चिंतेइ) विचार करवा लाग्या. अथवा (जिए हिओ) एवो पाठ राखी जीवने विषे हितकारक एवा प्रभु विचारवा लाग्या एम अर्थ करवो. १८.

जइ मज्झ कारणा एए, हम्मंति सुबहू जिआ । न मे एअं तु निस्सेसं, परलोए भविस्सइ ॥१९॥

अर्थ—(जइ) जो (मज्झ) मारा (कारणा) कारणथी (एए) आ (सुबहू) घणा (जिआ) जीवो (हम्मंति) हणाशे, तो (एअं तु) आ जीवहिंसा (मे) मने (परलोए) परलोकमां (निस्सेसं) कल्याणकारक (न भविस्सइ) नहीं थाय.

પૂર્વભવોમાં પરલોક ભીરુપણાનો ઘણો અભ્યાસ હોવાથી અહીં આ પ્રમાણે—' મને પરલોકમાં કલ્યાણકારક નહીં થાય ' એમ કહ્યું છે. અન્યથા ભગવાન ચરમ દેહધારી અને અતિશય જ્ઞાનવાળા હોવાથી આવો વિચાર થાય જ નહીં. ૧૯.

ત્યારપછી જિનેશ્વરનો અભિપ્રાય જાણીને સારથિએ તે સર્વે જીવોને પાંજરામાંથી અને વાડાઓમાંથી છોડાવ્યા, તે વખતે પ્રભુએ હર્ષ પામીને જે કર્યું તે કહે છે.—

सो कुंडलाण जुअलं, सुत्तगं च महायसो । आहरणाणि अ सव्वाणि, सारहिस्स पणामए ॥ २० ॥

અર્થ—(મહાયસો) મોટા યશવાળા (સો) તે પ્રભુએ (કુંડલાણ) કુંડળનું (જુઅલં) યુગલ–બે કુંડળો (સુત્તગં ચ) તથા કટિસૂત્ર–કંદોરો (અ) તથા (સવ્વાણિ) સર્વ બીજાં અંગોપાંગનાં (આહરણાણિ) આભૂષણો (સારહિસ્સ) સારથિને (પણામએ) આપ્યાં–પ્રીતિદાન કર્યાં. ૨૦.

ત્યારપછી કરુણારસના સમુદ્રરૂપ અને સમગ્ર જીવોના હિતકારક પ્રભુ વક્ર ગ્રહની જેમ તત્કાળ ત્યાંથી પાછા વળ્યા. તે વખતે શિવારાણી અને સમુદ્રવિજય રાજા પ્રભુની પાસે આવી મેઘની જેમ નેત્રમાંથી અશ્રુની ધારાને મૂકતા સતા બોલ્યા કે —" હે વત્સ ! અંગીકાર કરેલા વિવાહનો ત્યાગ કરવાથી અમારા હર્ષરૂપી વૃક્ષને તું કેમ મૂળથી ઉખેડી નાંખે છે ? અને આ કૃષ્ણાદિક યાદવોને કેમ ખેદ પમાડે છે ? આ કૃષ્ણે તારે માટે ઉગ્રસેન રાજા પાસે જાતે જઇને તેની પુત્રી માગી લીધી છે, તે હવે શી રીતે તેને પોતાનું મુખ દેખાડી શકશે ? જીવતાં મરેલા જેવી રાજીમતી કન્યાનું પણ હવે શું થશે ! ચંદ્ર વિના

रात्रिनी जेम पति विना स्त्री शोभती नथी. तेथी तुं विवाह करीने अमने वहुनुं मुख देखाड, अने अमारी आ प्रथम प्रार्थना सफळ कर." ते सांभळी भगवान् बोल्या के—"हे पूज्यो ! आवो आग्रह तमे मूकी द्यो. प्रियजनने हितकार्यमां ज प्रेरणा करवी योग्य छे. जे स्त्रीनुं पाणिपीडन ज प्राणीपीडनरूप छे, अने जेनामां आसक्त थयेला प्राणी तत्काळ दुर्गतिने पामे छे, तेवी स्त्रीओनो संग मारी जेवा मुमुक्षुने योग्य नथी. कारण के पंडित पुरुषो परलोकना हितने माटे ज यत्न करे छे, परंतु मात्र प्रारंभमां ज सुंदर अने परिणामे दारुण एवा कार्यने माटे यत्न करता नथी." आ प्रमाणे भगवान् कहेता हता, ते ज वखते आसन कंपवाथी योग्य अवसर जाणीने लोकांतिक देवोए त्यां आवी भगवानने 'तीर्थ प्रवर्तावो' एम कह्युं. तथा ते देवोए समुद्रविजय विगेरे सर्वेने कह्युं के—"तमे सर्व पुण्यवंतो आवा हर्षने स्थाने खेद केम करो छो ? आ भगवान् दीक्षा ग्रहण करी केवळज्ञान पामी चिरकाळ सुधी तीर्थने प्रवर्तावी त्रण जगतने आनंद आपवाना छे." आ प्रमाणे देवोनुं वचन सांभळी सर्व खुशी थया. पछी घेर जइ भगवान सांवत्सरिक दान देवा लाग्या.

अहीं श्रीनेमिकुमारने पाछा वळेला जोइ राजीमती अत्यंत शोकातुर थइ मूर्च्छा पामीने पृथ्वीपर पडी गइ. तेने तेनी सखीओए शीतळ उपचार करी चेतना पमाडी, त्यारे ते जाणे दुःखना उद्गार काढती होय तेम विलाप करवा लागी के—"हे नाथ ! कांइपण दोष विना अकस्मात् आपने विषे रक्त एवी जे हुं तेनो त्याग करी तमे क्यां गया ? तमारी जेवाने भक्तजननी उपेक्षा करवी योग्य नथी. महापुरुषो पोताना आश्रित जन सदोष होय तोपण तेने तजता नथी. चंद्र कदापि कलंकने तजतो नथी, अने समुद्र वडवानळने तजतो नथी. एम छतां पण हे प्रभु ! जो तमारे मने तजवी हती,

तो विवाहनो स्वीकार करी मारी विडंबना शामाटे करी ? अथवा तो मारो ज दोष छे के जेथी दुर्लभ एवा पण तमारे विषे में राग कर्यो. कागडी हंसने विषे जे राग करे तेमां कागडीनो ज दोष छे. हे नाथ ! तमे मारो स्वीकार करीने मने मूकी दीधी, तेथी मारुं रूप, कळाकुशळता, लावण्य, यौवन अने कुळ विगेरे सर्व निष्फळ थयुं. हे कांत ! तमारा वियोगनी व्यथाथी जाणे मारा प्राण नीकळी जता होय, जाणे मारुं हृदय फाटी जतुं होय अने जाणे मारुं शरीर बळी जतुं होय एवी हुं थइ छुं. हे स्वामी ! तमे जे प्रकारे पशुओने विषे दयाळु थया, ते ज रीते मारापर दयाळु थाओ. तमारी जेवा महात्माने पंक्तिभेद करवो योग्य नथी. हे प्रभु ! तमारे विषे रागी थयेली मने एक ज वार दृष्टिवडे अने वाणीवडे प्रसन्न करो. स्वाद कर्या विना मीठा के कडवा फळने कोण जाणी शके ? अथवा तो सिद्धिरूपी वहुने वरवा उत्सुक थयेला तमारा मनने इंद्राणी पण हरण करी शकती नथी, तो हुं मनुष्यरूपी कीटिका तो कइ गणतरीमां होउं ? "

आ प्रमाणे विलाप करती राजीमतीने सखीओए कह्युं के—" हे सखी ! रोदन नहीं. ते नीरस अने महा कठोर छे, तेने जवा दे. बीजा घणा यदुकुमारो मनोहर रूपवाळा छे, तेमांथी कोइ योग्यने वरजे. " ते सांभळी पोताना कान बे हाथवडे ढांकी दइने राजीमती बोली के—" हे सखीओ ! तमे सामान्य जनने उचित एवुं पण उत्तमने अनुचित एवुं वचन केम बोलो छो ? जो कदाच रात्रिए सूर्यनो उदय थाय, के अग्नि शीतळ थाय, तोपण श्रीनेमिने मूकीने बीजा वरने हुं नहीं वरुं. जो विवाहने विषे मारा हाथपर नेमिनो हाथ नथी थयो तो दीक्षा ग्रहण करती वखते मारा मस्तकपर तेनो हाथ थशे. " ते सांभळी सखीओ बोली के—" हे शुभ आशयवाळी ! तारो आ विचार अति उत्तम छे. " पछी ते सती

बोली के—" हे सखीओ ! आजे मने स्वप्न आव्युं हतुं. तेमां कोइ पुरुष ऐरावण हाथीपर चडीने मारे घेर आव्यो, अने तत्काळ पाछो फरी मेरुपर्वतपर चडी गयो. त्यां रहीने ते लोकोने चार अमृतफळ देवा लाग्यो. तेनी पासे में पण फळनी याचना करी त्यारे मने पण ते फळ आप्यां." ते सांभळी सखीओए कह्युं.—" हे सखी ! तुं खेद न कर. हे पाप रहित ! तारा विघ्नो नाश पाम्या. आ स्वप्न जो के प्रारंभमां कडुक लागे छे, परंतु तेनुं परिणाम अति शुभ छे." त्यारपछी राजीमती एक नेमिनाथनुं ज ध्यान करती घरमां रही. प्रभु पण व्रत लेवा तैयार थया.

पछी जे प्रकारे प्रभुए दीक्षा ग्रहण करी, ते सूत्रकार ज कहे छे.—

मणपरिणामो अ कओ, देवा य जहोइअं समोइण्णा। सव्विड्ढीइ सपरिसा, निक्खमणं तस्स काउं जे ।२१।

अर्थ—(मणपरिणामो अ) श्री अरिष्टनेमिए व्रत लेवा माटे मननो परिणाम (कओ) कर्यो. एटले (देवा य) चार निकायना देवो (जहोइअं) उचितता प्रमाणे (सव्विड्ढीए) सर्व ऋद्धि सहित तथा (सपरिसा) पोतपोताना परिवार सहित (तस्स) ते नेमिनाथनो (निक्खमणं) दीक्षानो उत्सव (काउं जे) करवा माटे (समोइण्णा) स्वर्गथी उतर्या. २१.

देवमणुस्सपरिवुडो, सीआरयणं तओ समारूढो। निक्खमिअ बारयाओ, रेवययम्मि ठिओ भयवं॥

अर्थ—(तओ) त्यारपछी (देवमणुस्सपरिवुडो) देवो अने मनुष्योथी परिवरेला अने (सीआरयणं) शिबिका

रत्नपर (समारूढो) आरूढ थयेला (भयवं) भगवान (बारयाओ) द्वारका नगरीथी (निक्खमिओ) नीकळीने (रेवयम्मि) रैवतकपर्वतपर (ठिओ) गया—गया. २२.

उज्जाणं संपत्तो, ओइण्णो उत्तिमाओ सीआओ। साहस्सीइ परिवुडो, अह निक्खमई उ चित्ताहिं ॥२३॥

अर्थ—त्यां (उज्जाणं) सहस्राम्रवन नामना उद्यानमां (संपत्तो) प्रभु प्राप्त थया. त्यां (उत्तिमाओ) उत्तम (सीआओ) शिबिकाथकी (ओइण्णो) नीचे उतर्या. (अह) पछी (साहस्सीइ) हजार प्रधान पुरुषोथी (परिवुडो) परिवर्या सता (चित्ताहिं) चित्रा नक्षत्रमां प्रभु (निक्खमई उ) दीक्षा ग्रहण करता हवा—पंच महाव्रत उच्चरता हवा. आ प्रभुना पांचे कल्याणको चित्रा नक्षत्रमां ज थया छे. २३.

अह सो सुगंधगंधिए, तुरिअं मउअकुंचिए। सयमेव लुंचई केसे, पंचमुट्ठीहिं समाहिओ ॥ २४ ॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (समाहिओ) सर्व सावद्य योगनो त्याग करवाथी ज्ञान, दर्शन अने चारित्रने विषे समाधिवाळा (सो) ते प्रभुए (सुगंधगंधिए) स्वभावथी ज सुरभि गंधवाळा तथा (मउअकुंचिए) कोमळ अने कुटिल एवा (केसे) केशोने (पंचमुट्ठीहिं) पांच मुठीवडे (सयमेव) पोते ज (तुरिअं) शीघ्र (लुंचई) लोच कर्यो. २४.

वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइंदिअं। इच्छिअमणोरहं तुरिअं, पावेसू तं दमीसरा! ॥ २५ ॥

अर्थ—(वासुदेवो) वासुदेव (य) तथा बळभद्र अने समुद्रविजय विगेरे यादवो (लुत्तकेसं) जेणे केशनो लोच

कर्यो छे एवा तथा (जिइंदिअं) जेणे इंद्रियोने जीती छे एवा (णं) ते नेमिनाथने (भणइ) कहेता हवा के-(दमीसरा) हे मुनीश्वर ! (तं) तमे (इच्छिअमणोरहं) वांछित मनोरथने (तुरिअं) शीघ्रपणे (पावेसू) पामो. २५.

नाणेणं दंसणेणं च, चरित्तेण तवेण य । खंतीए मुत्तीए, वड्ढमाणो भवाहि अ ॥ २६ ॥
एवं ते रामकेसवा, दसारा य बहुजणा । अरिट्ठनेमिं वंदित्ता, अइगया बारगाउरिं ॥ २७ ॥

अर्थ—वळी हे स्वामी ! (नाणेणं) ज्ञानवडे, (दंसणेणं च) दर्शनवडे, (चरित्तेण) चारित्रवडे, (तवेण य) तपवडे, (खंतीए) क्षमावडे, तथा (मुत्तीए) मुक्तिवडे एटले निर्लोभतावडे (वड्ढमाणो) वृद्धि पामनारा (भवाहि अ) तमे थाओ. २६. (एवं) ए प्रकारे कही (ते) ते (रामकेसवा) बळराम, वासुदेव, (दसारा य) दशार्हो तथा (बहुजणा) बीजा घणा जनो (अरिट्ठनेमिं) श्रीअरिष्टनेमिने (वंदित्ता) वांदीने (बारगाउरिं) द्वारका नगरीमां (अइगया) पेठा-आव्या. २७.

ते वखते प्रभुना संगमनी आशा नष्ट थवाथी राजीमती केवी थइ ? ते कहे छे.—

सोऊण रायवरकन्ना, पव्वज्जं सा जिणस्स उ । नीहासा य निराणंदा, सोगेण उ समुच्छया ॥२८॥

अर्थ—(रायवरकन्ना) उग्रसेन राजानी श्रेष्ठ कन्या (सा) ते राजीमती (जिणस्स उ) जिनेश्वरनी (पव्वज्जं)

दीक्षा (सोऊण) सांभळीने (नीहासा य) हास्य रहित तथा (निराणंदा) आनंद रहित थइ सती (सोगेण उ) शोके करीने (समुच्छया) व्याप्त थइ. २८.

राईमई विचिंतेइ, धिरत्थु मम जीविअं । जा हं तेण परिच्चत्ता, सेअं पव्वइउं मम ॥ २९ ॥

अर्थ—त्यारपछी (राईमई) राजीमती (विचिंतेइ) चिंतववा लागी, के—(मम) मारा (जीविअं) जीवितने (धिरत्थु) धिक्कार हो, के (जा) जे (हं) हुं (तेण) ते नेमिनाथवडे (परिच्चत्ता) त्याग कराइ छुं. तेथी हवे (मम) मारे (पव्वइउं) प्रव्रज्या लेवी ते ज (सेअं) कल्याणकारक छे के जेथी अन्य जन्ममां पण आवुं दुःख प्राप्त न थाय. तेम ज ' सतीओ पतिने अनुसरे छे. ' ए वचन पण सत्य थाय. २९.

अहीं श्री अरिष्टनेमिनो भाइ रथनेमि राजीमतीने विषे आसक्त थवाथी हमेशां तेणीने फळ, पुष्प अने अलंकार विगेरे मोकलतो हतो. परंतु राजीमती तो पोताना मनमां एम समजती के—" आ रथनेमि पोताना भाइना स्नेहथी आ सर्व मने मोकलावे छे. " एम धारी ते सर्व अंगीकार करती हती. रथनेमि तो ते वस्तु ग्रहण करवाथी राजीमतीने पोतानी उपर रागवाळी ज मानतो हतो. " कामी जनोने कमळानी व्याधिवाळानी जेम सर्व विपरीत ज भासे छे. " एकदा रथनेमिए राजीमतीने कह्युं के—" हे सुंदर नेत्रवाळी ! तुं खेद पामीश नहीं. जो कदाच राग रहित नेमीए तारो त्याग कर्यो, तेथी शुं थयुं ? परंतु हवे तुं मने पतिरूपे अंगीकार कर, अने तारुं यौवन कृतार्थ कर. मालतीने भ्रमरनी जेम हुं तारी अत्यंत इच्छा करुं छुं. " ते सांभळी राजीमती बोली—" जो के नेमिनाथे मारो त्याग कर्यो छे, तोपण हुं तेनी शिष्या

थवानी छुं, तेथी आ तमारी प्रार्थना नकामी छे." आ प्रमाणे तेणीए निषेध कर्या छतां रथनेमिए तेणीने विषे स्पृहानो त्याग कर्यो नहीं. तेथी फरीथी एकदा एकान्तमां तेणे सती राजीमतीने कह्युं के—" हे मृगाक्षी ! शुष्क काष्ठमां भमरीनी जेम तुं राग रहित नेमिने विषे आसक्त थइने शामाटे फोगट तारा आत्माने संताप पमाडे छे ? जो तुं मारो स्वीकार करे तो हुं जन्म पर्यंत तारो दास थइने रहुं. माटे तुं मारी साथे भोग भोगव. भोग विना मनुष्यनो जन्म निष्फळ छे एम पंडितो कहे छे." आ प्रमाणे तेनुं वचन सांभळी तेने बोध करवा राजीमतीए प्रथम दूधनुं पान करी पछी मदनफळ (मींढोळ) सुंघीने एक थाळमां तेनुं वमन करी तेने कह्युं के—" आ दूध तमे पीओ." रथनेमिए कह्युं—" शुं हुं श्वान छुं ? के जेथी वमननुं पान करुं ? " त्यारे हसीने राजीमतीए कह्युं—" शुं तमे एटलुं समजो छो ? " ते बोल्यो—एक बाळक पण आ वात समजी शके छे, तो हुं केम न समजुं ? " ते सांभळी राजीमती बोली के—" तो नेमिनाथे वमेली मने तमे भोगववा इच्छो छो, तेथी तमे श्वान तुल्य ज छो." आ प्रमाणे तेणीनुं वचन सांभळी रथनेमि तेणीनी इच्छानो त्याग करी पोताने घेर गया, अने ते सती पण उग्र तप करवा लागी.

आ तरफ श्रीनेमिनाथ छद्मस्थ अवस्थाए चोपन दिवस सुधी अन्य अन्य ग्रामादिकमां विचरी फरीथी रैवताचळ पर्वत पर आव्या. त्यां प्रभु अट्टम तप करी ध्यानमां मग्न थया. ते वखते तेमने केवळज्ञान प्राप्त थयुं. तरत ज आसन कंपवाथी सर्व इंद्रो देवो सहित उत्सव करवा त्यां आव्या. देवोए मनोहर समवसरण रच्युं. तेने विषे चार मूर्तिवाळा प्रभुए बेसी

१ एक बाजु पोते ने त्रण बाजु त्रण प्रतिबिंब देवकृत होय छे.

धर्मदेशना प्रारंभी. ते वखते उद्यानपालकना मुखथी प्रभुने ज्ञान उत्पन्न थयुं जाणी बळभद्र, श्रीकृष्ण, राजीमती, दशार्ह विगेरे यादवो अने बीजा सर्व मनुष्यो रैवतक पर्वत पर जइ प्रभुने वांदी यथायोग्य स्थाने बेसी धर्मदेशना सांभळवा लाग्या. धर्मदेशना सांभळी प्रतिबोध पामेला घणा राजाओए, अन्य जनोए अने स्त्रीओए प्रभु पासे प्रव्रज्या ग्रहण करी अने केटलाके श्रावकनां व्रतो अंगीकार कर्यां. दीक्षा लीधेला मुनिओमांथी वरदत्त विगेरे अढार गणधरो थया. तेमणे स्वामी पासेथी त्रिपदी पामीने द्वादशांगीनी रचना करी. त्यारपछी रथनेमिए पण वैराग्य पामी स्वामी पासे प्रव्रज्या लीधी, तथा राजीमतीए पण घणी कन्याओ सहित दीक्षा लीधी.

ते ज वात सूत्रकार पण कहे छे.—

अह सा भमरसंनिभे, कुच्चफणगपसाहिए । सयमेव लुंचई केसे, धिइमंता ववस्सिआ ॥ ३० ॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (धिइमंता) धैर्यवाळी अने (ववस्सिआ) चारित्रधर्म प्रत्ये उद्यमवाळी (सा) ते राजीमतीए (भमरसंनिभे) भ्रमर जेवा श्याम अने (कुच्चफणगपसाहिए) कूर्च एटले कांचकी अने फणक एटले दांतीयावडे संस्कार करेला (केसे) केशोनो (सयमेव) पोते ज (लुंचई) लोच कर्यो. ३०.

वासुदेवो य णं भणइ, लुत्तकेसं जिइंदिअं । संसारसायरं घोरं, तर कन्ने ! लहुं लहुं ॥ ३१ ॥

अर्थ—(वासुदेवो) वासुदेव (य) तथा बळभद्र विगेरे सर्वेए (लुत्तकेसं) जेणे केशनो लोच कर्यो छे, अने

(जिइंदियं) जेणे इंद्रियो जीती छे एवी (यं) ते राजीमतीने (भणइ) कह्युं के–(कण्णे) हे कन्या ! (घोरं) भयंकर एवा आ (संसारसायरं) संसारसागरने तुं (लहुं लहुं) शीघ्र शीघ्र (तर) तरी जा. ३१.

सा पव्वइआ संती, पव्वावेसी तहिं बहुं । सयणं परिअणं चेव, सीलवंता बहुस्सुआ ॥ ३२ ॥

अर्थ—(सीलवंता) शीळवती अने (बहुस्सुआ) घणा श्रुतज्ञानवाळी (सा) ते राजीमतीए (पव्वइआ संती) दीक्षा ग्रहण करी संती एटले दीक्षा लीधा पछी (तहिं) ते द्वारका नगरीमां (बहुं) घणी (सयणं) स्वजननी स्त्रीओने (परिअणं चेव) तथा परिजननी स्त्रीओने (पव्वावेसी) दीक्षा अपावी. ३२.

गिरिं च रेवयं जंती, वासेणोल्ला उ अंतरा । वासंते अंधयारम्मि, अंतो लयणस्स सा ठिआ ॥३३॥

अर्थ—एकदा प्रभुने वांदवा माटे (रेवयं) रैवतक नामना (गिरिं च) गिरि तरफ (जंती) जती (अंतरा) मार्गमां (वासंते) वरसाद वरसते सते अने (अंधयारम्मि) चोतरफ अंधकार थये सते (वासेण उल्ला) वरसादवडे आर्द्र थयेली एटले भींजायेला सर्व वस्त्रवाळी (सा) ते राजीमती (लयणस्स अंतो) एक गुफा मध्ये (ठिआ) रही. अथवा अंधकारवाळी गुफामां जइने रही. ३३.

चीवराइं विसारंती, जहाजाय त्ति पासिआ । रहनेमी भग्गचित्तो, पच्छा दिट्ठो अ तीइ वि ॥३४॥

अर्थ—ते गुफामां (चीवराइं) वस्त्रोने (विसारंती) सुकववा माटे प्रसारती एवी राजीमती ते वखते (जहाजाय)

(अंधगवण्हिणो) अंधकवृष्णिना कुळमां (सि) उत्पन्न थयेलो छे, तेथी आपणा (कुले) कुळमां आपणे (गंधणा) गंधन जातिना सर्पतुल्य (मा होमो) न थइए. गंधन जातिना सर्पो वमेला विषने मंत्रथी आकर्षण कराय त्यारे अग्निपातना भयथी पाछुं चूसी ले छे, परंतु अगंधन जातिना सर्प तो अग्निमां प्रवेश करे छे पण वमेलुं विष पाछुं चूसी लेता नथी. तेथी करीने (निहुओ) व्रतमां स्थिर थइने तुं (संजमं) संयमनुं (चर) आचरण कर—सेवन कर. ४४.

जइ तं काहिसि भावं, जा जा दिच्छसि नारीओ । वायाविद्धु व्व हडो, अट्ठिअप्पा भविस्ससि ॥४५॥

अर्थ—हे साधु ! (जा जा) जे जे (नारीओ) स्त्रीओने (दिच्छसि) तुं जोइश अने जोइने तेने विषे (जइ) जो (तं) तुं (भावं) अभिलाषाने (काहिसि) करीश, तो (वायाविद्धो) वायुथी प्रेरायेली (हडो) हड नामनी वनस्पति एटले शेवाळनी (व्व) जेम तुं (अट्ठिअप्पा) अस्थिर चित्तवाळो (भविस्ससि) थइ जइश. ४५.

गोवालो भंडवालो वा, जहा तद्दव्वणिस्सरो । एवं अणिस्सरो तं पि, सामण्णस्स भविस्ससि ॥४६॥

अर्थ—(जहा) जेम (गोवालो) गोवाळ–पारकी गायोने पगार लइने चारनार (वा) अथवा (भंडवालो) पगार लइने कोइना करीयाणानुं रक्षण करनार (तद्दव्वणिस्सरो) ते द्रव्य एटले गाय अथवा करीयाणानो अनीश्वर छे–स्वामी नथी. (एवं) ए ज प्रमाणे (तं पि) तुं पण (सामण्णस्स) चारित्रनो (अणिस्सरो) अनीश्वर (भविस्ससि) थइश. गोवाळ के भांडपालक जेम गायनो के भांडनो स्वामी नहीं होवाथी तेना फळने भोगवनार थतो नथी, तेम तुं पण चारि-

मनो वेषमात्र धारण करवाथी–द्रव्यधर्मनो ज पाळक होवाथी मात्र उदरपूर्तिना फळने ज भोगवनार थइश, परंतु भावधर्मनुं फळ जे मोक्ष तेनो भोक्ता थइश नहीं. ४६.

आ प्रमाणे राजीमतीए कहुं, त्यारे रथनेमिए शुं कर्युं ? ते कहे छे.—

तीसे सो वयणं सोच्चा, संजयाइ सुभासिअं । अंकुसेण जहा नागो, धम्मे संपडिवाइओ ॥ ४७ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (अंकुसेण) अंकुशवडे (नागो) हाथी मार्गमां आवे छे, तेम (तीसे) ते (संजयाइ) राजीमती साध्वीनुं (सुभासिअं) सुभाषित (वयणं) वचन (सोच्चा) सांभळीने (सो) ते रथनेमि (धम्मे) धर्ममार्गमां (संपडिवाइओ) स्थिर थयो. ४७.

मणगुत्तो वयगुत्तो, कायगुत्तो जिइंदिओ । सामण्णं निच्चलं फासे, जावजीवं दढव्वओ ॥ ४८ ॥

अर्थ—(मणगुत्तो) मनवडे गुप्त एटले मनगुप्तिवाळो, (वयगुत्तो) वचनवडे गुप्त एटले वचनगुप्तिवाळो, (कायगुत्तो) कायावडे गुप्त एटले कायगुप्तिवाळो तथा (जिइंदिओ) जितेंद्रिय अने (दढव्वओ) व्रतने विषे दृढ थइने (जावजीवं) जीवित पर्यंत (निच्चलं) निश्चळ एवा (सामण्णं) चारित्रने (फासे) पाळवा लाग्यो. ४८.

उग्गं तवं चरित्ताणं, जाया दुण्हि वि केवली । सव्वं कम्मं खवित्ता णं, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं ॥४९॥

अर्थ—(उग्गं) उग्र (तवं) तप (चरित्ताणं) करीने (दुण्हि वि) राजीमती अने रथनेमि ए बन्ने (केवली) केवळज्ञानी (जाया) थया अने अनुक्रमे (सव्वं) सर्व (कम्मं) कर्मने (खवित्ता णं) खपावीने (अणुत्तरं) सर्वो-

सम एवा (सिद्धि) सिद्धिस्थानने (पत्ता) पाम्या. ४९.

एवं करिंति संबुद्धा, पंडिआ पविअक्खणा । विणिअट्टंति भोगेसु, जहा से पुरिसुत्तमु त्ति बेमि ॥५०॥

अर्थ—(संबुद्धा) सम्यक् प्रकारे बोधवाळा, (पंडिआ) तत्त्वबुद्धिवाळा अने (पविअक्खणा) विवेकी एवा पुरुषो (एवं) आ प्रमाणे (करिंति) करे छे, तथा (से) ते (पुरिसुत्तमो) पुरुषोमां उत्तम एवा रथनेमिनी (जहा) जेम (भोगेसु) भोग थकी (विणिअट्टंति) पाछा फरे छे. (त्ति बेमि) ए प्रमाणे हुं कहुं छुं, एम सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. ५०

अहीं भगवान नेमिनाथ पण पृथ्वीतळपर विहार करता सता जेम कमळोने सूर्य विकस्वर करे तेम भव्य प्राणीओने प्रतिबोध करता हता. ते दश धनुष उंचा हता, तेने शंखनुं चिन्ह (लंछन) हतुं, मेघ जेवा श्याम हता, दश प्रकारना धर्मनो उपदेश आपी दश दिशाओने पवित्र करता हता. तेना परिवारमां अढार हजार साधु, चाळीश हजार साध्वीओ, एक लाख ने ओगणोतेर हजार श्रावको तथा त्रण लाख छत्रीश हजार श्राविकाओ हती. ते प्रभु केवळज्ञान थया पछी चोपन दिवस ओछा एवा सातसो वर्ष सुधी पृथ्वीपर विचर्या. छेवट उज्जयंत गिरि उपर पांचसो छत्रीश साधुओ सहित अनशन ग्रहण कर्युं. कुल एक हजार वर्षनुं आयुष्य पूर्ण करी ते साधुओ सहित एक मासे अरिष्टनेमि प्रभु निर्वाणपदने पाम्या. ते वखते समग्र परिवार सहित देवेंद्रोए आवी तेमनो निर्वाण उत्सव कर्यो. इति श्रीअरिष्टनेमिजिन चरितम्.

॥ इति द्वाविंशमध्ययनम् ॥ २२.

अथ केशिगौतमीय नामनुं त्रेवीशमुं अध्ययन. २३

कोइक प्रकारे चारित्रनी शिथिलता थाय तो रथनेमिनी जेम धर्ममां ज धृति करवी, एम बावीशमा अध्ययनमां कह्युं. हवे बीजाना मननी शंका पण केशी अने गौतमनी जेम दूर करवी एम आ अध्ययनमां केहवाशे. ते विषेनुं आ प्रथम सूत्र छे.—

जिणे पासि त्ति नामेणं, अरहा लोगपूइए । संबुद्धप्पा य सव्वण्णू, धम्मतित्थयरे जिणे ॥१॥

अर्थ—(जिणे) रागद्वेषने जीतनार (पासि त्ति) पार्श्व एवा (नामेणं) नामना (अरहा) पूजाने लायक तीर्थंकर, ए ज कारण माटे (लोगपूइए) लोकोए पूजेला तथा (संबुद्धप्पा य) तत्त्वना ज्ञानवाळा, तथा (सव्वण्णू) सर्वज्ञ, तथा (धम्मतित्थयरे) धर्मतीर्थने करनारा तथा (जिणे) सर्व कर्मने जीतनारा हता. १.

अहीं प्रसंगे प्राप्त थयेलुं श्रीपार्श्वनाथनुं संक्षिप्त चरित्र कहे छे.

आ ज भरतक्षेत्रमां पोतनपुर नामनुं नगर छे. तेमां अरविंद नामे राजा हतो. तेने सकल शास्त्रनो पारगामी अने जिनधर्ममां तत्पर विश्वभूति नामे पुरोहित हतो, तेने अनुद्धरा नामनी भार्या हती. ते पुरोहितने कमठ अने मरुभूति नामना बे पुत्रो हता. ते बन्नेने अनुक्रमे वरुणा अने वसुंधरा नामनी भार्याओ हती. एकदा विश्वभूति पुरोहित बन्ने पुत्रो उपर घरनो भार स्थापन करी अनशन ग्रहण करी स्वर्गे गयो. तेनी भार्या अनुद्धरा पण पतिना वियोगथी शोक अने तप-वडे शरीरनुं शोषण करी मृत्यु पामी. बन्ने भाइओए मातापितानी उत्तरक्रिया करी. पछी राजाए मोटा पुत्र कमठने पुरोहित

पदे स्थापन कर्यो. मरुभूति व्रत लेवानी इच्छाथी विषयोथी विमुख थइ अत्यंत धर्मकर्ममां तत्पर थयो.

एकदा नवा यौवनवाळी अने मनोहर आकृतिवाळी नानाभाइनी प्रिया वसुंधराने जोइ कमठ तेणीनापर आसक्त थयो. तेथी स्वभावथी ज परस्त्रीमां लंपट एवो ते कमठ कामदेवरूपी वृक्षना दोहद समान मधुर वचनोवडे तेणीनी साथे वातो करवा लाग्यो. एकदा तेणे तेणीने कह्युं के—" हे मुग्धा ! भोग विना फोगट आ युवावस्थाने केम गुमावे छे ? जो मारो नानो भाइ सत्त्व रहित होवाथी तने सेवतो नथी, तो हे मनोहर ! मारी साथे क्रीडा कर. " एम कही पोताना उत्संगमां तेणीने आदरपूर्वक बेसाडी, एटले प्रथमथी ज भोगने इच्छती वसुंधराए तेनुं वचन अंगीकार कर्युं. पछी ते बन्ने विवेक, मर्यादा अने लज्जानो त्याग करी एकांतमां पशुक्रिया सेववा लाग्या. केटलेक काळे कमठनी स्त्री वरुणाए तेमनो आ अनाचार जाणी इर्ष्याने लीधे ते सर्व वृत्तांत मरुभूतिने कह्यो. ते सांभळी " असंभवित वातने प्रत्यक्ष जोया विना सत्य केम मानवी ? " एम मनमां विचार करतो मरुभूति कमठ पासे जइ बोल्यो के—" हे भाइ ! हुं कांइ कार्यने माटे परगाम जाउं छुं. " एम कही गाम बहार जइ भिक्षुकनो वेष लइ रात्रिए घेर आवी स्वर फेरवीने कमठने कह्युं के—" हुं दूर देशथी आवुं छुं, मने रात्रिवासो रहेवा माटे कांइक स्थान आपो. " ते सांभळी परमार्थने नहीं जाणता कमठे तेने पोताना घरनी पासेना एक ओरडामां रहेवानुं कह्युं, एटले ते बन्ने कामांधनी दुष्ट चेष्टा जोवानी इच्छाथी ते तेमां खोटी निद्राए सुतो. पछी " मरुभूति बहारगाम गयो छे " एम धारी वसुंधरा अने कमठ निःशंकपणे क्रीडा करवा लाग्या. ते मरुभूतिए साक्षात् जोयुं. आवो तेमनो दुराचार जोवाने असमर्थ छतां लोकापवादथी भय पामतो मरुभूति तेनो प्रतिकार

कर्या विना शीघ्रपणे त्यांथी नीकळी गयो. पछी कांइक विचार करी मरुभूतिए ते सर्व वृत्तांत अरविंद राजा पासे जइने कह्यो. राजाए पण क्रोध पामी कमठने नगर बहार काढी मूकवा माटे आरक्षकोने हुकम कर्यो. एटले आरक्षकोए तेने गधेडापर बेसाडी चोतरफ फेरवी विडंबनापूर्वक नगरमांथी काढी मूक्यो. तेवी विडंबनाथी वैराग्य पामी वनमां जइ ते कमठ तापसव्रत ग्रहण करी उग्र बाळतप करवा लाग्यो. आ वृत्तांत जाणी पश्चात्ताप पामेला मरुभूतिए विचार कर्यो के—"मने धिक्कार छे के में राजानी पासे घरनुं छिद्र उघाडुं करी मोटाभाइने विडंबना पमाडी. 'घरनुं दुश्चरित्र प्रगट करवुं नहीं.' ए नीतिनुं वचन पण क्रोधथी अंध थयेला मने स्मरणमां रह्युं नहीं, तो हजु पण मोटाभाइ पासे जइ आ मारा अपराधने हुं खमावुं." एम विचारी वनमां जइ ते मोटाभाइना पगमां पड्यो. ते वखते ते दुष्ट बुद्धिवाळा अने दुष्कर्ममां ज तत्पर एवा कमठे विचार्युं के—"आणे जे मारी विडंबना करी छे ते मने मृत्यु करतां पण अधिक दुःखकारक छे." एम विचारी महाक्रोधथी एक मोटी शिला उपाडी नानाभाइना मस्तकपर मारी, तेथी तत्काळ ते मरुभूति मरण पामी आर्तध्यानने लीधे विंध्याचळनी अटवीमां यूथनो स्वामी हाथी थयो.

एकदा अरविंद राजा पोतानी प्रियाओ साथे शरदऋतुमां अगाशीने विषे क्रीडा करतो हतो. ते वखते आकाशमां वादळां चडी आव्यां. ते साथे इंद्रधनुष, गर्जना अने वीजळीना चमकारा पण थवा लाग्या. ते सर्व जोइ "अहो! आ अतीव रमणीय छे." एम राजाए तेनी प्रशंसा करी. थोडीवारमां ते वादळां सर्व आकाशमां व्यापी गयां अने पाछां तरत ज वायुना झपाटाथी वीखराइ गयां. ते जोइ राजाए विचार्युं के—"जेम आ वादळां क्षणवारमां देखाइने वीखराइ

गया–नाश पाम्यां, ते ज रीते आ जगतना सर्व पदार्थो विनश्वर छे, तेमां प्रीति करवी फोगट छे." आ प्रमाणे विचारतां ज राजाने अवधिज्ञान प्राप्त थयुं. तरत ज तेणे पोताना राज्यपर पोताना पुत्रने स्थापन करी सद्गुरुनी पासे चारित्र अंगीकार कर्युं. अनुक्रमे ते राजर्षि श्रुतना पारगामी थइ विहार करता एकदा सागरदत्त नामना सार्थवाहनी साथे अष्टापद पर्वत तरफ चाल्या. तेमने नमस्कार करी सार्थवाहे पूछ्युं के—"हे प्रभु ! आपने क्यां जवुं छे ?" राजर्षि बोल्या के—"अमारे तीर्थयात्रा करवा जवुं छे." फरीथी सार्थवाहे पूछ्युं के—"आपनो कयो धर्म छे ?" त्यारे मुनिए तेने विस्तार सहित जैनधर्म कह्यो. ते सांभळी सार्थवाहे श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. अनुक्रमे चालतो ते सार्थ ज्यां मरुभूति हाथी रहेतो हतो ते अटवीमां पहोंच्यो अने त्यां भोजननो अवसर थवाथी एक सरोवरने कांठे पडाव नांख्यो. तेवामां ते मरुभूति हाथी पोतानी घणी हाथणीओ सहित ते तळावमां पाणी पीवा आव्यो. त्यां पाणी पी हाथणीओ साथे क्रीडा करी तळावनी पाळपर चड्यो. त्यांथी चारे दिशा तरफ दृष्टि नांखता तेणे ते सार्थ जोयो. तरत ज क्रोधथी यमराजनी जेम ते हाथी सार्थने हणवा तेनी तरफ दोड्यो, तेने आवतो जोइ भय पामेलो सार्थ तत्काळ नाठो. ते वखते राजर्षिए अवधिज्ञानथी तेने बोध करवा लायक जाणी तेना आववाना मार्गमां ज पर्वतनी जेम स्थिर उभा रही कायोत्सर्ग कर्यो. ते हाथी पण दोडतो तेनी पासे आव्यो, पण मुनिने जोइ शांत थइ गयो अने तेमनी पासे उभो रह्यो. ते वखते राजर्षिए कायोत्सर्ग पारी तेनो उपकार करवा माटे कह्युं के—"हे हाथी ! तारा मरुभूतिना भवने केम संभारतो नथी ? हे बुद्धिमान्! मने–अरविंद राजाने शुं तुं ओळखतो नथी ? अने पूर्व भवमां अंगीकार करेला श्रावकधर्मने शुं तुं भूली गयो ?" आ

प्रमाणे मुनिनुं वचन सांभळी ते हाथीने जातिस्मरण ज्ञान थयुं, तेथी तेणे पोतानी सुंढ उंची करी मस्तक पृथ्वीपर नमावी मुनिने नमस्कार कर्यो. पछी मुनिए कहेला श्रावकधर्मने अंगीकार करी शांत थयेलो हाथी पोताने स्थाने गयो. आ अति अद्भुत देखाव जोइ प्रथम नासी गयेला सार्थजनो पाछा आवी, मुनिने नमी श्रावकधर्म पाम्या अने सार्थपति पण जिनधर्ममां अतिदृढ थयो. पछी अष्टापद तीर्थे जइ देवोने वांदी राजर्षिए अन्यत्र विहार कर्यो. ते हाथी पण मुनिनी जेम इर्यासमितिपूर्वक चालतो, षष्ठादिक तप करतो, सुकां पांदडां विगेरेथी पारणुं करतो, सूर्यना किरणोथी तपेलुं सरोवरनुं पाणी पीतो अने हाथणीओ साथे क्रीडानो त्याग करी शुभ भावना भावतो रहेवा लाग्यो.

अहीं कमठ तापस पोताना भाइने हणीने शांत थयो नहीं. तेथी आर्तध्यानथी मरण पामी विंध्याचळनी अटवीमां ज कुकुट जातिनो उत्कट सर्प थयो. एकदा वनमां भमतां तेणे मरुभूति हाथीने सूर्यना तापथी तपेलुं जळ पीवा माटे सरोवरमां प्रवेश करतो जोयो. ते वखते ते हाथी दैवयोगे तेना पंकमां खुंची गयो, तेथी ते जरा पण आगळ पाछळ चाली शक्यो नहीं. ते जोइ ते सर्पे उडी तेना कुंभस्थळ उपर डंश कर्यो, तेना विषनो आवेश थवाथी पोतानो अंतसमय जाणी ते हाथीए तत्काळ अनशन ग्रहण कर्युं अने ते वेदनाने सहन करतो तथा पंचनमस्कारनुं ध्यान करतो मरण पामी सत्तर सागरोपमना जघन्य आयुष्यवाळो सहस्रार नामना आठमा देवलोकमां देव थयो. अनुक्रमे कुकुट नाग पण मरीने पांचमी नरकमां सतर सागरोपमना उत्कृष्ट आयुष्यवाळो नारकी थयो.

आ ज जंबूद्वीपमां पूर्वमहाविदेह क्षेत्रमां सुकच्छ नामना विजयमां वैताढ्य पर्वत उपर तिलका नामनी नगरी छे. तेमां

विद्युद्गति नामनो विद्याधर राजा हतो. तेने कनकनी जेवी कांतिवाळी कनकतिलका नामनी राणी हती. एकदा ते मरुभूति हाथीनो जीव आठमा स्वर्गमांथी चवी तेमनो पुत्र थयो. तेनुं नाम किरणवेग पाडयुं. अनुक्रमे वृद्धि पामतो ते कुमार समग्र कळाओमां निपुण थइ यौवनवयने पाम्यो. एकदा तेना पिताए तेने राज्यपर स्थापन करी दीक्षा ग्रहण करी, एटले ते किरणवेग राजा न्यायथी राज्यनुं प्रतिपालन करवा लाग्यो. एकदा सुरगुरु नामना गुरुना मुखथी धर्मदेशना सांभळी किरणवेग राजाए प्रव्रज्या ग्रहण करी. अनुक्रमे गीतार्थ थइ एकाकी विहारनो अभिग्रह धारण करी ते मुनि आकाशमार्गे पुष्करार्ध द्वीपमां गया. त्यां कनकगिरि नामना पर्वतनी पासे कायोत्सर्गे रह्या.

अहीं कुर्कुट सर्पनो जीव नरकमांथी नीकळी ते ज कनकगिरि पर्वतना वनमां अतिविषवाळो सर्प थयो. तेणे पर्वतनी पासे भमतां ध्यानमां रहेला ते मुनिने जोया. तेथी पूर्वभवना वेरथी क्रोध पामी ते मुनिना सर्व अंगोपर डंख मार्या. ते वखते ते किरणवेग मुनिए अनशन ग्रहण करी विचार्युं के--" आ सर्प मारा असातावेदनी कर्मनो क्षय करावनार होवाथी मारो मित्ररूप छे. " इत्यादि शुभ भावना भावी काळधर्म पामी बारमा अच्युत देवलोकना जंबूद्रुमावर्त नामना विमानमां बावीश सागरोपमना आयुष्यवाळा श्रेष्ठ देव थया. पेलो सर्प पण ते पर्वत पासे भमतो हतो, तेवामां दावानळ लागवाथी तेमां बळी जइ मरण पामी फरीथी पांचमी नरकमां उत्कृष्ट स्थितिवाळो नारकी थयो.

आ ज जंबूद्वीपना पश्चिम महाविदेहक्षेत्रने विषे सुगंधि नामनी विजयमां शुभंकरा नामनी नगरी छे. तेमां महापराक्रमी वज्रवीर्य नामे राजा हतो, तेने जाणे बीजी लक्ष्मी ज होय तेवी लक्ष्मीवती नामनी प्रिया हती. एकदा किरणवेग मुनिनो

जीव स्वर्गथी चवी वज्रनाभ नामे तेमनो पुत्र थयो. अनुक्रमे वृद्धि पामतो ते कुमार सर्व कळाओने ग्रहण करी पवित्र यौवनवयने पाम्यो. त्यारे तेने राज्य सोंपी वज्रवीर्ये दीक्षा ग्रहण करी. पछी वज्रनाभ राजाए चिरकाळ सुधी राज्यनुं पालन कर्युं. एकदा वैराग्य पामी चक्रायुध नामना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी वज्रनाभे क्षेमंकर नामना तीर्थंकर पासे दीक्षा ग्रहण करी. अनुक्रमे तीव्र तपस्या करता अने परीषहोने सहन करता ते मुनि आकाशगमनादिक अनेक लब्धिओ पाम्या. गुरुनी आज्ञाथी एकाकी विहार करता ते मुनि एकदा आकाशमार्गे सुकच्छ नामना विजयमां गया. त्यां विहारना क्रमथी एकदा भयंकर अरण्यमां रहेला ज्वलनाद्रि नामना पर्वतपर गया. तेटलामां सूर्य अस्त पाम्यो. तेथी ते पर्वतनी कोइ गुफामां ते मुनि कायोत्सर्गे रह्या. प्रातःकाळे सूर्योदय थयो त्यारे इर्यासमिति पूर्वक विहार करवा लाग्या. आवा अवसरे ते सर्पनो जीव नरकमांथी उधरी भवमां अटन करी ते ज गिरिनी पासे कुरंगक नामे भिल्ल थयो. ते एकदा मृगयाने माटे नीकळ्यो, तेवामां ते ज मुनिने तेणे प्रथम जोया. तेथी 'आ अपशुकन थया' एम धारी पूर्वभवना वेरने लीधे तेणे ते मुनिने तीव्र बाण मार्युं. तरत ज ते महामुनि 'नमोऽर्हद्भ्यः' एम बोलता बाणना प्रहारथी पीडा पामी पृथ्वीपर बेसी गया अने तत्काळ अनशन ग्रहण कर्युं. पछी सर्व जीवोने खमावी शुभध्यानथी काळधर्म पामी ते मुनि मध्यम ग्रैवेयकमां ललितांग नामे देव थया. अहीं एक ज प्रहारथी मरण पामेला मुनिने जोइ कुरंगक भिल्ल पोताने महाबळवान मानी आनंद पाम्यो. अन्यदा ते भिल्ल पण मरण पामी सातमी नरकमां रौरव नामना नरकावासमां नारकी थयो.

आ ज जंबूद्वीपना पूर्व महाविदेहने विषे पुराणपुर नामनुं नगर छे. तेमां कुलिशबाहु नामे राजा हतो. तेने

सुदर्शना नामनी प्रिया हती. एकदा वज्रनाभनो जीव ग्रैवेयकथी चवी चौद महा स्वप्नोथी सूचित तेमनो पुत्र थयो. तेनुं नाम सुवर्णबाहु पाड्युं. ते अनुक्रमे वृद्धि पामी पूर्वभवना अभ्यासथी समग्र कळाओ ग्रहण करी युवावस्थाने पाम्यो. त्यारे राजाए तेने राज्यपर स्थापन करी पोते दीक्षा ग्रहण करी. पछी सुवर्णबाहु राजा दया सहित पृथ्वीनुं रक्षण करवा लाग्यो. एकदा राजा अश्वक्रीडा करवा नगर बहार गयो. त्यां विपरीत शिक्षावाळो अश्व तेने हरण करी दूर वनमां लइ गयो. त्यां एक सरोवर जोइ तृषातुर थयेलो अश्व पोतानी मेळे ज उभो रह्यो. एटले राजाए अश्वपरथी उतरी ते अश्वने नवरावी पाणी पाइ पोते पण स्नान करी जळपान कर्युं. पछी ते सरोवरने कांठे क्षणवार विश्राम लइ आगळ चालतां राजाए एक तपोवन जोयुं. तेमां प्रवेश करतां राजानुं जमणुं नेत्र फरक्युं, त्यारे तेणे विचार्युं के—" अहीं मने कांइक लाभ थवो जोइए." एम विचारी आगळ चालतां राजाए त्यां वृक्षोने पाणी पाती एक मनोहर मुनिकन्याने तेनी सखी साथे जोइ. तेथी वृक्षने आंतरे उभो रही तेणीने एकदृष्टिए जोतो राजा विचार करवा लाग्यो के—" आ कन्याने विधाताए पोताना सर्व प्रयत्नथी रची जणाय छे. आ कन्या विकारोनो तो उपाध्याय छे, अप्सराओमां पण आवुं रूप नथी, परंतु आवुं आ रूप क्यां ? अने आवुं नीच जातिने उचित कर्म क्यां ? " ए प्रमाणे राजा विचार करतो हतो, तेवामां तेणीना श्वासना सुगंधमां मोह पामेलो कोइ भ्रमर तेणीनी पासे फरवा लाग्यो. ते वखते तेणीए भय पामी सखीने कह्युं के—" हे सखी ! आ भ्रमरथी मारुं रक्षण कर, रक्षण कर." ते सांभळी सखीए हास्यथी कह्युं के—" सुवर्णबाहु विना कोण तारुं रक्षण करवा समर्थ छे ? " ते सांभळी अवसर जोइ " सुवर्णबाहु पृथ्वीनुं रक्षण करते सते तमने कोण

उपद्रव करे छे ? " एम बोलतो राजा तत्काळ प्रगट थयो. तेने अकस्मात् आवेलो जोइ ते बन्ने स्त्रीओ क्षणवार तो क्षोभ पामी. पछी धीरजने धारण करी सखी बोली के—" सुवर्णबाहु रक्षण करे छते राक्षसोने उपद्रव करवा कोइ पण समर्थ नथी. परंतु आ मारी मुग्धा सखी पोतानी पासे आवता भ्रमरने जोइ भय पामीने 'मारुं रक्षण कर, रक्षण कर,' एम बोली छे. हे महापुरुष ! कामदेवना जेवा रूपवाळा तमे कोण छो ? ते कहो." ते सांभळी राजाए पोते ज पोतानी ओळखाण आपवी अयोग्य धारी कह्युं के—" हुं सुवर्णबाहुनो वशवर्ती सेवक छुं, अने राजानी आज्ञाथी आश्रमनो उपद्रव दूर करवा आव्यो छुं. परंतु हे भद्रे ! आ कमळना सरखा नेत्रवाळी कन्या अनुचित काम करवावडे क्लेश केम पामे छे ? " त्यारे सखीए कह्युं के—" आ रत्नपुरना राजा विद्याधरेंद्रनी प्रिया रत्नावळीनी कुक्षिथी उत्पन्न थयेली पद्मा नामनी कन्या छे. आ कन्यानो जन्म थयो, ते ज वखते तेना पिता मरण पाम्या. त्यारे तेना पुत्रो राज्यने माटे परस्पर युद्ध करवा लाग्या. ते वखते रत्नावळी राणी आ बाळाने लइ अहीं पोताना भाइ गालव नामना कुळपतिनी पासे आवीने रही छे. तेथी तापसोए लालन पालन करातो आ कन्या अहीं ज वृद्धि पामीने अनुक्रमे युवावस्थाने पामी छे. अहीं मुनि-कन्याओना सहवासथी ते आवुं ज कर्म करतां शीखेली छे. एकदा कोइ ज्ञानी साधु महाराज अहीं आव्या हता. तेने कुळपतिए 'आ कन्यानो वर कोण थशे ?' एम पूछ्युं त्यारे साधुए कह्युं के—" सुवर्णबाहु नामना चक्रवर्ती अश्वथी हरण कराइने जाते ज अहीं आवी आ कन्याने परणशे."

आ प्रमाणेनी हकीकत सांभळी सुवर्णबाहु राजाए हर्ष पामी विचार्युं के—" आ अश्वे मारा उपर उपकार कर्यो, के

जेथी अहीं लावी आनो मने संगम कराव्यो. " पछी राजाए तेणीने पूछ्युं के—" हे भद्रे ! कुळपति क्यां छे ? तेमने जोवा माटे हुं अत्यंत उत्सुक छुं." सखीए कह्यं के—" अहीं आवेला साधुए आजे अहींथी विहार कर्यो छे, तेमनी साथे गया छे, थोडेक दूर सुधी जइ तेने थोडी हमणां पाछा आवशे." आम वात चाले छे एटलामां अश्वना पगलाने अनुसरी राजानुं सैन्य आश्रम पासे आवी पहोंच्युं. ते जोइ ते बन्ने कन्याओए ' आ सुवर्णबाहु राजा पोते ज छे ' एम जाणी लीधुं. पछी ' कुळपतिना आवतां सुधी आ पद्मानी शी अवस्था थशे ? ' एम शंका करती सखी तेणीने महाकष्टथी आश्रममां लइ गइ. पछी ते नंदा नामनी तेनी सखीए आश्रममां आवेला गालवमुनिने तथा रत्नावळीने आनंदथी सुवर्णबाहु राजानी सर्व वात कही बतावी. ते सांभळी हर्ष पामेला गालवमुनि रत्नावळी, पद्मा अने नंदा सहित राजानी पासे आव्या. राजाए पण मुनिनुं बहुमान कर्युं. पछी मुनिए राजाने कह्युं के—" हे राजा ! ज्ञानीए आ पद्माना पति तमने कह्या छे, तेथी आ मारी भाणेजने तमे परणो." ते सांभळी अत्यंत हर्ष पामेला राजाए गांधर्वविधिथी तेणीनुं पाणिग्रहण कर्युं.

ते वखते त्यां विमानोवडे आकाशने आच्छादन करतो पद्मोत्तर नामनो विद्याधर राजा के जे पद्मानो सापत्न भाइ थतो हतो, ते आव्यो. रत्नावळीना कहेवाथी तेणे सुवर्णबाहु राजाने नमस्कार करी कह्युं के—" हे देव ! तमारो वृत्तांत सांभळीने हुं तमारी सेवा करवा आव्यो छुं. हे स्वामी ! तमे त्यां पधारीने वैताढ्य पर्वतपर रहेला मारा रत्नपुर नगरने पवित्र करो." आवुं तेनुं वचन अंगीकार करी रत्नावळी अने कुळपतिनी रजा लइ राजा परिवार सहित तेना

विमानमां बेठो. ते वखते पद्मा पण मामानी तथा मातानी रजा लइ पतिनी पाछळ चाली. पछी पद्मोत्तर पद्मा सहित ते राजाने तत्काळ वैताढ्य पर्वतपर पोताना नगरमां लइ गयो. त्यां दिव्य रत्नना प्रासादमां ते सुवर्णबाहु राजाने उतारो आपीने सेवकनी जेम स्नान भोजनादिकवडे तेनो योग्य सत्कार कर्यो. पछी सुवर्णबाहुए त्यां रही पोताना पुण्यप्रभावथी बन्ने श्रेणिनुं साम्राज्य प्राप्त कर्युं अने घणी विद्याधर कन्याओनुं पाणिग्रहण कर्युं. पछी पद्मा विगेरे प्रियाओ सहित ते राजा पोताना नगरमां आव्यो. त्यां अनुक्रमे चक्रादिक रत्नो उत्पन्न थयां, तेनाथी छ खंड साधी सुवर्णबाहु राजा चक्रवर्ती थया अने छ खंडनुं चिरकाळ राज्य कर्युं.

एकदा सुवर्णबाहु राजा पोतानी प्रियाओ सहित प्रासादनी उपर क्रीडा करता हता, ते वखते आकाशमां देवोने जता आवता जोइ राजा विस्मय पाम्या. माणसोने पूछवाथी जगन्नाथ तीर्थंकरनुं आगमन सांभळी चक्रीए त्यां जइ जिनेश्वरने वांदी तेमना मुखथी मोहनो नाश करनारी देशना सांभळी. पछी चक्रवर्ती पोताने स्थाने आव्या अने धर्मचक्री पण भव्य प्राणीओने प्रबोध करता पृथ्वीपर विचरवा लाग्या. एकदा जिनेश्वरनी पासे आवेला देवोने संभारता चक्रवर्तीने विचार थयो के—" आवा देवो में पूर्वे क्यांइ पण जोया छे. " आ प्रमाणे ऊहापोह करतां तेमने जातिस्मरण ज्ञान उत्पन्न थयुं अने तेणे पोताना पूर्वभवो जोया. तेथी मोक्षरूपी वृक्षना बीज समान वैराग्य तेमने प्राप्त थयो. एटले दीक्षा लेवानी इच्छाथी तेणे पोताना पुत्रने राज्यपर स्थापन कर्यो, तेवामां ते ज जगन्नाथ तीर्थंकर विहार करता करता त्यां ज पधार्या. तेमनी पासे सुवर्णबाहु चक्रीए दीक्षा ग्रहण करी. ते अनुक्रमे गीतार्थ थइ दुस्तप तप करवा लाग्या. तेमां जिनसेवा आदिक

स्थानकोना सेवनवडे तेमणे तीर्थंकर नामकर्म उपार्जन कर्युं. एकदा विहारना क्रमे क्षीरवन नामनी अटवीमां क्षीरमहागिरि नामना पर्वतपर चडी सूर्यनी सन्मुख दृष्टि राखी तेओ कायोत्सर्गे रह्या. ते अवसरे कुरंगकनो जीव नरकमांथी नीकळी ते ज वनमां सिंह थयो हतो, ते दैवयोगे भमतो भमतो त्यां आवी चड्यो. अने ते मुनींद्रने जोइ पूर्वना वैरने लीधे तेनापर अत्यंत क्रोध पामी ते राक्षसनी जेम तेमना तरफ दोड्यो. ते सिंहने आवतो जोइ मुनीश्वरे तत्काळ अनशन ग्रहण कर्युं. तेवामां ते सिंह मोटी फाळ मारी मुनिना शरीरपर पड्यो, एटले ते मुनि काळधर्म पामी दशमा देवलोकमां महाप्रभ नामना विमानने विषे वीश सागरोपमना आयुष्यवाळा देव थया.

ते सिंह पण मरीने चोथी नरकमां नारकीपणे उत्पन्न थयो. त्यां दश सागरोपम सुधी विविध प्रकारनी वेदनाओने अनुभवी त्यांथी नीकळी चिरकाळ सुधी तिर्यंचनी योनिमां भ्रमण करी ते सिंहनो जीव कोइक गाममां ब्राह्मणनो पुत्र थयो. तेनो जन्म थया पछी तरत ज तेना मातापिता विगेरे सर्व मरण पाम्या. तेने कठ नामे बोलावी लोकोए दयाथी तेने उछेरी मोटो कर्यो. ते अत्यंत दरिद्री युवावस्थाने पाम्यो, त्यारे माणसोनी निंदाने सांभळतो ते महा कष्टथी भोजन पण पामवा लाग्यो. एकदा दानभोगादिक करता धनिकोने जोइ तेने विचार थयो के–" आ लोकोए पूर्वजन्ममां दुष्कर तप कर्यो हशे, कारण के बीज विना अन्नप्राप्ति न थाय तेम तप विना लक्ष्मी प्राप्त थाय नहीं. तेथी हुं पण तप करुं." एम विचारी वैराग्य पामेला कठे तापसनी दीक्षा ग्रहण करी अने कंदादिकनुं भोजन करी ते पंचाग्नि आदिक अज्ञानकष्ट करवा लाग्यो.

आ ज भरतक्षेत्रमां वाराणसी नामनी नगरी छे. ते नित्यसखीनी जेम पासे रहेली गंगानदीवडे सेवाय छे. अलका

नगरीनी जेवी ते नगरीनी चोतरफ जाणे चैत्ररथ नामनुं वन आवीने रह्युं होय तेम मनोहर उद्यान रहेलुं छे. ते नगरीना किल्लाने विशाळ अने मोटा माणिक्यरत्नना कांगराओ छे, ते जाणे दिशारूपी लक्ष्मीना प्रयास विनाना नित्यना आदर्श होय तेवा शोभे छे. ते नगरीमां रहेला चैत्योना शिखरो उपर रहेला सुवर्णना कळशोने अतिथिनी जेम आवेला जाणी सूर्य पोताना किरणोवडे पूजे छे. ते नगरीमां धनिकना मनोहर महेलो जाणे पुण्यना उदयथी पामवा लायक देवोना विमानो होय तेवा शोभे छे. देवताओ भोजनने माटे ज्यारे मागे छे त्यारे ज सुधा (अमृत) ने पामे छे, परंतु आ नगरीना सर्व गृहो तो प्राये करीने सुधा (चूना) थी लींपायेला ज छे ए आश्चर्य छे. ते नगरीमां दुकानोनी श्रेणि अगणित करीयाणाना समूहवडे सांकडी छतां पण कुत्रिकापणनी श्रेणिनी जेम विशाळ होय तेम शोभे छे. विश्वने उल्लंघन करे तेवी ते नगरीनी लक्ष्मी जोइने पंडितो मानता हता के-" रोहणाचळ पर्वत उपर हवे मात्र पथ्थर ज रह्या हशे अने समुद्रमां केवळ जळ ज रह्युं हशे. "

ते नगरीमां कार्तिकस्वामीनी जेवा पराक्रमवाळा अश्वसेन नामे राजा हता, ते जाणे के इंद्रे आवीने पृथ्वीपर वास कर्यो होय तेम शोभता हता. ते राजाने वामा नामनी राणी हती. ते गुणना समूहवडे सुंदर, शीलादिक गुणवडे शोभती अने अश्वसेन राजाने तेना प्राण करतां पण अधिक प्रिय हती. एकदा सुवर्णबाहुनो जीव त्रण ज्ञान सहित प्राणत नामना दशमा देवलोकथी चवी वामादेवीनी कुक्षीमां अवतर्यो. ते वखते सुखे सुतेली ते मनोहर मुखवाळीए हस्ती विगेरे चौद महा स्वप्नोने पोताना मुखमां प्रवेश करता जोया. पछी तत्काळ जागेली तेणीने अनुक्रमे इंद्रे, राजाए अने पछी ज्योतिषीओए

ते स्वप्नतुं फळ कह्युं के–" हे देवी ! आ महा स्वप्नोथी तमारो पुत्र जगत्पति थशे." ते सांभळी हर्ष पामेली वामादेवीए सुखेथी गर्भ धारण कर्यो, अने काळ संपूर्ण थये श्याम कांतिवाळा तथा सर्पना चिन्हवाळा मनोहर पुत्रने जन्म आप्यो. ते वखते आसनकंपथी प्रभुनो जन्म जाणीने छप्पन दिक्कुमारीओए आवी सूतिकर्म कर्युं, अने शक्र इंद्र विगेरे सर्व इंद्रोए अवधिज्ञानथी प्रभुनो जन्म जाणी मेरुपर्वतपर लइ जइ प्रभुनो जन्मोत्सव कर्यो. पछी जाणे अमृततुं पान कर्युं होय तेम आनंद पामेला अश्वसेन राजाए कारागृहमांथी केदीने मुक्त करी पुत्रजन्मनो महोत्सव कर्यो. प्रभु गर्भमां हता त्यारे तेनी माताए अंधारी रात्रिमां पण पोतानी पासे थइने जता सर्पने जोइ तत्काळ ते वात पतिने कही हती, तेनुं स्मरण करी अश्वसेन राजाए ते पुत्रनुं पार्श्व नाम पाड्युं. इंद्रे आदेश करेली पांच धात्रीओथी पालन कराता प्रभु बाळकनुं रूप धारण करीने आवेला देवोनी साथे क्रीडा करवा लाग्या. इंद्रे अंगुठामां मूकेला अमृतनुं पान करता प्रभु अनुक्रमे वृद्धि पामी यौवनवयने पाम्या. ते वखते प्रभुनुं शरीर नव हाथनुं थयुं.

एकदा अश्वसेन राजा सभामां बेठा हता, ते वखते द्वारपाळनी रजाथी कोइ पुरुषे सभामां आवी राजाने कह्युं के— " हे स्वामी ! आ भरतक्षेत्रमां कुशस्थळ नामनुं नगर छे. तेमां प्रसेनजित् नामे राजा छे. तेने प्रभावती नामनी युवावस्थाने पामेली मनोहर पुत्री छे. खरेखर विधाताए आखा जगतनो सार लइने ज तेने बनावी लागे छे. कारण के चंद्र तेना मुखना दासपणाने पामे छे, मृग तेणीना नेत्रोनो दास छे, मयूर तेना केशपाशनो दास छे, अने अमृतरस तेना वाक्यरसनो दास छे, आरिसो तेना कपोळनी शोभाने पामतो नथी, सुवर्णकंद तेना अधरनी उपमा पामतो नथी, तेना

कंठनी सुंदरता मेळववामां पांचजन्य शंख पण योग्य नथी, तेना स्तननी लक्ष्मी ग्रहण करवामां सुवर्णनो कळश पण चतुर नथी, तेनी भुजलतानी लक्ष्मी मेळववा कमळनुं नाळ पण समर्थ नथी, तेना हस्तनी कांतिना लेशने पण पल्लवो पामी शकता नथी, तेनी कटिनी शोभा ग्रहण करवामां वज्र पण मूर्ख छे, तेनी नाभिनुं सदृशपणुं शीखवामां आवर्त पण समर्थ नथी, तेना जघननी तुलना करवानो रेतीनाळो मोटो कांठो पण शक्तिमान नथी, तेना साथळनी सुंदरता मेळववामां रंभा पण अटकी जाय छे, मृगलीनी जंघा पण तेनी जंघानी शोभा ग्रहण करवामां सफळ उद्यमवाळी नथी, तेना चरणकमळनी लक्ष्मीने अरविंद पण पामी शके तेम नथी, सुवर्ण पण तेना शरीरनी कांतिना कोइपण अंशने पामतुं नथी अने तेना लावण्य गुणने जोइ अप्सराओ पण रसवाळी थती नथी. आवी मनोहर ते कन्याने जोइ योग्य वरनी प्राप्ति माटे तेना पिताए घणा कुमारो शोध्या, परंतु कोइ पण तेने योग्य मळ्यो नथी. एकदा ते प्रभावती सखीओ साथे उद्यानमां गइ हती. त्यां किन्नरीओथी गवातुं आ गीत तेणीना सांभळवामां आव्युं के—" रूप, लावण्य अने तेजवडे देवोनो पण तिरस्कार करनार अश्वसेन राजाना पुत्र श्रीपार्श्वकुमार चिरकाळ सुधी जय पामो." आवा अर्थवाळुं गीत सांभळी ते प्रभावती श्रीपार्श्वकुमारपर प्रीतिवाळी थइ. तेथी ते लज्जा अने क्रीडानो त्याग करी मात्र ते गीतने ज वारंवार सांभळवा लागी. ते जोइ तेनी सखीओए तेने श्रीपार्श्वने विषे रागवाळी जाणी. केमके पाणीमां रहेला तेलनी जेम रागीमां रहेलो राग छानो रही शकतो नथी. पछी ते किन्नरीओ गइ त्यारे ते प्रभावती तेमनी सन्मुख आकाशमां जोइ ज रही. ते वखते सखीओ तेने महा महेनते घेर लइ गइ. परंतु तेने कोइपण ठेकाणे सुख प्राप्त थयुं नहीं. कामदेवरूपी अपस्मारना व्याधिथी

परवश थयेली ते कांइपण जाणती नहोती, मात्र जेम योगिनी परब्रह्मनुं ध्यान करे तेम एक श्रीपार्श्वनुं ज मनमां ध्यान करवा लागी. सखीओना मुखथी तेने श्रीपार्श्वने विषे प्रीतिवाळी जाणी तेना मातापिता हर्ष पाम्या अने "पुत्रीनो राग योग्य स्थाने छे" एम कहेवा लाग्या. पछी तेना मातापिता बोल्या के—"आ पुत्रीने श्रीपार्श्व पासे स्वयंवरा तरीके मोकलीने आपणे तेने आनंद पमाडशुं." आ वृत्तांत अनेक देशोना अधिपति यवन नामना महा बळवान राजाए पोतानी सभामां पोताना चरपुरुषोना मुखथी सांभळ्यो. ते वखते ते बोल्यो के—"ते प्रसेनजित् राजा मने मूकीने पार्श्वकुमारने पोतानी पुत्री केम आपशे? जो ते पोते ज मने नहीं आपे तो हुं बळात्कारे तेने ग्रहण करीश." आ प्रमाणे कहीने तत्काळ पवननी जेवा वेगवाळा ते यवन राजाए सैन्य सहित आवी कुशस्थळने चोतरफथी रुंध्युं छे. तेथी रात्रिना प्रारंभमां बीडाइ गयेला कमळमां भ्रमरनी जेम कोइपण मनुष्यनो नगरमां प्रवेश के निर्गम थइ शकतो नथी. आ वृत्तांत आपने जणाववा माटे पुरुषोत्तम नामना मने मंत्रीपुत्रने प्रसेनजित् राजाए मोकल्यो छे, ते हुं रात्रिने समये गुप्त रीते नगर बहार नीकळी अहीं आव्यो छुं. तो हवे जे करवा लायक होय ते आप करो. प्रसेनजित् राजा आपने शरणे छे."

आ प्रमाणे तेनुं वचन सांभळी अश्वसेन राजानां नेत्रो क्रोधथी रक्त थयां अने ते दुष्ट यवन राजाने शिक्षा करवा माटे तेणे तत्काळ प्रयाणनी भेरी वगडावी. ते भेरीनो शब्द सांभळी 'आ अकस्मात् शुं छे?' एम विचार करता श्रीपार्श्वकुमारे पिता पासे आवी कह्युं के—"हे पिता! देवो के असुरो मध्ये कया बळवाने आपनो अपराध कर्यो छे के जेथी आपने पोताने आ प्रयास करवो पडे छे?" ते सांभळी अश्वसेन राजाए ते आवेला पुरुषने आंगळीवडे देखाडी कह्युं के—

" कुशस्थळना राजानुं रक्षण करवा अने यवनराजाने जीतवा जवुं छे. " ते सांभळी पार्श्वकुमारे कह्युं के—" घासने विषे परशुनी जेम ते मनुष्यरूपी कीटने विषे सुरासुरने जीतनारा आपे आ उद्यम करवो योग्य नथी, तेथी आप मने ज आज्ञा आपो अने आप आ महेलने ज शोभावो. हुं पण तेना गर्वनो नाश करी शकीश. " ते सांभळी पुत्रनुं बळ त्रण जगत करतां पण अधिक छे एम जाणता राजाए तेनुं वचन अंगीकार कर्युं अने सैन्य सहित तेने जवानी रजा आपी.

श्रीपार्श्वकुमार सैन्य सहित चाल्या, त्यारे पहेला प्रयाणमां ज इंद्रना सारथि मातलिए आवी रथमांथी उतरी प्रभुने नमस्कार करी विनंति करी के—" हे प्रभु ! क्रीडावडे पण संग्राममां उद्यमवंत थयेला आपने जाणीने शक्रइंद्रे भक्तिथी आ रथ आपने माटे मोकल्यो छे, तेनो स्वीकार करो. " ते सांभळी विविध प्रकारनां शस्त्रोथी भरेला अने पृथ्वीने नहीं स्पर्श करता ते रथ उपर आरूढ थइ सूर्यनी जेम प्रभु आकाशमार्गे चाल्या. पाछळ पृथ्वीपर चाली आवती सेनापरनी कृपाने लीधे नाना प्रयाणोवडे चालता प्रभु अनुक्रमे केटलेक दिवसे कुशस्थळ नगर पासे आवी पहोंच्या. त्यां एक उद्यानमां देवोए करेला प्रासादमां प्रभु सुखेथी रह्या. पछी प्रभुए एक दूत यवनराजा पासे मोकल्यो. तेणे जइ यवनराजाने कह्युं के—" हे राजा ! श्रीपार्श्वनाथ तमने आज्ञा करे छे के—आ प्रसेनजित् राजा अमारा पिताने शरणे रह्या छे, तेथी तेना नगरनो रोध मूकी द्यो. कारण के पिता पोते ज अहीं आवता हता, तेमने आ कारणथी ज निषेध करीने हुं अहीं आव्यो छुं, तेथी जो तमने सुखनी इच्छा होय तो तमे तमारे स्थाने जता रहो. " आवुं दूतनुं वचन सांभळी क्रोध पामेलो यवन बोल्यो के—" रे दूत ! तुं आ शुं बोले छे ? मारी पासे अश्वसेन के पार्श्व कइ गणतरीमां छे ? तो ते पार्श्व ज पोताने स्थाने जाय अने

પોતાના શરીરનું રક્ષણ કર. તું દૂત છે તેથી તને જીવતો મૂકું છું. અરે ! તું પણ જલદી અહીંથી જતો રહે." તે સાંભળી દૂત ફરીથી કહ્યું કે–" હે રાજા ! અમારા સ્વામી દયાળુ છે, તેથી કુશસ્થળના રાજાની જેમ તારું પણ રક્ષણ ઇચ્છે છે, અને તેથી કરીને જ મને તારી પાસે બોધ કરવા મોકલ્યો છે, તો હે જડ ! બોધ પામ, અને અમારા સ્વામીને ઇંદ્રો પણ જીતી શકે તેમ નથી, એમ તું નક્કી જાણ. જેમ સિંહની સાથે હરણ, સૂર્યની સાથે અંધકાર, અગ્નિની સાથે પતંગીયું, સમુદ્રની સાથે કીડી, ગરુડની સાથે સર્પ, વજ્રની સાથે પર્વત અને હાથીની સાથે ઘેટો યુદ્ધ કરવા શક્તિમાન નથી, તેમ તું પણ શ્રીપાર્શ્વની સાથે યુદ્ધ કરવા શક્તિમાન નથી. તેથી હે યવન ! તું તેમની આજ્ઞા અંગીકાર કર." આ પ્રમાણે દૂત બોલ્યો ત્યારે યવનના સૈનિકો તેની સાથે વિપરીતપણે બોલવા લાગ્યા અને તેને મારવા તૈયાર થયા. તેવામાં તેના મંત્રીએ કહ્યું કે–" અરે મૂઢ સૈનિકો ! તમે શ્રીપાર્શ્વપ્રભુના દૂતને મારવા ઇચ્છો છો તે તો પોતાના જ સ્વામીને ગળે પકડી અનર્થરૂપી કુવામાં નાખવા જેવું કરો છો ઇંદ્રો પણ જેની આજ્ઞાને મસ્તકપર મુગટની જેમ ચડાવે છે, તેના દૂતને મારવો તે તો દૂર રહો; પરન્તુ તેની હીલના પણ દુઃખઆપનારી છે." આ પ્રમાણે કહી તે સુભટોને નિવારી પછી મંત્રીએ સામવચનથી તે દૂતને કહ્યું કે–" હે ભદ્ર ! આમનો આ એક અપરાધ તમે માફ કરજો અને પ્રભુને આ વાત કહેશો નહીં. શ્રીપાર્શ્વપ્રભુના ચરણકમળને વાંદવા માટે અમે હમણાં જ આવીએ છીએ." આ પ્રમાણે સમજાવી તે દૂતને મંત્રીએ વિદાય કર્યો. પછી પોતાના સ્વામીના હિતને ઇચ્છતા મંત્રીએ રાજાને કહ્યું કે–" હે દેવ ! ભવિષ્યનો વિચાર કર્યા વિના સિંહની કેશવાળીને ખેંચવા જેવું આવું વિપરીત પરિણામવાળું કાર્ય કેમ કરો છો ? ઇંદ્રો પણ જે પાર્શ્વપ્રભુના પત્તિઓ છે તેની સાથે તમારું યુદ્ધ શી રીતે હોઇ શકે ? તેથી હજુ પણ કંઠપર કુઠાર ધારણ કરીને તમે

पार्श्वनाथनो आश्रय करो, तेमनी पासे तमारा अपराधनी क्षमा मागो अने तेमनी आज्ञा अंगीकार करो. जो आलोक अने परलोक संबंधी सुखनी इच्छा होय तो तमारे आ कार्य करवुं उचित छे." आवुं मंत्रीनुं वचन सांभळी यवनराजा बोल्यो के–" हे मंत्री ! तमे मने ठीक बोध कर्यो." एम कही पोताना कंठपर परशु राखी परिवार सहित ते यवनराजा श्रीपार्श्वप्रभु पासे गयो. त्यां प्रतिहार द्वारा रजा लइ सभामां जइ प्रभुने नमस्कार कर्या. प्रभुए तेना कंठपरथी कुठार मूकावी दीधो, त्यारे फरीथी नमस्कार करी यवन राजा बोल्यो के–" हे नाथ ! तमे सर्वने सहन करनार छो, तेथी मारो आ अपराध क्षमा करो, मने भय पामेलाने अभयदान आपो अने मारापर प्रसन्न थइ मारी लक्ष्मीने ग्रहण करो." श्रीपार्श्वनाथे कह्युं के–" हे कुशळ राजा ! तमारुं कल्याण थाओ, तमारुं राज्य तमे भोगवो, भय पामशो नहीं अने फरीथी आवुं कार्य करशो नहीं." आ प्रमाणे भगवानना वचननो तेणे अंगीकार कर्यो, एटले जिनेश्वरे तेनुं बहुमान कर्युं. ते वखते तरत ज कुशस्थळ पुरनो रोध दूर थयो. पछी प्रभुनी आज्ञाथी ते पुरुषोत्तमे पुरमां जइ प्रसेनजित् राजाने ते वार्ता कही प्रसन्न कर्यो.

त्यारपछी भेटनी जेम प्रभावती कन्याने साथे लइ प्रसेनजित् राजा प्रभु पासे आव्या. अने तेमने विज्ञप्ति करी के—" हे जगत्पति ! जेम तमे अहीं आवीने मारापर अनुग्रह कर्यो तेम आ मारी पुत्रीनुं पाणिग्रहण करी मारापर अनुग्रह करो. आ मारी पुत्री तमारापर चिरकाळथी रागवाळी छे. ते बीजा वरने इच्छती नथी, वळी स्वभावथी ज तमे कृपाळु छो माटे आनापर विशेष कृपावान थाओ." ते सांभळी स्वामी बोल्या के—" हे राजा ! हुं मारा पितानी आज्ञाथी तमारुं रक्षण करवा आव्यो छुं, पण तमारी पुत्रीने परणवा आव्यो नथी, तेथी आ वार्ता फरी करशो नहीं." ते सांभळी प्रसेनजिते

विचार्युं के—" आ पार्श्वनाथ मारा वचनथी मानशे नहीं. तेथी अश्वसेन राजा पासे ज आग्रह करी हुं आ वात तेने मनावीश." पछी स्वामीए प्रसेनजित् साथे यवन राजानी मित्राइ करावी ते यवन राजाने रजा आपी. पछी प्रभुए प्रसेनजितने रजा आपी त्यारे तेणे कह्युं के—" हे स्वामी ! मारे अश्वसेन राजाने नमवा माटे आपनी साथे आववुं छे." प्रभुए 'बहु सारुं' कह्युं एटले प्रसेनजित् राजा प्रभावतीने साथे लइ प्रभुनी साथे ज चाल्यो. अनुक्रमे वाराणसी नगरीए जइ पिताने प्रणाम करी श्रीपार्श्वनाथ पोताना महेलमां गया, त्यारे प्रभावती सहित प्रसेनजित् राजाए अश्वसेन राजा पासे जइ तेमने प्रणाम कर्या, तरत ज अश्वसेने उभा थइ तेने गाढ आलिंगन करी पूछ्युं के—" तमे कुशळ छो ? अहीं सुधी जाते केम आववुं थयुं ?" प्रसेनजिते कह्युं—" तमे जेनुं रक्षण करनार हो, तेने अकुशळ क्यांथी होय ? हे महाराजा ! हुं जाते अहीं आव्यो छुं, ते तमारी पासे कांइक याचना करवा आव्यो छुं. ते ए के—हे देव ! आ मारी प्रभावती नामनी पुत्रीने श्रीपार्श्वनाथने माटे अंगीकार करो. हे स्वामी ! आ मारी याचना तमारी पासे निष्फळ न थाओ.' अश्वसेने कह्युं के—" आ कुमार सदा भववासथी विरक्त छे, तोपण तमारी प्रसन्नता माटे बळात्कारे पण तेने परणावीश." एम कही अश्वसेन राजा तेने साथे लइ श्रीपार्श्वकुमार पासे गया, अने कह्युं के—" हे वत्स ! आ राजानी आ पुत्रीने तुं परण. हे दाक्षिण्यना समुद्र ! जो के तुं बाल्यावस्थाथी ज संसारने विषे विरक्त छे, तोपण आ मारुं वचन तारे मानवुं पडशे." आ प्रमाणे पिताना अति आग्रहथी पार्श्वनाथे भोगफळ कर्मने भोगववा माटे प्रभावतीनुं पाणिग्रहण कर्युं. पछी क्रीडापर्वत, नदी, वाव अने उद्यानादिकमां प्रभावतीनी साथे क्रीडा करता प्रभुए केटलाक दिवसो निर्गमन कर्या.

एकदा पार्श्वनाथ पोताना महेलना गवाक्षमां बेठा बेठा नगरीने जोता हता. ते वखते घणा लोकोने पुष्पादिक पूजा-सामग्रीने लइ नगर बहार जता जोया. तेथी कुमारे सेवकोने पूछ्युं के—" आजे कयो उत्सव छे के जेथी आ लोको शीघ्रताथी नगर बहार जाय छे ?" त्यारे कोइ सेवक बोल्यो के—" हे स्वामी ! आजे उत्सव कांइपण नथी, परंतु आजे नगर बहार उद्यानमां कठ नामनो एक महातपस्वी तापस आवेलो छे. तेनी पूजा करवा माटे आ लोको जाय छे." ते सांभळी स्वामी पण ते कौतुक जोवा माटे परिवार सहित उद्यानमां गया. त्यां ते कठ तापस पंचाग्नि तप करतो हतो. ते वखते अवधिज्ञानवडे प्रभुए अग्निना कुंडमां नांखेला एक लाकडानी पोलमां एक सर्पने बळतो जोइ दयाळु होवाथी कह्युं के—" अहो ! आ तापस तप करे छे, तोपण अज्ञानता होवाथी दयागुण तो छे ज नहीं. नेत्र विना मुखनी जेम दया विना धर्म शा कामनो ? दया रहित पुरुषोनो कायक्लेश पण पशुनी जेम वृथा छे." ते सांभळी कठ बोल्यो के—" हे राजपुत्र ! तमारी जेवा क्षत्रियो तो हाथीने शिक्षा आपवी ए विगेरे कार्यमां ज पंडित होय छे, धर्ममां तो अमे मुनिओ ज पंडित छीए." ते सांभळी प्रभुए पोताना सेवको पासे ते कुंडमांथी सळगतुं लाकडुं बहार कढावी यतनापूर्वक तेने चीराव्युं, एटले तेमांथी एक मोटो सर्प नीकळ्यो. ते सर्प अग्निनी ज्वाळाथी व्याकुळ थयेलो हतो, तोपण प्रभुनुं दर्शन थतां ते अंतःकरणमां अत्यंत प्रसन्न थयो. तेने प्रभुए पोताना सेवको पासे परलोकना भातारूप प्रत्याख्यान अपाव्युं अने पंचनमस्कार संभळाव्या. प्रभु पोते तेनी सन्मुख कृपादृष्टिथी जोइ रह्या, तेथी ते सर्पे पण सावधानपणे ते सर्व अंतःकरणथी अंगीकार कर्युं. आ रीते धर्मना प्रभावथी ते सर्प मरीने धरणेंद्र थयो. आवुं आश्चर्य जोइ लोको प्रभुनी स्तुति करवा लाग्या के—" अहो ! आ

स्वामीनुं ज्ञान तो अद्भुत अथाग छे." पछी लोको सहित प्रभु पोताने स्थाने गया. आ सर्व जोइ शठ मनवाळो कठ अत्यंत लज्जा पाम्यो, अने वधारे अज्ञान तप करवा लाग्यो. "तेवाओने सन्मार्गनी प्रीति क्यांथी होय?" अनुक्रमे ते कठ तापस मरण पामी अज्ञानतपना प्रभावथी मेघकुमार (स्तनितकुमार) ने विषे मेघमाळी नामनो भवनपति देव थयो.

एकदा श्रीपार्श्वनाथ स्वामी वसंत ऋतुमां क्रीडा करवा माटे उद्यानमां गया. त्यां एक प्रासादनी भींत उपर श्रीनेमिनाथना चरित्रनुं चित्र चितरेलुं जोइ विचार्युं के—"अहो! श्रीनेमिनाथने धन्य छे के जेणे कुमार अवस्थामां ज अत्यंत रागवाळी राजीमती कन्यानो त्याग करी दीक्षा ग्रहण करी हती. तो हुं पण हवे सर्व संगनो त्याग करुं." आ प्रमाणे प्रभुए विचार कर्यो के तरत ज लोकांतिक देवोए आवी "हे स्वामी! तीर्थ प्रवर्तावो." एम विज्ञप्ति करी. पछी कुबेरे पूरेला धनवडे वार्षिक दान आपी प्रभुए दीक्षा माटे मातापितानी आज्ञा लीधी. पछी अश्वसेन विगेरे राजाओए अने शक्र विगेरे इंद्रोए एकठा थइ श्रीपार्श्वप्रभुने दीक्षाभिषेक कर्यो. पछी देवोए वहन करेली शिबिकामां आरूढ थइ प्रभुए देवदुंदुभिना नाद सहित आश्रमपद नामना वनमां जइ, शिबिकामांथी नीचे उतरी, वस्त्र अने आभूषणोनो त्याग करी मस्तकपर पंचमुष्टि लोच कर्यो अने पछी इंद्रे आपेलुं देवदूष्य डाबा खभापर धारण करी त्रीश वर्षनी वयवाळा स्वामीए त्रणसो पुरुषो सहित अष्टम तप करी सर्वविरति अंगीकार करी. ते वखते स्वामीने चोथुं मनःपर्यव ज्ञान प्राप्त थयुं. पछी स्वामी भारंड पक्षीनी जेम प्रमाद रहित थइ पृथ्वीपर विचरवा लाग्या. सर्व इंद्रो स्वामीनो दीक्षामहोत्सव पूर्ण करी नंदीश्वर द्वीपे जइ त्यां अष्टान्हिका उत्सव करी पोतपोताने स्थाने गया.

•

एकदा श्री पार्श्वनाथ स्वामी विहारना क्रमथी नगरनी नजीक रहेला एक तापसना आश्रममां आव्या. ते वखते सूर्य अस्त पाम्यो. तेथी त्यां एक कुवाने कांठे रहेला वटवृक्षनी नीचे प्रभु नासिका उपर दृष्टि राखी प्रतिमाए उभा रह्या. एवा अवसरे ते मेघमाळी नामनो असुर अवधिज्ञानवडे पोताना पूर्वभवनो वृत्तांत जाणी तथा ते वेरनुं कारण संभारी क्रोधथी धमधमतो प्रभुने उपसर्ग करवा ते स्थाने आव्यो. तेणे अंकुशनी जेवा तीक्ष्ण नखवाळा, भयंकर रूपवाळा अने पुंछडाना पछाडथी पर्वतो पण कंपे एवा घणा सिंहो विकुर्व्या. तेनाथी भगवान कांइ पण भय पाम्या नहीं. त्यारे तेणे अत्यंत भयंकर पर्वत जेवडा हाथीओ विकुर्व्या. तेनाथी पण प्रभु चलायमान थया नहीं. त्यारे तेणे मोटा फुंफाडा मारता अने यमराजना हस्तदंड जेवा प्रचंड दृष्टिविष सर्पो विकुर्व्या. तेमज तेना आंकडावडे स्वस्थतानो नाश करनारा अनेक वींछीओ, आपत्तिने करनारा भल्लूक अने शूकर विगेरे श्वापदो तथा ज्वाळानी जेवा भयंकर मुखवाळा अने मुंडनी माळाने धारण करनार प्रेतोने विकुर्व्या. ते सर्व पण प्रभुने ध्यानथी चलायमान करवा समर्थ थया नहीं. “ तीक्ष्ण मुखवाळी कीडीओ अने माकड विगेरे पण शुं वज्रने भेदी शके ? ” त्यारपछी अत्यंत क्रोध पामेला ते मेघमाळीए गर्जारव अने वीजळीवडे दिशाओमां व्यापी गयेला मेघोनी श्रेणि आकाशमां विकुर्वी. “ आ मारा पूर्वभवना शत्रुने आ मेघना जळथी डुबावीने मारी नांखुं.” एम विचारी ते वृष्टि वरसाववा लाग्यो. प्रथम मुष्टि जेवी पछी मुशळ जेवी अने पछी स्तंभ जेवी धारा वरसावी वरसावीने तेणे आखी पृथ्वी एक समुद्रमय करी दीधी, ते वखते अनुक्रमे प्रभुना कंठ सुधी ते जळ पहोंच्युं. एटले प्रभु कंठ सुधी पाणीमां डूबी गया. तेथी तेमनुं मुख पद्मद्रहमां रहेला कमळनी जेम शोभवा लाग्युं. पछी जेटलामां ते जळ

प्रभुनी नासिका सुधी पहोंच्युं. तेटलामां नागराज धरणेंद्रनुं आसन कंप्युं. तरत ज अवधिज्ञानथी प्रभुनो वृत्तांत जाणी ते पोतानी प्रियाओ सहित त्यां आवी प्रभुने भक्तिथी नम्यो. पछी प्रभुना बन्ने पगनी नीचे मोटा नाळवाळुं कमळ मूकी ते धरणेंद्रे पोताना शरीरवडे प्रभुनी पीठ अने बन्ने पडखां ढांकी तेमना मस्तकपर पोताना सात फणानुं छत्र कर्युं. तेथी त्यां रहेला प्रभु सुखे करीने ध्यानमां मग्न थया. ते वखते ते धरणेंद्रनी इंद्राणीओ प्रभु पासे नृत्य करवा लागी, तथा वेणु, वीणा अने मृदंग विगेरेना शब्दथी सर्व दिशाओने व्याप्त करी. आ वखते भक्ति करनारा धरणेंद्र उपर तथा द्वेष करनारा ते असुर उपर समताना निधानरूप स्वामी तो समान दृष्टिवाळा ज हता. परंतु द्वेषथी अधिकाधिक वृष्टि करता ते कठ नामना असुरने जोइ नागेंद्रने तेनापर क्रोध थयो, अने तेथी तेणे तिरस्कार सहित ते असुरने कह्युं के—" रे दुष्ट! पोताना ज उपद्रवने माटे तें आ शुं आरंभ्युं छे? हुं दयाळु प्रभुनो सेवक छुं, छतां हवे तारा अपराधने हुं सहन करीश नहीं. आ स्वामीए ते वखते तने पापमांथी मुक्त करवा माटे बळतो सर्प काढीने बताव्यो, तेमां तेमणे तारुं शुं अप्रिय कर्युं? हे पापी! कारण विनाना जगतना मित्ररूप आ भगवाननी उपर तुं विना कारणे द्वेष करे छे, तेथी हवे तुं नथी एम समज." आवुं धरणेंद्रनुं वचन सांभळी मेघमाळीए नीचे दृष्टि करी अने ते प्रकारे धरणेंद्रथी सेवाता प्रभुने जोया. तरत ज ते भय पामी विचारवा लाग्यो के—" मारी जेटली शक्ति हती तेटली बधी पर्वतने विषे ससलानी जेम आ प्रभुने विषे निष्फळ थइ. वळी आ भगवान एक ज मुष्टिथी वज्रने पण चूर्ण करी शके तेवा बळवान छे, छतां क्षमा गुणे करीने सर्व सहन करे छे, परंतु आ नागेंद्रथी तो मारे भय राखवानो ज छे. हुं विश्वना नाथनो वैरी थयो, तेथी मारे बीजुं कोइ पण शरण छे नहीं.

तेथी आ करुणाना सागरनुं ज शरण करुं." ए प्रमाणे विचारी मेघन संहरी लइ प्रभुनी पासे आवी " मारो अपराध क्षमा करो " एम नमस्कार पूर्वक कही ते असुर पोताने स्थाने गयो. नागेंद्र पण प्रभुने उपसर्ग रहित थयेला जाणी तेमने प्रणाम करी पोताने स्थाने गयो अने प्रभुए पण प्रातःकाळ थये त्यांथी अन्यत्र विहार कर्यो.

प्रभु छद्मस्थ अवस्थाए चोराशी दिवस विहार करी फरीथी तेज आश्रमना उद्यानमां आव्या. त्यां ध्यानमां रहेला प्रभुने केवळज्ञान प्राप्त थयुं. ते वखते इंद्रादिक देवोए आवी समवसरण रच्युं. त्यां पूर्व दिशा तरफना सिंहासनपर प्रभु पूर्वाभिमुखे बेठा अने बीजी त्रण दिशाओमां व्यंतरदेवोए प्रभुना त्रण प्रतिबिंब रच्यां. पछी सर्व सुर, असुर अने मनुष्यो आवीने योग्य स्थाने बेठा. एक एक योजन सुधीना विस्तारवाळी वाणीवडे स्वामीए देशनानो आरंभ कर्यो. श्रीपार्श्वनाथ स्वामीना केवळज्ञाननो वृत्तांत उद्यानपालकना मुखथी जाणीने श्री अश्वसेन राजा अत्यंत हर्ष पामी प्रभुना दर्शन माटे अत्यंत उत्सुक थइ वामादेवी सहित त्यां आव्या अने प्रभुनी स्तुति तथा नमस्कार करी शुद्ध बुद्धिथी धर्मदेशना सांभळवा बेठा. जगदीश्वरनी ते देशना सांभळी घणा पुरुषो तथा स्त्रीओए प्रतिबोध पामी दीक्षा ग्रहण करी अने केटलाके श्रावकधर्म अंगीकार कर्यो. तेमांथी आर्यदत्त विगेरे दश गणधरो थया. तेओए स्वामी पासेथी त्रिपदी ग्रहण करी तत्काळ द्वादशांगी रची. ते वखते अश्वसेन राजाए हस्तीसेन नामना पुत्रने राज्यपर स्थापन करी वामादेवी अने प्रभावती सहित प्रभुनी पासे दीक्षा ग्रहण करी. पद्मावती, पार्श्व यक्ष, वैरोट्या अने धरणेंद्रे सर्वदा जेमनुं सांनिध्य कर्युं छे एवा श्रीपार्श्वनाथ प्रभु पृथ्वीपर विचरवा लाग्या. ते प्रभुना तीर्थमां समग्र गुणोथी शोभता सोळ हजार साधुओ, आडत्रीश हजार साध्वीओ, एक

लाख ने चोसठ हजार श्रावको अने त्रण लाख ने सतावीश हजार श्राविकाओनो परिवार थयो. चोराशी दिवसे न्युन एवा सीत्तेर वर्ष सुधी केवळी पर्याये विचरता एवा प्रभुनो ए प्रमाणे चतुर्विध संघ थयो. छेवट प्रभु तेत्रीश मुनिओ सहित संमेताद्रि पर्वतपर जइ अनशन ग्रहण करी कायोत्सर्गे रह्या. एक मासनुं अनशन पूर्ण करी कुल सो वर्षनुं आयुष्य भोगवी ते तेत्रीश साधुओ सहित भगवान भवोपग्राही चार अघाती कर्मनो क्षय करी मोक्षपद पाम्या. ते वृत्तांत अवधिज्ञानथी जाणी सर्व इंद्रोए आवी भगवानना निर्वाणनो महोत्सव कर्यो.

इति श्रीपार्श्वनाथनुं संक्षिप्त चरित्र.

आ प्रमाणे श्रीपार्श्वनाथनुं चरित्र कही हवे प्रस्तुत कहे छे.—

तस्स लोगप्पईवस्स, आसि सीसे महायसे । केसी कुमारसमणे, विज्जाचरणपारगे ॥ २ ॥

अर्थ—(लोगप्पईवस्स) लोकने विषे प्रदीप समान (तस्स) ते श्रीपार्श्वनाथ स्वामीने (महायसे) मोटा यशवाळा अने (कुमारसमणे) कुमार अवस्थामां ज साधु थयेला एवा (केसी) केशी नामना (सीसे) शिष्य (आसि) हता, ते (विज्जाचरणपारगे) ज्ञान अने चारित्रना पारगामी हता. अहीं आ केशीकुमारने श्रीपार्श्वनाथना शिष्य कह्या, ते तेमना संतानमां थयेला जाणवा, परंतु तेमना साक्षात् शिष्य नहीं. केमके ते प्रभुना जो हस्तदीक्षित शिष्य होय तो श्रीमहावीर स्वामीना तीर्थनी प्रवृत्ति थइ त्यां सुधी ते होइ शके नहीं. २.

ओहिनाणसुए बुद्धे, सीससंघसमाउले । गामाणुगामं रीयंते, सावत्थिं नगरिमागए ॥ ३ ॥

अर्थ—(ओहिनाणसुए) अवधिज्ञान अने श्रुतज्ञानवडे (बुद्धे) तत्त्वना जाण अर्थात् मति, श्रुत अने अवधिज्ञानवाळा तथा (सीससंघसमाउले) शिष्यना समूहवडे परिवरेला एवा ते केशीकुमार (गामाणुगामं) एक गामथी बीजे गाम (रीयंते) विहार करता अनुक्रमे (सावत्थिं) श्रावस्ति नामनी (नगरिं) नगरीने विषे (आगए) आव्या. ३.

तिंदुअं नाम उज्जाणं, तम्मी नयरमंडले । फासुए सिज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ४ ॥

अर्थ—(तम्मी) ते श्रावस्ति नगरीना (नयरमंडले) नगर बहारना प्रदेशमां (तिंदुअं नाम) तिंदुक नामनुं (उज्जाणं) उद्यान हतुं, (तत्थ) ते उद्यानमां (फासुए) प्रासुक एटले स्वाभाविक अने आगंतुक जीवोथी रहित एवा (सिज्जसंथारे) शय्यासंस्तारकने विषे (वासं उवागए) वासने पामता हवा—निवासस्थानने करता हवा. शय्या एटले वसति—उपाश्रय, तेने विषे जे शिला फलकादिक संस्तारक, तेने विषे निवास कर्यो.

आ अवसरे जे थयुं ते कहे छे.—

अह तेणेव कालेणं, धम्मतित्थयरे जिणे । भयवं वद्धमाणु त्ति, सव्वलोगम्मि विस्सुए ॥ ५ ॥

अर्थ—(अह) हवे (तेणेव) ते ज (कालेणं) काळे (धम्मतित्थयरे) धर्मरूपी तीर्थने करनारा (जिणे) रागद्वेषने जीतनारा (भयवं) भगवान (वद्धमाणु त्ति) वर्धमान एवा नामे (सव्वलोगम्मि) सर्व लोकने विषे (विस्सुए)

विश्रुत एटले प्रसिद्ध हता. ५.

तस्से लोगपईवस्स, आसि सीसे महायसे । भयवं गोअमे नामं, विज्जाचरणपारगे ॥ ६ ॥

अर्थ—(लोगप्पईवस्स) लोकने विषे प्रदीप समान एवा (तस्स) ते वर्धमान स्वामीने (महायसे) मोटा यशवाळा (भयवं) भगवान (गोअमे नामं) गौतम नामना (सीसे) शिष्य (आसि) हता, ते (विज्जाचरणपारगे) ज्ञान अने चारित्रना पारगामी हता. ६.

बारसंगविऊ बुद्धे, सीससंघसमाउले । गामाणुगामं रीअंते, से वि सावत्थिमागए ॥ ७ ॥

अर्थ—(बारसंगविऊ) द्वादशांगीने जाणनारा, (बुद्धे) तत्त्वने जाणनारा, (सीससंघसमाउले) शिष्यना समूहवडे सहित तथा (गामाणुगामं) एक गामथी बीजे गाम (रीअंते) विहार करता एवा (से वि) ते गौतमस्वामी पण (सावत्थि) श्रावस्ति नगरी प्रत्ये (आगए) आव्या. ७.

कोट्ठगं नाम उज्जाणं, तम्मी नयरमंडले । फासुए सिज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ८ ॥

अर्थ—(तम्मी) ते श्रावस्ति नगरीना (नयरमंडले) नगरना बहारना प्रदेशमां (कोट्ठगं नाम) कोष्टक नामनुं (उज्जाणं) उद्यान हतुं, (तत्थ) ते उद्यानमां (फासुए) प्रासुक एवा (सिज्जसंथारे) शय्यासंस्तारकने विषे (वासं उवागए) वासने पामता हवा—रहेता हवा. ८.

त्यारपछी शुं थयुं ? ते कहे छे.—

केसी कुमारसमणे, गोयमे अ महायसे । उभओ तत्थ विहरिंसु, अल्लीणा सुसमाहिआ ॥ ९ ॥

अर्थ—(केसी) केशी नामना (कुमारसमणे) कुमार साधु (गोयमे अ) तथा गौतमस्वामी (उभओ) ए बन्ने (महायसे) मोटा यशवाळा तथा (अल्लीणा) मन, वचन अने कायगुप्तिमां लीन थयेला तथा (सुसमाहिआ) सारी समाधिवाळा सता (तत्थ) ते पोतपोताना उद्यानमां (विहरिंसु) विचरता हता. ९.

उभओ सिस्ससंघाणं, संजयाण तवस्सिणं । तत्थ चिंता समुप्पन्ना, गुणवंताण ताइणं ॥ १० ॥

अर्थ—(तत्थ) त्यां श्रावस्ति नगरीना उद्यानमां (उभओ) केशीकुमार अने गौतमस्वामी ए बन्नेना (सिस्ससंघाणं) शिष्यनो समूह के जेओ (संजयाण) संयमने धारण करनारा, (तवस्सिणं) तपस्वी, (गुणवंताण) गुणवान अने (ताइणं) छ जीव निकायना रक्षण करनार हता. तेमांथी केशीकुमारना मुनिओने (चिंता) विचार (समुप्पन्ना) उत्पन्न थयो. एक बीजाने परस्पर जोवाथी हवे कहे छे तेवो विचार उत्पन्न थयो. १०.

शो विचार थयो ? ते कहे छे.—

केरिसो वा इमो धम्मो ?, इमो धम्मो व केरिसो ? । आयारधम्मप्पणिही, इमा वा सा व केरिसी ? ॥ ११ ॥

अर्थ—(इमो) आ अमारो (धम्मो) महाव्रतरूप धर्म (केरिसो वा) केवो छे ? अने (इमो) आ प्रत्यक्ष देखाता

जेवी रीते जन्म पामी हती तेवी एटले वस्त्र रहित थइ. (त्ति) एवा स्वरूपवाळी तेणीने (पासिआ) जोइने प्रथमथी त्यां रहेलो (रहनेमी) रथनेमि (भग्गचित्तो) भग्नचित्तवाळो एटले चारित्रथी भ्रष्ट परिणामवाळो थयो (अ) अने (पच्छा) त्यारपछी (तीइ वि) ते राजीमतीए पण (दिट्ठो) तेने जोयो. प्रवेश करती वखते अंधारी जग्यामां कांइ पण देखी शकातुं नथी, तेथी तेणीए प्रथमथी त्यां रहेला रथनेमिने जोयो नहोतो. जो कदाच प्रथम प्रवेश करती वेळाए ज जोयो होत तो ज्यारे बीजी साध्वीओ जुदा जुदा स्थानमां गइ तेम ते पण बीजे जात; एकली अहीं प्रवेश करत नहीं. ३४.

भीआ य सा तहिं दट्ठुं, एगंते संजयं तयं । बाहाहिं काउं संगोफं, वेवमाणी निसीअइ ॥ ३५ ॥

अर्थ—(य) तथा (सा) ते राजीमती (तहिं) त्यां (एगंते) एकांतमां रहेला (तयं) ते (संजयं) रथनेमि साधुने (दट्ठुं) जोइने (भीआ) भय पामी. 'कदाच आ मारा शीळनो भंग करशे' एम धारी भयथी (वेवमाणी) कंपती सती (बाहाहिं) पोताना बे बाहुवडे (संगोफं) परस्पर गुंथवुं–गोपववुं (काउं) करीने एटले पोताना स्तनपर बे बाहुवडे परस्पर मर्कटबंध करीने (निसीअइ) तेने बळात्कारे पण आलिंगन नहीं करवा देवा माटे नीचे बेसी गइ. ३५.

अह सो वि रायपुत्तो, समुद्दविजयंगओ । भीअं पवेइअं दट्ठुं, इमं वक्कमुदाहरे ॥ ३६ ॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (सो वि) ते पण (रायपुत्तो) राजपुत्र (समुद्दविजयंगओ) समुद्रविजयनो अंगज रथनेमि (भीअं) भय पामेली अने (पवेइअं) कंपती एवी तेणीने (दट्ठुं) जोइ (इमं) आ प्रमाणे (वक्कं) वचनने

(उदाहरे) बोल्यो. ३६.

रहनेमी अहं भद्दे, सुरूवे चारुभासिणि । ममं भयाहि सुतणू, न ते पीला भविस्सइ ॥ ३७ ॥

अर्थ—(भद्दे) हे भद्रे ! (सुरूवे) हे सारा रूपवाळी ! (चारुभासिणि) हे मनोहर वचनवाळी ! (अहं) हुं (रहनेमी) रथनेमि छुं. (सुतणू) हे सुंदर शरीरवाळी ! (ममं) मने (भयाहि) भज-पतिपणे अंगीकार कर. तेम करवाथी (ते) तने (पीला) पीडा (न भविस्सइ) थशे नहीं. तुं पीडानी शंकाथी कंपे छे, पण विषयसेवा कांइ पीडाने माटे थती नथी, परंतु सुखने माटे थाय छे. २७.

एहि ता भुंजिमो भोए, माणुस्सं खु सुदुल्लहं । भुत्तभोगी तओ पच्छा, जिणमग्गं चरिस्सिमो ॥३८॥

अर्थ—हे राजीमती ! (एहि) आव. (ता) प्रथम आपणे (भोए) भोगोने (भुंजिमो) भोगवीए. (खु) खरेखर (माणुस्सं) मनुष्यपणुं (सुदुल्लहं) अति दुर्लभ छे. (तओ) ते कारण माटे (भुत्तभोगी) भोग भोगवीने (पच्छा) पछीथी आपणे (जिणमग्गं) जिनेश्वरना मार्गने -चारित्रने (चरिस्सिमो) आचरशुं. प्रथम भोगसुख भोगवीए अने पछी दीक्षा लइए, तो पछी भोगसुखनी इच्छा रहेती नथी. माटे हमणां प्रथम भोगसुख भोगववुं सारुं छे. ३८.

ते सांभळी राजीमतीए शुं कर्युं ? ते कहे छे.—

दट्ठूण रहनेमिं तं, भग्गुज्जोअपराइअं । राईमई असंभंता, अप्पाणं संवरे तहिं ॥ ३९ ॥

अर्थ—(भग्गुज्जोअपराइअं) संयमने विषे जेनो उद्यम भग्न थयो छे एवा तथा स्त्रीपरीषहथी पराजय पामेला एवा (तं) ते (रहनेमि) रथनेमिने (दट्ठूण) जोइने (असंभंता) "आ मारापर बळात्कार करी शकशे नहीं." एम धारी भय रहित थयेली (राईमई) राजीमती (तहिं) ते गुफामां ज (अप्पाणं) पोताना शरीरने (संवरे) ढांकती हवी एटले लूगडां पहेरी लेती हवी. ३९.

अह सा रायवरकन्ना, सुट्ठिआ निअमव्वए। जाई कुलं च सीलं च, रक्खमाणी तयं वए ॥ ४० ॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (निअमव्वए) शौच, संतोष, स्वाध्याय अने तपरूपी नियमने विषे तथा पंच महाव्रतने विषे (सुट्ठिआ) स्थिर रहेली (सा) ते (रायवरकन्ना) राजानी श्रेष्ठ कन्या–राजीमती (जाई) जाति एटले माताना वंशने, (कुलं च) कुळ एटले पिताना वंशने (सीलं च) तथा शीळने (रक्खमाणी) रक्षण करती सती (तयं) ते वखते (वए) आ प्रमाणे बोली. ४०.

जइ सि रूवेण वेसमणो, ललिएणं नलकूबरो। तहा वि ते न इच्छामि, जइ सि सक्खं पुरंदरो ॥४१॥

अर्थ—हे रथनेमि! (जइ) जो तुं (रूवेण) रूपे करीने (वेसमणो) वैश्रमण–कुबेर जेवो (सि) होय, अथवा जो तुं (ललिएणं) विलासवाळी चेष्टाए करीने (नलकूबरो) नळकूबर देव जेवो होय, अथवा (जइ) जो तुं (सक्खं) साक्षात् (पुरंदरो) इंद्र जेवो (सि) होय, (तहा वि) तो पण हुं (ते) तने (न इच्छामि) इच्छती नथी. ४१.

पक्खंदे जलिअं जोइं, धूमकेउं दुरासयं। नेच्छंति वंतयं भोत्तुं, कुले जाया अगंधणे ॥ ४२ ॥

अर्थ—हे रथनेमि ! (अगंधणे) अगंधन नामना (कुले) कुळमां (जाया) उत्पन्न थयेला सर्पो (जलिअं) जाज्वल्यमान अने (दुरासयं) दुःसह एवी (धूमकेउं) अग्निनी (जोइं) ज्वाळाने विषे (पक्खंदे) प्रवेश करे छे, परंतु (वंतयं) वमेलुं विष (भोत्तुं) खावाने—पाछुं चूसी लेवाने (न इच्छंति) इच्छता नथी. ४२.

धीरत्थु तेजसो कामी, जो तं जीविअकारणा। वंतं इच्छसि आवेउं, सेअं ते मरणं भवे ॥४३॥

अर्थ—(कामी) हे कामांध ! (ते जसो) तारा यशने (धीरत्थु) धिक्कार हो. अथवा (अजसोकामी) हे अपयशनी इच्छावाळा ! (ते) तने धिक्कार छे, के (जो) जे (तं) तुं (जीविअकारणा) असंयमरूप जीवितने कारणे (वंतं) वमेलाने (आवेउं) फरीथी पीवाने (इच्छसि) इच्छे छे. जे भोगने तजी दीक्षा ग्रहण करी, ते ज भोगने फरी भोगववा इच्छे छे. तेथी करीने (ते) तारुं (मरणं) पंडित मरण (सेअं) श्रेयस्कर (भवे) छे. अर्थात् असंयम जीविते जीववा करतां पंडित-मरणे मरवुं सारुं छे, परंतु वमेला भोगोने फरीथी भोगववानी इच्छा करवी सारी नथी. निंद्य वस्तुने जाणी तेनो त्याग कर्यो होय, तो तेने पंडितो फरीथी ग्रहण करता नथी. ४५.

अहं च भोगरायस्स, तं च सि अंधगवण्हिणो। मा कुले गंधणा होमो, संजमं निहुओ चर ॥४५॥

अर्थ—हे रथनेमि ! (अहं च) हुं (भोगरायस्स) भोगराजनी एटले उग्रसेन राजानी पुत्री छुं, (तं च) अने तुं

गणधरना शिष्योनो (धम्मो य) धर्म (केरिसो) केवा प्रकारनो छे ? तथा (इमा वा) आ अमारा संबंधी (आयारधम्मप्पणिही) आचार एटले वेष धारण करवारूप बाह्य क्रियानो समूह, ते रूप धर्मनी व्यवस्था केवी छे ? (सा य) अने आ गणधरना शिष्योना बाह्य आचाररूप धर्मनी व्यवस्था (केरिसी) केवी छे ? अर्थात् अमारो अने तेमनो धर्म श्रीसर्वज्ञे ज कहेलो छे, छतां ते धर्ममां अने तेना साधनोमां घणो तफावत देखाय छे, तेनुं कारण शुं हशे ? ते अमे जाणवा इच्छीए छीए. ११.

ते ज विचारने प्रगट करता सता कहे छे.—

चाउज्जामो अ जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ । देसिओ वद्धमाणेणं, पासेण य महामुणी ॥ १२ ॥

अर्थ—(जो) जे आ अमारो (चाउज्जामो अ) चार महाव्रतवाळो (धम्मो) धर्म (महामुणी) महामुनि (पासेण य) पार्श्वनाथस्वामीए (देसिओ) कहेलो छे, अने (जो) जे (इमो) आ गौतम गणधरना शिष्योनो (पंचसिक्खिओ) पांच शिक्षावाळो एटले पंचमहाव्रतवाळो धर्म महामुनि (वद्धमाणेणं) वर्धमानस्वामीए कहेलो छे. आ बन्ने प्रकारनो जुदो जुदो धर्म कहेवानुं शुं कारण हशे ? (आ सूत्रवडे धर्मना विषयवाळो संशय प्रगट कर्यो छे.) १२.

हवे आचारना विषयवाळो संशय प्रगट करे छे.—

अचेलगो अ जो धम्मो, जो इमो संतरुत्तरो । एगकज्जपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ? ॥ १३ ॥

अर्थ—(अ) तथा (जो) जे (अचेलगो) अचेलक एटले वस्त्र रहित अर्थात् प्रमाणोपेत, श्वेत, जीर्णप्राय अने अल्प मूल्यवाळुं वस्त्र धारण करवुं एवो (धम्मो) धर्म श्रीवर्धमानस्वामीए कह्यो छे, अने (जो इमो) जे आ अमारो (संतरुत्तरो) सांतर एटले श्रीमहावीरस्वामीना शिष्यनी अपेक्षाए अंतर सहित अर्थात् विशेष प्रकारना प्रमाण अने वर्णवाळो तथा उत्तर एटले मोटा मूल्यवडे प्रधान—श्रेष्ठ एवा वस्त्रवाळो धर्म श्रीपार्श्वनाथस्वामीए कह्यो छे. तो (एगकज्जपवन्नाणं) मोक्षरूप एक ज कार्यने माटे प्रवर्तेला ते बन्ने तीर्थंकरोने (विसेसे) आवो विशेष—फेरफार करवामां (किं नु कारणं) शुं कारण हशे ? १३.

आ प्रमाणे गौतमस्वामीना साधुओने पण संशय थयो. एटले बन्नेना साधुओने संशय उत्पन्न थवाथी केशी अने गौतमस्वामीए शुं कर्युं ? ते कहे छे.—

अह ते तत्थ सीसाणं, विन्नाय पवितक्किअं । समागमे कयमई, उभओ केसिगोअमा ॥ १४ ॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (तत्थ) त्यां श्रावस्तिनगरीमां (सीसाणं) साधुओना आवा प्रकारना (पवितक्किअं) वितर्कने (विन्नाय) जाणीने (ते) ते (केसिगोअमा) केशी अने गौतम (उभओ) बन्ने जणा (समागमे) परस्पर समागम करवामां (कयमई) करी छे मति जेमणे एवा थया—परस्पर मळवानी इच्छावाळा थया. १४.

गोअमो पडिरूवण्णू, सीससंघसमाउले । जिट्ठं कुलमविक्खंतो, तिंदुअं वणमागओ ॥ १५ ॥

घणा (पासंडा) पाखंडीओ एटले अन्यदर्शनी साधुओ (समागया) आव्या. तथा (अणेगाओ) अनेक (साहस्सीओ) हजारो (गिहत्थाणं) गृहस्थीओ (समागया) आव्या. १९.

देवदानवगंधव्वा, जक्खरक्खसकिन्नरा । अदिस्साण य भूआणं, आसि तत्थ समागमो ॥२०॥

अर्थ—तथा (देवदानवगंधव्वा) देव, दानव अने गंधर्वो, तथा (जक्खरक्खसकिन्नरा) यक्ष, राक्षस अने किन्नरो पण आव्या. (य) तथा (अदिस्साण) अदृश्य एवा (भूआणं) भूतोनो-व्यंतरोनो पण (तत्थ) त्यां (समागमो) समागम (आसि) थयो. २०.

हवे ते बन्ने मुनिओनी वातचीत केवी रीते थइ ? ते कहे छे.—

पुच्छामि ते महाभाग !, केसी गोअममब्बवी । तओ केसीं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥२१॥

अर्थ—(केसी) केशीकुमारे (गोअमं) गौतम गणधरने (अब्बवी) कह्युं के—(महाभाग) हे महा भाग्यवान ! (ते) तमने (पुच्छामि) हुं पूछुं छुं. (तओ) त्यारपछी (बुवंतं) आ प्रमाणे बोलता एवा (केसीं) केशीकुमारने (तु) पुनः (गोअमो) गौतमस्वामी (इणं) आ प्रमाणे (अब्बवी) कहेता हवा. २१.

पुच्छ भंते ! जहिच्छं ते, केसी गोअममब्बवी । तओ केसी अणुण्णाए, गोअमं इणमब्बवी ॥२२॥

अर्थ—(भंते) हे पूज्य ! (जहिच्छं) जेम तमारी इच्छा होय तेम (ते) तमे (पुच्छ) पूछो. ए प्रमाणे (केसी)

केशीकुमारने (गोअमं) गौतमस्वामी (अब्बवी) कहेता हवा. (तओ) त्यारे (केसी) केशीकुमार (अणुण्णाए) गौतमस्वामीनी आज्ञाए करीने (गोअमं) गौतमस्वामी प्रत्ये (इणं) आ प्रमाणे (अब्बवी) कहेता हवा—पूछता हवा. २२.

केशीकुमारे गौतमस्वामीने जे पूछयुं ते कहे छे.—

चाउज्जामो अ जो धम्मो, जो इमो पंचसिक्खिओ। देसिओ वद्धमाणेणं, पासेण य महामुणी ॥२३॥

अर्थ—(जो) जे आ अमारो (चाउज्जामो अ) अहिंसा, अनृत, अस्तेय अने अपरिग्रह ए चार महाव्रतवाळो (धम्मो) धर्म (महामुणी) महामुनि (पासेण य) श्रीपार्श्वनाथ स्वामीए (देसिओ) कह्यो छे, तथा (जो इमो) जे आ तमारो (पंचसिक्खिओ) उपरना चार तथा ब्रह्मचर्य ए पांच शिक्षावाळो एटले पांच महाव्रतरूप धर्म (वद्धमाणेणं) श्री वर्धमानस्वामीए कह्यो छे. २३.

एगकज्जपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ?। धम्मे दुविहे मेहावी !, कहं विपच्चओ न ते ? ॥२४॥

अर्थ—तो (एगकज्जपवन्नाणं) मोक्षरूपी एक ज कार्यने माटे प्रवर्तेला ते बन्ने जिनेश्वरोने (विसेसे) आवो विशेष—भेद करवामां (किं नु) शुं (कारणं) कारण हशे ? (मेहावी) हे बुद्धिमान ! (दुविहे) आ रीते बे प्रकारे (धम्मे) धर्म कहे सते (ते) तमने (विपच्चओ) अविश्वास (कहं) केम (न) थतो नथी ? बन्नेनुं सर्वज्ञपणुं तुल्य छे, छतां आवो मतभेद केम थाय ? २४.

अर्थ—त्यारपछी (पडिरूवण्णू) यथायोग्य विनयने जाणनार (गोअमो) गौतमस्वामी (जिट्ठं कुलं) पार्श्वनाथना संतानने प्रथम थयेल होवाथी आ मोटुं कुळ छे एम (अविक्खंतो) अपेक्षा करता–जाणता सता (सीससंघसमाउलो) शिष्योना समूह सहित (तिंदुयं) तिंदुक नामना (वणं) उद्यानमां (आगओ) आव्या. १५.

केसी कुमारसमणे, गोअमं दिस्समागयं । पडिरूवं पडिवत्तिं, सम्मं संपडिवज्जइ ॥ १६ ॥

अर्थ—(केसी) केशी नामना (कुमारसमणे) कुमार साधु (गोअमं) गौतमने (आगयं) आवेला (दिस्सं) जोइने (सम्मं) सम्यक् प्रकारे (पडिरूवं) अतिथिने योग्य एवी (पडिवत्तिं) सेवाने (संपडिवज्जइ) सारी रीते करता हवा. १६.

ते सेवाने ज बतावे छे.—

पलालं फासुअं तत्थ, पंचमं कुसतणाणि अ । गोअमस्स णिसिज्जाए, खिप्पं संपणामए ॥ १७ ॥

अर्थ—(तत्थ) त्यां तिंदुक वनमां (फासुअं) प्रासुक—अचित्त (पलालं) पराळ (अ) तथा (पंचमं) पांचमा (कुसतणाणि) कुश जातिना तृण (गोअमस्स) गौतमने (णिसिज्जाए) बेसवा माटे (खिप्पं) शीघ्रपणे (संपणामए) केशीकुमारे आप्यां. अहीं पराळना चार भेदनी अपेक्षाए तृणने पांचमुं गणाव्युं छे तेथी ' पंचम ' शब्द लख्यो छे. ते विषे कह्युं छे के—

" तणपंचगं पुण भणिअं, जिणेहिं कम्मट्ठगंठिमहणेहिं । साली १ वीही २ कोद्दव ३, रालय ४ रण्णे तणाइं ५ च ॥"

अर्थ—" आठे कर्मनी ग्रंथिने मथन करनारा जिनेश्वरोए पांच प्रकारना तृण कह्यां छे,—शाळी १, व्रीहि २, कोद्रा ३, रालक ४ अने अरण्यना तृण ५."

आमां प्रथमना चार भेद पराळनी जातिना छे अने पांचमो भेद तृणनो छे तेथी पंचम शब्द कह्यो छे. १७.

ते बन्ने साथे बेठा ते वखते केवा शोभता हता? ते कहे छे.—

केसी कुमारसमणे, गोअमे अ महायसे । उभओ निसण्णा सोहंति, चंदसूरसमप्पहा ॥ १८ ॥

अर्थ—(महायसे) महा यशवाळा (केसी कुमारसमणे) केशीकुमार साधु (अ) तथा (गोअमे) गौतम (उभओ) ए बन्ने (निसन्ना) बेठा सता (चंदसूरसमप्पहा) चंद्र अने सूर्य जेवी कांतिवाळा (सोहंति) शोभता हता. १८.

तेमना समागम वखते जे थयुं ते कहे छे.—

समागया बहू तत्थ, पासंडा कोउगा मिआ । गिहत्थाणमणेगाओ, साहस्सीओ समागया ॥ १९ ॥

अर्थ—(तत्थ) त्यां तिंदुक उद्यानमां (कोउगा) कौतुकथी (मिआ) मृगनी जेवा मृग एटले अज्ञानी एवा (बहू)

तओ केसिं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी । पण्णा समिक्खए धम्मं-तत्तं तत्तविणिच्छयं ॥ २५ ॥

अर्थ—(तओ) त्यारपछी (बुवंतं तु) आ प्रमाणे बोलता एवा (केसिं) केशीकुमार प्रत्ये (गोअमो) गौतम गणधर (इणं) आ प्रमाणे (अब्बवी) कहेता हवा, के (पण्णा) बुद्धि (तत्तविणिच्छयं) जीवादिक तत्त्वोनो निश्चय करनार (धम्मंतत्तं) धर्मना तत्त्वने (समिक्खए) जुए छे. अर्थात् मात्र वाक्यनुं श्रवण करवाथी ज अर्थनो निर्णय थइ शकतो नथी परंतु बुद्धिथी ज निर्णय थाय छे. २५.

तेथी करीने—

पुरिमा उज्जुजडा उ, वक्कजडा य पच्छिमा । मज्झिमा उज्जुपण्णा उ, तेण धम्मे दुहा कए ॥ २६ ॥

अर्थ—(उ) जे कारण माटे (पुरिमा) पहेला तीर्थंकरना मुनिओ (उज्जुजडा) सरळपणाए करीने ऋजु अने बोध पमाडवाने दुष्कर होवाथी जड हता, (य) तथा (पच्छिमा) छेल्ला तीर्थंकरना साधुओ (वक्कजडा) विपरीत प्रकृति होवाथी वक्र अने पोताना कुविकल्पवडे सत्य अर्थ जाणवामां असमर्थ होवाथी जड छे, (उ) तथा (मज्झिमा) मध्यमना बावीश तीर्थंकरोना साधुओ (उज्जुपण्णा) ऋजु एटले सरळ प्रकृतिवाळा अने प्राज्ञ एटले बुद्धिमान हता, (तेण) ते कारण माटे एक कार्यमां ज प्रवर्त्या छतां (धम्मे) धर्म (दुहा) बे प्रकारे (कए) कर्यो छे-कह्यो छे. २६.

अहीं केशीकुमार शंका करे के—" जो के प्रथमादिक प्रभुना मुनिओ एवा प्रकारना हता, तोपण आ रीते बे प्रकारनो

धर्म करवानुं शुं कारण ?" ते उपर कहे छे.—

पुरिमाणं दुव्विसोज्झो उ, चरिमाणं दुरणुपालओ । कप्पो मज्झिमगाणं तु, सुविसोज्झो सुपालओ॥२७॥

अर्थ—(पुरिमाणं) पहेला तीर्थंकरना साधुओने (कप्पो) आ साधुधर्मनो कल्प एटले आचार (दुव्विसोज्झो उ) दुर्विशोध्य एटले दुःखे करीने निर्मळ करी शकाय तेवो अर्थात् जाणी शकाय तेवो छे, कारण के तेओ ऋजुजड होवाथी गुरुए कह्या छतां तेनो अर्थ सम्यक् प्रकारे जाणी शके नहीं. परंतु जो जाणे तो पछी पाळी शके खरा. तथा (चरिमाणं) छेल्ला तीर्थंकरना साधुओने ते कल्प (दुरणुपालओ) दुःखे करीने पाळी शकाय तेवो छे, कारण के तेओ कोइपण रीते जाणी शके छे, परंतु वक्रजड होवाथी बराबर पाळी शकता नथी. (तु) तथा (मज्झिमगाणं) मध्यना बावीश तीर्थंकरोना साधुओने ते कल्प (सुविसोज्झो) सारी रीते शोधी शकाय—जाणी शकाय तेवो अने (सुपालओ) सारी रीते पाळी शकाय तेवो छे. कारण के तेओ ऋजुप्राज्ञ होवाथी सुखे करीने यथार्थपणे जाणी शके छे अने ते ज प्रमाणे पाळी पण शके छे. तेथी तेओ चार महाव्रतोवाळो धर्म कह्या छतां पण पांचमा व्रतने जाणवामां अने पाळवामां समर्थ छे. कह्युं छे के—" स्त्रीनो परिग्रह कर्या विना तेनो भोग थइ शकतो नथी, तेथी परिग्रहनी विरतिमां मैथुननी पण विरति आवी जाय ज छे. " ए प्रमाणेनी बुद्धिथी बावीश तीर्थंकरोना साधुओ जाणीने ते प्रमाणे पाळे छे. आवी अपेक्षाथी श्रीपार्श्वनाथस्वामीए चार महाव्रतो कह्यां अने पहेला छेल्ला तीर्थंकरना साधुओ तेवा ऋजुप्राज्ञ नहीं होवाथी श्रीऋषभदेवे अने श्रीमहावीरस्वामीए पांच महाव्रतो कह्यां छे. विचित्र बुद्धिवाळा

शिष्योना उपर अनुग्रह करवानी बुद्धिथी ज बे प्रकारनो धर्म कह्यो छे, पण तत्त्वथी विचार करीए तो ए बे प्रकारनो धर्म छे ज नहीं—एक ज प्रकारनो छे. अहीं प्रसंगने लीधे ज पहेला तीर्थंकर संबंधी वात कही छे. २७.

ते सांभळी केशीकुमारे कह्युं.....

साहु गोअम! पण्णा ते, छिन्नो मे संसओ इमो। अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोअमा! ॥२८॥

अर्थ—(गोअम) हे गौतम ! (ते) तमारी (पण्णा) बुद्धि (साहु) घणी सारी छे, तेथी (इमो) आ (मे) मारो (संसओ) संशय तो (छिन्नो) तमे छेद्यो छे. वळी (अन्नो वि) बीजो पण (मज्झं) मने (संसओ) संशय छे. (तं) तेने–तेना समाधानने पण (गोअमा) हे गौतम ! तमे (मे) मने (कहसु) कहो.

आ सर्व केशीकुमारनुं कहेवुं शिष्यनी अपेक्षाथी छे. अर्थात् शिष्यवर्गने समजाववा माटे छे. कारण के पोते तो त्रण ज्ञान सहित छे तेथी तेने तो आवो संशय होय ज नहीं. २८.

अचेलगो अ जो धम्मो, जो इमो संतरुत्तरो। देसिओ वद्धमाणेणं, पासेण य महायसा ॥२९॥

अर्थ—(अ) तथा (जो) जे आ (अचेलगो) अचेलक एटले वस्त्र रहित अर्थात् प्रमाणोपेत, श्वेत, जीर्णप्राय अने अल्प मूल्यवाळुं वस्त्र धारण करवुं एवो (धम्मो) साधुनो धर्म (महायसा) मोटा यशवाळा (वद्धमाणेणं) श्री वर्धमानस्वामीए (देसिओ) कह्यो छे, तथा (जो इमो) जे आ अमारो (संतरुत्तरो) सांतर एटले श्रीमहावीरस्वामीना

शिष्यनी अपेक्षाए अंतर सहित अर्थात् विशेष प्रकारना प्रमाण अने वर्णवाळो-गमे तेवा प्रमाणवाळा अने जूदा जूदा रंगवाळा अने उत्तर एटले घणा मूल्यवडे श्रेष्ठ एवा वस्त्रवाळो धर्म (पासेण य) श्रीपार्श्वनाथस्वामीए कहेलो छे. २९.

एगकज्जपवन्नाणं, विसेसे किं नु कारणं ? । लिंगे दुविहे मेहावी !, कहं विप्पच्चओ न ते ? ॥३०॥

अर्थ—(एगकज्जपवन्नाणं) मोक्षरूपी एक ज कार्य साधवामां प्रवर्तेला ते बन्ने तीर्थंकरोने (विसेसे) आवो विशेष-भेद करवामां (किं नु कारणं) शुं कारण हशे ? (मेहावी) हे बुद्धिमान ! (दुविहे) अचेलक अने सचेलक एवा बे प्रकारना (लिंगे) लिंग-वेषने विषे (ते) तमने (विप्पच्चओ) अविश्वास (कहं) केम (न) नथी थतो ? शंका केम नथी थती ? ३०.

केसिमेवं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी । विन्नाणेण समागम्म, धम्मसाहणमिच्छिअं ॥ ३१ ॥

अर्थ—(एवं) ए प्रमाणे (बुवंतं तु) कहेता-पूछता एवा (केसिं) केशीकुमारने (गोअमो) गौतम गणधर (इणं) आ प्रमाणे (अब्बवी) कहेता हवा-उत्तर देता हवा, के—(विन्नाणेण) केवळज्ञानवडे (समागम्म) जे जेने उचित होय ते तेज प्रमाणे जाणीने ते बन्ने तीर्थंकरोए (धम्मसाहणं) धर्मनुं साधन एटले धर्मना उपकरणने (इच्छिअं) इच्छ्या छे-कह्या छे. पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना साधुने जो पंचवर्णना वस्त्रादिकनी अनुज्ञा आपी होत तो तेओ ऋजुजड अने वक्रजड होवाथी वस्त्रने रंगवा विगेरे कार्यमां प्रवृत्ति करत. तेथी तेमने तेनी अनुज्ञा आपी नहीं. अने श्रीपार्श्वनाथस्वामीना शिष्यो तो ऋजुप्राज्ञ होवाथी तेओने रंगेलां वस्त्रोनी पण अनुज्ञा आपी छे. ३१.

तेम ज वळी.—

पच्चयत्थं च लोगस्स, नाणाविहविगप्पणं । जत्तत्थं गहणत्थं च, लोए लिंगप्पओअणं ॥ ३२ ॥

अर्थ—(च) तथा वळी (लोगस्स) लोकना (पच्चयत्थं) विश्वासने माटे (नाणाविहविगप्पणं) नाना प्रकारना उपकरणनी कल्पना करेली छे, एटले के रजोहरणादिक विविध प्रकारनां उपकरण नियमे करीने यतिओने विषे ज संभवे छे, तेथी लोकोने ते उपकरण जोइ ' आ साधु छे ' एम विश्वास आवे छे. जो ए रीते नियमित उपकरण न होय तो बीजा पण कोइ इच्छा प्रमाणे वेष धारण करीने ' अमे साधु छीए.' एम पूजावा मनावा माटे लोको पासे पोतानी प्रसिद्धि करे, अने तेम करवाथी सत्य मुनिओने विषे पण लोकनी प्रतीतिमां भंग पडे. माटे नियमित उपकरणमां फेरफार कहेल नथी. ते तो बन्नेने एक सरखा ज राखवा योग्य छे. तथा (जत्तत्थं) यात्रा एटले संयमना निर्वाहने माटे (गहणत्थं च) तथा पोताना ज्ञानने माटे पण (लोए) लोकमां (लिंगप्पओअणं) वेषनुं प्रयोजन छे. एटले ते प्रमाणे वर्षाकल्पादिक राखवामां न आवे तो वर्षाकाळमां संयमनी बाधा थाय, तेथी वेषनी जरुर छे, तेमज कदाचित् मनना परिणाम चारित्रपरथी पडी जाय तोपण ' हुं मुनि छुं. ' एम पोताने मुनिपणाना ज्ञानने माटे पण वेषनी जरुर छे. ३२.

अह भवे पइन्ना उ, मोक्खसब्भूअसाहणो । नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं चेव निच्छए ॥ ३३ ॥

अर्थ—(अह) हवे (निच्छए) निश्चय नयना मते तो (नाणं च) ज्ञान, (दंसणं चेव) दर्शन अने (चरित्तं

वेष) चारित्र ज (मोक्खसब्भूअसाहणो) मोक्षनां सत्य साधनो छे, ए प्रमाणे श्रीपार्श्वनाथस्वामी अने वर्धमानस्वामीनी (पइन्ना) एक सरखी प्रतिज्ञा–अंगीकार (भवे उ) होय ज–छे ज. भरतचक्री विगेरेने वेष विना पण केवळज्ञान उत्पन्न थयुं हतुं एम संभळाय छे, तेथी मोक्षनुं कारण तत्त्वथी तो ज्ञान, दर्शन अने चारित्र छे, पण वेष नथी. तेथी वेषनी भिन्नता जोवाथी विज्ञानीओने तेमां काइ अविश्वास थतो नथी. वेष तो मात्र व्यवहार नयनो अपेक्षाए ज छे. २३.

साहु गोअम! पण्णा ते, छिण्णो मे संसओ इमो। अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोअमा ॥२४॥

अर्थ—(गोअम) हे गौतम ! (ते) तमारी (पण्णा) बुद्धि (साहु) बहु सारी छे. तेथी (इमो) आ (मे) मारो (संसओ) संशय पण (छिण्णो) तमे छेद्यो छे. हजु (अन्नो वि) बीजो पण (मज्झं) मने (संसओ) संशय छे, (तं) ते (मे) मारा संशयने (गोअमा) हे गौतम गणधर ! (कहसु) तमे कहो. ते बीजा पण मारा संशयने तमे छेदो. आ प्रमाणे महाव्रत संबंधी तथा वेष संबंधी शिष्योना संशयने दूर करी हवे ते शिष्योने ज जणाववा माटे केशीकुमार पोते जाणता हता तोपण नीचेनो बीजो प्रश्न करे छे. २४.

अणेगाण सहस्साणं, मज्झे चिट्ठसि गोअमा!। ते अ ते अभिगच्छंति, कहं ते निज्जिआ तुमे? ॥२५॥

अर्थ—(गोअमा) हे गौतम ! (अणेगाण) अनेक (सहस्साणं) हजारो शत्रुओनी (मज्झे) मध्ये (चिट्ठसि) तमे रहो छो. (ते अ) अने वळी ते शत्रुओ (ते) तमारी तरफ (अभिगच्छंति) तमने जीतवा माटे दोडे छे, छतां (ते)

ते शत्रुओने (तुमे) तमे (कहं) शी रीते (निज्जिआ) जत्या ? जीती लीधा ? ते कहो. २५.

हवे गौतमस्वामी उत्तर आपे छे.—

एगे जिए जिआ पंच, पंच जिए जिआ दस । दसहा उ जिणित्ता णं, सव्वसत्तू जिणामहं ॥ ३६ ॥

अर्थ—(एगे) एक शत्रु (जिए) जीताये सते (पंच) पांचे शत्रु (जिआ) जीताया एम जाणवुं, तथा (पंच) पांच शत्रु (जिए) जीताये सते (दस) दसे शत्रु (जिआ) जीताया जाणवा. तथा (दसहा उ) दश प्रकारना शत्रुने (जिणित्ता णं) जीतीने (सव्वसत्तू) सर्व शत्रुओने (अहं) हुं (जिणामि) जीतुं छुं. ३६.

ते सांभळीने पछी—

सत्तू अ इइ के वुत्ते ?, केसी गोअममब्बवी । तओ केसीं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥ ३७ ॥

अर्थ—तमे १-५-१० विगेरे (सत्तू अ) शत्रुओ (के) कया (वुत्ते) कह्या छे ?- कोने कहो छो ? (इइ) ए प्रमाणे (केसी) केशीकुमार (गोअमं) गौतमस्वामीने (अब्बवी) कहेता हवा पूछता हवा. (तओ) त्यारपछी (बुवंतं तु) ए प्रमाणे बोलता एवा (केसीं) केशीकुमार प्रत्ये (गोअमो) गौतमस्वामी (इणं) आ प्रमाणे (अब्बवी) बोलता हवा—कहेता हवा. ३७.

एगप्पा अजिए सत्तू, कसाया इंदिआणि अ । ते जिणित्तु जहाणायं, विहरामि अहं मुणी ! ॥३८॥

अर्थ—(एगप्पा) एक आत्मा एटले जीव के मन (अजिए) नहीं जीतायो सतो (सत्तू) शत्रुरूप छे, तथा (कसाया) चारे कषायो नहीं जीत्या सता शत्रुरूप छे, आ रीते मन अने कषायो मळीने पांच शत्रु छे. (अ) तथा (इंदिआणि) पांच इंद्रियो नहीं जीत्या सता शत्रुरूप छे. आ सर्वे मळीने दश शत्रु थया. (ते) ते सर्व शत्रुओने (जहानायं) शास्त्रमां कहेली नीतिवडे (जिणित्तु) जीतीने (मुणी) हे केशीकुमार मुनि ! (अहं) हुं (विहरामि) विचरुं छुं, एटले ते शत्रुओनी मध्ये रह्या छतां पण अप्रतिबद्ध विहारे करीने हुं विचरुं छुं. ३८.

आ प्रमाणे गौतमस्वामीए कह्युं त्यारे केशीकुमार फरीथी बोल्या के—

साहु गोअम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो ।
अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोअमा ! ॥ ३९ ॥

अर्थ—(गोअम) हे गौतम गणधर ! (ते पन्ना) तमारी बुद्धि (साहु) बहु सारी छे, तेथी (इमो) आ (मे संसओ) मारो संशय पण (छिन्नो) तमे छेद्यो छे. (अन्नो वि) हजु बीजो पण (मज्झं) मने (संसओ) संशय छे, (तं मे) ते मारा संशयने (गोअमा) हे गौतम गणधर ! (कहसु) तमे कहो—छेदो. ३९.

दीसंति बहवो लोए, पासबद्धा सरीरिणो । मुक्कपासो लहूभूओ, कहं तं विहरसी मुणी ? ॥४०॥

अर्थ—(लोए) लोकने विषे (पासबद्धा) पाशथी एटले रागद्वेषरूपी पाशथी बंधायेला (सरीरिणो) प्राणीओ

(बहुचो) घणा (दीसंति) देखाय छे, तो (मुणी) हे गौतम मुनि ! (तं) तमे (मुक्कपासो) ते पाशथी मुक्त अने (लहूभूओ) लघु एटले वायु, तेनी जेवा थया सता (कहं) केवी रीते (विहरसी) सर्वत्र अप्रतिबद्धपणे विचरो छो ? ४०.

त्यारे गौतमस्वामी बोल्या के

'ते पासे सव्वसो छित्ता, निहंतूण उवायओ । मुक्कपासो लहूभूओ, विहरामि अहं मुणी ! ॥ ४१ ॥

अर्थ—(ते) ते (सव्वसो) सर्व (पासे) पाशोने (छित्ता) छेदीने तथा (उवायओ) सत्य भावनाना अभ्यासरूप उपायथी (निहंतूण) हणीने एटले फरीथी तेनो बंध न थाय एवी रीते तेमनो विनाश करीने (अहं) हुं (मुणी) हे केशीकुमार मुनि ! (मुक्कपासो) पाशथी मुक्त अने (लहूभूओ) वायुनी जेवो लघु थयो सतो (विहरामि) विचरुं छुं. ४१.

पासा य इति के वुत्ता ?, केसी गोअममब्बवी । तओ केसिं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥४२॥

अर्थ—(पासा य) पाशो (के वुत्ता) तमे कया कह्या ? एटले तमे कोने पासला कह्या ? (इति) ए प्रमाणे (केसी) केशीकुमार मुनि (गोअमं) गौतम गणधरने (अब्बवी) कहेता हवा. (तओ) त्यारपछी (बुवंतं तु) ए प्रमाणे बोलता एवा (केसिं) केशीकुमारने (गोअमो) गौतमस्वामी (इणं) आ प्रमाणे (अब्बवी) कहेता हवा. ४२.

रागदोसादओ तिव्वा, नेहपासा भयंकरा । ते छिंदित्तु जहाणायं, विहरामि जहक्कमं ॥ ४३ ॥

अर्थ—(रागदोसादओ) राग अने द्वेष विगेरे (तिव्वा) तीव्र अने (भयंकरा) भयंकर एवा (नेहपासा) स्नेहपाशो कहेला छे, (ते) ते पाशोने (जहाणायं) शास्त्रमां कहेली नीति प्रमाणे (छिंदित्तु) छेदीने (जहक्कमं) यथाक्रम एटले साधुना आचारमां कहेला क्रम प्रमाणे (विहरामि) हुं विचरुं छुं. ४३.

ते सांभळी केशीकुमार बोल्या.—

साहु गोअम ! पण्णा ते, छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोअमा ! ॥

अर्थ—(गोअम) हे गौतम गणधर ! (ते पण्णा) तमारी बुद्धि (साहु) घणी सारी छे, तेथी (इमो) आ (मे) मारो (संसओ) संशय पण (छिन्नो) तमे छेद्यो छे. वळी (अन्नो वि) बीजो पण (मज्झं) मने (संसओ) संशय छे, (तं मे) ते मारा संशयने (गोअमा) हे गौतम गणधर ! (कहसु) तमे कहो–छेदो. ४४.

अंतोहिअयसंभूआ, लया चिट्ठइ गोअमा ! । फलेइ विसभक्खीणं, सा उ उद्धरिआ कहं ? ॥ ४५ ॥

अर्थ—(गोअमा) हे गौतम गणधर ! (अंतोहिअयसंभूआ) हृदयनी अंदर उत्पन्न थयेली (लया) जे लता (चिट्ठइ) रहेली छे, तथा जे लता (विसभक्खीणं) विषनी जेवा भक्षण करवा लायक एटले परिणामे दारुण एवा विष फळोने (फलेइ) फळे छे–उत्पन्न करे छे, (सा उ) ते लता तमे (कहं) केवी रीते (उद्धरिआ) उखेडी नांखी ? ४५.

त्यारे गौतमस्वामी बोल्या.—

तं लतं सव्वसो छित्ता, उद्धरित्तु समूलिअं । विहरामि जहानायं, मुंकोमि विसभक्खणं ॥ ४६ ॥

अर्थ—(तं) ते (लतं) लताने (सव्वसो) सर्वथा (छित्ता) छेदीने तथा (समूलिअं) मूळ सहित (उद्धरित्तु) उखेडी नांखीने (जहानायं) शास्त्रमां कहेली नीति प्रमाणे (विहरामि) हुं विचरुं छुं अने (विसभक्खणं) क्लिष्ट कर्मरूपी विषफळना भक्षणथी (मुकोमि) हुं मुक्त थयो छुं. ४६.

लया य इति का वुत्ता ?, केसी गोअममब्बवी । केसीमेवं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥४७॥

अर्थ--(लया य) वळी लता ते (का वुत्ता) कई कही छे ? (इति) ए प्रमाणे (केसी) केशीकुमार (गोअमं) गौतम गणधरने (अब्बवी) कहेता हवा—पूछता हवा. (एवं) ए प्रमाणे (बुवंतं तु) कहेता एवा (केसीं) केशीकुमारने (गोअमो) गौतमस्वामी (इणं) आ प्रमाणे (अब्बवी) कहेता हवा. ४७.

भवतण्हा लया वुत्ता, भीमा भीमफलोदया । तमुद्धित्तु जहानायं, विहरामि महामुणी ! ॥ ४८ ॥

अर्थ—(भवतण्हा) संसारने विषे जे तृष्णा—लोभ ते ज (भीमा) भयंकर अने (भीमफलोदया) भयंकर फळना उदयवाळी (लया) लता (वुत्ता) कहेली छे. (तं) ते लताने (जहानायं) शास्त्रमां कहेली नीति प्रमाणे (उद्धित्तु) उखेडी नांखीने (महामुणी) हे केशी महामुनि ! (विहरामि) हुं विचरुं छुं. ४८.

साहु गोअम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोअमा ! ॥४९॥

अर्थ—प्रथमनी जेम जाणवो. ४९.

संपज्जलिआ घोरा, अग्गी चिट्ठइ गोअमा ! । जे डहंति सरीरत्था, कहं विज्झाविआ तुमे ? ॥५०॥

अर्थ– (गोअमा) हे गौतम गणधर ! (संपज्जलिआ) अत्यंत जाज्वल्यमान अने ए ज कारणथी (घोरा) घोर–भयंकर एवा (अग्गी) अग्निओ (चिट्ठइ) रहेला छे, के (जे) जे अग्निओ (सरीरत्था) शरीरमां रह्या थका (डहंति) बाळे छे–परिताप उपजावे छे. तेमने (तुमे) तमे (कहं) केवी रीते (विज्झाविआ) बुझव्या–शांत कर्या ? ५०.

त्यारे गौतमस्वामी बोल्या.

महामेहप्पसूआओ, गिज्झ वारि जलोत्तमं । सिंचामि सययं ते उ, सित्ता नो अ डहंति मे ॥५१॥

अर्थ– (महामेहप्पसूआओ) महामेघथकी उत्पन्न थयेला प्रवाहथी (जलोत्तमं) सर्व जळमां प्रधान एवुं (वारि) जळ (गिज्झ) ग्रहण करीने (ते उ) ते अग्निओने (सययं) निरंतर (सिंचामि) हुं छांटुं छुं–शांत करुं छुं. (सित्ता) अने ते जळवडे सींच्या एवा ते अग्निओ (मे) मने (नो अ डहंति) नथी ज बाळता. ५१.

अग्गी अ इइ के वुत्ते ?, केसी गोअममब्बवी । तओ केसिं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥ ५२ ॥

अर्थ– (अग्गी अ) वळी अग्नि ते (के वुत्ते) कया कह्या छे ? (इइ) ए प्रमाणे (केसी गोअममब्बवी) केशीकुमार

गौतमस्वामीने कहेता–पूछता हवा. (तओ) त्यारे (बुवंतं तु) ए प्रमाणे बोलता एवा (केसी) केशीकुमारने (गोअमो इणं अब्बवी) गौतमस्वामी आ प्रमाणे कहेता हवा. अहीं अग्निना संबंधमां प्रश्न कर्यो, तेना उपलक्षणथी तेने बुझावनार महामेघादिक संबंधी पण प्रश्न कर्यो एम समजवुं. ५२.

कसाया अग्गिणो वुत्ता, सुअसीलतओ जलं। सुअधाराभिहया संता, भिन्ना हु न डहंति मे ॥५३॥

अर्थ– (कसाया) कषायो परिताप उपजावनार होवाथी तथा शोषण करनार होवाथी (अग्गिणो) अग्निओ (वुत्ता) कह्या छे, तथा (सुअसीलतओ) श्रुत एटले कषायने शमाववाना कारणभूत श्रुतने विषे रहेला उपदेशो, शीळ एटले पांच महाव्रतो अने बार प्रकारनो तप, ते (जलं) जळ कहेलुं छे. उपलक्षणथी जगतने आनंददायक एवा तीर्थंकरने महामेघरूप कह्या छे, अने तेमनाथी उत्पन्न थयेला आगमने जळना प्रवाहरूप कहेलो छे. तेथी करीने (सुअधाराभिहया) श्रुतनी तथा उपलक्षणथी शीळ अने तपनी धारावडे हणायेला अने (भिन्ना हु) भेदाया (संता) सता ते अग्निओ (मे) मने (न डहंति) बाळता नथी. ५३.

साहु गोअम ! पण्णा ते, छिन्नो मे संसओ इमो। अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोअमा ! ॥५४॥

अर्थ—पूर्वनी जेम जाणवो. ५४.

अयं साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावइ । जंसि गोअम ! आरूढो, कहं तेण न हीरसि ? ॥५५॥

अर्थ—(अयं) आ प्रत्यक्ष देखातो, (साहसिओ) साहसिक एटले विचार कर्या विना ज प्रवर्ततो, (भीमो) भयंकर अने (दुट्ठस्सो) दुष्ट एवो अश्व (परिधावइ) दोडे छे, के (जंसि) जेना उपर (मारूढो) आरूढ थयेला एवा तमे (गोअम) हे गौतम गणधर ! (तेण) ते अश्वथी (कहं) केम (न हीरसि) हरण कराता नथी–ते अश्व तमने केम उन्मार्गे लइ जतो नथी ?. ५५.

त्यारे गौतमस्वामी बोल्या.—

पहावंतं निगिण्हामि, सुअरस्सीसमाहितं । न मे गच्छइ उम्मग्गं, मग्गं च पडिवज्जइ ॥ ५६ ॥

अर्थ—(सुअरस्सीसमाहितं) श्रुतरूपी रश्मि एटले दोरडावडे बांधेला ते दुष्ट अश्वने हुं (पहावंतं) उन्मार्गे दोडता एवाने (निगिण्हामि) पकडी राखुं छुं, तेथी (मे) मारो ते अश्व (उम्मग्गं) उन्मार्गे (न गच्छइ) जतो नथी, (मग्गं च) अने मार्गने एटले सन्मार्गने (पडिवज्जइ) अंगीकार करे छे–सन्मार्गे चाले छे. ५६.

आसे अ इति के वुत्ते?, केसी गोअममब्बवी । केसीमेवं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥ ५७ ॥

अर्थ—(आसे अ) वळी अश्व ते (के वुत्ते) कयो कह्यो छे ? (इति) ए प्रमाणे (केसी) केशीकुमार (गोअमं) गौतम गणधर प्रत्ये (अब्बवी) कहेता हवा–पूछता हवा (एवं बुवंतं तु) ए प्रमाणे कहेता एवा (केसीं) केशीकुमार प्रत्ये (गोअमो) गौतमस्वामी (इणं अब्बवी) आ प्रमाणे उत्तर कहेता हवा. ५७.

मणो साहसिओ भीमो, दुट्ठस्सो परिधावइ । तं सम्मं निगिण्हामि, धम्मसिक्खाइ कंथगं ॥५८॥

अर्थ—हे केशी मुनि ! (मणो) मनरूपी (साहसिओ) साहसिक अने (भीमो) भयंकर एवो (दुट्ठस्सो) दुष्ट अश्व (परिधावइ) आम तेम दोडे छे. (तं) तेने (धम्मसिक्खाइ) धर्मरूप शिक्षावडे (कंथगं) जातिवंत अश्वनी जेम (सम्मं) सम्यक् प्रकारे (निगिण्हामि) हुं निग्रह करुं छुं—नियममां राखुं छुं. ५८.

साहु गोअम ! पण्णा ते, छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोअमा ! ॥५९॥

अर्थ—पूर्वनी जेम जाणवो. ५९.

कुप्पहा बहवो लोए, जेहिं नासंति जंतुणो । अद्धाणे कह वट्टंतो, तं न नस्ससि गोअमा ! ॥६०॥

अर्थ—(लोए) लोकने विषे (कुप्पहा) कुमार्गो (बहवो) घणा छे, के (जेहिं) जे कुमार्गोए करीने (जंतुणो) प्राणीओ (नासंति) नाश पामे छे एटले सन्मार्गथी भ्रष्ट थाय छे, तो (गोअमा) हे गौतम मुनीश्वर ! (अद्धाणे) सन्मार्गमां (वट्टंतो) वर्तता एवा (तं) तमे (कह) केम (न नस्ससि) नाश पामता नथी ? भ्रष्ट थता नथी ? ६०.

जे अ मग्गेण गच्छंति, जे अ उम्मग्गपट्ठिआ । ते सव्वे विइआ मज्झं, तो न नस्सामहं मुणी ! ॥६१॥

अर्थ—(मुणी) हे केशी मुनि ! (जे अ) जेओ (मग्गेण) सन्मार्गे (गच्छंति) जाय छे, (जे अ) तथा जेओ (उम्मग्गपट्ठिआ) उन्मार्गे चालनारा छे, (ते सव्वे) ते सर्वे प्राणीओ (मज्झं) मारा (विइआ) जाणेला छे एटले ते

सर्वेने हुं जाणुं छुं अर्थात् मार्ग अने उन्मार्गना स्वरूपने हुं जाणुं छुं. (तो) तेथी (अहं) हुं (न नस्सामि) नाश पामतो नथी—सन्मार्गथी भ्रष्ट थतो नथी. ६१.

मग्गे अ इति के वुत्ते, केसी गोअममब्बवी । तओ केसीं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥६२॥

अर्थ—(मग्गे) मार्ग (अ) अने उन्मार्ग कोने कह्यो छो ? बाकीनो अर्थ पूर्ववत् जाणवो. ६२.

कुप्पावयणपासंडी, सव्वे उम्मग्गपट्ठिआ । सम्मग्गं तु जिणक्खायं, एस मग्गे हि उत्तमे ॥६३॥

अर्थ—(कुप्पावयणपासंडी) कुप्रवचनना पाखंडीओ एटले एकांतवादी कपिलादिकना दर्शनवाळा (सव्वे) सर्वे (उम्मग्गपट्ठिआ) उन्मार्गे चालनारा छे, (तु) पुनः (जिणक्खायं) जिनेश्वरे कहेलो जे मार्ग ते ज (सम्मग्गं) सन्मार्ग छे, माटे (एस) आ (मग्गे हि) मार्ग ज (उत्तमे) उत्तम छे. ६३.

साहु गोअम ! पण्णा ते, छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोयमा ! ॥६४॥

अर्थ—पूर्ववत् जाणवो. ६४.

महाउदगवेगेणं, वुज्झमाणाण पाणिणं । सरणं गई पइट्ठा य, दीवं कं मन्नसी मुणी ! ॥६५॥

अर्थ—(मुणी) हे गौतम मुनि ! (महाउदगवेगेणं) मोटा जळना प्रवाहवडे (वुज्झमाणाण) तणाता एवा (पाणिणं) प्राणीओने (सरणं) शरणरूप, (गई) गति एटले आधार भूमिरूप, (पइट्ठा य) अने प्रतिष्ठा एटले स्थिर रहेवाना

हेतुरूप (दीवं) द्वीप (कं) कोने (मन्नसी) तमे मानो छो ? ६५.

गौतमस्वामी जवाब आपे छे.—

अत्थि एगो महादीवो, वारिमज्झे महालओ । महाउदगवेगस्स, गति तत्थ न विज्जई ॥६६॥

अर्थ—(वारिमज्झे) जळनी मध्ये (महालओ) मोटो (एगो) एक (महादीवो) महाद्वीप (अत्थि) छे. (तत्थ) तेमां (महाउदगवेगस्स) महाजळना वेगनी–प्रवाहनी (गति) गति (न विज्जइ) प्रवर्तती नथी. ६६.

दीवे अ इइ के वुत्ते, केसी गोअममब्बवी । केसीमेवं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥६७॥

अर्थ—(दीवे) द्वीप कोने कहीए ? बाकीनो अर्थ पूर्ववत्. द्वीपना उपलक्षणथी ते जळमां रहेलो होवाथी जळना प्रवाहनो प्रश्न पण जाणी लेवो. ६७.

जरामरणवेगेणं, वुज्झमाणाण पाणिणं । धम्मो दीवो पइट्ठा य, गई सरणमुत्तमं ॥ ६८ ॥

अर्थ—(जरामरणवेगेणं) जरा अने मरणरूपी जळना वेगवडे (वुज्झमाणाण) वहन कराता–तणाता (पाणिणं) प्राणीओने (धम्मो) धर्म ज (पइट्ठा य) स्थिर रहेवाना हेतुरूप, (गई)गति–आधाररूप अने (उत्तमं) उत्तम (सरणं) शरणरूप (दीवो) द्वीप छे. कारण के ते धर्म ज संसाररूपी समुद्रमां द्वीपरूपे रहेलो छे. ते मुक्तिनुं कारण होवाथी जरा अने मरणरूप जळनो वेग तेने पहोंची शकतो नथी. ६८.

साहु गोअम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो। अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोअमा ॥६९॥

अर्थ—पूर्ववत्. ६९.

अण्णवंसि महोहंसि, नावा विप्परिधावइ । जंसि गोअम ! मारूढो, कहं पारं गमिस्ससि ? ॥ ७० ॥

अर्थ—(महोहंसि) मोटा प्रवाहवाळा (अण्णवंसि) समुद्रने विषे (नावा) वहाण (विप्परिधावइ) विशेषे करीने आमतेम दोडे छे, बराबर सीधा चाली शकता नथी तो (जंसि) जे वहाणपर एटले ते वहाणपर (मारूढो) आरूढ थयेला तमे (गोअम) हे गौतम मुनि ! (पारं) ते समुद्रना पारने (कहं) केवी रीते (गमिस्ससि) पामशो ? ७०.

गौतमस्वामी जवाब आपे छे.—

जा उ अस्साविणी नावा, न सा पारस्स गामिणी ।
जा निरस्साविणी नावा, सा उ पारस्स गामिणी ॥ ७१ ॥

अर्थ—(जा उ) जे (नावा) नौका (अस्साविणी) आश्रववाळी–अंदर जळ आवी शके तेवी होय छे–जेमां पाणी भरातुं होय छे, (सा) ते (पारस्स) समुद्रना पारने (गामिणी) पामनारी (न) थती नथी, पण (जा) जे (नावा) नावा (निरस्साविणी) आश्रव रहित–अंदर जळ न आवी शके तेवी होय छे (सा उ) ते नावा (पारस्स) समुद्रना पारने (गामिणी) पामनारी थाय छे. तेथी हुं आश्रव रहित नावापर आरूढ थइ समुद्रना पारने पामीश. ७१.

नावा अ इति का वुत्ता ?, केसी गोअममब्बवी । केसीमेवं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥ ७२॥

अर्थ—पूर्ववत् जाणवो. अहीं केवी नावा ? एवो प्रश्न कर्यो छे तेथी ते साथे तरनारनो अने तरवा लायक समुद्रनो पण प्रश्न कर्यो ज छे एम जाणवुं. ७२.

सरीरमाहु नाव त्ति, जीवो वुच्चइ नाविओ । संसारो अण्णवो वुत्तो, जं तरंति महेसिणो ॥ ७३ ॥

अर्थ—(सरीरं) शरीर रूप (नाव त्ति) नावा छे एम (आहु) कह्युं छे, कारण के आश्रवद्वारनो रोध करी ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूप त्रण रत्ननी आराधना करवाथी ते शरीर ज संसारसागरने तारे छे. तथा (जीवो) जीव (नाविओ) नाविक-तरनार (वुच्चइ) कहेवाय छे. केमके ते जीव ज भवसागरने तरनार छे. तथा (संसारो) आ चार गतिरूप संसार (अण्णवो) समुद्र (वुत्तो) कह्यो छे. केमके तत्त्वथी ते संसार ज समुद्रनी जेम तरवा लायक छे. (जं) के जे संसारसागरने (महेसिणो) महर्षिओ ज (तरंति) तरे छे-तरी शके छे. ७३.

साहु गोअम ! पण्णा ते, छिन्नो मे संसओ इमो । अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोअमा ! ॥७४॥

अर्थ—पूर्ववत्. ७४.

अंधयारे तमे घोरे, चिट्ठंति पाणिणो बहू । को करिस्सति उज्जोअं, सव्वलोअम्मि पाणिणं ? ॥७५॥

अर्थ—(अंधयारे) प्राणीने अंध करनार अने (घोरे) घोर एवा (तमे) अंधारामां (बहू) घणा (पाणिणो)

प्राणीओ (चिट्ठंति) रहेला छे. तो (सव्वलोअम्मि) सर्व लोकने विषे (पाणिणं) प्राणीओने (को) कोण-कयो पदार्थ (उज्जोअं) उद्योतने-प्रकाशने (करिस्सति) करशे ? ७५.

श्री गौतमस्वामी जवाब आपे छे.—

उग्गओ विमलो भाणू, सव्वलोअप्पहंकरो । सो करिस्सति उज्जोअं, सव्वलोअम्मि पाणिणं ॥७६॥

अर्थ—(सव्वलोअप्पहंकरो) सर्व लोकमां प्रकाश करनार (विमलो) निर्मळ (भाणू) सूर्य (उग्गओ) उदय पाम्यो छे, (सो) ते सूर्य (सव्वलोअम्मि) सर्व लोकमां (पाणिणं) प्राणीओने (उज्जोअं) उद्योत-प्रकाश (करिस्सति) करशे. ७६.

भाणू अ इइ के वुत्ते ?, केसी गोअममब्बवी । केसीमेवं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥ ७७ ॥

अर्थ—अहीं सूर्य कोने कह्यो छो ? एम प्रश्न कर्यो छे. बाकी पूर्ववत्. ७७.

उग्गओ खीणसंसारो, सव्वण्णू जिणभक्खरो । सो करिस्सइ उज्जोअं, सव्वलोअम्मि पाणिणं ॥ ७८ ॥

अर्थ—(खीणसंसारो) क्षीण थयो छे संसार जेनो तथा (सव्वण्णू) सर्व पदार्थने जाणनार एवो (जिणभक्खरो) जिनेश्वररूपी भास्कर-सूर्य (उग्गओ) उदय पाम्यो छे, (सो) ते सूर्य (सव्वलोअम्मि) सर्व लोकने विषे (पाणिणं) प्राणीओने (उज्जोअं) उद्योत-मोहरूपी अंधकारनो नाश करी सर्व वस्तुनो प्रकाश (करिस्सइ) करशे. ७८.

साहु गोअम ! पन्ना ते, छिन्नो मे संसओ इमो। अन्नो वि संसओ मज्झं, तं मे कहसु गोअमा ! ॥७९॥

अर्थ—पूर्ववत्. ७९.

सारीरमाणसे दुक्खे, बज्झमाणाण पाणिणं। खेमं सिवमणाबाहं, ठाणं किं मन्नसी मुणी ! ॥ ८० ॥

अर्थ—(मुणी) हे गौतम मुनीश्वर ! (सारीरमाणसे) शरीर संबंधी अने मनसंबंधी (दुक्खे) दुःखोवडे (बज्झमाणाण) बाधा–पीडा पामता एवा (पाणिणं) प्राणीओने (खेमं) क्षेम–आधि व्याधि रहित, (सिवं) शिव–जरा अने उपद्रव रहित तथा (अणाबाहं) अनाबाध–शत्रु नहीं होवाथी स्वभावे करीने ज पीडा रहित एवुं (ठाणं) स्थान (किं) कयुं (मन्नसी) तमे मानो छो ? ते कहो. ८०.

गौतमस्वामी जवाब आपे छे.—

अत्थि एगं धुवं ठाणं, लोगग्गम्मि दुरारुहं। जत्थ नत्थि जरामच्चू, वाहिणो वेअणा तहा ॥ ८१ ॥

अर्थ—(लोगग्गम्मि) लोकना अग्रभागने विषे (दुरारुहं) दुःखे करीने चडी शकाय एवुं (एगं) एक ज (धुवं) ध्रुव–निश्चळ (ठाणं) स्थान (अत्थि) छे, के (जत्थ) ज्यां (जरामच्चू) जरा, मृत्यु, (वाहिणो) व्याधिओ (तहा) तथा (वेअणा) वेदना एटले शरीर अने मन संबंधी दुःखोनो अनुभव (नत्थि) नथी. जरा अने मृत्यु नहीं होवाथी ते स्थान शिवरूप छे, व्याधि नहीं होवाथी क्षेमरूप छे अने वेदना नहीं होवाथी अनाबाध छे. ८१.

ठाणे अ इइ के वुत्ते? केसी गोअममब्बवी । केसीमेवं बुवंतं तु, गोअमो इणमब्बवी ॥ ८२ ॥

अर्थ—आमां ते स्थान कयुं ? एम प्रश्न कर्यो छे. बाकी पूर्ववत्. ८२.

निव्वाणं ति अबाहं ति, सिद्धि लोगग्गमेव य । खेमं सिवमणाबाहं, जं चरंति महेसिणो ॥ ८३ ॥

अर्थ—(निव्वाणं ति) संतापना अभावथी प्राणीओ शीतळ थाय जेने विषे ते निर्वाण ए प्रमाणे कहेवाय छे, (अबाहं ति) बाधा नथी जेने विषे ते अबाध एवे नामे कहेवाय छे, (सिद्धि) प्रयत्न कर्या विना सर्व कार्यो जेने विषे सिद्ध थाय ते सिद्धि एवे नामे कहेवाय छे, (लोगग्गमेव य) लोकना अग्रभागने विषे रहेल होवाथी लोकाग्र एम कहेवाय छे, (खेमं) शाश्वत सुख करनार होवाथी क्षेम एम कहेवाय छे, (सिवं) उपद्रव नहीं होवाथी शिव एवे नामे कहेवाय छे, तथा (अणाबाहं) बाधा पीडा रहित होवाथी जे स्थान अनाबाध एवुं कहेवाय छे, तथा (जं) जे स्थानने विषे (महेसिणो) महर्षिओ (चरंति) जाय छे. अहीं ज्यां न होय त्यां 'इति' शब्दनो अध्याहार राखी अर्थ करवो. ८३.

तं ठाणं सासयंवासं, लोअग्गम्मि दुरारुहं । जं संपत्ता न सोअंति, भवोहंतकरा मुणी ॥ ८४ ॥

अर्थ—(तं ठाणं) ते स्थान (सासयंवासं) शाश्वत निवासवाळुं तथा (लोअग्गम्मि) लोकना अग्र भागने विषे (दुरारुहं) दुःखे करीने चडी शकाय तेवुं कठणुं छे. (भवोहंतकरा) भवना समूहनो अंत करनारा (मुणी) मुनिओ (जं संपत्ता) जे स्थानने पाम्या सता (न सोअंति) शोक करता नथी-कोइ जातनो शोक करवापणुं रहेतुं ज नथी. ८४.

साहु गोअम ! पण्णा ते, छिन्नो मे संसओ इमो । नमो ते संसयातीत ! सव्वसुत्तमहोदधी ! ॥८५॥

अर्थ—(गोअम) हे गौतम गणधर ! (ते) तमारी (पण्णा) बुद्धि (साहु) बहु सारी छे, (इमो) आ (मे संसओ) मारो संशय पण (छिन्नो) तमे छेद्यो छे. (संसयातीत) हे संशय रहित ! (सव्वसुत्तमहोदधी) हे सर्व श्रुतना मोटा समुद्र ! (ते नमो) तमने नमस्कार छे. ८५.

पछी केशीकुमारे शुं कर्युं ? ते कहे छे.—

एवं तु संसए छिन्ने, केसी घोरपरक्कमे । अभिवंदित्ता सिरसा, गोअमं तु महायसं ॥ ८६ ॥

अर्थ—(एवं तु) आ अनुक्रमे (संसए) संशय (छिन्ने) छेदाये सते एटले सर्व संशयो छेदाये सते (घोरपरक्कमे) घोर पराक्रमवाळा (केसी) केशीकुमारे (महायसं) महा यशवाळा (गोअमं तु) गौतम गणधरने (सिरसा) मस्तकवडे (अभिवंदित्ता) वंदना करीने. ८६.

पंचमहव्वयधम्मं, पडिवज्जइ भावओ । पुरिमस्स पच्छिमम्मि, मग्गे तत्थ सुहावहे ॥ ८७ ॥

अर्थ—(भावओ) भावथी (पुरिमस्स) प्रथम जिनेश्वरे मानेला—प्रथम जिनेश्वरे पण प्रवर्तावेला एवा (तत्थ सुहावहे) ते सुखकारक (पच्छिमम्मि मग्गे) छेल्ला तीर्थंकरना प्रवर्तावेला मार्गमां—तीर्थमां (पंचमहव्वयधम्मं) पांच महाव्रतरूप धर्मने (पडिवज्जइ) अंगीकार कर्यो. ८७.

हवे आ अध्ययनने समाप्त करता महापुरुषना संगनुं फळ कहे छे.—

केसिगोअमओ णिच्चं, तम्मि आसि समागमे । सुअसीलसमुक्करिसो, महत्थत्थविणिच्छओ ॥८८॥

अर्थ—(तम्मि) ते नगरीमां (णिच्चं) हमेशां (केसिगोअमओ) केशीकुमार अने गौतमस्वामीनो (समागमे) समागम (आसि) थया कर्यां, तेथी (सुअसीलसमुक्करिसो) श्रुत अने शीळनो एटले ज्ञान अने चारित्रनो उत्कर्ष थयो, तथा (महत्थत्थविणिच्छओ) महार्थ एटले मुक्तिना साधनपणाए करीने महा प्रयोजनवाळा जे शिक्षा अने व्रत विगेरे अर्थो तेनो निश्चय पण थयो, अर्थात् शिक्षा, व्रत अने तत्त्वो विगेरे पदार्थोनो निश्चय थयो. अहीं केशीकुमार तथा गौतमस्वामीने तो अर्थनो निश्चय हतो ज. पण तेमना शिष्योने अर्थनिश्चय थयो एम जाणवानुं छे. ८८.

तोसिआ परिसा सव्वा, सम्मग्गं समुवट्ठिआ । संथुआ ते पसीअंतु, भयवं केसीगोअम त्ति बेमि ॥८९॥

अर्थ—आ रीते (तोसिआ) प्रसन्न थयेली (सव्वा) सर्व (परिसा) पर्षदा (सम्मग्गं) सन्मार्गने एटले मुक्तिमार्गने आराधवा (समुवट्ठिआ) सावधान थइ. (ते) ते (भयवं) पूज्य अने ज्ञानवंत एवा (केसीगोअमा) केशीकुमार अने गौतमस्वामी (संथुआ) पर्षदाए स्तुति कराया सता (पसीअंतु) सत्पुरुषो उपर प्रसन्न थाओ. (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं. ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. ८९.

इति त्रयोविंशमध्ययनम्. २३.

अथ प्रवचनमातृ नामनुं चोवीशमुं अध्ययन. २४.

त्रेवीशमा अध्ययनमां कह्युं के—बीजाओना मननी शंकाने केशीकुमार अने गौतमस्वामीनी जेम दूर करवी. ते शंकानुं निवारण तो भाषासमितिरूप वाग्योगे करीने थइ शके छे, अने भाषासमिति अष्टप्रवचन मातानी मध्ये आवे छे, तेथी अहीं अष्टप्रवचन मातानुं स्वरूप कहे छे.—

अट्ठप्पवयणमायाओ, समिई गुत्ती तहेव य । पंचेव य समीईओ, तओ गुत्तिओ आहिआ ॥ १ ॥

अर्थ—(अट्ठप्पवयणमायाओ) प्रवचननी माताओ आठ छे. (समिई) समिति (तहेव य) तथा (गुत्ती) गुप्ति. तेमां (समीईओ) समितिओ (पंचेव य) पांच ज छे अने (गुत्तिओ) गुप्तिओ (तओ) त्रण (आहिआ) कहेली छे. १.

ते आठेना नाम कहे छे.—

ईरिआ भासेसणादाणे, उच्चारे समिई ईअ । मणगुत्ती वयगुत्ती, कायगुत्ति अ अट्ठमा ॥ २ ॥

अर्थ—(ईरिआ) ईर्या एटले गमन, (भासा) भाषा, (एसणा) एषणा एटले अन्नादिकनी गवेषणा, (आदाणे) आदान एटले पात्रादिकनुं ग्रहण, तथा (उच्चारे) उच्चारादिकनुं परिष्ठापन (इअ) ए पांच ज (समिई) समिति छे. तथा (मणगुत्ती) मनगुप्ति एटले मननी शुभ कार्यमां प्रवृत्ति अने अशुभ कार्यथी निवृत्ति, (वयगुत्ती) ए ज रीते वचनगुप्ति (अ) तथा (अट्ठमा) आठमी (कायगुत्ति) कायगुप्ति छे. २.

ते आठेनुं निगमन करे छे.—समाप्ति करे छे.

एआओ अट्ठ समिईओ, समासेण विआहिआ। दुवालसंगं जिणक्खायं, मायं जत्थ उ पवयणं ॥३॥

अर्थ—(एआओ) आ (अट्ठ) आठ (समिईओ) समितिओ (समासेण) संक्षेपे करीने (विआहिआ) कही छे, (जत्थ) जेने विषे (जिणक्खायं) जिनेश्वरे कहेलुं (दुवालसंगं) द्वादशांगरूप (पवयणं) प्रवचन (मायं उ) समायेलुं ज छे. अहीं समिति शब्दनो अर्थ आ प्रमाणे छे—सम्–सम्यक् एटले जिनेश्वरना वचनने अनुसारे इति एटले आत्मानी जे चेष्टा ते समिति. आवा शब्दार्थ प्रमाणे गुप्तिओ पण समिति ज कही शकाय छे, तेथी अहीं आठेने समिति कही छे, छतां पांच समिति अने त्रण गुप्ति एम भेदवडे जे कहेवामां आवे छे तेनुं कारण ए जे समितिओ प्रवृत्तिरूपे होय छे अने गुप्तिओ प्रवृत्ति अने निवृत्ति बन्नेरूपे होय छे एम जणाववा माटे कथंचित् बन्नेनो भेद कहेवामां आवे छे. आ आठ समितिओ चारित्ररूप ज छे, अने ज्ञान तथा दर्शन विना चारित्र होइ शकतुं नथी, अने ज्ञान, दर्शन तथा चारित्र ए त्रण सिवाय बीजो कोइ पण विषय द्वादशांगीमां नथी, तेथी आ आठ समितिने विषे प्रवचन समायेलुं ज छे. एम कह्युं ते योग्य ज छे. ३.

हवे प्रथम ईर्यासमितिनुं स्वरूप कहे छे.—

आलंबणेण कालेण, मग्गेण जयणाइ अ। चउकारणपरिसुद्धं, संजए इरिअं रिए ॥ ४ ॥

अर्थ—(संजए) साधुए (आलंबणेण) आलंबन, (कालेण) काळ, (मग्गेण) मार्ग (अ) अने (जयणाइ)

यतना (चउकारणपरिसुद्धं) ए चार कारणो करीने शुद्ध एवी (इरिअं) ईर्या एटले गति (रिए) करवी जोइए. ४.

ते आलंबनादिकनुं ज स्वरूप कहे छे.—

तत्थ आलंबणं नाणं, दंसणं चरणं तहा । काले अ दिवसे वुत्ते, मग्गे उप्पहवज्जिए ॥ ५ ॥

अर्थ—(तत्थ) तेमां एटले ते आलंबनादिकमां (नाणं) ज्ञान, (दंसणं) दर्शन (तहा) तथा (चरणं) चारित्र, ए त्रण (आलंबणं) आलंबन कहेवाय छे. कारण के ए त्रणने आश्रीने ज जिनेश्वरे गमन करवानी आज्ञा आपेली छे. तेमां ज्ञान एटले सूत्र, अर्थ अने सूत्रार्थ बंनेरूप आगम, दर्शन एटले सम्यक्त्व अने चरण एटले चारित्र. 'तहा'–तथा शब्द आप्यो छे ते बे संयोगीया अने त्रण आदि संयोगीया भांगाने सूचववा माटे छे. एटले के ज्ञानादिक एक एकने अने बंने आदिने आश्रीने पण गमन करवानी अनुज्ञा आपेली छे. (अ) तथा (दिवसे) दिवस ए (काले) काळ(वुत्ते) कह्यो छे.एटले साधुने गमन करवानो काळ दिवस कह्यो छे, पण रात्रिए ईर्यानी शुद्धि थइ शके नहीं, तेथी रात्रिनो काळ कह्यो नथी. तथा (मग्गे) मार्ग ते (उप्पहवज्जिए) उन्मार्गने वर्जीने कह्यो छे, उन्मार्गे जवाथी आत्मानी विराधना विगेरे दोषो लागे छे. माटे सारा मार्गे–राजमार्गे चालवुं. ५.

हवे यतनारूप चोथो भेद ने तेना चार प्रकार कहे छे.—

दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा । जयणा चउव्विहा वुत्ता, तं मे कित्तयओ सुण ॥ ६ ॥

अर्थ—(दव्वओ) द्रव्यथी (खेत्तओ चेव) क्षेत्रथी तथा (कालओ) काळथी (तहा) तथा (भावओ) भावथी एम (चउव्विहा) चार प्रकारे (जयणा) यतना (वुत्ता) कही छे. (तं) ते यतनाने (कित्तयओ) कहेता एवा (मे) मारी पासे (सुण) हे शिष्य ! तुं सांभळ. ६.

दव्वओ चक्खुसा पेहे, जुगमित्तं तु खेत्तओ । कालओ जाव रीएज्जा, उवउत्ते अ भावओ ॥ ७ ॥

अर्थ—(चक्खुसा) चक्षुवडे (पेहे) जे जीवादिक पदार्थने जोवा-जोइने चालवुं ते (दव्वओ) द्रव्यथी यतना कहेवाय छे, (जुगमित्तं तु) तथा युगप्रमाण एटले साडात्रण हाथ प्रमाण क्षेत्रने जोतां चालवुं ते (खेत्तओ) क्षेत्रथी यतना कहेवाय छे, तथा (जाव रीएज्जा) ज्यांसुधी चाले त्यांसुधीना प्रमाणवाळी एटले तेटला काळना प्रमाणवाळी जे यतना ते (कालओ) काळथी यतना कहेवाय छे, (उवउत्ते अ) तथा उपयुक्त एटले सावधान एवो सतो जे चाले ते (भावओ) भावथी यतना कहेवाय छे. ७.

हवे यतनाना चोथा भेद उपयोगने ज स्पष्ट रीते कहे छे.—

इंदिअत्थे विवज्जित्ता, सज्झायं चेव पंचहा । तम्मुत्ती तप्पुरक्कारे, संजए इरिअं रिए ॥८॥

अर्थ—(इंदिअत्थे) इंद्रियोना शब्दादिक विषयोने (चेव) तथा (पंचहा) पांच प्रकारना (सज्झायं) स्वाध्यायने (विवज्जित्ता) वर्जीने कारण के स्वाध्याय पण गमन करती वखते उपयोगनो विनाश करे छे तेथी स्वाध्यायने पण वर्जीने

(तम्मुत्ती) ते ईर्याने विषे ज मूर्ति एटले व्यापार करतुं छे शरीर जेनुं एवो अने (तप्पुरक्कारे) ते ईर्याने ज आगळ करे एटले उपयोगमां मुख्यपणे अंगीकार करे एवो अर्थात् काया अने मननुं तेमां ज एकाग्रपणुं राखतो एवो (संजए) साधु (इरिअं) गतिने (रिए) करे. ८.

हवे बीजी भाषासमिति कहे छे.—

कोहे माणे अ मायाए, लोभे अ उवउत्तया । हासे भयमोहरिए, विकहासु तहेव य ॥ ९ ॥
एआइं अट्ठ ठाणाइं, परिवज्जित्तु संजए । असावज्जं मिअं काले, भासं भासिज्ज पण्णवं ॥ १० ॥

अर्थ—(कोहे) क्रोधने विषे, (माणे अ) मानने विषे, (मायाए) मायाने विषे, (लोभे अ) लोभने विषे, (हासे) हास्यने विषे, (भयमोहरिए) भयने विषे, मौखर्यने विषे, (तहेव य) तेम ज वळी (विकहासु) विकथाने विषे (उवउत्तया) उपयोग राखवो, (एआइं) ए (अट्ठ ठाणाइं) आठ स्थानकोने (परिवज्जित्तु) सर्वथा वर्जीने (पण्णवं) बुद्धिमान (संजए) साधुए (काले) बोलवाने वखते (असावज्जं) पाप रहित—निर्दोष अने (मिअं) परिमित एटले कार्य जेटली ज (भासं) भाषा (भासिज्ज) बोलवी. जो क्रोधादिकमां उपयोग होय तो प्राये शुभ भाषा बोलाती नथी तेथी बोलती वखते क्रोधादिकनो अवश्य त्याग करवो जोइए. ९–१०.

हवे त्रीजी एषणासमिति कहे छे.—

गवेसणाए गहणे अ, परिभोगेसणा य जा । आहारोवहिसेज्जाए, एए तिण्णि वि सोहए ॥११॥

अर्थ—(गवेसणाए) गायनी जेवी एषणा एटले शुद्ध आहारनुं जोवुं ते गवेषणा कहेवाय छे, अहीं एषणा शब्द जोडवाथी गवेषणाने विषे जे एषणा ते गवेषणैषणा एटले गायनी जेम विशुद्ध आहार जोवामां एषणा-विचार करवो ते. (गहणे अ) तथा ग्रहण एटले विशुद्ध आहारनुं ग्रहण, अहीं पण एषणा शब्द जोडवाथी ग्रहणने विषे जे एषणा-विचार ते ग्रहणैषणा कहेवाय छे, (य) तथा (जा) जे (परिभोगेसणा) परिभोग एटले मंडळीने विषे भोजननो समय, तेने विषे जे एषणा-विचार ते परिभोगैषणा कहेवाय छे. (एए तिण्णि वि) आ त्रण प्रकारनी एषणा (आहारोवहिसेज्जाए) आहार, उपधि-वस्त्र पात्रादिक अने शय्या-उपाश्रय संस्तारकादिक ए त्रणेने विषे (सोहए) शोधवानी छे. अर्थात् एकला आहारने विषे ज शोधवानी छे एम नथी. ११.

ते एषणानी शुद्धि केवी रीते करवी ? ते कहे छे.—

उग्गमुप्पायणं पढमे, बीए सोहिज्ज एसणं ।
परिभोगम्मि चउक्कं, विसोहिज्ज जयं जई ॥ १२ ॥

अर्थ—(जयं) यतना करता (जई) साधुए (पढमे) पहेली गवेषणामां (उग्गमुप्पायणं) आधाकर्मादिक सोळ उद्गमना अने धात्री आदि सोळ उत्पादनाना दोषोने शोधवाना छे, तथा (बीए) बीजी ग्रहणैषणामां (एसणं) शंकि-

सादिक दश एषणाना दोषोने (सोहिज्ज) शोधवाना छे, तथा (परिभोगम्मि) परिभोगैषणाने विषे (चउक्कं) संयोजना, प्रमाण, अंगारधूम अने कारण ए चार यावत (विसोहिज्ज) शोधवानी छे. अहीं अंगार दोष अने धूम दोष बन्ने जूदा लइए तो परिभोगैषणाना पांच दोषो थवाथी कुल सुडतालीश दोषो थाय छे, परंतु अहीं अंगार अने धूम ए बन्ने दोषो मोहनीयकर्ममां अंतर्गत होवाथी बन्ने मळीने एक ज दोष कह्यो छे. १२.

हवे चोथी आदाननिक्षेप समिति कहे छे.—

ओहोवहोवग्गहिअं, भंडगं दुविहं मुणी । गिण्हंतो निक्खिवंतो अ, पउंजिज्ज इमं विहिं ॥ १३ ॥

अर्थ—(ओहोवहोवग्गहिअं) अहीं अनुक्रमे ओघ, उपधि, औपग्रहिक एम त्रण शब्दो रहेला छे, तेमां मध्ये रहेलो उपधि शब्द डमरुकमणिना न्यायवडे बन्ने शब्द साथे जोडाय छे, तेथी रजोहरणादिक ओघोपधि अने दंडादिक औपग्रहिकोपधि एम (दुविहं) बे प्रकारना (भंडगं) भांडक एटले उपकरणने (गिण्हंतो) ग्रहण करता (निक्खिवंतो अ) अने मूकता एवा (मुणी) मुनिए (इमं) आ आगळ कहेवाशे ते (विहिं) विधि (पउंजिज्ज) प्रयुंजवानो छे—करवानो छे. १३.

---

१ लक्ष्मीविजयनी टीकामां ४७ दोषोनी व्याख्या विस्तारथी आपी छे, तेमां परिभोगने विषे पांच दोष न करवाना कहेला छे. एटले १६–१६–१०–५ मळी ४७ थाय छे.

ते ज विधिने कहे छे.—

चक्खुसा पडिलेहित्ता, पमज्जिज्ज जयं जई। आइए निक्खिविज्जा वा, दुहओ वि समिए सया ॥१४॥

अर्थ—(समिए) समितिवाळा अने (जयं) यतनावाळा (जई) मुनिए (दुहओ वि) औधिक अने औपग्रहिक ए बन्ने प्रकारना उपधिने (सया) सदा (चक्खुसा) प्रथम चक्षुवडे (पडिलेहित्ता) पडिलेहण करीने एटले जोइने (पमज्जिज्ज) रजोहरणादिकवडे प्रमार्जन करवी अने पछी (आइए) ते उपधिने ग्रहण करवी (वा) अथवा (निक्खिविज्जा) मूकवी. १४.

हवे पांचमी परिष्ठापनासमितिने कहे छे.—

उच्चारं पासवणं, खेलं सिंघाण जल्लिअं। आहारं उवहिं देहं, अन्नं वावि तहाविहं ॥ १५ ॥

अर्थ—(उच्चारं) उच्चार-पुरीष, (पासवणं) प्रश्रवण-मूत्र, (खेलं) मुखनो बळखो, (सिंघाण) नासिकानो श्लेष्म, (जल्लिअं) शरीरनो मळ, (आहारं) अन्नादिक आहार, (उवहिं) बन्ने प्रकारनी उपधि, (देहं) शरीर, (अन्नं वावि) अथवा बीजुं छाण विगेरे (तहाविहं) तेवा प्रकारनुं के जे परिष्ठापना एटले परठववाने लायक होय ते सर्व स्थंडिलमां वोसराववुं-तजवुं, ए प्रमाणे क्रियापदनो संबंध अढारमी गाथामां आवशे तेनी साथे करवो. १५.

अहीं जे स्थंडिलमां वोसराववानुं कह्युं ते स्थंडिलना दश विशेषणो छे. तेमां पहेला विशेषणमां अनापात अने

असंलोक ए बे शब्दो छे, तेना भांगानी रचना प्रथम बतावे छे, पछी तेना उपलक्षणथी दशे विशेषणोना भांगा समजी लेवा.

अणावायमसंलोए, अणावाए चेव होइ संलोए। आवायमसंलोए, आवाए चेव संलोए ॥१६॥

अर्थ—(अणावायं असंलोए) ज्यां स्वपक्ष एटले साधु के परपक्ष एटले गृहस्थीओनी जा—आव थती न होय ते अनापात स्थंडिल कहेवाय छे, तथा ज्यां स्वपक्ष के परपक्ष दूरथी पण जोइ न शके ते असंलोक स्थंडिल कहेवाय छे. ए पहेलो भांगो थयो. १ (चेव) तथा (अणावाए) अनापात अने (संलोए) संलोक (होइ) होय छे एटले ज्यां जाव आव नथी पण संलोक छे ते अनापात संलोक स्थंडिल कहेवाय छे, ए बीजो भांगो थयो. २ तथा (आवायं असंलोए) आपात अने असंलोक एटले ज्यां जाव आव होय पण संलोक न होय ते आपात असंलोक स्थंडिल कहेवाय छे, ए त्रीजो भांगो. ३. (चेव) तथा (आवाए) आपात अने (संलोए) संलोक एटले ज्यां जा—आव होय अने संलोक पण होय ते आपात संलोक स्थंडिल कहेवाय छे, ए चोथो भांगो थयो. ४. १६.

हवे ते दश विशेषणो जणाववा माटे केवा स्थंडिलमां उच्चारादिक वोसराववुं ? ते कहे छे.—

अणावायमसंलोए १, परस्सऽणुवघाइए २। समे ३ अज्झुसिरे ४ आवि, अचिरकालकयम्मि य ५॥१७॥

विच्छिण्णे ६ दूरमोगाढे ७, नासन्ने ८ बिलवज्जिए ९। तसपाणबीअरहिए १०, उच्चाराईणि वोसिरे ॥१८॥

अर्थ—(परस्स) बीजानो एटले स्वपक्ष के परपक्षनो (अणावायं असंलोए) आपात-जा—आव न होय अने संलोक

न होय. १. (अणुवघाइए) संयम, आत्मा अने प्रवचननो उपघात न थतो होय. २. (समे) समान होय एटले खाडा खडीयावाळुं नीचुं उंचुं न होय. ३. (अझुसिरे) पोलाण रहित एटले तृण पांदडां विगेरेथी आच्छादित न होय. ४. (आवि) तथा (अचिरकालकयम्मि अ) दाहादिकवडे थोडा काळथी ज अचित्त करेलुं होय. केमके चिरकाळनुं अचित्त करेलुं होय तो तेमां पृथिव्यादिकनी उत्पत्ति पाछी थाय छे. ५. (विच्छिण्णे) विस्तीर्ण एटले जघन्यथी पण एक हाथ प्रमाण क्षेत्र होय. ६. (दूरमोगाढे) दूर सुधी अवगाढ होय एटले जघन्यथी पण पृथ्वीमां नीचे-अंदर चार आंगळ अचित्त होय. ७. (नासन्ने) नजीक न होय एटले ग्राम अने आरामादिकथी दूर होय. ८. (बिलवज्जिए) मूषक विगेरेना बिल रहित होय. ९. (तसपाणबीअरहिए) त्रसप्राण एटले द्वींद्रियादिक त्रस जीवो अने शालि विगेरे बीज तेथी रहित एटले सर्व एकेंद्रिय द्वींद्रियादिक जीवोथी रहित होय. १०. आवा दश विशेषणवाळा स्थंडिलने विषे (उच्चाराईणि) उच्चारादिकने (वोसिरे) वोसराववा एटले त्याग करवा. आ दश पदोना बे, त्रण आदिकना संयोगीया भांगा करीए त्यारे एक हजार ने चोवीश भंग थाय छे. तेमां छेल्लो दशे विशेषणवाळो भांगो मुख्यत्वे करीने शुद्ध छे, माटे तेवा स्थंडिलमां परठववुं योग्य छे. १७-१८.

हवे समितिनो विषय पूर्ण करी गुप्तिनी प्रस्तावना करे छे.—

एआओ पंच समिईओ, समासेण विआहिआ। इत्तो अ तओ गुत्ती, वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥१९॥

अर्थ—(एआओ) आ (पंच) पांच (समिईओ) समितिओ (समासेण) संक्षेपे करीने (विआहिआ) कही छे. (इत्तो अ) हवे (तओ) त्रण (गुत्ती) गुप्तिओने (अणुपुव्वसो) अनुक्रमे (वोच्छामि) हुं कहुं छुं. १९.

हवे पहेली गुप्ति कहे छे.—

सच्चा १ तहेव मोसा २ य, सच्चामोसा ३ तहेव य। चउत्थी असच्चमोसा ४ अ, मणगुत्ती चउव्विहा ॥२०॥

अर्थ—(सच्चा) मनमां छता पदार्थनुं जे चिंतववुं ते सत्य मनोयोग कहेवाय छे ते संबंधी मनोगुप्ति पण उपचारथी सत्या कहेवाय छे. १. (तहेव) ते ज प्रमाणे (मोसा य) मृषा मनोगुप्ति. २. (सच्चामोसा) सत्यामृषा मनोगुप्ति. ३. (तहेव य) तथा वळी (चउत्थी) चोथी (असच्चमोसा य) असत्यामृषा मनोगुप्ति. ४. ए प्रमाणे (मणगुत्ती) मनोगुप्ति (चउव्विहा) चार प्रकारनी छे. जगतमां जीवतत्त्व छे एम सत्य पदार्थनुं चिंतवन ते सत्या १, जीवतत्त्व नथी एम सत्नुं असत्पणे चिंतवन करवुं ते मृषा एटले असत्या २, आम्रादिक विविध वृक्षोनुं वन जोइ तेने आम्रनुं ज वन छे एम चिंतववुं ते सत्या-मृषा ३, तथा जे चिंतवन सत्य पण न होय अने असत्य पण न होय, जेम " हे देवदत्त ! घडो लाव." " मारे माटे अमुक वस्तु लाव " इत्यादि आदेश निर्देशादिक वचननुं मनमां चिंतवन करवुं ते असत्याऽमृषा मनोगुप्ति छे. २०.

मनोगुप्तिना ज स्वरूपने कहेता सता उपदेश आपे छे.—

संरंभसमारंभे, आरंभम्मि तहेव य। मणं पवत्तमाणं तु, निअत्तिज्ज जयं जई ॥ २१ ॥

अर्थ—(जयं) यतनावान् (जई) यति (संरंभसमारंभे) हुं तेनुं ध्यान करुं छुं अथवा करीश के जेथी ते मरे के मरशे एवा ध्यानरूप संरंभने विषे तथा परनी पीडा करनारं उच्चाटनादिक संबंधी ध्यानरूप समारंभने विषे (तहेव य) तथा (आरंभम्मि) परना प्राणने नाश करी शके तेवा अशुभ परिणामरूप आरंभने विषे (पवत्तमाणं तु) प्रवर्तता एवा (मणं) मनने (निअत्तिज्ज) निवर्तन करे, अने शुभ संकल्पने विषे मनने प्रवर्तावे. २१.

हवे बीजी वचनगुप्तिने कहे छे.—

सच्चा तहेव मोसा य, सच्चामोसा तहेव य। चउत्थी असच्चमोसा उ, वयगुत्ती चउव्विहा ॥२२॥

अर्थ—(सच्चा) सत्या १, (तहेव) तथा (मोसा य) मृषा २, तथा (सच्चामोसा) सत्यामृषा ३, (तहेव य) तथा (चउत्थी) चोथी (असच्चमोसा उ) असत्याऽमृषा ४, ए प्रमाणे (वयगुत्ती) वचनगुप्ति (चउव्विहा) चार प्रकारनी छे. तेनो अर्थ मनोगुप्तिनी जेवो जाणवो. २२.

संरंभसमारंभे, आरंभम्मि तहेव य। वयं पवत्तमाणं तु, निअत्तिज्ज जयं जई ॥ २३ ॥

अर्थ—(जयं) यतनावान (जई) यति (संरंभसमारंभे) संरंभने विषे एटले परनो विनाश करवामां समर्थ एवा मंत्रादिक गणवाना संकल्पने सूचवनार शब्द बोलवा तेने विषे, तथा समारंभने विषे एटले परने पीडा करनार मंत्रादिक गणवा तेने विषे (तहेव य) तथा (आरंभम्मि) आरंभने विषे एटले परनो विनाश करवाना कारणरूप मंत्रादिकनो जाप

करवो तेने विषे (पवत्तमाणं तु) प्रवर्तता एवा (वयं) वचनने (निअत्तिज्ज) निवर्तन करे—रोके अने शुभने विषे प्रवर्तावे. २३

हवे श्रीजी कायगुप्तिने कहे छे.

ठाणे निसीअणे चेव, तहेव य तुअट्टणे । उल्लंघण पल्लंघणे, इंदिआणं च जुंजणे ॥ २४ ॥

अर्थ—(ठाणे) उभा रहेवामां, (निसीअणे) बेसवामां, (चेव) तथा (तुअट्टणे) त्वग्वर्तने एटले शयनमां, (तहेव य) तथा वळी (उल्लंघण) खाडो विगेरे ओळंगवामां, (पल्लंघणे) सीधुं गमन करवामां, (इंदिआणं च) तथा इंद्रियोना (जुंजणे) व्यापारमां एटले शब्दादिक विषयोना व्यापारमां वर्तता साधु कायगुप्ति करे, ते आ प्रमाणे—२४.

संरंभसमारंभे, आरंभम्मि तहेव य । कायं पवत्तमाणं तु, निअत्तिज्ज जयं जई ॥ २५ ॥

अर्थ—(जयं) यतनावान (जई) यति (संरंभसमारंभे) संरंभने विषे एटले यष्टि, मुष्टि आदिकथी ताडन करवाने माटे तैयार थवामां तथा समारंभने विषे एटले परिताप करनारा लत्तादिकवडे मारवामां (तहेव य) तथा (आरंभम्मि) आरंभने विषे एटले प्राणीना वधने माटे यष्टि विगेरेनो उपयोग करवामां (पवत्तमाणं तु) प्रवर्तता (कायं) शरीरने (निअत्तिज्ज) निवर्तन करे—अटकावे—रोके. २५.

समिति अने गुप्तिमां शो तफावत छे ? ते कहे छे.—

एआओ पंच समिईओ, चरणस्स य पवत्तणे। गुत्ती नियत्तणेऽवुत्ता, असुभत्थेसु सव्वसो ॥ २६ ॥

अर्थ—(एआओ) आ उपर कहेली (पंच) पांच (समिईओ) समितिओ (चरणस्स) सारी चेष्टारूप चारित्रनी (पवत्तणे य) प्रवृत्तिने विषे ज कहेली छे, अने (गुत्ती) अण गुप्तिओ तो (सव्वसो) सर्व एवा (असुभत्थेसु) अशुभ मनोयोगादिकथी (नियत्तणेऽवि) निवर्तनने विषे पण (उत्ता) कही छे. अपि शब्द लख्यो छे माटे चारित्रनी प्रवृत्तिने विषे पण कही छे. २६.

हवे आ अध्ययन समाप्त करवा पूर्वक तेमना आचरणनुं फळ कहे छे.—

एआओ पवयणमायाओ, जे सम्मं आयरे मुणी। से खिप्पं सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पंडिए त्ति बेमि ॥२७॥

अर्थ—(एआओ) आ (पवयणमायाओ) प्रवचननी माताओने (जे) जे (मुणी) साधु (सम्मं) सम्यक् प्रकारे (आयरे) आचरे छे-पाळे छे, (से) ते (पंडिए) पंडित साधु (खिप्पं) शीघ्र (सव्वसंसारा) समग्र संसारथी (विप्पमुच्चइ) मुक्त थाय छे. (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं. ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. २७.

इति चतुर्विंशमध्ययनम्. २४.

अथ यज्ञिय नामनुं पचीशमुं अध्ययन. २५.

चोवीशमा अध्ययनमां प्रवचननी आठ माताओ कही. ते तत्त्वथी तो ब्रह्मचर्यना गुणमां रहेलाने-ब्रह्मचर्य गुणवाळाने ज होइ शके छे, तेथी जयघोष अने विजयघोषनुं चरित्र कहेवा पूर्वक ब्रह्मचर्यना गुणोने आ अध्ययनमां बतावे छे. तेना प्रस्तावने माटे प्रथम जयघोषनी कथा संक्षेपथी कहे छे.—

जयघोषनी कथा.

वाराणसी नामनी नगरीमां काश्यप गोत्रवाळा जयघोष अने विजयघोष नामना बे ब्राह्मणो साथे जन्मेला हता. एकदा जयघोष स्नान करवा माटे गंगा किनारे गयो. त्यां एक आरडता देडकाने भक्षण करतो एक सर्प तेना जोवामां आव्यो. तेवामां एक कुरर पक्षीए आवी ते सर्पने उछाळी पृथ्वीपर पछाडी तेने खावानो प्रारंभ कर्यो. ते कुरर पोतानी चांचथी ते सर्पना शरीरने तोडतो हतो, तो पण ते सर्प पेला आरडता देडकाने खातो ज हतो-छोडतो नहोतो. आ प्रमाणे परस्परना ग्रासने जोइ जयघोषे विचार्युं के-" अहो ! आ संसारनी स्थिति केवी दुःखदायक छे ? जे जेनाथी बळवान होय छे ते तेने मत्स्यनी जेम गळे छे, पण समुद्रनी जेम कोइ पण पोतानी शक्तिने गोपवतो नथी-जीरवी शकतो नथी. वळी यमराज तो महा शक्तिमान होवाथी सर्वने गळी जाय छे, तो आ असार संसारमां पंडितो शी रीते श्रद्धा करी शके ? मात्र एक धर्म ज सर्व उपद्रवोनो नाश करनार छे. माटे कल्पवृक्षनी जेम इच्छित वस्तुने आपनारा ते धर्मनो ज हुं आश्रय करुं."

आ प्रमाणे मनमां विचार करी ते गंगानदीने सामे कांठे गयो. त्यां तेणे उत्तम मुनिओने जोया. तेमनी पासे जिनधर्मनी देशना सांभळी. तेमना कहेवाथी दीक्षा ग्रहण करीने ते जयघोष मुनि पृथ्वीपर विचरवा लाग्या.

बाकीनुं वृत्तांत सूत्रमां ज आवे छे, तेथी ते ज कहे छे.—

माहणकुलसंभूओ, आसि विप्पो महायसो । जायाई जमजण्णंसि, जयघोसे त्ति नामओ ॥ १ ॥

अर्थ—(माहणकुलसंभूओ) ब्राह्मणना कुळमां उत्पन्न थयेलो तथा (जमजण्णंसि) यम एटले पांच महाव्रतो, ते रूपी यज्ञने विषे (जायाई) वारंवार यज्ञ करनार–पांच महाव्रतने पाळनार (जयघोसे त्ति नामओ) जयघोष एवा नामनो (महायसो) महा यशस्वी (विप्पो) ब्राह्मण (आसि) हतो.

इंदिअग्गामनिग्गाही, मग्गगामी महामुणी । गामाणुगामं रीअंतो, पत्तो वाणारसीं पुरीं ॥ २ ॥

अर्थ—(इंदिअग्गामनिग्गाही) इंद्रियोना समूहनो निग्रह करनार तेथी करीने ज (मग्गगामी) मोक्षमार्गमां गमन करनार एवा ते (महामुणी) महामुनि (गामाणुगामं) एक गामथी बीजे गाम (रीअंतो) विहार करता (वाणारसीं पुरीं) वाराणसी नगरीमां (पत्तो) आव्या. २.

वाणारसीए बहिआ, उज्जाणम्मि मणोरमे । फासुए सिज्जसंथारे, तत्थ वासमुवागए ॥ ३ ॥

अर्थ—(वाणारसीए) वाराणसी नगरीनी (बहिआ) बहार (मणोरमे) मनोहर एवा अथवा मणोरम नामना

(उज्जाणम्मि) उद्यानने विषे (तत्थ) त्यां (फासुए) प्रासुक–जीवरहित (सिज्जसंथारे) दर्भादिकना रचेला शय्यासंस्तारकने विषे (वासं) निवास करवाने (उवागए) आव्या. ३.

ते वखते ते नगरीमां जे हतुं अने मुनिए जे कर्युं ते कहे छे.—

अह तेणेव कालेणं, पुरीए तत्थ माहणे । नामेण विजयघोसे, जण्णं जयइ वेअवी ॥ ४ ॥

अर्थ—(अह) हवे (तेणेव कालेणं) ते ज काळे (तत्थ पुरीए) ते नगरीमां (वेअवी) वेदने जाणनार (विजयघोसे) विजयघोष (नामेण) नामनो (माहणे) ब्राह्मण (जण्णं) यज्ञने (जयइ) पूजतो हवो–करतो हवो. ४.

अह से तत्थ अणगारे, मासक्खमणपारणे । विजयघोसस्स जण्णम्मि, भिक्खमट्ठा उवट्ठिए ॥५॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी (तत्थ) त्यां (विजयघोसस्स) विजयघोषना (जण्णम्मि) यज्ञमां (से) ते (अणगारे) जयघोष मुनि (मासक्खमणपारणे) मासखमणने पारणे (भिक्खमट्ठा) भिक्षाने अर्थे (उवट्ठिए) प्राप्त थया. ५.

त्यां तेने विजयघोषे जे कह्युं ते कहे छे.—

समुवट्ठिअं तहिं संतं, जायगो पडिसेहए । न हु दाहामु ते भिक्खं, भिक्खू ! जायाहि अन्नओ ॥६॥

अर्थ—(तहिं) त्यां (समुवट्ठिअं) प्राप्त थयेला (संतं) सता ते मुनिने (जायगो) याजक एटले यज्ञ करनार ते विजयघोष ब्राह्मणे मुनिने नहीं ओळखवाथी (पडिसेहए) निषेध कर्यो के–(भिक्खू) हे भिक्षु ! (ते) तमने हुं (भिक्खं)

भिक्षा (न हु दाहामु) नहीं ज आपुं तेथी (अन्नओ) बीजे स्थाने जइने (जायाहि) याचना करो. ६.

कारण के—

जे अ वेअविऊ विप्पा, जण्णट्ठा य जे दिआ। जोइसंगविऊ जे अ, जे अ धम्माण पारगा ॥७॥

अर्थ—(जे अ) जेओ (वेअविऊ) वेदने जाणनारा (विप्पा) ब्राह्मणो छे (य) तथा (जे) जेओ (दिआ) द्विज एटले संस्कारथी बीजी वार जन्मेला अने (जण्णट्ठा) यज्ञना ज प्रयोजनवाळा छे, (जे अ) तथा जेओ (जोइसंगविऊ) ज्योतिष अने शिक्षादिक अंगने जाणनारा छे, अहीं ज्योतिष शास्त्रनो अंगमां ज समावेश थाय छे, छतां ज्योतिषनुं प्रधानपणुं जणाववा माटे तेने जूदुं कह्युं छे (जे अ) तथा जेओ (धम्माण) धर्मशास्त्रना (पारगा) पारगामी छे तथा उपलक्षणथी जेओ सर्व शास्त्रोने जाणनारा छे. ७.

जे समत्था समुद्धत्तुं, परं अप्पाणमेव य। तेसिं अन्नमिणं देयं, भो भिक्खू ! सव्वकामिअं ॥८॥

अर्थ—तथा (जे) जेओ (परं) बीजा जीवोने (अप्पाणमेव य) अने पोताना आत्माने (समुद्धत्तुं) संसार सागरथी उद्धार करवाने (समत्था) समर्थ छे, (तेसिं) तेओने (भो भिक्खू) हे भिक्षु ! (सव्वकामिअं) जेमां अभिलाष करवा लायक सर्व वस्तुओ होय छे एटले छए रस सहित एवुं (इणं) आ (अन्नं) अन्न (देयं) देवानुं छे. ८.

आवुं तेनुं वचन सांभळी मुनि केवा थया ? ते कहे छे.—

सो तत्थ एवं पडिसिद्धो, जायगेण महामुणी । न वि रुट्ठो न वि तुट्ठो, उत्तिमट्ठगवेसओ ॥९॥

अर्थ—(तत्थ) त्यां–यज्ञपाटकमां (एवं) आ प्रमाणे (जायगेण) यज्ञ करनारा विजयघोषे (पडिसिद्धो) निषेध कर्या एवा (सो) ते (महामुणी) जयघोष नामना महामुनि (न वि रुट्ठो) रोषवाळा थया नहीं, तेम ज (न वि तुट्ठो) तुष्टमान पण थया नहीं. कारण के (उत्तिमट्ठगवेसओ) ते मुनि उत्तमार्थ जे मोक्ष तेना ज गवेषक एटले अर्थी हता. ९.

त्यारे ते मुनिए शुं कर्युं ? ते कहे छे.—

नन्नट्ठं पाणहेउं वा, न वि निव्वाहणाय वा । तेसिं विमोक्खणट्ठाए, इमं वयणमब्बवी ॥ १० ॥

अर्थ—(अन्नट्ठं) अन्नने माटे (वा) के (पाणहेउं) पाणीने माटे (न) नहीं, (वा) अथवा (निव्वाहणाय) वस्त्रादिकवडे पोताना निर्वाहने माटे पण (न वि) नहीं. परंतु (तेसिं) तेमना एटले ते याज्ञिकोना (विमोक्खणट्ठाए) मोचने माटे एटले तेमने संसारथी मुक्त करवा माटे (इमं) आ (वयणं) वचनने (अब्बवी) बोल्या. १०.

शुं बोल्या ? ते कहे छे.—

न हि जाणसि वेअमुहं, न वि जन्नाण जं मुहं । नक्खत्ताण मुहं जं च, जं च धम्माण वा मुहं ॥११॥

अर्थ—(वेअमुहं) वेदना मुखने एटले वेदमां जे मुख्य–प्रधान छे तेने (न हि जाणसि) तुं जाणतो नथी, तथा

(जाणाण) यज्ञोनुं (जं मुहं) जे मुख एटले प्रधान छे तेने (न वि) तुं जाणतो नथी, (जं च) तथा जे (नक्खत्ताण) नक्षत्रोनुं (मुहं) मुख छे तेने पण तुं जाणतो नथी, (जं च) तथा जे (धम्माण वा) धर्मोनुं एटले धर्मशास्त्रोनुं (मुहं) मुख छे तेने पण तुं जाणतो नथी. अर्थात् वेद, यज्ञ, ज्योतिष अने धर्मशास्त्र ए चारेनुं वास्तविक ज्ञान तने नथी. ११.

हवे पात्रनुं अजाणपणुं कहे छे.—

जे समत्था समुद्धत्तुं, परं अप्पाणमेव य । न ते तुमं विआणासि, अह जाणासि तो भण ॥ १२ ॥

अर्थ—(जे) जेओ (परं) बीजा प्राणीओनो (अप्पाणमेव य) तथा पोताना आत्मानो (समुद्धत्तुं) उद्धार करवामां (समत्था) समर्थ छे, (ते) तेमने (तुमं) तुं (न विआणासि) जाणतो नथी. (अह) जो कदाच (जाणासि) जाणतो हो (तो) तो (भण) तुं कहे. १२.

आ प्रमाणे मुनिए कह्युं, त्यारे ते ब्राह्मणे शुं कर्युं ? ते कहे छे.—

तस्सक्खेवपमुक्खं च, अचयंतो तहिं दिओ । सपरिसो पंजली होउं, पुच्छई तं महामुणिं ॥ १३ ॥

अर्थ—(तहिं) ते यज्ञपाटकमां (तस्सक्खेवपमुक्खं च) ते मुनिना आक्षेपनो-प्रश्ननो प्रमोक्ष-उत्तर आपवामां (अचयंतो) असमर्थ एवो (दिओ) ते ब्राह्मण (सपरिसो) पर्षदा सहित (पंजली होउं) नम्र थइने-हाथ जोडीने (तं महामुणिं) ते महामुनिने (पुच्छई) पूछतो हवो. १३.

वेआणं च मुहं बूहि, बूहि जन्नाण जं मुहं । नक्खत्ताण मुहं बूहि, बूहि धम्माण जं मुहं ॥१४॥

अर्थ—हे मुनि! (वेआणं च) वेदोनुं (मुहं) जे मुख होय तेने (बूहि) तमे कहो, तथा (जन्नाण) यज्ञोनुं (जं मुहं) जे मुख होय तेने (बूहि) तमे कहो, तथा (नक्खत्ताण) नक्षत्रोनुं (मुहं) जे मुख होय तेने (बूहि) तमे कहो, तथा (धम्माण) धर्मशास्त्रोनुं (जं मुहं) जे मुख होय तेने (बूहि) तमे कहो. १४.

जे समत्था समुद्धत्तुं, परं अप्पाणमेव य । एयं मे संसयं सव्वं, साहू! कहसु पुच्छिओ ॥ १५ ॥

अर्थ—(जे) जेओ (परं) बीजा प्राणीओनो (अप्पाणमेव य) तथा पोताना आत्मानो (समुद्धत्तुं) उद्धार करवाने (समत्था) समर्थ होय ते पण मने कहो-बतावो. (एयं) आ (मे) मारा (सव्वं) सर्व (संसयं) संशयने-संशयना उत्तरने (साहू) हे साधु! (पुच्छिओ) माराथी पुछाया एवा तमे (कहसु) कहो. १५.

आ प्रमाणे ते विजयघोष ब्राह्मणे पूछयुं त्यारे ते मुनि बोल्या के—

अग्गिहोत्तमुहा वेआ, जन्नट्ठी वेअसां मुहं । नक्खत्ताण मुहं चंदो, धम्माणं कासवो मुहं ॥ १६ ॥

अर्थ—(अग्गिहोत्तमुहा) अग्निहोत्र छे मुख जेनुं एवा (वेआ) वेदो छे एटले वेदोनुं मुख अग्निहोत्र-अग्निकारिका छे. ते अहीं आ प्रमाणे छे.—"दीक्षा लीधेलाए कर्मरूपी इंधणाने धर्मध्यानरूपी अग्निमां दृढ रीते नांखी सद्भावनारूपी घृतनी आहुति आपीने अग्निकारिका करवी. आवी अग्निकारिका वेदोनुं मुख छे. केमके दहींनुं तत्त्व जेम माखण छे तेम वेदोनुं तत्त्व

आरण्यक नामनो वेदनो ग्रंथ छे, तेमां "सत्य, तप, संतोष, क्षमा, चारित्र, आर्जव, श्रद्धा, धृति, अहिंसा अने संवर" ए दश प्रकारनो ज धर्म कह्यो छे. तेने अनुसारे आ उपर कह्युं तेवुं ज अग्निहोत्र होइ शके छे. तथा (जण्णट्ठी) यज्ञार्थी–संयमरूप भावयज्ञनो अर्थी ते (वेयसां मुहं) वेदोनुं–यज्ञोनुं मुख छे, कारणके यज्ञनो अर्थी होय तो ज यज्ञ प्रवर्ते छे. तथा (नक्खत्ताण) नक्षत्रोनुं (मुहं) मुख (चंदो) चंद्र छे. तथा (धम्माणं) धर्मोनुं (मुहं) मुख (कासवो) काश्यपगोत्री श्रीयुगादिदेव ज छे. केमके तेमणे ज सौथी प्रथम धर्म प्रवर्ताव्यो छे. १६.

हवे धर्मनुं मुख दृढ करवा माटे युगादिदेवनुं ज माहात्म्य प्रगट करे छे.—

जहा चंदं गहाईआ, चिट्ठंति पंजलीउडा । वंदमाणा नमंसंता, उत्तमं मणहारिणो ॥ १७ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (गहाईआ) ग्रहादिक (चंदं) चंद्रने (पंजलिउडा) हाथ जोडी (वंदमाणा) स्तुति करता, (नमंसंता) नमस्कार करता अने (उत्तमं) अत्यंत (मणहारिणो) विनीतपणाए करीने मनने हरण करता सता (चिट्ठंति) रहे छे, तेम श्रीऋषभस्वामी पासे पण देवेंद्रो विगेरे सर्वे तेवी ज रीते रहे छे. १७.

आ रीते चार प्रश्नोनो उत्तर कही हवे पांचमा प्रश्ननो उत्तर कहे छे.—

अजाणगा जण्णवाई, विज्जामाहणसंपया । गूढा सज्झायतवसा, भासछन्ना इवऽग्गिणो ॥ १८ ॥

अर्थ—(जण्णवाई) यज्ञवादी एटले यज्ञने कहेनारा जेमने तें पात्रपणे मानेला छे तेओ (विज्जामाहणसंपया)

आरण्यक, ब्रह्मांडपुराण विगेरे विद्यारूपी ब्राह्मणनी संपदाना (अजाणमा) अजाण ज छे. कारणके खरा ब्राह्मणोने तो अकिंचनपणाए करीने एटले परिग्रहरहितपणाए करीने विद्या ज संपत्तिरूप होय छे. तेने जो तेओ जाणता होय तो बृहदारण्यादिकमां कहेला दश प्रकारना धर्मने जाणता छतां केम आवो यज्ञ करे? तथा (सज्झायतवसा) वेदना अध्ययनरूप स्वाध्याय अने उपवासादिक तपवडे करीने (गूढा) तेओ गूढ छे एटले मात्र बहारथी ज संवरवाळा छे. (इव) जेम (भासछन्ना) भस्मथी ढांकेलो (अग्गिणो) अग्नि बहारथी शीतळ देखाय छे पण अंदर तो उष्ण होय छे, तेम आ ब्राह्मणो पण बहारथी वेदाध्ययन अने उपवासादिकवडे उपशमवाळा देखाय छे, परंतु अंदर तो कषायरूपी अग्निवडे जाज्वल्यमान ज छे. तेथी तमे मानेला ब्राह्मणो स्वपरनो उद्धार करवामां समर्थ शी रीते होइ शके? न ज होइ शके. १८.

त्यारे पात्ररूप ब्राह्मण कोण कहेवाय? ते कहे छे.—

जो लोए बंभणो वुत्तो, अग्गी वा महिओ जहा। सया कुसलसंदिट्ठं, तं वयं बूम माहणं ॥१९॥

अर्थ—(जो) जेने कुशळ पुरुषोए (बंभणो) ब्राह्मण (वुत्तो) कह्यो छे, तथा जे (लोए) लोकनेविषे (अग्गी वा जहा) अग्निनी जेम (महिओ) पूज्यो सतो देदीप्यमान थाय छे, (तं) तेने (वयं) अमे (सया) सदा (कुसलसंदिट्ठं) कुशळ पुरुषोए कहेलो एवो (माहणं) ब्राह्मण (बूम) कहीए छीए. १९.

कुशळ पुरुषोए कहेला एवा ब्राह्मणनुं स्वरूप कहे छे.—

जो न सज्जइ आगंतुं, पव्वयंतो न सोअइ । रमए अज्जवयणम्मि, तं वयं बूम माहणं ॥ २० ॥

अर्थ—(जो) जे (आगंतुं) स्वजनादिकना स्थान प्रत्ये आववाने (न सज्जइ) तैयार थाय नहीं. तथा आव्या पछी (पव्वयंतो) त्यांथी बीजे स्थाने जतां (न सोअइ) शोक करे नहीं, तथा जे (अज्जवयणम्मि) आर्यना एटले तीर्थंकरना वचनने विषे (रमए) रमे--आनंद पामे, (तं) तेने (वयं) अमे (माहणं) ब्राह्मण (बूम) कहीए छीए. २०.

जायरूवं जहामट्ठं, निद्धंतमलपावगं । रागदोसभयातीतं, तं वयं बूम माहणं ॥ २१ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (आमट्ठं) तेजस्वी करवा माटे मणशीलादिकवडे घसेलुं तथा (निद्धंतमलपावगं) अग्निवडे बाळी नांख्यो छे मेल जेनो एवुं (जायरूवं) सुवर्ण बाह्य तथा आभ्यंतर गुणयुक्त थाय छे, तेम जे बाह्य अने आभ्यंतर गुणे करीने युक्त होय, तथा (रागदोसभयातीतं) जे राग, द्वेष अने भयथी रहित होय (तं) तेने (वयं) अमे (माहणं) ब्राह्मण (बूम) कहीए छीए. २१.

तवस्सिअं किसं दंतं, अवचयमंससोणिअं । सुव्वयं पत्तनिव्वाणं, तं वयं बूम माहणं* ॥ २२ ॥

अर्थ—(तवस्सिअं) जे तपस्वी होय, तेथी करीने ज (किसं) शरीरे कृश–दुर्बळ होय, (दंतं) इंद्रियोने दमन करनार होय, (अवचयमंससोणिअं)जेना मांस अने रुधिर सुकाइ गयां होय, (सुव्वयं) जे सारा व्रतवाळा होय, तथा जे

* आ गाथा तथा तेनी टीका भावविजयजीनी टीकावाळी छापेल प्रतमां नथी.

(पत्तनिव्वाणं) कषायरूपी अग्निना उपशमथी निर्वाणने-शीतळताने पामेला होय, (तं वयं) तेने अमे (माहणं बूम) ब्राह्मण कहीए छीए. २२.

तसे पाणे विआणित्ता, संगहेण य थावरे । जो न हिंसइ तिविहेणं, तं वयं बूम माहणं ॥२३॥

अर्थ—(तसे) त्रस तथा (थावरे) स्थावर (पाणे) प्राणीओने (संगहेण) संग्रहवडे एटले संक्षेपवडे (य) च शब्दथी विस्तारवडे (विआणित्ता) जाणीने (जो) जे (तिविहेणं) मन, वचन अने काया ए त्रिविधे करीने (न हिंसइ) तेमनी हिंसा न करे (तं) तेने (वयं) अमे (माहणं बूम) ब्राह्मण कहीए छीए. २३.

कोहा वा जइ वा हासा, लोहा वा जइ वा भया । मुसं न वयई जो उ, तं वयं बूम माहणं ॥२४॥

अर्थ—(कोहा वा) क्रोधथी (जइ वा) अथवा (हासा) हास्यथी, अथवा (लोहा वा) लोभथी (जइ वा) अथवा (भया) भयथी (जो उ) जे (मुसं) मृषावाद (न वयई) न बोले (तं वयं) तेने अमे (माहणं बूम) ब्राह्मण कहीए छीए. २४.

चित्तमंतमचित्तं वा, अप्पं वा जइ वा बहुं । न गिण्हइ अदत्तं जो, तं वयं बूम माहणं ॥२५॥

अर्थ—(चित्तमंतं) द्विपदादि सचित्त (अचित्तं वा) अथवा सुवर्णादिक अचित्त (अप्पं वा) अल्प (जइ वा) अथवा (बहुं) घणी एवी (अदत्तं) अदत्त वस्तुने (जो) जे (न गिण्हइ) ग्रहण न करे (तं वयं) तेने अमे (माहणं बूम)

ब्राह्मण कहीए छीए. २५.

दिव्वमाणुसतेरिच्छं, जो न सेवइ मेहुणं। मणसा कायवक्केणं, तं वयं बूम माहणं ॥ २६ ॥

अर्थ—(जो) जे (दिव्वमाणुसतेरिच्छं) देव संबंधी, मनुष्य संबंधी अने तिर्यंच संबंधी (मेहुणं) मैथुनने (मणसा) मनवडे, (काय) कायावडे, (वक्केणं) वचनवडे (न सेवइ) सेवतो न होय. (तं वयं) तेने अमे (माहणं बूम) ब्राह्मण कहीए छीए. २६.

जहा पउमं जले जायं, नोवलिप्पइ वारिणा। एवं अलित्तं कामेहिं, तं वयं बूम माहणं ॥ २७ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (पउमं) पद्म–कमळ (जले) जळने विषे (जायं) उत्पन्न थया छतां पण (वारिणा) जळवडे (न उवलिप्पइ) लेपातुं नथी, (एवं) ए ज प्रमाणे जे प्राणी कामथी उत्पन्न थया छतां पण (कामेहिं) ते कामोवडे (अलित्तं) लेपातो नथी, (तं वयं) तेने अमे (माहणं बूम) ब्राह्मण कहीए छीए. २७.

अलोलुअं मुहाजीवी, अणगारं अकिंचणं। असंसत्तं गिहत्थेसु, तं वयं बूम माहणं ॥ २८ ॥

अर्थ—(अलोलुअं) जे आहारादिकमां लोलुपता रहित होय, (मुहाजीवी) मुधाजीवी एटले निर्दोष आहारनी भिक्षा लइने आजीविका करतो होय, पण औषध के मंत्रादिकथी आजीविका करतो न होय, (अणगारं) घर रहित होय, (अकिंचणं) द्रव्यथी अने भावथी परिग्रह रहित होय तथा (गिहत्थेसु) पूर्वना परिचित के पाछळना परिचित

एवा गृहस्थोनी साथे (असंसत्तं) संबंध रहित होय, (तं वयं) तेने अमे (माहणं बूम) ब्राह्मण कहीए छीए. २८.

जहित्ता पुव्वसंजोगं, नातिसंगे अ बंधवे । जो न सज्जइ एएसु, तं वयं बूम माहणं ॥ २९ ॥

अर्थ—(पुव्वसंजोगं) पूर्वसंयोगने एटले मातापितादिना संबंधने तथा (नातिसंगे) ज्ञातिना संगने (अ) तथा (बंधवे) बंधुओने (जहित्ता) तजीने (जो) जे पाछळथी (एएसु) ते मातादिकने विषे (न सज्जइ) रागी–प्रीतिवाळो न थाय (तं वयं) तेने अमे (माहणं बूम) ब्राह्मण कहीए छीए. २९.

अहीं ते यज्ञ करनार शंका करे के–वेदनुं अध्ययन अने यज्ञ ज रचना करनार छे, तेथी वेदाध्ययन अने यज्ञवडे ज ब्राह्मण कहेवाय छे, पण तमे कह्यो ते ब्राह्मण न कहेवाय. आ शंकानो जवाब आपे छे.—

पसुबंधा सव्ववेआ, जट्ठं च पावकम्मुणा । न तं तायंति दुस्सीलं, कम्माणि बलवंतिह ॥ ३० ॥

अर्थ—(सव्ववेआ) सर्व वेदो (पसुबंधा) पशुओना विनाशने माटे तेना बंधनना हेतुरूप छे, (च) तथा (जट्ठं) यज्ञ पण (पावकम्मुणा) पापना हेतुरूप पशुवधादिक कुकर्मवडे (दुस्सीलं) दुराचारी एवा (तं) ते यज्ञ करनारने (न तायंति) रक्षण करता नथी, कारण के (इह) आ संसारमां (कम्माणि) कर्मो ज (बलवंति) बळवान छे, एटले करेलां दुष्ट कर्मो तेना करनारने बळात्कारे नरकादिकमां लइ जाय छे. कारण के जे वेद अने यज्ञमां पशुवधादिक होवाथी ते दुष्ट कर्म अति बळवान थाय छे, तेथी वेद अने यज्ञना संबंधथी ब्राह्मण थवातुं नथी. माटे अमे जे ब्राह्मणनुं स्वरूप कह्युं ते ज योग्य छे. ३०.

न वि मुंडिएण समणो, न ओंकारेण बंभणो। न मुणी रण्णवासेणं, कुसचीरेण न तावसो ॥३१॥

अर्थ—(मुंडिएण) मात्र मुंडनवडे के लोचवडे ज (समणो) साधु (न वि) कहेवाय नहीं, (ओंकारेण) ओंकारादिक गायत्री मंत्रथी ज (बंभणो न) ब्राह्मण कहेवाय नहीं, (रण्णवासेणं) अरण्यमां वसवा मात्रथी ज (मुणी न) मुनि कहेवाय नहीं. तथा (कुसचीरेण) दर्भमय वस्त्रवडे ज (तावसो न) तापस कहेवाय नहीं. ३१.

त्यारे तेओ शी रीते कहेवाय ? ते कहे छे.—

समयाए समणो होइ, बंभचेरेण बंभणो। नाणेण य मुणी होइ, तवेणं होइ तावसो ॥ ३२ ॥

अर्थ—(समयाए) शत्रु तथा मित्रपर समानपणाए करीने (समणो) श्रमण–साधु (होइ) होय छे—कहेवाय छे, (बंभचेरेण) ब्रह्मचर्यवडे करीने (बंभणो) ब्राह्मण कहेवाय छे, (नाणेण य) तथा ज्ञाने करीने (मुणी होइ) मुनि होय छे, तथा (तवेणं) तपवडे करीने (होइ तावसो) तापस होय छे—कहेवाय छे. ३२.

कम्मुणा बंभणो होइ, कम्मुणा होइ खत्तिओ। कम्मुणा वइसो होइ, सुद्दो हवइ कम्मुणा ॥३३॥

अर्थ—(कम्मुणा) क्षमा, दान, दम विगेरे कर्मवडे ज (बंभणो) ब्राह्मण (होइ) होय छे, (कम्मुणा) क्षत थकी रक्षण करवारूप कर्मे करीने ज (खत्तिओ) क्षत्रिय (होइ) होय छे, (कम्मुणा) खेती, पशुपाळ विगेरेना कर्मवडे ज (वइसो) वैश्य (होइ) होय छे, तथा (कम्मुणा) चाकरी करवारूप कर्मवडे ज (सुद्दो) शूद्र (हवइ) होय छे. आ

प्रमाणे दरेकना जूदा जूदा कर्म न होय तो तेमनी जूदी जूदी जाति शी रीते कही शकाय ? माटे कर्मने आधीने ज जाति होइ शके छे. ३३.

वळी आ हुं मारी बुद्धिथी ज कहेतो नथी. ते उपर कहे छे.

एए पाउकरे बुद्धे, जेहिं होइ सिणायओ । सव्वकम्मविणिम्मुक्कं, तं वयं बूम माहणं ॥ ३४ ॥

अर्थ—(एए) आ उपर कहेला अहिंसादिक अर्थोने (बुद्धे) तत्त्वज्ञानी श्रीवर्धमानस्वामीए (पाउकरे) प्रगट कर्या छे, के (जेहिं) जे अहिंसादिके करीने (सिणायओ) स्नातक एटले केवळी (होइ) थाय छे, तेथी करीने (सव्वकम्मविणिम्मुक्कं) जाणे सर्व कर्मथी रहित थया होय तेवा (तं) तेने (वयं) अमे (माहणं) ब्राह्मण (बूम) कहीए छीए. ३४.

एवं गुणसमाउत्ता, जे भवंति दिउत्तमा । ते समत्था उ उद्धत्तुं, परं अप्पाणमेव य ॥ ३५ ॥

अर्थ—(एवं) आ प्रमाणे (गुणसमाउत्ता) अहिंसादिक गुणे करीने युक्त (जे) जे (दिउत्तमा) द्विजोत्तमो–ब्राह्मणो (भवंति) होय छे, (ते) तेओ ज (परं) पर प्राणीने (अप्पाणमेव य) तथा पोताना आत्माने (उद्धत्तुं) उद्धार करवाने एटले संसारथकी तारवाने (समत्था उ) समर्थ होय छे. ३५.

आ प्रमाणे कहीने मुनि विराम पाम्या, त्यारे शुं थयुं ? ते कहे छे.—

एवं तु संसए छिन्ने, विजयघोसे अ माहणे । समुदाय तओ तं तु, जयघोसं महामुणिं ॥ ३६ ॥

अर्थ—(एवं तु) आ प्रमाणे एटले पूर्वे कह्या प्रमाणे मुनिनां वचन सांभळीने (संसए) संशय (छिन्ने) छेदाये सते (तओ) त्यारपछी (विजयघोसे अ) विजयघोष नामनो (माहणे) ब्राह्मण (तं तु) ते (जयघोसं) जयघोष नामना (महामुणिं) महामुनिने (समुदाय) समादाय—सम्यक् प्रकारे ग्रहण करीने एटले 'आ तो मारा भाइ ज छे' एम बराबर ओळखीने. ३६.

शुं करतो हवो ? ते कहे छे.—

तुट्ठे अ विजयघोसे, इणमुदाहु कयंजली । माहणत्तं जहाभूअं, सुट्ठु मे उवदंसिअं ॥ ३७ ॥

अर्थ- (तुट्ठे अ) प्रसन्न थयो एवो (विजयघोसे) विजयघोष ब्राह्मण (कयंजली) हाथ जोडीने (इणं) आ प्रमाणे (उदाहु) बोल्यो के—हे मुनि ! (जहाभूअं) यथाभूत एटले जेवुं छे तेवुं (माहणत्तं) ब्राह्मणपणुं (मे) मने तमे (सुट्ठु) सारुं (उवदंसिअं) देखाड्युं, तमे मने ब्राह्मणनुं यथार्थ स्वरूप समजाव्युं ते बहु ठीक कर्युं. ३७.

तुब्भे जइआ जन्नाणं, तुब्भे वेअविऊ विऊ ! । जोइसंगविऊ तुब्भे, तुब्भे धम्माण पारगा ॥ ३८ ॥

अर्थ—(विऊ) हे विदः—तत्त्वज्ञानी मुनि ! (तुब्भे) तमे ज (जन्नाणं) यज्ञने (जइआ) यष्टारः—करनारा छो, (तुब्भे) तमे ज (वेअविऊ) वेदने जाणनारा छो, (तुब्भे) तमे ज (जोइसंगविऊ) ज्योतिषशास्त्र अने अंगविद्याना

जाणनारा छो, तथा (तुब्भे) तमे ज (धम्माण) धर्मशास्त्रना (पारगा) पारगामी—पारने पामेला छो. ३८.

तुब्भे समत्था उद्धत्तुं, परं अप्पाणमेव य । तमणुग्गहं करेह म्हं, भिक्खेणं भिक्खउत्तमा ! ॥३९॥

अर्थ—(तुब्भे) तमे ज (परं) परने (अप्पाणमेव य) तथा पोताना आत्माने पण (उद्धत्तुं) उद्धार करवाने (समत्था) समर्थ छो (तं) ते कारण माटे (भिक्खउत्तमा) हे उत्तम भिक्षु ! तमे (भिक्खेणं) भिक्षा ग्रहण करवावडे (म्हं) अमारा उपर (अणुग्गहं) अनुग्रह—कृपा (करेह) करो. ३९.

आ प्रमाणे ब्राह्मणे कह्युं, त्यारे मुनि बोल्या.—

न कज्जं मज्झ भिक्खेणं, खिप्पं निक्खमसू दिआ ! । मा भमिहिसि भयावत्ते, घोरे संसारसागरे ॥४०॥

अर्थ—(मज्झ) मारे (भिक्खेणं) भिक्षावडे (कज्जं न) कांइ पण कार्य नथी. परंतु (दिआ) हे द्विज ! (खिप्पं) शीघ्रपणे (निक्खमसु) तुं प्रव्रज्या ग्रहण कर, अने (भयावत्ते) सात भयरूपी आवर्तवाळा तथा (घोरे) भयंकर एवा (संसारसागरे) आ संसाररूपी सागरने विषे (मा भमिहिसि) तुं भ्रमण न कर. ४०.

उवलेओ होइ भोगेसु अभोगी नोवलिप्पई । भोगी भमइ संसारे, अभोगी विप्पमुच्चई ॥ ४१ ॥

अर्थ—(भोगेसु) भोग भोगवते सते (उवलेओ) उपलेप एटले कर्मनो लेप (होइ) थाय छे अने (अभोगी) भोग रहित पुरुष (न उवलिप्पई) कर्मथी लेपातो नथी. (भोगी) भोगी माणस (संसारे) संसारने विषे (भमइ) भमे छे अने

(अभोगी) भोग रहित माणस (विप्पमुच्चई) कर्मथी मूकाय छे. ४१.

भोगीने कर्मलेप थाय छे अने अभोगीने लेप थतो नथी, ते उपर दृष्टांत कहे छे.—

उल्लो सुक्को अ दो छूढा, गोलया मट्टिआमया। दो वि आवडिआ कुड्डे, जो उल्लो सोऽत्थ लग्गइ ४२

अर्थ—(उल्लो) आर्द्र-लीलो (सुक्को अ) अने सुको (दो) बे (मट्टिआमया) माटीना (गोलया) गोळा कोइ भींतपर (छूढा)—फेंक्या, ते (दो वि) बन्ने गोळा (कुड्डे) भींत उपर (आवडिआ) पड्या, (अत्थ) तेमां-ते बन्नेमां (जो उल्लो) जे आर्द्र गोळो होय (सो) ते भींत साथे (लग्गइ) लागे छे-चोंटी जाय छे. ४२.

हवे दार्ष्टांतिक कहे छे.—

एवं लग्गंति दुम्मेहा, जे नरा कामलालसा। विरत्ता उ न लग्गंति, जहा सुक्के उ गोलए ॥४३॥

अर्थ—(एवं) ए ज प्रमाणे एटले आर्द्र गोळानी जेम (दुम्मेहा) दुर्बुद्धिवाळा (जे नरा) जे मनुष्यो (कामलालसा) कामने विषे लालसावाळा थाय छे तेओ (लग्गंति) संसारमां आसक्त थाय छे, चोंटी जाय छे (उ) परंतु (जहा) जेम (सुक्के उ) सुको (गोलए) गोळो भींत साथे लागतो नथी-चोंटी जतो नथी तेम (विरत्ता) कामभोगथी विरक्त थयेला पुरुषो (न लग्गंति) संसारने विषे आसक्त थता नथी. ४३.

आ प्रमाणे जयघोष मुनिए कह्युं त्यारे विजयघोष ब्राह्मणे शुं कर्युं ? ते कहे छे.—

एवं सो विजयघोसो, जयघोसस्स अंतिए । अणगारस्स निक्खंतो, धम्मं सोच्चा अणुत्तरं ॥ ४४ ॥

अर्थ—(एवं) आ प्रमाणे (सो) ते (विजयघोसो) विजयघोष ब्राह्मणे (जयघोसस्स) जयघोष नामना (अणगारस्स) मुनिनी (अंतिए) समीपे (अणुत्तरं) उत्तम (धम्मं) धर्मने (सोच्चा) सांभळीने (निक्खंतो) ते मुनिनी ज पासे दीक्षा ग्रहण करी. ४४.

हवे अध्ययनना अर्थने समाप्त करता सता आ बन्नेनी दीक्षानुं फळ बतावे छे.—

खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य । जयघोसविजयघोसा, सिद्धिं पत्ता अणुत्तरं त्ति बेमि ॥४५॥

अर्थ—(संजमेण) संयमवडे (तवेण य) तथा तपवडे (पुव्वकम्माइं) पूर्वेना कर्मोने (खवित्ता) खपावीने (जयघोसविजयघोसा) जयघोष अने विजयघोष ए बन्ने मुनि (अणुत्तरं) सर्वोत्तम (सिद्धिं) सिद्धिने–मोक्षने (पत्ता) पाम्या. (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं. ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. ४५.

इति पञ्चविंशमध्ययनम्. २५.

अथ सामाचारी नामनुं छव्वीशमुं अध्ययन. २६.

पचीशमा अध्ययनमां ब्रह्मचर्यना गुणो कह्या, ते गुणो यतिमां ज होय छे, तेथा यतिए अवश्य सामाचारी पण पाळवी जोइए, तेथी आ अध्ययनमां सामाचारीने ज बतावे छे. तेनुं पहेलुं सूत्र आ प्रमाणे छे.—

सामायारिं पवक्खामि, सव्वदुक्खविमोक्खणिं । जं चरित्ता ण निग्गंथा, तिण्णा संसारसागरं ॥१॥

अर्थ—(सव्वदुक्खविमोक्खणिं) सर्व दुःखोथी मुक्त करनारी एटले सर्व दुःखोनो नाश करनारी एवी (सामायारिं) सामाचारीने एटले साधुनी क्रियाने (पवक्खामि) हुं कहीश. (जं) जे सामाचारीनुं (चरित्ता ण) आचरण करीने (निग्गंथा) साधुओ (संसारसागरं) संसारसागरने (तिण्णा) तरी गया छे, उपलक्षणथी वर्तमानकाळमां तरे छे अने अनागतकाळमां तरशे. १. ते सामाचारीने ज कहे छे.—

पढमा आवस्सिआ नाम १, बिइआ य निसीहिआ २ ।
आपुच्छणा य तइआ ३, चउत्थी पडिपुच्छणा ४ ॥ २ ॥
पंचमी छंदणा नामं ५, इच्छाकारो अ छट्ठओ ६ ।
सत्तमो मिच्छकारो उ ७, तहकारो उ अट्ठमो ८ ॥ ३ ॥

अब्भुट्ठाणं नवमं ९, दसमा उवसंपया १० । एसा दसंगा साहूणं, सामायारी पवेइआ ॥ ४ ॥

अर्थ—(पढमा) पहेली (आवस्सिआ नाम) आवश्यकी नामनी सामाचारी छे, (बिइआ य) अने बीजी (निसीहिआ) नैषेधिकी छे, (आपुच्छणा य) तथा आपृच्छना (तइआ) त्रीजी छे, (चउत्थी) चोथी (पडिपुच्छणा) प्रतिपृच्छना छे, (पंचमी) पांचमी (छंदणा नामं) छंदना नामनी छे, (इच्छाकारो अ) तथा इच्छाकार ए (छट्ठओ) छठी छे, (सत्तमो) सातमी (मिच्छकारो उ) मिथ्याकार छे, (तहक्कारो उ) तथाकार ए (अट्ठमो) आठमी छे, (अब्भुट्ठाणं) अभ्युत्थान ए (नवमं) नवमी छे, (दसमा) अने दशमी (उवसंपया) उपसंपदा छे. (एसा) आ (दसंगा) दश अंगवाळी-दश प्रकारनी (साहूणं) साधुओनी (सामायारी) सामाचारी (पवेइआ) कहेली छे.

भावार्थ—श्री जिनेश्वरोए साधुनी दश सामाचारी आ प्रमाणे कही छे.—

चारित्र लीधा पछी कारण विना गुरुना अवग्रहमां आशातनानी शंकाने लीधे रहेवुं नहीं, परंतु तेमना अवग्रहथी बहार रहेवुं-नीकळवुं, अने ते निर्गमन आवश्यकी कर्या विना थइ शकतुं नथी तेथी आवश्यकी ए पहेली सामाचारी छे १, निर्गमन कर्या पछी पोताना स्थानमां रहेवानुं छे माटे गमनादिकना निषेधरूप नैषेधिकी करवी ए बीजी सामाचारी छे २, पोताने स्थाने रहेला साधुने भिक्षाटनादिक कार्यनी प्राप्ति थाय त्यारे गुरुने पूछीने ज प्रवर्तवुं जोइए, तेथी त्रीजी आपृच्छना नामनी सामाचारी छे ३, गुरुए जवानी रजा आप्या छतां चालती वखते फरीथी गुरुने पूछवानुं छे तेथी प्रतिपृच्छना

नामनी चोथी सामाचारी कही छे ४, भिक्षाटन करीने साधुए पेटभरु न थवुं जोइए, परंतु बीजा मुनिओने पण निमंत्रण करवारूप छंदना करवी जोइए तेथी पांचमी छंदना सामाचारी कही छे ५, तेमां पण इच्छाकार–आपनी इच्छापूर्वक पधारो–एम कहेवुं जोइए, तेथी इच्छाकार नामनी छट्ठी सामाचारी कही छे ६, आ प्रमाणे कर्या छतां पण कदाच कथंचित् कोइ कार्यमां अतिचार थइ जाय तो तेनुं मिथ्यादुष्कृत आपवुं जोइए तेथी सातमी मिथ्याकार नामनी सामाचारी कही छे ७, गुरुनी पासे मोटो अपराध आलोवे सते गुरुनुं वचन 'तथा–तहत्ति–बहु सारुं' एम कहीने स्वीकारवानुं छे तेथी आठमी तथाकार नामनी सामाचारी छे ८, तहत्ति कहीने गुरुनुं वचन स्वीकार्या पछी पोताने योग्य सर्व कार्यमां उद्यम करवो जोइए तेथी नवमी अभ्युत्थान नामनी सामाचारी कही छे ९, तथा तेवा उद्यमवाळाए ज्ञानादिक मेळववा माटे बीजा गच्छमां जइने पण उपसंपदा ग्रहण करवी जोइए तेथी दशमी उपसंपदा नामनी सामाचारी कही छे. १०, २–३–४.

हवे कइ कइ सामाचारी कये कये ठेकाणे करवी ? ते कहे छे.—

गमणे¹ आवस्सिअं कुज्जा,² ठाणे³ कुज्जा णिसीहिअं। आपुच्छणा⁴ सयंकरणे, परकरणे पडिपुच्छणा⁵ ॥५॥

अर्थ—(गमणे) गमन करती वखते (आवस्सिअं) आवश्यकी एटले अवश्य करवा लायक कार्य संबंधी पहेली सामाचारी (कुज्जा) करवी १, तथा (ठाणे) उपाश्रयादिक स्थानमां प्रवेश करती. वखते (णिसीहिअं) गमनादिकना

निषेधरूप नैषेधिकी–बीजी सामाचारी (कुआ) करवी २, तथा (सयंकरणे) पोतानुं कार्य करती वखते (आपुच्छणा) आपृच्छना एटले गुरुनी आज्ञा मागवी के 'आ कार्य हुं करुं?' ए प्रमाणे पृच्छारूप सामाचारी करवी ३, तथा (परकरणे) अन्यनुं कार्य करती वखते (पडिपुच्छणा) गुरुनी आज्ञा लेवी एटले गुरुनी आज्ञा प्रथम थइ होय तो पण कार्यमां प्रवृत्ति करती वखते गुरुने फरीने पूछवुं जोइए ए प्रमाणे प्रतिपृच्छनारूप सामाचारी करवी ४, अहीं जे पोताना कार्यमां आपृच्छना अने परना कार्यमां प्रतिपृच्छना कही छे ते उपलक्षणथी स्वपरना सर्व कार्योमां गुरुनी प्रथम आज्ञा मागवी ते आपृच्छना अने गुरुनो प्रथमथी नियोग छतां पण कार्य करती वखते फरीथी जे गुरुने पूछवुं ते प्रतिपृच्छना समजवी. ५.

छंदणा दव्वजाएणं, इच्छाकारो अ सारणे । मिच्छाकारो अ निंदाए, तहकारो पडिस्सुए ॥ ६ ॥

अर्थ—(दव्वजाएणं) पूर्वे पोते जे द्रव्य–पदार्थ विशेष अन्नपानादिक ग्रहण कर्यां होय, तेने उद्देशीने (छंदणा) अन्य साधुओने निमंत्रणरूप छंदना सामाचारी करवानी छे. एटले के बीजा साधुओने पोते आणेला आहार पाणी देखाडीने कहेवुं के 'आमांथी तमारी इच्छा प्रमाणे ग्रहण करी मने तारो' एम जे कहेवुं ते छंदना कहेवाय छे. ५. (अ) तथा (सारणे) सारणाने विषे एटले स्वपरना कार्यमां प्रवृत्ति करती वखते (इच्छाकारो) इच्छाकार कहेवाय छे एटले पोतानी इच्छाथी कार्य करवानुं छे पण बळात्कारथी करवानुं नथी. तेमां पोते कार्य करवुं होय तो 'हुं तमारुं अमुक कार्य मारी इच्छाथी करुं छुं' एम कहेवुं अने पर पासे कार्य कराववुं होय तो 'मारुं पात्रलेपादिक अमुक कार्य तमारी इच्छाथी

करो ' एम कहेवुं ते इच्छाकार सामाचारी कहेवाय छे. ६. (अ) तथा (निंदाए) पोताना आत्मानी निंदाने विषे (मिच्छाकारो) मिथ्याकार सामाचारी कराय छे. एटले पोते कांइ अनाचार कर्यो होय-भूल थइ गइ होय तो तेनी निंदा करती वखते ' हा ! में आ मिथ्या कर्युं ' ए प्रमाणे कहेवुं ते. ७. तथा (पडिस्सुए) प्रतिश्रुतने विषे एटले कोइपण कार्यना अंगीकारने विषे (तहक्कारो) तथाकार सामाचारी कराय छे, एटले गुरु वाचनादिक देता होय त्यारे ' आप कहो छो ते एम ज छे ' ए रीते अंगीकार करवामां तथाकार कराय छे. ८. ६.

अब्भुट्ठाणं गुरुपूआ, अच्छैणे उवसंपया । एवं दुपंचसंजुत्ता, सामायारी पवेईआ ॥ ७ ॥

अर्थ—(गुरुपूआ) गुरुपूजाने विषे एटले गौरव करवा लायक आचार्य, ग्लान विगेरेने योग्य आहारादिक लावी आपवाने विषे तथा विनयादिक करवाने विषे (अब्भुट्ठाणं) अभ्युत्थान एटले उद्यम करवो ते अभ्युत्थान सामाचारी छे. अहीं सामान्य रीते कह्युं छे तो पण अभ्युत्थान एटले निमंत्रणा जाणवुं. निर्युक्तिकारे पण अभ्युत्थानने बदले निमंत्रणा शब्द वापर्यो छे. ९. तथा (अच्छणे) अवस्थानने विषे एटले बीजा आचार्यादिकनी पासे रहेवाने विषे (उवसंपया) उपसंपदा एटले ' हुं आपनी पासे अमुक काळ सुधी रहीश ' ए प्रमाणे कही ज्ञानादिक गुण उपार्जन करवा माटे जे रहेवुं ते उपसंपदा सामाचारी छे. १०. (एवं) आ प्रमाणे (दुपंचसंजुत्ता) बे पंचकवडे युक्त एटले दश संख्यावाळी (सामायारी) सामाचारी (पवेइआ) कही छे. ७.

आ रीते दश प्रकारनी सामाचारी कही. हवे ओघ सामाचारी कहे छे.—

पुव्विल्लम्मि चउब्भागे, आइच्चम्मि समुट्ठिए । भंडगं पडिलेहित्ता, वंदित्ता य तओ गुरुं ॥ ८ ॥
पुच्छिज्जा पंजलिउडो, किं कायव्वं मए इह । इच्छं निओइउं भंते !, वेआवच्चे व सज्झाए ॥९॥

अर्थ—(पुव्विल्लम्मि) पूर्वदिशाए (चउब्भागे) आकाशना कांइक न्यून एवा चोथा भागे (आइच्चम्मि) सूर्य (समुट्ठिए) चडे सते-प्राप्त थये सते एटले पादोन पोरसी थाय त्यारे (भंडगं) भांडकने एटले पात्रादिक उपकरणने (पडिलेहित्ता) पडिलेहीने (तओ) त्यारपछी (गुरुं) आचार्यादिक गुरुने (वंदित्ता य) वांदीने (पंजलिउडो) प्रांजलिपुट एटले मस्तकपर बे हाथ जोडीने (पुच्छिज्जा) पूछे के (मए) मारे (इह) अत्यारे (किं कायव्वं) शुं करवुं ? (भंते) हे भगवान ! (वेयावच्चे व) ग्लानादिकनी वैयावच्चने विषे अथवा तो (सज्झाए) वाचनादिक स्वाध्यायने विषे (निओइउं) मारा आत्माने नियोग कराववाने-जोडी देवाने-आज्ञा अपाववाने (इच्छं) हुं इच्छुं छुं. आप मने आज्ञा आपो एम हुं इच्छुं छुं. ८-९.

आ प्रमाणे पूछीने पछी शुं करवुं ? ते कहे छे.—

वेयावच्चे निउत्तेणं, कायव्वं अगिलायओ । सज्झाए वा निउत्तेणं, सव्वदुक्खविमोक्खणे ॥ १० ॥

अर्थ—(वेयावच्चे) ग्लानादिकनी वैयावच्चने विषे (निउत्तेणं) आज्ञा अपायेला साधुए (अगिलायओ) ग्लानिपणा रहित एटले शरीरनो श्रम विचार्या विना ज (कायव्वं) वैयावच्च करवुं, (वा) अथवा (सज्झाए) स्वाध्यायने विषे

(निउत्तेणं) आज्ञा पामेला साधुए (सव्वदुक्खविमोक्खणे) सर्व दुःखना नाशवडे ज एटले ग्लानिपणा रहित ज स्वाध्याय करवो, अथवा जेनाथी सर्व दुःखनो नाश थाय छे एवा स्वाध्यायने विषे आज्ञा पामेला साधुए ग्लानिपणा रहित स्वाध्याय करवो. १०.

आ प्रमाणे पडिलेहण विगेरे ओघ सामाचारीनुं मूळ छे तेथी ते काळे तेनुं करवापणुं बताव्युं तथा ते सर्व गुरुनी आज्ञाथी ज करवानुं छे तेथी गुरुनुं पराधीनपणुं पण बताव्युं, हवे उत्सर्ग मार्गे दिवसनुं कृत्य कहे छे.—

दिवसस्स चउरो भाए, कुज्जा भिक्खू वियक्खणो। तओ उत्तरगुणे कुज्जा, दिणभागेसु चउसु वि ॥११॥

अर्थ-(वियक्खणो) विचक्षण एटले क्रियाने विषे कुशळ एवा (भिक्खू) साधुए (दिवसस्स) दिवसना (चउरो भाए) चार भाग (कुज्जा) करवा, (तओ) त्यारपछी (चउसु वि) ते चारे (दिणभागेसु) दिवसना भागोमां (उत्तरगुणे) स्वाध्यायादिक उत्तरगुण करवा. ११.

उत्तरगुणने केवी रीते करवा ? ते कहे छे.—

पढमं पोरिसि सज्झायं, बिइअं झाणं झिआयइ। तइआए गोअरकालं, पुणो चउत्थिए सज्झायं ॥१२॥

अर्थ—(पढमं) पहेली (पोरिसि) पोरसीमां (सज्झायं) वाचनादिक स्वाध्याय करवो, (बिइअं) बीजी पोरसीमां (झाणं) ध्यान (झिआयइ) ध्यावुं एटले करवुं, आ अर्थपोरसी होवाथी अर्थना विषयनुं ध्यान करवुं एम समजवुं, (त-

इआए) त्रीजी पोरसीमां (गोअरकालं) गोचरकाळ एटले भिक्षाचर्या अने तेना उपलक्षणथी बहिर्भूमि जवा विगेरेनुं कार्य करवुं, (पुणो) फरीथी (चउत्थीए) चोथी पोरसीमां (सज्झायं) स्वाध्याय करवो. अहीं पण उपलक्षणथी पडिलेहण विगेरे क्रिया जाणी लेवी. १२.

हवे पोरसीनुं प्रमाण बतावे छे.

आसाढे मासे दुपया, पोसे मासे चउप्पया । चित्तासोएसु मासेसु, तिपया हवइ पोरिसी ॥ १३ ॥

अर्थ- (आसाढे मासे) आषाढ मासनी पूर्णिमाने दिवसे (दुपया) बे पगले पोरसी थाय छे, (पोसे मासे) पोष मासनी पूर्णिमाने दिवसे (चउप्पया) चार पगले पोरसी थाय छे, (चित्तासोएसु मासेसु) चैत्र अने आश्विन मासनी पूर्णिमाने दिवसे (तिपया) त्रण पगले (पोरसी हवइ) पोरसी थाय छे. पुरुषे पोताना दक्षिण कान सन्मुख सूर्यमंडळ राखी उभा रहेवुं, पछी ढींचण सुधीनी छाया आषाढी पूर्णिमाए ज्यारे बे पगला प्रमाण थाय त्यारे एक प्रहर थाय छे, एम सर्वत्र जाणवुं. १३.

आ प्रमाण आषाढादिक पूर्णिमानुं कह्युं, त्यारपछी आ प्रमाणे वृद्धि अने हानि करवी, ते कहे छे.—

अंगुलं सत्तरत्तेणं, पक्खेणं तु दुअंगुलं । वड्ढए हायए आवि, मासेणं चउरंगुलं ॥ १४ ॥

अर्थ—(सत्तरत्तेणं) सात रात्रिए एटले सात रात्रिदिवसे (अंगुलं) एक आंगळ, (पक्खेणं तु) एक पखवाडीए

(दुअंगुलं) बे आंगळ तथा (मासेणं) एक मासे (चउरंगुलं) चार आंगळ छाया (वड्ढए) दक्षिणायनमां वधे छे (आवि) अने (हायए) उत्तरायणमां हानि पामे छे. अहीं एक पखवाडीए बे आंगळ कह्यां छे तेथी सात दिवसे एक आंगळने ठेकाणे साडा सात दिवसे एक आंगळ समजवुं. वळी कोइ मासमां चौद दिवसनुं पण पखवाडीयुं होय छे, ते वखते सात दिवसे पण एक आंगळनी वृद्धि हानि करवामां दोष नथी. १४.

कया कया मासमां चौद दिवसनुं पखवाडीयुं थाय छे? ते कहे छे.—

आसाढबहुलपक्खे, भद्दवए कत्तिए अ पोसे अ। फग्गुणवइसाहेसु अ, नायव्वा ओमरत्ताओ ॥१५॥

अर्थ—(आसाढबहुलपक्खे) अषाढ मासना कृष्णपक्षमां, (भद्दवए) भाद्रपदना कृष्णपक्षमां, (कत्तिए अ) कार्तिकना कृष्णपक्षमां, तथा (पोसे अ) पोषना कृष्णपक्षमां, तथा (फग्गुणवइसाहेसु अ) फाल्गुनना कृष्णपक्षमां अने वैशाखना कृष्णपक्षमां (ओमरत्ताओ) न्यून रात्रिओ एटले एक एक न्यून तिथि (नायव्वा) जाणवी. एटले आटला मासना कृष्णपक्षमां चौद दिवसनुं पखवाडीयुं होय छे. १५.

आ प्रमाणे पोरसीना ज्ञाननो उपाय बतावी हवे प्रथम आठमी गाथामां जे पादोन पोरसी कही हती ते जाणवानो उपाय बतावे छे.—

जेट्ठामूले आसाढ–सावणे छहिं अंगुलेहिं पडिलेहा। अट्ठहिं बीअतिअम्मि, तइए दस अट्ठहिं चउत्थे ॥१६॥

अर्थ—(जेट्ठामूले) ज्येष्ठा अने मूळ नक्षत्र जेठ शुदि पूर्णिमाने दिवसे होय छे तेथी जेठ मासमां, (आसाढसावणे) अषाढ मासमां अने श्रावण मासमां (छहिं अंगुलेहिं) छ आंगळवडे एटले पूर्वे कहेली पोरसीना प्रमाणमां छ आंगळ नांखीए त्यारे (पडिलेहा) पात्रनी पडिलेहणनो काळ एटले पादोन पोरसी थाय छे. जेमके अषाढ मासमां बे पगला छाया होय त्यारे पोरसी थाय छे अने बे पगला उपर छ आंगळ वधारीए एटली छाया होय त्यारे पादोन पोरसी थाय छे, ए रीते सर्वत्र जाणवुं. तथा (बीअतिअम्मि) बीजा त्रिकमां एटले भाद्रपद, आश्विन अने कार्तिक मासमां (अट्ठहिं) पोरसीना प्रमाणमां आठ आंगळ नांखवाथी पादोन पोरसी थाय छे, तथा (तइए) त्रीजा त्रिकमां एटले मार्गशीर्ष, पोष अने माघ मासमां (दस) पोरसीना प्रमाणमां दश आंगळ नांखवाथी पादोन पोरसी थाय छे, तथा (चउत्थे) फाल्गुन, चैत्र अने वैशाख मासरूप चोथा त्रिकमां (अट्ठहिं) पोरसीना प्रमाणमां आठ आंगळ नांखवाथी पादोन पोरसी थाय छे. १६.

आ रीते दिवसनुं कृत्य कह्युं, हवे रात्रिनुं कृत्य कहे छे.—

रत्तिं पि चउरो भाए, भिक्खू कुज्जा वियक्खणो । तओ उत्तरगुणे कुज्जा, राईभागेसु चउसु वि ॥१७॥

अर्थ—(विअक्खणो) विचक्षण एटले क्रियामां निपुण एवो (भिक्खू) साधु (रत्तिं पि) रात्रिना पण (चउरो) चार (भाए) भाग (कुज्जा) करे, (तओ) त्यारपछी (चउसु वि) चारे (राईभागेसु) रात्रिना भागने विषे (उत्तर-गुणे) उत्तरगुणने (कुज्जा) करे. १७.

शी रीते उत्तरगुणने करे ? ते कहे छे.—

पढमं पोरिसि सज्झायं, बिइअं झाणं झिआयइ ।

तइआए निद्दमोक्खं तु, चउत्थीए भुज्जो वि सज्झायं ॥ १८ ॥

अर्थ—(पढमं) पहेली (पोरिसि) पोरसीमां (सज्झायं) स्वाध्याय करे, (बिइअं) बीजी पोरसीमां (झाणं) धर्मध्यान (झिआयइ) ध्यावे—करे, (तइआए) त्रीजी पोरसीमां (निद्दमोक्खं तु) निद्रानो मोक्ष करे एटले निद्राने मोकळी मूके अर्थात् निद्रा ले, तथा (चउत्थीए) चोथी पोरसीमां (भुज्जो वि) फरीथी पण (सज्झायं) स्वाध्याय करे. १८.

हवे रात्रिना चार भाग जाणवानो उपाय बतावता पूर्वक समग्र साधुनुं कर्तव्य कहे छे.—

जं नेइ जया रत्तिं, नक्खत्तं तम्मि नहचउब्भाए । संपत्ते विरमिज्जा, सज्झाय पओसकालम्मि ॥१९॥

अर्थ—(जया) जे काळे (जं) जे (नक्खत्तं) नक्षत्र (रत्तिं) रात्रिने (नेइ) समाप्त करे, (तम्मि) ते नक्षत्र (नहचउब्भाए) आकाशना चोथा भागने (संपत्ते) पामे सते (पओसकालम्मि) प्रदोष वखते एटले रात्रिना आरंभमां आरंभेला (सज्झाय) स्वाध्यायथी (विरमिज्जा) विराम पामे. जे नक्षत्र अस्त पामे त्यारे रात्रि पूर्ण थती होय ते नक्षत्र प्राये सूर्यना नक्षत्रथी चौदमुं होय छे, ते नक्षत्र आकाशना चोथा चोथा भागने ओळंगे तेम तेम प्रहरनी गणतरी करवी. १९.

तम्मेव य नक्खत्ते, गयण चउब्भागसावसेसम्मि । वेरत्तिअं पि कालं पडिलेहित्ता मुणी कुज्जा ॥२०॥

अर्थ—(तम्मेव य) ते ज प्रातःकाळे अस्त थनारुं (नक्खत्ते) नक्षत्र (चउब्भागसावसेसम्मि) चोथो भाग बाकी रहेलो होय एवा (णहयले) आकाशने विषे प्राप्त थये सते (वेरत्तियं) वैरात्रिक नामना (कालं) काळने तथा (पि) अपि शब्द छे तेथी पोतपोताने समये प्रादोषिकादिक एटले प्राभातिक काळने (पडिलेहित्ता) पडिलेहीने (मुणी) मुनि काळग्रहण (कुज्जा) करे. २०.

आ प्रमाणे सामान्य रीते दिवस अने रात्रिनुं कृत्य देखाड्युं, हवे विशेषथी ते ज देखाडता प्रथम साडी सत्तर गाथावडे दिवसनुं कृत्य कहे छे.—

पुव्विल्लम्मि चउब्भागे, पडिलेहित्ताण भंडगं । गुरुं वंदित्तु सज्झायं, कुज्जा दुक्खविमोक्खणं ॥२१॥

अर्थ—(पुव्विल्लम्मि) पहेलाना (चउब्भागे) चोथा भागे एटले दिवसनी पहेली पोरसीए एटले सूर्योदय वखते (भंडगं) वर्षाकल्पादिक उपधिने (पडिलेहित्ताण) पडिलेहीने पछी (गुरुं) गुरुने (वंदित्तु) वांदीने (दुक्खविमोक्खणं) दुःखने–पापने नाश करनार एवा (सज्झायं) स्वाध्यायने (कुज्जा) करे. २१.

पोरसीए चउब्भागे, वंदित्ताण तओ गुरुं । अपडिक्कमित्ता कालस्स, भायणं पडिलेहए ॥ २२ ॥

अर्थ—(तओ) त्यारपछी (पोरसीए) पहेली पोरसीनो (चउब्भागे) चोथो भाग बाकी रहे त्यारे एटले पादोन-पोरसी थाय त्यारे (गुरुं) गुरुने (वंदित्ताण) वांदिने (कालस्स) काळने (अपडिक्कमित्ता) नहीं पडिकमीने एटले प्र-

भातकाळना प्रतिक्रमण माटे कायोत्सर्ग कर्या विना ज (भायणं) पात्रादिक भाजनने (पडिलेहए) पडिलेहे. दिवसनी चोथी पोरसीए फरीथी स्वाध्याय करवानो छे, अने काळनुं प्रतिक्रमण कर्या पछी स्वाध्याय करवानो निषेध छे, तेथी काळने नहीं पडिकमीने एम कह्युं छे. २२.

हवे पडिलेहणनो विधि कहे छे.—

मुहपोत्तिअं पडिलेहित्ता, पडिलेहिज्ज गोच्छगं । गोच्छगलइअंगुलिओ, वत्थाइं पडिलेहए ॥ २३ ॥

अर्थ—प्रथम (मुहपोत्तिअं) मुहपत्तिने (पडिलेहित्ता) पडिलेहीने पछी (गोच्छगं) पात्रा उपर राखवाना ऊनना वस्त्ररूप गोच्छकने (पडिलेहिज्ज) पडिलेहे. त्यारपछी (गोच्छगलइअंगुलिओ) अंगुलिमां ग्रहण कर्यो छे गोच्छक जेणे एवो सतो एटले आंगळीओमां गोच्छकने ग्रहण करीने (वत्थाइं) झोळी उपर राखवानां वस्त्र एटले पडलाने (पडिलेहए) पडिलेहे एटले प्रमार्जे. २३.

आ प्रमाणे ते ज स्थितिवाळा पडलाने गोच्छकवडे प्रमार्जन करी पछी शुं करे ? ते कहे छे.—

उड्ढं थिरं अतुरिअं, पुव्वं ता वत्थमेव पडिलेहे । तो बिइयं पप्फोडे, तइअं च पुणो पमज्जिज्जा ॥२४॥

अर्थ—(पुव्वं ता) पूर्वं तावत् एटले प्रथम (उड्ढं) ऊर्ध्व एटले उत्कटिक आसने बेसी तथा वस्त्र पण ऊर्ध्व एटले तिरछुं राखी (थिरं) दृढ रीते वस्त्रने पकडी तथा (अतुरिअं) अत्वरित एटले उतावळ कर्या विना (वत्थं) वस्त्रने एटले

पडलाने (पडिलेहे एव) पडिलेहे एटले सवळा अने अवळा करीने मात्र तेने दृष्टिथी जुए, पण प्रस्फोटन एटले पप्फोडा करे नहीं. अहीं पडलानुं प्रकरण छतां सामान्य रीते वस्त्र शब्द लख्यो छे ते वर्षाकल्पादिकनी पडिलेहणाने विषे पण आ ज विधि जाणवो एम जणाववा माटे लख्यो छे. जोती वखते जो तेमां जंतुओने जुए तो तेने यतनापूर्वक अन्य स्थाने मूके. (तो) त्यारपछी (बिइअं) बीजी क्रिया करे, शुं करे ? (पप्फोडे) जे वस्त्र शुद्ध कर्युं तेने प्रस्फोटन करे एटले पप्फोडा करे. (तइयं च पुणो) तथा वळी त्रीजी क्रिया आ प्रमाणे करे—(पमज्जिज्जा) प्रमार्जन करे एटले के पडिलेहीने तथा प्रस्फोटन करीने पछी प्रमार्जन करे. २४.

हवे ते वस्त्रनुं प्रस्फोटन प्रमार्जन शी रीते करवुं ? ते कहे छे.—

अणच्चाविअं अवलिअं, अणाणुबंधिं अमोसलिं चेव । छप्पुरिमा नव खोडा, पाणीपाणिविसोहणं ॥२५॥

अर्थ—(अणच्चाविअं) अनर्तित एटले शरीर अथवा वस्त्र नाच करतुं न होय तेवी रीते (अवलिअं) शरीर अथवा वस्त्र वळे नहीं तेम–मरडाय नहीं तेम, (अणाणुबंधिं) अनुबंध रहित एटले आंतरा सहित अर्थात् पूर्वापरना प्रस्फोटननुं ज्ञान थाय तेवी रीते, (अमोसलिं चेव) तथा मोसलि रहित एटले तिरछा भींत विगेरेने, उंचे माळ विगेरेने अने नीचे पृथ्वी विगेरेने स्पर्श न थाय तेम वस्त्रनुं प्रस्फोटन करवुं. शी रीते ? ते कहे छे. (छप्पुरिमा) छ पुरिम–पूर्व करवा एटले आ क्रिया प्रथम करवामां आवे छे तेथी तेनुं नाम पुरिम–पूर्व कहेवाय छे अर्थात् तिरछा करेला वस्त्रने छ वार ऊर्ध्व प्रस्फोटन

करवुं तेरूप छ पूर्व करवा. त्यारपछी (नव खोडा) नव खोडा करवा एटले प्रस्फोटनरूप नव अखोडा करवा. (पाणी-पाणिविसोहणं) ए रीते करवाथी हाथने विषे प्राणीओनुं विशोधन थाय छे. अहीं एक दृष्टि पडिलेहण, छ ऊर्ध्व पप्फोडा, नव अखोडा खंखेरवारूप अने नव पखोडा पुंजवारूप ए सर्व मळीने पचीश पडिलेहण थाय छे. २५.

पडिलेहणना दोषो समजावीने तेने तजवानुं कहे छे.—

आभरडा संमद्दा, वज्जेअव्वा य मोसली तइआ। पप्फोडणा चउत्थी, विक्खित्ता वेइआ छट्ठा ॥२६॥

अर्थ—(आरभडा) विपरीतपणे करवुं अथवा शीघ्रपणे अन्य अन्य वस्त्र ग्रहण करवां ते आरभडा नामनो दोष वर्जवा योग्य छे, तथा (संमद्दा) वस्त्रना छेडा परस्पर भेळा करवा अथवा उपधिनी उपर बेसवुं ए संमर्दा नामनो दोष छे, ते (वज्जेअव्वा) वर्जवा योग्य छे, (य) तथा (मोसली) तिरछो, उंचे के नीचे संघट्टो करवो ते मोसली नामनो (तइआ) त्रीजो दोष वर्जवा योग्य छे, तथा (पप्फोडणा) धूळथी खरडायेला वस्त्रनी जेम पडिलेहणना वस्त्रने अत्यंत झापटवुं ते प्रस्फोटना नामनो (चउत्थी) चोथो दोष वर्जवा योग्य छे, तथा (विक्खित्ता) पडिलेहण कर्या विनाना वस्त्र उपर पडिलेहण करेलुं वस्त्र मूकवुं ते विक्षिप्ता नामनो पांचमो दोष वर्जवा योग्य छे, तथा (वेइआ) वेदिका नामनो (छट्ठा) छट्ठो दोष वर्जवा योग्य छे, ते वेदिका पांच प्रकारे छे. ते आ प्रमाणे—ऊर्ध्ववेदिका एटले बे ढींचण उपर बे हाथ राखवा ते १, अधोवेदिका एटले ढींचणथी घणा नीचे हाथ राखवा ते २, तिर्यग्वेदिका एटले तिरछा हाथ राखीने पडिलेहण करवी ते

३, उभयवेदिका एटले बन्ने ढींचणनी बहार हाथ राखवा ते ४, तथा एकवेदिका एटले एक हाथ ढींचणनी वच्चे राखे अने बीजो हाथ ढींचणनी बहार राखे ते ५. आ छ दोषो वर्जवा योग्य छे. २६.

पसिढिलपलंबलोला, एगामोसा अणेगरूवधुणा। कुणइ पमाणि पमायं, संकिय गणणोवगं कुज्जा ॥२७॥

अर्थ—(पसिढिल) वस्त्रने शिथिलपणे ग्रहण करवुं-पकडवुं ते प्रशिथिल तथा (पलंब) बराबर सरखी रीते ग्रहण नहीं करवाथी पडिलेहण कराता वस्त्रना छेडा लांबा लटकता राखवा ते प्रलंब, तथा (लोला) पडिलेहण कराता वस्त्रने भूमिपर के हाथमां रोळवुं ते लोल, तथा (एगामोसा) एकी वखते वस्त्रना बन्ने बाजुना छेडा खेंचवा ते एकामर्शा, तथा (अणेगरूवधुणा) वस्त्रने त्रणथी वधारे वखत कंपाववुं अथवा एकी साथे अनेक वस्त्रने ग्रहण करी तेने कंपाववा ते अनेकरूप धूनना, तथा (पमाणि) प्रस्फोटनादिकनी संख्याना प्रमाणमां (पमायं) प्रमाद (कुणइ) करवो, तथा (संकिए) संख्याना प्रमाणमां शंका उत्पन्न थवाथी (गणणोवगं) हाथनी आंगळीनी रेखानो स्पर्श विगेरे करी एक, बे, त्रण संख्यारूप गणना करी शकाय तेवी रीते (कुज्जा) करवुं ते, आ सर्व दोषो वर्जवाना छे. आ बे गाथामां कहेला (६–७=१३) दोषोथी जे युक्त ते सदोष पडिलेहणा छे, अर्थात् ते दोष रहित जे पडिलेहणा करवी ते निर्दोष छे एम सिद्ध थयुं. २७.

हवे ते पडिलेहणाने ज भांगा देखाडवावडे सदोष अने निर्दोष कहे छे—

अणूणाईरित्त पडिलेहा, अविवच्चासा तहेव य। पढमं पयं पसत्थं, सेसाणि उ अप्पसत्थाणि ॥ २८ ॥

अर्थ—(पडिलेहा) पडिलेहण (अणूणा) ओछी न करवी, तथा (अइरित्ता) अधिक न करवी, (तहेव य) तथा वळी (अविवच्चासा) विपर्यासवाळी एटले विपरीत न करवी. अहीं अन्यून, अनतिरिक्त अने अविपर्यास ए त्रण विशेषणना शब्दोवडे आठ भांगा थाय छे, तेमां (पढमं) पहेलुं (पयं) पद—भंगक (पसत्थं) प्रशस्त—शुद्ध छे, अने (सेसाणि उ) बाकीना सात भांगा (अप्पसत्थाणि) अप्रशस्त—अशुद्ध छे. त्रण विशेषणना आठ भांगा आ प्रमाणे छे—

भंग	अन्यून	अनतिरिक्त	अविपर्यास
१	१	१	१
२	०	१	१
३	१	०	१
४	०	०	१
५	१	१	०
६	०	१	०
७	१	०	०
८	०	०	०

अहीं १ अंकवाळुं खानुं विशेषणवाळुं अने शून्यवाळुं खानुं विशेषण रहित जाणवुं. २८.

आ रीते निर्दोष पडिलेहण करनारे बीजुं शुं तजवानुं छे ? ते कहे छे.—

पडिलेहणं कुणंतो, मिहो कहं कुणइ जणवयकहं वा। देइ व पच्चक्खाणं, वाएइ सयं पडिच्छइ वा ॥२९॥

अर्थ—जे (पडिलेहणं) पडिलेहण (कुणंतो) करतो सतो (मिहो कहं) परस्पर कथाने (जणवयकहं वा) अथवा देशकथाने तथा उपलक्षणथी स्त्री आदिकनी कथाने (कुणइ) करे, (व) अथवा (पच्चक्खाणं) बीजाने पच्चक्खाण

(देइ) आपे, अथवा (वाएइ) बीजाने वाचना आपे, (वा) अथवा (सयं) पोते (पडिच्छइ) आलावादिकने ग्रहण करे. २९.

पुढवी आउकाए, तेऊ वाऊ वणस्सइ तसाणं । पडिलेहणापमत्तो, छण्हं पि विराहओ होइ ॥३०॥

अर्थ—(पडिलेहणापमत्तो) परस्पर कथादिके करीने पडिलेहणमां प्रमादी थयेलो ते पुरुष (पुढवी) पृथ्वीकाय, (आउकाए) अप्काय, (तेऊ) तेजस्काय, (वाऊ) वायुकाय, (वणस्सइ) वनस्पतिकाय अने (तसाणं) त्रसकाय (छण्हं पि) ए छए कायनो (विराहओ) विराधक (होइ) थाय छे. प्रमादी साधु कुंभार विगेरेनी शाळामां रह्यो होय तो ते त्यां कदाच जळ भरेलो घडो विगेरे पण ढोळी नांखे, तेना जळवडे माटी, अग्नि, बीज अने कुंथु आदिकना जीवो उपद्रव पामे छे अने ज्यां अग्नि होय त्यां वायु अवश्य होय छे, तेथी छए कायनी विराधना संभवे छे, तेथी करीने पडिलेहणने वखते हिंसानुं कारण होवाथी परस्पर कथादिक करवी नहीं. ३०.

पुढवी आउकाए, तेऊ वाऊ वणस्सइ तसाणं । पडिलेहणा आउत्तो, छण्हं पि आराहओ होइ ॥३१॥

अर्थ—(पडिलेहणा आउत्तो) पडिलेहण करवामां आयुक्त–सावधान एटले प्रमाद रहित एवो साधु (पुढवी) पृथ्वीकाय, (आउकाए) अप्काय, (तेऊ) तेजस्काय, (वाऊ) वायुकाय, (वणस्सइ) वनस्पतिकाय अने (तसाणं) त्रसकाय (छण्हं पि) ए छए कायनो (आराहओ) आराधक (होइ) थाय छे. ३१.

तइआए पोरिसीए, भत्तपाणं गवेसए । छण्हमन्नयरागम्मि, कारणम्मि समुट्ठिए ॥ ३२ ॥

अर्थ—(तइआए) त्रीजी (पोरिसीए) पोरसीए (छण्हं) छमांथी (अन्नयरागम्मि) कोइ पण एक (कारणम्मि) कारण (समुट्ठिए) प्राप्त थये सते (भत्तपाणं) भात पाणीनी—आहारनी (गवेसए) गवेषणा करे—शोध करे. अहीं त्रीजी पोरसीए भातपाणीनी गवेषणा कही ते उत्सर्ग मार्गे कही छे, अन्यथा स्थविरकल्पीने योग्य अवसरे ज भातपाणीनी गवेषणा करवानी छे. ३२.

हवे आहार करवानां छ कारणो बतावे छे.—

वेअणवेआवच्चे, इरिअट्ठाए अ संजमट्ठाए । तह पाणवत्तिआए, छट्ठं पुण धम्मचिंताए ॥ ३३ ॥

अर्थ—(वेअण) क्षुधा पिपासादिक वेदनाने दूर करवा माटे १, (वेआवच्चे) वैयावच्च करवा माटे, केमके क्षुधादिकथी बाधा पामेलो होय तो वैयावच्च करी शके नहीं माटे २, (इरिअट्ठाए अ) ईर्यासमितिने अर्थे, क्षुधादिकथी व्याकुळ थयेलो चक्षुवडे जोइ शकतो नथी तेथी तेने ईर्यासमिति साचववी दुष्कर थाय माटे ३, तथा (संजमट्ठाए) संयम पाळवाने माटे, आहारादिक विना कच्छ, महाकच्छादिकनी जेम संयम पाळवुं दुष्कर थाय माटे ४, (तह) तथा (पाणवत्तिआए) प्राणवृत्तिने माटे एटले प्राणना रक्षणने माटे, आयुष्य पूर्ण थये सते ज प्राणनो त्याग करवो युक्त छे, अन्यथा आत्महत्यानो दोष लागे छे, तेथी जीवित राखवा माटे ५, (छट्ठं पुण) तथा छट्ठं कारण (धम्मचिंताए) धर्मना चिंतवन

माटे-धर्मध्यानने निमित्ते एटले क्षुधादिकथी दुर्बळ थयेलाने दुर्ध्याननो संभव छे तेथी धर्मध्यान थइ शकतुं नथी. ६. आ छ कारणे भातपाणीनी गवेषणा करवी. ३३.

जे कारणोए भातपाणीनी गवेषणा न करवी, ते कारणो कहे छे.—

निग्गंथो धिइमंतो, निग्गंथी वि न करिज्ज छहिं चेव। ठाणेहिं तु इमेहिं, अणतिकमणा य से होई ॥३४॥

अर्थ—(धिइमंतो) धृतिमान एटले धर्मना आचरण प्रत्ये स्थिरतावाळा (निग्गंथो) साधुए तथा (निग्गंथी वि) साध्वीए पण (छहिं चेव) छ कारणे (न करिज्ज) भातपाणीनी गवेषणा करवी नहीं. (य) कारण के (इमेहिं) आ (ठाणेहिं तु) स्थानोए करीने (से) ते साधु तथा साध्वीने (अणतिकमणा) संयमयोगनो अनतिक्रम (होई) थाय छे-संयमयोगनुं उल्लंघन थतुं नथी अर्थात् संयमयोग बराबर पळाय छे, अन्यथा तेनो अतिक्रम संभवे छे. ३४.

ते छ स्थानोने ज कहे छे.—

आयंके उवसग्गे, तितिक्खया बंभचेरगुत्तीसु। पाणिदयातवहेउं, सरीरवोच्छेअणट्ठाए ॥ ३५ ॥

अर्थ—(आयंके) ज्वरादिक व्याधिने विषे-व्याधि होय त्यारे १, (उवसग्गे) दिव्यादिक उपसर्गने विषे-उपसर्ग थतो होय त्यारे अथवा व्रतभंग करवा माटे स्वजनादिके करेला उपसर्ग वखते २, (बंभचेरगुत्तीसु) ब्रह्मचर्यनी गुप्तिने (तितिक्खया) सहन करवा माटे, कारण के जो आहार करवाथी मनमां विकार उत्पन्न थाय तो आहारनो त्याग कर्या

विना ब्रह्मचर्य पळी शके नहीं ३, (पाणिदयातवहेउं) प्राणीनी दयाने कारणे एटले वर्षादिक ऋतुमां अप्कायादिक जीवोनी रक्षाने माटे ४, तथा उपवासादिक तपने माटे ५, तथा (सरीरवोच्छेअणट्ठाए) आयुष्यनी समाप्तिमां शरीरनो त्याग करवा माटे उचित काळे अनशन करती वखते ६, आ छ कारणे भात पाणीनी गवेषणा करवी नहीं–तेनो त्याग करवो. ३५.

भात पाणीनी गवेषणा करतां क्या विधिवडे केटला क्षेत्र सुधी अटन करवुं ? ते कहे छे.—

अवसेसं भंडगं गिज्झा, चक्खुसा पडिलेहए। परमद्धजोअणाओ, विहारं विहरए मुणी ॥ ३६ ॥

अर्थ—(अवसेसं) समग्र (भंडगं) उपकरण (गिज्झा) ग्रहण करीने तेने (चक्खुसा) चक्षुवडे जोइने पछी (पडिलेहए) तेनी पडिलेहणा करे. पछी ते सर्व उपधि लइने (परं) उत्कृष्टथी (अद्धजोअणाओ) अर्ध योजन एटले बे क्रोश प्रमाण (विहारं) क्षेत्र सुधी (मुणी) मुनि (विहरए) विचरे एटले भातपाणीनी गवेषणा माटे पर्यटन करे. ३६.

आ प्रमाणे विचरी, उपाश्रयमां आवी, गुरु पासे आलोचनादिक पूर्वक भोजनादिक करी पछी शुं करवुं ? ते कहे छे—

चउत्थीए पोरिसीए, निक्खवित्ताण भायणं। सज्झायं च तओ कुज्जा, सव्वभावविभावणं ॥ ३७ ॥

अर्थ—(चउत्थीए) चोथी (पोरिसीए) पोरसीए (भायणं) भाजन एटले पात्रोने प्रत्युपेक्षणा पूर्वक तथा उपलक्षणथी उपधिने पण प्रतिलेखना करवा पूर्वक (निक्खवित्ताण) स्थानके मूकीने (तओ) त्यारपछी (सव्वभावविभा-

यथं) जीवादिक सर्व पदार्थोने प्रकाश करनार (सज्झायं च) स्वाध्यायने (कुज्जा) करे. २७.

पोरिसीए चउब्भाए, वंदित्ताण तओ गुरुं । पडिक्कमित्ता कालस्स, सिज्जं तु पडिलेहए ॥ ३८ ॥

अर्थ—(तओ) त्यारपछी मुनि (पोरिसीए) चोथी पोरसीनो (चउब्भाए) चोथो भाग बाकी रहे त्यारे (गुरुं) गुरुने (वंदित्ताण) वांदीने (कालस्स) काळनुं (पडिक्कमित्ता) प्रतिक्रमण करीने पछी (सिज्जं तु) शय्याने एटले वसतिने (पडिलेहए) पडिलेहे–पडिलेहण करे. ३८.

पासवणुच्चारभूमिं च, पडिलेहिज्ज जयं जई । काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ३९ ॥

अर्थ—(जई) साधु (जयं) सर्व आरंभ रहित यत्ने (पासवणुच्चारभूमिं) प्रस्रवणभूमिने अने उच्चारभूमिने अर्थात् ते बन्नेना बार बार स्थंडिलोने (च) चशब्दथी काळभूमिना त्रण स्थंडिलने (पडिलेहिज्ज) पडिलेहे. आ प्रमाणे दिनकृत्य कह्युं. हवे रात्रिनुं कृत्य कहे छे.—(तओ) त्यारपछी (सव्वदुक्खविमोक्खणं) सर्व दुःखने–पापने नाश करनार (काउस्सग्गं) कायोत्सर्गने (कुज्जा) करे. ३९.

देसिअं च अईआरं, चिंतिज्ज अणुपुव्वसो । नाणे अ दंसणे चेव, चरित्तम्मि तहेव य ॥ ४० ॥

अर्थ—ते कायोत्सर्गमां रह्यो थको साधु (नाणे अ) ज्ञानने विषे, तथा (दंसणे चेव) दर्शनने विषे, (तहेव य) तेम ज वळी (चरित्तम्मि) चारित्रने विषे (अणुपुव्वसो) अनुक्रमे एटले प्रातःकाळना प्रतिक्रमणमां प्रथम मुखवस्त्रिकानी

पडिलेहण करी त्यारथी आरंभीने आ कायोत्सर्ग सुधी अनुक्रमे (देसिअं च) दिवस संबंधी (अईआरं) अतिचारने (चिंतिज्ज) चिंतवे. ४०.

पारिअकाउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरुं । देसिअं तु अईआरं, आलोइज्ज जहक्कमं ॥ ४१ ॥

अर्थ—(तओ) अतिचार चिंतव्या पछी (पारिअकाउस्सग्गो) कायोत्सर्गने पारी (गुरुं) गुरुने (वंदित्ताण) द्वादशावर्त वंदन करीने (देसिअं तु) दिवस संबंधी (अईआरं) चिंतवेला अतिचारने (जहक्कमं) अनुक्रमे (आलोइज्ज) आलोचे–गुरु पासे प्रगट करे. ४१. पछी

पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वंदित्ताण तओ गुरुं । काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ४२ ॥

अर्थ—(पडिक्कमित्तु) प्रतिक्रमण करीने एटले श्रमणसूत्रने कहीने अपराधना स्थानोथी पाछा फरीने (निस्सल्लो) माया शल्यादिक शल्य रहित थइने (तओ) त्यारपछी (गुरुं) गुरुने (वंदित्ताण) वंदन पूर्वक अब्भुट्ठिउ खमावीने तथा वांदीने (तओ) त्यारपछी (सव्वदुक्खविमोक्खणं) सर्व दुःखनो नाश करनार (काउस्सग्गं) कायोत्सर्गने एटले ज्ञान, दर्शन चारित्रनी शुद्धिने माटे त्रण कायोत्सर्गने (कुज्जा) करे. ४२.

पारियकाउस्सग्गो, वंदित्ताणं तओ गुरुं । थुइमंगलं च काउं, कालं संपडिलेहए ॥४३॥

अर्थ—(पारिअकाउस्सग्गो) कायोत्सर्ग पारीने (तओ) पछी (गुरुं) गुरुने (वंदित्ताणं) वांदीने (थुइमंगलं च)

सिद्धस्तवरूप तथा श्रथ स्तुतिरूप स्तुतिमंगळ (काउं) करीने एटले नमोस्तु वर्द्धमानाय कहीने (कालं) प्रादोषिक कालने (संपडिलेहए) पडिलेहे तथा उपलक्षणथी ग्रहण करे. ४३.

पढमं पोरिसि सज्झायं. बिईअं झाणं झिआयइ । तईआए निद्दमोक्खं तु, सज्झायं तु चउत्थीए ॥४४॥

अर्थ—(पढमं) पहेली (पोरिसि) पोरसीए (सज्झायं) स्वाध्याय करे, (बिइअं) बीजी पोरसीए (झाणं) धर्मध्यान (झिआयइ) ध्यावे, (तइआए) त्रीजी पोरसीए (निद्दमोक्खं तु) निद्राने छूटी मूके–निद्रा ले, (तु) तथा (चउत्थीए) चोथी पोरसीए (सज्झायं) फरीथी स्वाध्याय करे. आ गाथा प्रथम कही गया छे, छतां अहीं फरीथी लखी छे. ते वारंवार उपदेश आपवामां गुरुए प्रयास गणवो नहीं, एम जणाववा माटे लखी छे. ४४.

शी रीते चोथी पोरसीए स्वाध्याय करवो ? ते कहे छे.—

पोरिसीए चउत्थीए, कालं तु पडिलेहिआ । सज्झायं तु तओ कुज्जा, अबोहिंतो असंजए ॥ ४५ ॥

अर्थ—(चउत्थीए) चोथी (पोरिसीए) पोरसीए (कालं तु) वैरात्रिक कालने (पडिलेहिआ) पडिलेहीने तथा ग्रहण करीने (तओ) त्यारपछी (असंजए) असंयतिओने (अबोहिंतो) नहीं जगाडतो—मौनपणे (सज्झायं तु) स्वाध्यायने (कुज्जा) करे. ४५.

पोरिसीए चउब्भाए, वंदित्ताण तओ गुरुं । पडिक्कमित्ता कालस्स, कालं तु पडिलेहए ॥ ४६ ॥

अर्थ—(तओ) त्यारपछी (पोरिसीए) चोथी पोरसीनो (चउब्भाए) चोथो भाग बाकी रहे त्यारे (गुरुं) गुरुने (वंदित्ताण) वांदीने (कालस्स) वैरात्रिक काळने (पडिक्कमित्ता) पडिकमीने (कालं तु) प्राभातिक काळने (पडिलेहए) पडिलेहे तथा काळ ग्रहण करे. अहीं मध्यम क्रमनी अपेक्षाए त्रण काळ ग्रहण कह्यां छे, अन्यथा उत्सर्ग मार्गे उत्कृष्टथी चार अने जघन्यथी त्रण काळ ग्रहण छे. अने अपवाद मार्गे उत्कृष्टथी बे अने जघन्यथी एक पण काळ ग्रहण कर्युं छे. आ काळग्रहणनो विधि आवश्यकनी वृत्ति थकी जाणवो. ४६.

आगए कायवुस्सग्गे सव्वदुक्खविमोक्खणे । काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥४७॥

अर्थ—(सव्वदुक्खविमोक्खणे) सर्व दुःखनो नाश करनार (कायवुस्सग्गे) कायोत्सर्गनो काळ (आगए) प्राप्त थये सते (तओ) त्यारपछी (सव्वदुक्खविमोक्खणं) सर्व दुःखनो नाश करनार (काउस्सग्गं) कायोत्सर्गने (कुज्जा) करे. अहीं ' सर्व दुःखनो नाश करनार ' ए कायोत्सर्गनुं विशेषण वारंवार आप्युं छे तेनो हेतु कायोत्सर्ग मोटी निर्जरानुं कारण छे एम जणाववानो छे. वळी अहीं कायोत्सर्ग शब्दे करीने ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी शुद्धि माटे पण त्रण कायोत्सर्ग करवाना छे, तेमां त्रीजा कायोत्सर्गमां रात्रि संबंधी अतिचारनुं चिंतवन करवानुं छे. ४७.

ते विषे ज कहे छे.—

राइअं च अईआरं, चिंतिज्ज अणुपुव्वसो । नाणम्मि दंसणम्मि, चरित्तम्मि तवम्मि य ॥ ४८ ॥

अर्थ—त्रीजा काउसग्गमां (नाणम्मि) ज्ञानने विषे, (दंसणम्मि) दर्शनने विषे, (चरित्तम्मि) चारित्रने विषे, (तवम्मि) तपने विषे, (य) यशब्दथी वीर्यने विषे लागेला (अणुपुव्वसो) अनुक्रमे (राइअं च) रात्रि संबंधी (अईआरं) अतिचार (चिंतिज) चिंतववा. बाकीना कायोत्सर्गोमां चतुर्विंशतिस्तवनुं चिंतवन करवानुं छे ए प्रसिद्ध ज छे, तेथी कह्युं नथी. ४८.

पारिअकाउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरुं। राइअं तु अईआरं, आलोएज्ज जहक्कमं ॥४९॥

अर्थ—(पारिअकाउस्सग्गो) कायोत्सर्गने पारीने (तओ) त्यारपछी (गुरुं) गुरुने (वंदित्ताण) वांदीने (जहक्कमं) अनुक्रमे (राइअं तु) रात्रि संबंधी (अईआरं) अतिचारने (आलोएज्ज) आलोचे-प्रकाश करे. ४९.

पडिक्कमित्तु निस्सल्लो, वंदित्ताण तओ गुरुं। काउस्सग्गं तओ कुज्जा, सव्वदुक्खविमोक्खणं ॥ ५० ॥

अर्थ—(पडिक्कमित्तु) पडिकमीने—श्रमणसूत्र कहीने एटले अपराधथी पाछा फरीने (निस्सल्लो) शल्य रहित थइने (तओ) त्यारपछी (गुरुं) गुरुने (वंदित्ताण) वांदीने एटले वंदन पूर्वक गुरुने अब्भुट्ठिओवडे खमावीने पछी फरीथी वांदीने (तओ) त्यारपछी (सव्वदुक्खविमोक्खणं) सर्व दुःखनो नाश करनार (काउस्सग्गं) कायोत्सर्गने (कुज्जा) करे. ५०.

कायोत्सर्गमां रहीने शुं करे ? ते कहे छे.—

किं तवं पडिवज्जामि ?, एवं तत्थ विचिंतए। काउस्सग्गं तु पारित्ता, वंदई उ तओ गुरुं ॥ ५१ ॥

अर्थ—आजे हुं (किं तवं) कयो तप (पडिवज्जामि) अंगीकार करुं ? (एवं) ए प्रमाणे (तत्थ) ते कायोत्सर्गने विषे

(विचिंतए) चिंतववुं. श्रीमहावीरस्वामी छ मासनो तप करीने पण विचर्या हता, तो शुं हुं पण तेटलो तप करवा शक्तिमान छुं ? तेथी एक दिवस ओछो तप करवा शक्तिमान छुं ? ए रीते बे, त्रण विगेरे यावत् २९ दिवस ओछा करी विचारवुं, छेवट पांच मास, चार मास विगेरे तप करवानुं चिंतववुं, ए रीते उतरता उतरता एक मास, ओगणत्रीश दिवस, अठ्ठावीश दिवस, छेवटे एक दिवस, एकाशन, पोरसी अने छेवट नवकारसी सुधी विचारवुं. जे तप करवो होय ते नकी करवुं. (तओ) त्यारपछी (काउस्सग्गं तु) कायोत्सर्गने (पारित्ता) पारीने (गुरुं) गुरुने (वंदई उ) वांदे. ५१.

उपरनी गाथाना उत्तरार्धमां कहेला अर्थनो ज अनुवाद करता सता शेष सामाचारीने कहे छे.—

पारिअकाउस्सग्गो, वंदित्ताण तओ गुरुं । तवं संपडिवज्जित्ता, करिज्ज सिद्धाण संथवं ॥५२॥

अर्थ—(पारिअकाउस्सग्गो) कायोत्सर्गने पारीने (तओ) त्यारपछी (गुरुं) गुरुने (वंदित्ताण) वांदीने (तवं) कायोत्सर्गमां चिंतवेला-निर्णीत करेला तपने (संपडिवज्जित्ता) अंगीकार करीने (सिद्धाण) सिद्धोना (संथवं) त्रण स्तुतिरूप विशाललोचन संस्तवने (करिज्ज) करे. त्यारपछी ज्यां ज्यां शाश्वत अशाश्वत चैत्यो छे तेने वंदना करे—सकलतीर्थ कहे. ५२.

हवे आ अध्ययनने समाप्त करे छे.—

एसा सामायारी, समासेण वियाहिआ । जं चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा संसारसागरं त्ति बेमि ॥५३॥

अर्थ—(एसा) आ (सामायारी) सामाचारी (समासेण) संक्षेपे करीने (वियाहिआ) कही छे, (जं) जे सामा-

चारीने (चरित्ता) आचरीने-पाळीने (बहू जीवा) घणा जीवो (संसारसागरं तिण्णा) संसाररूपी सागरने तरी गया छे, तरे छे अने तरशे. (त्ति बेमि) ए प्रमाणे हुं कहुं छुं, एम सुधर्मास्वामीए जंबुस्वामीने कह्युं. ५३.

इति षड्विंशमध्ययनम्. २६.

अथ खलुंकीय नामनुं सत्तावीशमुं अध्ययन. २७.

छव्वीशमा अध्ययनमां सामाचारी कही. ते अशठपणाए करीने ज पाळी शकाय छे, ते अशठता पण तेना विपक्षभूत शठतानो त्याग करवाथी ज प्राप्त थाय छे, तेथी आ अध्ययनमां दृष्टांत द्वारा शठतानुं स्वरूप कहे छे.—

थेरे गणधरे गग्गे, मुणी आसि विसारए । आइण्णे गणिभावम्मि, समाहिं पडिसंधए ॥ १ ॥

अर्थ—(थेरे) स्थविर एटले अस्थिर जीवोने धर्मने विषे स्थिर करनार, (गणधरे) गच्छने धारण करनार, (विसारए) सर्व शास्त्रमां कुशळ, (आइण्णे) आचार्यना गुणोथी व्याप्त-सहित तथा (गणिभावम्मि) आचार्यपदने विषे रहेला (गग्गे) गर्ग नामना (मुणी) सर्वसावद्य विरतिने अंगीकार करनार मुनि (आसि) हता. ते मुनि (समाहिं) समाधिने (पडिसंधए) सांधनारा हता एटले जो कुशिष्योए पोताना चित्तनी समाधिनो भंग कर्यो होय तो तेने पाछा सांधी लेनारा हता. १.

ते आचार्य समाधिने सांधता सता शुं विचारता हता ? ते कहे छे.—

वहणे वहमाणस्स, कंतारं अइवत्तइ । जोए अ वहमाणस्स, संसारे अइवत्तइ ॥ २ ॥

अर्थ—(वहणे) गाडी आदिक वाहनमां (वहमाणस्स) जोडेला विनीत वृषभ अश्वादिकने हांकता एवा पुरुषनुं (कंतारं) अरण्य (अइवत्तइ) सुखेथी पोतानी मेळे ज उल्लंघन थाय छे, ते ज रीते (जोए अ) योगने विषे एटले संयमव्यापारने विषे (वहमाणस्स) जोडेला सुशिष्योने प्रवर्तावनार आचार्यादिकनो (संसारे) संसार (अइवत्तइ) पोतानी मेळे ज सुखेथी उल्लंघन थाय छे. कारण के शिष्योने विनयवाळा जोवाथी पोताने विशेष समाधि थाय छे. २.

आ प्रमाणे पोतानी समाधिने माटे विनीत शिष्यनुं स्वरूप विचारी हवे अविनीतनुं स्वरूप विचारे छे.—

खलुंके जो उ जोएइ, विहम्माणो किलिस्सइ । असमाहिं च वेदेति, तोत्तओ से य भज्जइ ॥ ३ ॥

अर्थ—(उ) तु पुनः (जो) जे पुरुष (खलुंके) अविनीत एटले गळीया वृषभादिकने (जोएइ) रथमां जोडे छे, ते पुरुष (विहम्माणो) अविनीत वृषभादिकने वींधतो एटले मारतो मारतो (किलिस्सइ) क्लेश पामे छे—थाकी जाय छे, अने तेथी करीने ज (असमाहिं च) असमाधिने (वेदेति) वेदे छे—पामे छे, (य) तथा (से) ते हांकनार पुरुषनो (तोत्तओ) तोत्रक एटले हांकवानो परोणो, चाबक विगेरे (भज्जइ) भांगी जाय छे. ३.

तेथी अति क्रोध पामीने ते हांकनार पुरुष शुं करे छे ? ते कहे छे.—

एगं डसइ पुच्छम्मि, एगं विंधइऽभिक्खणं । एगो भंजइ समिलं, एगो उप्पहपट्ठिओ ॥ ४ ॥

अर्थ—(एगं) एक वृषभने पोताना दांतवडे (पुच्छम्मि) पूछडामां (डसइ) करडे छे अने (एगं) एकने (अभिक्खणं) वारंवार (विंधइ) वींधे छे—मारे छे, तेम करवाथी (एगो) एक वृषभ (समिलं) शमिलने—धुसरीनी खीलीने (भंजइ) भांगे छे अने (एगो) एक (उप्पहपट्ठिओ) उन्मार्गे गयेलो थाय छे—उन्मार्गे जाय छे. ४.

एगो पडइ पासेणं, निवेसइ निवज्जइ । उक्कुद्दइ उप्फिडइ, सढे बालगवी वए ॥ ५ ॥

अर्थ—(एगो) एक गळीयो वृषभ (पासेणं) डाबा जमणा पडखे (पडइ) पडे छे—आळोटे छे, (निवेसइ) कोइ बेसी जाय छे, (निवज्जइ) कोइ लांबो थइने सुइ जाय छे, (उक्कुद्दइ) कोइ कूदे छे, (उप्फिडइ) कोइ फाळ मारे छे एटले ठेके छे, (सढे) कोइ शठपणुं—धूर्तपणुं करे छे, (बालगवी वए) कोइ युवान गाय तरफ दोडे छे. ५.

माई मुद्धेण पडइ, कुद्धे गच्छइ पडिपहं । मयलक्खेण चिट्ठाइ, वेगेण य पहावइ ॥ ६ ॥

अर्थ—(माई) मायावी एवो बीजो वृषभ तो (मुद्धेण) मस्तकवडे (पडइ) पडे छे एटले पोताने अशक्त देखाडतो माथाभर पडे छे, (कुद्धे) कोइ क्रोध पाम्यो सतो (पडिपहं) पाछे मार्गे—पाछे पगले (गच्छइ) जाय छे, (मयलक्खेण) कोइ मरेलानी जेम (चिट्ठाइ) पड्यो रहे छे, (वेगेण य) तथा कोइ वेगथी (पहावइ) दोडे छे. ६.

छिण्णाले छिंदई सेल्लिं, दुद्दंते भंजई जुगं । से वि अ सुस्सुआइत्ता, उज्जहित्ता पलायइ ॥ ७ ॥

अर्थ—(छिण्णाले) दुष्ट जातिनो कोइ वृषभ (सल्लिं) रज्जुने (छिंदई) तोडी नाखे छे, तथा (दुद्दंते) दुःखे क-

रीने दमी शकाय एवो कोइ वृषभ (जुगं) धुंसरीने (भंजई) भांगी नांखे छे, (से वि अ) वळी ते पण उद्धत वृषभ (सुस्सुआइत्ता) फुंफाडा मारी (उज्जहित्ता) गाडीने तथा स्वामीने उन्मार्गे नांखी (पलायइ) नाशी जाय छे. ७.

आ प्रमाणे दृष्टांतने विचारी हवे दार्ष्टांतिकने विचारे छे.—

खलुंका जारिसा जोज्जा, दुस्सीसा वि हु तारिसा । जोइआ धम्मजाणम्मि, भंजंति धिइदुब्बला ॥८॥

अर्थ—(खलुंका) गळीया वृषभ (जोज्जा) वाहनमां जोडया सता (जारिसा) जेवा प्रकारना होय छे, (दुस्सीसा वि) अविनीत शिष्योपण (तारिसा हु) तेवा ज होय छे. केमके (धिइदुब्बला) दुर्बळ धृतिवाळा तेओ (धम्मजाणम्मि) धर्मरूपी यानमां (जोइआ) जोडया सता एटले धर्मानुष्ठानमां स्थिर कर्या सता पण (भजंति) संयममार्गथी भ्रष्ट थाय छे अने गुरुने क्लेशकारक थाय छे. ८.

धृतिना दुर्बळपणाने ज प्रगट करे छे.—

इड्ढीगारविए एगे, एगेऽत्थ रसगारवे । सायागारविए एगे, एगे सुचिरकोहणे ॥ ९ ॥

अर्थ—(अत्थ) आ कुशिष्यना अधिकारमां (एगे) मारो कोइ अविनीत शिष्य (इड्ढीगारविए) ऋद्धिगौरववाळो छे एटले " धनिक श्रावको मारे आधीन छे अने मारा वस्त्र पात्रादिक उपगरणो उत्तम छे " इत्यादिक माननारो छे, तथा (एगे) कोइ शिष्य (रसगारवे) मधुरादिक रसने विषे गौरववाळो छे तेथी ते ग्लानादिकने आहार लावी आपवामां के

तपस्या करवामां प्रवर्तते नथी. (एगे) कोइ शिष्य (सायागारविए) सात गौरववाळो छे एटले सुखशीळीयो छे तेथी ते अप्रतिबद्ध विहारादिकमां प्रवर्ततो नथी. (एगे) कोइ शिष्य (सुचिरकोहणे) चिरकाळ सुधी क्रोधयुक्त ज रहे छे तेथी कोइपण कार्यमां प्रवर्तते नथी. ९.

भिक्खालसीए एगे, एगे ओमाणभीरुए थद्धे । एगं च अणुसासम्मि, हेऊहिं कारणेहि अ ॥१०॥

अर्थ—(एगे) कोइ शिष्य (भिक्खालसीए) भिक्षा लेवा जवामां आळसु छे, तेथी गोचरीए जतो नथी, (एगे) कोइ शिष्य (ओमाणभीरुए) अपमानथी भीरु छे तेथी भिक्षाने माटे भ्रमण करता छतां पण जेवा तेवाने घेर जवा इच्छतो नथी. (थद्धे) कोइ शिष्य स्तब्ध एटले अहंकारी छे तेथी तेने तेना कदाग्रहथी नम्र करी शकातो नथी. (एगं च) अने कोइ शिष्यने (हेऊहिं) हेतुवडे (कारणेहि अ) तथा कारणोवडे (अणुसासम्मि) हुं शीखामण आपुं छुं, तोपण ते समजतो नथी, तेने हवे केवी रीते समजाववो ? १०.

सो वि अंतरभासिल्लो, दोसमेव पकुव्वइ । आयरिआणं तं वयणं, पडिकूलेइ अभिक्खणं ॥ ११ ॥

अर्थ—(सो वि) ते शिक्षा अपातो कुशिष्य पण (अंतरभासिल्लो) वचे बोलनारो एटले गुरुना वचनमां वचे बोलीने (दोसमेव) गुरुना दोषने ज (पकुव्वइ) करे छे—काढे छे, अने (आयरिआणं) आचार्य एवा अमारा (तं वयणं) ते शिक्षाना वचनने (अभिक्खणं) वारंवार (पडिकूलेइ) प्रतिकूळ आचरण करे छे एटले कुयुक्तिए करीने तेथी विपरीत पणे वर्ते छे. ११.

न सा ममं विआणाइ, न वि सा मज्झ दाहिइ । निग्गया होहिई मन्ने, साहू अन्नोऽत्थ वच्चउ॥१२॥

अर्थ—" अमुक श्राविकाने घेर जइ त्यांथी ग्लानादिकने माटे पथ्यादिक लइ आव " ए प्रमाणे कदाच ते कुशिष्यने अमे कह्युं होय, त्यारे ते एवो उत्तर आपे छे के—(सा) ते श्राविका (ममं) मने (न विआणाइ) ओळखती नथी. (सा) ते श्राविका (मज्झ) मने (न वि दाहिइ) पथ्यादिक आपशे पण नहीं. (निग्गया) ते श्राविका तेने घेरथी क्यांइ बीजे स्थाने गयेली (होहिई) हशे एम (मन्ने) हुं मानुं छुं. (अत्थ) आ कार्यमां (अन्नो साहू) बीजो साधु (वच्चउ) जाओ—बीजाने मोकलो. शुं हुं एक ज साधु छुं के जेथी मने ज काम बतावो छो ? बीजा घणा छे, तेने मोकलो. इत्यादि ते कुशिष्य बोले छे. १२.

पेसिआ पलिउंचंति, ते परियंति समंतओ । रायविट्ठिं व मन्नंता, करिंति भिउडिं मुहे ॥१३॥

अर्थ—(पेसिआ) कोइ कार्यने माटे मोकल्या एवा (ते) ते कुशिष्यो (पलिउंचंति) अपलाप करे छे एटले " ते कार्य केम न कर्युं ? " एम अमे तेने पूछीए त्यारे ते खोटा जवाब आपे छे के–" तमे ते काम मने क्यारे बताव्युं हतुं ? " अथवा " अमे तो त्यां गया हता, पण ते श्राविकाने अमे तो जोइ नहीं." इत्यादि. तथा ते कुशिष्यो (समंतओ) चोतरफ–सर्व दिशाओमां (परियंति) भम्या करे छे, परंतु अमारी पासे उभा पण रहेता नथी. " आनी पासे रहेवाथी वळी आनुं कांइक काम करवुं पडशे. " एम धारीने छेटा छेटा फरे छे. तथा कदाचित् कांइक कार्य करवा प्रवर्ताव्या होय तो (राय-

विट्ठि व) राजानी वेठ जेवुं (मन्नंता) मानता सता (मुहे) मुखपर (भिउडिं) भ्रुकुटि (करिंति) करे छे-चडावे छे, अर्थात् इर्ष्याने जणावनारी बीजी पण कुचेष्टाओ करे छे. १३.

वाइआ संगहिआ चेव, भत्तपाणेण पोसिआ । जायपक्खा जहा हंसा, पक्कमंति दिसोदिसं ॥ १४ ॥

अर्थ—(वाइआ) सूत्र भणाव्या, अर्थ भणाव्या अर्थात् सूत्रार्थ भणावीने पंडित कर्या, तथा (संगहिआ) संग्रह कर्या एटले अमारी निश्रामां राख्या, (चेव) चशब्दथी अमे पोते ज दीक्षित कर्या, तथा (भत्तपाणेण) भातपाणीवडे (पोसिआ) पुष्ट कर्या-पोष्या, तो पण ते कुशिष्यो (जायपक्खा) उत्पन्न थइ छे-आवी छे पांख जेने एवा (हंसा जहा) हंसोनी जेम (दिसोदिसं) सर्व दिशामां (पक्कमंति) फरे छे-पोतानी इच्छा प्रमाणे विहार करे छे. प्रथम एक एक शिष्यनी वात कहेता हता, अने अहीं बहुवचन लख्युं छे, ते आवा कुशिष्यो घणा होय छे एवुं जणाववा माटे छे. १४.

आ रीते कुशिष्यनुं स्वरूप विचार्युं. हवे तेमनाथी ज असमाधिने तथा खेदने पाम्या सता ते गर्ग आचार्ये शुं कर्युं ? ते कहे छे.—

अह सारही विचिंतेइ, खलुंकेहिं समागओ । किं मज्झ दुट्ठसीसेहिं, अप्पा मे अवसीअइ ॥ १५ ॥

अर्थ—(अह) हवे (खलुंकेहिं) गळीया वृषभनी जेवा कुशिष्योथी (समागओ) संयुक्त एवा (सारही) धर्मयानना सारथि गर्गाचार्य (विचिंतेइ) विचार करे छे के-(मज्झ) मारे (दुट्ठसीसेहिं) आवा दुष्ट शिष्योए करीने (किं) शुं फळ छे ? उलटो (मे) मारो (अप्पा) आत्मा (अवसीअइ) सीदाय छे. आ कुशिष्योने प्रेरणा करवामां व्यग्र रहेवाथी मारा आत्मकार्यनी हानि थाय छे, माटे तेमनो त्याग करी मारे उद्यत विहारे विचरवुं सारुं छे. १५.

अहीं कोइ शंका करे के-तेओने प्रेरणा करतां वच्चे वच्चे पोतानुं आत्मकार्य पण केम साधी न शकाय? ते उपर कहे छे.—

जारिसा मम सीसा उ, तारिसा गलिगद्दहा। गलिगद्दहे चइत्ता णं, दढं पगिण्हई तवं ॥ १६ ॥

अर्थ—(जारिसा) जेवा (मम) मारा (सीसा उ) शिष्यो छे, (तारिसा) तेवा कदाच (गलिगद्दहा) गळीया गधेडा होय तो होय, ते सिवाय बीजो कोइ तेमनी उपमाने पामे तेवो नथी. अहीं अत्यंत दुष्टता जणाववा माटे गर्दभ शब्द लख्यो छे. ते गधेडा स्वाभाविक रीते अत्यंत प्रेरणा करवाथी ज चाले छे, तेथी तेमनी प्रेरणामां ज समग्र काळ चाल्यो जाय छे, परंतु वच्चे आत्मसाधन करवानो समय रहेतो नथी. आ रीते विचारीने ते गर्गाचार्य (गलिगद्दहे) गळीया गधेडा जेवा शिष्योनो (चइत्ता णं) त्याग करीने (दढं) दृढ-उग्र एवा (तवं) तपने-विहारने (पगिण्हई) ग्रहण करता हवा. १६.

ए ज वातने कहे छे.—

मिउ मद्दवसंपन्ने, गंभीरे सुसमाहिए। विहरइ महिं महप्पा, सीलभूएण अप्पणा त्ति बेमि ॥ १७ ॥

अर्थ—(मिउ) बाह्यवृत्तिथी कोमळ एटले विनयवाळा, (मद्दवसंपन्ने) मनवडे पण मार्दवयुक्त, (गंभीरे) गंभीरतावाळा, (सुसमाहिए) सारा समाधिवाळा तथा (सीलभूएण) शीलने-चारित्रने पामेला एवा (अप्पणा) आत्मावडे ओळखाता (महप्पा) ते महात्मा गर्गाचार्य अविनीत शिष्योने तजीने (महिं) पृथ्वीपर (विहरइ) एकला विचरता हवा. (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं. ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. १७.

इति सप्तविंशमध्ययनम्. २७.

अथ मोक्षमार्गगति नामनुं अठावीशमुं अध्ययन. २८.

प्रथमना अध्ययनमां शठतानो त्याग करी अशठतानो स्वीकार करवानुं कह्युं. हवे शठतारहित पुरुष सुखे करीने मोक्षमार्गने पामी शके छे, तेथी आ मोक्षमार्गगति नामनुं अध्ययन कहेवाय छे. तेनुं आ प्रथम सूत्र छे.—

मोक्खमग्गगइं तच्चं, सुणेह जिणभासिअं । चउकारणसंजुत्तं, नाणदंसणलक्खणं ॥ १ ॥

अर्थ—श्रीसुधर्मास्वामी जंबूस्वामी विगेरे शिष्योने कहे छे के—' हे मुनिओ ! (जिणभासिअं) श्रीजिनेश्वरे कहेली, (चउकारणसंजुत्तं) चार कारणोए सहित, (नाणदंसणलक्खणं) ज्ञान अने दर्शन छे लक्षण जेनुं एवी तथा (तच्चं) सत्य एवी (मोक्खमग्गगइं) मोक्षमार्गनी गतिने (सुणेह) तमे सांभळो. अहीं मोक्ष एटले समग्र कर्मनो क्षय, तेनो मार्ग ज्ञानादिक ते मोक्षमार्ग कहेवाय छे, ते मोक्षमार्गे करीने जे गति ते मोक्षमार्गगति कहेवाय छे. १.

हवे ते मोक्षमार्गनां चार कारणो कहे छे.—

णाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा । एस मग्गु त्ति पण्णत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं ॥ २ ॥

अर्थ—(णाणं च) ज्ञान, (दंसणं चेव) दर्शन, (चरित्तं च) चारित्र, (तहा) तथा (तवो) तप, (एस) ए चार (मग्गु त्ति) मार्ग छे एम (वरदंसिहिं) श्रेष्ठ छे दर्शन जेनुं एटले केवळदर्शी एवा (जिणेहिं) तीर्थंकरोए (पण्णत्तो)

कह्युं छे. अहीं चारित्रनी अंदर तपनो समावेश थाय छे, तोपण तप ज कर्मक्षयमां उत्तम कारण छे एम जणाववा माटे तपने जूदो कह्यो छे. २.

आ ज ज्ञानादिकनो अनुवाद करवा पूर्वक तेनुं फळ बतावे छे.—

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा । एअं मग्गमणुपत्ता, जीवा गच्छंति सोग्गइं ॥ ३ ॥

अर्थ—(नाणं च) ज्ञान, (दंसणं चेव) दर्शन, (चरित्तं च) चारित्र, (तहा) तथा (तवो) तप, (एअं) आ चार प्रकारना (मग्गं) मार्गने (अणुपत्ता) पामेला (जीवा) जीवो (सोग्गइं) मुक्तिरूपी सद्गतिने (गच्छंति) पामे छे. ३.

ज्ञानादिकने ज अनुक्रमे कहे छे.—

तत्थ पंचविहं नाणं, सुअं आभिणिबोहिअं । ओहिणाणं च तइअं, मणनाणं च केवलं ॥ ४ ॥

अर्थ—(तत्थ) तेमां (नाणं) ज्ञान (पंचविहं) पांच प्रकारनुं छे. ते आ प्रमाणे—(सुअं) श्रुतज्ञान, (आभिणिबोहिअं) आभिनिबोधिक-मतिज्ञान, (ओहिणाणं च) तथा अवधिज्ञान (तइअं) ए त्रीजुं छे, (मणनाणं) मनपर्याय ज्ञान, (च) अने (केवलं) केवळज्ञान. श्रीनंदीसूत्र विगेरेमां मतिज्ञान पहेलुं अने पछी श्रुतज्ञान बीजुं कह्युं छे, अने अहीं श्रुतज्ञान पहेलुं कह्युं, तेनुं कारण ए छे जे बाकीनां सर्व ज्ञानोना स्वरूपनुं ज्ञान प्राये श्रुतथी ज थइ शके छे, तेथी श्रुतज्ञाननुं मुख्यपणुं बताववा माटे श्रुतज्ञान पहेलुं कह्युं छे. ४.

हवे ते ज्ञाननो विषय कहे छे.—

एअं पंचविहं नाणं, दव्वाण य गुणाण य । पज्जवाणं च सव्वेसिं, नाणं नाणीहिं देसिअं ॥ ५ ॥

अर्थ—(एअं) आ (पंचविहं) पांच प्रकारनुं (नाणं) ज्ञान (नाणीहिं) ज्ञानीओए एटले तीर्थंकरोए (सव्वेसिं) सर्व (दव्वाण य) जीवादिक द्रव्योने (गुणाण य) रूपादिक गुणोने, अने तेना (पज्जवाणं च) नवापणुं जूनापणुं विगेरे अनुक्रमे थनारा पर्यायोने (नाणं) जाणनारुं छे एम (देसिअं) कह्युं छे. अहीं केवळज्ञाननी अपेक्षाए सर्व शब्द लख्यो छे. केमके एक केवळज्ञान ज सर्व द्रव्यादिकने जाणे छे, अने ते सिवायनां बीजां ज्ञानो तो नियमित पर्यायोने ज जाणी शके छे. ५.

ज्ञाननो विषय द्रव्यादिक छे एम कह्युं तेथी द्रव्यादिनुं लक्षण कहे छे.—

गुणाणमासओ दव्वं, एगदव्वस्सिआ गुणा । लक्खणं पज्जवाणं तु, उभओ अस्सिआ भवे ॥ ६ ॥

अर्थ—(गुणाणं आसओ) रूपादिक गुणोनो जे आश्रय ते (दव्वं) द्रव्य कहेवाय छे, एटले ए द्रव्यनुं लक्षण छे. (एगदव्वस्सिआ) एक द्रव्यने आश्रीने रहेला जे होय ते (गुणा) गुण कहेवाय छे, एटले ते गुणनुं लक्षण छे, (तु) तथा (उभओ अस्सिआ) द्रव्य अने गुण ए बन्नेने आश्रीने जे रहेला (भवे) होय ते (पज्जवाणं) पर्यायोनुं (लक्खणं) लक्षण छे एटले पर्यायो उभयाश्रित छे. ६.

गुणोनो आश्रय ते द्रव्य एम कह्युं, हवे द्रव्यना केटला प्रकार छे ? ते कहे छे.—

धम्मो अहम्मो आगासं, कालो पोग्गलजंतवो । एस लोगु त्ति पंनत्तो, जिणेहिं वरदंसिहिं ॥ ७ ॥

अर्थ—(धम्मो) धर्मास्तिकाय, (अहम्मो) अधर्मास्तिकाय, (आगासं) आकाशास्तिकाय, (कालो) काळ–समयादिक अद्धा, (पोग्गलजंतवो) पुद्गलास्तिकाय अने जीवास्तिकाय. आ छ द्रव्य छे. तथा (एस) ए छ द्रव्यना स्वरूपवाळो ज (लोगु त्ति) आ लोक छे एम (वरदंसिहिं) केवळज्ञानी (जिणेहिं) जिनेश्वरोए (पन्नत्तो) कह्युं छे. ७.

हवे धर्मादिक द्रव्योने ज भेदथी कहे छे.—

धम्मो अहम्मो आगासं, दव्वं इक्किक्कमाहिअं । अणंताणि अ दव्वाणि, कालो पुग्गलजंतवो ॥८॥

अर्थ—(धम्मो) धर्मास्तिकाय, (अहम्मो) अधर्मास्तिकाय, अने (आगासं) आकाशास्तिकाय (दव्वं) ए द्रव्यने जिनेश्वरोए (इक्किक्कं) एक एक ज (आहिअं) कह्यां छे. (कालो) काळ, (पुग्गलजंतवो) पुद्गल अने जीवो (दव्वाणि) ए द्रव्यो (अणंताणि अ) अनंता कह्यां छे. तेमां काळने अतीत अने अनागत काळनी अपेक्षाए अनंत कह्यो छे. ८. (पुद्गल द्रव्यो ने जीवो तो त्रणे काळे अनंता छे.)

हवे छए द्रव्योनां लक्षणो कहे छे.—

गइलक्खणो उ धम्मो, अहम्मो ठाणलक्खणो । भायणं सव्वदव्वाणं, नहं ओगाहलक्खणं ॥ ९ ॥

अर्थ—(गइलक्खणो उ धम्मो) गतिरूप लक्षणवाळो धर्मास्तिकाय छे, एक स्थानेथी बीजे स्थाने जवुं ते गति कहे-

वाय छे तेमां सहायक थवुं ते धर्मास्तिकायनुं लक्षण छे. (ठाणलक्खणो) स्थानरूप लक्षणवाळो (अहम्मो) अधर्म छे, अधर्मास्तिकायनुं लक्षण स्थिति छे, एटले के पोतानी मेळे ज गमन करवामां प्रवर्तेला जीव अने पुद्गळने गतिक्रियामां सहायभूत थाय ते धर्मास्तिकाय छे अने स्थिर रहेनारा परिणामवाळा जीव अने पुद्गळने स्थितिक्रियामां सहायभूत थाय ते अधर्मास्तिकाय छे. तथा (सव्वदव्वाणं) सर्व द्रव्योनो (भायणं) आधार (ओगाहलक्खणं) अवगाहरूप लक्षणवाळुं (नहं) आकाश छे. अवगाह करवामां प्रवर्तेला जीव अने पुद्गळने जे अवकाश आपे ते आकाश कहेवाय छे. ९.

वत्तणालक्खणो कालो, जीवो उवओगलक्खणो । नाणेणं दंसणेणं च, सुहेण य दुहेण य ॥ १० ॥

अर्थ—(वत्तणालक्खणो) वर्तवाना लक्षणवाळो (कालो) काळ छे, काळनुं लक्षण वर्तना-होवापणुं छे, ते काळ वृक्षादिकने पुष्पादिकनी नियमित उत्पत्तिमां कारणरूप छे. तथा (उवओगलक्खणो) मतिज्ञानादिकना उपयोग लक्षणवाळो (जीवो) जीव छे एटले जीवनुं लक्षण उपयोग छे, तेथी करीने ज (नाणेणं) विशेष ग्रहण करनार एवा ज्ञाने करीने, (दंसणेणं च) सामान्य ग्रहण करनार एवा दर्शने करीने, (सुहेण य) सुखने अनुभववावडे करीने तथा (दुहेण य) दुःखने अनुभववावडे करीने ते जीव ओळखाय छे. १०.

हवे शिष्योने अत्यंत दृढ संस्कार थवा माटे कहेला लक्षणने फरीथी कहेवा पूर्वक जीवनां बीजां लक्षण कहे छे.—

नाणं च दंसणं चेव, चरित्तं च तवो तहा । वीरिअं उवओगो अ, एअं जीवस्स लक्खणं ॥ ११ ॥

अर्थ—(नाणं च) ज्ञान, (दंसणं चेव) दर्शन, (चरित्तं च) चारित्र, (तवो) तप, (तहा) तथा (वीरिअं)

वीर्य-सामर्थ्य, अने (उवओगो अ) उपयोग एटले सावधानपणुं (एअं) आ ज्ञानादिक समुदाय ते (जीवस्स) जीवनुं (लक्खणं) लक्षण छे. आ लक्षण बीजा कोइ पण द्रव्यने नहीं होवाथी आ लक्षणवडे जीव बराबर ओळखाय छे. ११.

हवे पुद्गलनुं लक्षण कहे छे.—

सद्दंधयार उज्जोओ, पहा छायाऽऽतवेइ वा । वण्णरसगंधफासा, पुग्गलाणं तु लक्खणं ॥ १२ ॥

अर्थ—(सद्दंधयार) शब्द-ध्वनि, अंधकार, (उज्जोओ) उद्योत एटले रत्नादिकनो प्रकाश, (पहा) प्रभा एटले चंद्रादिकनी कांति, (छाया) शीतगुणवाळी छाया, (आतव) आतप एटले तडको (इइ) ए आदिक, (वा) तथा (वण्णरसगंधफासा) कृष्णादिक वर्ण, तिक्तादिक रस, सुरभि आदिक गंध अने शीतादिक स्पर्श, ए (पुग्गलाणं तु) पुद्गलोनुं (लक्खणं) लक्षण छे. आटला लक्षणोए करीने ज पुद्गल ओळखाय छे. १२.

द्रव्यनुं लक्षण कह्युं, हवे पर्यायनुं लक्षण कहे छे.—

एगत्तं च पुहत्तं च, संखा संठाणमेव य । संजोगा य विभागा य, पज्जवाणं तु लक्खणं ॥१३॥

अर्थ—(एगत्तं च) एकत्व एटले घटादिकना परमाणु विगेरे भिन्न भिन्न छतां आ एक घडो छे एवी प्रतीतिनुं कारण, (पुहत्तं च) पृथक्त्व-भिन्नपणुं एटले आ घट पेला घटथी जूदो छे एवी प्रतीतिनुं कारण, (संखा) संख्या एटले जेनाथी एक, बे, त्रण विगेरे संख्यानी प्रतीति थाय ते, (संठाणमेव य) संस्थान एटले आ पदार्थ गोळ छे आ चोरस छे

इत्यादि बुद्धि थवानुं कारण जे होय ते, (संजोगा य) संयोग एटले बे आंगळीओनो आ संयोग छे एम जेनाथी जणाय ते, तथा (विभागा य) विभाग एटले आ आनाथी जूदो छे एवी मतिनुं कारण, आ सर्वे (पज्जवाणं तु) पर्यायोनुं (लक्खणं) लक्षण छे. रूपादिक गुणो पण पर्यायनुं लक्षण छे परंतु ते अति प्रसिद्ध होवाथी गणावेल नथी, तथा नवुं, जूनुं विगेरे पण पर्यायोनुं ज लक्षण छे ते पण उपलक्षणथी जाणी लेवा. अहीं ' संयोग ' अने ' विभाग ' ए बे शब्दने बहुवचनमां मूक्या छे ते बहुवचन व्यक्तिनी अपेक्षाए जाणवुं. केमके संयोग के विभाग एक वस्तुनो थइ शकतो नथी, तेनी अंदर रहेला पदार्थो एकथी वधारे छे तेथी ते अपेक्षाए बहुवचन लख्युं छे. १३.

आ प्रमाणे स्वरूपथी अने विषयथी ज्ञान बताव्युं, हवे दर्शनने कहे छे.—

जीवाऽजीवा य बंधो अ, पुण्णं पावासवो तहा । संवरो निज्जरा मोक्खो, संतेए तहिआ नव ॥ १४ ॥

अर्थ—(जीवा) जीव, (अजीवा य) धर्मास्तिकायादिक अजीव, (बंधो अ) बंध–जीव अने कर्मनो संयोग, (पुण्णं)पुण्य–शुभप्रकृतिरूप सातादिक, (पावासवो) पाप–अशुभप्रकृतिरूप मिथ्यात्वादिक, आश्रव–कर्मबंधनना हेतु हिंसादिक, (तहा) तथा (संवरो) संवर–महाव्रतादिकवडे आश्रवनो निरोध, (निज्जरा) निर्जरा–भोगववाथी अथवा तप करवाथी बांधेला कर्मनो क्षय अने (मोक्खो) सर्व कर्मनो क्षय ते मोक्ष (एए) आ (नव) नव पदार्थो (तहिआ) सत्य–तत्त्व (संति) छे. १४.

ए नव पदार्थो सत्य छे तेथी शुं ? ते कहे छे.—

तहिआणं तु भावाणं, सब्भावे उवएसणं। भावेण सद्दहंतस्स, सम्मत्तं ति विआहिअं ॥ १५ ॥

अर्थ—(तहिआणं तु) तथ्य एटले सत्य एवा (भावाणं) पदार्थोना (सब्भावे) सद्भावने कहेनार एटले सत्य-पणाने कहेनार एवा (उवएसणं) उपदेशने–गुरु आदिकना कथनने जे पुरुष (भावेण) भावथी (सद्दहंतस्स) श्रद्धा करे ते पुरुषने (सम्मत्तं ति) समकित दर्शन छे एम (विआहिअं) जिनेश्वरे कह्युं छे. मोहनीयना क्षय अने उपशम विगेरेथी उत्पन्न थयेला आत्माना परिणाम विशेष ते समकित कहेवाय छे. १५.

आ प्रमाणे समकितनुं स्वरुप कह्युं. हवे तेना भेदो कहे छे.—

निस्सग्गुवएसरुई, आणारुइ सुत्तबीयरुइमेव। अभिगमवित्थाररुई, किरिआसंखेवधम्मरुई ॥१६॥

अर्थ—(निस्सग्गुवएसरुई) निसर्गरुचि एटले कोइना उपदेश विना स्वभावथी ज तत्त्वनी अभिलाषा थाय ते १, उपदेशरुचि एटले गुर्वादिकना उपदेशथी तत्त्वनी अभिलाषा थाय ते २, (आणारुइ) आज्ञारुचि एटले सर्वज्ञना वचने करीने तत्त्वनी रुचि थाय ते ३, (सुत्तबीअरुइमेव) सूत्ररुचि एटले आगमे करीने रुचि थाय ते ४, बीजरुचि एटले बीजनी जेम जे एक छतां पण अनेक अर्थने उत्पन्न करे तेवा वचने करीने रुचि थाय ते ५, (अभिगमवित्थाररुई) अभिगमरुचि एटले विज्ञाने करीने रुचि थाय ते ६, विस्ताररुचि एटले विस्तारे करीने रुचि थाय ते ७, (किरिआसंखेवधम्मरुई) क्रियारुचि एटले धर्मानुष्ठाने करीने अथवा धर्मानुष्ठानने विषे रुचि थाय ते ८, संक्षेपरुचि एटले संक्षेपे करीने अथवा संक्षेपने विषे रुचि

थाय ते ९, तथा धर्मरुचि एटले श्रुतधर्मे करीने अथवा श्रुतधर्मने विषे रुचि थाय ते १०. आ रीते दश प्रकारे समकित प्राप्त थइ शके छे. १६.

आ प्रमाणे संक्षेपथी समकितना दश भेदो कह्या, तेनो विस्तारथी अर्थ कहे छे.—

भूअत्थेणाहिगया, जीवाऽजीवा य पुण्णपावं च। सहसंमुइआ आसवसंवरे अ रोएइ उ निसग्गो ॥१७॥

अर्थ—(जीवाऽजीवा य) जीव, अजीव, (पुण्णपावं च) पुण्य, पाप, (आसवसंवरे अ) आश्रव अने संवर तथा च शब्दे करीने निर्जरा बंध मोक्ष विगेरे नव तत्त्वोने जेणे (भूअत्थेण) सत्यपणाए करीने (अहिगया) जाणेला छे, तथा (सहसंमुइआ) पोतानी स्वाभाविक मतिए करीने एटले कोइना उपदेश विना जातिस्मरणादि ज्ञाने करीने (रोएइ उ) रुचाव्या छे, ते पुरुष (निसग्गो) निसर्गरुचि कहेवाय छे. १७.

ए ज अर्थने वधारे स्पष्ट करीने बतावे छे.—

जो जिणदिट्ठे भावे, चउव्विहे सद्दहइ सयमेव। एमेव नन्नह त्ति अ, निसग्गरुइ त्ति नायव्वो ॥ १८ ॥

अर्थ--(जो) जे प्राणी (जिणदिट्ठे) जिनेश्वरे कहेला (चउव्विहे) द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भाव, अथवा नाम, स्थापना, द्रव्य अने भाव एवा चार प्रकारना (भावे) पदार्थोने (सयमेव) बीजाना उपदेश विना पोतानी मेळे ज (एमेव) " आ जीवादिक तत्त्व जिनेश्वरे कह्या छे ते तेज प्रमाणे छे, (नन्नह त्ति अ) अन्यथा प्रकारे नथी. " ए प्रमाणे (सद्दहइ)

श्रद्धा करे ते जीव (निसग्गरुइ त्ति) निसर्गरुचि छे एम (नायव्वो) जाणवुं. १८.

हवे बीजो भेद उपदेशरुचि कहे छे.—

एए चेव उ भावे, उवइट्ठे जो परेण सद्दहई । छउमत्थेण जिणेण व, उवएसरुइ त्ति नायव्वो ॥ १९ ॥

अर्थ—(जो) जे प्राणी (परेण) बीजाए एटले (छउमत्थेण) छद्मस्थ गुरुए (जिणेण व) अथवा केवळज्ञानीए (उवइट्ठे) उपदेश आपेला (एए चेव उ) ए ज (भावे) जीवादिक पदार्थोने (सद्दहई) सद्दहे-श्रद्धा करे, ते प्राणी (उवएसरुइ त्ति) उपदेशरुचि छे एम (नायव्वो) जाणवुं. १९.

हवे त्रीजो आज्ञारुचि कहे छे.—

रागो दोसो मोहो, अन्नाणं जस्स अवगयं होई । आणाए रोअंतो, सो खलु आणारुई नाम ॥२०॥

अर्थ—(जस्स) जेना (रागो) राग, (दोसो) द्वेष, (मोहो) मोह अने (अन्नाणं) अज्ञान (अवगयं होइ) देशथी क्षय थयेला होय, अने तेथी करीने (आणाए) आचार्यादिकनी आज्ञाए करीने ज (रोअंतो) कोइ पण ठेकाणे कदाग्रह विना माषतुषनी जेम जीवादिक पदार्थ उपर रुचि राखतो होय, (सो) ते प्राणी (खलु) निश्चे (आणारुई) आज्ञारुचि (नाम) नामे जाणवो. २०.

चोथो सूत्ररुचि कहे छे.—

जो सुत्तमहिज्जंतो, सुएण ओगाहई उ सम्मत्तं। अंगेण बाहिरेण व, सो सुत्तरुइ त्ति नायव्वो ॥ २१ ॥

अर्थ—(जो) जे पुरुष (सुत्तं अहिज्जंतो) सूत्रने भणतो थको (अंगेण) अंगप्रविष्ट आचारांगादिक (बाहिरेण व) अथवा उत्तराध्ययनादिक बाह्य एटले अनंगप्रविष्ट (सुएण) श्रुतवडे (सम्मत्तं) समकितने (ओगाहई उ) अवगाहन करे छे एटले पामे छे, (सो) ते पुरुष (सुत्तरुइ) सूत्ररुचि छे (त्ति) एम (नायव्वो) जाणवुं. २१.

पांचमो बीजरुचि कहे छे.—

एगेण अणेगाइं, पयाइं जो पसरई उ सम्मत्तं। उदए व तिल्लबिंदू, सो बीअरुइ त्ति नायव्वो ॥२२॥

अर्थ—(उदए) जळने विषे (तिल्लबिंदू व) तेलना बिंदुनी जेम (जो) जे (सम्मत्तं) सम्यक्त्ववाळो पुरुष (एगेण) एक जीवादिक पदवडे करीने (अणेगाइं) अजीवादिक अनेक (पयाइं) पदोने विषे (पसरई) प्रसरे छे, जेम जळना एक देशमां रहेलो तेलनो बिंदु समग्र जळमां प्रसरे छे, तेम एक देशमात्रथी रुचि उत्पन्न थइ होय एवो जे जीव तथाप्रकारना क्षयोपशमथी समग्र तत्त्वोने विषे रुचिवाळो थाय, (सो) ते (बीअरुइ त्ति नायव्वो) बीजरुचि छे एम जाणवुं. २२.

छठो अभिगमरुचि कहे छे.

सो होई अभिगमरुई, सुअनाणं जेण अत्थओ दिट्ठं। एक्कारसअंगाइं, पइण्णगं दिट्ठिवाओ अ ॥२३॥

अर्थ—(एक्कारसअंगाइं) आचारांगादिक अग्यार अंग, (पइण्णगं) उत्तराध्ययनादिक प्रकीर्णको, (दिट्ठिवाओ)

दृष्टिवाद एटले बारमुं अंग, (अ) तथा चशब्दथी उपपातिकादिक उपांगो, आ सर्व (सुअनाणं) श्रुतज्ञान (जेण) जेणे (अत्थओ) अर्थथी (दिट्ठं) जोयुं-जाण्युं होय, (सो) ते पुरुष (अभिगमरुई) अभिगमरुचि (होई) होय छे. २३.

सातमो विस्ताररुचि कहे छे.—

दव्वाणं सव्वभावा, सव्वपमाणेहिं जस्स उवलद्धा। सव्वाहिं नयविहिहि अ, वित्थाररुइ त्ति नायव्वो ॥२४॥

अर्थ—(दव्वाणं) धर्मास्तिकायादिक सर्व द्रव्योना (सव्वभावा) एकत्व, पृथक्त्व, आदि सर्व भावो-पर्यायो (सव्वपमाणेहिं) प्रत्यक्षादिक सर्व प्रमाणोए करीने (सव्वाहिं नयविहिहि अ) तथा नैगमादिक सर्व नयना प्रकारोए करीने (जस्स) जेना (उवलद्धा) जाणवामां आव्या होय-जेणे जाण्या होय, ते पुरुष (वित्थाररुइ त्ति) विस्ताररुचि छे एम (नायव्वो) जाणवुं. २४.

आठमो क्रियारुचि कहे छे.—

दंसणनाणचरित्ते, तवविणए सच्चसमिइगुत्तीसु। जो किरिआभावरुई, सो खलु किरिआरुई नाम ॥२५॥

अर्थ—(दंसणनाणचरित्ते) दर्शन, ज्ञान अने चारित्रने विषे, (तवविणए) तप अने विनयने विषे तथा (सच्चसमिइ-गुत्तीसु) सत्य एवा समिति अने गुप्तिने विषे (जो) जे प्राणी (किरिआभावरुई) ते दर्शनादिकना क्रियानुष्ठानने विषे भावथी रुचिवाळो होय, (सो) ते जीव (खलु) निश्चे (किरिआरुई) क्रियारुचि (नाम) नामे कहेवाय छे. २५.

नवमो संक्षेपरुचि कहे छे.—

अणभिग्गहिअकुदिट्ठी, संखेवरुइ त्ति होई नायव्वो। अविसारओ पवयणे, अणभिग्गहिओ अ सेसेसु ॥२६॥

अर्थ—(अणभिग्गहिअकुदिट्ठी) जेणे सौगतादिकना मतरूपी कुदृष्टिने अंगीकार करी न होय, (पवयणे) जिनप्रवचनने विषे (अविसारओ) कुशळ न होय, (अ) तथा (सेसेसु) कपिलादिकना शास्त्रोने विषे पण (अणभिग्गहिओ) प्रेमवाळो न होय ते–तेवा जीवो चिलातिपुत्रनी जेम (संखेवरुइ होइ) संक्षेपरुचि होय छे, (त्ति) एम (नायव्वो) जाणवुं. २६.

हवे छेल्लो एटले दशमो धर्मरुचि कहे छे.—

जो अत्थिकायधम्मं, सुअधम्मं खलु चरित्तधम्मं च। सद्दहइ जिणाभिहिअं, सो धम्मरुइ त्ति नायव्वो ॥२७॥

अर्थ—(जो) जे पुरुष (जिणाभिहिअं) जिनेश्वरे कहेला (अत्थिकायधम्मं) अस्तिकाय एटले धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशास्तिकाय विगेरेना धर्मने एटले गति, स्थिति, अवगाह विगेरे लक्षणने, तथा (सुअधम्मं) आगमरूप श्रुतधर्मने, तथा (खलु) निश्चे (चरित्तधम्मं च) सामायिकादिक चारित्रधर्मने (सद्दहइ) सद्दहे–श्रद्धा करे (सो) ते (धम्मरुइ त्ति) धर्मरुचि छे एम (नायव्वो) जाणवुं. अहीं धर्म एटले पर्यायो अथवा धर्म एटले श्रुतधर्मादिक, तेने विषे रुचि छे जेनी ते धर्मरुचि कहेवाय छे.

हवे कया लिंगे करीने सम्यक्त्व छे ? एम जाणवुं ? ते विषे कहे छे.—

परमत्थसंथवो वा, सुदिट्ठपरमत्थसेवणा यावि । वावण्णकुदंसणवज्जणा य सम्मत्तसद्दहणा ॥ २८ ॥

अर्थ—(परमत्थसंथवो वा) परम एवा अर्थ एटले जीवादिक तात्त्विक पदार्थो, तेने विषे संस्तव एटले तेना स्वरूपनो वारंवार चिंतवन करवारूप परिचय, तथा (सुदिट्ठपरमत्थसेवणा) सारी रीते देख्यो छे परमार्थ जेणे एवा आचार्यादिकनुं सेवन. (यावि) चशब्द छे तेथी शक्ति प्रमाणे ते आचार्यादिकनी वैयावच्च, अपिशब्द समुच्चय अर्थमां छे, (वावण्ण-कुदंसणवज्जणा य) तथा व्यापन्नदर्शन एटले नाश पाम्युं छे सम्यग्दर्शन जेनुं एवा निन्हवादिक अने कुदर्शन एटले शाक्यादिक मिथ्यादृष्टिओ, तेमनुं वर्जन, ए सर्व (सम्मत्तसद्दहणा) सम्यक्त्वनुं श्रद्धान छे एटले आ सर्व लिंगवडे तेनामां समकित छे एम श्रद्धा कराय छे. २८.

आ प्रमाणे समकितनां लिंग कह्यां, हवे तेनुं ज माहात्म्य देखाडे छे.—

नत्थि चरित्तं सम्मत्त–विहूणं दंसणे उ भइअव्वं । सम्मत्तचरित्ताइं, जुगवं पुव्वं व सम्मत्तं ॥ २९ ॥

अर्थ—(सम्मत्तविहूणं) सम्यक्त्व विना (चरित्तं) चारित्र–भावचारित्र (नत्थि) होतुं नथी एटले ज्यांसुधी समकित नथी त्यांसुधी चारित्र नथी. (दंसणे उ) परंतु सम्यक्त्व सते (भइअव्वं) भजना छे एटले चारित्र होय के न पण होय. (सम्मत्तचरित्ताइं) सम्यक्त्व अने चारित्र (जुगवं) एकी साथे प्राप्त थाय छे, (व) अथवा (सम्मत्तं) सम्यक्त्व (पुव्वं) प्रथम प्राप्त थाय छे. २९.

नादंसणिस्स नाणं, नाणेण विणा न होंति चरणगुणा ।
अगुणिस्स नत्थि मोक्खो, नत्थि अमुक्कस्स निव्वाणं ॥ ३० ॥

अर्थ—(अदंसणिस्स) समकित रहित एवा पुरुषने (नाणं न) सम्यक् ज्ञान होतुं नथी, तथा (नाणेण विणा) ज्ञान विना (चरणगुणा) चरण एटले पंच महाव्रत अने गुण एटले पिंडविशुद्ध्यादिक (न होंति) होता नथी, तथा (अगुणिस्स) गुण रहितने (मोक्खो) मोक्ष-समग्र कर्मनो क्षय (नत्थि) होतो नथी, तथा (अमुक्कस्स) कर्मथी मुक्त थयेला न होय तेने (निव्वाणं) मुक्तिपदनी प्राप्ति (नत्थि) होती नथी. ३०.

आठ प्रकारना दर्शनाचारवडे ज उत्तरोत्तर गुणनी प्राप्ति थाय छे, तेथी ते समकितना आठ आचारने देखाडे छे.—

निस्संकिय निक्कंखिय, निव्वितिगिच्छा अमूढदिट्ठी अ। उववूहथिरीकरणे, वच्छल्लपभावणे अट्ठ ॥३१॥

अर्थ—(निस्संकिय) निःशंकित-जैन दर्शनने विषे देशथी अने सर्वथी शंका रहितपणुं १, (निक्कंखिय) निष्कांक्षित-अन्य अन्य दर्शननी अभिलाषानो अभाव २, (निव्वितिगिच्छा) निर्विचिकित्सा एटले फळ प्रत्ये संदेह रहितपणुं अथवा निर्विजुगुप्सा एटले साधुनी निंदानो अभाव ३, (अमूढदिट्ठी अ) अमूढ दृष्टि-ऋद्धिवाळा कुतीर्थिकने जोइने पण पोतानी दृष्टि एटले बुद्धि मोह न पामे ते ४, आ चार प्रकारनो आचार आभ्यंतर छे, हवे चार बाह्य आचारने कहे छे.—(उववूहथिरीकरणे) उपबृंहा-सम्यक्त्वादिक गुणवाळाओनी प्रशंसा करी तेमना गुणोनी वृद्धि करवी ते ५, स्थिरीकरण-स्वीकार

करेला धर्मानुष्ठान प्रत्ये सीदाता जीवोने पाछा धर्ममां स्थिर करवा ते ६, (वच्छल्लपभावणे) वात्सल्य-धार्मिक जननी भक्ति करवी ते ७, तथा प्रभावना-तीर्थनी उन्नतिना कार्यमां प्रवर्तवुं ते ८. (अट्ठ) आ आठ दर्शनना आचार छे. २१.

आ प्रमाणे ज्ञान अने दर्शनरूप मुक्तिनो मार्ग कह्यो. हवे चारित्ररूप मुक्तिनो मार्ग कहे छे.--

सामाइअ त्थ पढमं, छेओवट्ठावणं भवे बीअं । परिहारविसुद्धीअं, सुहुमं तह संपरायं च ॥ ३२ ॥
अकसायमहक्खायं, छउमत्थस्स जिणस्स वा । एअं चयरित्तकरं, चारित्तं होइ आहिअं ॥ ३३ ॥

अर्थ—(पढमं) पहेलुं (सामाइअ त्थ) सामायिक नामनुं चारित्र छे, (बीअं) बीजुं (छेओवट्ठावणं) छेदोपस्थापनीय (भवे) होय छे, (परिहारविसुद्धीअं) त्रीजुं परिहारविशुद्धिक, (तह) तथा चोथुं (सुहुमं संपरायं च) सूक्ष्मसंपराय चारित्र दशमे गुणठाणे होय छे. अने (अकसायं) कषाय रहित अर्थात् क्षय करेला के उपशमावेला कषायनी अवस्थामां पांचमुं (अहक्खायं) यथाख्यात नामनुं चारित्र प्राप्त थाय छे, ते (छउमत्थस्स) छद्मस्थने उपशांतमोह अने क्षीणमोह ए बे गुणस्थानमां वर्तताने होय छे अने (जिणस्स वा) जिनने-केवळीने सयोगीकेवळी अने अयोगीकेवळी ए बे गुणस्थाने वर्तता होय छे. (एअं) आ पांच प्रकारनुं (चयरित्तकरं) चय एटले कर्मना समूहनुं रिक्तकर एटले नाश करनार एवा सार्थक नामवाळुं (चारित्तं) चारित्र (आहिअं होइ) तीर्थंकरोए कहेलुं छे.

अहीं सम एटले रागद्वेष रहित चित्तना परिणाम तेने विषे आय एटले जवुं-रहेवुं ते समाय, अने समाय ए ज सामा-

यिक एवुं सार्थक नाम छे. अर्थात् सर्व सावद्य योगनो त्याग. आ सामायिक बे प्रकारनुं छे—इत्वर सामायिक अने यावत्कथिक सामायिक. तेमां इत्वर सामायिक भरत अने ऐरवत क्षेत्रमां पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना तीर्थमां उपस्थापना एटले वडी-दीक्षा थाय त्यां सुधी होय छे अने यावत्कथिक सामायिक ते ज बे क्षेत्रमां मध्यमना बावीश तीर्थंकरना तीर्थमां तथा महाविदेहक्षेत्रमां निरंतर होय छे, केमके त्यां उपस्थापना नहीं होवाथी जावज्जीव सामायिक चारित्र ज होय छे. १. बीजुं छेदोपस्थापनीय चारित्र छे. तेमां अतिचार सहित एवा साधुने अथवा अतिचार रहित छतां पण बीजा तीर्थने अंगीकार करता साधुने पूर्वना पर्यायनो छेद करवो. ते छेदे करीने सहित एवी उपस्थापना एटले महाव्रतनी आरोपणा जेने विषे होय ते चारित्र छेदोपस्थापनीय कहेवाय छे. २. त्रीजुं परिहारविशुद्धिक छे. तेमां परिहार एटले विशिष्ट तपना अंगीकारवडे गच्छनो त्याग, ते वडे शुद्धि छे जेमां ते चारित्र परिहारविशुद्धिक नामे कहेवाय छे. तेनुं स्वरूप आ प्रमाणे छे.—नव मुनिओ गच्छनी बहार नीकळीने जिनेश्वरनी पासे अथवा जेणे प्रथम जिनेश्वरनी पासे आ तप कर्यो होय तेनी पासे आ तप अंगीकार करे छे. ते नवमां एक मुनि गुरुस्थाने रहे, चार मुनिओ आ तप करे अने बाकीना चार मुनिओ तेमनी वैयावच्च करे. ते तपस्वी मुनिओ ग्रीष्मकाळे जघन्य तप करे तो चतुर्थभक्त-उपवास करे, मध्यम करे तो छट्ठ अने उत्कृष्ट करे तो अट्ठम करे. शीतकाळे अनुक्रमे जघन्यादिक छट्ठ, अट्ठम अने दशम (चार उपवास) करे अने वर्षाकाळमां अनुक्रमे जघन्यादिक अट्ठम, दशम अने द्वादश—पांच उपवास करे. ते तपस्वीओ पारणाने दिवसे आचाम्ल करे अने गुरु तथा वैयावच्च करनार साधुओ हमेशां आचाम्ल करे. आ प्रमाणे छ मास तप करीने पछी जेओ वैयावच्च करनारा

होय तेओ तपस्वी थाय अने तपस्वी हता ते वैयावच्च करनारा थाय. ए रीते पण छ मास थाय, त्यारपछी ते आठमांथी एक गुरु थाय अने जे गुरु थया हता ते तपस्वी थाय अने बाकीना साते वैयावच्च करनारा थाय. आ रीते छ मास करे. कुल दोढ वर्ष पुरुं थाय त्यारे ते सर्वे फरीथी ते ज तप करे अथवा जिनकल्प अंगीकार करे अथवा तो गच्छमां प्रवेश करे. आवा तपस्वीनुं जे चारित्र ते परिहारविशुद्धिक कहेवाय छे. आ चारित्र भरत अने ऐरावत ए बे ज क्षेत्रमां पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना ज तीर्थमां होय छे. बीजे होतुं नथी. ३. चोथुं सूक्ष्मसंपराय छे. तेमां किट्टी करवाथी सूक्ष्म कर्यो छे लोभ नामनो संपराय एटले कषाय जेने विषे ते चारित्र सूक्ष्मसंपराय नामनुं छे. आ चारित्र क्षपकश्रेणि अने उपशमश्रेणिने विषे लोभना अंतिम परमाणु ज्यारे वेदता होय त्यारे दशमे गुणठाणे होय छे. ४. तथा पांचमुं यथाख्यात एटले जिनेश्वरे जे स्वरूप कह्युं छे तेने किंचित् पण ओळंगाय नहीं तेवुं पूर्ण शुद्ध ते यथाख्यात चारित्र एवुं तेनुं सार्थक नाम छे. (ते ११-१२-१३-१४ गुणठाणे होय छे.) ५. आ प्रमाणे ते पांचेनो विस्तारार्थ जाणवो. ३२-३३

हवे तपरूपी चोथुं कारण कहे छे.—

तवो अ दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भिंतरो तहा । बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भिंतरो तवो ॥ ३४ ॥

अर्थ—(तवो अ) तप (दुविहो) बे प्रकारे (वुत्तो) कह्यो छे, (बाहिरब्भिंतरो तहा) बाह्य तथा आभ्यंतर. तेमां (बाहिरो) बाह्य तप (छव्विहो वुत्तो) छ प्रकारे कह्यो छे, तथा (एवं) ए ज प्रमाणे एटले छ प्रकारनो (अब्भिं-

तरो तवो) आभ्यंतर तप पण कह्यो छे. ३४.

हवे आ चारे कारणोमांथी मुक्तिमार्गने विषे कोनो कयो व्यापार छे ? ते कहे छे.--

नाणेण जाणई भावे, दंसणेण य सद्दहे । चरित्तेण न गिण्हाइ, तवेण परिसुज्झइ ॥ ३५ ॥

अर्थ—(नाणेण) श्रुतादिक ज्ञानवडे (भावे) जीवादिक भावोने (जाणई) जाणे छे, (दंसणेण य) दर्शने करीने ते भावोने (सद्दहे) सद्दहे छे, (चरित्तेण) आश्रव द्वारना निरोधरूप चारित्रवडे (न गिण्हाइ) नवा कर्मने ग्रहण करता नथी अने (तवेण) तपवडे (परिसुज्झइ) पूर्वे उपार्जन करेला कर्मनो चय करी शुद्ध थाय छे. ३५.

आ गाथावडे शुद्ध मार्गनुं फळ मोक्ष कह्युं. हवे ओघना फळभूत उत्कृष्ट गतिने कहे छे.—

खवित्ता पुव्वकम्माइं, संजमेण तवेण य । सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा, पक्कमंति महेसिणो त्ति बेमि ॥३६॥

अर्थ—(महेसिणो) महर्षिओ (संजमेण) संयमवडे (तवेण य) तथा तपवडे (पुव्वकम्माइं) पूर्वनां कर्मोने (खवित्ता) चय करीने (सव्वदुक्खप्पहीणट्ठा) सर्व दुःखे करीने प्रहीन एटले रहित एवा मोक्षने इच्छता सता अथवा सर्व दुःखो अने अर्थ एटले कार्यो जेनां क्षीण थया छे एवा सता (पक्कमंति) मुक्ति प्रत्ये जाय छे. (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं.

इति अष्टाविंशमध्ययनम्. २८.

अथ सम्यक्त्वपराक्रम नामनुं ओगणत्रीशमुं अध्ययन. २९.

अठावीशमा अध्ययनमां मोक्षमार्गगति कही, ते वीतरागपणाथी प्राप्त थाय छे, तेथी जे रीते वीतरागपणुं प्राप्त थाय ते आ अध्ययनमां कहेवाय छे. आ संबंधथी आवेला आ अध्ययननुं प्रथम सूत्र कहे छे.—

सुअं मे आउसं ! तेणं भगवया एवमक्खायं, इह खलु सम्मत्तपरक्कमे नामज्झयणे समणेणं भगवया महावीरेणं कासवेणं पवेइए। जं सम्मं सद्दहित्ता पत्तिआइत्ता रोअइत्ता फासित्ता पालइत्ता तीरइत्ता किट्टइत्ता सोहइत्ता आराहइत्ता आणाए अणुपालइत्ता बहवे जीवा सिज्झंति बुज्झंति मुच्चंति परिनिव्वायंति सव्वदुक्खाणमंतं करेंति ॥ १ ॥

अर्थ—श्रीसुधर्मास्वामी जंबूस्वामीने कहे छे के–(सुअं मे आउसं) हे आयुष्मान् शिष्य ! में सांभळ्युं छे के–(तेणं भगवया) ते त्रण जगतमां प्रसिद्ध एवा भगवान श्रीमहावीरस्वामीए (एवं अक्खायं) आ प्रमाणे कह्युं छे. अर्थात् (इह) आ प्रवचनने विषे (खलु) निश्चे (सम्मत्तपरक्कमे) सम्यक्त्व सते उत्तरोत्तर गुणप्राप्तिवडे कर्मरूपी शत्रुने जीतवाना सामर्थ्यरूप जीवना पराक्रमनुं जेने विषे वर्णन कराय छे एवुं आ सम्यक्त्व पराक्रम (नामज्झयणे) नामनुं अध्ययन (समणेणं) श्रमण (भगवया) भगवंत (महावीरेणं) श्री महावीर नामना (कासवेणं) काश्यप गोत्रीए (पवेइए)

प्ररूप्युं छे. आ अध्ययननुं माहात्म्य कहे छे के (जं) जे आ अध्ययनने (सम्मं) सम्यक् प्रकारे (सद्दहित्ता) सद्दहीने एटले शब्द, अर्थ अने ते बन्नेने सामान्यपणे अंगीकार करीने, तथा (पत्तिआइत्ता) प्रतीत्य एटले 'आ एम ज छे' एम विशेषपणे निश्चय करीने, तथा (रोअइत्ता) तेनो अभ्यास करवावडे तेने आत्माने विषे रुचावीने, तथा (फासित्ता) त्रण योगवडे स्पर्श करीने एटले मनवडे सूत्र अने अर्थना चिंतवने करीने, वचनवडे वांचवादिके करीने अने कायावडे तेना भांगा अंगीकार करवा प्रमुखे करीने—ए रीते स्पर्श करीने, तथा (पालइत्ता) परावर्तन विगेरेवडे रक्षण करीने, तथा (तीरइत्ता) तेने समाप्त करीने. तथा (किट्टइत्ता) गुरु पासे विनयपूर्वक 'आ आ प्रमाणे हुं भण्यो छुं' एम निवेदन करीने, तथा (सोहइत्ता) गुरुनी पाछळ तेनो अनुवाद करवावडे शुद्ध करीने, तथा (आराहइत्ता) उत्सूत्रनी प्ररूपणाना त्यागवडे अथवा उत्सर्ग अने अपवादमां कुशळतावडे अथवा जीवन पर्यंत तेना अर्थना सेवनवडे आराधीने तथा (आणाए अणुपालइत्ता) गुरुना नियोगरूप आज्ञावडे पालन करीने (बहवे) घणा (जीवा) जीवो (सिज्झंति) सिद्ध थाय छे एटले अहीं ज आत्मानी सिद्धिने पामे छे, (बुज्झंति) घातिकर्मना क्षयवडे बोध—केवळज्ञान पामे छे, (मुच्चंति) भवोपग्राही चार कर्मना क्षयवडे मुक्त थाय छे, अने त्यारपछी (परिनिव्वायंति) समग्र कर्मरूपी दावानळनी शांतिवडे शांत थाय छे, अने तेथी करीने ज (सव्वदुक्खाणं) शरीर अने मन संबंधी सर्व दुःखोना (अंतं) अंतने (करेंति) करे छे—मुक्तिपदने पामे छे. १.

हवे शिष्यनो अनुग्रह करवा माटे संबंध कहेवा पूर्वक आ अध्ययनना अर्थने कहे छे—

तस्स णं अयमट्ठे एवमाहिज्जइ, तं जहा—संवेगे १, निव्वेए २, धम्मसद्धा ३, गुरुसाहम्मिअसुस्सूसणया ४, आलोअणया ५, निंदणया ६, गरिहणया ७, सामाइए ८, चउवीसत्थए ९, वंदणे १०, पडिक्कमणे ११, काउस्सग्गे १२, पच्चक्खाणे १३, थयथुइमंगले १४, कालपडिलेहणया १५, पायच्छित्तकरणे १६, खमावणया १७, सज्झाए १८, वायणया १९, पडिपुच्छणया २०, परिअट्टणया २१, अणुप्पेहा २२, धम्मकहा २३, सुअस्स आराहणया २४, एगग्गमणसन्निवेसणया २५, संजमे २६, तवे २७, वोदाणे २८, सुहसाए २९, अप्पडिबद्धया ३०, विवित्तसयणासणसेवणया ३१, विणिअट्टणया ३२, संभोगपच्चक्खाणे ३३, उवहिपच्चक्खाणे ३४, आहारपच्चक्खाणे ३५, कसायपच्चक्खाणे ३६. जोगपच्चक्खाणे ३७, सरीरपच्चक्खाणे ३८, सहायपच्चक्खाणे ३९, भत्तपच्चक्खाणे ४०, सब्भावपच्चक्खाणे ४१, पडिरूवया ४२, वेआवच्चे ४३, सव्वगुणसंपन्नया ४४, वीअरागया ४५, खंती ४६, मुत्ती ४७, मद्दवे ४८, अज्जवे ४९, भावसच्चे ५०, करणसच्चे ५१, जोगसच्चे ५२, मणगुत्तया ५३, वयगुत्तया ५४, कायगुत्तया ५५, मणसमाधारणया ५६, वयसमाधारणया ५७, कायस-

साधारणया ५८, नाणसंपन्नया ५९, दंसणसंपन्नया ६०, चरित्तसंपन्नया ६१, सोइंदिअनिग्गहे ६२, चक्खिंदिअनिग्गहे ६३, घाणिंदिअनिग्गहे ६४, जिब्भिंदिअनिग्गहे ६५, फासिंदिअनिग्गहे ६६, कोहविजए ६७, माणविजए ६८, मायाविजए ६९, लोभविजए ७०, पिज्जदोसमिच्छादंसणविजए ७१, सेलेसी ७२, अकम्मया ७३. ॥ २ ॥

अर्थ—(तस्स णं) ते सम्यक्त्वपराक्रम अध्ययननो (अयं अट्ठे) आ अर्थ (एवं आहिज्जइ) आ प्रमाणे श्रीमहावीर भगवान कहे छे, (तं जहा) ते आ प्रमाणे—(संवेगे) संवेग १, (निव्वेए) निर्वेद २, (धम्मसद्धा) धर्मश्रद्धा ३, (गुरुसाहम्मिअसुस्सूसणया) गुरु अने साधर्मिकनी शुश्रूषा–भक्ति ४, (आलोअणया) आलोयणा ५, (निंदणया) निंदा ६. (गरिहणया) गर्हा ७, (सामाइए) सामायिक ८, (चउवीसत्थए) चतुर्विंशतिस्तव ९, (वंदणे) वंदन १०, (पडिक्कमणे) प्रतिक्रमण ११, (काउस्सग्गे) कायोत्सर्ग १२, (पच्चक्खाणे) प्रत्याख्यान १३, (थयथुइमंगले) स्तवस्तुतिमंगळ १४, (कालपडिलेहणया) काळप्रत्युपेक्षणा १५, (पायच्छित्तकरणे) प्रायश्चित्तनुं करवुं १६, (खमावणया) खामणा १७, (सज्झाए) स्वाध्याय १८, (वायणया) वाचना १९, (पडिपुच्छणया) प्रतिपृच्छना २०, (परिअट्टणया) परावर्तना २१, (अणुप्पेहा) अनुप्रेक्षा २२, (धम्मकहा) धर्मकथा २३, (सुअस्स आराहणया) श्रुतनी आराधना २४, (एगग्गमणसंनिवेसणया) एकाग्र मनसंनिवेशना एटले मननुं एकाग्रपणे स्थापन २५, (संजमे) संयम २६,

(तवे) तप २७, (वोदाणे) व्यवदान एटले कर्मनी शुद्धि–कर्मनिर्जरा २८, (सुहसाए) सुखशाय एटले विषयसुखनो नाश २९, (अप्पडिबद्धया) अप्रतिबद्धपणुं ३०, (विवित्तसयणासणसेवणया) विविक्त शयनासनसेवन–स्त्री, पशु, पंडकादि रहित शय्या, आसन विगेरेनुं सेवन ३१, (विणिअट्टणया) विनिवर्तना एटले पांच इंद्रियोना विषयथी निवर्तन ३२, (संभोगपच्चक्खाणे) संभोगप्रत्याख्यान एटले जिनकल्पिकादिकने एक मंडळीनो आहार ग्रहण करवानुं प्रत्याख्यान ३३, (उवहिपच्चक्खाणे) रजोहरण अने मुखवस्त्रिका सिवाय बीजी उपधिनुं प्रत्याख्यान ३४, (आहारपच्चक्खाणे) सदोष आहारनुं प्रत्याख्यान ३५, (कसायपच्चक्खाणे) कषाय प्रत्याख्यान ३६, (जोगपच्चक्खाणे) मन, वचन, कायाना योगनुं प्रत्याख्यान ३७, (सरीरपच्चक्खाणे) [illegible] अने शरीरनुं [illegible] प्रत्याख्यान ३८, (सहायपच्चक्खाणे) सहाय करवानुं प्रत्याख्यान ३९, (भत्तपच्चक्खाणे) भक्त प्रत्याख्यान–अनशन ग्रहण ४०, (सब्भावपच्चक्खाणे) सद्भावे करीने एटले सत्यपणे प्रत्याख्यान ४१, (पडिरूवया) प्रतिरूपता एटले स्थविरकल्पी सदृश वेषधारीपणुं ४२, (वेयावच्चे) वैयावच्च ४३, (सव्वगुणसंपन्नया) ज्ञानादिक सर्वगुणे करीने संपन्नता–सहितपणुं ४४, (वीअरागया) वीतरागपणुं ४५, (खंती) क्षांति–क्षमा ४६, (मुत्ती) मुक्ति–निर्लोभता ४७, (मद्दवे) मार्दव–माननो त्याग ४८, (अज्जवे) आर्जवता–माया रहितपणुं ४९, (भावसच्चे) भावसत्य–अंतरात्मानी शुद्धि ५०, (करणसच्चे) करणसत्य एटले प्रतिलेखनादि क्रियामां आळस रहितपणुं ५१, (जोगसच्चे) योगसत्य–मन, वचन, कायाना योगनुं सत्यपणुं ५२, (मणगुत्तया) मनगुप्तता–मनोगुप्ति ५३, (वयगुत्तया) वचोगुप्ति ५४, (कायगुत्तया) कायगुप्तता ५५, (मणसमाधार-

णया) मनसमाधारणा—मननी समाधि ५६, (वयसमाधारणया) वचनसमाधारणा ५७, (कायसमाधारणया) कायसमाधारणा, ५८, (नाणसंपन्नया) ज्ञानसंपन्नता—ज्ञानसहितपणुं ५९, (दंसणसंपन्नया) दर्शनसंपन्नता ६०, (चरित्तसंपन्नया) चारित्रसंपन्नता ६१, (सोइंदिअनिग्गहे) श्रोत्रेंद्रियनिग्रह ६२, (चक्खिंदिअनिग्गहे) चक्षुइंद्रियनिग्रह ६३, (घाणिंदिअनिग्गहे) घ्राणेंद्रियनिग्रह ६४, (जिब्भिंदिअनिग्गहे) जिह्वेंद्रियनिग्रह ६५, (फासिंदिअनिग्गहे) स्पर्शेंद्रियनिग्रह ६६, (कोहविजए) क्रोधविजय ६७, (माणविजए) मानविजय ६८, (मायाविजए) मायाविजय ६९, (लोभविजए) लोभविजय ७०, (पिज्जदोसमिच्छादंसणविजए) प्रेम द्वेष अने मिथ्यादर्शननो विजय ७१ (सेलेसी) शैलेशीकरण—चौदमा गुणस्थानमां रहेवुं ते ७२, तथा (अकम्मया) अकर्मता—कर्मनो अभाव ७३. आ प्रमाणे शब्दार्थ कह्यो. २.

हवे अनुक्रमे दरेक पदनी फळपूर्वक व्याख्या करे छे.—

संवेगेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? संवेगेणं अणुत्तरं धम्मसद्धं जणयइ, अणुत्तराए धम्मसद्धाए संवेगं हव्वमागच्छइ, अणंताणुबंधिकोहमाणमायालोहे खवेइ, नवं च कम्मं न बंधइ, तप्पच्चइअं च णं मिच्छत्तविसोहिं काऊण दंसणाराहए भवइ, दंसणविसोहीएणं विसुद्धाए अत्थेगतिए तेणेव भवग्गहणेणं सिज्झइ, सोहीए अ णं विसुद्धाए तच्चं पुणो भवग्गहणं नाइक्कमइ ॥ १ ॥ ३ ॥

अर्थ—(संवेगेणं) संवेगे करीने एटले मोक्षना अभिलाषे करीने (भंते) हे भगवान ! (जीवे) जीव (किं) शुं (जणयइ) उत्पन्न करे एटले शां गुण उपार्जन करे ? आ प्रमाणे शिष्य प्रश्न करे छे तेने भगवान उत्तर आपे छे के—(संवेगेणं) संवेगे करीने (अणुत्तरं) श्रेष्ठ एवी (धम्मसद्धं) धर्मनी श्रद्धाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (अणुत्तराए) श्रेष्ठ एवी (धम्मसद्धाए) धर्मनी श्रद्धाए करीने जीव (संवेगं) विशेष संवेगने (हव्वं) शीघ्रपणे (आगच्छइ) पामे छे. अणंताणुबंधिकोहमाणमायालोहे) अनंतानुबंधी क्रोध, मान, माया अने लोभने (खवेइ) खपावे छे–क्षय करे छे, (नवं च कम्मं) तथा नवा अशुभ कर्मने (न बंधइ) बांधतो नथी. (तप्पच्चइअं च णं) अने तेने आश्रीने एटले कषायना क्षयने आश्रीने (मिच्छत्तविसोहिं) मिथ्यात्वनी शुद्धिने एटले सर्वथा मिथ्यात्वनो क्षय (काऊण) करीने (दंसणाराहए) दर्शननो एटले क्षायिक सम्यक्त्वनो आराधक (भवइ) थाय छे. (दंसणविसोहीएणं विसुद्धाए) निर्मळ एवा दर्शननी शुद्धिए करीने (अत्थि एगतिए) एक कोइ जीव एवो छे के जे (तेणेव भवग्गहणेणं) ते ज भवना ग्रहणवडे एटले ते एक ज भवे करीने (सिज्झइ) मरुदेवी मातानी जेम सिद्ध थाय छे. अने जे जीव ते ज भवे सिद्धिपदने पामतो नथी ते पण (सोहीए अ णं विसुद्धाए) निर्मळ एवी दर्शनशुद्धिए करीने (तच्चं पुणो) वळी त्रीजा (भवग्गहणं) भवना ग्रहणने (नाइक्कमइ) उल्लंघन करे नहीं. एटले त्रीजे भवे तो अवश्य सिद्धिपदने पामे. आ उत्कृष्ट दर्शननी आराधनाने आश्रीने कह्युं छे. १–२.

संवेगे करीने अवश्य निर्वेद थाय छे, तेथी हवे तेने ज कहे छे—

निव्वेएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ! निव्वेएणं दिव्वमाणुस्सतेरिच्छिएसु कामभोगेसु निव्वेअं हव्वमागच्छइ, सव्वविसएसु विरज्जइ, सव्वविसएसु विरज्जमाणे आरंभपरिग्गहपरिच्चायं करेइ, आरंभपरिग्गहपरिच्चायं करेमाणे संसारमग्गं वुच्छिंदइ, सिद्धिमग्गपडिवण्णे अ भवइ ॥२॥४॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (निव्वेएणं) निर्वेद एटले "आ संसारनो हुं क्यारे त्याग करुं." एवो सामान्यपणे संसारपरनो वैराग्य, ते वडे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? कयो गुण उपार्जन करे ?

उत्तर—(निव्वेएणं) निर्वेदवडे करीने (दिव्वमाणुस्सतेरिच्छिएसु) देव, मनुष्य अने तिर्यंच संबंधी (कामभोगेसु) कामभोगने विषे (निव्वेअं) निर्वेदने एटले "आ अनर्थना हेतुरूप विषयोथी सर्युं" एवा भावने (हव्वं आगच्छइ) शीघ्रपणे पामे छे, तथा ((सव्वविसएसु) सर्व विषयोने विषे (विरज्जइ) वैराग्य पामे छे, (सव्वविसएसु) सर्व विषयोने विषे (विरज्जमाणे) वैराग्य पामे सते (आरंभपरिग्गहपरिच्चायं) आरंभ अने परिग्रहना त्यागने (करेइ) करे छे, (आरंभपरिग्गहपरिच्चायं) आरंभ अने परिग्रहना त्यागने (करेमाणे) करते सते (संसारमग्गं) मिथ्यात्व, अविरति आदिक संसारना मार्गने (वुच्छिंदइ) छेदे छे, तथा (सिद्धिमग्गपडिवण्णे अ) सिद्धिमार्गने पामेलो (भवइ) थाय छे. कृषि विगेरे आरंभ अने धन, धान्यादि परिग्रहनो त्याग करवाथी ज संसारमार्गनो विच्छेद थाय छे, तेनो विच्छेद थवाथी सम्यक् दर्शनादिक मोक्षमार्ग सुखेथी प्राप्त थाय छे, तेथी करीने सिद्धिमार्गने पामेलो थाय छे एम कह्युं छे ते योग्य ज छे. २-४.

निर्वेद पण धर्मनी श्रद्धाथी ज थाय छे तेथी हवे धर्मश्रद्धाने अ कहे छे---

धम्मसद्धाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? धम्मसद्धाए णं सायासोक्खेसु रज्जमाणे विरज्जइ, अगारधम्मं च णं चयइ, अणगारे णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं छेयणभेयणसंजोगाईणं वुच्छेअं करेइ, अव्वाबाहं च सुहं निव्वत्तेइ ॥ २-५ ॥

अर्थ— (भंते) हे भगवान् ! (धम्मसद्धाएणं) धर्मनी श्रद्धाए करीने-आस्तिक्यपणाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? शो गुण प्राप्त करे ?

उत्तर—(धम्मसद्धाएणं) धर्मश्रद्धाए करीने (सायासोक्खेसु) सातवेदनीयथी उत्पन्न थयेला सुखने विषे एटले विषयसुखने विषे (रज्जमाणे) प्रथम आसक्त थयो हतो ते हवे (विरज्जइ) विराग पामे छे, (अगारधम्मं च णं) अने गृहा· चारनो-गृहस्थ धर्मनो (चयइ) त्याग करे छे,-साधु थाय छे तथा (अणगारे णं) अणगार-साधु थयेलो (जीवे) जीव (सारीरमाणसाणं) शरीर अने मनसंबंधी (दुक्खाणं) दुःखोना तथा (छेयणभेयणसंजोगाईणं) खड्गादिकवडे छेदन, कुंता-दिकवडे भेदन विगेरे शरीर संबंधी अने संयोग एटले अनिष्टनो मेळाप तथा आदि शब्दथी इष्टनो वियोग विगेरे मन संबंधी दुःखोना (वुच्छेअं) विच्छेदने (करेइ) करे छे. (अव्वाबाहं च) अने ए ज कारणथी अव्याबाध एटले बाधा पीडा रहित मोक्ष संबंधी (सुहं) सुखने (निव्वत्तेइ) उत्पन्न करे छे. २-५.

धर्मनी श्रद्धावाळाए गुर्वादिकनी सेवा अवश्य करवी जोइए, तेथी हवे गुर्वादिकनी सेवाने कहे छे.—

गुरुसाहम्मिअसुस्सूसणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? गुरुसाहम्मिअसुस्सूसणयाए णं विणयपडिवत्तिं जणयइ, विणयपडिवण्णे अ णं जीवे अणच्चासायणासीले नेरइअतिरिक्खजोणिअमणुस्सदेवदुग्गइओ निरुंभइ वण्णसंजलणभत्तिबहुमाणयाए मणुस्सदेवसुग्गईओ निबंधइ सिद्धिसोग्गइं च विसोहेइ, पसत्थाइं च णं विणयमूलाइं सव्वकज्जाइं साहेइ, अन्ने अ बहवे जीवे विणइत्ता भवइ ॥ ४ ॥ ६ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (गुरुसाहम्मिअसुस्सूसणयाए णं) गुरु अने साधर्मिकनी सेवावडे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? शुं उपार्जन करे ?.

उत्तर—(गुरुसाहम्मिअसुस्सूसणयाए णं) गुरु अने साधर्मिकनी सेवावडे करीने (विणयपडिवत्तिं) विनयनी प्राप्तिने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (विणयपडिवण्णे अ णं) विनयने पामेलो (जीवे) जीव (अणच्चासायणासीले) आशातना रहित स्वभाववाळो थयो सतो (नेरइअतिरिक्खजोणिअमणुस्सदेवदुग्गइओ) नारकी, तिर्यंच योनि, म्लेच्छादिक मनुष्य अने किल्बिषादिक देवरूप दुर्गतिने (निरुंभइ) रुंधे छे, तथा (वण्णसंजलणभत्तिबहुमाणयाए) वर्णवडे एटले श्लाघावडे जे संज्वलन एटले गुणनी प्रगटता, भक्ति एटले उभा थवुं विगेरे सेवा अने बहुमान एटले आभ्यंतरनी प्रीति

આ સર્વે ગુરુ પ્રત્યે કરવાથો (મણુસ્સદેવસુગ્ગઈઓ) કુળવાન મનુષ્ય અને ઐશ્વર્યાદિ યુક્ત દેવરૂપ સુગતિને (નિબંધઇ) બાંધે છે, (સિદ્ધિસોગ્ગઇં ચ) અને સિદ્ધિરૂપી સુગતિને (વિસોહેઇ) સન્માર્ગરૂપ સમ્યગ્દર્શનાદિવડે વિશુદ્ધ કરે છે, (પસત્થાઇં ચ ણં) તથા પ્રશસ્ત એવાં (વિણયમૂલાઇં) અને વિનયના હેતુવાળાં (સવ્વકજ્જાઇં) સર્વે કાર્યોને એટલે શ્રુતનો અભ્યાસ વિગેરે આ ભવ સંબંધી તથા મોક્ષાદિક પરભવ સંબંધી કાર્યોને (સાહેઇ) સાધે છે, (અન્ને અ) તથા બીજા (બહવે) ઘણા (જીવે) જીવોને (વિણઇત્તા) વિનય ગ્રહણ કરાવનાર-વિનય શિખવનાર (ભવઇ) થાય છે. ૪-૬.

ગુરુની સેવા કરતાં છતાં પણ કાંઇક દોષ લાગવાનો સંભવ છે તેથી તેની આલોચના કરવી જોઇએ, તેથી હવે આલોચનાને કહે છે.--

आलोयणाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? आलोयणाए णं मायानियाणमिच्छादंसणसल्लाणं मोक्खमग्गविग्घाणं अणंतसंसारवद्धणाणं उद्धरणं करेइ, उज्जुभावं च णं जणयइ, उज्जुभावपडिवन्ने अ णं जीवे अमाई इत्थिवेयं नपुंसगवेयं च न बंधइ, पुव्वबद्धं च णं निज्जरेइ ॥५॥७॥

અર્થ—(ભંતે) હે ભગવાન ! (આલોયણાએ ણં) આલોચનાવડે એટલે ગુરુની પાસે પોતાના દોષ પ્રગટ કરવાવડે (જીવે) જીવ (કિં જણયઇ) શું ઉત્પન્ન કરે ?

ઉત્તર—(આલોયણાએ ણં) આલોચનાવડે જીવ (મોક્ખમગ્ગવિગ્ઘાણં) મોક્ષમાર્ગના વિઘ્નરૂપ અને (અણંતસંસા-

रवद्धणाणं) अनंत संसारनी वृद्धि करनारा (मायानियाणमिच्छादंसणसल्लाणं) मायाशल्य, निदानशल्य अने मिथ्यादर्शनशल्य ए त्रणे शल्यना (उद्धरणं) उद्धारने-विनाशने (करेइ) करे छे. (उज्जुभावं च णं) तथा ऋजुभावने-सरळपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (उज्जुभावपडिवन्ने अ णं) ऋजुभावने पामेलो (जीवे) जीव (अमाई) माया रहित थयो सतो (इत्थिवेयं) स्त्रीवेदने (नपुंसगवेयं च) अने नपुंसकवेदने (न बंधइ) बांधतो नथी, (पुव्वबद्धं च णं) तथा पूर्वे बांधेला आ बन्ने वेदने अथवा समग्र कर्मने (निज्जरेइ) खपावे छे. ५-७

जे पोताना दोषनी निंदा करतो होय तेनी ज आलोचना सफळ थाय छे तेथी हवे स्वदोषनी निंदाने ज कहे छे.—

निंदणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? निंदणयाए णं पच्छाणुतावं जणयइ, पच्छाणुतावेणं विरज्जमाणे करणगुणसेढिं पडिवज्जइ, करणगुणसेढिं पडिवन्ने अ अणगारे मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ ॥ ६ ॥ ८ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (निंदणयाए णं) निंदावडे एटले पोताना दोषना चिंतवनवडे-तेनी निंदावडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ?

उत्तर—(निंदणयाए णं) निंदावडे करीने जीव (पच्छाणुतावं) " अहो ! में आ अकार्य कर्युं ! " एम पश्चात्तापने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (पच्छाणुतावेणं) पश्चात्तापवडे (विरज्जमाणे) वैराग्यने पाम्यो सतो (करणगुणसेढिं) करण-

वडे एटले अपूर्वकरणवडे अर्थात् पूर्वे कदापि नहीं पामेला एवा निर्मळ मनना परिणामवडे गुणश्रेणिने एटले क्षपकश्रेणिने (पडिवज्जइ) पामे छे. (करणगुणसेढिं) अपूर्वकरणवडे क्षपकश्रेणिने (पडिवन्ने अ) पामेलो (अणगारे) अनगार –साधु (मोहणिज्जं कम्मं) मोहनीय कर्मने (उग्घाएइ) खपावे छे. ६–८.

बहु दोष होय तो निंदानी पछी गर्हा पण करवी जोइए तेथी हवे गर्हाने कहे छे.—

गरहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? गरहणयाए णं अपुरक्कारं जणयई, अपुरक्कारगए अ णं जीवे अप्पसत्थेहिंतो जोगेहिंतो निअत्तइ, पसत्थे अ पवत्तइ, पसत्थजोगपडिवण्णे अ णं अणगारे अणंतघाई पज्जवे खवेइ ॥ ७ ॥ ९ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (गरहणयाए णं) अन्यनी पासे पोताना दोष प्रगट करवारूप गर्हाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ?

उत्तर—(गरहणयाए णं) गर्हाए करीने जीव (अपुरक्कारं) पोताना अपुरस्कारने एटले ' आ गुणवान छे ' एवी प्रसिध्धिना अभावरूप अवज्ञाना स्थानपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (अपुरक्कारगए अ णं) अपुरस्कारने पामेलो (जीवे) जीव (अप्पसत्थेहिंतो) कदाच अशुभ अध्यवसाय उत्पन्न थाय तोपण पोतानी विशेष अवज्ञा थशे एवा भयने लीधे अप्रशस्त एवा (जोगेहिंतो) योगोथी–एटले मन, वचन अने कायाना व्यापारोथी (निअत्तइ) निवर्ते छे–पाछो फरे

छे. (सत्थे अ) अने प्रशस्त एवा योगोने विषे (पवत्तइ) प्रवर्ते छे. (पसत्थजोगपडिवन्ने य णं) तथा प्रशस्त योगने पामेलो (अणगारे) साधु (अणंतघाई) अनंत एवा ज्ञान दर्शनने हणनारा (पज्जवे) पर्यायोने एटले ज्ञानावरणीयादिक कर्मना परिणामोने (खवेइ) खपावे छे. ७–९.

उपर कहेली आलोचना विगेरे तत्त्वथी सामायिकवाळाने ज होय छे तेथी हवे सामायिकने कहे छे.—

सामाइएणं भंते ! जीवे किं जणयइ? सामाइएणं सव्वसावज्जजोगविरइं जणयइ ॥ ८ ॥१०॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (सामाइएणं) सामायिकवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(सामाइएणं) सामायिकवडे जीव (सव्वसावज्जजोगविरइं) सर्व सावद्य योगनी विरतिने एटले सर्व पापव्यापारनी निवृत्तिने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. ८–१०.

सामायिक अंगीकार करनाराए ते सामायिकने रचनारा-कहेनारा अरिहंतोनी स्तुति करवी जोइए तेथी हवे ते चतुर्विंशतिस्तवरूप अरिहंतोनी स्तुतिने कहे छे.—

चउवीसत्थएणं भंते ! जीवे किं जणयइ? चउवीसत्थएणं दंसणविसोहिं जणयइ ॥ ९ ॥११॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (चउवीसत्थएणं) चोवीसत्थाए करीने एटले चतुर्विंशतिस्तवे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे छे ? उत्तर—(चउवीसत्थएणं) चतुर्विंशतिस्तवे करीने जीव (दंसणविसोहिं) दर्शननी एटले समकितनी विशुद्धिने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. ९–११.

जिनेश्वरोनी स्तुति कर्या छतां पण सामायिकनो स्वीकार गुरुवंदन पूर्वक ज थाय छे, तेथी हवे गुरुवंदनने कहे छे.—

वंदणएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? वंदणएणं नीआगोअं कम्मं खवेइ, उच्चागोअं निबंधइ, सोहग्गं च णं अप्पडिहयं आणाफलं निव्वत्तेइ, दाहिणभावं च णं जणयइ ॥ १० ॥ १२ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (वंदणएणं) गुरुना द्वादशावर्त्त वंदनवडे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(वंदणएणं) द्वादशावर्त वंदनवडे करीने जीव (नीआगोअं) नीचगोत्र (कम्मं) कर्मने (खवेइ) खपावे छे, अने (उच्चागोअं) उच्चगोत्रने (निबंधेइ) बांधे छे, (च णं) तथा (अप्पडिहयं) अप्रतिहत एटले अस्खलित–कोइ पण विनाश न करे एवुं अने (आणाफलं) आज्ञा छे फळ–सार जेनुं एवुं (सोहग्गं) सौभाग्य एटले सर्व जनने स्पृहा करवा लायक ऐश्वर्य (निव्वत्तेइ) नीपजावे छे–उत्पन्न करे छे. (दाहिणभावं च णं) तथा दक्षिणभावने एटले लोकोना अनुकूळपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. १०–१२.

सामायिकादिक गुणवाळाए पहेला अने छेल्ला तीर्थंकरना तीर्थमां हमेशां अने मध्यमना बावीश तीर्थंकरना तीर्थमां अपराधनो संभव सते प्रतिक्रमण करवानुं छे, तेथी हवे प्रतिक्रमणने कहे छे.—

पडिक्कमणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? पडिक्कमणेणं वयछिद्दाइं पिहेइ, पिहियवयछिद्दे पुण जीवे निरुद्धासवे असबलचरित्ते अट्ठसु पवयणमायासु उवउत्ते अपुहत्ते सुप्पणिहिए विहरइ ॥११-१३॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान! (पडिक्कमणेणं) प्रतिक्रमणवडे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(पडिक्कमणेणं) प्रतिक्रमणवडे करीने जीव (वयछिद्दाइं) व्रतनां छिद्रोने एटले अतिचारोने (पिहेइ) ढांकी दे छे—रुंधे छे. (पुण) वळी (पिहियवयछिद्दे) जेणे व्रतनां छिद्रो ढांक्यां छे एवो (जीवे) जीव (निरुद्धासवे) आश्रवने रुंधनार थाय छे, अने आश्रव रुंधवाथी (असबलचरित्ते) अशबल एटले निर्मळ चारित्रवाळो थाय छे, तथा (अट्ठसु पवयणमायासु) पांच समिति अने त्रण गुप्तिरूप आठ प्रवचननी माताने विषे (उवउत्ते) उपयोगवाळो तथा (अपुहत्ते) अपृथक्त्व एटले संयमना योगथी अभिन्न तथा (सुप्पणिहिए) संयमयोगने विषे सारी रीते सावधान थयो सतो (विहरइ) विचरे छे. ११-१२.

प्रतिक्रमणमां अतिचारनी शुद्धिने माटे कायोत्सर्ग करवो जोइए तेथी हवे कायोत्सर्गने कहे छे.—

काउस्सग्गेणं भंते! जीवे किं जणयइ? काउस्सग्गेणं तीअपडुप्पन्नं पायच्छित्तं विसोहेइ, विसुद्धपायच्छित्ते अ जीवे निव्वुयहिअए[1] ओहरिअभरु व्व भारवहे पसत्थज्झाणोवगए सुहंसुहेणं विहरइ ॥१२॥१४॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान! (काउस्सग्गेणं) कायोत्सर्गे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(काउस्सग्गेणं) कायोत्सर्गे करीने जीव (तीअपडुप्पन्नं) अतीत एटले चिरकाळे थयेलुं अने प्रत्युत्पन्न एटले हमणां

---

१ " नियत्तहियए " एवो पाठ संभवे छे.

थयेलुं वर्तमान काळनुं (पायच्छित्तं) प्रायश्चित्त एटले प्रायश्चित्तने योग्य अपराध, तेने (विसोहेइ) विशुद्ध करे छे, (विसुद्धपायच्छित्ते अ) अने प्रायश्चित्तवडे विशुद्ध थयेलो (जीवे) जीव (निव्वहिअए) निवृत्तहृदय थाय छे एटले पोताना चित्तने विषे निवृत्तिने पामे छे, कोनी जेम ? ते कहे छे–(ओहरिअभरु व्व भारवहे) उतार्यो छे भार जेणे एवा भारवाहकनी जेम अतिचाररूप भार उतारवाथी चित्तमां निवृत्ति पामे छे, अने तेथी करीने (पसत्थज्झाणोवगए) प्रशस्त ध्यानने पाम्यो सतो (सुहंसुहेणं) सुखे सुखे (विहरइ) विचरे छे. १२–१४.

कायोत्सर्गथी पण जे शुद्ध न थाय, तेने माटे प्रत्याख्यान करवानुं होय छे तेथी हवे प्रत्याख्यानने कहे छे.—

पच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? पच्चक्खाणेणं आसवदाराइं निरुंभइ ॥ १३ ॥ १५ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (पच्चक्खाणेणं) प्रत्याख्यानवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर–(पच्चक्खाणेणं) प्रत्याख्यानवडे एटले मूळगुण अने उत्तरगुणरूपी पच्चक्खाणवडे जीव (आसवदाराइं) हिंसादिक आश्रवना द्वारोने (निरुंभइ) रुंधे छे. उपलक्षणथी पूर्वे उपार्जन करेला कर्मोने खपावे छे. अहीं नमस्कार सहित–नवकारसी विगेरे पच्चक्खाणोनो उत्तरगुणप्रत्याख्यानमां समावेश थाय छे. १३–१५.

प्रत्याख्यान कर्या पछी जो त्यां चैत्य होय तो तेनुं वंदन करवानुं छे, ते चैत्यवंदन स्तुतिस्तवमंगळ विना थइ शकतुं नथी, तेथी हवे स्तुतिस्तवमंगळने कहे छे.—

थयथुइमंगलेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? थयथुइमंगलेणं नाणदंसणचरित्तबोहिलाभं जणयइ, नाणदंसणचरित्तबोहिलाभसंपन्नेणं जीवे अंतकिरिअं कप्पविमाणोववत्तिअं आराहणं आराहेइ ॥ १४ ॥ १६ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (थयथुइमंगलेणं) स्तुति अने स्तवरूप मंगळे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे छे ? उत्तर—(थयथुइमंगलेणं) स्तव एटले देवेंद्रस्तव विगेरे अने स्तुति एटले एकथी आरंभीने सात श्लोक पर्यंत स्तुति, तेरूप मंगळे करीने जीव (नाणदंसणचरित्तबोहिलाभं) ज्ञान, दर्शन अने चारित्ररूपी बोधिलाभने एटले जैनधर्मनी प्राप्तिने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (नाणदंसणचरित्तबोहिलाभसंपन्नेणं) अने ज्ञान, दर्शन तथा चारित्ररूप बोधिलाभने पामवावडे करीने (जीवे) जीव (अंतकिरिअं) संसारना अथवा कर्मना अंतनी क्रियाने अर्थात् मोक्षने आपनारी अथवा (कप्पविमाणोववत्तिअं) कल्प एटले बार देवलोक अने विमान एटले ग्रैवेयक अने अनुत्तरविमान, तेने प्राप्त करावनारी (आराहणं) आराधनाने (आराहेइ) आराधे छे—साधे छे. अर्थात् प्रथम विशिष्ट देवलोकने अने परंपराए छेवट मोक्षने आपनारी आराधनाने साधे छे—करे छे. १४–१६.

स्तव स्तुतिरूप चैत्यवंदन कर्या पछी स्वाध्याय करवानो छे, ते स्वाध्याय काळने विषे ज थाय छे अने ते काळनुं ज्ञान

१ थुइथय॰ थवुं जोइए, परंतु प्राकृत होवाथी आ प्रमाणे पाठ कर्यो छे.

કાળઅત્યુપેક્ષણાવડે થાય છે, તેથી હવે કાળપ્રત્યુપેક્ષણાને કહે છે.—

कालपडिलेहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? कालपडिलेहणयाए णं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ॥ १५–१७ ॥

અર્થ—(भंते) હે ભગવાન ! (कालपडिलेहणयाए णं) કાળપડિલેહણવડે (जीवे) જીવ (किं जणयइ) શું ઉત્પન્ન કરે છે ? ઉત્તર—(कालपडिलेहणयाए णं) પ્રાદોષિક આદિક કાળગ્રહણ અને પ્રતિજાગરણરૂપ પડિલેહણાવડે જીવ (नाणावरणिज्जं) જ્ઞાનાવરણીય (कम्मं) કર્મને (खवेइ) ખપાવે છે. ૧૫–૧૭.

કદાચ અકાળે પાઠ કર્યો હોય તો પ્રાયશ્ચિત્ત કરવું જોઇએ, તેથી તે કહે છે.—

पायच्छित्तकरणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? पायच्छित्तकरणेणं पावकम्मविसोहिं जणयइ, निरइआरे आवि भवइ, सम्मं च णं पायच्छित्तं पडिवज्जमाणे मग्गं च मग्गफलं च विसोहेइ, आयारं आयारफलं च आराहेइ ॥ १६ ॥ १८ ॥

અર્થ—(भंते) હે ભગવાન ! (पायच्छित्तकरणेणं) પ્રાયશ્ચિત્ત કરવાવડે (जीवे) જીવ (किं जणयइ) શું ઉત્પન્ન કરે ? ઉત્તર–(पायच्छित्तकरणेणं) આલોચનાદિક પ્રાયશ્ચિત્ત કરવાવડે જીવ (पावकम्मविसोहिं) પાપકર્મની વિશુદ્ધિને

एटले पाप रहितपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे, (निरइयारे आवि) तथा ज्ञानाचारादि अतिचारने शोधवाथी अतिचार रहितपणुं पण (भवइ) थाय छे, (सम्मं च णं) तथा सम्यक् प्रकारे (पायच्छित्तं) प्रायश्चित्तने (पडिवज्जमाणे) अंगीकार करतो सतो (मग्गं च) मार्गने एटले ज्ञाननी प्राप्तिना हेतुरूप समकितने (मग्गफलं च) अने मार्गना फळने एटले ज्ञानने (विसोहेइ) शुद्ध करे छे, जो के समकित अने ज्ञान एकीसाथे ज प्राप्त थाय छे. तोपण जेम प्रकाशनुं कारण प्रदीप छे तेम ज्ञाननुं कारण समकित छे एम जणाववा माटे आ प्रमाणे कह्युं छे. तथा (आयारं) आचारने एटले चारित्रने (आयारफलं च) अने आचारना फळने एटले मोक्षने (आराहेइ) आराधे छे—साधे छे. १६—१८.

प्रायश्चित्तनुं करवुं ते खमाववाथी थइ शके छे तेथी हवे खामणा करवा संबंधी कहे छे.—

खमावणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? खमावणयाए णं पल्हायणभावं जणयइ, पल्हायणभावमुवगए अ जीवे सव्वपाणभूअजीवसत्तेसु मित्तीभावं उप्पाएइ, मित्तीभावमुवगए आवि जीवे भावविसोहिं काऊण निब्भए भवइ ॥ १७ ॥ १९ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (खमावणयाए णं) क्षामणाए करीने एटले कांइ पण दुष्कृत कर्या पछी " आ मारा दुष्कृतनी तमे क्षमा करो " एम खमाववाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(खमावणयाए णं) खमाववावडे करीने जीव (पल्हायणभावं) चित्तनी प्रसन्नताने (जणयइ) उत्पन्न करे छे, (पल्हायणभावं उवगए

थ)अने चित्तनी प्रसन्नताने पामेलो (जीवे) जीव (सव्वपाणभूअजीवसत्तेसु) सर्व प्राण–बे, त्रण अने चार इंद्रियोवाळा, भूत–वनस्पतिकाय, जीव–पंचेंद्रियो अने सत्त्व–बाकीना जीवो, ए सर्वने विषे (मित्तीभावं) परहितना चिंतवनरूप मैत्रीभावने (उप्पाएइ) उत्पन्न करे छे. (मित्तीभावं उवगए आवि) तथा मैत्रीभावने पामेलो एवो पण (जीवे) जीव (भावविसोहिं) रागद्वेषना अभावरूप भावविशुद्धिने एटले चित्तविशुद्धिने (काऊण) करीने (निब्भए भवइ) निर्भय थाय छे–समग्र भयना कारणनो अभाव थवाथी भय रहित थाय छे. १७–१९.

आवा गुणवाळाए स्वाध्याय करवानो छे तेथी हवे स्वाध्यायने कहे छे.—

सज्झाएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सज्झाएणं नाणावरणिज्जं कम्मं खवेइ ॥ १८ ॥ २० ॥

अर्थ– –(भंते) हे भगवान ! (सज्झाएणं) स्वाध्यायवडे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर–(सज्झाएणं) स्वाध्यायवडे करीने जीव (नाणावरणिज्जं) ज्ञानावरणीय (कम्मं) कर्मने तथा उपलक्षणथी बीजां कर्मोने पण (खवेइ) खपावे छे–क्षय करे छे. १८–२०.

स्वाध्यायमां प्रथम वाचना करवानी छे तेथी हवे वाचनाने कहे छे.

वायणाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? वायणाए णं निज्जरं जणयइ, सुअस्स अणासायणाए वट्टति, सुअस्स अणासायणाए वट्टमाणे तित्थधम्मं अवलंबइ, तित्थधम्मं अवलंबमाणे

महानिज्जरे महापज्जवसाणे भवइ ॥ १९ ॥ २१ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (वायणाए णं) वाचनाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(वायणाए णं) वाचनाए करीने जीव (निज्जरं) कर्मनी निर्जराने (जणयइ) उत्पन्न करे छे, अने (सुअस्स) श्रुतनी (अणासायणाए) अनाशातनाने विषे (वट्टति) वर्ते छे, केमके वाचना नहीं करवाथी श्रुतनी अवज्ञा करी कहेवाय अने तेथी तेनी आशातना करी कहेवाय छे तथा (सुअस्स) श्रुतनी (अणासायणाए) अनाशातनामां (वट्टमाणे) वर्ततो सतो (तित्थधम्मं) तीर्थना धर्मने एटले श्रुतदानरूप गणधरना आचारने (अवलंबइ) अवलंबन करे छे—आश्रय करे छे. अर्थात् पामे छे, तथा (तित्थधम्मं) तीर्थना धर्मने (अवलंबमाणे) अवलंबन करतो सतो (महानिज्जरे) मोटी निर्जरा-वाळो अने (महापज्जवसाणे) महा पर्यवसान एटले सर्वथा कर्मना अंतवाळो (भवइ) थाय छे अर्थात् मोक्षने पामनारो थाय छे. १९–२१.

वाचना लीधा पछी शंका थाय त्यारे फरी पूछवुं जोइए, तेथी हवे प्रच्छना कहे छे.—

पडिपुच्छणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? पडिपुच्छणयाए णं सुत्तत्थतदुभयाइं विसोहेइ, कंखामोहणिज्जं कम्मं वोच्छिंदइ ॥ २० ॥ २२ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (पडिपुच्छणयाए णं) पूर्वे कहेला सूत्रादिकने फरीथी जे पूछवुं ते प्रतिप्रच्छना कहेवाय

छे, ते प्रतिप्रच्छनावडे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(पडिपुच्छणयाए णं) प्रतिप्रच्छनावडे करीने जीव (सुत्तत्थतदुभयाइं) सूत्र, अर्थ अने ते बन्नेने (विसोहेइ) विशुद्ध करे छे, अने (कंखामोहणिज्जं कम्मं) कांक्षामोहनीय कर्मनो (वोच्छिंदइ) नाश करे छे. " आ मारे आ रीते भणवुं योग्य छे के आ रीते भणवुं योग्य छे ? " इत्यादिक शंकानो तथा परमतनी अभिलाषारूप कांक्षानो—ते बन्ने प्रकारना मिथ्यात्वमोहनीय कर्मनो क्षय करे छे. २०–२२

आ प्रमाणे एटले पूछीने स्थिर करेला श्रुतनुं विस्मरण न थवा माटे परावर्तना करवी जोइए तेथी हवे परावर्तना कहे छे.

परिअट्टणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? परिअट्टणयाए णं वंजणाइं जणयइ, वंजणलद्धिं च उप्पाएइ ॥ २१ ॥ २३ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (परिअट्टणयाए णं) परावर्तनावडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(परिअट्टणयाए णं) परावर्तनावडे एटले भणेलाने फरी फरी गणवावडे जीव (वंजणाइं) व्यंजनोने—अक्षरोने (जणयइ) उत्पन्न करे छे एटले के ते व्यंजनो विस्मृत थया होय तोपण गणवाथी ते जलदीथी पाछा स्मरणमां आवे छे तेथी उत्पन्न थाय छे एम कह्युं. (वंजणलद्धिं च) तथा वळी तेवा प्रकारना क्षयोपशमने लीधे व्यंजनलब्धि अने च-शब्द छे तेथी पदलब्धिने पण (उप्पाएइ) उत्पन्न करे छे.—पामे छे. २१–२३.

सूत्रनी जेम अर्थनुं पण विस्मरण नहीं थवा देवा माटे अनुप्रेक्षा करवी जोइए तेथी हवे अनुप्रेक्षा कहे छे.—

अणुप्पेहाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? अणुप्पेहाए णं आउअवज्जाओ सत्त कम्मप्पगडिओ धणिअबंधणबद्धाओ सिढिलबंधणबद्धाओ पकरेइ, दीहकालट्ठिइआओ हस्सकालट्ठिइआओ पकरेइ, तिव्वाणुभावाओ मंदाणुभावाओ पकरेइ, बहुप्पएसग्गाओ अप्पप्पएसग्गाओ पकरेइ, आउअं च णं कम्मं सिअ बंधइ, सिअ नो बंधइ, असायावेअणिज्जं च णं कम्मं नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ, अणाइअं च णं अणवदग्गं दीहमद्धं चाउरंतसंसारकंतारं खिप्पामेव वीईवयइ ॥ २२ ॥ २४ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (अणुप्पेहाए णं) अनुप्रेक्षावडे एटले अर्थनी चिंतनावडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे छे ? उत्तर—(अणुप्पेहाए णं) अर्थचिंतवनरूप अनुप्रेक्षावडे (आउअवज्जाओ) एक आयुष्य-कर्मने वर्जीने बाकीनी (सत्त) सात (कम्मप्पगडिओ) कर्मनी प्रकृतिओ (धणिअबंधणबद्धाओ) गाढ बंधनथी बांधेली—निकाचित करेली होय तेने (सिढिलबंधणबद्धाओ) शिथिल बंधनवडे बंधायेली होय तेवी (पकरेइ) करे छे एटले के अपवर्तना करण करी शकाय तेवी करे छे. कारण के आ अनुप्रेक्षा आभ्यंतर तपरूप छे अने तपथी निकाचित कर्मनो पण क्षय थाय छे एम आगममां कह्युं छे. तथा (दीहकालट्ठिइआओ) जे कर्मप्रकृतिओ दीर्घकाळनी स्थितिवाळी होय तेने (हस्सकालट्ठिइआओ) ह्रस्व एटले अल्प काळनी स्थितिवाळी (पकरेइ) करे छे, एटले शुभाशयना वशथी कर्मनी

स्थितिना कंडकोनो ह्रास करे छे तेथी ते अल्पकाळनी स्थितिवाळी थाय छे. अहीं मनुजायु, तिर्यगायु अने देवायु रहित बाकीनी सर्व कर्मनी स्थिति जाणवी, कारण के तेनुं ज दीर्घपणुं अशुभ छे. तथा (तिव्वाणुभावाओ) तीव्र अनुभाववाळी एटले चारस्थानीया आदिक रसवाळी प्रकृतिने (मंदाणुभावाओ) मंद अनुभाववाळी एटले त्रणस्थानीया आदिक रसवाळी (पकरेइ) करे छे. तथा (बहुप्पएसग्गाओ) बहु प्रदेशाग्रवाळी एटले घणा दळीयावाळी प्रकृतिने (अप्पप्पएसग्गाओ) अल्प प्रदेशाग्रवाळी एटले थोडा दळीयावाळी (पकरेइ) करे छे, तथा (आउअं च णं कम्मं) आयुष्य कर्मने (सिअ बंधइ) कदाचित् बांधे छे, अने (सिअ नो बंधइ) कदाचित बांधतो नथी; केमके आयु तो चालता भवना आयुष्यनो त्रीजो भाग के तेनो पण त्रीजो भाग विगेरे छेवट अंतर्मुहूर्त शेष रहे त्यारे ज बंधाय छे अने ते पण एक ज वार बंधाय छे, ज्यारे बांधे छे त्यारे पण देवायुने ज बांधे छे केमके मुनिने तेनो ज बंध होय छे. तथा (असायावेअणिज्जं च णं कम्मं) असातावेदनीय कर्मने अने चशब्दथी बीजी पण अशुभ कर्मप्रकृतिने (नो भुज्जो भुज्जो उवचिणाइ) वारंवार उपचय करतो नथी–बांधतो नथी. कदाच कोइ वखत प्रमादथी प्रमत्त मुनि अशुभनो पण बंध करे छे पण वारंवार करतो नथी. तथा (अणाइअं च णं) अनादि, (अणवदग्गं) अनवदग्र–अनंत अने (दीहमद्धं) दीर्घाद्ध एटले लांबा काळे ओळंगाय तेवा (चाउरंतसंसारकंतारं) चार गतिरूप अंत–अवयवो छे जेना एवा संसाररूपी कांतारने–अटवीने (खिप्पामेव) शीघ्रपणे ज (विईवयइ) विशेषे करीने अतिक्रमण करे छे–ओळंगे छे. २२–२४.

जेणे श्रुतनो अभ्यास कर्यो होय तेणे धर्मकथा पण करवी जोइए, तेथी हवे धर्मकथाने माटे कहे छे.—

धम्मकहाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? धम्मकहाए णं पवयणं पभावेइ, पवयणपभावए णं जीवे आगमे सस्सभद्दत्ताए कम्मं निबंधइ ॥ २३ ॥ २५ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (धम्मकहाए णं) धर्मकथाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(धम्मकहाए णं) धर्मकथाए करीने एटले व्याख्यान करवावडे करीने जीव (पयवणं) प्रवचननी–जिनशासननी (पभावेइ) प्रभावना करे छे—" प्रावचनिक १, धर्मकथी २, वादी ३, नैमित्तिक ४, तपस्वी ५, विद्या ६, सिद्ध, ७, अने कवि ८, ए आठ प्रभावक कहेला छे." तथा (पवयणपभावए णं) प्रवचननी प्रभावना करवावडे (जीवे) जीव (आगमे) आगामी काळने विषे (सस्सभद्दत्ताए) शश्वत् भद्रताए करीने एटले निरंतर कल्याणपणाए करीने सहित एवा (कम्मं) कर्मने (निबंधइ) बांधे छे अर्थात् शुभानुबंधी शुभ कर्मने उपार्जन करे छे. २३–२५.

आ प्रमाणे पांच प्रकारना स्वाध्यायनी प्रीतिथी श्रुतनी आराधना थाय छे, तेथी हवे श्रुतनी आराधनाने कहे छे.—

सुअस्स आराहणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सुअस्स आराहणयाए णं अन्नाणं खवेइ, न य संकिलिस्सइ ॥ २४ ॥ २६ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (सुअस्स) श्रुतनी (आराहणयाए णं) आराधनाए करीने (जीवे) जीव (किं जण-

यइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(सुअस्स) श्रुतनी (आराहणयाए णं) आराधनाए करीने जीव (अन्नाणं) अज्ञानने (खवेइ) खपावे छे. (न य संकिलिस्सइ) तथा रागादिकथी उत्पन्न थता क्लेशने पामतो नथी. केमके विशिष्ट ज्ञानने लीधे नवी नवी संवेगनी प्राप्ति थवाथी क्लेशने पामतो नथी. २४–२६.

श्रुतनी आराधना मनना एकाग्रपणाथी थाय छे तेथी हवे मननुं एकाग्रपणुं कहे छे.—

एगग्गमनसंनिवेसणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? एगग्गमनसंनिवेसणयाए णं चित्तनिरोहं करेइ ॥ २५ ॥ २७ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (एगग्गमनसंनिवेसणयाए णं) एकाग्रने विषे मन स्थापवावडे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(एगग्गमनसंनिवेसणयाए णं) एकाग्रने विषे मन स्थापवावडे करीने मननी एकाग्रताए करीने जीव (चित्तनिरोहं) कोइ प्रकारे उन्मार्गे गयेला चित्तना निरोधने (करेइ) करे छे. २५–२७.

आ सर्व संयमवाळाने ज सफळ थाय छे, तेथी हवे संयमने कहे छे.—

संजमेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? संजमेणं अणण्हयत्तं जणयइ ॥ २६ ॥ २८ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (संजमेणं) संयमवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(संजमेणं) हिंसादिक आश्रवथी विरमवारूप संयमवडे जीव (अणण्हयत्तं) अनंहस्कत्त्वं–पापरहितपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे

एटले पापरहित थाय छे. २६-२७.

संयम छतां पण तप विना कर्मक्षय थतो नथी, तेथी हवे तपसंबंधी कहे छे.—

तवेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? तवेणं वोदाणं जणयइ ॥ २७ ॥ २९ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (तवेणं) तपवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(तवेणं) तपवडे जीव (वोदाणं) व्यवदानने एटले पूर्वे बांधेला कर्ममळनो नाश थवाथी विशेष प्रकारनी शुद्धिने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. २७-२८.

व्यवदाननुं ज फळ कहे छे.—

वोदाणेणं भंते जीवे किं जणयइ ? वोदाणेणं अकिरिअं जणयइ, अकिरिआए भवित्ता तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥ २८ ॥ ३० ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (वोदाणेणं) व्यवदाने करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(वोदाणेणं) व्यवदाने करीने जीव (अकिरिअं) अक्रियने एटले व्युपरतक्रिय नामना शुक्लध्यानना चोथा भेदने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (अकिरिआए) अक्रियाक एटले व्युपरतक्रिय नामना शुक्लध्यानना चोथा भेदमां वर्तनारो (भवित्ता) थइने (तओ पच्छा) त्यारपछी तरत ज (सिज्झइ) सिद्ध थाय छे—समाप्त अर्थवाळो थाय छे, (बुज्झइ)

ज्ञानदर्शनना उपयोगवडे वस्तुतत्त्वने जाणे छे, (मुचइ) संसारथी मूकाय छे, (परिनिव्वाइ) कर्मरूपी अग्निने बुझावीने चोतरफथी शीतळ थाय छे, तथा (सव्वदुक्खाणमंतं करेइ) शारीरिक अने मानसिक सर्व प्रकारनां दुःखोना अंतने करे छे. २८-३०.

व्यवदान एटले विशेष प्रकारनी शुद्धि ते सुखना शातवडे एटले सुखने पण दूर करवावडे थाय छे तेथी हवे सुखशातने कहे छे.----

सुहसाएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सुहसाएणं अणुस्सुअत्तं जणयइ, अणुस्सुए अ णं जीवे अणुकंपए अणुब्भडे विगयसोए चरित्तमोहणिज्जं कम्मं खवेइ ॥ २९ ॥ ३१ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान! (सुहसाएणं) सुखना शातवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर— (सुहसाएणं) वैषयिक सुखना शातवडे एटले तेने दूर करवावडे-तजीदेवावडे अर्थात् वैषयिक स्पृहानो नाश करवावडे जीव (अणुस्सुअत्तं) अनुत्सुकपणाने एटले वैषयिक सुखना निस्पृहपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे, (अणुस्सुए अ णं) अने उत्सुकता रहित थयेलो (जीवे) जीव (अणुकंपए) दुःखी प्राणी उपर अनुकंपावाळो थाय छे, विषयसुखमां उत्सुकतावाळो जीव बीजा प्राणीने मरता जोइने पण एक पोताना ज सुखमां रसिक थाय छे, पण तेनापर अनुकंपा करतो नथी, तथा उत्सुकता रहित थयेलो जीव (अणुब्भडे) अनुद्भट एटले अभिमान रहित अथवा शृंगारादिकनी शोभा रहित थाय

छे, तथा (विगयसोए) शोकरहित एटले आलोक संबंधी कार्यनो नाश थया छतां ते मोक्षनी इच्छावाळो होवाथी शोक करतो नथी अने आवा प्रकारनो होवाथी ते (चरित्तमोहणिज्जं) कषाय अने नोकषायरूप चारित्रमोहनीय (कम्मं) कर्मने (खवेइ) खपावे छे—क्षय करे छे २९-३१.

सुखनो शात—विनाश सुखमां अप्रतिबद्धतावडे थइ शके छे तेथी अप्रतिबद्धताने कहे छे.—

अप्पडिबद्धयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? अप्पडिबद्धयाए णं निस्संगत्तं जणयइ, निस्संगत्तगए अ णं जीवे एगे एगग्गचित्ते दिआ य राओ अ असज्जमाणे अप्पडिबद्धे आवि विहरइ ॥ ३० ॥ ३२ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (अप्पडिबद्धयाए णं) अप्रतिबद्धताए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(अप्पडिबद्धयाए णं) अप्रतिबद्धता एटले मनने विषे कोइ पण पदार्थ उपर आसक्तिरहितपणुं, ते वडे करीने जीव (निस्संगत्तं) बाह्यवस्तुना निःसंगपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे, (निस्संगत्तगए अ णं) निःसंगपणाने पामेलो (जीवे)जीव (एगे) एकलो एटले रागद्वेष रहित थाय छे, तथा (एगग्गचित्ते) एकाग्रचित्त एटले धर्ममां दृढ मनवाळो थाय छे, तथा (दिआ य राओ अ) दिवसे अने रात्रे (असज्जमाणे) अनासक्त एटले बाह्य संगने त्याग करतो सतो (अप्पडिबद्धे आवि) अने अप्रतिबद्ध एवो सतो पण (विहरइ) मासकल्पादिक उद्यत विहारे करीने विचरे छे. ३०-३२.

अप्रतिबद्धता तो विविक्त शयनासनथी थइ शके छे तेथी तेने कहे छे.—

विवित्तसयणासणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? विवित्तसयणासणयाए णं चरित्तगुत्तिं जणयइ, चरित्तगुत्ते अ णं जीवे विवित्ताहारे दढचरित्ते एगंतरए मोक्खभावपडिवन्ने अट्ठविहं कम्मगंठिं निज्जरेइ ॥ ३१ ॥ ३२ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (विवित्तसयणासणयाए णं) विविक्त शयनासनवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(विवित्तसयणासणयाए णं) विविक्त एटले स्त्री, पशु, पंडकादि रहित शयन, आसन अने उपलक्षणथी उपाश्रयवडे करीने जीव (चरित्तगुत्तिं) चारित्रनी गुप्तिने एटले रक्षाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (चरित्तगुत्ते अ णं) तथा चारित्रनी रक्षा करनार (जीवे) जीव (विवित्ताहारे) विविक्त एटले विगइ आदिक शरीरनी पुष्टि करनार वस्तु रहित आहार छे जेनो एवो, तथा (दढचरित्ते) दृढ छे चारित्र जेनुं एवो, तथा, (एगंतरए) संयमने विषे एकांतपणे-निश्चयपणे रक्त—आसक्त एवो, तथा (मोक्खभावपडिवन्ने) मोक्षना भावने—अभिप्रायने पामेलो एटले 'मारे मोक्ष ज साधवानो छे' एवा अभिप्रायवाळो सतो (अट्ठविहं) आठ प्रकारनी (कम्मगंठिं) कर्मरूपी ग्रंथिने (निज्जरेइ) निर्जरे छे—क्षपकश्रेणिवडे क्षय करे छे. ॥ ३१—३२ ॥

विविक्त शयनासनथी विनिवर्तना थाय छे तेथी तेने बतावे छे.—

विणिवट्टणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? विणिवट्टणयाए णं पावकम्माणं अकरणयाए अब्भु-ट्ठेइ, पुव्वबद्धाण य निज्जरणयाए तं निअत्तेइ, तओ पच्छा चाउरंतसंसारकंतारं विईवयइ ॥३२॥३४॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (विणिवट्टणयाए णं) विनिवर्तनाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(विणिवट्टणयाए णं) विनिवर्तनावडे एटले विषयोथी आत्माने पराङ्मुख करवावडे जीव (पावकम्माणं) ज्ञानावरणादिक पापकर्मोने (अकरणयाए) नहीं करवाथी एटले नवां कर्मो नहीं बांधवामां (अब्भुट्ठेइ) उद्यमवंत थाय छे. (पुव्वबद्धाण य) तथा पूर्वे बांधेला कर्मोनी (निज्जरणयाए) निर्जरा करवाथी (तं) ते पापकर्मने (निअत्तेइ) निवर्तन करे छे—खपावे छे, (तओ पच्छा) त्यारपछी (चाउरंतसंसारकंतारं) चार गतिरूप अंत—अवयवो छे जेना एवा संसाररूप कांतारने (विईवयइ) ओळंगे छे. ३२–३४.

विषयोथी निवृत्ति पामेलो कोइक जीव—साधु संभोगना पच्चक्खाणवाळो पण थाय छे, तेथी हवे संभोगना पच्चक्खाणने कहे छे.—

संभोगपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? संभोगपच्चक्खाणेणं आलंबणाइं खवेइ, निरालंबणस्स य आययट्ठिआ जोगा भवंति, सएणं लाभेणं तुस्सइ, परस्स लाभं नो आसायइ, नो तक्केइ, नो पीहेइ, नो पत्थेइ, नो अभिलसइ, परस्स लाभं अणासाएमाणे अतक्केमाणे अपीहेमाणे

अपत्थेमाणे अणभिलसेमाणे दोच्चं सुहसिज्जं उवसंपज्जित्ताणं विहरइ ॥ ३३ ॥ ३५ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (संभोगपच्चक्खाणेणं) संभोगना पच्चक्खाणवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(संभोगपच्चक्खाणेणं) संभोग एटले एक मंडळीमां आहार करवो अर्थात् बीजा मुनिए आपेला आहारादिक ग्रहण करवा, तेनुं प्रत्याख्यान एटले पोते गीतार्थ होइने जिनकल्पादिक अंगीकार करवाथी तेनो—बीजाना लावेला आहारादिकनो त्याग करवो, तेरूप संभोगपच्चक्खाणे करीने जीव (आलंबणाइं) ग्लानत्वादिक आलंबनोने (खवेइ) खपावे छे—दूर करे छे. बीजा साधु मांदगी आदि कारणे बीजाना लावी आपेला आहारादिकने ग्रहण करे छे, परंतु आ तो कारण छतां पण ग्रहण करता नथी, अने निरंतर उद्यत विहारवडे वीर्याचारनुं आलंबन करे छे. (निरालंबणस्स य) तथा आलंबन रहित एवा जीवने—साधुने (आययट्ठिया) आयतार्थिक एटले मोक्षना प्रयोजनवाळा ज (जोगा) व्यापारो (भवंति) होय छे. आलंबनवाळाने केटलाक व्यापारो मोक्षना प्रयोजनवाळा नथी पण होता तेथी आ प्रमाणे कह्युं छे. तेथी ते निरालंबन साधु (सएणं लाभेणं तुस्सइ) पोताना लाभे करीने पोते ज मेळवेला लाभे करीने संतुष्ट थाय छे. अने (परस्स लाभं) बीजाना लाभनो (नो आसाएइ) आस्वाद करतो नथी, (नो तक्केइ) तर्क करतो नथी—चिंतवतो नथी, (नो पीहेइ) स्पृहा करतो नथी—इच्छतो नथी, (नो पत्थेइ) प्रार्थना करतो नथी, तथा (नो अभिलसइ) अभिलाषा करतो नथी. (परस्स लाभं) बीजाना लाभने (अणासाएमाणे) आस्वादन नहीं करतो, (अतक्केमाणे) तर्क नहीं करतो, (अपीहेमाणे) स्पृहा नहीं करतो, (अपत्थेमाणे) प्रार्थना नहीं करतो तथा (अणभिलसेमाणे) अभिलाष

नहीं करतो सतो (दोच्चं) बीजी (सुहसिज्जं) सुखशय्याने एटले बीजा सर्वे साधुओथी जूदा एकला रहेवारूप सुखशय्याने (उपसंपज्जित्ता णं) अंगीकार करीने (विहरइ) विचरे छे. ३३-३५.

संभोगना पच्चक्खाण करनारने उपधिनुं पण पच्चक्खाण होय छे तेथी तेने बतावे छे.—

उवहिपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? उवहिपच्चक्खाणेणं अपलिमंथं जणयइ, निरुवहिए णं जीवे निक्कंखे उवहिमंतरेण य न संकिलिस्सइ ॥ ३४ ॥ ३६ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (उवहिपच्चक्खाणेणं) उपधिना पच्चक्खाणवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(उवहिपच्चक्खाणेणं) रजोहरण अने मुखवस्त्रिका सिवाय बीजी उपधिना पच्चक्खाण—त्यागवडे (अपलिमंथं) परिमंथ एटले स्वाध्यायनो विघात, तेनो अभाव ते अपरिमंथ अर्थात् स्वाध्यायादिकमां आळस रहितपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे, तथा (निरुवहिए णं) उपधि रहित एवो (जीवे) जीव (निक्कंखे) कांक्षा रहित एटले वस्त्रादिकने विषे अभिलाषा रहित थाय छे, तेथी ते (उवहिमंतरेण य) उपधि विना (न संकिलिस्सइ) क्लेशने पामतो नथी—अनुभवतो नथी. ३४-३६.

उपधिनुं पच्चक्खाण करनार जिनकल्पिकादिकने योग्य आहारादिक न मळे तो उपवास पण थाय छे माटे उपवास एटले आहारना पच्चक्खाणने हवे कहे छे.—

आहारपच्चक्खाणेणं भंते! जीवे किं जणयइ? आहारपच्चक्खाणेणं जीविआसंसप्पओगं वोच्छिंदइ, जीविआसंसप्पओगं वोच्छिंदित्ता जीवे आहारमंतरेण न संकिलिस्सइ ॥ ३५ ॥ ३७ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (आहारपच्चक्खाणेणं) आहारना पच्चख्खाणवडे एटले सदोष आहारना त्यागवडे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(आहारपच्चख्खाणेणं) आहारना पच्चख्खाणवडे-उपवास करवावडे जीव (जीविआसंसप्पओगं) जीवितनी आशंसाना प्रयोगनो एटले जीववानी अभिलाषानो (वोच्छिंदइ) विच्छेद-विनाश करे छे. तथा (जीविआसंसप्पओगं) जीवितनी आशंसाना प्रयोगने (वोच्छिंदित्ता) छेदीने (जीवे) जीव (आहारमंतरेण) आहार विना-योग्य आहार न मळे तोपण (न संकिलिस्सइ) क्लेशने पामतो नथी-उत्कृष्ट तप थाय तोपण ते पीडाने अनुभवतो नथी. ३५-३७.

उपर कहेला त्रणे पच्चख्खाणो कषायना अभावे ज सफळ थाय छे तेथी हवे कषायनुं पच्चख्खाण देखाडे छे.—

कसायपच्चक्खाणेणं भंते! जीवे किं जणयइ? कसायपच्चक्खाणेणं वीयरागभावं जणयइ, वीयरागभावं पडिवन्ने अ णं जीवे समसुहदुक्खे भवइ ॥ ३६ ॥ ३८ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (कसायपच्चक्खाणेणं) कषायना पच्चख्खाणवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर-(कसायपच्चख्खाणेणं) क्रोधादिक कषायना त्यागवडे जीव (वीयरागभावं) वीतरागपणाने अने

उपलक्षणथी द्वेषरहितपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. तथा (वीयरागभावं) वीतरागपणाने (पडिवन्ने श्र यं) पामेलो एवो (जीवे) जीव (समसुहदुक्खे) समान छे सुखदुःख जेने एवो (भवइ) थाय छे–सुख दुःखने विषे समान चित्तवाळो थाय छे. ३६–३८.

कषाय रहित सतो पण योगना पच्चख्खाणथी ज खरो मुक्त थाय छे, तेथी तेने कहे छे.—

जोगपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? जोगपच्चक्खाणेणं अजोगित्तं जणयइ, अजोगी णं जीवे नवं कम्मं न बंधइ, पुव्वबंधं च निज्जरेइ ॥ ३७ ॥ ३९ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (जोगपच्चक्खाणेणं) योगना पच्चख्खाणवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(जोगपच्चख्खाणेणं) योग एटले मन, वचन, कायाना व्यापार, तेना निरोधवडे जीव (अजोगित्तं) अयोगीपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (अजोगी णं जीवे) अने अयोगी एवो जीव (नवं कम्मं) नवुं कर्म (न बंधइ) बांधतो नथी, (पुव्वबद्धं च) अने पूर्वे बांधेला भवोपग्राही चार कर्मने (निज्जरेइ) निर्जरे छे–क्षय करे छे. ३७–३९.

योगनुं पच्चख्खाण करनारने शरीरनुं पच्चख्खाण पण करवानुं होय छे, तेथी तेने कहे छे.—

सरीरपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सरीरपच्चक्खाणेणं सिद्धाइसयगुणत्तं निव्वत्तेइ, सिद्धाइसयगुणसंपन्ने अ णं जीवे लोगग्गमुवगए परमसुही भवइ ॥ ३८ ॥ ४० ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (सरीरपच्चक्खाणेणं) शरीरना पच्चक्खाणवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(सरीरपच्चक्खाणेणं) औदारिकादिक सर्व शरीरना त्यागवडे जीव (सिद्धाइसयगुणत्तं) सिद्धना अतिशय गुणपणाने (निव्वत्तेइ) उत्पन्न करे छे. (सिद्धाइसयगुणसंपन्ने अ णं) सिद्धना अतिशय गुणने पामेलो (जीवे) जीव (लोगग्गं उवगए) लोकना अग्रभागने पाम्यो सतो-मुक्तिशिलाए पहोंच्यो सतो (परमसुही भवइ) अत्यंत सुखी थाय छे. ३८—४०.

उपर कहेलां संभोगादिक पच्चक्खाणो प्राये सहायनुं पच्चक्खाण सते सुलभ छे, तेथी सहायनुं पच्चक्खाण कहे छे.—

सहायपच्चक्खाणेणं भंते जीवे ! किं जणयइ ? सहायपच्चक्खाणेणं एगीभावं जणयइ, एगीभावभूए अ जीवे एगग्गं भावेमाणे अप्पझंझे अप्पकसाए अप्पकलहे अप्पतुमंतुमे संजमबहुले संवरबहुले समाहिए आवि भवइ ॥ ३९ ॥ ४१ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (सहायपच्चक्खाणेणं) सहायना पच्चक्खाणवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(सहायपच्चक्खाणेणं) सहाय करनारा जे मुनिओ तेमनो त्याग करवावडे-सहायनी अपेक्षा तजवावडे जीव (एगीभावं) एकीभावने एटले एकत्वने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (एगीभावभूए अ) एकत्वने पाम्यो एवो (जीवे) जीव (एगग्गं भावेमाणे) एकाग्रपणाने भावतो-अभ्यास करतो (अप्पझंझे) वाणीना कलह रहित थाय छे, (अप्पकसाए)

કષાય રહિત થાય છે, (અપ્પકલહે) કલહ રહિત થાય છે, (અપ્પતુમંતુમે) તું તું એવા શબ્દ રહિત થાય છે, એટલે કે "તું જ આ કાર્ય કરતો હતો, તું જ કરે છે" ઇત્યાદિક શબ્દ બોલવાનો વખત જ આવતો નથી. તથા (સંજમબહુલે) ઘણા સંયમવાળો અને (સંવરબહુલે) ઘણા સંવરવાળો થાય છે, (સમાહિએ આવિ ભવઇ) તેમજ જ્ઞાનાદિકની સમાધિવાળો પણ થાય છે. ૩૯-૪૧.

આવો જે જીવ હોય તે છેવટ ભક્તપ્રત્યાખ્યાન કરે છે, તેથી તેને કહે છે.—

ભત્તપચ્ચક્ખાણેણં ભંતે ! જીવે કિં જણયઇ ? ભત્તપચ્ચક્ખાણેણં અણેગાઇં ભવસયાઇં નિરુંભઇ ॥ ૪૦ ॥ ૪૨ ॥

અર્થ—(ભંતે) હે ભગવાન ! (ભત્તપચ્ચક્ખાણેણં) આહારના પ્રત્યાખ્યાનવડે કરીને (જીવે) જીવ (કિં જણયઇ) શું ઉત્પન્ન કરે ? ઉત્તર—(ભત્તપચ્ચક્ખાણેણં) આહારના પ્રત્યાખ્યાનવડે કરીને જીવ (અણેગાઇં) અનેક (ભવસયાઇં) સેંકડો ભવોને (નિરુંભઇ) રુંધે છે અર્થાત્ દૃઢ શુભ અધ્યવસાયથી સંસારને ઘણો અલ્પ કરે છે. ૪૦-૪૨.

હવે સર્વ પ્રત્યાખ્યાનોને વિષે ઉત્તમ એવા છેવટના સદ્‌ભાવ પ્રત્યાખ્યાનને કહે છે.—

સબ્ભાવપચ્ચક્ખાણેણં ભંતે ! જીવે કિં જણયઇ ? સબ્ભાવપચ્ચક્ખાણેણં અનિઅટ્ટિં જણયઇ, અનિઅટ્ટિં પડિવન્ને અ અણગારે ચત્તારિ કેવલિકમ્મંસે ખવેઇ । તંજહા—વેઅણિજ્જં, આઉઅં, નામં,

गोत्तं । तओ पच्छा सिज्झइ, बुज्झइ, मुच्चइ, परिनिव्वाइ, सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥ ४१ ॥ ४२ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान! (सब्भावपच्चक्खाणेणं) सद्भाव प्रत्याख्याने करीने (जीवे) जीव (किं) शुं (जणयइ) उत्पन्न करे? उत्तर—(सब्भावपच्चक्खाणेणं) सर्वथा फरीथी करवानो असंभव होवाथी सद्भावे करीने एटले परमार्थे करीने जे प्रत्याख्यान ते सद्भाव प्रत्याख्यान करवावडे करीने एटले सर्व संवररूप शैलेशीकरण करवावडे करीने जीव (अनिअट्टिं) अनिवृत्तिने एटले शुक्ल ध्याननो चोथा भेदने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (अनिअट्टिं) अनिवृत्तिने (पडिवन्ने अ) पामेलो एवो (अणगारे) साधु (चत्तारि) चार (केवलिकम्मंसे) केवळीना कर्मांशोने एटले केवळी थतां बाकी रहेला कर्मोने (खवेइ) खपावे छे. (तं जहा) ते कर्मो आ प्रमाणे.—(वेअणिज्जं) वेदनीय, (आउअं) आयुष्य, (नामं) नामकर्म अने (गोत्तं) गोत्रकर्म ए चार भवोपग्राही कर्मोने खपावे छे, (तओ पच्छा) त्यारपछी (सिज्झइ) समग्र अर्थने साधीने सिद्ध थाय छे, (बुज्झइ) तत्त्वना बोधने पामे छे, (मुच्चइ) कर्मथी मुक्त थाय छे, (परिनिव्वाइ) कर्मरूपी तापना अभावथी शीतळ थाय छे, तथा (सव्वदुक्खाणमंतं करेइ) सर्व दुःखोनो अंत करे छे. ४१–४२.

आ सद्भाव प्रत्याख्यान प्राये करीने प्रतिरूपता सते थाय छे तेथी हवे प्रतिरूपताने बतावे छे—

पडिरूवयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ? पडिरूवयाए णं लाघविअं जणयइ, लहुभूए अ णं जीवे अप्पमत्ते पागडलिंगे पसत्थलिंगे विसुद्धसम्मत्ते सत्तसमिइसम्मत्ते सव्वपाणभूअजीवसत्तेसु

वीससणिज्जरूवे अप्पडिलेहे जिइंदिए विउलतवसमिइसमन्नागए आवि भवइ ॥ ४२ ॥ ४४ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (पडिरूवयाए णं) प्रतिरूपतावडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(पडिरूवयाए णं) स्थविरकल्पीना जेवो वेष धारण करवो ते प्रतिरूप कहेवाय छे ते प्रतिरूपतावडे अर्थात् अधिक उपकरणना त्यागवडे जीव (लाघविअं) द्रव्यथी अल्प उपकरणने लीधे अने भावथी अप्रतिबद्धपणाने लीधे लाघवपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (लहुब्भूए अ णं) अने लघुभूत एटले लघु थयेलो (जीवे) जीव (अप्पमत्ते) प्रमादरहित थाय छे, ते (पागडलिंगे) स्थविरकल्पिकादिकना जेवो जणातो होवाथी प्रगट लिंगवाळो थाय छे, (पसत्थलिंगे) जीवरक्षाना हेतुरूप रजोहरणादिक धारण करवाथी प्रशस्त लिंगवाळो थाय छे, (विसुद्धसम्मत्ते) क्रियावडे समकितने शोधन करवाथी विशुद्ध समकितवाळो थाय छे, (सत्तसमिइसम्मत्ते) सत्य अने समितिओ जेनी समाप्त अने परिपूर्ण थइ छे एवो थाय छे. अने तेथी करीने ज (सव्वपाणभूअजीवसत्तेसु) सर्व प्राण, भूत, जीव अने सत्त्वने विषे (वीससणिज्जरूवे) पीडा उपजावनार नहीं होवाथी विश्वास करवा लायक थाय छे. (अप्पडिलेहे) अल्प उपधि होवाथी अल्प पडिलेहणावाळो थाय छे, (जिइंदिए) जितेंद्रिय थाय छे, तथा (विउलतवसमिइसमन्नागए आवि) विपुल अने घणा भेद होवाथी विस्तीर्ण एवा तप अने सर्व विषयमां व्याप्त होवाथी विपुल एवी समितिओवडे युक्त एवो पण (भवइ) थाय छे. उपर समितिओनुं समग्रपणुं कह्युं अने अहीं सर्व विषयनुं व्याप्तपणुं कह्युं, तेथी पुनरुक्त दोष समजवो नहीं. ४२–४४.

प्रतिरूपता छते पण वैयावच्च करवाथी ज इष्टनी सिद्धि थाय छे, तेथी वैयावच्चने कहे छे.—

कषाय रहित थाय छे, (अप्पकलहे) कलह रहित थाय छे, (अप्पतुमंतुमे) तुं तुं एवा शब्द रहित थाय छे, एटले के "तुं ज आ कार्य करतो हवो, तुं ज करे छे" इत्यादिक शब्द बोलवानो वखत ज आवतो नथी. तथा (संजमबहुले) घणा संयमवाळो अने (संवरबहुले) घणा संवरवाळो थाय छे, (समाहिए आवि भवइ) तेमज ज्ञानादिकनी समाधिवाळो पण थाय छे. ३९-४१.

आवो जे जीव होय ते छेवट भक्तप्रत्याख्यान करे छे, तेथी तेने कहे छे.—

भत्तपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? भत्तपच्चक्खाणेणं अणेगाइं भवसयाइं निरुंभइ ॥ ४० ॥ ४२ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (भत्तपच्चक्खाणेणं) आहारना प्रत्याख्यानवडे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(भत्तपच्चक्खाणेणं) आहारना प्रत्याख्यानवडे करीने जीव (अणेगाइं) अनेक (भवसयाइं) सेंकडो भवोने (निरुंभइ) रुंधे छे अर्थात् दृढ शुभ अध्यवसायथी संसारने घणो अल्प करे छे. ४०-४२.

हवे सर्व प्रत्याख्यानोने विषे उत्तम एवा छेवटना सद्भाव प्रत्याख्यानने कहे छे.—

सब्भावपच्चक्खाणेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सब्भावपच्चक्खाणेणं अनिअट्टिं जणयइ, अनिअट्टिं पडिवन्ने अ अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ । तंजहा—वेअणिज्जं, आउअं, नामं,

वीससणिज्जरूवे अप्पडिलेहे जिइंदिए विउलतवसमिइसमन्नागए आवि हवइ ॥ ४२ ॥ ४४ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (पडिरूवयाए णं) प्रतिरूपतावडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(पडिरूवयाए णं) स्थविरकल्पीना जेवो वेष धारण करवो ते प्रतिरूप कहेवाय छे ते प्रतिरूपतावडे अर्थात् अधिक उपकरणना त्यागवडे जीव (लाघवियं) द्रव्यथी अल्प उपकरणने लीधे अने भावथी अप्रतिबद्धपणाने लीधे लाघवपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (लहुभूए अ णं) अने लघुभूत एटले लघु थयेलो (जीवे) जीव (अप्पमत्ते) प्रमादरहित थाय छे, ते (पागडलिंगे) स्थविरकल्पिकादिकना जेवो जणातो होवाथी प्रगट लिंगवाळो थाय छे, (पसत्थलिंगे) जीवरक्षाना हेतुरूप रजोहरणादिक धारण करवाथी प्रशस्त लिंगवाळो थाय छे, (विसुद्धसम्मत्ते) क्रियावडे समकितने शोधन करवाथी विशुद्ध समकितवाळो थाय छे, (सत्तसमिइसम्मत्ते) सत्य अने समितिओ जेनी समाप्त अने परिपूर्ण थइ छे एवो थाय छे, अने तेथी करीने ज (सव्वपाणभूयजीवसत्तेसु) सर्व प्राण. भूत, जीव अने सत्त्वने विषे (वीससणिज्जरूवे) पीडा उपजावनार नहीं होवाथी विश्वास करवा लायक थाय छे, (अप्पडिलेहे) अल्प उपधि होवाथी अल्प पडिलेहणवाळो थाय छे, (जिइंदिए) जितेंद्रिय थाय छे, तथा (विउलतवसमिइसमन्नागए आवि) [illegible] होवाथी विस्तीर्ण एवा तप अने सर्व विषयमां व्याप्त होवाथी विपुल एवी समितिओवडे युक्त एवो थाय [illegible] समितिओनुं समग्रपणुं कह्युं अने अहीं सर्व विषयनुं व्याप्तपणुं कह्युं, तेथी पुनरुक्त दोष समजवो [illegible]

प्रतिरूपता छते पण वैयावच्च करवाथी ज इष्टनी सिद्धि थाय छे, तेथी वैयावच्चने कहे छे— [illegible]

वेआवच्चेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? वेयावच्चेएं तित्थयरनामगोअं कम्मं निबंधइ ॥ ४३ ॥ ४५ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (वेआवच्चेणं) वैयावच्चवडे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(वेआवच्चेणं) वैयावच्चवडे करीने जीव (तित्थयरनामगोअं) तीर्थंकरनाम गोत्र (कम्मं) कर्मने (निबंधइ) बांधे छे. ४३–४५.

वैयावच्चवडे अरिहंतपदनी प्राप्ति कही, ते अरिहंत सर्व गुण संपन्न होय छे, तेथी सर्व गुणसंपन्नताने कहे छे.—

सव्वगुणसंपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सव्वगुणसंपन्नयाए णं अपुणरावत्तिं जणयइ, अपुणरावत्तिपत्तए अ णं जीवे सारीरमाणसाणं दुक्खाणं नो भागी भवइ ॥ ४४ ॥ ४६ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (सव्वगुणसंपन्नयाए णं) ज्ञानादिक सर्व गुणोथी युक्तपणाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(सव्वगुणसंपन्नयाए णं) सर्व गुणोथी युक्तपणाए करीने जीव (अपुणरावत्तिं) अपुनरावृत्तिने एटले मुक्तिने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (अपुणरावत्तिपत्तए अ णं) अपुनरावृत्तिने–मुक्तिने पामेलो (जीवे) जीव (सारीरमाणसाणं) शरीर अने मन संबंधी सर्व (दुक्खाणं) दुःखोनो (भागी) भागी (नो भवइ) थतो नथी. केमके दुःखना कारणरूप शरीर अने मननो ज अभाव छे तेथी ते दुःखनो भागी थतो नथी. ४४–४६.

सर्व गुणो तो वीतरागपणुं सते ज थाय छे तेथी वीतरागपणाने कहे छे.—

वीअरागयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? वीअरागयाए णं णेहाणुबंधणाणि तण्हाणुबंधणाणि अ वोच्छिंदइ, मणुण्णामणुण्णेसु सद्दफरिसरूवरसगंधेसु विरज्जइ ॥ ४५ ॥ ४७ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (वीअरागयाए णं) वीतरागपणाए करीने एटले रागद्वेष रहितपणाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर–(वीअरागयाए णं) वीतरागपणाए करीने जीव (णेहाणुबंधणाणि) पुत्रादिक संबंधी स्नेहना बंधनोने (तण्हाणुबंधणाणि अ) तथा तृष्णा एटले लोभरूप बंधनोने (वोच्छिंदइ) छेदी नाखे छे, तथा (मणुण्णामणुण्णेसु) मनोज्ञ अने अमनोज्ञ एवा (सद्दफरिसरूवरसगंधेसु) शब्द, स्पर्श, रूप, रस अने गंधने विषे (विरज्जइ) विराग पामे छे–विरमे छे. प्रथम कषायनुं पच्चक्खाण कह्युं छे तेनाथी ज वीतरागपणुं आवी जाय छे तो पण राग ए समग्र अनर्थनुं मूळ छे एम जणाववा माटे अहीं वीतरागपणुं जूदुं कह्युं छे. ४५–४७.

वीतरागपणानुं मुख्य कारण क्षमा छे तेथी क्षमाने कहे छे.—

खंतीए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? खंतीए णं परीसहे जिणइ ॥ ४६ ॥ ४८ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (खंतीए णं) क्षमाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे छे ? उत्तर–(खंतीए णं) क्षमाए करीने जीव (परीसहे) वधादिक परिषहोने (जिणइ) जीते छे. ४६–४८.

क्षमा पण मुक्तिवडे एटले निर्लोभतावडे ज दृढ थाय छे, तेथी मुक्तिने कहे छे.—

मुत्तीए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? मुत्तीए णं अकिंचणं जणयइ, अकिंचणे अ जीवे अत्थलोलाणं पुरिसाणं अपत्थणिज्जे हवइ ॥ ४७ ॥ ४९ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (मुत्तीए णं) निर्लोभतावडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर–(मुत्तीए णं) निर्लोभतावडे जीव (अकिंचणं) अकिंचन एटले परिग्रह रहितपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (अकिंचणे अ) परिग्रह रहित एवो (जीवे) जीव (अत्थलोलाणं) धनना लोभी एवा (पुरिसाणं) चौरादिक पुरुषोने (अपत्थणिज्जे) नहीं प्रार्थना करवा लायक एटले पीडवाने नहीं इच्छवा लायक (भवइ) थाय छे. ४७–४९.

लोभने अभावे माया करवानुं कारण पण होतुं नथी, तेथी मायाना अभावरूप आर्जवने कहे छे.—

अज्जवयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? अज्जवयाए णं काउज्जुअयं भावुज्जुअयं भासुज्जुअयं अविसंवायणं जणयइ, अविसंवायणसंपन्नयाए अ णं जीवे धम्मस्स आराहए भवइ ॥ ४८ ॥ ५० ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (अज्जवयाए णं) आर्जववडे करीने एटले माया रहितपणाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(अज्जवयाए णं) आर्जववडे करीने जीव (काउज्जुअयं) कायानी ऋजुताने एटले कुब्जादिकनो वेष अने भृकुटिनो विकार विगेरे नहीं करवाथी शरीरना सरळपणाने, तथा (भावुज्जुअयं) भावनी ऋजुताने एटले मनमां कांइक विचार होय छतां लोकोने रंजन करवा माटे मुखथी जूदुं बोलवुं अथवा कायाथी जूदुं करवुं

तेना अभावरूप-तेम नहीं करवारूप मननी सरळताने, तथा (भासुज्जुअयं) भाषानी ऋजुता एटले हास्यादिकने निमित्ते अन्य देशनी भाषा न बोलवारूप भाषानी सरळताने, तथा (अविसंवायणं) अविसंवादनने एटले अन्यना अविप्रतारणने अर्थात् बीजाने ठगवुं नहीं तेने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (अविसंवायणसंपन्नयाए अ णं) अविसंवादनने प्राप्त थयेलो तथा उपलक्षणथी काय, मन अने वचननी ऋजुताने प्राप्त थयेलो (जीवे) जीव (धम्मस्स) धर्मनो (आराहए) आराधक (हवइ) थाय छे. ४८–५०.

आवा गुणवाळाने पण विनयथी ज इष्टसिद्धि थाय छे, अने विनय मार्दवथी थाय छे, तेथी मार्दवने कहे छे.—

मद्दवयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? मद्दवयाए णं जीवे अणुस्सियत्तं जणयइ, अणुस्सियत्तेणं जीवे मिउमद्दवसंपन्ने अट्ठमयट्ठाणाइं निट्ठवेइ ॥ ४९ ॥ ५१ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (मद्दवयाए णं) मार्दववडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(मद्दवयाए णं) मार्दववडे (जीवे) जीव (अणुस्सियत्तं) अनुच्छ्रितपणाने एटले अहंकारना अभावने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (अणुस्सियत्तेणं) अनुच्छ्रितपणाए करीने (जीवे) जीव (मिउमद्दवसंपन्ने) कोमळ एटले द्रव्यथी अने भावथी नमनना-नम्रताना स्वभाववाळानुं जे मार्दव एटले सदा सुकुमाळपणुं तेणे करीने सहित एवो सतो (अट्ठमयट्ठाणाइं) आठ मदना स्थानोने (निट्ठवेइ) खपावे छे. ४९–५१.

तत्त्वथी जे सत्ययुक्त होय तेने ज मार्दव होइ शके छे, सत्यमां पण भावसत्य ज प्रधान छे, तेथी भावसत्यने कहे छे.—

भावसच्चेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? भावसच्चेणं भावविसोहिं जणयइ, भावविसोहिए अ वट्टमाणे जीवे अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठेइ, अरहंतपण्णत्तस्स धम्मस्स आराहणयाए अब्भुट्ठित्ता परलोअधम्मस्स आराहए भवइ ॥ ५० ॥ ५२ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (भावसच्चेणं) भावसत्यवडे एटले शुद्ध अंतःकरणवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(भावसच्चेणं) भावसत्यवडे जीव (भावविसोहिं) भावविशुद्धिने एटले अध्यवसायनी शुद्धिने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (भावविसोहिए अ) अने भावविशोधिने विषे (वट्टमाणे) वर्ततो (जीवे) जीव (अरहंतपण्णत्तस्स) अरिहंते प्ररूपेला (धम्मस्स) धर्मनी (आराहणयाए) आराधनाने माटे (अब्भुट्ठेइ) उत्साहवाळो थाय छे. (अरहंतपण्णत्तस्स) अने अरिहंते प्ररूपेला (धम्मस्स) धर्मनी (आराहणयाए) आराधनाने माटे (अब्भुट्ठित्ता) उद्यमवंत थइने (परलोअधम्मस्स) परलोकना धर्मनो (आराहए) आराधक (भवइ) थाय छे, एटले परभवमां जिनधर्मनी ने विशिष्ट भवनी प्राप्ति थाय छे. ५०–५२.

भावसत्य सते करणसत्य पण होय छे तेथी करणसत्यने कहे छे.—

करणसच्चेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? करणसच्चेणं करणसत्तिं जणयइ, करणसच्चे अ

वट्टमाणे जीवे जहावाई तहाकारी आवि भवइ ॥ ५१ ॥ ५३ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (करणसच्चेणं) प्रतिलेखनादिक क्रिया करवामां सत्य एटले विधिप्रमाणे आराधन करवुं, ते वडे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(करणसच्चेणं) करणसत्यवडे, जीव (करणसत्तिं) करणशक्ति एटले अपूर्व अपूर्व शुभ क्रिया करवानी शक्तिने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (करणसच्चे य) तथा करणसत्यने विषे (वट्टमाणे जीवे) वर्ततो जीव (जहावाई) जे प्रमाणे बोले (तहाकारी आवि) ते प्रमाणे करनारो पण (भवइ) थाय छे, एटले के ते सूत्रने भणतो सतो जे प्रमाणे क्रियासमूहने मुखथी बोले छे ते ज प्रमाणे ते ते क्रियाने करे पण छे. ५१–५३.

तेवा मुनिने योगसत्य पण होय छे, तेथी योगसत्यने कहे छे.—

जोगसच्चेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? जोगसच्चेणं जोगे विसोहेइ ॥ ५२ ॥ ५४ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (जोगसच्चेणं) योगसत्यवडे एटले मन, वचन अने कायाना सत्यवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(जोगसच्चेणं) योगसत्यवडे जीव (जोगे) मन, वचन, कायाना योगोने (विसोहेइ) शुद्ध करे छे एटले क्लिष्ट कर्मना बंधनो अभाव होवाथी ते योगोने निर्दोष करे छे. ५२–५४.

आ योगसत्य गुप्तिवाळाने ज होय छे तेथी गुप्तिने कहे छे.—

मणगुत्तयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ? मणगुत्तयाए णं जीवे एगग्गं जणयइ, एगग्गचित्ते णं जीवे मणगुत्ते संजमाराहए भवइ ॥ ५३ ॥ ५५ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान! (मणगुत्तयाए णं) मनगुप्तिए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे? उत्तर—(मणगुत्तयाए णं) मनगुप्तिए करीने (जीवे) जीव (एगग्गं) धर्मने विषे एकाग्रताने-तन्मयपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. अने (एगग्गचित्ते णं) एकाग्रचित्तवाळो (जीवे) जीव (मणगुत्ते) मनगुप्तिवाळो एटले अशुभ अध्यवसायमां जता मनने रोकतो सतो (संजमाराहए) संयमनो आराधक (भवइ) थाय छे. ५३-५५.

वइगुत्तयाए णं भंते! जीवे किं जणयइ? वइगुत्तयाए णं निव्विआरत्तं जणयइ, निव्विकारे णं जीवे वइगुत्ते अज्झप्पजोगसाहणजुत्ते आवि भवइ ॥ ५४ ॥ ५६ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान! (वइगुत्तयाए णं) कुशळ वाणी बोलवारूप वचनगुप्तिवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे? उत्तर—(वइगुत्तयाए णं) वचनगुप्तिवडे जीव (निव्विआरत्तं) निर्विकारपणाने एटले विकथादिक करवारूप वाणीना विकारना अभावने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (निव्विकारे णं) वाणीना विकार रहित एवो (जीवे) जीव (वइगुत्ते) सर्वथा वाणीना निरोधरूप वचनगुप्तिवाळो अने (अज्झप्पजोगसाहणजुत्ते आवि) अध्यात्मयोगना एटले मनना व्यापार धर्मध्यानादिकना साधनो जे एकाग्रतादिक तेणे करीने युक्त एवो पण (भवइ) थाय छे. विशेष

प्रकारनी वचनगुप्ति न होय तो चित्तनुं एकाग्रपणुं पण थइ शके नहीं. ५४–५६.

कायगुत्तयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? कायगुत्तयाए णं संवरं जणयइ, संवरेणं कायगुत्ते पुणो पावासवनिरोहं करेइ ॥ ५५ ॥ ५७ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (कायगुत्तयाए णं) शुभ योगने विषे प्रवृत्ति करवारूप कायगुप्तिए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(कायगुत्तयाए णं) कायगुप्तिए करीने जीव (संवरं) अशुभ योगना निरोधरूप संवरने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (संवरेणं) निरंतर अभ्यास करातां संवरवडे (कायगुत्ते) सर्वथा कायव्यापारनो निरोध करनार जीव (पुणो) वळी (पावासवनिरोहं) पापाश्रवनो एटले पापकर्मना ग्रहणनो निरोध (करेइ) करे छे. ५५–५७.

आ प्रणे गुप्तिवडे अनुक्रमे मन विगेरेनी समाधारणा थाय छे, तेथी ते समाधारणाने कहे छे.—

मणसमाहारणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? मणसमाहारणयाए णं एगग्गं जणयइ, एगग्गं जणइत्ता नाणपज्जवे जणयइ, नाणपज्जवे जणइत्ता सम्मत्तं विसोहेइ, मिच्छत्तं विनिज्जरेइ ॥ ५६ ॥ ५८ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (मणसमाहारणयाए णं) मनने सम्यक् प्रकारे आगममां कह्या प्रमाणे धारण करवुं–

स्थापन करवुं तेरूप मननी समाधारणाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(मणसमाहारणयाए णं) मननी समाधारणाए करीने जीव (एगग्गं) चित्तना एकाग्रपणाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे, (एगग्गं जणइत्ता) एकाग्रताने उत्पन्न करीने (नाणपज्जवे जणयइ) विशेष विशेष श्रुतना बोधरूप ज्ञानना पर्यायोने उत्पन्न करे छे, (नाणपज्जवे जणइत्ता) अने ज्ञानना पर्यायोने उत्पन्न करीने (सम्मत्तं विसोहेइ) सम्यक्त्वने शुद्ध करे छे केमके तत्त्वज्ञाननी शुद्धि थवाथी तत्त्वना विषयवाळी श्रद्धा पण विशुद्ध थाय छे, तेथी करीने ज (मिच्छत्तं विनिज्जरेइ) मिथ्यात्वने विशेषे करीने निर्जरे छे—खपावे छे. ५६—५८.

वइसमाहारणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? वइसमाहारणयाए णं वइसाहारणदंसणपज्जवे विसोहेइ, वइसाहारणदंसणपज्जवे विसोहित्ता सुलहबोहित्तं निव्वत्तेइ, दुल्लहबोहित्तं निज्जरेइ ॥ ५७ ॥ ५९ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (वइसमाहारणयाए णं) स्वाध्यायमां वाणी स्थापन करवारूप वाणीनी समाधारणाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(वइसमाहारणयाए णं) वाणीनी समाधारणाए करीने जीव (वइसाहारणदंसणपज्जवे) वाणीने साधारण एटले वाणीना विषयवाळा अर्थात् वाणीथी कहेवा लायक पदार्थोना विषयवाळा दर्शनना पर्यायोने (विसोहेइ) विशुद्ध करे छे. (वइसाहारणदंसणपज्जवे) वाणीने साधारण एवा दर्शनना

पर्यायोने (विसोहित्ता) विशुद्ध करीने (सुलहबोहिं) सुलभबोधिपणाने (निव्वत्तेइ) उत्पन्न करे छे अने (दुल्लहबोहिं) दुर्लभबोधिपणाने (निज्जरेइ) निर्जरे छे—खपावे छे. ५७–५६.

कायसमाहारणयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? कायसमाहारणयाए णं चरित्तपज्जवे विसोहेइ, चरित्तपज्जवे विसोहित्ता अहक्खायचरित्तं विसोहेइ, अहक्खायचरित्तं विसोहित्ता चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ, तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥ ५८ ॥ ६० ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (कायसमाहारणयाए णं) संयमयोगने विषे शरीरना सम्यक् व्यापाररूप कायनी समाधारणाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(कायसमाहारणयाए णं) कायनी समाधारणाए करीने जीव (चरित्तपज्जवे) क्षायोपशमिक चारित्रना भेदरूप चारित्रना पर्यायोने (विसोहेइ) विशुद्ध करे छे. (चरित्तपज्जवे) क्षायोपशमिक चारित्रना पर्यायोने (विसोहित्ता) विशुद्ध करीने (अहक्खायचरित्तं) यथाख्यात चारित्रने (विसोहेइ) विशुद्ध करे छे, (अहक्खायचरित्तं) यथाख्यात चारित्रने (विसोहित्ता) विशुद्ध करीने (चत्तारि) चार (केवलिकम्मंसे) केवळीना सत्कर्मोने एटले अघातिया चारे कर्मोने (खवेइ) खपावे छे. (तओ पच्छा) त्यारपछी (सिज्झइ) समाप्त कार्यवाळा थाय छे, (बुज्झइ) वस्तुतत्त्वने जाणे छे, (मुच्चइ) संसारथी मुक्त थाय छे, (परिनिव्वाइ)

कर्मना ताप रहित थवाथी शीतळ थाय छे, तथा (सव्वदुक्खाणमंतं करेइ) शारीरिक अने मानसिक सर्व दुःखोना अंतने करे छे. ५८-६०.

आ प्रमाणे पद प्रत्याख्यानथी ज्ञानादिक त्रणनी शुद्धि कही. हवे तेनुं ज फळ कहे छे.—

नाणसंपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? नाणसंपन्नयाए णं सव्वभावाहिगमं जणयइ, नाणसंपन्ने अ णं जीवे चाउरंते संसारकंतारे न विणस्सइ, जहा सूई ससुत्ता पडिआ वि न विणस्सइ तहा जीवे ससुत्ते संसारे न विणस्सइ, नाणविणयतवचरित्तजोगे संपाउणइ, ससमयपरसमयसंघायणिज्जे भवइ ॥ ५९ ॥ ६१ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (नाणसंपन्नयाए णं) श्रुतज्ञान सहितपणाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(नाणसंपन्नयाए णं) श्रुतज्ञान सहितपणाए करीने जीव (सव्वभावाहिगमं) सर्व पदार्थना ज्ञानने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (नाणसंपन्ने अ णं) श्रुतज्ञान सहित एवो (जीवे) जीव (चाउरंते) चतुरंत (संसारकंतारे) संसाररूपी कांतारने विषे (न विणस्सइ) विनाश पामतो नथी एटले मुक्तिमार्गथी वधारे दूर थतो नथी. आ वातने दृष्टांतवडे वधारे स्पष्ट करीने बतावे छे.—(जहा) जेम (सूई) सोय (ससुत्ता) सूत्र-दोरा सहित (पडिआ वि) कादव विगेरेमां पडी सती पण (न विणस्सइ) विनाश पामती नथी—बहु दूर जती नथी (तहा) तेम (जीवे) जीव (ससुत्ते) सूत्र-श्रुतज्ञान

सहित एवो सतो (संसारे) संसारने विषे (न विणस्सइ) विनाश पामतो नथी–मोक्षमार्गथी दूर जतो नथी. (नाणविणयतवचरित्तजोगे) अवधि विगेरे ज्ञान, विनय, तप अने चारित्रयोगोने (संपाउणइ) सम्यक् प्रकारे पामे छे, तथा (ससमयपरसमयसंघायणिज्जे) स्वसमय अने परसमयने अर्थात् तेना जाणनारने मळवा लायक (भवइ) थाय छे. ५९–६१.

दंसणसंपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? दंसणसंपन्नयाए णं भवमिच्छत्तच्छेअणं करेइ, परं न विज्झाइ, अणुत्तरेणं णाणेणं दंसणेणं अप्पाणं संजोएमाणे सम्मं भावेमाणे विहरइ ॥ ६० ॥ ६२ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (दंसणसंपन्नयाए णं) दर्शन युक्तपणाए करीने एटले क्षायोपशमिक समकित सहितपणाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(दंसणसंपन्नयाए णं) दर्शन सहितपणाए करीने जीव (भवमिच्छत्तच्छेअणं) संसारना हेतुरूप मिथ्यात्वनुं सर्वथा छेदन (करेइ) करे छे, एटले क्षायिक समकितने पामे छे. (परं) त्यारपछी उत्कृष्टथी ते ज भवमां अने मध्यम तथा जघन्यनी अपेक्षाए त्रीजा के चोथा भवमां केवळज्ञान प्राप्त थवाथी (न विज्झाइ) होलवाइ जतो नथी–केवळज्ञान अने केवळदर्शनरूप प्रकाशना अभावने पामतो नथी. परंतु (अणुत्तरेणं) सर्वोत्तम एवा (णाणेणं) केवळज्ञानवडे अने (दंसणेणं) केवळदर्शनवडे (अप्पाणं) पोताना आत्माने (संजोएमाणे) संयोजना करतो–तेनी साथे जोडतो (सम्मं भावेमाणे) सम्यक् प्रकारे भावतो एटले तन्मयपणाने पमाडतो सतो (विहरइ) भवस्थ केवळीपणे विचरे छे. ६०–६२.

चरित्तसंपन्नयाए णं भंते ! जीवे किं जणयइ ? चरित्तसंपन्नयाए णं सेलेसीभावं जणयइ, सेलेसीपडिवन्ने अ अणगारे चत्तारि केवलिकम्मंसे खवेइ, तओ पच्छा सिज्झइ बुज्झइ मुच्चइ परिनिव्वाइ सव्वदुक्खाणमंतं करेइ ॥ ६१ ॥ ६२ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (चरित्तसंपन्नयाए णं) चारित्र सहितपणाए करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर—(चरित्तसंपन्नयाए णं) चारित्रसहितपणाए करीने जीव (सेलेसीभावं) योगनो निरोध करवावडे शैलेश–मेरुनी जेम अत्यंत स्थिर थयेल होवाथी मुनि पण शैलेश कहेवाय छे. तेनी जे अवस्था ते शैलेशी, तेना होवापणाने एटले कहेवाशे एवा शैलेशीभावने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (सेलेसीपडिवन्ने अ) शैलेशीकरणने पामेलो एवो (अणगारे) साधु (चत्तारि केवलिकम्मंसे) चार केवळी सत्कर्मोने–अघातिया कर्मोने (खवेइ) खपावे छे. (तओ पच्छा) त्यारपछी (सिज्झइ) समाप्त कार्यवाळो थाय छे, (बुज्झइ) वस्तुतत्त्वने जाणे छे, (मुच्चइ) संसारथी मूकाय छे, (परिनिव्वाइ) कर्मना ताप रहित थवाथी शीतळ थाय छे, अने (सव्वदुक्खाणमंतं करेइ) सर्व दुःखोनो अंत करे छे. ६१–६२.

इंद्रियोनो निग्रह करवाथी ज चारित्र प्राप्त थाय छे, तेथी दरेक इंद्रियना निग्रहने कहे छे—

सोइंदियनिग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? सोइंदियनिग्गहेणं मणुण्णामणुण्णेसु सद्देसु

रागद्दोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइअं च नवं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६२ ॥ ६४ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (सोइंदियनिग्गहेणं) पोताना विषय तरफ जता एवा श्रोत्रेंद्रियना निग्रहवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे छे ? उत्तर—(सोइंदियनिग्गहेणं) श्रोत्रेंद्रियना निग्रहवडे जीव (मणुण्णामणुण्णेसु) मनोज्ञ अने अमनोज्ञ एटले इष्ट अने अनिष्ट एवा (सद्देसु) शब्दोने विषे अनुक्रमे (रागदोसनिग्गहं) राग अने द्वेषना निग्रहने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (तप्पच्चइयं च) तथा ते रागद्वेषना प्रत्ययवाळुं-निमित्तवाळुं (नवं कम्मं) नवुं कर्म (न बंधइ) बांधतो नथी. (पुव्वबद्धं च) अने पूर्वे बांधेला कर्मने (निज्जरेइ) निर्जरे छे-खपावे छे. ६२-६४.

चक्खिंदियनिग्गहेणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? चक्खिंदियनिग्गहेणं मणुण्णामणुण्णेसु रूवेसु रागद्दोसनिग्गहं जणयइ, तप्पच्चइअं नवं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६३ ॥ ६५ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (चक्खिंदियनिग्गहेणं) चक्षुइंद्रियना निग्रहवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर-(चक्खिंदियनिग्गहेणं) चक्षुइंद्रियना निग्रहवडे जीव (मणुण्णामणुण्णेसु) मनोज्ञ अने अमनोज्ञ एवा (रूवेसु) रूपोने विषे (रागद्दोसनिग्गहं) अनुक्रमे राग अने द्वेषना निग्रहने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (तप्पच्चइअं) तथा ते रागद्वेषना निमित्तवाळुं (नवं कम्मं) नवुं कर्म (न बंधइ) बांधतो नथी. (पुव्वकम्मं च) तथा पूर्वे बांधेला कर्मने (निज्जरेइ) निर्जरे छे-खपावे छे. ६३-६५.

४४

घाणिंदिएणं एवं चेव ॥ ६४ ॥ ६६ ॥ जिब्भिंदिए वि ॥ ६५ ॥ ६७ ॥ फासिंदिए वि ॥ ६६ ॥ ६८ ॥ नवरं गंधेसु रसेसु फासेसु वत्तव्वं ॥

अर्थ— घ्राणेंद्रिय, जिव्हेंद्रिय अने स्पर्शेंद्रियना निग्रहने विषे पण ए ज प्रमाणे जाणवुं. विशेष ए के घ्राणेंद्रियमां मनोज्ञामनोज्ञ गंध लेवो, जिव्हेंद्रियमां रस लेवो अने स्पर्शेंद्रियमां स्पर्श लेवो. अने तेना निग्रहथी नवा कर्म बांधतो नथी ने पूर्वकर्मने निर्जरे छे. एम समजवुं. ६४–६६. ६५–६७. ६६–६८.

इंद्रियनिग्रह पण कषायना विजयथी ज थाय छे तेथी कषायना विजयने कहे छे.—

कोहविजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? कोहविजएणं खंतिं जणयइ । कोहवेअणिज्जं कम्मं न बंधइ, पुव्वबद्धं च निज्जरेइ ॥ ६७ ॥ ६९ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (कोहविजएणं) क्रोधना विजय–निग्रहवडे (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? (कोहविजएणं) क्रोधना विजयवडे जीव (खंतिं) क्षमाने (जणयइ) उत्पन्न करे छे. (कोहवेअणिज्जं) क्रोधवेदनीय एटले क्रोधना हेतुभूत पुद्गलरूप (कम्मं) कर्मने (न बंधइ) बांधतो नथी. (पुव्वबद्धं च) तथा पूर्वे बांधेला ते क्रोधवेदनीय कर्मने (निज्जरेइ) खपावे छे. ६७–६९.

एवं माणेणं ॥ ६८ ॥ ७० ॥ मायाए ॥ ६९ ॥ ७१ ॥ लोहेणं ॥ ७० ॥ ७२ ॥ नवरं मद्दवं

उज्जुभावं संतोसं च जणयइ त्ति वत्तव्वं ॥

अर्थ—ए ज प्रमाणे मान, माया अने लोभना विषयवाळां सूत्रो पण कहेवा. विशेष ए जे-मानना विजयवडे मार्दवने, मायाना विजयवडे ऋजुभावने अने लोभना विजयवडे संतोषने उत्पन्न करे छे अने तेथी नवा कर्म बांधतो नथी ने पूर्वकर्म निर्जरे छे इत्यादि कहेवुं. ६८–७०. ६९–७१. ७०–७२.

कषायनो विजय प्रेम (राग), द्वेष अने मिथ्यादर्शनना विजय विना थतो नथी तेथी ते प्रेमादिकना विजयने कहे छे.—

पिज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं भंते ! जीवे किं जणयइ ? पिज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं नाणदंसणचरित्ताराहणयाए अब्भुट्ठेइ, अट्ठविहस्स कम्मगंठिविमोअणयाए तप्पढमयाए जहाणुपुव्वीए अट्ठावीसइविहं मोहणिज्जं कम्मं उग्घाएइ, पंचविहं नाणावरणिज्जं नवविहं दंसणावरणिज्जं पंचविहं अंतराइअं एए तिन्नि वि कम्मंसे जुगवं खवेइ तओ पच्छा अणुत्तरं अणंतं कसिणं पडिपुन्नं निरावरणं वितिमिरं विसुद्धं लोगालोगप्पभावगं केवलवरनाणदंसणं समुप्पाडेइ, जाव सजोगी भवइ ताव य इरिआवहिअं कम्मं बंधइ, सुहफरिसं दुसमयट्ठितिअं, तं पढमसमए बद्धं बिइअसमए वेइअं तइअसमए निज्जिण्णं, तं बद्धं पुट्ठं उईरिअं वेइअं निज्जिण्णं सेअकाले अकम्मं चावि

भवइ ॥ ७१ ॥ ७२ ॥

अर्थ—(भंते) हे भगवान ! (पिज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं) प्रेम–(राग), द्वेष अने मिथ्यादर्शनना विजयवडे करीने (जीवे) जीव (किं जणयइ) शुं उत्पन्न करे ? उत्तर–(पिज्जदोसमिच्छादंसणविजएणं) राग, द्वेष अने मिथ्यात्वना विजयवडे करीने जीव (नाणदंसणचरित्ताराहणयाए) ज्ञान, दर्शन अने चारित्रनी आराधनाने माटे (अब्भुट्ठेइ) उद्यमवंत थाय छे. त्यारपछी (अट्ठविहस्स) आठ प्रकारना (कम्मगंठिविमोयणयाए) कर्मनी मध्ये जे अत्यंत दुर्भेद्य घातीकर्मरूप कर्मग्रंथि छे तेना विमोचन एटले विनाश करवा माटे उद्यमवंत थाय छे. पछी शुं करे छे ? ते कहे छे.–(तप्पढमयाए) पहेलां कोइ वखत खपावेल नहीं होवाथी प्रथमपणाए करीने (जहाणुपुव्वीए) अनुक्रमे (अट्ठावीसइविहं) अट्ठावीश प्रकारना (मोहणिज्जं कम्मं) मोहनीय कर्मने (उग्घाएइ) खमावे छे. तेने खपाववानो अनुक्रम आ प्रमाणे छे.–प्रथम एकी वखते अनंतानुबंधी क्रोधादिक चारे कषायने खपावे छे. त्यारपछी अनुक्रमे मिथ्यात्व, मिश्र अने समकितमोहनीना दळियाने खपावे छे. त्यारपछी प्रत्याख्यानावरण अने अप्रत्याख्यानावरणरूप आठ कषायोने खपाववानो आरंभ करे छे, ते आठे अर्धा खपे त्यां वच्चे नरकगति १, नरकानुपूर्वी २, तिर्यग्गति ३ तिर्यगानुपूर्वी ४, एकेंद्रियादिक चार जाति ८, आतप ९, उद्योत १०, स्थावर ११, सूक्ष्म १२, साधारण १३, निद्रानिद्रा १४, प्रचलाप्रचला १५ अने स्त्यानर्द्धि १६, आ सोळ प्रकृतिने खपावे छे. पछी ते आठे कषायोनो बाकी रहेलो अर्ध भाग खपावे छे. त्यारपछी पुरुष होय तो अनुक्रमे नपुंसकवेद, स्त्रीवेद, हास्यादिक छ अने पुरुषवेदने खपावे छे, स्त्री के नपुंसक खपावतो होय तो पोतपोताना वेदने छेडे–

छेवटे खपावे छे. त्यारपछी अनुक्रमे संज्वलन क्रोध, मान, माया अने लोभने खपावे छे. आ दरेक प्रकृतिने खपाववानो काळ अंतर्मुहूर्त्तनो छे. तथा सर्व प्रकृतिओने खपाववानो काळ पण अंतर्मुहूर्त्तनो ज छे. केमके अंतर्मुहूर्त्तना असंख्याता भेद छे. आ प्रमाणे मोहनीय कर्मने खपावी पछी एक अंतर्मुहूर्त्तमां यथाख्यात चारित्रने पामे छे, पछी क्षीणमोह गुणस्थानकना छेल्ला बे समयमांना पहेला समये निद्रा अने प्रचला ए बेने खपावी छेल्ला समये शुं खपावे छे ? ते कहे छे.—(पंचविहं) पांच प्रकारनुं (नाणावरणिज्जं) ज्ञानावरणीय, (नवविहं) नव प्रकारनुं (दंसणावरणिज्जं) दर्शनावरणीय अने (पंचविहं) पांच प्रकारनुं (अंतराइअं) अंतराय कर्म, (एए तिन्नि वि कम्मंसे) आ त्रणे सत्कर्मोने—तेनी १४ प्रकृतिओने (जुगवं खवेइ) एकी वखते खपावे छे. (तओ पच्छा) त्यारपछी (अणुत्तरं) सर्वोत्तम, (अनंतं) विनाश नहीं होवाथी अनंत, (कसिणं) समग्र पदार्थोने ग्रहण करनार होवाथी कृत्स्न-समग्र, (पडिपुन्नं) समग्र स्वपर पर्यायो-वडे परिपूर्ण, (निरावरणं) समग्र आवरण रहित, (वितिमिरं) अज्ञानरूपी अंधकार रहित, (विसुद्धं) सर्व दोष रहित, (लोगालोगप्पभावगं) लोकालोकने प्रकाश करनार (केवलवरनाणदंसणं) श्रेष्ठ एवा केवळज्ञान अने केवळदर्शनने (समुप्पाडेइ) उत्पन्न करे छे. त्यारपछी (जाव) ज्यां सुधी (सजोगी) सयोगी मन, वचन अने कायाना व्यापारवाळो (भवइ) होय, (ताव य) त्यां सुधी (इरियावहियं) ऐर्यापथिक (कम्मं) कर्मने (बंधइ) बांधे छे. ते ऐर्यापथिक कर्म केवुं ? ते कहे छे.—(सुहफरिसं) आत्मप्रदेशनी साथे सुखकारक छे स्पर्श जेनो एवुं—सातावेदनीयरूप (दुसमयठ्ठितिअं)

१ अहीं नव विध कह्यं छे पण तेमांथी पांच निद्रा तो प्रथम खपावेली छे तेथी आ छेल्ले समये तो चार दर्शनावरण ज खपावे छे.

बे समयनी स्थितिवाळुं, (तं) ते कर्म (पढमसमए) पहेले समये (बद्धं) बांधे (बिइअसमए) बीजे समये (वेइअं) वेदे अने (तइअसमए) त्रीजे समये (निज्जिण्णं) जीर्ण करे एटले क्षीण करे–आवुं (तं बद्धं) ते कर्म जीव प्रदेशनी साथे आकाशनी साथे घटनी जेम तथा (पुट्ठं) लीसी मणिनी भींत उपर पडेला सुका अने जाडा चूर्णनी जेम स्पर्श मात्र करे छे. आ बे विशेषणथी ते कर्म निधत्त अने निकाचित अवस्थाने नहीं पामेलुं एम जाणवुं. ते कर्म पहेले समये (उदीरिअं) उदयने पाम्युं एवुं, बीजे समये (वेइअं) तेना फळरूप सुखने अनुभववावडे वेद्युं एवुं अने त्रीजे समये (निज्जिण्णं) क्षयने पाम्युं एवुं समजवुं. एटले (सेअकाले) चोथा समय आदि आगामी काळने विषे (अकम्मं चावि) ते कर्मथी रहितपणुं (भवइ) थाय छे. ७१–७२.

एवो जीव आयुष्यने छेडे शैलेशीकरणने पामीने–करीने कर्म रहित थाय छे, तेथी शैलेशी अने अकर्मता ए बे द्वारने अर्थथी कहे छे.—

अहाउअं पालइत्ता अंतोमुहुत्तावसेसाउए जोगनिरोहं करेमाणे सुहुमकिरिअं अप्पडिवाइ सुक्कज्झाणं झिआयमाणे तप्पढमयाए मणजोगं निरुंभइ, निरुंभइत्ता वइजोगं निरुंभइ, निरुंभइत्ता आणापाणनिरोहं करेइ, करित्ता ईसिं पंचहस्सक्खरुच्चारद्धाए अ णं अणगारे समुच्छिन्नकिरिअं अनिअट्टि सुक्कज्झाणं झिआयमाणे वेअणिज्जं आउअं नामं गोत्तं च एए चत्तारि वि कम्मंसे

जुगवं खवेइ ॥ ७२ ॥ ७५ ॥ तओ ओरालिअकम्माइं च सव्वाहिं विप्पजहणाहिं विप्पजहित्ता उज्जुसेढिपत्ते अफुसमाणगई उड्ढं एगसमएणं अविग्गहेणं तत्थ गंता सागारोवउत्ते सिज्झइ, जाव अंतं करेइ ॥ ७३ ॥ ७५ ॥

अर्थ—(अह) त्यारपछी—केवळीपणुं प्राप्त थया पछी (आउअं) अंतर्मुहूर्तथी आरंभीने देशोनपूर्वकोटि पर्यंत जेटलुं आयुष्य बाकी होय तेटला आयुष्यने (पालइत्ता) पाळीने (अंतोमुहुत्तावसेसाउए) अंतर्मुहूर्त आयुष्य शेष रहे त्यारे (जोगनिरोहं) योगनिरोधने (करेमाणे) करनार जीव (सुहुमकिरिअं अप्पडिवाइ) सूक्ष्मक्रियअप्रतिपाति नामना (सुक्कज्झाणं) शुक्लध्यानना त्रीजा भेदने ध्यावे. तेनुं (झिआयमाणे) ध्यान करतो (तप्पढमयाए) ते प्रथमपणाए करीने एटले प्रथम (मणजोगं) मनोयोगने एटले द्रव्यमनना समीपपणाथी उत्पन्न थयेला जीवव्यापारने (निरुंभइ) रुंधे. तेने (निरुंभइत्ता) रुंधीने (वइजोगं) वचनयोगने एटले द्रव्यभाषाना सांनिध्यपणाथी उत्पन्न थयेला जीवव्यापारने (निरुंभइ) रुंधे, (निरुंभइत्ता) तेने रुंधीने (आणापाणनिरोहं) उच्छ्वास निश्वासना निरोधने (करेइ) करे—उपलक्षणथी सर्व काययोगनो निरोध करे. (करित्ता) आ रीते असंख्याता असंख्याता समयोवडे त्रणे योगनो निरोध करीने (ईसिं) ईषत् एटले स्वल्प प्रयत्नवडे (पंचहस्सक्खरुच्चारद्धाए अ णं) अ इ उ ऋ लृ ए पांच ह्रस्व अक्षरोने मध्यमपणे उच्चार करतां जेटलो काळ लागे तेटला काळने विषे (अणगारे) साधु (समुच्छिन्नकिरिअं अनियट्टि) समुच्छिन्नक्रिय अनिवृत्ति नामना (सुक्कज्झाणं) शुक्ल-

ध्यानना चोथा भेदनुं (झियायमाणे) ध्यान करतो अर्थात् शैलेशी अवस्थाने अनुभवतो सतो (वेअणिज्जं) वेदनीय, (आउअं) आयुष्य, (नामं) नाम, (गोत्तं च) अने गोत्र (एए चत्तारि वि) ए चारे (कम्मंसे) सत्कर्मोने (जुगवं) एकी वखते (खवेइ) खपावे छे. ७२-७४. (तओ) त्यारपछी (ओरालिअकम्माइं च) औदारिक, कार्मण अने च- शब्दथी तैजस ए त्रणे शरीरने (सव्वाहिं विप्पजहणाहिं) सर्व विप्रहाणिओवडे एटले विशेषे करीने प्रकर्षथी त्याग करवा- वडे अर्थात् सर्वथा प्रकारे (विप्पजहित्ता) त्याग करीने (उज्जुसेढिपत्ते) ऋजुश्रेणि-सरळ एवी आकाशप्रदेशनी पंक्तिने पाम्यो सतो (अफुसमाणगई) स्पर्श रहित गतिवाळो एटले पोताना अवगाह उपरांत बीजा आकाशप्रदेशने स्पर्श नहीं करतो सतो अर्थात् जेटला आकाशप्रदेशमां ते जीव अवगाढ थयो छे तेटला ज आकाशप्रदेशने समश्रेणिवडे स्पर्श करतो सतो (उड्ढं) उपर (एगसमएणं) एक समयवडे ज (अविग्गहेणं) वक्रगतिरूप विग्रहगति विना ज (तत्थ गंता) त्यां एटले कहेवाने इष्ट एवा मुक्तिपदमां जइने (सागारोवउत्ते) साकार उपयोगवाळो एटले ज्ञानना उपयोगवाळो होय ते समये (सिज्झइ) समाप्त कार्यवाळो थाय छे. इत्यादि (जाव) यावत् (अंतं करेइ) सर्व कर्मना अंतने करे छे. ए सर्व पूर्वनी जेम जाणवुं. ७२-७५

हवे आ अध्ययननो उपसंहार करे छे.

एस खलु सम्मत्तपरक्कमस्स अज्झयणस्स अट्ठे समणेणं भगवया महावीरेण आघविए पन्नविए परूविए निदंसिए उवदंसिए त्ति बेमि ॥ ७६ ॥

अर्थ—(एस) आ (खलु) निश्चे (सम्मत्तपरक्कमस्स) सम्यक्त्व पराक्रम नामना (अज्झयणस्स) अध्ययननो (अट्ठे) अर्थ (समणेणं भगवया महावीरेणं) श्रमण भगवान महावीरस्वामीए (आघविए) सामान्य अने विशेषवडे कह्यो छे, (पण्णविए) हेतु फळादिक कहेवावडे जणाव्यो छे, (परूविए) स्वरूपने कहेवावडे प्ररूप्यो छे, (निदंसिए) दृष्टांत कहेवावडे देखाड्यो छे, तथा (उवदंसिए) उपसंहार द्वारवडे बताव्यो छे. (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं. ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबुस्वामीने कह्युं. ७६.

इति एकोनत्रिंशमध्ययनम्. २९.

अथ तपोमार्गगति नामनुं त्रीशमुं अध्ययन. ३०.

ओगणत्रीशमा अध्ययनमां कर्म रहितपणुं थवाना कारणो कह्यां ते अकर्मता खरेखरी तपथी साधी शकाय छे, तेथी आ तपोमार्गगति नामनुं अध्ययन कहेवाय छे. तेमां तपरूपी भावमार्गनां फळभूत सिद्धिगति जेमां कहेवामां आवे ते तपोमार्गगति ए प्रमाणे आनो शब्दार्थ छे. तेनुं प्रथम सूत्र आ प्रमाणे छे.—

जहा उ पावगं कम्मं, रागदोससमज्जिअं । खवेइ तवसा भिक्खू, तमेगग्गमणो सुण ॥ १ ॥

अर्थ—(जहा उ) जे प्रकारे (रागदोससमज्जिअं) रागद्वेषथी उपार्जन करेला (पावगं) पापवाळा (कम्मं) ज्ञाना-

वरणादिक कर्मने (भिक्खू) साधु (तवसा) तपवडे (खवेइ) खपावे छे, (तं) ते तपने (एगग्गमणो) एकाग्र मनवाळो सतो (सुण) तुं सांभळ. १.

अहीं आश्रव रहित एवो ज जीव कर्मने खपावी शके छे, तेथी जे प्रकारे ते जीव आश्रव रहित थाय छे, ते कहे छे.—

पाणिवहमुसावाए–अदत्तमेहुणपरिग्गहा विरओ । राईभोअणविरओ, जीवो होइ अणासवो ॥ २ ॥

अर्थ—(पाणिवह) प्राणीवध, (मुसावाए) मृषावाद, (अदत्त) अदत्तादान, (मेहुण) मैथुन अने (परिग्गहा) परिग्रहथकी (विरओ) विराम पामेलो तथा (राईभोअणविरओ) रात्रिभोजनथी विराम पामेलो (जीवो) जीव (अणासवो) आश्रवरहित (होइ) होय छे. २.

पंचसमिओ तिगुत्तो, अकसाओ जिइंदिओ । अगारवो अ निस्सल्लो, जीवो होइ अणासवो ॥ ३ ॥

अर्थ—(पंचसमिओ) पांच समितिवाळो, (तिगुत्तो) त्रण गुप्तिवाळो, (अकसाओ) चार कषाय रहित, (जिइंदिओ) जितेंद्रिय, (अगारवो) त्रण गौरव रहित, (अ) तथा (निस्सल्लो) त्रण शल्य रहित एवो (जीवो) जीव (अणासवो) आश्रव रहित (होइ) होय छे. ३.

आ प्रमाणे आश्रव रहित थयेलो जीव जे प्रकारे कर्मने खपावे छे, ते कहे छे.—

एएसिं तु विवच्चासे, रागद्दोससमज्जिअं । खवेइ उ जहा भिक्खू, तं मे एगमणो सुण ॥ ४ ॥

अर्थ—(एएसिं तु) वळी हे शिष्य ! आ प्राणीवधविरति विगेरे अने समिति विगेरे के जे आश्रव रहित थवाना हेतु छे तेमनो (विवच्चासे) विपर्यास थये- तेथी विपरीतपणुं हतुं ते वखतना (रागदोससमज्जिअं) राग अने द्वेषथी उपार्जन करेला कर्मने (भिक्खू) मुनि (जहा) जे प्रकारे (खवेइ उ) खपावे छे, (तं) ते (मे) मारी पासेथी (एगमणो) एकाग्र मनवाळो थइने (सुण) तुं सांभळ. ४.

प्रथम ते विषे दृष्टांत आपे छे.—

जहा महातलागस्स, सन्निरुद्धे जलागमे । उस्सिंचणाए तवणाए, कमेणं सोसणा भवे ॥ ५ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (महातलागस्स) मोटा सरोवरना (जलागमे) जळ आववाना मार्ग (सन्निरुद्धे) पाळ विगेरेवडे रुंधे सते (उस्सिंचणाए) पछी तेमांथी अरघट्ट विगेरे यंत्रवडे सींचवाथी—उलेचवाथी तथा (तवणाए) सूर्यना तापथी (कमेणं) अनुक्रमे (सोसणा) तेना जळनुं शोषण (भवे) थाय छे. ५.

हवे दार्ष्टांतिक कहे छे.—

एवं तु संजयस्सावि, पावकम्मनिरासवे । भवकोडिसंचिअं कम्मं, तवसा निज्जरिज्जइ ॥ ६ ॥

अर्थ—(एवं तु) ए ज प्रमाणे (पावकम्मनिरासवे) नवां पापकर्मना आश्रवनो अभाव सते एटले प्राणातिपातविरति विगेरेरूप पाळवडे नवा पापकर्मनुं आगमन रुंधे सते (संजयस्सावि) साधुनुं पण (भवकोडिसंचिअं) कोटि भवोमां संचेलुं

(कम्मं) कर्म (तवसा) तपवडे (निज्जरिज्जइ) क्षय पामे छे. ६.

तपवडे कर्मनो क्षय थाय छे एम कह्युं, तेथी हवे ते तपना भेद बतावे छे.—

सो तवो दुविहो वुत्तो, बाहिरब्भिंतरो तहा । बाहिरो छव्विहो वुत्तो, एवमब्भिंतरो तवो ॥७॥

अर्थ—(सो तवो) ते तप (दुविहो) बे प्रकारनो (वुत्तो) कह्यो छे, (बाहिरब्भिंतरो तहा) बाह्य तथा आभ्यंतर. तेमां (बाहिरो) बाह्य तप (छव्विहो) छ प्रकारनो (वुत्तो) कह्यो छे, (एवं) ए ज प्रमाणे (अब्भिंतरो) आभ्यंतर (तवो) तप पण छ प्रकारनो कह्यो छे. ७.

तेमां प्रथम बाह्य तपना छ प्रकार बतावे छे.—

अणसणमूणोअरिआ, भिक्खायरिया य रसपरिच्चाओ । कायकिलेसो संली—णया य बज्झो तवो होइ ॥८॥

अर्थ—(अणसणं) अनशन, (ऊणोअरिआ) ऊनोदरिका, (भिक्खायरिया) भिक्षाचर्या एटले आहारने माटे उंच नीच गृहोने विषे भ्रमण, (य) तथा (रसपरिच्चाओ) रसनो एटले विगइनो त्याग, (कायकिलेसो) कायक्लेश एटले ताप, शीत विगेरेनुं सहन, (संलीणया य) अने संलीनता एटले अंगोपांगनो संकोच करीने वर्तवुं. आ प्रमाणे (बज्झो) बाह्य (तवो) तप (होइ) छे. ८.

तेमां प्रथम अनशननुं स्वरूप कहे छे.—

इत्तरिअ मरणकाला य, दुविहा अणसणा भवे। इत्तरिआ सावकंखा, निरवकंखा उ बिइज्जिआ ॥९॥

अर्थ—(इत्तरिअ) अल्प कालनी अवधिवाळुं (मरणकाला य) अने मरण काळ सुधीनुं एम (दुविहा) बे प्रकारनुं (अणसणा) अनशन (भवे) छे. तेमां (इत्तरिआ) इत्वर एटले अल्प काळनुं अनशन (सावकंखा) आकांक्षा सहित छे एटले बेघडी आदिक पछी भोजन करवानी अभिलाषा सहित छे, (उ) तु पुनः तथा वळी (बिइजिआ) बीजुं जावजीवनुं अनशन (निरवकंखा) भोजननी आकांक्षा एटले इच्छा रहित छे. ९.

तेमां प्रथम इत्वर अनशनना भेद कहे छे.⋯⋯

जो सो इत्तरिअतवो, सो समासेण छव्विहो। सेढितवो१ पयरतवो२ घणो अ३ तह होइ वग्गो अ४ ॥१०॥

अर्थ—(जो सो) जे ते (इत्तरिअतवो) इत्वर तप–अनशन छे, (सो) ते तप (समासेण) संक्षेपे करीने (छव्विहो) छ प्रकारनो छे. ते आ प्रमाणे.—(सेढितवो) श्रेणितप १, (पयरतवो) प्रतरतप २, (घणो अ) घनतप ३, (तह) तथा (वग्गो अ) वर्गतप ४ (होइ) छे. अहीं एक उपवासथी आरंभीने छ मासना उपवास सुधी श्रेणितप थइ शके छे. एटले के प्रथम एक उपवास करीने पारणुं, पछी तरत बे उपवास करीने पारणुं करवुं ते एक श्रेणि थइ. पछी प्रथम एक उपवास करीने पारणुं, पछी बे उपवास करीने पारणुं, पछी त्रण उपवास करीने पारणुं ए बीजी श्रेणि थइ. ए ज रीते एक उपवास ने पारणुं, बे उपवास ने पारणुं, त्रण उपवास ने पारणुं अने चार उपवास ने पारणुं ए त्रीजी श्रेणि थइ. ए ज रीते

शक्ति प्रमाणे श्रेणि वधारतां वधारतां उत्कृष्ट छ मासना उपवास सुधी श्रेणिओ थइ शके छे. ते सर्व श्रेणितप कहेवाय छे. हवे श्रेणिने श्रेणिवडे गुणवाथी प्रतर थाय छे. तेमां समजुतीने माटे उपवास, छट्ठ, अट्ठम अने दशम (चार उपवास) नामना चार पदरूप श्रेणि लइए, तेने चारे गुणवाथी सोळ पदरूप प्रतर थाय छे. ते लंबाइ अने पहोळाइमां सरखो ज थाय छे. एटले के पहेली श्रेणिमां एकथी चार अंक लखवा, बीजीमां बेथी, त्रीजीमां त्रणथी अने चोथीमां चारथी अंक लखवा, ते आ प्रमाणे.—

१	२	३	४
२	३	४	१
३	४	१	२
४	१	२	३

आटला अने आवी रीतना एटले आवा अनुक्रमना तपपदे करीने करातो जे तप ते प्रतर तप कहेवाय छे. प्रतरने श्रेणिवडे गुणवाथी घन थाय छे एटले सोळ पदरूप प्रतरने चार पदरूप श्रेणिवडे गुणतां चोसठ (६४) पदवडे घन तप थाय छे. अने घनने घनवडे गुणवाथी वर्ग थाय छे तेथी चोसठने चोसठे गुणतां ४०९६, चोथभक्तथी आरंभीने दशम सुधीना तपवडे वर्ग तप थाय छे. अर्थात् प्रतर तप चार वार करवाथी घन तप थाय छे अने घन तपने चोसठ वार करवाथी वर्ग तप थाय छे. १०.

तत्तो अ वग्गवग्गो उ, पंचमओ छट्ठओ पइण्णतवो। मणइच्छिअचित्तत्थो, नायव्वो होइ इत्तरिओ ॥११॥

अर्थ—(तत्तो अ) त्यारपछी (वग्गवग्गो उ) वर्गवर्ग नामनो तप (पंचमओ) पांचमो छे ५, तथा (छट्ठओ) छट्ठो (पइण्णतवो) प्रकीर्णतप छे. ६. ए रीते (मणइच्छिअचित्तत्थो) मनने इच्छित एवा स्वर्ग, मोक्ष के तेजोलेश्यादिक विचित्र—अनेक प्रकारना अर्थवाळो (इत्तरिओ) इत्वरिक नामनो अनशन तप (नायव्वो होइ)

जाणवा लायक छे-जाणवो. अहीं वर्गने वर्गवडे गुणवाथी वर्गवर्ग थाय छे. जेमके ४०९६ वर्गनो अंक छे, तेने तेटलाए गुणवाथी १६७७७२१६ थाय छे. आटला तपना पदवड वर्गवर्ग नामनो तप थाय छे. एक उपवासथी चार उपवास सुधीना पदोने आश्री श्रेणि विगेरे तप बताव्यो. ते ज प्रमाणे पांच विगेरे पदोने आश्रीने पण ए ज रीते श्रेण्यादिक वर्गवर्ग सुधीना तपनी भावना करवी. हवे छट्ठो जे प्रकीर्णक तप कह्यो ते श्रेणि आदिक निश्चित पदनी रचना विना ज पोतानी शक्ति प्रमाणे नमस्कार सहित-नवकारसी विगेरे तथा यवमध्य, वज्रमध्य, चंद्रप्रतिमा विगेरे अनेक प्रकारना तपो जाणवा. ११.

हवे मरणकाळनुं अनशन कहे छे.--

जा सो अणसणा मरणे, दुविहा सा विआहिआ । सवियारमवियारा, कायचिट्ठं पई भवे ॥ १२ ॥

अर्थ—(जा सा) जे ते (मरणे) मरण समये (अणसणा) अनशन थाय छे, (सा) ते (दुविहा) बे प्रकारे (विआहिआ) कह्युं छे. तेमां एक (सवियारं) चेष्टारूप विचार सहित अने बीजुं (अवियारा) चेष्टारूप विचार रहित. ते तप (कायचिट्ठं) शरीरनी चेष्टाने (पई) आश्रीने (भवे) होय छे. तेमां सविचार अनशन बे प्रकारनुं छे.—भक्तप्रत्याख्यान १, अने इंगिनीमरण २. तेमां भक्तप्रत्याख्यान करनार साधु गच्छ मध्ये रही गुरु पासे आलोचना लइ विधिपूर्वक संलेखना करी त्रिविध के चतुर्विध आहारनुं प्रत्याख्यान करे. वळी ते साधु कोमळ संथारो पाथरी आहार अने उपकरण विगेरेपरनी ममतानो त्याग करी पोते नमस्कार मंत्रनो उच्चार करे अथवा पासे रहेला मुनि नमस्कार बोले ते सांभळे, तथा पोतानी शक्ति होय तो पोते शरीरनुं पडखुं फेरवे विगेरे शरीरनी चेष्टा करे अने शक्ति न होय तो बीजानी

मददथी चेष्टा करे. १. इंगिनीमरण करनार साधु आलोचना अने संलेखनादि पूर्वक शुद्ध स्थंडिलमां रही पोते जाते ज चतुर्विध आहारनुं प्रत्याख्यान करे, तथा नियमित करेला स्थंडिलमां ज रहीने छायाथी तडके अने तडकेथी छायामां पोतानी जाते ज जाय, कोइनी कांइपण मदद ले नहीं. २. हवे अविचार अनशन ते पादपोपगमन छे. तेमां देवगुरुने वंदनादिकनी विधि करी चतुर्विध आहारनुं प्रत्याख्यान करी पर्वतनी गुफा विगेरे ठेकाणे जइ पादप (वृक्ष) नी जेम जावजीव चेष्टा रहित ज रहे. १२.

हवे बीजी रीते बे प्रकारनुं अनशन कहे छे.—

अहवा सपरिक्कम्मा, अपरिक्कम्मा य आहिया । नीहारिमनीहारि, आहारच्छेओ दोसु वि ॥ १३ ॥

अर्थ—(अहवा) अथवा (सपरिकम्मा) सपरिकर्म एटले उभा रहेवुं, बेसवुं, पडखुं फेरववुं, चांपवुं, चोळवुं विगेरे परिकर्म सहित, (अपरिक्कम्मा य) तथा अपरिकर्म एटले कोइपण प्रकारना परिकर्म रहित. (आहिआ) ए बे प्रकारे अनशन कह्युं छे. तेमां सपरिकर्मना बे भेद छे.—भक्तप्रत्याख्यान १ अने इंगिनीमरण २. तेमां भक्तप्रत्याख्यान अनशनमां पोताना अथवा बीजाना करेला उद्वर्तनादिक परिकर्म थइ शके छे. १. अने इंगिनीमरणअनशनमां मात्र पोते करेला ज उद्वर्तनादिक थइ शके छे. २. अपरिकर्ममां तो पादपोपगमन होवाथी कांइपण परिकर्म होतुं नथी.

अथवा सपरिकर्म एटले संलेखना सहित अने अपरिकर्म एटले संलेखना रहित. तेमां जो कांइ आयुष्यनो व्याघात न होय तो भक्तप्रत्याख्यान विगेरे त्रणमांथी कोइ पण अनशन संलेखना पूर्वक करवुं ए ज योग्य छे, अन्यथा आर्तध्यान

थवानो संभव छे, आ सपरिकर्म कहेवाय छे, अने वीजळी, पर्वत के भींत विगेरेनुं पडवुं के तत्काळ घात करनार रोगादिकनो उपद्रव थवो ते रूपी आयुष्यनो व्याघात होय तो संलेखना कर्या विना ज भक्तप्रत्याख्यानादिक अनशन करवामां आवे छे. आ अपरिकर्म कहेवाय छे. तथा (नीहारिं) निर्हारि एटले ग्रामादिकनी बहार जइने पादपोपगमन अनशन लेवुं ते, तथा (अनीहारिं) अनिर्हारि एटले ग्रामादिकनी बहार ज होवाथी क्यांइ जवानुं न होय अने जे स्थाने होय ते ज स्थाने पादपोपगमन अनशन लेवुं ते. (दोसु वि) बन्नेने विषे (आहारच्छेओ) आहारनो त्याग तो समान ज छे, एटले के सविचार के अविचार, सपरिकर्म के अपरिकर्म अने निर्हारि के अनिर्हारि ए सर्वने विषे आहारनो त्याग तो सरखो ज छे. १३.

हवे ऊनोदरि तप कहे छे.—

ओमोअरणं पंचहा, समासेण विआहिअं । दव्वओ खित्तकालेणं, भावेणं पज्जवेहि अ ॥ १४ ॥

अर्थ—(ओमोअरणं) अवमौदर्य एटले ऊनोदरि तप (समासेण) संक्षेपे करीने (पंचहा) पांच प्रकारनो (विआहिअं) कह्यो छे. ते आ प्रमाणे.—(दव्वओ) द्रव्यथी एटले द्रव्यने आश्रीने, (खित्तकालेणं) क्षेत्रथी, काळथी, (भावेणं) भावथी, (पज्जवेहि अ) तथा पर्यायथी एटले पर्यायने आश्रीने. १४.

तेमां प्रथम द्रव्यथी ऊनोदरि कहे छे.—

जो जस्स उ आहारो, तत्तो ओमं तु जो करे । जहन्नेणेगसित्थाइ, एवं दव्वेण ऊ भवे ॥ १५ ॥

अर्थ—(जो) जेटलो (जस्स उ) जेनो (आहारो) आहार होय (तत्तो) ते आहारमांथी (जो) जे भोजन करतो सतो (ओमं तु) न्यूनताने (करे) करे. केटलो न्यून करे ? ते कहे छे—(जहन्नेण) जघन्ये करीने (एगसित्थाइ) एक सिक्थ–दाणो विगेरे ओछुं खाय, आदि शब्दथी बे सिक्थथी आरंभीने एक कवळ सुधीनुं भोजन न्यून करे, ते पुरुषने (एवं) आ प्रमाणे (दव्वेण ऊ) द्रव्ये करीने (भवे) अवमौदर्य थाय छे. आ अल्पाहार नामना अवमौदर्यने आश्रीने कह्युं छे. एटले के जे कवळ मुखमां नाखतां मुखनो अतिविकार न थाय तेटला प्रमाणवाळा बत्रीश कवळनो पूर्ण आहार पुरुषने होय छे अने स्त्रीने अठ्ठावीश कवळनो आहार पूर्ण होय छे. ते आहारमांथी जे एक सिक्थादिकथी एक कवळ पर्यंत ओछो आहार करे ते अल्पाहार नामनुं अवमौदर्य कहेवाय छे. कारण के अवमौदर्यना उपार्धादिक भेदोमां नव कवळादिकनुं प्रमाण जघन्य पणे कह्युं छे ते आ प्रमाणे.–अल्पाहार नामनुं अवमौदर्य जघन्ये करीने एक कवळनुं अने उत्कृष्टे करीने आठ कवळनुं छे. वचेनुं सर्व अजघन्योत्कृष्ट छे. १. उपार्ध नामनुं अवमौदर्य जघन्य नव कवळनुं, उत्कृष्ट बार कवळनुं, अने वचेनुं सर्व अजघन्योत्कृष्ट छे. २. द्विभाग नामनुं अवमौदर्य जघन्य तेर कवळनुं अने उत्कृष्ट सोळ कवळनुं तथा वचेनुं सर्व अजघन्योत्कृष्ट छे. ३. प्राप्त नामनुं अवमौदर्य जघन्य सतर कवळनुं, उत्कृष्ट चोवीश कवळनुं अने वचेनुं सर्व अजघन्योत्कृष्ट छे. ४. तथा किंचित् ऊन नामनुं अवमौदर्य जघन्य पचीश कवळनुं, उत्कृष्ट एकत्रीश कवळनुं अने वचेनुं सर्व अजघन्योत्कृष्ट छे. ५. १५.

हवे क्षेत्रथी ऊनोदरि कहे छे.—

गामे नगरे तह राय–हाणिनिगमे अ आगरे पल्ली । खेडे कब्बडदोणमु–हपट्टणमडंबसंबाहे ॥१६॥

अर्थ—(गामे) गामने विषे, (नगरे) नगरने विषे, (तह) तथा (रायहाणिनिगमे) राजधानीने विषे, निगम एटले घणा वेपारीओनुं निवासस्थान तेने विषे, (अ) तथा (आगरे) आकरने विषे एटले सोना रूपा विगेरेनी खाणने विषे, (पल्ली) पल्लीने विषे, (खेडे) जेमां उंचो किल्लो होय एवा खेटने विषे, (कब्बड) कर्बटने विषे एटले कुत्सित नगरने विषे, (दोणमुह) द्रोणमुख एटले जळमार्गे तथा स्थळमार्गे जेमां जवातुं होय तेने विषे, (पट्टण) पत्तन बे प्रकारे छे—जळपत्तन अने स्थळपत्तन. तेमां जळपत्तन जळनी वच्चे होय छे अने स्थळपत्तन जळ रहित पृथ्वीपर होय छे, ते बन्ने प्रकारना पत्तनने विषे, (मडंब) मडंब एटले फरतुं अढी योजन सुधीमां बीजुं गाम न होय तेवुं गाम तेने विषे, (संबाहे) संबाध एटले जेमां चारे वर्णना घणा लोको वसता होय तेने विषे. १६.

आसमपए विहारे, सन्निवेसे समायघोसे अ । थलिसेणाखंधारे, सत्थे संवट्टकोट्टे अ ॥ १७ ॥

अर्थ—(आसमपए) तापस विगेरेना आश्रमस्थानने विषे, (विहारे) विहार एटले देवगृह अथवा भिक्षुकोनुं निवास स्थान, ते जेमां मुख्य होय एवा गामने विषे, (सन्निवेसे) संनिवेश एटले यात्रादिकने माटे आवेला लोकोना आवास, तेने विषे, (समायघोसे) समाज एटले पथिकनो समूह तेने विषे, घोष एटले गोकुळ तेने विषे, (अ) तथा (थलि) स्थली एटले उंची भूमिनो प्रदेश तेने विषे, (सेणा) चतुरंग सेनाने विषे, (खंधारे) स्कंधावार एटले वणिजादिक सर्व जन सहित चतुरंग सेनानो निवास तेने विषे, (सत्थे) सार्थ एटले गाडांमां करीयाणां भरी वेपार माटे नीकळेला वेपारीओनुं आवासस्थान तेने विषे, (संवट्टकोट्टे अ) तथा संवर्त एटले भयथी त्रास पामेला लोकोनुं निवासस्थान तेने विषे अने

कोट्ट एटले प्राकार तेने विषे. १७.

वाडेसु वा रत्थासु व, घरेसु वा एवमेत्तिअं खेत्तं । कप्पइ उ एवमाई,एवं खेत्तेण ऊ भवे ॥ १८ ॥

अर्थ—(वाडेसु वा) वाडाओने विषे, अथवा (रत्थासु व) शेरीओने विषे, अथवा (घरेसु वा) घरोने विषे,(एवं) ए प्रकारे (एत्तिअं) एटलुं एटले अमुक परिमाणवाळुं (खेत्तं) क्षेत्र (कप्पइ उ) मारे भिक्षाटन माटे कल्पे. (एवमाई) ए आदिक (एवं) आ प्रकारे (खेत्तेण ऊ) क्षेत्रने आश्री अवमौदर्य (भवे) थाय छे. १८.

हवे बीजी रीते क्षेत्रने आश्री अवमौदर्य कहे छे.—

पेडा य अद्धपेडा, गोमुत्ति पयंगवीहिआ चेव । संबुकावट्टायय—गंतुंपच्चागया छट्ठा ॥ १९ ॥

अर्थ—(पेडा य) पेटीना आकारनी जेम सळंग चोतरफ सर्व घरोमां अटन करवुं ते पेटा कहेवाय छे १, (अद्धपेडा) तेना ज अर्धभागमां भिक्षाटन करवुं ते अर्धपेटा कहेवाय छे २, (गोमुत्ति) बळदना मूत्रने आकारे एटले डाबी बाजु तथा जमणी बाजु एक एक घर मूकीने अटन करवुं ते गोमुत्रिका कहेवाय छे ३, (पयंगवीहिआ) पतंग—तीडनी जेम वच्चे वच्चे घणा घरो मूकी मूकीने अटन करवुं ते पतंगवीथिका कहेवाय छे ४, (चेव) निश्चे (संबुकावट्टा) शंबूक एटले शंख, तेना आवर्तनी जेम अटन करवुं ते शंबूकावर्त कहेवाय छे, ते बे प्रकारे छे—आभ्यंतर शंबूकावर्त अने बाह्यशंबूकावर्त. तेमां शंखनी नाभि जेवा आकारवाळा क्षेत्रमां प्रथम मध्यभागना घरथी आरंभी बहारना घर सुधी अटन करवुं ते आभ्यंतर शंबूकावर्त अने

तेथी विपरीतपणे एटले बहारना घरथी आरंभी मध्यना घर सुधी अटन करवुं ते बाह्य शंबूकावर्त कहेवाय छे ५, तथा (छट्ठा) छठी (आययगंतुंपच्चागया) आयत एटले लांबुं–सीधुं जइने प्रत्यागता एटले पाछुं वळवुं एटले प्रथम सीधुं दूर जइ पछी पाछा वळतां भिक्षाटन करवुं एटले भिक्षा ग्रहण करवी ते आयतगंतुंप्रत्यागता कहेवाय छे. ६. अहीं कोइने शंका थाय के—" अहीं जे क्षेत्रो बताव्यां ते सर्व भिक्षाचर्याना ज प्रकारो छे, तेमां क्षेत्रने आश्री अवमौदर्य शी रीते कहेवाय ? " आनो उत्तर ए छे जे—" आजे मारे अवमौदर्य हो. " एवा आशयथी धारी राखेला—निश्चय करेला क्षेत्रमां भिक्षाटन करवाथी तेने अवमौदर्य तरीके कहेवामां काइ दोष नथी. निमित्त जूदा जूदा होवाथी जेम एक ज माणस अपेक्षाथी कोइनो पिता अने कोइनो पुत्र विगेरे थइ शके छे, ते ज प्रमाणे अहीं पण गोचरीना क्षेत्रने अवमौदर्यनी धारणाथी क्षेत्रोनोदरी पण कही शकाय छे. एज प्रमाणे उपर ग्रामादिक क्षेत्रोमां अने आगळ काळादिकने आश्री अवमौदर्य कहेशे, त्यां पण अमुक ग्रामादिक अने काळादिकनो अभिग्रह होवाथी अवमौदर्य कहेवाय छे. १९.

हवे काळने आश्री अवमौदर्य कहे छे.—

दिवसस्स पोरिसीणं, चउण्हं पि उ जत्तिओ भवे कालो। एवं चरमाणो खलु, कालोमाणं मुणेअव्वं ॥२०॥

अर्थ—(दिवसस्स) दिवसनी (चउण्हं पि उ) चारे (पोरिसीणं) पोरसीने मध्ये (जत्तिओ) जेटलो (कालो) काळ (भवे) होय एटले " अमुक काळे हुं भिक्षाटन करीश " ए रीते अभिग्रह धारीने पछी (एवं) एज प्रमाणे नियमित काळे (चरमाणो) भिक्षाटन करता साधुने (खलु) निश्चे (कालोमाणं) काळावमौदर्य (मुणेअव्वं) जाणवुं. २०.

काळावमौदर्यने ज बीजी रीते कहे छे.—

अहवा तइआए पो—रिसीए ऊणाए घासमेसंतो । चउभागूणाए वा, एवं कालेण ऊ भवे ॥ २१ ॥

अर्थ—(अहवा) अथवा (तइआए) त्रीजी (पोरिसीए) पोरसी (ऊणाए) ऊणी—ओछी सते (घासं एसंतो) ग्रासनी एषणा करे, केटली ओछी होय त्यारे ? ते उपर कहे छे—(चउभागूणाए वा) चोथो भाग ओछी सते अने वा शब्दथी पांचमो विगेरे भाग ओछी सते (एवं) ए प्रकारे काळना अभिग्रहवडे भिक्षाटन करवाथी (कालेण ऊ) काळे करीने अवमौदर्य एटले काळावमौदर्य (भवे) थाय छे. शास्त्रमां त्रीजी पोरसीए ज भिक्षाटन कर्युं छे तेथी आ उत्सर्ग विधिना विषयवाळुं आ अवमौदर्य जाणवुं. २१.

हवे भाव ऊनोदरि कहे छे.—

इत्थी वा पुरिसो वा, अलंकिओ वाऽणलंकिओ वावि । अन्नयरवयत्थो वा, अन्नयरेणं वा वत्थेणं ॥२२॥

अर्थ—(इत्थी वा) स्त्री अथवा (पुरिसो वा) पुरुष, (अलंकिओ वा) अलंकार करेलो अथवा (अणलंकिओ वावि) अलंकार नहीं करेलो, अथवा (अन्नयरवयत्थो वा) यौवन आदिक कोइ एक—अमुक वयमां रहेलो, अथवा (अन्नयरेणं वा) कोइ एक—अमुक प्रकारना (वत्थेणं) वस्त्रवडे सहित होय एवो. २२.

अन्नेण विसेसेणं, वण्णेणं भावमणुमुअंते उ । एवं चरमाणो खलु, भावोमाणं मुणेअव्वं ॥ २३ ॥

अर्थ—(अन्नेण विसेसेणं) बीजा कोइ विशेषवडे एटले कोप पामेलो के हसतो विगेरे अवस्थावाळो अथवा (वन्नेणं) कृष्णादिक वर्णे करीने जणातो, (भावं) उपर कहेला अलंकृतत्वादिक भावने (अणुमुअंते उ) नहीं मूकतो–तजतो सतो ज दातार जो मने भात पाणी आपशे तो हुं ग्रहण करीश. (एवं) ए प्रकारे अभिग्रह लइने (चरमाणो) भिक्षाटन करता साधुने (खलु) निश्चे (भावोमाणं) भावावमौदर्य–भाव ऊनोदरि (मुणेअव्वं) जाणवी. २३.

हवे पर्याय ऊनोदरि कहे छे.—

दव्वे खित्ते काले, भावम्मि अ आहिआ उ जे भावा। एएहिं ओमचरओ, पज्जवचरओ भवे भिक्खू ॥२४॥

अर्थ—(दव्वे) अशनादिक द्रव्यने विषे, (खित्ते) ग्रामादिक क्षेत्रने विषे, (काले) पोरसी आदिक काळने विषे, (भावम्मि अ) तथा स्त्रीत्वादिक भावने विषे (जे भावा) जे भावो एटले एक दाणो न्यून आदिक पर्यायो (आहिआ उ) कहेला छे, (एएहिं) ते सर्व भावोवडे (ओमचरओ) अवमौदर्यने आचरण करनार (भिक्खू) साधु (पज्जवचरओ) पर्यवचरक एटले पर्याय अवमौदर्यनुं आचरण करनार (भवे) होय छे. अहीं पर्यवशब्दवडे पर्यवनुं प्राधान्य कहेवानी इच्छा होवाथी आ पर्यव अवमौदर्य कहेवाय छे. ए ज प्रमाणे क्षेत्रादिकनुं प्राधान्य कहेवानी इच्छाथी क्षेत्रादिक अवमौदर्य कहेवाय छे. परंतु तत्त्वथी तो ते सर्वने विषे द्रव्यनुं अवमौदर्य संभवे छे. कदाच कोइ क्षेत्रादिक अवमौदर्यमां द्रव्यनी न्यूनता न होय, तो त्यां क्षेत्रादिकनी न्यूनताने आश्री अवमौदर्य कहेवाय छे एम जाणवुं. २४.

हवे भिक्षाचर्या नामनो त्रीजो बाह्य तप कहे छे.—

अट्ठविहगोअरग्गं तु, तहा सत्तेव एसणा। अभिग्गहा य जे अन्ने, भिक्खायरिअमाहिआ ॥ २५ ॥

अर्थ—(अट्ठविहगोअरग्गं तु) आठ प्रकारनो अग्र एटले अकल्प्यपिंडने दूर करवाथी–तजवाथी प्रधान एवो गोचर एटले उंच नीच सर्व गृहोने विषे सामान्यपणे भ्रमण करवुं ते अष्टविधाग्रगोचर कहेवाय छे अर्थात् प्रधान गोचरीना आठ भेद छे. (तहा) तथा (सत्तेव) सात ज (एसणा) एषणा छे एटले एषणाना सात भेद छे. (य) तथा (जे अन्ने) बीजा जे (अभिग्गहा) द्रव्यादिक अभिग्रहो छे, ते सर्वे (भिक्खायरिअं) भिक्षाचर्या के जेनुं बीजुं नाम वृत्तिसंक्षेप छे ते (आहिआ) जिनेश्वरोए कही छे. अहीं अग्रगोचरना आठ भेद पेटा विगेरे जे प्रथम कही गया ते ज छे. तेमां शंबूकावर्तना बन्ने प्रकार जूदा गणवा अने आयतगंतुंप्रत्यागत–सीधुं जवुं अने पाछुं वळवुं ए पण बे भेद जूदा गणवा. तेथी आठ आ प्रमाणे थाय छे–'पेटा १, अर्धपेटा २, गोमूत्रिका ३, पतंगवीथिका ४, आभ्यंतर शंबूकावर्ता ५, बाह्य शंबूकावर्ता ६, आयतगंतुं ७, तथा प्रत्यागमा ८.' सात एषणा आ प्रमाणे छे.—

" संसट्ठ १ मसंसट्ठा २, उद्धड ३ तह अप्पलेविआ ४ चेव। उग्गहिआ ५ पग्गहिआ ६, उज्झिअधम्मा ७ य सत्तमिआ ॥ "

" संसृष्टा—भिक्षाथी खरडायेला हाथ के पात्र होय, तेनावडे ज भिक्षा ग्रहण करवी ते. १. असंसृष्टा—हाथ के पात्र खरडायेला न होय अने तेवडे भिक्षा ग्रहण करवी ते. २. उध्धृता—रसोडामांथी पोताने खावा माटे जे पात्रमां भोजन

---

१ आयतगंतुं प्रत्यागमा ७ अने ऋजुगति ८. ए प्रमाणे लक्ष्मीविजयजीनी टीकामां छे.

काढ्युं होय तेमांथी ज भिक्षा ग्रहण करवी ते. ३. अल्पलेपा—चणा विगेरे लेप रहित वस्तु लेवी ते. ४. उद्गृहीता—भोजन समये भोजन करनारने माटे पीरसवानी वस्तु जे पात्रमां नांखीने लावे तेमांथी ज ग्रहण करवी ते. ५. प्रगृहीता—भोजन समये भोजन करनारने आपवा माटे पीरसनारे हस्तादिकवडे जे वस्तु ग्रहण करी होय अथवा भोजन करनारे पोताना हस्तादिकमां ग्रहण करी होय तेमांथी ज ग्रहण करवी ते. ६. तथा सातमी उज्झितधर्मा—जे भोजननी वस्तु त्याग करवा योग्य होय अने तेने बीजा कोइ मनुष्यादिक लेवाने इच्छता न होय एवी वस्तु लेवी अथवा ते वस्तु अर्धी नांखी दीधी होय अने अर्धी बाकी होय ते लेवी ते. ७. हवे चार प्रकारना अभिग्रहो आ प्रमाणे छे.—द्रव्य, क्षेत्र, काळ अने भाव. तेमां द्रव्य अभिग्रह एटले "भालाना अग्रभाग आदिने विषे रहेला मांडा विगेरेने हुं ग्रहण करीश." इत्यादि. १. क्षेत्राभिग्रह एटले "बे पगनी वच्चे उमरो राखीने मने आपशे तो हुं ग्रहण करीश." इत्यादि. २. काळाभिग्रह एटले "समग्र भिक्षुओ भिक्षाचर्या करीने गया होय ते वखते भिक्षा माटे अटन करीश ने जे मळशे ते लइश." इत्यादि. ३. तथा भावाभिग्रह एटले "हसतो के रोतो दातार मने आपशे तो हुं ग्रहण करीश." इत्यादि ४. २५.

हवे रसत्याग नामनो चोथो बाह्यतप कहे छे.—

खीरदहिसप्पिमाई, पणीअं पाणभोअणं । परिवज्जणं रसाणं तु, भणिअं रसविवज्जणं ॥ २६ ॥

अर्थ—(खीरदहिसप्पिमाई) दूध, दहीं, घी, आदिशब्दथी तेल, गोळ, पक्वान्न विगेरे (पणीअं) प्रणीत एटले

पुष्टिकारक एवा (पाणभोअणं) खजूरनो रस विगेरे पान-पीवा योग्य पदार्थ अने भोजन एटले जेमांथी घी नीतरतुं होय एवा ओदनादिक ए सर्व (रसाणं तु) रसोनो (परिवज्जणं) जे त्याग करवो-तेवो आहार ग्रहण न करवो ते (रसविवज्जणं) रसत्याग नामनो तप (भणिअं) कह्यो छे. २६.

हवे कायक्लेश नामनो पांचमो बाह्यतप कहे छे.—

ठाणा वीरासणाईआ, जीवस्स उ सुहावहा । उग्गा जहा धरिज्जंति, कायकिलेसं तमाहिअं ॥२७॥

अर्थ—(जीवस्स) जीवने (उ सुहावहा) सुखकारक एवां ज अने (उग्गा) दुष्कर होवाथी अति उत्कट एवां (वीरासणाईआ) वीरासन विगेरे आदिशब्दथी गोदोहादिक अने उपलक्षणथी लोच विगेरे (ठाणा) स्थानो (जहा) जे प्रकारे (धरिज्जंति) धारण कराय ते प्रकारे ग्रहण करवा (तं) तेने (कायकिलेसं) कायक्लेश (आहिअं) कह्यो छे. २७. (अनेक प्रकारे कायाने क्लेश आपवारूप आ तप छे.)

हवे छट्ठो संलीनता नामनो बाह्यतप कहे छे.—

एगंतमणावाए, इत्थीपसुविवज्जिए । सयणासणसेवणया, विवित्तसयणासणं ॥ २८ ॥

अर्थ—(एगंतं) एकांत एटले मनुष्य रहित, (अणावाए) अनापात एटले स्त्री विगेरेनी जाव आव न होय एवा तथा (इत्थीपसुविवज्जिए) स्त्री पशु विगेरे ज्यां रहेता न होय एवा शून्य गृहादिकने विषे (सयणासणसेवणया) शयन अने

आसन सेववाथी (विवित्तसयणासणं) विविक्तशयनासन नामनो बाह्यतप कहेवाय छे. शयन अने आसन शब्दना उपलक्षणथी एषणीय पाट पाटला विगेरे सेववाथी पण विविक्तशयनासन नामनो बाह्यतप कहेवाय छे. अहीं विविक्तचर्या नामनी संलीनता कही, तेना उपलक्षणथी बीजी त्रणे संलीनता जाणी लेवी. संलीनता चार प्रकारनी छे, ते आ प्रमाणे— इंद्रियसंलीनता १, कषायसंलीनता २, योगसंलीनता ३ अने विविक्तचर्यासंलीनता ४. तेमां इंद्रियसंलीनता एटले मनोज्ञ के अमनोज्ञ शब्दादिक विषयोमां रागद्वेष न करवो ते १, कषायसंलीनता एटले तेना उदयनो निरोध करवो ते २, योगसंलीनता एटले मन, वचन अने कायाना शुभ व्यापारमां प्रवृत्ति अने अशुभथी निवृत्ति करवी ते ३, अने विविक्तचर्यासंलीनता तो मूळ गाथामां ज कही छे ते. ४. २८.

हवे बाह्य तपनी समाप्ति करवा पूर्वक अभ्यंतर तपनी प्रस्तावना करे छे.—

एसो बाहिरंगतवो, समासेण विआहिओ । अब्भितरं तवं एत्तो, वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥ २९ ॥

अर्थ—(एसो) आ (बाहिरंगतवो) बाह्य तप (समासेण) संक्षेपे करीने (विआहिओ) कह्यो. (एत्तो) हवे पछी (अब्भितरं तवं) आभ्यंतर तपने (अणुपुव्वसो) अनुक्रमे (वोच्छामि) हुं कहीश. २९.

आभ्यंतर तपना भेदो कहे छे.—

पायच्छित्तं विणओ, वेआवच्चं तहेव सज्झाओ । झाणं च विउस्सग्गो, एसो अब्भितरो तवो ॥३०॥

अर्थ—(पायच्छितं) प्रायश्चित्त, (विणओ) विनय, (वेआवच्चं) वैयावृत्त्य, (तहेव) तथा (सज्झाओ) स्वाध्याय, (झाणं) ध्यान, (च) अने (विउस्सग्गो) व्युत्सर्ग—कायोत्सर्ग (एसो) आ छ प्रकारनो (अब्भितरो) आभ्यंतर (तवो) तप छे. ३०.

पहेलो प्रायश्चित्त नामनो आभ्यंतर तप कहे छे.—

आलोअणारिहाईअं, पायच्छित्तं तु दसविहं । जे भिक्खू वहई सम्मं, पायच्छित्तं तमाहिअं ॥३१॥

अर्थ—(आलोअणारिहाईअं) जे पाप, मात्र आलोचनाथीज शुद्ध थाय ते आलोचनार्ह कहेवाय छे, आदिशब्दथी प्रतिक्रमणने योग्य विगेरे (पायच्छित्तं) प्रायश्चित्त (दसविहं तु) दश प्रकारनुं ज छे. तेने (जे) जे (भिक्खू) साधु (सम्मं) सम्यक् प्रकारे (वहई) वहन करे—सेवे, (तं) तेने (पायच्छित्तं) प्रायश्चित्त तप (आहिअं) कह्युं छे. प्रायश्चित्तना दश प्रकार आ प्रमाणे छे.—आलोचना १, प्रतिक्रमण २, मिश्र ३, विवेक ४, व्युत्सर्ग ५, तप ६, छेद ७, मूल ८, अनवस्थाप्य ९ अने पारांचित १०. तेमां गुरुनी पासे वचनमात्रवडे प्रकाश करवाथी ज जे पापथी मुक्त थवाय छे ते आलोचनार्ह कहेवाय छे. ते अहीं आलोचना नामनुं प्रथम प्रायश्चित्त छे. १. दोषथी पाछा फरवुं एटले मिथ्यादुष्कृत देवुं ते प्रतिक्रमण कहेवाय छे. मात्र प्रतिक्रमणथी ज सहसात्कारे उत्पन्न थयेला पापनी शुद्धि थाय छे, तेने गुरुनी समक्ष आलोचवानी जरुर रहेती नथी, ते प्रतिक्रमणने ज लायक छे. २. गुरुनी समक्ष आलोचना करी पछी तेनी ज आज्ञाथी मिथ्यादु-

ष्कृत देवुं ते प्रतिक्रमण अने आलोचना ए बंनेने योग्य होवाथी मिश्र नामनुं प्रायश्चित्त कहेवाय छे ३. विवेक एटले पृथक् करवुं ते. मात्र विवेकथी ज जेनी शुद्धि थती होय ते विवेकार्ह छे. एटले के कोइक प्रकारे अशुद्ध आहार ग्रहण कर्यो होय तो तेनी मात्र त्यागथी ज शुद्धि थाय छे, तेथी ते विवेक नामनुं प्रायश्चित्त कहेवाय छे. ४. व्युत्सर्गवडे एटले केवळ कायोत्सर्गवडे ज जेनी शुद्धि थाय ते व्युत्सर्ग नामनुं प्रायश्चित्त छे. ५. जे दोष सेवे सते नीवीथी आरंभी छ मास सुधीनो तप अपाय ते तपोर्ह प्रायश्चित्त कहेवाय छे. ६. जे दोष सेवे सते चारित्रपर्यायनो छेद कराय ते छेदार्ह प्रायश्चित्त छे. ७. जे दोष सेवे सते सर्व पर्यायनो छेद करी फरीथी मूळ व्रतनुं आरोपण कराय ते मूलार्ह प्रायश्चित्त कहेवाय छे. ८. जे दोष सेवे सते उपस्थापना (व्रत) ने पण अयोग्य सतो ज्यां सुधी गुरुए कहेलो तप न करे त्यांसुधी व्रतने विषे स्थापन न कराय अने तप करी दोष रहित थया पछी व्रतने विषे स्थापन कराय ते अनवस्थाप्य प्रायश्चित्त कहेवाय छे. ९. तथा जे दोष सेवे सते लिंग, क्षेत्र, काळ अने तपवडे पारने पामे ते पारांचित कहेवाय छे. अथवा सर्व प्रायश्चित्तोनो पार एटले अंत ते पारांचित, अथवा अपराधना पारने पामे ते पारांचित कहेवाय छे. १०. (आ प्रायश्चित्त सिद्धसेनदिवाकरने आपवामां आव्युं हतुं.) ए दश प्रकारना प्रायश्चित्तने साधु सम्यक् प्रकारे सेवे. ते अभ्यंतर तप जाणवो. ३१.

हवे विनय नामनो बीजो अभ्यंतर तप कहे छे.—

अब्भुट्ठाणं अंजलि-करणं तहेवासणदायणं । गुरुभत्तिभावसुस्सूसा, विणओ एस वियाहिओ ॥३२॥

अर्थ—गुरु विगेरे आवे त्यारे (अब्भुट्ठाणं) उभा थवुं, (अंजलिकरणं) हाथ जोडवा, (तहेव) तथा (आसणदा-यणं) आसन आपवुं, (गुरुभत्ति) गुरुनी भक्ति, (भावसुस्सूसा) भाववडे एटले अंतःकरणवडे शुश्रूषा एटले गुरुनी आज्ञा सांभळवानी इच्छा अथवा गुरुनी सेवा, (एस) आ पांच प्रकारे (विणओ) विनय तप (विआहिओ) कहेलो छे. ३२.

वैयावृत्त्य नामनो त्रीजो तप कहे छे.—

आयरिअमाइअम्मि, वेआवच्चम्मि दसविहे। आसेवणं जहाथामं, वेआवच्चं तमाहिअं ॥ ३३ ॥

अर्थ—(दसविहे) दश प्रकारना (आयरिअमाइअम्मि) आचार्यादिकनुं (वेआवच्चम्मि) वैयावृत्त्य एटले उचित विधिए आहारादिक लावी आपवुं ते, तथा (जहाथामं) शक्ति प्रमाणे (आसेवणं) तेमनी सेवा करवी, (तं) ते (वेआ-वच्चं) वैयावृत्त्य तप (आहिअं) कह्युं छे. अहीं आचार्य १, उपाध्याय २, स्थविर ३, तपस्वी ४, ग्लान ५, शैक्ष्य-बाळ साधु ६, साधर्मिक ७, कुळ ८, गण ९ अने संघ १०, आ दशनी वैयावच्च करवानी समजवी. ३३.

स्वाध्याय नामनो चोथो तप कहे छे.—

वायणा १ पुच्छणा २ चेव, तहेव परिअट्टणा ३। अणुप्पेहा ४ धम्मकहा ५, सज्झाओ पंचहा भवे ॥३४॥

अर्थ—(वायणा) वाचना, (पुच्छणा) पृच्छना, (चेव) निश्चे (तहेव) तथा (परिअट्टणा) परावर्तना, (अणु-प्पेहा) अनुप्रेक्षा अने (धम्मकहा) धर्मकथा (पंचहा) आ पांच प्रकारनो (सज्झाओ) स्वाध्याय (भवे) छे. आ

पचिनो विस्तरार्थ प्रथम आवी गयो छे. २४.

हवे ध्यान नामनो पांचमो आभ्यंतर तप कहे छे.—

अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता, झाएज्जा सुसमाहिओ। धम्मसुक्काइं झाणाइं, झाणं तं तु बुहा वए ॥ २५ ॥

अर्थ—(अट्टरुद्दाणि) आर्त अने रौद्र ए बे ध्यानने (वज्जित्ता) वर्जीने (सुसमाहिओ) सम्यक् प्रकारे समाधियुक्त थयो थको (धम्मसुक्काइं) जे धर्म अने शुक्ल ए बे (झाणाइं) ध्यानने (झाएज्जा) ध्यावे, (तं तु) तेने ज (बुहा) पंडितो (झाणं) ध्यानतप (वए) कहे छे. २५.

हवे कायोत्सर्ग नामनो छट्ठो आभ्यंतर तप कहे छे.—

सयणासणठाणे वा, जे उ भिक्खू न वावरे। कायस्स विउस्सग्गो, छट्ठो सो परिकित्तिओ ॥ २६ ॥

अर्थ—(सयणासणठाणे वा) शयनने विषे, आसनने विषे अथवा वीरासनादिक स्थानने विषे रहेलो (जे उ) जे (भिक्खू) साधु (न वावरे) हालवा चालवा विगेरेनी कांइ पण क्रिया न करे, ते साधुने (कायस्स) कायानो (विउस्सग्गो) व्युत्सर्ग-कायानी चेष्टानो त्याग ए नामनो (छट्ठो) छट्ठो (सो) ते आभ्यंतर तप (परिकित्तिओ) कह्यो छे. अहीं कायानो व्युत्सर्ग आव्यो छे तेना उपलक्षणथी शेष व्युत्सर्ग पण जाणी लेवा. ते आ प्रमाणे.—

" दव्वे भावे अ तहा, दुविहुस्सग्गो चउव्विहो दव्वे। गणदेहोवहिभत्ते, भावे कोहाइचाओ त्ति ॥ "

" उत्सर्ग एटले त्याग ते बे प्रकारनो छे-द्रव्य अने भाव. तेमां द्रव्यने विषे चार प्रकारनो व्युत्सर्ग-त्याग छे-गच्छनो, देहनो, उपधिनो अने भक्तनो एटले भातपाणीनो. भावने विषे क्रोधादिकषायनो त्याग करवो ते. " आ सर्व प्रकारनो व्युत्सर्ग जाणी लेवो. २६.

हवे अध्ययनने समाप्त करता पूर्वक तपनुं फळ कहे छे.---

एवं तवं तु दुविहं, जे सम्मं आयरे मुणी । से खिप्पं सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पंडिए त्ति बेमि॥३७॥

अर्थ—(एवं) आ प्रमाणे (जे) जे (मुणी) साधु (दुविहं) बे प्रकारना (तवं तु) तपने (सम्मं आयरे) सम्यक् प्रकारे आचरण करे, (से) ते (पंडिए) पंडित साधु (खिप्पं) शीघ्रपणे (सव्वसंसारा) सर्व संसारथी (विप्पमुच्चइ) मूकाय छे (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं. ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. ३७.

इति त्रिंशत्तममध्ययनम् ३०.

अथ चरणविधि नामनुं एकत्रीशमुं अध्ययन. ३१.

त्रीशमा अध्ययनमां तप कह्यो. ते तप चारित्रवंतने ज सफळ थाय छे. तेथी आ एकत्रीशमा अध्ययनमां चारित्रने ज कहे छे. तेनुं आ प्रथम सूत्र छे.--

चरणविहिं पवक्खामि, जीवस्स उ सुहावहं । जं चरित्ता बहू जीवा, तिण्णा संसारसागरं ॥ १ ॥

अर्थ--(जीवस्स) प्राणीने (सुहावहं उ) सुखकारक एवा ज (चरणविहिं) चारित्रना विधिने (पवक्खामि) हुं कहीश, के (जं) जे विधिनुं (चरित्ता) आचरण-सेवन करीने (बहू जीवा) घणा जीवो (संसारसागरं) संसाररूपी समुद्रने (तिण्णा) तरी गया छे. १.

ते चरणविधिने ज कहे छे.—

एगओ विरइं कुज्जा, एगओ अ पवत्तणं । असंजमे निअत्तिं च, संजमे अ पवत्तणं ॥ २ ॥

अर्थ- (एगओ) एकथकी (विरइं) विरति-निवृत्ति (कुज्जा) करवी, अने (एगओ अ) एकने विषे (पवत्तणं) प्रवृत्ति करवी. ते आ प्रमाणे (असंजमे) असंयम थकी एटले हिंसादिक थकी (निअत्तिं च) निवृत्ति करवी, अने (संजमे अ) संयमने विषे (पवत्तणं) प्रवृत्ति करवी. २.

रागद्दोसे अ दो पावे, पावकम्मपवत्तणे । जे भिक्खू रुंभई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ ३ ॥

अर्थ--(रागद्दोसे अ) राग अने द्वेष (दो) ए बे (पावे) पापप्रकृतिरूप होवाथी पाप छे तथा (पावकम्मपवत्तणे) ज्ञानावरणादिक पापकर्मना प्रवर्तक छे, तेमने (जे भिक्खू) जे साधु (निच्चं) नित्य (रुंभई) रुंधे छे, (से) ते साधु (मंडले) संसारमां (न अच्छइ) रहेतो नथी–मोक्षमां जाय छे. ३.

दंडाणं गारवाणं च, सल्लाणं च तियं तियं । जे भिक्खू चयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ ४ ॥

अर्थ—(दंडाणं) दंडना, (गारवाणं च) गौरवना अने (सल्लाणं च) शल्यना (तियं तियं) त्रिक त्रिकने एटले मनदंड, वचनदंड अने कायदंड ए त्रण दंडने, ऋद्धिगौरव, रसगौरव अने सातगौरव ए त्रण गौरवने तथा मायाशल्य, निदानशल्य अने मिथ्यात्वशल्य ए त्रण शल्यने (जे भिक्खू) जे साधु (निच्चं) नित्य (चयई) तजे छे, (से) ते (मंडले न अच्छइ) संसारमां रहेतो नथी. ४.

दिव्वे अ जे उवसग्गे, तहा तेरिच्छमाणुसे । जे भिक्खू सहई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ ५ ॥

अर्थ—(अ) तथा (जे) जे (दिव्वे) देवना करेला (तहा) तथा (तेरिच्छमाणुसे) तिर्यंचना अने मनुष्यना करेला (उवसग्गे) उपसर्गोने (जे) जे (भिक्खू) साधु (निच्चं) नित्य (सहई) सहन करे, (से) ते (मंडले न अच्छइ) संसारमां रहेतो नथी. ५.

विगहाकसायसण्णाणं, झाणाणं च दुअं तहा । जे भिक्खू वज्जई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ ६ ॥

अर्थ—(विगहाकसायसन्नाणं) चार विकथा, चार कषाय अने चार संज्ञाने (तहा) तथा (झाणाणं च दुर्ग) ध्यानना द्विकने एटले आर्त अने रौद्ररूप बे ध्यानने (जे भिक्खू) जे साधु (निच्चं) निरंतर (वज्जई) वर्जे छे, (से) ते (मंडले) संसारमां (न अच्छइ) रहेतो नथी. अहीं राजकथा १, देशकथा २, भक्त–भोजनकथा ३ अने स्त्रीकथा ४ ए चार विकथा, क्रोध १, मान २, माया ३ अने लोभ ४ ए चार कषाय तथा आहारसंज्ञा १, भयसंज्ञा २, मैथुनसंज्ञा ३ अने परिग्रहसंज्ञा ४ ए चार संज्ञा जाणवी. ६.

वएसु इंदियत्थेसु, समिईसु किरियासु अ । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ ७ ॥

अर्थ—(वएसु) पांच महाव्रतोने विषे, (इंदियत्थेसु) शब्दादिक पांच विषयोने विषे, (समिईसु) ईर्यासमिति आदि पांच समितिने विषे, (किरियासु अ) कायिकी १, अधिकरणिकी २, प्राद्वेषिकी ३, पारितापनिकी ४ अने प्राणातिपातिकी ५ ए पांच क्रियाने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच्चं) निरंतर (जयई) यत्न करे छे, (से) ते (मंडले न अच्छइ) संसारने विषे रहेता नथी. व्रत अने समितिने पाळवावडे,इंद्रियविषयोमां मध्यस्थ–रागद्वेष रहित रहेवावडे अने क्रियाने विषे त्यागवडे यत्न करवानो समजवो. ७.

लेसासु छसु काएसु, छक्के आहारकारणे । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ ८ ॥

अर्थ—(छसु) छ (लेसासु) लेश्याने विषे, (काएसु) पृथ्व्यादिक छ कायने विषे तथा (छक्के) छ (आहार-

कारणे) आहार करवाना कारणने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच्चं) निरंतर (जयई) यत्न करे छे, (से) ते (मंडले न अच्छइ) संसारने विषे रहेतो नथी. अहीं अशुभ पहेली त्रण लेश्यानो निरोध करवो अने शुभ त्रण लेश्यानुं धारण करवुं, षट्कायनुं रक्षण करवुं अने छ कारणे आहार लेवो, ए रीते यत्न करवानो छे. ८.

पिंडुग्गहपडिमासु, भयठाणेसु सत्तसु । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ ९ ॥

अर्थ—(पिंडुग्गहपडिमासु) प्रथम कहेली संसृष्टादिक सात पिंडावग्रहप्रतिमाने विषे एटले आहार ग्रहण करवाना विषयवाळा अभिग्रहोने विषे तथा (सत्तसु) सात (भयठाणेसु) भयना स्थानोने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच्चं) निरंतर (जयई) यत्न करे छे, (से) ते (मंडले न अच्छइ) संसारमां रहेतो नथी. अहीं पिंडग्रहणनी प्रतिमाओ पाळवानी छे अने भयनां स्थानो तजवानां छे. ते सात भय आ प्रमाणे—आलोक भय १, परलोक भय २, आदान भय ३, अकस्मात् भय ४, आजीविका भय ५, मरण भय ६ अने अपयश भय ७. ९.

मएसु बंभगुत्तीसु, भिक्खुधम्मम्मि दसविहे । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१०॥

अर्थ—(मएसु) आठ मदने विषे, (बंभगुत्तीसु) नव ब्रह्मचर्यनी गुप्तिने विषे, तथा (दसविहे) दश प्रकारना (भिक्खुधम्मम्मि) साधुधर्मने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच्चं) निरंतर (जयई) यत्न करे छे, (से) ते (मंडले न अच्छइ) संसारमां रहेतो नथी. अहीं जाति १, कुळ २, बळ ३, रूप ४, तप ५, ऐश्वर्य ६, श्रुत ७ अने लाभ ८ ए

आठ मद वर्जवाना छे, वसति १, कथा २, निषिद्या ३, इंद्रिय ४, भिश्यंतर ५, पूर्वक्रीडित स्मरण ६, प्रणीत आहार ७, अति आहार ८ अने विभूषा ९ ए नव ब्रह्मचर्यनी गुप्ति पाळवानी छे, तथा क्षांति १, मार्दव २, आर्जव ३, मुक्ति (निर्लोभता) ४, तप ५, संयम ६, सत्य ७, शौच ८, आकिंचन्य ९ अने ब्रह्मचर्य १० ए दश प्रकारना साधुधर्मनी आराधना करवानी छे. १०.

उवासगाणं पडिमासु, भिक्खूणं पडिमासु अ। जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥११॥

अर्थ—(उवासगाणं) श्रावकोनी (पडिमासु) अग्यार प्रतिमाने विषे तथा (भिक्खूणं) साधुनी (पडिमासु अ) बार प्रतिमाने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच्चं जयई) निरंतर यत्न करे, (से) ते (मंडले न अच्छइ) संसारमां रहेतो नथी. ११. अहीं श्रावकनी अग्यार प्रतिमा आ प्रमाणे छे.—दर्शन १, व्रत २, सामायिक ३, पौषध ४, प्रतिमा (कायोत्सर्ग) ५, अब्रह्म त्याग ६, सचित्त त्याग ७, आरंभ त्याग ८, प्रेष्य त्याग ९, उद्दिष्ट त्याग १०, अने श्रमणभूत ११. अहीं पहेली प्रतिमा उत्कृष्टथी एक मासनी, बीजी बे मासनी, त्रीजी त्रण मासनी ए रीते चडतां छेल्ली अग्यारमी अग्यार मासनी छे, अने जघन्यथी तो सर्व प्रतिमाओ एकादिक अग्यार दिवसनी जाणवी. केमके प्रतिमा ग्रहण कर्या पछी एक बे आदि दिवसे चारित्र ग्रहण करे अथवा आयुष्यनो क्षय थाय तो ते प्रतिमा जेटला दिवस वहन करी होय तेटला दिवसनी कहेवाय छे. अहीं उत्तरोत्तर प्रतिमा वहन करतां पूर्व पूर्वनी प्रतिमानुं सर्व कार्य साथे करवानुं ज छे, तेथी अग्यारमी

प्रतिमा वहन करतां पूर्वेनी दशे प्रतिमानी क्रिया करवानी छे. तेमां पहेली प्रतिमामां दोष रहित, प्रशमादिक गुण सहित अने कदाग्रह रहित एवुं समकित धारण करवानुं छे. १. बीजीमां अतिचार रहित अणुव्रतादिक बारे व्रतो पाळवानां छे. २. त्रीजीमां बन्ने संध्याए अवश्य सामायिक करवानुं छे. ३. चोथीमां चौदश, आठम विगेरे पर्व तिथिए अतिचार रहित परिपूर्ण पौषध करवानो छे ४. पांचमीमां आठम विगेरे पर्व तिथिए पौषध लइ रात्रे कायोत्सर्ग करवानो छे. बीजा दिवसोमां दिवसे ज भोजन करवुं, रात्रिभोजन करवुं नहीं, दिवसे पण प्रकाशमां ज भोजन करवुं, पाछळ धोतीयानो कच्छ बांधवो नहीं, दिवसे ब्रह्मचर्य राखवुं अने रात्रे पण स्त्रीओनुं तथा तेमना भोगनुं परिमाण करवुं. कायोत्सर्गमां जिनेश्वरना गुणोनुं अने कामादिक दोषनो नाश करवाना उपायोनुं चिंतवन करवुं. ५. छट्ठीमां अब्रह्मचर्य अने शृंगारकथादिकनो सर्वथा त्याग करवो. ६. सातमीमां सचित्ताहारनो त्याग करवो. ७. आठमीमां पोते जाते आरंभ न करवो. ८. नवमीमां बीजा पासे पण आरंभ न कराववो. ९. दशमीमां पोताने माटे भातपाणी कराववां नहीं. आ वखते छुरथी मुंडन कराववुं अथवा शिखाधारी थवुं. १०. तथा छेल्ली अग्यारमी प्रतिमाने विषे पात्रां आदिक साधुनां उपकरण धारण करी लोच अथवा छुरमुंडन करावी साधुनी जेवी सर्व क्रिया करवी अने गोचरी वखते गृहस्थीने घेर जइ " प्रतिमाप्रतिपन्नाय श्रमणोपासकाय भिक्षां दत्त "–" प्रतिमा वहन करता एवा मने श्रावकने भिक्षा आपो. " ए प्रमाणे बोली भिक्षा ग्रहण करवी, अने मुनिनी जेम मासकल्पादिक विधिए ग्रामादिकमां विहार करवो.

भिक्षुनी बार प्रतिमा आ प्रमाणे छे.—

मासाई सत्तंता ७, पढमा ८ बिइ ९ तइय १० सत्तराइदिणा । अहराइ ११ एगराई १२, भिक्खुपडिमाण बारसगं ॥ "

" एक मासथी आरंभीने सात मास पर्यंतनी प्रथमनी सात प्रतिमाओ जाणवी. एटले के पहेली प्रतिमा एक मासनी, बीजी बे मासनी ए रीते वृद्धि करतां सातमी प्रतिमा सात मासनी जाणवी. त्यारपछीनी पहेली एटले आठमी, बीजी एटले नवमी अने त्रीजी एटले दशमी प्रतिमा सात सात रात्रिदिवसनी जाणवी. पछी अग्यारमी एक रात्रिदिवसनी अने बारमी एक रात्रिनी, एम भिक्षुनी बार प्रतिमा जाणवी. "

" पडिवज्जइ एआओ, संघयणी धिइजुओ महासत्तो । पडिमाओ भाविअप्पा, सम्मं गुरुणा अणुण्णाओ ॥ "

" वज्रर्षभनाराच आदि संघयणवाळो, धृतियुक्त एटले मननी स्वस्थतावाळो, उपसर्गादिक सहन करी शके तेवो महा सत्त्ववान्, उत्तम भावनावडे जेणे आत्माने भाव्यो होय एवो अने गुरुए तेनी योग्यता जाणी अनुज्ञा आपी होय तेवो साधु सम्यक् प्रकारे आ प्रतिमाओने अंगीकार करे छे. जो गुरु पोते ज प्रतिमा वहन करता होय तो ते स्थाने रहेला आचार्यनी अथवा गच्छनी अनुज्ञाथी प्रतिमा वहन करवी. "

" गच्छे चिअ निम्माओ, जा पुव्वा दस भवे असंपुण्णा । नवमस्स तइअवत्थु, होइ जहन्नो सुआभिगमो ॥ "

" प्रतिमा वहन करनार साधु गच्छने विषे ज रहे अने निर्मात एटले प्रतिमाने योग्य एवा आहारादिकना विषयवाळा परिकर्मने विषे निष्ठावाळा होय तथा सात प्रतिमामांथी जेटलामी प्रतिमा वहन करातो होय तेटला परिमाणवाळुं ज परिकर्म होय. वर्षाऋतुमां प्रतिमा अंगीकार करातो नथी, तेम ज परिकर्म पण करातुं नथी. आ सातमांथी पहेली बे प्रतिमा एक ज

वर्षमां वहन कराय छे, पछीनी बे एटले त्रीजी अने चोथी प्रतिमा एक एक वर्षे करवामां आवे छे, अने पछीनी त्रण एटले पांचमी, छठ्ठी अने सातमी प्रतिमा अन्य अन्य वर्षे करवामां आवे छे एटले के एक वर्षे प्रतिमा अने बीजे वर्षे परिकर्म ए रीते आ त्रण प्रतिमा छ वर्षे थाय छे. कुल सात प्रतिमा नव वर्षे पूरी थाय छे. आ प्रतिमा अंगीकार करनारने जघन्यथी प्रत्याख्यान नामना नवमा पूर्वनी आचार नामनी त्रीजी वस्तु सुधीनुं सूत्रार्थ ज्ञान होवुं जोइए अने उत्कर्षथी कांइक ओछा दश पूर्वनुं सूत्रार्थ ज्ञान होवुं जोइए. संपूर्ण दश पूर्वना ज्ञानवाळानो उपदेश सफळ ज होय छे तेथी ते धर्मोपदेशवडे भव्य प्राणीओनो उपकार करी शासननी प्रभावना करता होवाथी प्रतिमा वहन करता नथी, अने नवमा पूर्वनी त्रीजी वस्तु सुधीनुं ज्ञान न होय तो ते अतिशय ज्ञानवाळा न होवाथी काळादिक जाणी शकता नथी, तेथी ते पण प्रतिमा वहन करवाने योग्य नथी." तथा—

"वोसट्ठचत्तदेहो, उवसग्गसहो जहेव जिणकप्पी । एसणअभिग्गहीआ, भत्तं च अलेवडं तस्स ॥"

"प्रतिमाधारी मुनि परिकर्मना अभावथी वोसिराव्युं छे अने ममताना अभावथी तज्युं छे शरीर जेणे एवो सतो जिनकल्पीनी जेम उपसर्गने सहन करनार थाय छे. वळी तेमने पूर्वे संसृष्टादिक सात प्रकारनी एषणा कही छे तेनो अभिग्रह होवो जोइए. ते आ प्रमाणे.—भातपाणीनी सात एषणामांथी छेल्ली चार ज ग्रहण करवानी छे तेमां पण पहेली बेनुं (संसृष्ट अने असंसृष्टनुं) ग्रहण नथी. अमुक दिवसे छेल्ली पांच एषणामांथी बेनो अभिग्रह करे. तेमां एक भोजननी अने एक

? संसृष्ट, असंसृष्ट, उध्धृत, अल्पलेप, उदगृहीत, प्रगृहीत अने उज्झितधर्मा.

पाणीनी. तेने भोजन पण अलेपकृत होवुं जोइए. एटले वाल, चणा विगेरे ज ग्रहण करे. वळी उपधि पण पोतानी बे एषणाथी ज प्राप्त थयेली ग्रहण करे. आ परिकर्म कहेवाय छे."

" गच्छा विणिक्खमित्ता, पडिवज्जे मासियं महापडिमं । दत्तेगभोअणस्सा, पाणस्स वि एग जा मासं ॥ "

" गच्छथी बहार नीकळीने एक मासनी महाप्रतिमाने ग्रहण करे. तथा ते आखा मास सुधी एक दत्ती भोजननी अने एक दत्ती पाणीनी ग्रहण करे. जो आचार्यादिक पदवीधर प्रतिमाने अंगीकार करे तो ते अल्प काळने माटे पोतानुं स्थान कोइ बीजा साधुने आपे अने द्रव्यादिकनो शुभ योग प्राप्त थये सते एटले शरद ऋतु आवे त्यारे पोताना गच्छने खमावी बहार नीकळे." प्रतिमा वहन करनारे आ प्रमाणे वर्तवानुं छे.—

" जत्थत्थमेइ सूरो, न तओ ठाणा पयं पि संचलइ । नाएगराइवासी, एगं व दुगं व अन्नाए ॥ "

" चालतां चालतां जे ठेकाणे सूर्य अस्त पामे, ते स्थानथी एक पगलुं पण आगळ चाले नहीं अर्थात् ते ज ठेकाणे सूर्योदय सुधी कायोत्सर्गे उभा रहे. वळी जे ग्रामादिकमां ' आ मुनि प्रतिमाधारी छे ' एम लोकोना जाणवामां आवे, ते ठेकाणे एक ज रात्रिदिवस रहे अने जाणवामां न आव्युं होय तो एक के बे रात्रिदिवस रहे.

" दुट्ठाण हत्थिमाईण, नो भएणं पयं पि ओसरई । एमाइ नियमसेवी, विहरइ जाऽखंडिओ मासो ॥ "

" दुष्ट एवा हस्ती आदिकना भयथी एक पगलुं पण पाछा हठे नहीं, आ विगेरे नियमने सेवता थका अखंडित—आखा मास सुधी विचरे. "

" पच्छा गच्छमुवेई, एवं दुमासी तिमासि जा सत्त । नवरं दत्ती वड्ढइ, जा सत्त उ सत्तमासीए ॥ "

" त्यारपछी गच्छमां आवे. ए ज प्रमाणे बीजी बे मासनी, त्रीजी त्रण मासनी यावत् सातमी सात मासनी प्रतिमानुं वहन करे, तेमां विशेष ए के दरेक प्रतिमानी वृद्धिए एक एक दत्ती वधारे, यावत् सातमी प्रतिमाए भातपाणीनी सात सात दत्ती ग्रहण करे. "

" तत्तो अ अट्ठमीआ, हवइ ह पडिमा उ सत्तराइदिणा । तीइ चउत्थ चउत्थेण, पाणएणं इह विसेसो । "

" त्यारपछी आठमी प्रतिमा सात रात्रिदिवसनी छे, तेमां एकांतर एक एक चोवीहार उपवास करे. अहीं पण पारणे आंबील करे, परंतु अहीं दत्तीनो नियम नथी. " तथा—

उत्ताणग पासल्ली, नेसज्जी आवि ठाण ठाइत्ता । सहइ उवसग्गे घोरे, दिव्वाई तत्थ अविकंपो ॥ "

" ग्रामादिकनी बहार उत्तान एटले चीतो सुवे, अथवा पडखे सुवे अथवा चपट बेसे. पण एवा स्थाने रहीने निष्कंपपणे दिव्यादिक घोर उपसर्गोने सहन करे. "

" दुच्चावि एरिसच्चिअ, बहिआ गामाइआण नवरं तु । उक्कडु लगंडसाई, दंडायअओ व ठाएजा ॥ "

" बीजी एटले नवमी प्रतिमा पण ए ज प्रकारे छे एटले ग्रामादिकनी बहार रहेवुं, तथा तप पारणुं विगेरे आठमी प्रमाणे छे. विशेष ए के उत्कटुक एटले उभडक आसने बेसे, अथवा लगंडशायी एटले लगडानी जेम मस्तक अने पगनी

१ पण शब्द लख्यो छे तेथी पूर्वेनी सात प्रतिमामां पण पारणे आंबेल समजवुं.

पानी ज मात्र पृथ्वीने स्पर्श करे अने पृष्ठभाग स्पर्श करे नहीं ए रीते चत्ता सुवे, अथवा दंडनी जेम लांबा सुइ रहे. अने दिव्यादि उपसर्गोने सहन करे."

"तच्चावि एरिस च्चिअ, नवरं ठाणं तु तस्स गोदोही । वीरासणमहवा वि, ठाइज्जा अंबखुज्जो वा ॥"

"त्रीजी एटले दशमी प्रतिमा पण ते ज प्रमाणे छे, विशेष ए के तेनुं स्थान गोदोही गायने दोवा बेसे तेवी रीते बेसवुं, अथवा वीरासने रहेवुं, अथवा आम्रकुब्ज एटले आंबाना फळनी जेम वक्र आकारे बेसवुं. वीरासन बे प्रकारे थाय छे ते आ प्रमाणे.--सिंहासन पर बेसी पगने भूमिपर राखवा, पछी सिंहासन लइ लइए अने जे आसन रहे ते ज रीते अधर रहेवुं ते. बीजी रीत ए छे जे डाबा पगने जमणा साथळपर अने जमणा पगने डाबा साथळपर राखी डाबा हाथनी हथेळी उपर रहेली जमणा हाथनी हथेळीवडे नाभिने स्पर्श करी रहेवुं ते."

"एमेव अहोराई, छट्ठं भत्तं अपाणगं नवरं । गामनगराण बहिआ, वग्घारिअपाणिए ठाणं ॥"

"ए ज रीते अग्यारमी प्रतिमा एक रात्रिदिवसनी छे. तेमां चोविहार छठ्ठ करवानो छे. बाकी सर्व प्रथमनी जेम जाणवुं. विशेष ए के गाम के नगरनी बहार हाथने लांबा राखी उभा रहेवानुं छे. आ प्रतिमा त्रण दिवसे थाय छे. कारण के एक रात्रिदिवसनी प्रतिमा कर्या पछी छट्ठ करवानो छे."

"एमेव एगराई, अट्ठमभत्तेण ठाण बाहिरओ । ईसिंपब्भारगए, अणिमिसनयणेगदिट्ठीए ॥"

"बारमी प्रतिमा पण ए ज रीते एटले अग्यारमीनी जेम एक रात्रिनी ज छे. तेमां ते रात्रिने छेडे चोविहार अट्ठम

तप करवानो छे. प्रमादिकनी बहार कायोत्सर्गे रही काइक शरीरने नीचुं नमावी रहे अने अनिमेष नेत्रे एक पुद्गलपर निश्चळ दृष्टि राखीने रहे. "

" साहट्टु दो वि पाए, वग्घारियपाणि ठायए ठाणं । वग्घारियलंबियभुओ, सेस दसासु जहा भणियं ॥ "

" आ बारमी प्रतिमामां बन्ने पगने संहरीने एटले बन्ने पग वच्चे चार अंगुलनुं आंतरुं राखी लांबा हाथ राखीने कायोत्सर्गे रहेवुं. बाकीनुं दशाश्रुतस्कंधथी जाणवुं. आ प्रतिमामां अहोरात्रि गया पछी अट्ठम करवानो छे तेथी चार दिवसे पूर्ण थाय छे. आ बार प्रतिमाने पार पामेला साधु अवधि, मनःपर्याय के केवळज्ञाननी लब्धिने अवश्य पामे छे. "

किरिआसु भूअग्गामेसु, परमाहम्मिएसु य । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ १२ ॥

अर्थ—(किरियासु) क्रियाने विषे एटले कर्मबंधना कारणभूत अर्थानर्थादि तेर क्रियाओने विषे, (भूअग्गामेसु) भूतग्रामने विषे एटले चौद प्रकारना जीवसमूहने विषे तथा (परमाहम्मिएसु य) पंदर परमाधार्मिकने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच्चं) निरंतर (जयई) यतना करे, (से) ते (मंडले) संसारमां (न अच्छइ) रहेतो नथी. १२.

अहीं तेर क्रियाओ आ प्रमाणे छे.–अर्थक्रिया–पोताना अथवा परना प्रयोजने क्रिया करतां पृथिव्यादिक प्राणीओनो वध थाय ते. १. अनर्थक्रिया–प्रयोजन विना वधनी क्रिया कराय ते. २. हिंसाक्रिया–" आ मने अथवा मारा स्वजनने मारतो हतो, अथवा मारे छे अथवा मारशे, तेथी तेने हुं मारुं " एम विचारी जे दंडनो–वधनो आरंभ करवो ते. ३. अक-

स्मात् क्रिया—बीजाने बाणादिकवडे मारतां वचमां बीजो कोइ मराइ जाय ते. ४. दृष्टिविपर्यासक्रिया—अशत्रुने शत्रु धारी तेनी हिंसा करवी ते. ५. मृषाक्रिया—पोताने माटे अथवा पोताना स्वजनादिकने माटे असत्य बोलवुं ते. ६. अदत्तग्रहणक्रिया—स्वपरने माटे जे अदत्तनुं ग्रहण करवुं ते. ७. आध्यात्मिकीक्रिया—बाह्य कारण विना मन दुःखाय ते एटले पोतानुं कोइ वांकुं बोलतुं न होय छतां मनमां शंका राखीने दुभावुं ते. ८. मानक्रिया—जाति आदिकना मदे करीने अन्यनी हीलना करवी ते. ९. मित्रद्वेषवृत्तिक्रिया—मित्रो अथवा मातापितादिक स्वजनोने थोडा अपराधमां पण वधबंधादिक तीव्र दंड करवो ते, आ अमित्रक्रिया पण कहेवाय छे. १०. मायाक्रिया—माया कपटथी अन्यने छेतरवो अथवा वधबंधादिक करवा ते. ११. लोभक्रिया—लोभथी अन्यने वधादिक करवा ते. १२. ऐर्यापथिकीक्रिया—निरंतर अप्रमत्त साधुने मन, वचन अने कायाना योगमात्रथी जे क्रिया लागे ते. १३.

चौद प्रकारनो जीवराशि आ प्रमाणे छे.—सूक्ष्म एकेंद्रिय १, बादर एकेंद्रिय २, द्वींद्रिय ३, त्रींद्रिय ४, चतुरिंद्रिय ५, संज्ञिपंचेंद्रिय ६ अने असंज्ञिपंचेंद्रिय ७ ए सात पर्याप्ता अने ए ज सात अपर्याप्ता मळी चौद थाय छे.

पंदर परमाधार्मिक आ प्रमाणे छे.—अंब १, अंबरीष २, श्याम ३, शबल ४, रुद्र ५, उपरुद्र ६, काल ७, महाकाल ८, असिपत्र ९, धनु १०, कुंत ११, वालुक १२, वेतरणी १३, खरस्वर (घोष) १४, अने महाघोष १५. अहीं तेर क्रियाना त्यागमां, चौद भूतराशिना रक्षणमां अने पंदर परमाधार्मिकना ज्ञानमां यत्न करवानो छे. १२.

गाहासोलसएहिं, तहा अस्संजमम्मि य । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ १३ ॥

अर्थ—(गाहासोलसएहिं) जेनुं सोळमुं अध्ययन गाथा नामनुं छे एवा सूत्रकृतांगना प्रथम श्रुतस्कंधना सोळ अध्ययनोने विषे (तहा) तथा (अस्संजमम्मि य) सतर प्रकारना असंयमने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच्चं) निरंतर (जयई) यत्न करे एटले गाथाषोडशकमां कह्या प्रमाणे करे अने सत्तर असंयमनो त्याग करे, (से) ते साधु (मंडले) संसारमां (न अच्छइ) रहे नहीं—भ्रमण करे नहीं .१३.

गाथाषोडशक आ प्रमाणे—समय १, वैतालिक २, उपसर्गपरिज्ञा ३, स्त्रीपरिज्ञा ४, नरकविभक्ति ५, वीरस्तव ६, कुशीलपरिभाषा ७, वीर्यश्रुत ८, धर्म ९, समाधि १०, मार्ग ११, समवसरण १२, आह्तह १३, ग्रंथ १४, संयम १५, अने गाथा १६.

सत्तर प्रकारनो असंयम आ प्रमाणे.—पृथ्वीकाय असंयम १, अप्काय असंयम २, अग्निकाय असंयम ३, वायुकाय असंयम ४, वनस्पतिकाय असंयम ५, द्वींद्रिय असंयम ६, त्रींद्रिय असंयम ७, चतुरिंद्रिय असंयम ८, पंचेंद्रिय असंयम ९, (आ पृथ्वीकायादि नवनो संघट्टादिक करवाथी हिंसारूप असंयम थाय छे.) अजीव असंयम—प्राणीना उपमर्दनः हेतुरूप तृणपंचकादिकनुं उत्सर्ग मार्गे ग्रहण करवाथी असंयम थाय छे अने अपवाद मार्गे ग्रहण कर्या छतां पण यतना नहीं करवाथी असंयम थाय छे. १०. प्रेक्षा असंयम—चक्षुवडे जोया विना क्रिया करवी ते. ११. उपेक्षा असंयम—चारित्रक्रियामां सीदाता साधुने प्रेरणा न करवी अथवा गृहस्थीने तेना व्यावहारिक कार्यमां प्रेरणा करवी ते. १२. प्रमार्जना असंयम—सागारिकनी (श्रावकनी) समक्ष पग न धोवा, तेनी परोक्षमां धोवा, ए रीते न वर्तवुं ते. १३. परिष्ठापना असंयम—दोषवाळा आहारने तथा विष्ठा—मूत्र विगेरेने विधिप्रमाणे न परठववा ते. १४. मन असंयम—अकुशळ मननो निरोध न करवो

अथवा कुशळ मनने न प्रवर्तावबुं ते. १५. वचन असंयम-शुभ वचन न बोलवुं अथवा अशुभ वचननो निरोध न करवो ते. १६. तथा काय असंयम-कार्य वखते उपयोगथी गमनादिक करवुं जोइए अने कार्य न होय त्यारे अंगोपांगने संकोची स्थिर रहेवुं जोइए, ते प्रमाणे न वर्तवुं ते. १७. आ असंयमनो त्याग ए ज सत्तर प्रकारनो संयम छे. १३.

बंभम्मि नायज्झयणेसु, ठाणेसु असमाहिए । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥१४॥

अर्थ--(बंभम्मि) अढार प्रकारना ब्रह्मचर्यने विषे, ओगणीश ज्ञाताध्ययनने विषे तथा (असमाहिए) असमाधिना (ठाणेसु) वीश स्थानोने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच्चं) निरंतर (जयई) यत्न करे, (से) ते (मंडले) संसारमां (न अच्छइ) न रहे-भ्रमण न करे.

अढार प्रकारनुं ब्रह्मचर्य आ प्रमाणे. दिव्य अने औदारिक ए बे प्रकारना कामने-मैथुनने मन, वचन अने कायाए करी करवुं, कराववुं अने अनुमोदवुं नहीं. एटले बे प्रकारने त्रण योगे गुणतां छ थया, तेने त्रण करणे गुणतां अढार थाय छे. ते अढार प्रकारनुं ब्रह्मचर्य पाळवानुं छे.

ओगणीश ज्ञाताध्ययन आ प्रमाणे.—उत्क्षिप्त १, संघाट २, अंड ३, कूर्म ४, सेलक ५, तुंब ६, रोहिणी ७, मल्ली-नाथ ८, माकंदी ९, चंद्रमा १०, दावद्रव ११, उदक १२, मंडूक १३, तेतलीपुत्र १४, नंदीफळ १५, अपरकंका १६, आकीर्णक १७, सुंसुमार १८ अने पुंडरीक १९. आ अध्ययनो जाणवाना छे.

वीश असमाधिना स्थानो आ प्रमाणे.—द्रुतद्रुतचारित्व—उतावळुं उतावळुं चालवुं ते. शीघ्र चालवाथी पोते पडी जाय तो आत्मानी असमाधि थाय, बीजा जीवनो वध थाय तो अन्यने असमाधि थाय अने परलोकमां प्राणीवधना कर्मने लीधे असमाधि थाय. आ रीते सर्व स्थानोमां जाणवुं. १. प्रमार्जन कर्या विनाना स्थानमां बेसवुं, उभा रहेवुं, सुवुं विगेरे करवुं ते. २. बराबर प्रमार्जन कर्या विना बेसवा विगेरेनी क्रिया करवी ते. आ बे स्थानोमां सर्पादिकवडे पोताने असमाधि थाय छे. ३. अतिरिक्त शय्यासन—मोटो उपाश्रय होवाथी बीजा पण साधुओ आवे तेनी साथे कलहादिक थवाथी पोताने अने परने असमाधि थाय ते, तथा पीठ फलकादिक वधारे राखवा ते. ४. रत्नाधिक पराभव—पोताथी मोटा गुणवंतनो पराभव करवो एटले तेनी सामुं बोलवुं ते. ५. स्थविरपराभव—स्थविर साधुनो पराभव करवो ते. ६. भूतोपघात—प्रमादथी एकेंद्रियादिकनो वध करवो ते. ७. संज्वलन—क्षणे क्षणे रोष करवो ते. ८. क्रोधन—चिरकाळ सुधी क्रोध करवो ते. ९. पृष्ठमांसिक—परोक्षे परनी निंदा करवी ते अथवा अपवाद आपवो ते. १०. अवधारिणी भाषा—वारंवार 'आ एम ज छे' एवी निश्चयवाळी वाणी बोलवी ते. ११. नवाधिकरण करण—अन्य अन्य नवा नवा कलहनी उदीरणा करवी ते. १२. उदीरण—शांत थयेला कलहने उदेरी ताजो करवो ते. १३. अकाळस्वाध्याय—अकाळे स्वाध्याय करवो ते. तेम करवाथी क्षुद्र देवता असमाधि उत्पन्न करे छे. १४. सचित्त पृथ्वीनी रजथी खरडायेला हाथवडे भिक्षा ग्रहण करवी ते अथवा रज सहित पगवडे अस्थंडिल भूमिपर जतां पग न प्रमार्जवा ते. १५. विकाळे पण मोटा शब्दथी बोलवुं ते. १६. जेनी तेनी साथे कलह करवो ते. १७. झंझ एटले गच्छनो भेद करवो ते. १८. सूर्योदयथी आरंभी अस्त सुधी छूटे मुखे भोजन करवुं ते.

भाषा १३, वस्त्रैषणा १४, पात्रैषणा १५, अवग्रहप्रतिमा १६, सप्तैकसप्ततिका २३, भावना २४, विमुक्ति २५, उपघात २६, अनुद्घात २७ अने आरुहणा २८. आनी यथार्थ रूपपणामां यत्न करवो. १८.

पावसुयपसंगेसु, मोहट्ठाणेसु चेव य । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ १९ ॥

अर्थ—(पावसुयपसंगेसु) पापश्रुतना ओगणत्रीश प्रसंगोने विषे (चेव य) तथा (मोहट्ठाणेसु) मोहना त्रीश स्थानकोने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच्चं) निरंतर (जयई) यत्न करे, (से) ते (मंडले) संसारने विषे (न अच्छइ) न रहे—भ्रमण न करे.

पापश्रुतना ओगणत्रीश प्रसंग आ प्रमाणे.—प्रथम आठ प्रकारनां निमित्त शास्त्र छे ते आ प्रमाणे.—दिव्य एटले व्यंतरना अट्टहासादिकनुं जेमां ज्ञान थाय छे ते १, उत्पात–रुधिरनी वृष्टि विगेरे उत्पातनुं ज्ञान जेमां होय ते २, अंतरिक्ष–ग्रहनो भेद तथा उल्कापात विगेरेनुं जेमां ज्ञान होय ते ३, भौम–भूमिकंपादिकनुं ज्ञान जेमां होय ते ४, आंग–अंगना फरकवा विगेरेनुं ज्ञान जेमां होय ते ५, स्वर–षड्ज विगेरे स्वरो तथा पक्षीना स्वर विगेरेनुं ज्ञान जेमां होय ते ६, लक्षण–पुरुष, स्त्री विगेरेना लक्षणोनुं ज्ञान जेमां होय ते ७ अने व्यंजन–तल, मसा विगेरेनुं ज्ञान जेमां होय ते ८. आ आठ प्रकारनां शास्त्रो उपर सूत्र, वृत्ति अने वार्तिक ए त्रण त्रण होवाथी २४ भेद थाय छे, तथा गंधर्व २५, नाट्य २६, वास्तुविद्या २७, धनुर्वेद २८ अने आयुर्वेद २९. आ ओगणत्रीश पापशास्त्रो त्याग करवामां मुनिए यत्न करवानो छे. (तेमणे तो मात्र आत्महितकारक शास्त्रो ज वांचवाना छे.)

मोहनीयनां त्रीश स्थानो आ प्रमाणे छे.—नदी आदिकना जळमां प्रवेश करी रौद्र अध्यवसायथी त्रस प्राणीनी हिंसा करे १, हाथवडे मुखने बंध करी हृदयमां दुःख सहित रोता बकरा विगेरेने मारे २, वाध्री विगेरेवडे मस्तकने बांधीने मारे ३, मुद्गर विगेरेवडे मस्तकमां प्रहार करीने हणे ४, घणा लोकोना नायक अथवा रक्षण करनारने हणे ५, सर्वने साधारण एवा ग्लानादिकनुं छती शक्तिए औषधादिक न करे ६, भिक्षादिक माटे आवेला साधुने अधर्मी होवाथी हणे ७, कुयुक्तिवडे मोह पमाडी पोताने अथवा परने चारित्रधर्मथी भ्रष्ट करे ८, जिनेश्वरना अवर्णवाद बोले ९, आचार्यादिकनी जात्यादिकवडे निंदा करे १०, तेमनी वैयावच्चादिक न करे ११, वारंवार अधिकरणने—कलहने उत्पन्न करी तीर्थनो भेद करे १२, दोषने जाणतां छतां वशीकरणादिक करे १३, कामभोगनो त्याग करी छतां पण आ भव अने परभव संबंधी विषयोनी प्रार्थना करे १४, पोते बहुश्रुत नहीं छतां 'हुं बहुश्रुत छुं' एम कहे १५, अतपस्वी छतां 'हुं तपस्वी छुं' एम कहे १६, घर विगेरेमां कोइ माणसने राखी तेमां अग्नि सळगावे १७, पोते अकार्य करी बीजाए कर्यानुं कहे १८, अशुभ मनोयोगवडे घणी माया करी सर्व लोकने छेतरे १९, सत्य बोलनारने 'तुं असत्य बोले छे' एम कही खोटो पाडे २०, निरंतर कलह कर्या करे २१, लोकोने मार्गमां लइ जइ तेनुं वित्त हरण करे २२, अन्यने विश्वास उपजावी तेनी स्त्री प्रत्ये गमन करे २३, पोते कुमार नहीं छतां 'हुं कुमार छुं' एम कहे २४, पोते ब्रह्मचारी नहीं छतां 'हुं ब्रह्मचारी छुं' एम कहे २५, जेनाथी ऐश्वर्यने पाम्यो होय तेना ज धनादिकनुं हरण करे २६, जेना प्रभावथी पोतानो उदय थयो होय तेनाज भोगादिकमां अंतराय करे २७, सेनापति, उपाध्याय, राजा, श्रेष्ठी विगेरेने हणे २८, देवादिकने जोया न होय छतां जोयानुं कहे २९,

१९. तथा एषणा समिति न पाळवी ते. २०. आ स्थानो तजवानां छे. १४.

इक्कवीसाए सबलेसु, बावीसाए परीसहे । जे भिक्खू जयई निचं, से न अच्छइ मंडले ॥ १५ ॥

अर्थ—(इक्कवीसाए) एकवीश (सबलेसु) शबलक्रियाने विषे तथा (बावीसाए) बावीश (परीसहे) परिषहोने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निचं) निरंतर (जयई) यत्न करे, (से) ते (मंडले) संसारमां (न अच्छइ) रहे नहीं-भ्रमण करे नहीं.

चारित्रने मलिन करनारी क्रियाओ शबल कहेवाय छे. तेना एकवीश भेद आ प्रमाणे छे.-हस्तकर्म करवुं ते. १. अतिक्रम अने अतिचारवडे मैथुन सेववुं ते. २. रात्रे भोजन करवुं एटले रात्रे ग्रहण करेलुं दिवसे खावुं अथवा दिवसे ग्रहण करेलुं रात्रे खावुं ते. ३. आधाकर्मी भिक्षा ग्रहण करवी ते अथवा हमेशां बे त्रण वार खावुं ते. ४. राजपिंड ग्रहण करवो ते. ५. क्रीत-वेचातो लीधेलो पिंड लेवो ते. ६. प्रामित्य-उधारे लीधेलो आहार लेवो ते. ७. अभ्याहृत-सामो आणेलो आहार लेवो ते. ८. आच्छेद्य-कोइनी पासेथी झुंटवीने लावेलो आहार ग्रहण करवो ते. ९. पच्चख्खाण करेली वस्तु खावी ते. १०. छ मासनी अंदर एक गच्छथी बीजा गच्छमां जवुं ते. ११. एक मासमां त्रण दकलेप करवा ते. तेमां नदी विगेरे उतरतां अर्धी जंघा प्रमाण जळ होय तो संघट्ट कहेवाय छे, नाभि प्रमाण होय तो लेप कहेवाय छे अने नाभिथी उपर जळ होय तो लेपोपरि कहेवाय छे. तेथी नाभि प्रमाण जळाशयो एक मासमां त्रण वार उतरवा ते, अथवा एक मासमां त्रण वार पोतानो अपराध ढांकवा माटे माया कपट करवुं ते. १२. जाणी जोइने पृथ्व्यादिक जीव हणवा ते. १३. जाणीने

मृषावाद बोलवुं ते. १४. जाणीने प्रत्याख्यान लेवुं ते. १५. अंतरधान रहित सचित्त पृथ्वी उपर उभा रहेवुं, शयन करवुं के बेसवुं ते. १६. स्निग्ध अथवा सचित्त रजवडे व्याप्त एवी पृथ्वीपर, सचित्त शिला विगेरे उपर अथवा घुणादिक जीववाळा काष्ठ विगेरे उपर स्थानादिक करवुं ते. १७. इंडा, इंडाळ, त्रस जीव, बीज, लीलवणी के लीलफुल विगेरेवाळा आसनादिक उपर स्थानादिक करवा ते. १८. जाणीने कंद, मूळ, पुष्प, फळादिक खावां ते. १९. एक वर्षमां दश वार दकलेप करवा अथवा दश वार माया कपट करवुं ते. २०. जाणी जोइने सचित्त जळादिकथी व्याप्त एवा हस्त के पात्रादिकथी आहार ग्रहण करवो ते. २१. आ सर्वे शबळ क्रिया वर्जवानी छे. तथा बावीश परिषहोने सहन करवाना छे. ते परिषहो प्रथम आवी गया छे. १५.

तेवीसइ सूअगडे, रूवाहिएसु सुरेसु अ । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ १६ ॥

अर्थ—(तेवीसइ) त्रेवीश एटले त्रेवीश अध्ययनवाळा (सूअगडे) सुयगडांगने विषे तथा (रूवाहिएसु) एक अधिक एटले चोवीश (सुरेसु अ) देवोने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच्चं) निरंतर (जयई) यत्न करे. (से) ते (मंडले) संसारमां (न अच्छइ) न रहे—भ्रमण न करे.

सूत्रकृतांगना त्रेवीश अध्ययन आ प्रमाणे छे.—पुंडरीक १, क्रियास्थान २. आहारपरिज्ञा ३, प्रत्याख्यानक्रिया ४, अनगारमार्ग ५, आर्द्रकुमार ६, नालंदक ७ तथा बाकीना समयादि सोळ प्रथम कह्यां छे ते मळी कुल त्रेवीश अध्ययन जाणवानां छे.

चोवीश देवो आ प्रमाणे.—भवनपति दश, व्यंतर आठ, ज्योतिषी पांच अने वैमानिक एक मळी कुल चोवीश जातिना देवोने अथवा चोवीश तीर्थंकरोने विषे यथार्थ प्ररूपणा करवावडे यतना करवानी छे. १६.

पणवीस भावणाहिं, उद्देसेसु दसाइणं । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ १७ ॥

अर्थ—(पणवीस) पचीश (भावणाहिं) भावनाने विषे तथा (दसाइणं) दशादिना एटले दशाकल्पव्यवहारना (उद्देसेसु) छव्वीस उद्देशाने विषे (जे भिक्खु) जे साधु (निच्चं) निरंतर (जयई) यत्न करे, (से) ते (मंडले) संसारमां (न अच्छइ) न रहे-भ्रमण न करे.

पांच महाव्रतनी पचीश भावना आ प्रमाणे छे.—पहेला व्रतनी-इर्यासमिति १, मनगुप्ति २, वचनगुप्ति ३, एषणासमिति ४ अने आदान भांड निक्षेपणासमिति ५. बीजा व्रतनी-विचारीने बोलवुं १, क्रोधनो त्याग २, लोभनो त्याग ३, भयनो त्याग ४ अने हास्यनो त्याग ५. त्रीजा व्रतनी-अवग्रहनी याचना पोते करे १, बीजाने तृणादिकनी आज्ञा आपवी होय तो उपाश्रय देनारना कहेवाथी आपे २, आहार पाणीनो, शयननो अने बेसवा विगेरेनो अवग्रह स्पष्ट रीते अनुज्ञा लइने वापरे ३, साधर्मिक साधुओने माटे पण अवग्रहनी याचना करी पोते स्थानादिक करी आपे. ४. तथा गुरुनी अनुज्ञाथी आहार पाणी वापरे ५. चोथा व्रतनी-स्त्री, पशु, पंडकवाळी वसितमां न रहेवुं १, स्त्रीकथानो त्याग २, स्त्रीओनां अवयवो जोवानो त्याग ३, पूर्वे मैथुन के क्रीडा करी होय तेना स्मरणनो त्याग ४ अने प्रणीत भोजननो त्याग ५. पांचमा

व्रतनी-शब्द, रस, रूप, गंध अने स्पर्श ए पांचे विषयो मनोज्ञ जोइ राग न करवो अने अमनोज्ञ जोइ द्वेष न करवो ए पांच विषयोनी पांच भावना छे. कुल पांच महाव्रतनी पचीश भावना भाववामां यत्न करवानो छे.

दशाकल्पव्यवहारना छवीश उद्देशा आ प्रमाणे—दशाश्रुतस्कंधना उद्देशनकाळ दश छे, बृहत्कल्पना छ छे अने व्यवहारना दश उद्देशन काळ छे. कुल मळीने २६ उद्देशानी प्ररूपणा करवामां यत्न करवानो छे. १७.

अणगारगुणेहिं च, पकप्पम्मि तहेव य। जो भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ १८ ॥

अर्थ- (अणगारगुणेहिं च) साधुना सत्तावीश गुणोने विषे (तहेव य) तथा (पकप्पम्मि) प्रकल्पने विषे एटले अठ्ठावीश अध्ययनवाळा आचारांगने विषे (जो भिक्खू) जे साधु (निच्चं) निरंतर (जयई) यत्न करे, (से) ते (मंडले) संसारमां (न अच्छइ) न रहे--भ्रमण न करे.

साधुना सत्तावीश गुणो आ प्रमाणे.---रात्रिभोजन सहित छ महाव्रतो ६, पांच इंद्रियोनो निरोध ११, भावसत्य १२, करणसत्य १३, क्षमा १४, विरागता १५, मन, वचन, कायानो निरोध १८, छकायनी रक्षा २४, संयमयोगनी रक्षा, २५, परिषह सहन करवा २६ अने मरण पर्यंतना उपसर्गो सहन करवा २७.

आचारांगना अठ्ठावीश अध्ययन आ प्रमाणे.—शस्त्रपरिज्ञा १, लोकविजय २, शीतोष्णीय ३, सम्यक्त्व ४, आवंति-लोकसार ५, धूताध्ययन ६, विमोक्ष ७, उपधान श्रुत ८, महापरिज्ञा ९, पिंडैषणा १०, शय्या ११, ईर्या १२,

अने कामने विषे गर्दभनी जेवा आसक्त एवा देषोथी शुं ? इत्यादिक कही तेमनो अवर्णवाद बोले. ३०. आ स्थानो त्याग करवामां यत्न करवो. १९. आ ३० क्रियाओ पापना स्थानरूप समजवी.

सिद्धाइगुणजोएसु, तित्तीसासायणासु अ । जे भिक्खू जयई निच्चं, से न अच्छइ मंडले ॥ २० ॥

अर्थ—(सिद्धाइगुण) सिद्धना अतिशयवाळा गुणो एकत्रीश छे तेने विषे, तथा (जोएसु) बत्रीश योगसंग्रहने विषे, तथा (तित्तीसासायणासु अ) तेत्रीश आशातनाने विषे (जे भिक्खू) जे साधु (निच्चं) निरंतर (जयई) यत्न करे, (से) ते (मंडले) संसारमां (न अच्छइ) न रहे.

सिद्धना अतिशायी गुणो एकत्रीश आ प्रमाणे छे.—पांच संस्थान, पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस, आठ स्पर्श अने त्रण वेद, आ २८ नो अभाव तद्रूप २८ गुण, तथा काय रहित २९, संग रहित ३० अने जन्म रहित ३१. आ एकत्रीश अथवा ज्ञानावरणनी प्रकृति ५, दर्शनावरणनी ९, वेदनीयनी २, मोहनीयनी दर्शनमोहनी अने चारित्रमोहनी ए २, आयु-कर्मनी ४, नामकर्मनी शुभ ने अशुभ २, गोत्रकर्मनी २ अने अंतरायनी ५, आ आठे कर्मनी ३१ प्रकृतिना क्षयरूप एक-त्रीश गुण जाणवा. तेने यथार्थ जाणी तेनी श्रद्धा करवा अने ते प्रकृतिओने दूर करवा यत्न करवानो छे.

योग एटले मन, वचन अने कायाना शुभ व्यापार, तेना बत्रीश प्रकारनो संग्रह आ प्रमाणे छे.—शिष्ये प्रशस्त योगना संग्रहने माटे आचार्यने आलोचना संभळाववी १, आचार्ये पण प्रशस्त योगना संग्रहने माटे आलोचना आपीने ते

बीजा पासे प्रकाश करवी नहीं २, सर्व साधुआए आपत्तिमां धर्मनी विशेष दृढता करवी ३, आलोक अथवा परलोकना फळनी अपेक्षा विना तपस्या करवी ४, ग्रहण अने आसेवना ए बे प्रकारनी शिक्षानुं सेवन करवुं ५, शरीरनी शुश्रूषा करवी नहीं ६, तप करी बीजाने जणाववो नहीं ७, लोभनो त्याग करवो ८, परिषहादिकनो पराजय करवो ९, आर्जव राखवुं १०, संयमने विषे निर्मळता–निरतिचारता राखवी ११, समकितने शुद्ध करवुं १२, चित्तनी समाधि राखवी १३, आचार पाळवामां माया न करवी १४. विनयमां उपयोग राखी माननो त्याग करवो १५, धृतिमां बुद्धि राखवी १६, संवेगमां तत्पर रहेवुं १७, पोताना दोष ढांकवा माटे जे माया करवी ते प्रणिधि कहेवाय छे, तेनो त्याग करवा १८, सारी रीते सर्व विधि करवी १९, संवर करवो २०. पोताना दोषनो त्याग करवो २१, सर्व कामथी विरक्त थवानी भावना राखवी २२, मूळगुणनुं प्रत्याख्यान करवुं २३, उत्तरगुणनुं प्रत्याख्यान करवुं २४, द्रव्यथी अने भावथी कायोत्सर्ग करवो २५, प्रमादनो त्याग करवो २६, क्षणे क्षणे सामाचारीनी क्रिया करवी २७. ध्यानसंवृतपणुं एटले आर्त रौद्रनो त्याग करी धर्म अने शुक्ल ध्यानमां आदर करवो २८, मारणांतिक परिषह सहन करवा २९, सर्व संगनो त्याग करवो ३०, दोष लागे तेनुं प्रायश्चित्त करवुं ३१, तथा अंत समये आराधना करवी ३२, आ बत्रीश योगनुं पालन करवुं.

तेत्रीश आशातना आ प्रमाणे छे.—शिष्ये गुरुनी आगळ-सन्मुख १, पडखे २, अथवा पाछळ ३ अत्यंत नजीक चालवुं ते आशातना छे, ए ज रीते उभा रहेवुं ते आशातना छे ६, ए ज रीते बेसवुं ते पण आशातना छे ९, बहिर्भूमिए गयो सतो गुरुनी पहेलां बन्नेने साधारण एवा जळवडे शौचक्रिया करे १०, गुरुनी पहेलां गमनागमन आलोवे ११, रात्रि

समये गुरु बोलावे त्यारे जागता छतां उत्तर न आपे १२, बोलाववा लायक श्रावकने गुरुए बोलाव्या पहेलां पोते बोलावे १३, आहारादिक लावीने प्रथम बीजा साधुओ पासे आलोची पछी गुरुनी पासे आलोचे १४, ए ज रीते प्रथम बीजाने देखाडी पछी गुरुने देखाडे १५, गुरुनी पहेलां बीजाओने आहार माटे निमंत्रण करे १६, गुरुने पूछ्या विना बीजा साधुओने तेमनी इच्छा प्रमाणे घणो आहार आपी दे १७, पोते सारो सारो आहार ग्रहण करे १८, दिवसे पण गुरु बोलावे ते सांभळ्या छतां उत्तर न आपे १९, गुरु प्रत्ये कठोर वचन बोले २०, गुरु बोलावे त्यारे पोते जे ठेकाणे रह्यो होय त्यां बेठो बेठो ज उत्तर आपे २१, गुरु बोलावे त्यारे 'शुं कहो छो ?' एम बहुमान रहित बोले २२, गुरुने तुंकारो करे २३, गुरु कहे के—"आ ग्लान साधुनी वैयावच्च केम करतो नथी ?" त्यारे पोते सामो कहे के "तमे केम करता नथी ?" इत्यादि उत्तर आपे २४, गुरु कथा कहेता होय ते वखते पोतानुं मन सारुं न राखे-तेनी अनुमोदना न करे २५, गुरु कोइने सूत्रादिकनो अर्थ कहेता होय ते वखते "तमने सांभरतुं नथी, आनो अर्थ तो आवो छे" इत्यादिक वच्चे बोले २६, गुरु कथा करता होय त्यारे वचमां पोते आगळ आगळ कहेवा लागे २७, गुरु देशना देता होय ते वखते "भिक्षादिकनो अवसर थयो छे" एम कही गुरुनी पर्षदानो भंग करे २८, पर्षदा बेठी होय ते ज वखते गुरुए कहेलो ज अर्थ पोतानी कुशळता देखाडवा माटे पोते विस्तारथी कहे २९, गुरुना संथारा विगेरेने पोताना पगनो संघट्टो करे ३०, गुरुना संथारापर बेसे अथवा सुवे ३१, गुरुथी उंचा आसने बेसे ३२, तथा गुरुनी समान आसन पर बेसे सुवे विगेरे ३३. आ सर्व आशातना तजवानी छे २०.

हवे अध्ययनने समाप्त करे छे—

इइ एएसु ठाणेसु, जो भिक्खू जयई सया। से खिप्पं सव्वसंसारा, विप्पमुच्चइ पंडिए त्ति बेमि ॥२१॥

अर्थ—(इइ) आ प्रमाणे (एएसु ठाणेसु) आ कहेला स्थानोने विषे (जो भिक्खू) जे साधु (सया जयई) नित्य यत्न करे, (से) ते (पंडिए) पंडित (खिप्पं) शीघ्र (सव्वसंसारा) सर्व संसारथी (विप्पमुच्चइ) मुक्त थाय छे (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं. ए प्रमाणे सुधर्मास्वामी जंबू स्वामीने कहे छे.

इत्येकत्रिंशमध्ययनम्. ३१.

अथ प्रमादस्थान नामनुं बत्रीशमुं अध्ययन ३२.

उपरना अध्ययनमां चारित्र कह्युं ते चारित्र प्रमादना स्थान त्याग करवाथी ज सेवी शकाय छे तेथी साधुए प्रमादनो त्याग करवो जोइए. प्रमादनो त्याग प्रथम तेनुं ज्ञान थया पछी थइ शके छे तेथी तेने माटे आ अध्ययननो प्रारंभ करे छे.—

अच्चंतकालस्स समूलयस्स, सव्वस्स दुक्खस्स उ जो पमोक्खो।

तं भासओ मे पडिपुण्णचित्ता, सुणेह एगंतहिअं हिअत्थं ॥ १ ॥

अर्थ—(अणंतकालस्स) जेनो काळ अत्यंत एटले आदि रहित छे. तथा (समूलयस्स) जे मूळ—कषाय अविरति विगेरे सहित छे एवा (सव्वस्स) सर्व (दुक्खस्स उ) दुःखनो (जो) जे (पमोक्खो) प्रकर्षे करीने मोक्ष–विनाशरूप छे (तं) ते (एगंतहिअं) एकांत हितकारक वचन (भासओ) कहेता एवा (मे) मारी पासे तमे (हिअत्थं) हितने माटे (पडिपुण्णचित्ता) प्रतिपूर्ण–सावधान चित्तवाळा थया सता (सुणेह) सांभळो. १. ते ज कहे छे.—

नाणस्स सव्वस्स पगासणाए, अण्णाणमोहस्स विवज्जणाए ।
रागस्स दोसस्स य संखएणं, एगंतसोक्खं समुवेइ मोक्खं ॥ २ ॥

अर्थ—(सव्वस्स) सर्व एवा (नाणस्स) मत्यादिक ज्ञानना (पगासणाए) प्रकाशनवडे एटले तेने निर्मळ करवा-वडे तथा (अण्णाणमोहस्स) मत्यज्ञानादिक अज्ञानमोह एटले दर्शनमोहनीय कर्म तेना (विवज्जणाए) वर्जवावडे तथा (रागस्स) राग (दोसस्स य) अने द्वेषना (संखएणं) क्षयवडे (एगंतसोक्खं) एकांत सुखवाळा (मोक्खं) मोक्षने (समु-वेइ) पामे छे. अर्थात् अनुक्रमे ज्ञान, दर्शन अने चारित्रवडे मोक्ष प्राप्त थाय छे. ए त्रणे एकत्र थयेला मोक्षनो उपाय छे अने मोक्ष विना दुःखनो सर्वथा क्षय नथी. २.

तस्सेस मग्गो गुरुविद्धसेवा, विवज्जणा बालजणस्स दूरा ।
सज्झायएगंतनिसेवणा य, सुत्तत्थसंचिंतणया धिई य ॥ ३ ॥

अर्थ—(तस्स) तेना एटले मोक्षना उपायभूत ज्ञानादिकनो (एस) आ (मग्गो) मार्ग–उपाय छे–(गुरुविद्धसेवा) सद्गुरु अने वृद्ध एटले स्थविर तेनी सेवा, तथा (बालजणस्स) पासत्थादिक अज्ञानी जननो (दूरा) दूरथी (विवज्जणा) त्याग, तथा (सज्झायएगंतनिसेवणा य) स्वाध्यायनी एकांतपणे सेवा, तथा (सुत्तत्थसंचिंतणया) सूत्र अने अर्थनुं चिंतवन, (धिई य) तथा धृति एटले मननी स्वस्थता. धृति विना ज्ञानादिक प्राप्त थता नथी. ३.

जो ज्ञानादिक मेळववाना उपाय आवा प्रकारना छे तो तेनी इच्छावाळाए प्रथम शुं करवुं जोइए ? ते कहे छे.—

आहारमिच्छे मिअमेसणिज्जं, सहायमिच्छे निउणट्ठबुद्धिं ।
निकेअमिच्छेज्ज विवेगजोगं, समाहिकामे समणे तवस्सी ॥ ४ ॥

अर्थ—(समाहिकामे) समाधि एटले ज्ञान, दर्शन अने चारित्रना लाभने इच्छनार, (समणे) क्रियानुष्ठानादिकमां श्रम करनार अने (तवस्सी) षष्ठाष्टमादिक तप करनार साधु (मिअं) परिमित अने (एसणिज्जं) एषणीय—निर्दोष एवा (आहारं) आहारने (इच्छे) इच्छे. तथा (निउणट्ठबुद्धिं) अर्थोने विषे एटले जीवादिक तत्त्वोने विषे निपुण छे बुद्धि जेनी एवा (सहायं) सहायने–शिष्यने (इच्छे) इच्छे, तथा (विवेगजोगं) विवेकवडे योग्य एटले स्त्री, पशु, पंडकादिक रहित एवा (निकेअं) उपाश्रयने (इच्छेज्ज) इच्छे. ४.

तेवा प्रकारनो सहायक—शिष्य न मळे तो शुं करवुं ? ते कहे छे.—

ण वा लभिज्जा निउणं सहायं, गुणाहिअं वा गुणओ समं वा ।
एकोऽवि पावाइँ विवज्जयंतो, विहरिज्ज कामेसु असज्जमाणो ॥ ५ ॥

अर्थ—(वा) जो कदाच (गुणाहिअं वा) पोतायी अधिक गुणवान अथवा (गुणओ समं वा) गुणे करीने पोतानी समान एटले समान गुणवाळो (निउणं) निपुण (सहायं) सहाय—शिष्य (ण लभिज्जा) न पामे तो (एकोऽवि) पोते एकलो पण (पावाइं) पापने एटले पापना हेतुभूत अशुभ अनुष्ठानने (विवज्जयंतो) वर्जतो थको तथा (कामेसु) इंद्रियोना विषयोने विषे (असज्जमाणो) आसक्ति रहित थयो थको (विहरिज्ज) विचरे. ५.

आ प्रमाणे दुःखना नाशनो उपाय ज्ञानादिक छे ते प्रसंग सहित कह्युं. हवे ज्ञानादिकनो प्रतिबंध करनार अने दुःखना हेतुरूप जे मोहादिक छे तेनी जे प्रमाणे उत्पत्ति थाय छे, जे प्रकारे ते दुःखना हेतुरूप छे, जे प्रकारे तेनो क्षय थाय छे अने जे प्रकारे तेना क्षयथी दुःखनो क्षय थाय छे, ते कहे छे.—

जहा य अंडप्पभवा बलागा, अंडं बलागप्पभवं जहा य ।
एमेव मोहाययणं खु तण्हा, मोहं च तण्हाययणं वयंति ॥ ६ ॥

अर्थ—(जहा य) जेम (अंडप्पभवा) इंडाथी उत्पन्न थयेली (बलागा) बगली—पक्षिणी होय छे, (जहा य) अने जेम (बलागप्पभवं) बगलीथी उत्पन्न थयेलुं (अंडं) इंडुं होय छे, (एमेव) ए ज रीते (खु) निश्चे (मोहाययणं)

मोहनुं स्थान (तण्हा) तृष्णा छे (च तण्हाययणं) अने तृष्णानुं स्थान (मोहं) मोह छे एम (वयंति) पंडितो कहे छे. तृष्णा एटले छती के अछती वस्तु उपरनी मूर्छा, ते मूर्छा रागप्रधान होय छे तेथी ते तृष्णावडे राग लइ शकाय छे, अने ज्यां राग होय त्यां अवश्य द्वेष पण होय छे, तेथी तृष्णा शब्दे करीने राग अने द्वेष ए बन्ने कहेवाय छे. हवे ते रागद्वेष उत्कट होय तो उपशांतमोह गुणठाणा सुधी पहोंचेला पण मिथ्यात्व गुणठाणे जाय छे, तेथी तृष्णा शब्दवडे अज्ञानादिक मोह सिद्ध थाय छे. आ गाथामां परस्पर हेतु हेतुमद्भाव कहेवाथी मोहादिकनी उत्पत्तिनो प्रकार कह्यो छे. ६.

हवे ते मोहादिक जे रीते दुःखना हेतु छे, ते कहे छे.—

रागो य दोसो वि य कम्मबीयं, कम्मं च मोहप्पभवं वयंति ।
कम्मं च जाईमरणस्स मूलं, दुक्खं च जाईमरणं वयंति ॥ ७ ॥

अर्थ—(रागो य) राग अने (दोसो वि य) द्वेष पण (कम्मबीयं) ज्ञानावरणादिक कर्मनुं कारण छे, तेथी करीने ज (कम्मं च) कर्मने (मोहप्पभवं) मोहथी उत्पन्न थयेलुं (वयंति) कहे छे. (कम्मं च) तथा कर्म (जाईमरणस्स) जन्म अने मरणनुं (मूलं) कारण छे, (च) अने (जाईमरणं) जन्म ने मरण ए ज (दुक्खं) दुःख छे—दुःखनुं कारण छे एम (वयंति) पंडितो कहे छे. ७.

तेथी करीने—

दुक्खं हयं जस्स न होइ मोहो मोहो हओ जस्स न होइ तण्हा।
तण्हा हया जस्स न होइ लोहो, लोहो हओ जस्स न किंचणाइं ॥ ८ ॥

अर्थ—(जस्स) जेने (मोहो) मोह (न होइ) नथी होतो, तेणे (दुक्खं) दुःख (हयं) हण्युं छे (जस्स) जेने (तण्हा) तृष्णा (न होइ) नथी, तेणे (मोहो) मोह (हओ) हण्यो छे, (जस्स) जेने (लोहो) लोभ (न होइ) नथी, तेणे (तण्हा) तृष्णा (हया) हणी छे, अने (जस्स) जेने (किंचणाइं) कांइ पण धन (न) नथी तेणे (लोहो) लोभने (हओ) हण्यो छे एम जाणवुं. ८.

अहीं कोइ शंका करे छे—दुःखना हेतु मोहादिक कह्या, ते ठीक छे, परंतु ते मोहादिकना नाशनो उपाय पूर्वे कह्यो ते ज छे के बीजा पण कोइ उपाय छे ? ए शंका दूर करवा माटे विस्तारथी तेना नाशना उपाय बतावे छे.—

रागं च दोसं च तहेव मोहं, उद्धत्तुकामेण समूलजालं।
जे जे उवाया पडिवज्जियव्वा, ते कित्तइस्सामि अहाणुपुव्विं ॥ ९ ॥

अर्थ—(रागं च) रागने, (दोसं च) द्वेषने (तहेव) तथा वळी (मोहं) मोहने (समूलजालं) तीव्र कषायादिक अने विषयादिक मूळना समूह सहित (उद्धत्तुकामेण) उखेडवाने इच्छनारे (जे जे उवाया) जे जे उपायो (पडिवज्जियव्वा) अंगीकार करवाना छे, (ते) ते उपायो (अहाणुपुव्विं) अनुक्रमे (कित्तइस्सामि) हुं कहीश—कहुं छुं. ९.

ते ज कहे छे.--

रसा पगामं न निसेविअव्वा, पायं रसा दित्तिकरा नराणं ।
दित्तं च कामा समभिद्दवंति, दुमं जहा सादुफलं व पक्खी ॥ १० ॥

अर्थ—(रसा) रसो एटले दूध विगेरे विगइ (पगामं) अत्यंत एटले जरा पण (न निसेविअव्वा) सेववा लायक नथी. कारण के (पायं) प्राये करीने (रसा) रसो (नराणं) पुरुषोने तथा उपलक्षणथी स्त्रीओने पण (दित्तिकरा) दप्ति-मद करनारा छे, (दित्तं च) अने दप्तिवाळा मनुष्यने (कामा) विषयो (समभिद्दवंति) पराभव करे छे. कोनी जेम ? ते कहे छे.—(जहा) जेम (सादुफलं) स्वादिष्ट फळवाळा (दुमं) वृक्षने (पक्खी व) पक्षीओ जेम पराभव करे छे तेम. अहीं वृक्ष जेवा पुरुष-मनुष्य छे, स्वादिष्ट फळ जेवुं दप्तपणुं छे अने पक्षी जेवा विषयो छे. १०.

जहा दवग्गी पउरिंधणे वणे, समारुओ नोवसमं उवेइ ।
एविंदिअग्गी वि पगामभोइणो, न बंभयारिस्स हिआय कस्सइ ॥ ११ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (पउरिंधणे) घणा इंधणावाळा (वणे) वनमां (समारुओ) वायु सहित एवो (दवग्गी) दावानळ (उवसमं) शांतिने (न उवेइ) पामतो नथी, (एव) ए ज प्रमाणे (इंदिअग्गी वि) इंद्रिय एटले इंद्रियथी उत्पन्न थयेलो राग, ते रूपी अग्नि पण (पगामभोइणो) अति आहार करनारा (कस्सइ) कोइ पण (बंभयारिस्स)

पंडकादिकना निवासस्थाननी (मज्झे) मध्ये (बंभयारिस्स) ब्रह्मचारीनो (निवासो) निवास (खमो न) योग्य नथी. १३.

विविक्त उपाश्रयमां पण कदापि स्त्रीनुं आगमन थाय, त्यारे शुं करवुं ? ते कहे छे.—

न रूवलावण्णविलासहासं, न जंपिअं इंगिअं पेहिअं वा ।
इत्थीण चित्तंसि निवेसइत्ता, दट्ठुं ववस्से समणे तवस्सी ॥ १४ ॥

अर्थ—(समणे) चारित्र क्रियामां श्रम लेनार (तवस्सी) तपस्वी साधु (इत्थीण) स्त्रीओना (रूवलावण्णविलासहासं) रूप–सारूं संस्थान, लावण्य–सुंदरता, विलास–मनोहर वेषनी रचना अने हास्य, तेने (चित्तंसि) मनमां (निवेसइत्ता) स्थापन करीने–राखीने (दट्ठुं) जोवाने माटे (न ववस्से) अध्यवसाय–उद्यम न करे. (वा) अथवा स्त्रीओना (जंपिअं) वचनने, (इंगिअं) इंगितने एटले अंगने मरडवुं विगेरे चेष्टाने तथा (पेहिअं) प्रेक्षितने एटले कटाक्षवाळी दृष्टिने (न) जोवानो उद्यम न करे. १४.

आवो उपदेश आपवानुं कारण कहे छे.—

अदंसणं चेव अपत्थणं च, अचिंतणं चेव अकित्तणं च ।
इत्थीजणस्सारियझाणजुग्गं, हिअं सया बंभचेरे रयाणं ॥ १५ ॥

अर्थ—(बंभचेरे) ब्रह्मचर्यने विषे (रयाणं) आसक्त थयेला साधुओने (इत्थीजणस्स) स्त्रीजननी सन्मुख (अदंसणं

ब्रह्मचारीने (हिआय) हितने माटे (न) थतो नथी. ११.

वळी बीजुं—

विवित्तसेज्जासणजंतिआणं, ओमासणाणं दमिइंदिआणं ।
न रागसत्तू धरिसेइ चित्तं, पराइओ वाहिरिवोसहेहिं ॥ १२ ॥

अर्थ—(विवित्तसेज्जासणजंतिआणं) विविक्त एटले स्त्री आदि रहित शय्या एटले उपाश्रयमां रहेवावडे नियंत्रित, (ओमासणाणं) ओछुं भोजन करनारा अने (दमिइंदिआणं) इंद्रियोनुं दमन करनारा साधुओना (चित्तं) चित्तने (रागसत्तू) रागरूपी शत्रु (न धरिसेइ) पराभव करी शकतो नथी. कोनी जेम ? ते कहे छे—(ओसहेहिं) औषधवडे (पराइओ) पराजय करेलो (वाहिरिव) व्याधि जेम शरीरने पराभव करी शकतो नथी तेम. १२.

विविक्त उपाश्रय न होय तो तेथी थता दोषने कहे छे.—

जहा बिरालावसहस्स मूले, न मूसगाणं वसही पसत्था ।
एमेव इत्थीनिलयस्स मज्झे, न बंभयारिस्स खमो निवासो ॥१३॥

अर्थ—(जहा) जेम (बिरालावसहस्स) बिलाडाना निवासस्थाननी (मूले) समीपे (मूसगाणं) उंदरनो (वसही) निवास (पसत्था न) प्रशस्त-कल्याणकारक नथी, (एमेव) ए ज प्रमाणे (इत्थीनिलयस्स) स्त्री अने उपलक्षणथी

चेव) न जोवुं ते ज, (अपत्थणं च) तेनी प्रार्थना न करवी ते, (अचिंतणं चेव) तेनुं चिंतवन न करवुं ते, तथा (अकित्तणं च) तेना नामनुं कीर्तन न करवुं ते, आ सर्व (आरियझाणजुग्गं) आर्य एटले धर्मादिक ध्यानने योग्य छे, तथा (सया) सदा (हिअं) हितकारक छे. १५.

अहीं कोइ शंका करे के—विकारनो हेतु छतां पण जेओ विकार न पामे, ते ज धीर कहेवाय छे, तो शा माटे विविक्त स्थान सेववुं ? आ प्रश्ननो उत्तर आपे छे.—

कामं तु देवीहिँ विभूसिआहिं, न चाइआ खोभइउं तिगुत्ता ।
तहावि एगंतहिअं ति नच्चा, विवित्तभावो मुणिणं पसत्थो ॥ १६ ॥

अर्थ—(कामं तु) आ तो सर्वने अनुमत ज छे के—(तिगुत्ता) त्रण गुप्तिवाळा मुनिओने (विभूसिआहिं) अलंकारादिकवडे विभूषित थयेली (देवीहिं) देवीओ पण (खोभइउं) क्षोभ पमाडवाने (न चाइआ) शक्तिमान थइ शकती नथी, तो मनुष्यनी स्त्रीओ शी रीते क्षोभ पमाडी शके ? (तहावि) तो पण (एगंतहिअं) एकांतमां रहेवुं ते हितकारक छे (ति) एम (नच्चा) जाणीने (मुणिणं) मुनिओने (विवित्तभावो) विविक्तपणुं एटले विविक्तस्थाने रहेवुं ते (पसत्थो) प्रशस्त छे. स्त्री आदिकना संगथी प्राये योगीओ पण क्षोभ पामे छे. कदाच क्षोभ न पामे तो पण अवर्णवाद आदि दोषने तो पामे ज छे. तेथी एकांतमां रहेवुं ते ज कल्याणकारक छे. १६.

एअ जवातने दृढ करवा माटे स्त्रीओनुं दुरतिक्रमपणुं बतावे छे.—

मोक्खाभिकंखिस्स वि माणवस्स, संसारभीरुस्स ठियस्स धम्मे ।
नेयारिसं दुत्तरमत्थि लोए, जहित्थिओ बालमणोहराओ ॥१७॥

अर्थ—(मोक्खाभिकंखिस्स वि) मोक्षनी अभिलाषावाळा, (संसारभीरुस्स) संसारथी भय पामनारा अने (धम्मे) धर्मने विषे (ठियस्स) रहेला एवा (माणवस्स) मनुष्यने पण (जहा) जे प्रकारे (बालमणोहराओ) मूर्खजनने मनोहर लागे तेवी (इत्थिओ) स्त्रीओ दुस्तर छे, (एयारिसं) एवा प्रकारनुं (लोए) आ लोकमां बीजुं कोइ (दुत्तरं) दुस्तर (न अत्थि) नथी. १७.

स्त्रीनो संग नहीं करवाथी थता गुणने कहे छे.—

एए अ संगे समइक्कमित्ता, सुहुत्तरा चेव हवंति सेसा ।
जहा महासागरमुत्तरित्ता, नई भवे अवि गंगासमाणा ॥ १८ ॥

अर्थ—(एए अ) आ स्त्रीना विषयवाळा (संगे) संगने (समइक्कमित्ता) ओळंगीने पछी (सेसा) बाकीना बीजा धनादिकना संगो (सुहुत्तरा चेव) सुखे तरी शकाय-ओळंगी शकाय एवा ज (हवंति) थाय छे. ते उपर दृष्टांत आपे छे के—(जहा) जेम (महासागरं) मोटा समुद्रने (उत्तरित्ता) उतरी गया पछी (गंगासमाणा) गंगा जेवी (नई अवि)

नदी पण (भवे) सुखे उतरी शकाय तेवी थाय छे. १८.

कामाणुगिद्धिप्पभवं खु दुक्खं, सव्वस्स लोगस्स सदेवगस्स ।
जं काइअं माणसिअं च किंचि, तस्संतगं गच्छइ वीअरागो ॥ १९ ॥

अर्थ—(सदेवगस्स) देव सहित एवा (सव्वस्स) सर्व (लोगस्स) लोकने (कामाणुगिद्धिप्पभवं खु) विषयोनी अभिलाषाथी उत्पन्न थयेलुं ज (दुक्खं) दुःख होय छे. (जं) जे (काइअं) काया संबंधी व्याधि विगेरेनुं (माणसिअं च) अने मनसंबंधी इष्टवियोगादिकनुं (किंचि) जे कोइ पण दुःख छे, (तस्स) तेना (अंतगं) अंतने (वीअरागो) वीतराग एटले विषयनी लोलुपता रहित मनुष्य ज (गच्छइ) पामे छे. १९.

अहीं कोइ शंका करे के—काम तो सुखरूप ज छे, तो तेनाथी उत्पन्न थयेलुं दुःख केम कही शकाय ? आ शंकानो उत्तर आपे छे.—

जहा य किंपागफला मणोरमा, रसेण वण्णेण य भुज्जमाणा ।
ते खुड्डए जीविअ पच्चमाणा, एओवमा कामगुणा विवागे ॥ २० ॥

अर्थ—(जहा य) जेम (किंपागफला) किंपाकना फळो (भुज्जमाणा) खाती वखते (रसेण) रसवडे अने (वण्णेण

य) वर्णवडे तथा चशब्दथी गंधादिकवडे (मणोरमा) मनोहर लागे छे, परंतु (ते) ते फळो (पच्चमाणा) पचे त्यारे एटले विपाक अवस्थाने पामे त्यारे (जीविअ) जीवितनो (खुदए) भूको करे छे–विनाश करे छे, तेज रीते (कामगुणा) कामगुणो पण (विवागे) विपाकने विषे–परिणामे (एओवमा) ए उपमावाळा छे एटले किंपाकना फळ जेवा ज छे. २०

आ प्रमाणे केवळ रागना ज उद्धारनो उपाय बताव्यो. हवे राग अने द्वेष बन्नेना उद्धारनो उपाय बतावे छे.—

जे इंदिआणं विसया मणुण्णा, न तेसु भावं निसिरे कयाइ ।
न यामणुण्णेसु मणं पि कुज्जा, समाहिकामे समणे तवस्सी ॥ २१ ॥

अर्थ—(समाहिकामे) राग द्वेषना विनाशरूप समाधिनी इच्छावाळा, (समणे) चारित्रनी क्रियामां श्रम करनार अने (तवस्सी) तप करनार एवो साधु (जे) जे (इंदिआणं) इंद्रियोना (विसया) विषयो (मणुण्णा) मनोज्ञ छे, (तेसु) तेने विषे (कयाइ) कदापि (भावं) अभिप्रायने पण (न निसिरे) न करे, तो पछी विषयोने विषे इंद्रियोनुं प्रवर्तन तो क्यांथी ज करे. (य) तथा (अमणुण्णेसु) अमनोज्ञ विषयोने विषे (मणं पि) मनने पण (न कुज्जा) न करे, तो पछी प्रवर्तन तो क्यांथी ज करे. अर्थात् मनोज्ञ विषयो उपर रागवाळुं मन न करे अने अमनोज्ञ विषयो उपर द्वेषवाळुं मन न करे. २१.

आ प्रमाणे रागद्वेषनो उद्धार करवा माटे विषयो थकी इंद्रियोनी निवृत्ति करवानुं कह्युं. हवे विषयोमां इंद्रियोने प्रवर्तावावामां अने रागद्वेषनो उद्धार नहीं करवामां जे दोष छे, ते प्रत्येक इंद्रियने तथा मनने आश्री अठोतेर गाथावडे बतावे छे. तेमां प्रथम एक चक्षु इंद्रियने आश्री तेर गाथा कहे छे.—

चक्खुस्स रूवं गहणं वयंति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो उ जो तेसु स वीअराओ ॥ २२ ॥

अर्थ—(रूवं) रूपने (चक्खुस्स) चक्षुनुं (गहणं) ग्राहक-आकर्षक (वयंति) तीर्थंकरो कहे छे. (तं) ते रूप (रागहेउं तु) रागना हेतुरूप होवाथी (मणुन्नं आहु) मनोज्ञ कह्युं छे एटले जे रूपने जोइ राग उत्पन्न थाय ते रूप मनोज्ञ कहेवाय छे अने (तं) ते रूप (दोसहेउं) द्वेषना हेतुरूप थतुं छतुं (अमणुन्नं आहु) अमनोज्ञ कह्युं छे एटले जे रूप जोइ द्वेष थाय ते रूप अमनोज्ञ कहेवाय छे. (उ) तु पुनः (जो) जे मनुष्य (तेसु) ते मनोज्ञ अने अमनोज्ञ रूपने विषे (समो) समान एटले रागद्वेष रहित होय (स) ते (वीअराओ) वीतराग अने उपलक्षणथी वीतद्वेष छे. अहीं तात्पर्य ए छे जे प्रथम तो मनोज्ञ अने अमनोज्ञ एवा कोइ पण रूप उपर चक्षुने प्रवर्तावvuं ज नहीं, छतां कदाच प्रवृत्ति थइ जाय तो तेने विषे समदृष्टि राखवी. २२.

अहीं कोइ शंका करे के—आ रीते तो एटले रूप ज चक्षुनुं आकर्षक होय तो रूप ज रागद्वेषनुं कारण थयुं, चक्षु

कारण न थयुं, तो चक्षुनो निग्रह शा माटे करवो जोइए ? आवी शंकाने दूर करवा कहे छे—

रूवस्स चक्खुं गहणं वयंति, चक्खुस्स रूवं गहणं वयंति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ २३ ॥

अर्थ—(चक्खुं) चक्षुने (रूवस्स) रूपनुं (गहणं) ग्रहण करनार (वयंति) कहे छे एटले रूपने ग्रहण करनार चक्षु छे अने (रूवं) रूपने (चक्खुस्स) चक्षुनुं (गहणं) ग्राह्य (वयंति) कहे छे एटले चक्षुवडे रूप ग्रहण कराय छे एम कहे छे. आम कहेवाथी रूप अने चक्षु ए बन्ने परस्पर ग्राह्य पण छे अने ग्राहक पण छे, एम सिद्ध थयुं. तेथी करीने जेम रूप रागद्वेषनुं कारण छे तेम चक्षु पण रागद्वेषनुं कारण छे, तेज कारण माटे कहे छे के—(रागस्स) रागना (हेउं) कारणरूप चक्षुने (समणुन्नं) मनोज्ञ एवा रूपनी साथे वर्तनारुं होवाथी समनोज्ञ (आहु) कह्युं छे, अने (दोसस्स) द्वेषना (हेउं) हेतुरूप चक्षुने (अमणुन्नं) मनोज्ञ एवा रूपनी साथे वर्तनारुं नहीं होवाथी अमनोज्ञ (आहु) कह्युं छे. आ कारणथी चक्षुनो निग्रह करवो ते योग्य छे. २३.

आ प्रमाणे रागद्वेषना उद्धारनो उपाय कहीने हवे तेनो उद्धार न करवामां दोष बतावे छे—

रूवेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालियं पावइ से विणासं ।
रागाउरे से जह वा पयंगे, आलोअलोले समुवेइ मच्चुं ॥ २४ ॥

अर्थ—(रूवेसु) रूपने विषे (जो) जे मनुष्य (गिद्धिं) रागने (उवेइ) पामे छे, (से) ते (अकालिअं) अकाळे थयेला (तिव्वं) तीव्र (विणासं) विनाशने (पावइ) पामे छे, (जह वा) जेम (आलोअलोले) आलोकने विषे लोल एटले अतिस्निग्ध दीपशिखा जोवामां लंपट एवो (से) ते (पयंगे) पतंग (रागाउरे) रागातुर सतो (मच्चुं) मृत्युने (समुवेइ) पामे छे. २४.

जे यावि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू, न किंचि रूवं अवरज्झई से ॥ २५ ॥

अर्थ—(य) तथा (जे) जे प्राणी रूपने विषे (तिव्वं) तीव्र (दोसं) द्वेषने (समुवेइ) पामे छे, (से उ) ते (जंतू) प्राणी (तंसि खणे वि) ते ज समये पण (सएण) पोताना (दुद्दंतदोसेण) दुर्दांतपणाना दोषे करीने एटले इंद्रियने दमन न करवुं ते रूपी दोषे करीने (दुक्खं) दुःखने (उवेइ) पामे छे, परंतु (रूवं) रूप जे ते (से) तेनो—जोनारनो (किंचि) कांइ पण (न अवरज्झई) अपराध करतुं नथी. जो रूप ज दुःख आपवानो हेतु होय तो वीतरागने पण ते दुःख आपी शके, तेम तो छे नहीं. तेथी पोताना ज दोषथी प्राणी दुःख पामे छे, ए वात सिद्ध छे. २५.

आ प्रमाणे राग अने द्वेष अनर्थना हेतु छे एम कह्युं. हवे द्वेष पण रागने लइने ज थतो होवाथी राग महा अनर्थनुं मूळ छे एम देखाडवा पूर्वक तेनो विशेषे करीने त्याग करवानुं कहे छे—

एगंतरत्तो रुइरंसि रूवे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ २६ ॥

अर्थ—(रुइरंसि) रुचिर एटले मनोहर एवा (रूवे) रूपने विषे (एगंतरत्तो) जे एकांत रागी होय (से) ते (अतालिसे) अतादृश एटले तेवा प्रकारना मनोहर न होय एवा रूपने विषे (पओसं) प्रद्वेषने (कुणई) करे छे, तथा (बाले) मूढ एवो ते (दुक्खस्स) दुःखना (संपीलं) समूहने (उवेइ) पामे छे परंतु (तेण) ते द्वेषथी थता दुःखे करीने (विरागो) राग रहित (मुणी) मुनि (न लिप्पई) लेपाता नथी. २६.

हवे राग ज हिंसादिक आश्रवनो हेतु छे अने तेनाथी आ भवमां पण दुःख उत्पन्न थाय छे ते वात छ गाथावडे कहे छे—

रूवाणुगासाणु गए अ जीवे, चराचरे हिंसइ णेगरूवे ।
चित्तेहि ते परितावेइ बाले, पीलेई अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ २७ ॥

अर्थ—(रूवाणुगासाणुगए अ) अशस्त रूपना विषयवाळी आशाने अनुसरतो मनुष्य (अणेगरूवे) अनेक प्रकारना (चराचरे) त्रस अने स्थावर (जीवे) जीवोने (हिंसइ) हणे छे, तथा (बाले) मूढ एवो ते (चित्तेहि) नाना प्रकारना उपायोवडे (ते) ते त्रस स्थावर जीवोने (परितावेइ) परिताप उपजावे छे, तथा (अत्तट्ठगुरू) पोताना ज प्रयोजनमां

सावधान अने (किलिट्ठे) रागवडे क्लिष्ट परिणामवाळो ते (पीलेइ) ते जीवोने पीडा उपजावे छे. २७. तथा—

> रूवाणुवाए ण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसंनिओगे ।
> वए विओगे अ कहिं सुहं से, संभोगकाले अ अतित्तिलाभे ॥ २८ ॥

अर्थ—(रूवाणुवाए ण) प्रशस्त रूपने विषे अनुपात एटले अनुराग सते (परिग्गहेण) मूर्छारूप परिग्रहने लीधे (उप्पायणे) प्रशस्तरूपवाळी वस्तु उपार्जन करवामां तथा (रक्खणसन्निओगे) नाशथी तेनुं रक्षण करवामां, संनियोग एटले स्वपरना प्रयोजनने सम्यक् प्रकारे तेनो उपयोग करवामां तेमज (वए) व्यय एटले तेना विनाशमां, (विओगे अ) तथा ते वस्तुना वियोगमां (से) ते मनुष्यने (कहिं सुहं) सुख क्यांथी होय ? एटले के प्रशस्तरूपवाळा स्त्री, हाथी, घोडा अने वस्त्रादिकना उपार्जन विगेरे करवाने अर्थे ते ते क्लेशवाळा उपायोमां प्रवृत्ति करवाथी ते दुःखने ज अनुभवे छे. अहीं कोइ शंका करे के–“ प्रशस्तरूपवाळी वस्तु उपार्जन करवी ए विगेरेमां भले सुख न थाय, परंतु भोगवती वखते तो सुख थशे. ” ते उपर कहे छे के–(संभोगकाले अ) भोगवती वखते पण (अतित्तिलाभे) तृप्तिनी प्राप्ति नहीं थवाथी क्यांथी सुख थाय ? कह्युं छे के–“ कामी जनोना कामो भोगववाथी शांत थता नथी, परंतु उलटा इंधनवडे अग्निनी जेम वृद्धि ज पामे छे. ” तेथी अधिकाधिक इच्छा थवाथी रागी पुरुष काम भोगवता छतां पण खेदने ज पामे छे, सुखी थतो नथी. २८.

ત્યારપછી તેને અન્ય અન્ય દોષો પ્રાપ્ત થાય છે, તે કહે છે.—

रूवे अतित्ते अ परिग्गहे अ, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ २९ ॥

અર્થ—(રૂવે) પ્રશસ્તરૂપને વિષે (અતિત્તે અ) અતૃપ્ત અને (પરિગ્ગહે અ) વિષયની મૂર્છારૂપ પરિગ્રહને વિષે (સત્તોવસત્તો) સક્ત એટલે સામાન્ય આસક્તિવાળો અને ઉપસક્ત એટલે ગાઢ આસક્તિવાળો સતો (તુટ્ઠિં) તુષ્ટિને (ન ઉવેઇ) પામતો નથી. અને (અતુટ્ઠિદોસેણ) અતુષ્ટિરૂપ દોષવડે કરીને (દુહી) “ મને આ વસ્તુ મળે તો ઠીક ” એમ વિચારીને દુઃખી એવો અને (લોભાવિલે) લોભથી કલુષ થયેલો એવો તે (પરસ્સ) પરના (અદત્તં) અદત્તને એટલે નહીં આપેલી રૂપવાળી વસ્તુને પણ (આયયઇ) ગ્રહણ કરે છે. ૨૯. ત્યારપછી.—

तण्हाभिभूअस्स अदत्तहारिणो, रूवे अतित्तस्स परिग्गहे अ ।
मायामुसं वड्डइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ३० ॥

અર્થ—(તણ્હાભિભૂઅસ્સ) તૃષ્ણાવડે એટલે લોભવડે પરાભવ પામેલા, તેથી કરીને જ (અદત્તહારિણો) અદત્તને હરણ કરતા (અ) તથા (રૂવે) પ્રશસ્તરૂપના વિષયવાળા (પરિગ્ગહે) મૂર્છારૂપ પરિગ્રહને વિષે (અતિત્તસ્સ) તૃપ્તિ રહિત એવા તે મનુષ્યને (લોભદોસા) લોભના દોષથી (માયામુસં) માયામૃષા એટલે માયા પ્રધાન એવું અસત્ય વચન પણ

(वड्डइ) वृद्धि पामे छे. अर्थात् लोभी माणस परधनने ग्रहण करे छे अने पछी तेने गोपववा माटे मायामृषा बोले छे, तेथी करीने लोभ ज सर्व आश्रवोनुं मूळ कारण छे एम सिद्ध थयुं. अहीं रागनो प्रस्ताव छतां पण जे लोभनो विषय कह्यो ते रागमां पण लोभरूप अंशनुं अतिदुष्टपणुं जणाववा माटे कहेल छे. अहीं कोइ शंका करे के मायामृषा बोलवामां शो दोष ? ते उपर कहे छे.—(तत्थावि) तेमां पण एटले मृषा भाषणथी पण (से) ते माणस (दुक्खा) दुःखथी (न विमुच्चइ) मुक्त थतो नथी—दुःखी ज थाय छे. ३०.

मृषा भाषण करवाथी शी रीते दुःखी थाय छे ? ते कहे छे.—

मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ अ, पओगकाले अ दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, रूवे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ३१ ॥

अर्थ—(मोसस्स) मृषा वचननी (पच्छा य) पछी एटले मृषावचन बोल्या पछी तथा (पुरत्थओ अ) पहेलां तथा (पओगकाले अ) प्रयोगने वखते एटले मृषा बोलती वखते (दुही) दुःखी सतो एटले मृषावाद बोल्या पछी " मैं बराबर युक्ति पूर्वक वचन कह्युं छे के नहीं ? कोइने तेनी खबर पडशे तो शुं थशे ? " इत्यादि विचार थवाथी दुःखी थाय छे, तथा मृषावाद बोल्या पहेलां " आ वस्तुना स्वामीने मारे कइ रीते छेतरवो ? " इत्यादि चिंता थवाथी दुःखी थाय छे, तथा मृषावाद बोलतां वखते " मारा असत्य वचनने आ जाणी जशे के केम ? " इत्यादि चिंताथी दुःखी थाय छे. आ

रीसे दुःखी थयो थको (दुरंते) दुष्ट छे अंत-परिणाम जेनुं एवो थाय छे. एटले के आ भवमां अनेक विडंबना पामे छे अने परभवमां नरकादिकने पामे छे. (एवं) आ प्रकारे (अदत्ताणि) अदत्त वस्तुने (समाययंतो) ग्रहण करतो तथा (रूवे अतित्तो) रूपने विषे अतृप्त एवो ते (अणिस्सो) निश्रा रहित होवाथी एटले कोइना आधार रहित होवाथी (दुहिओ) दुःखी थाय छे. आ अदत्तादानना उपलक्षणथी मैथुन आश्रव पण जाणी लेवो. २१.

कहेला ज अर्थने समाप्त करे छे.—

रूवाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगेऽवि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कए ण दुक्खं ॥ ३२ ॥

अर्थ—(एवं) ए प्रकारे (रूवाणुरत्तस्स) रूपने विषे आसक्त थयेला (नरस्स) मनुष्यने (कयाइ) कदापि (किंचि) कांइ पण (सुहं) सुख (कत्तो) क्यांथी (होज्ज) होय ? कारण के (तत्थ) ते रूपानुरागने विषे (उवभोगेऽवि) उपभोग करती वखते पण (किलेसदुक्खं) अतृप्ति रूपी क्लेशथी उत्पन्न थतुं दुःख ज थाय छे, के (जस्स कए ण) जे उपभोगने माटे पोते (दुक्खं) दुःखने (निव्वत्तई) उत्पन्न करे छे. जो उपभोगने माटे वस्तु मेळवतां क्लेश करवो पडे तो ते दुःख ज छे, अने जो तेना उपभोग वखते पण दुःख ज छे तो पछी क्यारे सुख थाय? कदापि न थाय. ३२.

आ प्रमाणे राग अनर्थनुं कारण छे एम कह्युं, हवे द्वेष पण अनर्थनुं कारण छे एम बताववा माटे भलामण करे छे.—

एमेव रूवम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो अ चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ३३ ॥

अर्थ—(एमेव) एज रीते एटले राग पामेलानी जेम (रूवम्मि) खराब रूपने विषे (पओसं) प्रद्वेषने (गओ) पामेलो प्राणी (दुक्खोहपरंपराओ) दुःखना समूहनी परंपराने (उवेइ) पामे छे. (अ) तथा (पदुट्ठचित्तो) प्रद्वेषवाळुं छे चित्त जेनुं एवो ते प्राणी (कम्मं) कर्मने (चिणाइ) उपार्जन करे छे, (जं) जेथी करीने (से) ते प्राणीने (विवागे) ते कर्मना विपाक वखते (पुणो) फरीथी (दुहं) दुःख (होइ) थाय छे. अशुभ कर्मनुं उपार्जन हिंसादिक आश्रव विना थइ शकतुं नथी तेथी द्वेष पण आश्रवनो हेतु छे एम सूचव्युं छे. ३३.

आ प्रमाणे राग द्वेषनो उद्धार न करवाथी थता दोष कह्या, हवे तेमनो उद्धार करवाथी जे गुण थाय छे ते कहे छे.—

रूवे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झेऽवि संतो, जलेण वा पुक्खरिणीपलासं ॥ ३४ ॥ १ ॥

अर्थ—(रूवे) रूपने विषे (विरत्तो) राग रहित तथा उपलक्षणथी द्वेष रहित एवो (मणुओ) मनुष्य (भव-मज्झेऽवि संतो) संसारनी मध्ये रहेतो सतो पण (विसोगो) रागद्वेषरूपी कारणना अभावथी शोक रहित सतो (एएण) आ उपर कहेली (दुक्खोहपरंपरेण) दुःखना समूहनी परंपराए करीने (न लिप्पई) लेपातो नथी. (वा) जेम (पुक्ख-

रिणीपलासं) कमलिनीनुं पांदडुं (जलेण) जळवडे लेपातुं नथी तेम. ३४.

आ प्रमाणे चक्षुने आश्रीने तेर सूत्रो व्याख्यान सहित कह्यां. हवे ए ज रीते बाकीनां चार इंद्रियो तथा मनना विषयवाळा पण तेर तेर सूत्रो कहे छे, तेनुं व्याख्यान उपर प्रमाणे करी लेवुं. तेमां जेटलो विशेष हशे, ते ज मात्र कहेशे.—

सोअस्स सद्दं गहणं वयंति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो अ जो तेसु स वीअरागो ॥ ३५ ॥

अर्थ—(सद्दं) शब्दने (सोअस्स) श्रोत्रनुं (गहणं) ग्राहक—आकर्षक (वयंति) कहे छे. इत्यादि पूर्ववत्. ३५.

सद्दस्स सोअं गहणं वयंति, सोअस्स सद्दं गहणं वयंति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ३६ ॥
सद्देसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालिअं पावइ से विणासं ।
रागाउरे हरिणमिए व्व मुद्धे, सद्दे अतित्ते समुवेइ मच्चुं ॥ ३७ ॥

अर्थ—(रागाउरे) रागातुर अने (मुद्धे) मुग्ध एटले हिताहितने नहीं जाणतो एवो (हरिणमिए व्व) हरिण रूपी पशु जेम (सद्दे) शब्दने विषे एटले शीकारीना गीतने विषे (अतित्ते) अतृप्त थयो सतो (मच्चुं) मृत्युने (समुवेइ)

पामे छे. तेम—बाकी उपर प्रमाणे. ३७.

जे आवि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू, न किंचि सद्दं अवरुज्झई से ॥ ३८ ॥
एगंतरत्तो रुइरंसि सद्दे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ३९ ॥
सद्दाणुगासाणुगए अ जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहिँ ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ४० ॥

अर्थ—अहीं चराचर जीवनी हिंसा कही ते आ प्रमाणे—वाजित्रना उपयोगमां लेवा माटे स्नायु—नसो अने चामडा माटे चर एटले त्रस जीवोनी अने वांसळी, मृदंग विगेरेना काष्ठादिक माटे अचर एटले स्थावर जीवोनी हिंसा करवामां आवे छे. ४०.

सद्दाणुवाए ण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे अ कहिं सुहं से, संभोगकाले अ अतित्तिलाभे ॥ ४१ ॥

सद्दे अतित्ते अ परिग्गहे अ, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ४२ ॥

अर्थ—अहीं अदत्त ग्रहण करवानुं कह्युं ते आ प्रमाणे—सारुं गीत गानारी दासी विगेरेने तथा सारा ध्वनिवाळा वीणा वांसळी विगेरे वाजित्रने चोरी ले छे, इत्यादि समजवुं. ४२.

तण्हाभिभूअस्स अदत्तहारिणो, सद्दे अतित्तस्स परिग्गहे अ ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ४३ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ अ, पओगकाले अ दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, सद्दे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ४४ ॥
सद्दाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगेऽवि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कए ण दुक्खं ॥ ४५ ॥
एमेव सद्दम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो अ चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ४६ ॥

सद्दे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झेऽवि संतो, जलेण वा पुक्खरिणीपलासं ॥ ४७ ॥ २ ॥

हवे घ्राण इंद्रिय विषे कहे छे.—

घाणस्स गंधं गहणं वयंति, तं रागहेउं तु मणुण्णमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुण्णमाहु, समो अ जो तेसु स वीअरागो ॥ ४८ ॥
गंधस्स घाणं गहणं वयंति, घाणस्स गंधं गहणं वयंति ।
तं रागहेउं तु मणुण्णमाहु, दोसस्स हेउं अमणुण्णमाहु ॥ ४९ ॥
गंधेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालिअं पावइ से विणासं ।
रागाउरे ओसहिगंधगिद्धे, सप्पे बिलाओ विव निक्खमंते ॥ ५० ॥

अर्थ—(ओसहिगंधगिद्धे) नागदमनी आदिक ओषधिना गंधमां गृद्धि पामेलो (सप्पे विव) सर्प जेम (बिलाओ) पोताना बिलमांथी (निक्खमंते) निकळतो सतो नाश पामे छे. कारण के ते औषधिना गंधनी उपेक्षा करवामां अशक्त एवो सर्प बिलमांथी पराधीनपणे बहार नीकळे छे, पछी गारुडादिकने आधीन थइ दुःखने पामे छे. ५०

जे आवि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू, न किंचि गंधं अवरज्झई से ॥ ५१ ॥
एगंतरत्तो रुइरंसि गंधे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ५२ ॥
गंधाणुगासाणुगए अ जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहिँ ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ५३ ॥

अर्थ—अहीं कस्तूरि विगेरेने माटे चर–त्रस जीवनी अने पुष्पादिकने माटे अचर–स्थावर जीवनी हिंसा करवामां आवे छे. ५३.

गंधाणुवाए ण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे अ कहिं सुहं से, संभोगकाले अ अतित्तिलाभे ॥ ५४ ॥
गंधे अतित्ते अ परिग्गहे अ, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ५५ ॥

अर्थ—अहीं अदत्त वस्तु सुगंधी तेल, कस्तूरि, पुष्प विगेरे जाणवी. ५५

तण्हाभिभूअस्स अदत्तहारिणो, गंधे अतित्तस्स परिग्गहे अ ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ५६ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ अ, पओगकाले अ दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, गंधे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ५७ ॥
गंधाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगेऽवि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कए ण दुक्खं ॥ ५८ ॥
एमेव गंधम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो अ चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ५९ ॥
गंधे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झेऽवि संतो, जलेण वा पुक्खरिणीपलासं ॥ ६० ॥ २ ॥

हवे जिव्हा इंद्रिय विषे कहे छे—

जीहाए रसं गहणं वयंति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो अ जो तेसु स वीअरागो ॥ ६१ ॥
रसस्स जिब्भं गहणं वयंति, जिब्भाए रसं गहणं वयंति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ६२ ॥
रसेसु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालिअं पावइ से विणासं ।
रागाउरे बडिसविभिन्नकाए, मच्छे जहा आमिसभोगगिद्धे ॥ ६३ ॥

अर्थ—(जहा) जेम (आमिसभोगगिद्धे) मांसना स्वादमां लुब्ध एवो (मच्छे) मत्स्य (बडिसविभिन्नकाए) जेना अग्रभागपर मांस राखेलुं होय छे तेवा बडिशवडे जेनी काया भेदाय–वींधाय छे एवो सतो विनाश पामे छे. ६३.

जे आवि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ॥
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू, न किंचि रस्सं अवरज्झई से ॥ ६४ ॥

एगंतरत्तो रुइरे रसम्मि, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ६५ ॥
रसाणुगासाणुगए अ जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहिं ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरूकिलिट्ठे ॥ ६६ ॥

अर्थ—अहीं जिव्हा इंद्रिय माटे भक्षण करवा सारु मृग, पशु, मत्स्य, पक्षी विगेरे चर-त्रस अने कंद, मूळ, फळ विगेरे अचर-स्थावर जीवोनी हिंसा करे छे एम जाणवुं. ६६.

रसाणुवाए ण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे अ कहिं सुहं से, संभोगकाले अ अतित्तिलाभे ॥ ६७ ॥
रसे अतित्ते अ परिग्गहे अ, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ६८ ॥

अर्थ—अहीं अदत्त खांड, खाजां, फळ विगेरे रसवाळी वस्तुओ ग्रहण करे छे एम जाणवुं.

तण्हाभिभूअस्स अदत्तहारिणो, रसे अतित्तस्स परिग्गहे अ ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ६९ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ अ, पओगकाले अ दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, रसे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ७० ॥
रसाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगेऽवि किलेसदुक्खं, निव्वत्तई जस्स कए ण दुक्खं ॥ ७१ ॥
एमेव रसम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो अ चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ७२ ॥
रसे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झेऽवि संतो, जलेण वा पुक्खरिणीपलासं ॥ ७३ ॥ ४ ॥

हवे स्पर्श इंद्रिय विषे कहे छे.—

कायस्स फासं गहणं वयंति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ॥
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो अ जो तेसु स वीअरागो ॥ ७४ ॥
फासस्स कायं गहणं वयंति, कायस्स फासं गहणं वयंति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ७५ ॥
फासस्स जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालिअं पावइ से विणासं ।
रागाउरे सीअजलावसन्ने, गाहग्गहीए महिसे व रण्णे ॥ ७६ ॥

अर्थ—(व) जेम (रण्णे) अरण्यमां (सीअजलावसन्ने) शीतळ जळमां एटले जळाशयमां मग्न थयेलो (महिसे) पाडो (गाहग्गहीए) ग्राह नामना जळचरोए ग्रहण कर्यो सतो विनाशने पामे छे तेम. कदाच ग्राम विगेरेनी समीपे जळाशयमां पड्यो होय तो कदाच कोइ मनुष्य तेने ग्राहथी छोडावी पण शके, तेथी अहीं अरण्य शब्द लख्यो छे, के ज्यां तेने छोडावनार कोइ पण मळी शके नहीं. ७६.

जे आवि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं ।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू, न किंचि फासं अवरज्झई से ॥ ७७ ॥

एगंतरत्तो रुइरंसि फासे, अतालिसे से कुणई पओसं ।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ७८ ॥
फासाणुगासाणुगए अ जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहिं ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ७९ ॥

अर्थ—अहीं शुभ स्पर्शवाळा मृगादिकनां चर्म, पुष्प, वस्त्र विगेरेनो संग्रह करवा माटे तथा स्त्रीसेवनादिकमां प्रवर्तेलो मनुष्य चराचर जीवोने हणे छे. ७९.

फासाणुवाएण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे अ कहं सुहं से, संभोगकाले अ अतित्तिलाभे ॥ ८० ॥
फासे अतित्ते अ परिग्गहे अ, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ८१ ॥

अर्थ—अहीं अदत्त ते शुभ स्पर्शवाळां वस्त्र, तळाइ विगेरेने ग्रहण करे छे—चोरे छे एम जाणवुं. ८१.

तण्हाभिभूअस्स अदत्तहारिणो, फासे अतित्तस्स परिग्गहे अ ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ ८२ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ अ, पओगकाले अ दुही दुरंते ।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, फासे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ ८३ ॥
फासाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि ।
तत्थोवभोगेऽवि किलेसदुक्खं, निव्वत्तए जस्स कए ण दुक्खं ॥ ८४ ॥
एमेव फासम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ ।
पदुट्ठचित्तो अ चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ ८५ ॥
फासे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झेऽवि संतो, जलेण वा पुक्खरिणीपलासं ॥ ८६ ॥ ५ ॥

हवे मनरूप नोइंद्रिय विषे कहे छे.—

मणस्स भावं गहणं वयंति, तं रागहेउं तु मणुन्नमाहु ।
तं दोसहेउं अमणुन्नमाहु, समो अ जो तेसु स वीअरागो ॥ ८७ ॥

अर्थ—(भावं) भावने एटले स्मरणादिकना विषयवाळा अभिप्रायने (मणस्स) मनने (गहणं) ग्राहक–ग्रहण करनार (वयंति) कह्यो छे, (तु) तु पुनः (मणुन्नं) मनोज्ञ एटले सुंदर रूपादिकना विषयवाळा एवा (तं) ते भावने (रागहेउं) रागना हेतुरूप (आहु) कह्यो छे, तथा (अमणुन्नं) अमनोज्ञ एवा (तं) ते भावने (दोसहेउं) द्वेषना हेतुरूप (आहु) कह्यो छे, (अ) तथा (जो) जे माणस (तेसु) मनोज्ञ अने अमनोज्ञ रूपादिकना विषयवाळा ते बन्ने प्रकारना भावने विषे (समो) समान होय (स) ते माणसने (वीअरागो) वीतराग एटले राग रहित तथा उपलक्षणथी द्वेष रहित जाणवो. आ ज प्रमाणे हवे पछीनां सूत्रोनो पण भावना विषयरूप रूपादिकनी अपेक्षाए ज अर्थ करवो. अथवा स्वप्न अने कामनी दशामां रूपादिकना विषयवाळो जे भाव थाय छे, ते मनने ग्राहक छे, कारणके ते अवस्थामां केवळ मननो ज व्यापार होय छे. अथवा मनने इष्ट एवा धन, स्वजन, आरोग्य, पुत्र, राज्य विगेरेना संयोग संबंधी अने अनिष्ट एवा रोग, शत्रु, चोर, दारिद्र्य विगेरेना वियोग संबंधी चिंतवनरूप भाव अहीं जाणवो. ते भाव इष्ट वस्तु मेळववा संबंधी होय तो ते मनोज्ञ छे अने अनिष्ट वस्तुना त्याग संबंधी होय तो ते अमनोज्ञ छे. ८७.

भावस्स मणं गहणं वयंति, मणस्स भावं गहणं वयंति ।
रागस्स हेउं समणुन्नमाहु, दोसस्स हेउं अमणुन्नमाहु ॥ ८८ ॥

भावे सु जो गिद्धिमुवेइ तिव्वं, अकालिअं पावइ से विणासं।
रागाउरे कामगुणेसु गिद्धे, करेणुमग्गा वहिए व्व नागे ॥ ८९ ॥

अर्थ—(कामगुणेसु गिद्धे) कामगुणने विषे लुब्ध थयेलो (नागे) हाथी (व्व) जेम (करेणुमग्गावहिए) हाथणीना मार्गे अपहृत एटले आकर्षण करायो सतो नाश पामे छे तेम. एटले के मदोन्मत्त एवो हाथी पासे रहेली हाथणीने जोइ तेना संगममां उत्सुक थइ तेनी पाछळ मार्गमां दोडे छे तेटलामां राजादिक सुभटो ते हाथीने पकडी ले छे. त्यारपछी युद्धादिकमां ते हाथी विनाश पामे छे. जो के आ दृष्टांतमां चक्षु आदिक इंद्रियोना वशथी ज हाथी हाथणीनी पाछळ प्रवृत्ति करे छे एम कही शकाय तो पण अहीं मननुं प्रधानपणुं कहेवानी इच्छा होवाथी भावनो विषय जाणवो. अथवा तथाप्रकारनी कामांध दशामां इंद्रियोनो व्यापार होतो नथी, केवळ मन ज प्रवर्ते छे, तेथी मननी ज प्रवृत्ति कहेवामां काइ दोष नथी. ८९.

जे आवि दोसं समुवेइ तिव्वं, तंसि क्खणे से उ उवेइ दुक्खं।
दुद्दंतदोसेण सएण जंतू, न किंचि भावं अवरज्झई से ॥ ९० ॥
एगंतरत्तो रुइरंसि भावे, अतालिसे से कुणई पओसं।
दुक्खस्स संपीलमुवेइ बाले, न लिप्पई तेण मुणी विरागो ॥ ९१ ॥

अर्थ—अहीं (अतालिसे) अतादृशे एटले तेवा प्रकारना रुचिर न होय एवा (भावे) भावने विषे एटले भावना विषयवाळी वस्तुने विषे " हमणां मने आ अनिष्ट वस्तुनुं स्मरण केम थयुं ? " इत्यादिक विचारी तेना पर द्वेष पामे छे. ९१.

भावाणुगासाणुगए अ जीवे, चराचरे हिंसइऽणेगरूवे ।
चित्तेहिं ते परितावेइ बाले, पीलेइ अत्तट्ठगुरू किलिट्ठे ॥ ९२ ॥

अर्थ—" आ औषधवडे हुं वशीकरण करुं, आ औषधवडे सुवर्णसिद्धि करुं, आ औषधिवडे पुत्र थशे. " इत्यादि चिंतवन करी अनेक प्रकारना चराचर जीवोनी हिंसा करे छे. अथवा " मारा चित्तनी पीडा नाश पामो अने मन प्रसन्न रहो " इत्यादिक विचारी होम विगेरेमां प्रवृत्त थइ अनेक चराचर जीवोनी हिंसा करे छे. ९२.

भावाणुवाए ण परिग्गहेण, उप्पायणे रक्खणसन्निओगे ।
वए विओगे अ कहं सुहं से, संभोगकाले अ अतित्तिलाभे ॥ ९३ ॥

भावे अतित्ते अ परिग्गहे अ, सत्तोवसत्तो न उवेइ तुट्ठिं ।
अतुट्ठिदोसेण दुही परस्स, लोभाविले आययई अदत्तं ॥ ९४ ॥

अर्थ—पोतानो अभिप्राय-पोतानी इच्छा सिद्ध करवा-पूर्ण करवा माटे अदत्तनुं पण ग्रहण करे छे. १४.

तण्हाभिभूअस्स अदत्तहारिणो, भावे अतित्तस्स परिग्गहे अ।
मायामुसं वड्ढइ लोभदोसा, तत्थावि दुक्खा न विमुच्चई से ॥ १५ ॥
मोसस्स पच्छा य पुरत्थओ अ, पओगकाले अ दुही दुरंते।
एवं अदत्ताणि समाययंतो, भावे अतित्तो दुहिओ अणिस्सो ॥ १६ ॥
भावाणुरत्तस्स नरस्स एवं, कत्तो सुहं होज्ज कयाइ किंचि।
तत्थोवभोगेऽवि किलेसदुक्खं, निव्वत्तए जस्स कए ण दुक्खं ॥ १७ ॥
एमेव भावम्मि गओ पओसं, उवेइ दुक्खोहपरंपराओ।
पदुट्ठचित्तो अ चिणाइ कम्मं, जं से पुणो होइ दुहं विवागे ॥ १८ ॥

अर्थ—(भावम्मि पओसं गओ) भावने विषे प्रद्वेष पामेलो एटले अनिष्ट वस्तुनुं स्मरण थाय त्यारे ते विचारे के—"आ वस्तुनुं नाम पण मने न सांभरो." इत्यादिक विचारी तेनापर द्वेष पामे छे. १८.

भावे विरत्तो मणुओ विसोगो, एएण दुक्खोहपरंपरेण ।
न लिप्पई भवमज्झेऽवि संतो, जलेण वा पुक्खरिणीपलासं ॥ ९९ ॥ ६ ॥

अर्थ—भावने विषे विरक्त एटले इष्ट एवी मनोज्ञ वस्तुने विषे राग रहित तथा अनिष्ट एवी अमनोज्ञ वस्तुने विषे द्वेष रहित एवो मनुष्य संसारने विषे रहेतो सतो पण रागद्वेषरूपी कारणना अभावथी शोक रहित सतो उपर कहेली दुःखना समूहनी परंपराए करीने जेम पुष्करणीमां रहेलुं कमळनुं पत्र पाणीवडे लेपातुं नथी तेम लेपातो नथी. ९९.

(उपर प्रमाणे पांच इंद्रियो तथा मन संबंधी ७८ गाथाओनो अर्थ बराबर समजी लेवो.)

आ ज अर्थने संक्षेपथी कहे छे.—

एविंदियत्था य मणस्स अत्था, दुक्खस्स हेउं मणुअस्स रागिणो ।
ते चेव थोवं पि कयाइ दुक्खं, न वीअरागस्स करिंति किंचि ॥ १०० ॥

अर्थ—(एव) आ प्रमाणे (इंदियत्था य) इंद्रियोना रूपादिक विषयो तथा (मणस्स अत्था) मनना स्मरणादिक विषयो तथा उपलक्षणथी इंद्रियो अने मन पोते पण (रागिणो) रागी अने उपलक्षणथी द्वेषी एवा (मणुअस्स) मनुष्यने (दुक्खस्स) दुःखना (हेऊ) हेतुरूप थाय छे. अने (ते चेव) ते ज विषयो (वीअरागस्स) रागद्वेष रहित एवा पुरुषने

र्पि) मन के शरीर संबंधी कोइ पण (थोवं पि) थोडुं पण (दुक्खं) दुःख (कयाइ) कदापि (न करिंति)
ा नथी. १००.

अहीं कोइ शंका करे के—काम भोग विद्यमान सते कोइ पण मनुष्य वीतराग संभवतो नथी, तो तेने दुःखनो अभाव
ीते थाय ? आनो उत्तर आपे छे.—

न कामभोगा समयं उविंति, न यावि भोगा विगइं उविंति ।
जे तप्पओसी अ परिग्गही अ, सो तेसु मोहा विगइं उवेइ ॥ १०१ ॥

र्थ—(कामभोगा) कामभोग पोते (समयं) समताने एटले रागद्वेषना अभावने (न उविंति) पामता नथी
ामभोग पोते रागद्वेषना अभाव प्रत्ये कारणरूप थता नथी. जो तेम थतुं होय तो तो कोइ पण प्राणी रागद्वेषवाळो
हीं. (यावि) तेम ज वळी (भोगा) कामभोग पोते (विगइं) क्रोधादिक विकृति प्रत्ये पण (न उविंति)
ी—कारणरूप थता नथी. जो कदाच केवळ कामभोगो ज क्रोधादिक विकारना कारण होय तो कोइ पण प्राणी
त थाय ज नहीं. त्यारे तेनो हेतु कोण छे ? ते कहे छे.—(जे) जे माणस (तप्पओसी अ) ते विषयो उपर
 (परिग्गही अ) परिग्रहनी बुद्धिवाळो एटले रागवाळो होय, (सो) ते मनुष्य (तेसु) ते विषयो उपर
ी एटले रागद्वेषरूपी मोहनीय कर्मथी (विगइं उवेइ) क्रोधादिक विकृतिने पामे छे. अर्थात् जे रागद्वेष
न समताने पामे छे. १०१.

ी विकृतिने पामे छे ? ते कहे छे.—

कोहं च माणं च तहेव मायं, लोभं दुगुंछं अरइं रइं च।
हासं भयं सोग पुमित्थिवेअं, नपुंसवेअं विविहे अ भावे ॥ १०२ ॥
आवज्जई एवमणेगरूवे, एवंविहे कामगुणेसु सत्तो।
अन्ने अ एअप्पभवे विसेसे, कारुण्णदीणे हिरिमे वइस्से ॥ १०३ ॥

—(कोहं च) क्रोधने, (माणं च) मानने, (तहेव) तथा (मायं) मायाने, (लोभं) लोभने, (दुगुंछं) -जुगुप्साने, (अरइं) अरतिने, (रइं च) रतिने, (हासं) हास्यने, (भयं) भयने, (सोग) शोकने, (पुमि-) पुरुषवेदने, स्त्रीवेदने, (नपुंसवेअं) नपुंसकवेदने, (विविहे अ) तथा विविध प्रकारना हर्ष शोकादिक)भावोने (एवं) आ रीते (अणेगरूवे) अनेक भेदवाळा (एवंविहे) आवा प्रकारना विकारोने (कामगुणेसु) ोने विषे (सत्तो) आसक्त थयेलो अने उपलक्षणथी द्विष्ट थयेलो प्राणी (आवज्जई) पामे छे. तथा (कारुण्णदीणे) करवा लायक दीन एटले अत्यंत दीन, (हिरिमे) लज्जावान अने (वइस्से) द्वेष पाम्यो सतो ते प्राणी (अन्ने बीजा पण (एअप्पभवे) ते क्रोधादिकथी उत्पन्न थता (विसेसे) परिताप अने दुर्गतिपात विगेरेरूप विशेषोने छे. १०२–१०३.

करीने बीजी रीते रागने उद्धार करवाना उपायने अने तेथी विपरीत वर्तवाथी थता दोषने कहे छे.—

कप्पं न इच्छिज्ज सहायलिच्छू, पच्छाणुतावेण तवप्पभावं ।
एवं विआरे अमिअप्पयारे, आवज्जई इंदियचोरवस्से ॥ १०४ ॥

अर्थ—साधु (सहायलिच्छू) " आ शिष्य मारुं विश्रामणादिक कार्य करशे " ए प्रमाणे विचारी (कप्पं) वैयावच्च करवामां समर्थ एवा पण शिष्यने (न इच्छेअ) न इच्छे, तो पछी अकल्प—असमर्थने तो शानो ज इच्छे ? तेमज (पच्छाणुतावेण) दीक्षा ग्रहण कर्या पछी " में आवुं कष्ट शामाटे अंगीकार कर्युं ? " इत्यादिक पश्चात्तापे करीने अथवा बीजा कोइ कारणथी (तवप्पभावं) तपना प्रभावने एटले आलोकमां ज आमर्षौषध्यादिक लब्धिने अने परलोकमां भोगादिकने पण न इच्छे. कारण के (एवं) आ प्रकारे इच्छवाथी (इंदियचोरवस्से) इंद्रियोरूपी चोरने वश थयेलो साधु (अमिअप्पयारे) घणा प्रकारना (विआरे) विकारोने—दोषोने (आवज्जई) पामे छे. १०४.

आ ज विषयने दृढ करवा माटे विकारोथी बीजा दोषोनी उत्पत्ति कहे छे.—

तओ से जायंति पओअणाइं, निमज्जिउं मोहमहण्णवम्मि ।
सुहेसिणो दुक्खविणोअणट्ठा, तप्पच्चयं उज्जमए अ रागी ॥ १०५ ॥

अर्थ—(तओ) कषाय अने वेदादिकनी प्राप्ति थया पछी (सुहेसिणो) सुखनी इच्छावाळा (से) तेने एटले इंद्रियो-

रूपी चोरने वश थयेलाने (मोहमहण्णवम्मि) मोहरूपी महासागरने विषे (निमज्जिउं) डुबाववा माटे (दुक्खविणोअणट्ठा) मानी लीधेला दुःखना विनाशने अर्थे (पओअणाइं) विषयसेवा अने हिंसा विगेरे प्रयोजनो (जायंति) उत्पन्न थाय छे. अर्थात् सुखनी इच्छाथी दुःखनो नाश करवा माटे विषयसेवादिकमां प्रवर्ते छे, परंतु ते तो उलटां दुःखनां ज कारण छे. तेथी करीने (तप्पच्चयं) ते विषयसेवादिकने निमित्ते (रागी) रागी अने उपलक्षणथी द्वेषी एवो सतो ज (उज्जमए य) उद्यम करे छे. कारण के राग द्वेष ज समग्र अनर्थना हेतु छे. १०५.

राग द्वेष ज अनर्थना हेतु केम छे ? ते उपर कहे छे.—

विरज्जमाणस्स य इंदिअत्था, सद्दाइया तावइअप्पयारा ।
न तस्स सव्वेऽवि मणुन्नयं वा, निव्वत्तयंती अमणुन्नयं वा ॥ १०६ ॥

अर्थ—(तावइअप्पयारा) जेटला प्रकारो खर मृदु विगेरे पूर्वे कहेला छे तेटला प्रकारना (सद्दाइआ) शब्दादिक-शब्द, रूप, रस, गंध अने स्पर्श ए (सव्वेऽवि) सर्वे (इंदिअत्था) इंद्रियोना विषयो (विरज्जमाणस्स य) राग रहित तथा उपलक्षणथी द्वेष रहित एवा (तस्स) ते पुरुषने (मणुन्नयं वा) मनोज्ञपणुं के (अमणुन्नयं वा) अमनोज्ञपणुं कांइ पण (न निव्वत्तयंती) उत्पन्न करता नथी. अर्थात् जे रागद्वेष रहित होय तेने विषयो शुं करी शके ? १०६.

आ प्रमाणे रागद्वेषना तथा तेना उपादान कारणरूप मोहना उद्धारनो उपाय कह्यो. हवे तेनो उपसंहार-समाप्ति करे छे.

एवं ससंकप्पविकप्पणासु, संजायए समयमुवट्ठिअस्स ।
अत्थे अ संकप्पयओ तओ से, पहीअए कामगुणेसु तण्हा ॥ १०७ ॥

अर्थ—(एवं) आ प्रकारे (ससंकप्पविकप्पणासु) पोताना संकल्प एटले राग, द्वेष अने मोहरूप अध्यवसाय, तेनी विकल्पनाने विषे एटले रागादिक ज समग्र दोषनुं मूळ कारण छे एवी भावनाने विषे (उवट्ठिअस्स) उद्यमवंत थयेला (अत्थे अ) तथा अर्थने एटले रूपादिक इंद्रियोना विषयोने (संकप्पयओ) " आ विषयो कांइ कर्मबंधना हेतु नथी, परंतु रागद्वेषादिक कर्मबंधना हेतु छे " एम संकल्प करता—चिंतवन करता एवा पुरुषने (समयं) समता एटले मध्यस्थता (संजायए) उत्पन्न थाय छे, अने (तओ) ते समताथी (से) तेनी (कामगुणेसु तण्हा) कामभोग संबंधी तृष्णा (पहीअए) क्षीण थाय छे. १०७,

त्यारपछी ते शुं करे छे ? ते कहे छे.—

स वीअरागो कयसव्वकिच्चो, खवेइ नाणावरणं खणेणं ।
तहेव जं दंसणमावरेइ, जं चंतरायं पकरेइ कम्मं ॥ १०८ ॥

अर्थ—(स) ते तृष्णा रहित पुरुष (वीअरागो) वीतराग थाय छे. कारण के तृष्णा एटले लोभ, तेनो क्षय थवाथी क्षीणमोह गुणस्थानक प्राप्त थाय छे. तेथी ते वीतराग थइ शके छे, तथा ते पुरुष (कयसव्वकिच्चो) कर्यां छे सर्व कृत्यो

जेणे एवा पुरुषनी जेवो थयो थको (नाणावरणं) ज्ञानावरणं-ज्ञानावरणीय कर्मने, (तहेव) तथा (जं) जे कर्म (दंसणं आवरेइ) दर्शनने आवरे छे ते दर्शनावरणीय कर्मने, (जं च) तथा जे कर्म (अंतरायं) दानादिकना अंतरायने (पकरेइ) करे छे, ते (कम्मं) कर्मने एटले अंतराय कर्मने (खणेणं) एक क्षणमां ज (खवेइ) खपावे छे. १०८.

ते कर्मोनो क्षय थवाथी कयो गुण प्राप्त थाय छे ? ते कहे छे—

सव्वं तओ जाणइ पासई अ, अमोहणे होई निरंतराए ।
अणासवे झाणसमाहिजुत्ते, आउक्खए मोक्खमुवेइ सुद्धे ॥ १०९ ॥

अर्थ—(तओ) त्यारपछी एटले ज्ञानावरणीयादिक कर्मनो क्षय थयेथी (सव्वं) सर्वने (जाणइ) विशेष प्रकारे जाणे छे, (पासइ अ) सामान्य प्रकारे जुए छे अर्थात् सर्वज्ञ अने सर्वदर्शी थाय छे. तथा (अमोहणे) मोह रहित, (निरंतराए) अंतराय रहित अने (अणासवे) कर्मबंधना हेतुरूप जे हिंसादिक आश्रवो तेणे करीने रहित एवो (होइ) थाय छे. त्यारपछी (झाणसमाहिजुत्ते) शुक्लध्यानवडे जे समाधि एटले अत्यंत स्वस्थता तेणे करीने युक्त एवो सतो (आउक्खए) आयुष्यनो अने उपलक्षणथी नाम, गोत्र, तथा वेदनीय कर्मनो क्षय थये सते (सुद्धे) शुद्ध-कर्ममळ रहित एवो ते (मोक्खं उवेइ) मोक्षने पामे छे. १०९.

मोक्षमां गयेलो ते केवो थाय छे ? ते कहे छे—

सो तस्स सव्वस्स दुहस्स मुक्को, जं बाहई सययं जंतुमेअं।
दीहामयविप्पमुक्को पसत्थो, तो होइ अच्चंतसुही कयत्थी ॥ ११० ॥

अर्थ—(सो) मोक्षमां गयेलो ते (जं) जे दुःख (एअं जंतुं) आ संसारना जीवने (सययं) निरंतर (बाहई) पीडा उपजावे छे, (तस्स सव्वस्स दुहस्स) ते सर्व दुःखथी (मुक्को) मुक्त थाय छे, तथा (दीहामयविप्पमुक्को) दीर्घस्थितिवाळा कर्मरूपी व्याधिथी मुक्त थाय छे, अने तेथी करीने (पसत्थो) प्रशंसाने लायक थाय छे, (तो) अने त्यारपछी एटले कर्मव्याधिवडे मुक्त थवाथी (अच्चंतसुही) अत्यंत सुखी अने (कयत्थी) कृतार्थ (होइ) थाय छे. ११०. हवे आ अध्ययनने समाप्त करे छे—

अणाईकालप्पभवस्स एसो, सव्वस्स दुक्खस्स पमोक्खमग्गो।
विआहिओ जं समुवेच्च सत्ता, कमेण अच्चंतसुही हवंति त्ति बेमि ॥ १११ ॥

अर्थ—(एसो) आ आखा अध्ययनमां कह्यो ते (अणाइकालप्पभवस्स) अनादिकाळथी उत्पन्न थयेला (सव्वस्स दुक्खस्स) सर्व दुःखना (पमोक्खमग्गो) मोक्षनो मार्ग (विआहिओ) तीर्थंकरोए कह्यो छे, के (जं) जे मार्गने (समुवेच्च) सम्यक् प्रकारे पामीने (सत्ता) प्राणीओ (कमेण) अनुक्रमे उत्तरोत्तर गुणस्थानने पामी (अच्चंतसुही) अत्यंत सुखी (हवंति) थाय छे. (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं. ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. १११.

॥ इति द्वात्रिंशत्तममध्ययनम् ॥ ३२.

अथ कर्मप्रकृति नामनुं तेत्रीशमुं अध्ययन. ३३.

बत्रीशमा अध्ययनमां प्रमादनां स्थानो कह्यां, ते स्थानोवडे कर्म बंधाय छे तेथी आ अध्ययनमां कर्मनुं स्वरूप बतावे छे. आ संबंधथी आवेला आ अध्ययननुं आ प्रथम सूत्र छे—

अट्ठ कम्माइं वोच्छामि, आणुपुव्विं जहक्कमं ।
जेहिं बद्धो अयं जीवो, संसारे परिअत्तइ ॥ १ ॥

अर्थ—(अट्ठ) आठ (कम्माइं) कर्मोने (जहक्कमं) अनुक्रमे एटले जेवो क्रम कह्यो छे ते प्रमाणे (आणुपुव्विं) परिपाटीए करीने (वोच्छामि) हुं कहीश के (जेहिं) जे कर्मोवडे (बद्धो) बंधायेलो (अयं जीवो) आ जीव (संसारे) संसारने विषे (परिअत्तइ) भ्रमण करे छे. १.

आठ कर्मनां नाम कहे छे—

नाणस्सावरणिज्जं, दंसणावरणं तहा । वेअणिज्जं तहा मोहं, आउकम्मं तहेव य ॥ २ ॥
नामकम्मं च गोत्तं च, अंतरायं तहेव य । एवमेआइं कम्माइं, अट्ठेव उ समासओ ॥ ३ ॥

अर्थ—(नाणस्स आवरणिज्जं) ज्ञानने आवरण करनारुं एटले ज्ञानावरणीय १, (दंसणावरणं) दर्शनावरणीय २,

(तहा) तथा (वेअणिज्जं) वेदनीय ३, (तहा मोहं) तथा मोहनीय ४, (आउकम्मं) आयुकर्म ५, (तहेव य) तथा वळी (नामकम्मं च) नामकर्म ६, (गोत्तं च) गोत्रकर्म ७, (अंतरायं तहेव य) तथा वळी अंतराय कर्म ८, (एवं) ए प्रमाणे (एआइं) आ (कम्माइं) कर्मो (अट्ठेव उ) आठ ज (समासओ) संक्षेपथी कह्यां छे. २-३.

हवे ते आठ कर्मनी उत्तर प्रकृतिओ कहे छे—

नाणावरणं पंचविहं, सुअं आभिणिबोहिअं । ओहिनाणं तइयं, मणनाणं च केवलं ॥ ४ ॥

अर्थ—(नाणावरणं) ज्ञानावरणीय कर्म (पंचविहं) पांच प्रकारनुं छे, ते आ प्रमाणे—(सुअं) श्रुत एटले श्रुतज्ञानावरण १, (आभिणिबोहिअं) आभिनिबोधिक एटले मतिज्ञानावरण २, (ओहिनाणं) अवधिज्ञानावरण ए (तइयं) त्रीजुं छे ३, (मणनाणं) मनःपर्यायज्ञानावरण ४, (च) अने (केवलं) केवळज्ञानावरण ५. आ पांच ज्ञानावरणीय कर्मनी उत्तर प्रकृति छे. ४.

हवे दर्शनावरणनी उत्तर प्रकृतिओ कहे छे—

निद्दा तहेव पयला, निद्दानिद्दा य पयलपयला य। तत्तो अ थीणगिद्धी उ, पंचमा होइ नायव्वा ॥५॥
चक्खुमचक्खुओहिस्स, दंसणे केवले अ आवरणे। एवं तु नवविगप्पं, नायव्वं दंसणावरणं ॥६॥

अर्थ—(निद्दा) निद्रा १, (तहेव) तथा (पयला) प्रचला २, (निद्दानिद्दा य) निद्रानिद्रा ३, तथा (पयल-

पयला य) प्रचलाप्रचला ४, (तत्तो अ) त्यारपछी (थीणगिद्धी उ) स्त्यानगृद्धि अथवा स्त्यानर्द्धि ५, (पंचमा) पांचमी (होइ) छे एम (नायव्वा) जाणवुं. तथा (चक्खुअचक्खुओहिस्स) चक्षु, अचक्षु अने अवधिना (दंसणे) दर्शनने विषे एटले चक्षुदर्शन—चक्षुवडे सामान्य रीते रूपनुं ग्रहण ६, अचक्षु एटले चक्षु सिवायना चार इंद्रियो तथा मन वडे तेना विषयनुं ग्रहण ते अचक्षुदर्शन ७, अवधिदर्शन ८, (केवले अ) तथा केवळदर्शन ९, आ चारने विषे (आवरणे) आवरण, (एवं तु) आ प्रकारे एटले निद्रादिक पांच निद्रा अने चक्षु आदिक चारनुं आवरण ए (नवविगप्पं) नव प्रकारनुं (दंसणावरणं) दर्शनावरण (नायव्वं) जाणवुं. ५–६.

हवे वेदनीय कर्मनी उत्तर प्रकृति कहे छे.—

वेअणिअं पि अ दुविहं, सायमसायं च आहिअं । सायस्स उ बहू भेआ, एमेवासायस्स वि ॥ ७ ॥

अर्थ—(वेअणिअं पि अ) वळी वेदनीय कर्म (दुविहं) बे प्रकारनुं छे, ते (सायं) सात एटले शरीर अने मन संबंधी सुख (असायं च) तथा असात एटले शरीर अने मन संबंधी दुःख, (आहिअं) कह्युं छे. तेमां (सायस्स उ) सातवेदनीयना (बहू भेआ) घणा भेदो छे, (एमेव) ए ज प्रमाणे (असायस्स वि) असातवेदनीयना पण घणा भेदो छे. ७.

हवे मोहनीय कर्मनी उत्तर प्रकृति कहे छे.—

मोहणिज्जं पि दुविहं, दंसणे चरणे तहा । दंसणे तिविहं वुत्तं, चरणे दुविहं भवे ॥ ८ ॥

अर्थ—(मोहणिज्जं पि) मोहनीय कर्म पण (दुविहं) बे प्रकारनुं छे, ते आ प्रमाणे—(दंसणे) दर्शनने विषे (चरणे तहा) तथा चारित्रने विषे एटले दर्शनमोहनीय अने चारित्रमोहनीय. तेमां (दंसणे) दर्शनना–समकितना विषयवाळुं मोहनीय (तिविहं) त्रण प्रकारनुं (वुत्तं) कह्युं छे. अने (चरणे) चारित्रना विषयवाळुं मोहनीय (दुविहं भवे) बे प्रकारनुं छे. ८.

प्रथम दर्शनमोहनीयना त्रण भेद कहे छे—

सम्मत्तं चेव मिच्छत्तं, सम्मामिच्छत्तमेव य। एआओ तिण्णि पयडीओ, मोहणिज्जस्स दंसणे ॥९॥

अर्थ—(सम्मत्तं) शुद्ध दळीयांरूप समकित मोहनी, तेनो उदय थये सते शुद्ध तत्त्वनी रुचि थाय छे १, (चेव) तथा (मिच्छत्तं) अशुद्ध दळीयांरूपी मिथ्यात्व मोहनी, तेनो उदय थये सते अतत्त्वने विषे तत्त्वनी बुद्धि थाय छे २, (सम्मामिच्छत्तमेव य) तथा शुद्धाशुद्ध दळीयांरूप सम्यग्मिथ्यात्व–मिश्रमोहनी, तेनो उदय थये सते बन्ने प्रकारनो स्वभाव थाय छे. ३ (एआओ) आ (तिण्णि) त्रण (पयडीओ) प्रकृतिओ (मोहणिज्जस्स) मोहनीय संबंधी (दंसणे) दर्शनने विषे एटले दर्शनमोहनीयनी छे. ९.

हवे चारित्रमोहनीयना बे भेद कहे छे.—

चरित्तमोहणं कम्मं, दुविहं तु विआहिअं। कसायवेअणिज्जं तु, नोकसायं तहेव य ॥ १० ॥

अर्थ—(चरित्तमोहणं) जेनावडे चारित्रने विषे मोह पमाय ते चारित्रमोहनीय नामनुं (कम्मं) कर्म (दुविहं तु) बे प्रकारनुं (वियाहिअं) कह्युं छे. ते आ प्रमाणे—(कसायवेअणिज्जं तु) क्रोधादिक कषायरूपे जे वेदाय—अनुभवाय ते कषायवेदनीय, (तहेव य) तथा (नोकसायं) कषायना सहचारीओ हास्यादिक नव ते नोकषाय, ते रूपे जे वेदाय ते नोकषायवेदनीय कहेवाय छे. १०.

कषाय अने नोकषायना भेदो कहे छे.—

सोलसविह भेएणं, कम्मं तु कसायजं । सत्तविह नवविहं वा, कम्मं नोकसायजं ॥ ११ ॥

अर्थ—(कसायजं) कषायथी उत्पन्न थयेलुं (कम्मं तु) कर्म (भेएणं) भेदे करीने (सोलसविह) सोळ प्रकारनुं छे. अने (नोकसायजं) नोकषायथी उत्पन्न थयेलुं (कम्मं) कर्म (सत्तविह) सात प्रकारनुं (नवविहं वा) अथवा नव प्रकारनुं छे. तेमां कषाय चार छे—क्रोध, मान, माया अने लोभ. ते दरेकना चार चार भेद छे.—अनंतानुबंधी, अप्रत्याख्यानी, प्रत्याख्यानावरण अने संज्वलन. नोकषाय कर्म सात प्रकारनुं आ प्रमाणे छे.—हास्य १, रति २, अरति ३, भय ४, शोक ५, जुगुप्सा ६ अने वेद ७. तेमां त्रणे वेदने जूदा गणीए त्यारे हास्यादि छ अने त्रण वेद मळी नव थाय छे. ११.

हवे आयुष्य कर्मनी उत्तर प्रकृति कहे छे.—

नेरइअतिरिक्खाउं, मणुस्साउं तहेव य । देवाउअं चउत्थं तु, आउकम्मं चउव्विहं ॥ १२ ॥

अर्थ—(नेरइअतिरिक्खाउं) नरकायु, तिर्यगायु, (मणुस्साउं) मनुष्यायु, (तहेव य) तथा वळी (देवाउअं) देवायु ए (चउत्थं तु) चोथुं छे. ए प्रमाणे (आउकम्मं) आयुकर्म (चउव्विहं) चार प्रकारनुं छे. १२.

हवे नामकर्मनी उत्तर प्रकृति कहे छे.—

नामकम्मं तु दुविहं, सुहं असुहं च आहिअं । सुहस्स य बहू भेया, एमेव असुहस्स वि ॥ १३ ॥

अर्थ—(नामकम्मं तु) नामकर्म (दुविहं) बे प्रकारनुं (सुहं) शुभ (असुहं च) अने अशुभ (आहिअं) कह्युं छे. तेमां (सुहस्स य) शुभ नामकर्मना (बहू भेया) घणा भेदो छे, (एमेव) ए ज प्रमाणे (असुहस्स वि) अशुभना पण घणा भेदो छे. तेमां शुभ नामना उत्तर भेद अनंत छे तोपण मध्यम विवक्षा करीए तो साडत्रीश भेदो छे, ते आ प्रमाणे—नरगति १, देवगति २, पंचेंद्रिय जाति ३, औदारिकादिक पांच शरीर ८, पहेला त्रण शरीरना अंगोपांग ११, प्रशस्त वर्णादि चार १५, पहेलुं संस्थान १६, पहेलुं संहनन १७, मनुष्यानुपूर्वी १८, देवानुपूर्वी १९, अगुरुलघु २०, पराघात २१, उच्छ्वास २२, आतप २३, उद्योत २४, प्रशस्त विहायोगति २५, त्रस २६, बादर २७, पर्याप्त २८, प्रत्येक २९, स्थिर ३०, शुभ ३१, सुभग ३२, सुस्वर ३३, आदेय ३४, यश ३५, निर्माण ३६ अने तीर्थंकर नाम ३७, आ प्रकृतिओ शुभ अनुभाववाळी होवाथी शुभ छे. तथा अशुभ नामना पण मध्यम विवक्षाए करीने चोत्रीश भेद छे, ते आ प्रमाणे.—नरकगति १, तिर्यग्गति २, एकेंद्रियादिक जाति चार ६, पहेला विनाना पांच संहनन ११, पहेला विनाना पांच संस्थान १६, अप्रशस्त वर्ण, गंध, रस, स्पर्श ए चार २०, नरकानुपूर्वी २१, तिर्यगानुपूर्वी २२, उपघात २३, अप्रशस्त विहायो-

गति २४, तथा त्रसदशकथी विपरीत एवुं स्थावरदशक १०. आ प्रकृतिओ कालकरणुं विगेरे अशुभना कारण होवाथी अशुभ कहेवाय छे. १३.

हवे गोत्रकर्मनी उत्तर प्रकृति कहे छे.—

गोअकम्मं दुविहं, उच्चं नीअं च आहिअं । उच्चं अट्ठविहं होइ, एवं नीअं पि आहिअं ॥ १४ ॥

अर्थ—(गोअकम्मं) गोत्रकर्म (उच्चं नीअं च) उच्च अने नीच एम (दुविहं) बे प्रकारनुं (आहिअं) कह्युं छे. तेमां (उच्चं) उच्च गोत्रकर्म (अट्ठविहं) आठ प्रकारनुं (होइ) छे. (एवं) ए ज प्रकारे (नीअं पि) नीच गोत्रकर्म पण आठ प्रकारनुं (आहिअं) कह्युं छे. जातिमदादिक आठनो जे अभाव ते उच्चगोत्रनुं कारण छे अने जातिमदादिक आठनुं होवापणुं ए नीच गोत्रनुं कारण छे. १४. हवे अंतरायकर्मनी उत्तर प्रकृति कहे छे—

दाणे लाभे अ भोगे अ, उवभोगे वीरिए तहा । पंचविहमंतरायं, समासेण विआहिअं ॥ १५ ॥

अर्थ—(दाणे) देवालायक वस्तु आपवाने विषे, (लाभे अ) इच्छित वस्तुना लाभने विषे, (भोगे अ) एकवार भोगववा लायक पुष्पादिकने विषे, (उवभोगे) वारंवार भोगववा लायक घर, स्त्री विगेरेने विषे, (वीरिए तहा) तथा वीर्यने विषे-पराक्रमने विषे, आ रीते (पंचविहं) पांच प्रकारनुं (अंतरायं) अंतराय कर्म (समासेण) संक्षेपे करीने विआहिअं) कह्युं छे. तेमां पात्र अने देवालायक वस्तु हाजर छतां तथा दाननुं फळ जाणता छतां दान देवामां प्रवृत्ति-

इच्छा न थाय ते दानांतराय कहेवाय छे १, उदार दिलनो दातार छतां याचना करवामां कुशळ एवा पण याचकने लाभ न थाय ते लाभांतराय कहेवाय छे २, आहार अने पुष्पमाळा विगेरे भोग्यवस्तु छतां पण भोगवी न शकाय ते भोगांतराय कहेवाय छे ३, स्त्री अने वस्त्रादिक छतां पण उपभोग करी न शकाय ते उपभोगांतराय कहेवाय छे ४, तथा नीरोगी अने युवान छतां पण तृण जेवी वस्तुने वांकी पण करी न शके ते वीर्यांतराय कहेवाय छे. ५. १५.

आ प्रमाणे आठे कर्मनी उत्तर प्रकृतिओ कही, हवे आ कर्मनो विषय संपूर्ण करवा पूर्वक हवे पछी कहेवाना विषयनो संबंध कहे छे.—

एआओ मूलप्पयडीओ, उत्तराओ अ आहिआ। पएसग्गं खेत्तकाले अ, भावं चादुत्तरं सुण ॥ १६ ॥

अर्थ—(एआओ) आ (मूलप्पयडीओ) मूल प्रकृतिओ (उत्तराओ अ) तथा उत्तर प्रकृतिओ (आहिआ) कही. (अदुत्तरं) हवे पछी (पएसग्गं) प्रदेशाग्र एटले परमाणुओना परिमाणरूप द्रव्य (खेत्तकाले अ) क्षेत्र, काळ, (भावं च) अने भावने (सुण) सांभळो. १६.

तेमां प्रथम प्रदेशाग्रने कहे छे.

सव्वेसिं चेव कम्माणं, पएसग्गमणंतगं। गंठिअसत्ताईअं, अंतो सिद्धाण आहिअं ॥ १७ ॥

अर्थ—(सव्वेसिं चेव) सर्वे एवा पण (कम्माणं) कर्मना (पएसग्गं) प्रदेशाग्र एटले परमाणुओनुं परिमाण (अणंतगं)

अनंत छे. केटलुं अनंत छे? ते कहे छे.—(गंठिअसत्ताईअं) ग्रंथिक सत्त्वने ओळंगी जाय तेटलुं अनंत छे एटले के जेओ ग्रंथिदेशने पाम्या छतां पण ते ग्रंथिने भेदीने कोइपण वखत आगळ जवाना नथी तेवा अभव्योने ओळंगी जाय तेटलुं एटले अभव्योथी अनंतगुणुं आ प्रदेशाग्रनुं अनंतुं छे. तथा (अंतो सिद्धाण) सिद्धोनी अंदर (आहिअं कहुं छे एटले के सर्व सिद्धोने अनंतमे भागे कर्मना परमाणुओ छे. एक जीव एक समयमां जे कर्म बांधे छे, ते कर्मना परमाणुओनुं आ प्रमाण जाणवुं. केमके सर्व कर्मना परमाणुओ तो सर्व जीवो करतां अनंतानंतगुणा छे, तेथी आ कहेलुं परिमाण अन्यथा घटतुं नथी. १७.

हवे क्षेत्र कहे छे.—

सव्वजीवा ण कम्मं तु, संगहे छद्दिसागयं । सव्वेसु वि पएसेसु, सव्वं सव्वेण बज्झगं ॥ १८ ॥

अर्थ—(सव्वजीवा ण) सर्व जीवो (छद्दिसागयं) छए दिशामां रहेला (कम्मं तु) ज्ञानावरणादिक कर्मने—कार्मणवर्गणाने (संगहे) ग्रहण करे छे. अहीं सर्व जीवो कह्या छे तेमां द्वींद्रियादिक पंचेंद्रिय पर्यंतने माटे नियमथी जाणवुं. एकेंद्रियने आश्रीने तो अन्यथा पण संभवे छे एटले के एकेंद्रियो तो कदाचित् त्रण दिशाना, कदाचित् चार दिशाना, कदाचित् पांच दिशाना अने कदाचित् छ दिशाना कर्मपुद्गलोने ग्रहण करे छे.[1] ते ग्रहण करेलुं कर्म कोनी साथे,

१ आ त्रण, चार ने पांच दिशा लोकांतनी अपेक्षाए जाणवी.

केटलुं अने केवी रीते बंधाय छे ? ते कहे छे.—(सव्वेसु वि पएसेसु) आत्माना सर्व प्रदेशोनी साथे (सव्वं) सर्व एटले ज्ञानावरणादिकर्मोथी कोइ एक ज कर्म नहीं पण सर्व कर्म (७–८ कर्म) (सव्वेण) सर्व एटले प्रकृति, स्थिति विगेरे सर्व प्रकारे (बज्झगं) क्षीरनीरनी जेम बांधे छे–आश्लिष्ट करे छे. १८.

हवे काळ एटले कर्मनी स्थितिने कहे छे.—

उदहिसरिसनामाणं, तीसई कोडिकोडीओ । उक्कोसिआ ठिई होई, अंतोमुहुत्तं जहन्निआ ॥ १९ ॥

अर्थ—(तीसई) त्रीश (कोडिकोडीओ) कोटाकोटि (उदहिसरिसनामाणं) उदधि सदृश नामवाळानी एटले सागरोपमनी (उक्कोसिआ ठिई) उत्कृष्ट स्थिति (होई) होय छे अने (जहन्निआ) जघन्य स्थिति (अंतोमुहुत्तं) अंतर्मुहूर्तनी छे. १९.

आटली स्थिति कया कया कर्मनी छे ? ते कहे छे.—

आवरणिज्जाण दुण्हं पि, वेयणिज्जे तहेव य । अंतराए अ कम्मम्मि, ठिई एसा विआहिआ ॥ २० ॥

अर्थ—(दुण्हं पि) बन्ने (आवरणिज्जाण) आवरणने विषे एटले ज्ञानावरणीय अने दर्शनावरणीयने विषे, (वेअणिज्जे) वेदनीयने विषे, (तहेव य) तेम ज (अंतराए अ) अंतरायने विषे (कम्मम्मि) आ चार कर्मने विषे एटले ते चार कर्मनी (एसा) आ उपरनी गाथामां कहेली (ठिई) स्थिति (विआहिआ) कहेली छे. अहीं वेदनीय

कर्मनी पण जघन्य स्थिति अंतर्मुहूर्तनी कही, परंतु अन्य स्थळे तो बार मुहूर्तनी कहेली छे ते कषाय सहितने आश्री कहेली छे एम जाणवुं. ते विषे कह्युं छे के—"मोत्तुं अकसायठिइं, बार मुहुत्ता जहन्न वेअणिए" एटले "अकषायी जीवोनी स्थिति विना वेदनीय कर्मनी जघन्य स्थिति बार मुहूर्तनी छे." वळी कषायरहित सातावेदनीयनी स्थिति तो बे समयनी अहीं ज कहेली छे. तेनुं खरुं तत्त्व तो ज्ञानीगम्य छे. २०.

उदहिसरिसनामाणं, सत्तरि कोडिकोडीओ। मोहणिज्जस्स उक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निआ ॥ २१ ॥
तेत्तीससागरोवम, उक्कोसेण विआहिआ। ठिई उ आउकम्मस्स, अंतोमुहुत्तं जहन्निआ ॥ २२ ॥
उदहिसरिसनामाणं, वीसई कोडिकोडीओ। नामगोत्ताण उक्कोसा, अट्ठ मुहुत्ता जहन्निआ ॥ २३ ॥

अर्थ—(मोहणिज्जस्स) मोहनीय कर्मनी (उक्कोसा) उत्कृष्ट स्थिति (सत्तरि) सीत्तेर (कोडिकोडीओ) कोटाकोटि (उदहिसरिसनामाणं) सागरोपमनी छे अने (जहन्निआ) जघन्य स्थिति (अंतोमुहुत्तं) अंतर्मुहूर्तनी छे. २१. (आउकम्मस्स) आयुकर्मनी (ठिई उ) स्थिति (उक्कोसेण) उत्कृष्टे करीने (तेत्तीससागरोवम) तेत्रीश सागरोपमनी (विआहिआ) कही छे अने (जहन्निआ) जघन्य स्थिति (अंतोमुहुत्तं) अंतर्मुहूर्तनी कही छे. २२. (नामगोत्ताण) नामकर्म अने गोत्रकर्मनी (उक्कोसा) उत्कृष्ट स्थिति (वीसई) वीश (कोडिकोडीओ) कोटाकोटि (उदहिसरिसनामाणं) सागरोपमनी कही छे अने (जहन्निआ) जघन्य स्थिति (अट्ठ मुहुत्ता) आठ मुहूर्तनी कही छे. २३.

हवे भाव एटले अनुभाग–रस कहे छे, तेम ज प्रदेशप्रमाण पण कहे छे.—

सिद्धाणऽणंतभागो अ, अणुभागा भवंति उ । सव्वेसु वि पएसग्गं, सव्वजीवेसऽइच्छिअं ॥ २४ ॥

अर्थ—(अणुभागा) अनुभाग एटले कर्मना रसविशेषो (सिद्धाण) सिद्धोना (अणंतभागो अ) अनंतमे भागे (भवंति उ) छे. आ अनंतमो भाग पण अनंतनी संख्यावाळो ज जाणवो. तथा (सव्वेसु वि) सर्व अनुभागोने विषे पण (पएसग्गं) प्रदेशनुं परिमाण (सव्वजीवेसऽइच्छिअं) सर्व जीवोने उल्लंघन करनारुं छे एटले सर्व जीवोथी अनंतगुणुं छे. २४

हवे अध्ययनने समाप्त करवा पूर्वक उपदेश आपे छे.—

तम्हा एएसि कम्माणं, अणुभागे विआणिआ । एएसिं संवरे चेव, खवणे अ जए बुहे त्ति बेमि ॥२५॥

अर्थ—जे कारण माटे ए कर्मोना प्रकृतिबंध, स्थितिबंध विगेरे आवा प्रकारना छे (तम्हा) ते कारण माटे (एएसि कम्माणं) आ कर्मोना (अणुभागे) अनुभागने तथा उपलक्षणथी प्रदेशबंध विगेरेने (विआणिआ) विशेषे करीने एटले विपाकना कटुपणाए करीने तथा भवना कारणपणाए करीने जाणीने (एएसिं) आ नहीं ग्रहण करेला कर्मना (संवरे) संवरने विषे एटले रुंधवाने विषे–आवता रोकवाने विषे (चेव) तथा (खवणे अ) ग्रहण करेला कर्मना क्षपने विषे एटले निर्जराने विषे (बुहे) डाह्या माणसे (जए) यत्न करवो ज जोइए (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं. ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. २५. इति त्रयस्त्रिंशमध्ययनम्. ३३.

अथ लेश्या नामनुं चोत्रीशमुं अध्ययन. ३४.

तेत्रीशमा अध्ययनमां कर्मनी प्रकृतिओ कही. ते कर्मनी स्थिति लेश्याने आश्रीने थाय छे, तेथी आ अध्ययनमां लेश्यानुं स्वरूप कहे छे.—

लेसज्झयणं पवक्खामि, आणुपुव्वि जहक्कमं । छण्हं पि कम्मलेसाणं, अणुभावे सुणेह मे ॥ १ ॥

अर्थ—(लेसज्झयणं) लेश्याने कहेनारुं अध्ययन (आणुपुव्वि) आनुपूर्वीए (जहक्कमं) अनुक्रमे (पवक्खामि) हुं कहीश. ते (छण्हं पि) छए प्रकारनी (कम्मलेसाणं) कर्मनी स्थिति करनार ते ते विशिष्ट पुद्गलरूप कर्मलेश्याना (अणुभावे) अनुभावने एटले विशेष प्रकारना रसने (मे) मारी पासेथी (सुणेह) तमे सांभळो. १.

लेश्याना नामादिक कहेवाथी ज लेश्याना अनुभाव कहेला कहेवाय छे, तेथी तेना नामादिकनी प्ररूपणा करवा माटे प्रथम द्वारसूत्र कहे छे.—

णामाइं वण्णरसगंध–फासपरिणामलक्खणं ठाणं । ठिइं गइं च आउं, लेसाणं तु सुणेह मे ॥ २ ॥

अर्थ—(लेसाणं तु) लेश्याओनां (णामाइं) नाम, (वण्णरसगंधफासपरिणामलक्खणं) वर्ण, रस, गंध, स्पर्श, जघन्यादिक परिणाम, पंचाश्रवसेवादिक लक्षण, (ठाणं) उत्कर्ष अने अपकर्षरूप स्थान, (ठिइं) स्थितिनो काळ. (गइं च) नरकादिक गति–जे जे लेश्याथी जे जे गति प्राप्त थाय ते, तथा (आउं) आयुष्य एटले जेटलुं आयुष्य बाकी रहे

सते आवता भवनी लेश्यानो परिणाम थाय ते सर्व (मे सुणेह) मारी पासेथी तमे सांभळो. २.

' जे प्रकारे उद्देश कर्यो होय ते प्रकारे निर्देश करवो ' ए न्यायने अनुसारे प्रथम लेश्यानां नामो कहे छे.—

किण्हा १ नीला २ य काऊय ३, तेऊ ४ पम्हा ५ तहेव य ।
सुक्कलेसा ६ य छट्ठा उ, नामाइं तु जहक्कमं ॥ ३ ॥

अर्थ—(किण्हा) कृष्ण १, (नीला य) नील २, (काऊय) कापोत ३, (तेऊ) तेजो ४, (पम्हा) पद्म ५, (तहेव य) तथा (सुक्कलेसा य छट्ठा उ) छट्ठी शुक्ल लेश्या ६, आ प्रमाणे लेश्याओनां (नामाइं तु) नामो (जहक्कमं) अनुक्रमे जाणवां. ३.

हवे लेश्याना वर्ण कहे छे.—

जीमूतनिद्धसंकासा, गवलरिट्ठगसन्निभा । खंजंजणनयणनिभा, किण्हलेसा उ वण्णओ ॥ ४ ॥

अर्थ—(किण्हलेसा उ) कृष्णलेश्या (वण्णओ) वर्णथी (जीमूतनिद्धसंकासा) स्निग्ध मेघना जेवी छे, (गवलरिट्ठगसन्निभा) गवल एटले भेंसनुं शींगडुं अने रिष्टक एटले कागडो अथवा ते नामनुं फळ, तेना जेवी छे, तथा (खंजंजणनयणनिभा) खंज एटले गाडानो कीलं, अंजन एटले काजळ अने नयन एटले नेत्रनी कीकी, तेना जेवी छे अर्थात् अत्यंत काळी छे. ४.

नीलासोगसंकासा, चासपिच्छसमप्पभा । वेरुलियनिद्धसंकासा, नीललेसा उ वण्णओ ॥ ५ ॥

अर्थ—(नीललेसा उ) नील लेश्या (वण्णओ) वर्णथी (नीलासोगसंकासा) नील अशोकवृक्षना जेवी छे, (चासपिच्छसमप्पभा) चास पक्षीनी पांख जेवी छे, तथा (वेरुलियनिद्धसंकासा) स्निग्ध वैडूर्य रत्नना जेवी छे अर्थात् अति नील छे. ५.

अयसीपुप्फसंकासा, कोइलच्छदसन्निभा । पारेवयगीवनिभा, काउलेसा उ वण्णओ ॥ ६ ॥

अर्थ—(काउलेसा उ) कापोत लेश्या (वण्णओ) वर्णथी (अयसीपुप्फसंकासा) अळसी नामना धान्यना पुष्प जेवी छे, (कोइलच्छदसन्निभा) कोकिलच्छद एटले कोयल पक्षीनी पांख जेवी छे, तथा (पारेवयगीवनिभा) पारेवानी ग्रीवा जेवी छे. अर्थात् कांइक काळी अने कांइक राती छे. ६.

हिंगुलधाउसंकासा, तरुणाइच्चसन्निभा । सुअतुंडपईवनिभा, तेउलेसा उ वण्णओ ॥ ७ ॥

अर्थ—(तेउलेसा उ) तेजोलेश्या (वण्णओ) वर्णथी (हिंगुलधाउसंकासा) हिंगळोक अने गेरुना जेवी छे, (तरुणाइच्चसन्निभा) उगता सूर्य जेवी छे, तथा (सुअतुंडपईवनिभा) पोपटनी चांच अने प्रदीप–दीवा जेवी छे, अर्थात् राती छे. ७.

हरियालभेयसंकासा, हलिद्दाभेयसन्निभा । सणासणकुसुमनिभा, पम्हलेसा उ वण्णओ ॥ ८ ॥

अर्थ—(पम्हलेसा उ) पद्मलेश्या (वण्णओ) वर्णथी (हरियालभेयसंकासा) हडताळना ककडा जेवी छे. (हलिद्दाभेयसन्निभा) हळदरना ककडा जेवी छे, तथा (सणासणकुसुमनिभा) सण नामनुं धान्य अने असण एटले बीयक नामनुं वृक्ष तेना पुष्प जेवी छे. अर्थात् पीळी छे. ८.

संखंककुंदसंकासा, खीरधारासमप्पभा । रययहारसंकासा, सुक्कलेसा उ वण्णओ ॥ ९ ॥

अर्थ—(सुक्कलेसा उ) शुक्ल लेश्या (वण्णओ) वर्णथी (संखंककुंदसंकासा) शंख, अंक नामनो मणि अने कुंद पुष्प जेवी छे, (खीरधारासमप्पभा) दूधनी धारा जेवी छे, तथा (रययहारसंकासा) रजत एटले रुपुं अने हार एटले मोतीनी माळा तेना जेवी छे अर्थात् धोळी छे. ९.

हवे लेश्याओना रस कहे छे.—

जह कडुअतुंबगरसो, निंबरसो कडुअरोहिणिरसो वा ।
एत्तो वि अणंतगुणो, रसो उ किण्हाइ नायव्वो ॥ १० ॥

अर्थ—(जह) जेवो (कडुअतुंबगरसो) कडवा तुंबडानो रस छे, (निंबरसो) जेवो लींबडानो रस छे, (कडुअरोहिणिरसो वा) अथवा जेवो कडवी रोहिणी नामनी छालनो रस छे, (एत्तो वि) तेनाथी पण (अणंतगुणो) अनंत गुणो अधिक कडु (रसो उ) रस (किण्हाइ कृष्णलेश्यानो (नायव्वो) जाणवो. १०.

जह तिकडुअस्स य रसो, तिक्खो जह हत्थिपिप्पलीए वा ।
एत्तो वि अणंतगुणो, रसो उ नीलाइ नायव्वो ॥ ११ ॥

अर्थ—(जह) जेवो (तिकडुअस्स य) सूंठ, पीपर अने मरी ए त्रिकटुनो (रसो) रस (तिक्खो) तीखो छे, (जह हत्थिपिप्पलीए वा) अथवा गजपिपळी—पीपरनो रस जेवो तीखो छे, (एत्तो वि) तेनाथी पण (अनंतगुणो रसो उ) अनंत गुणो तिक्त रस (नीलाइ) नीललेश्यानो (नायव्वो) जाणवो. ११.

जह तरुणअंबगरसो, तुवरकविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तोऽवि अणंतगुणो, रसो उ काऊइ नायव्वो ॥ १२ ॥

अर्थ—(जह) जेवो (तरुणअंबगरसो) काचा आम्रफळनो रस छे, (वावि) अथवा (जारिसओ) जेवो (तुवर-कविट्ठस्स) कषायला एटले तुरा कपित्थफळनो—कोठानो रस छे, (एत्तो वि अणंतगुणो रसो उ) तेनाथी पण अनंत गुणो रस (काऊइ) कापोत लेश्यानो (नायव्वो) जाणवो. १२.

जह परिणयंबगरसो, पक्ककविट्ठस्स वावि जारिसओ ।
एत्तोऽवि अणंतगुणो, रसो उ तेऊइ नायव्वो ॥ १३ ॥

अर्थ—(जह) जेवो (परिणयंबगरसो) पाकेला आम्रफळनो रस छे, (वावि) अथवा (जारिसओ) जेवो (पक्क-कविट्ठस्स) पाका कपित्थनो रस कांइक मधुर अने कांइक खाटो छे, (एत्तो०) तेनाथी पण अनंतगुणो रस (तेऊइ नायव्वो) तेजोलेश्यानो जाणवो. १३.

वरवारुणीइ व रसो, विविहाण व आसवाण जारिसओ ।
महुमेरगस्स व रसो, एत्तो पम्हाए परएणं ॥ १४ ॥

अर्थ—(वरवारुणीइ व) उत्तम जातिनी मदिरानो (जारिसओ) जेवो (रसो) रस छे, अथवा (विविहाण व) विविध प्रकारना (आसवाण) आसवोनो एटले पुष्पथी उत्पन्न थता मद्योनो जेवो रस छे, अथवा (महुमेरगस्स व) मधु एटले मद्यविशेष अने मैरेय एटले सरको, तेनो जेवो (रसो) रस छे, (एत्तो) एनाथी (परएणं) अनंतगुणो अधिक रस (पम्हाए) पद्मलेश्यानो छे. आ रस कांइक खाटो, कांइक तुरो अने कांइक मधुर होय छे. १४.

खज्जूरमुद्दियरसो, खीररसो खंडसक्कररसो वा । एत्तोऽवि अणंतगुणो, रसो उ सुक्काइ नायव्वो ॥ १५ ॥

अर्थ—(खज्जूरमुद्दियरसो) खजुरनो अने द्राक्षनो रस, (खीररसो) खीरनो रस (खंडसक्कररसो वा) अथवा खांड साकरनो रस जेवो मिष्ट छे, (एत्तोऽवि०) एनाथी पण अनंतगुणो रस (सुक्काइ) शुक्ललेश्यानो जाणवो. १५.

हवे लेश्यानो गंध कहे छे.—

जह गोमडस्स गंधो, सुणगमडस्स व जहा अहिमडस्स ।
एत्तोऽवि अणंतगुणो, लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥ १६ ॥

अर्थ—(जह) जेवो (गोमडस्स) गायना शबनो (गंधो) गंध छे, अथवा (सुणगमडस्स)कूतराना शबनो (व) अथवा (जहा) जेवो (अहिमडस्स) सर्पना शबनो गंध छे, (एत्तोऽवि) एनाथी पण (अणंतगुणो) अनंतगुणो (अप्पसत्थाणं) अप्रशस्त एटले अशुभ (लेसाणं) कृष्ण, नील अने कापोत ए त्रण लेश्याओनो गंध छे. १६.

जह सुरहिकुसुमगंधो, गंधवासाण पिस्समाणाणं ।
एत्तोऽवि अणंतगुणो, पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥ १७ ॥

अर्थ—(जह) जेवो (सुरहिकुसुमगंधो) सुगंधी पुष्पोनो गंध छे, अथवा (पिस्समाणाणं) पीसाता एवा (गंधवासाण) कोष्ठपुटपाकथी उत्पन्न थयेला गंधद्रव्यनो अने बीजा सुवासित द्रव्योनो जेवो गंध छे, (एत्तोऽवि) एनाथी पण (अणंतगुणो) अनंतगुणो शुभगंध (पसत्थलेसाण तिण्हं पि) तेजस्, पद्म अने शुक्ल ए त्रणे प्रशस्त लेश्यानो छे. अहीं अशुभ तथा शुभ सर्व लेश्यानो गंध परस्पर–अंदर अंदर ओछो वधतो कह्यो नथी ते स्वयमेव जाणी लेवो. १७.

हवे लेश्याओनो स्पर्श कहे छे.—

जह करगयस्स फासो, गोजिब्भाए व सागपत्ताणं । एत्तोऽवि अणंतगुणो, लेसाणं अप्पसत्थाणं ॥१८॥

अर्थ—(जह) जेवो (करगयस्स) करवतनो (फासो) स्पर्श छे, अथवा (गोजिब्भाए) गायनी जिव्हानो स्पर्श छे, (व) अथवा (सागपत्ताणं) शाक नामना वृत्तना पांदडानो जेवो कर्कश स्पर्श छे, (एत्तोऽवि अणंतगुणो) एनाथी पण अनंतगुणो कर्कश स्पर्श (लेसाणं अप्पसत्थाणं) अप्रशस्त त्रण लेश्यानो छे. १८.

जह बूरस्स व फासो, नवणीअस्स व सिरीसकुसुमाणं ।
एत्तोऽवि अणंतगुणो, पसत्थलेसाण तिण्हं पि ॥ १९ ॥

अर्थ—(जह) जेवो (बूरस्स व) बूर नामनी वनस्पतिनो (फासो) कोमळ स्पर्श छे, अथवा (नवणीअस्स व) माखणनो अथवा (सिरीसकुसुमाणं) शिरीषना पुष्पनो स्पर्श जेवो कोमळ छे, (एत्तोऽवि अणंतगुणो) एनाथी पण अनंतगुणो कोमळ (पसत्थलेसाण तिण्हं पि) त्रणे प्रशस्त लेश्यानो स्पर्श छे. १९.

हवे लेश्यानो परिणाम कहे छे.—

तिविहो व नवविहो वा, सत्तावीसइविहिक्कसीओ वा ।
दुसओ तेआलो वा, लेसाणं होइ परिणामो ॥ २० ॥

अर्थ—(तिविहो व) त्रण प्रकारनो अथवा (नवविहो वा) नव प्रकारनो अथवा (सत्तावीसइविहो) सत्तावीश प्रकारनो अथवा (इक्कसीओ वा) एकाशी प्रकारनो अथवा (दुसओ तेआलो वा) बसो ने त्रेंतालीश प्रकारनो अथवा उप-

लक्षणादि रूपे घणा प्रकारनो (लेसाणं) लेश्याओनो (परिणामो) परिणाम (होइ) होय छे. तेमां दरेक लेश्यामां जघन्य, मध्यम अने उत्कृष्ट भेदे करीने त्रण प्रकारनो परिणाम जाणवो. ज्यारे आ जघन्यादिक त्रण प्रकारमां पण पोतपोताने स्थाने तरतमतानो–न्यूनाधिक्यनो विचार करीए त्यारे ते त्रणेने फरीथी जघन्यादिक त्रणे गुणवा एटले नव प्रकारनो थाय छे, ए ज रीते वारंवार त्रणे गुणतां सतावीश, एकाशी विगेरे प्रकारनो परिणाम थाय छे. २०.

हवे लेश्यानुं लक्षण कहे छे.

पंचासवप्पवत्तो, तीहिं अगुत्तो छसु अविरओ अ। तिव्वारंभपरिणओ, खुद्दो साहस्सिओ नरो ॥२१॥
निद्धंधसपरिणामो, निस्संसो अजिइंदिओ। एअजोगसमाउत्तो, कण्हलेसं तु परिणमे ॥ २२ ॥

अर्थ—(पंचासवप्पवत्तो) हिंसादिक पांच आश्रवने विषे प्रवृत्तिवाळो, (तीहिं अगुत्तो) मन, वचन अने काय ए त्रणे गुप्ति रहित, (छसु अविरओ अ) छ जीवनिकायने विषे विरति रहित, (तिव्वारंभपरिणओ) तीव्र आरंभना परिणामवाळो (खुद्दो) क्षुद्र एटले सर्वनुं अहित इच्छनार, (साहस्सिओ) विचार्या विना सहसा कार्य करनार एवो (नरो) नर अथवा उपलक्षणथी नारी होय तथा वळी (निद्धंधसपरिणामो) निध्वंस परिणामवाळो एटले आ लोक अने परलोकना कष्टनी शंका रहित, (निस्संसो) निस्त्रिंश एटले जीवोनी हिंसा करतां जरा पण शंका न करे तेवो तथा (अजिइंदिओ) अजितेंद्रिय, (एअजोगसमाउत्तो) आ उपर कहेला व्यापारे करीने युक्त एवो पुरुष के स्त्री (कण्हलेसं तु) कृष्णलेश्याने ज

(परिणमे) परिणमे छे–पामे छे. एटले तेवा प्रकारना परमाणुद्रव्यनी सहायथी स्फटिकनी जेवो आत्मा पण तेवा रूपने पामे छे–तेवी लेश्यावाळो थाय छे. कह्युं छे के–" कृष्णादिक द्रव्यनी सहायथी स्फटिकनी जेम आत्माना जे परिणाम ते लेश्या कहेवाय छे. " २१–२२.

इस्सा अमरिस अतवो, अविज्ज माया अहीरिया। गेद्धी पओसे य सढे, पमत्ते रसलोलुए ॥२३॥

सायगवेसए अ आरंभःविरओ खुद्दो साहस्सिओ नरो। एअजोगसमाउत्तो,नीललेसं तु परिणमे ॥२४॥

अर्थ—(इस्सा अमरिस अतवो) ईर्ष्या एटले परना गुण सहन न करवा ते, अमर्ष एटले अत्यंत क्रोध अने अतप एटले तपस्या रहितपणुं, (अविज्ज) अविद्या एटले कुशास्त्रनी विद्या, (माया) माया, (अहीरिया) दुराचार सेववामां अह्रीकता –निर्लज्जपणुं, (गेद्धी) गृद्धि–विषयने विषे लंपटता, अने (पओसे य) प्रद्वेष. अहीं सर्वत्र अभेद उपचारथी ईर्ष्यावाळो, अमर्षवाळो इत्यादिक जाणवुं. तथा (सढे) शठ–धिट्ठो, (पमत्ते) जातिमदादिकवडे मदोन्मत्त, (रसलोलुए) रसने विषे लुब्ध, (सायगवेसए अ) साता सुखनी गवेषणा करनार–इच्छनार, (आरंभाविरओ) जीवोपमर्दादिक आरंभथी निवृत्ति नहीं पामेलो, (खुद्दो) क्षुद्र अने (साहस्सिओ) साहसिक एवो (नरो) पुरुष के स्त्री (एअजोगसमाउत्तो) आवा व्यापारे करीने युक्त सतो (नीललेसं तु परिणमे) नीललेश्याने ज परिणमे छे–नीललेश्यावाळो थाय छे. २३–२४.

वंके वंकसमायारे, निअडिल्ले अणुज्जुए। पलिउंचग ओवहिए, मिच्छदिट्ठी अणारिए ॥ २५ ।

उप्फालगदुट्ठवाई अ, तेणे आवि अ मच्छरी। एअजोगसमाउत्ते, काऊलेसं तु परिणमे ॥ २६ ॥

अर्थ—(वंके) वचन बोलवामां वक्र, (वंकसमायारे) वक्र क्रिया करनार, (निअडिल्ले) मनमां मायावाळो, (अणुज्जुए) सरळ न करी शकाय तेवो, (पलिउंचग) परिकुंचन एटले पोतानो दोष ढांकनार, (ओवहिए) औपधिक एटले सर्वत्र कपटथी ज प्रवृत्ति करनार, (मिच्छदिट्ठी) मिथ्यादृष्टि, (अणारिए) अनार्य, (उप्फालगदुट्ठवाई अ) उत्प्रासुक एटले बीजाने भार उपजे तेवुं अने दुष्ट एटले रागादिक दोषवाळुं बोलनार, (तेणे आवि अ) चोर, तथा वळी (मच्छरी) मत्सरवाळो एटले बीजानी संपदा जोइ न शके तेवो (एअजोगसमाउत्ते) आवा व्यापारथी युक्त एवो मनुष्य (काऊलेसं तु परिणमे) कापोतलेश्याने ज परिणमे छे--कापोतलेश्यावाळो थाय छे. २५–२६.

नीआवित्ती अचवले, अमाई अकुतूहले। विणीयविणए दंते, जोगवं उवहाणवं ॥ २७ ॥
पियधम्मे दढधम्मे, वज्जभीरू हिएसए। एयजोगसमाउत्ते, तेउलेसं तु परिणमे ॥ २८ ॥

अर्थ—(नीआवित्ती) नम्र वृत्तिवाळो एटले मन, वचन अने कायाथी अनुद्धत, (अचवले) चपळता रहित, (अमाई) माया रहित, (अकुतूहले) कुतूहल रहित, (विणीयविणए) विनीतविनय एटले गुर्वादिकनुं उचित करवामां प्रवृत्तिवाळो, (दंते) दांत-इंद्रियोनुं दमन करनार, (जोगवं) योगवान एटले स्वाध्यायादिना व्यापारवाळो, (उवहाणवं) उपधानवाळो एटले शास्त्रनो उपचार करनार अर्थात् उपधान वहन करनार, (पियधम्मे) धर्मने विषे प्रीतिवाळो, (दढधम्मे) धर्मने विषे

दढ, (अवज्जभीरू) पापथी भय पामनार तथा (हिएसए) हितैषक एटले मोक्षने इच्छनार (एयजोगसमाउत्ते) आवा व्यापारे करीने युक्त एवो मनुष्य (तेउलेसं तु परिणमे) तेजोलेश्याने परिणमे छे-तेजोलेश्यावाळो थाय छे. २७-२८.

पयणुक्कोहमाणे अ, मायालोभे अ पयणुए । पसंतचित्ते दंतप्पा, जोगवं उवहाणवं ॥ २९ ॥

तहा पयणुवाई अ, उवसंते जिइंदिए । एयजोगसमाउत्ते, पम्हलेसं तु परिणमे ॥ ३० ॥

अर्थ—(पयणुक्कोहमाणे अ) जेने क्रोध अने मान अल्प होय, (मायालोभे अ) माया तथा लोभ (पयणुए) जेने अल्प होय, (पसंतचित्ते) जेनुं चित्त प्रशांत होय, (दंतप्पा) जे आत्माने दमनार होय, (जोगवं) जे योग वहन करनार होय, (उवहाणवं) जे उपधानवाळो होय, (तहा) तथा (पयणुवाई अ) थोडुं बोलनार, (उवसंते) शांत आकारवाळो अने (जिइंदिए) जितेंद्रिय (एयजोगसमाउत्ते) आवा व्यापारे करीने युक्त एवो मनुष्य (पम्हलेसं तु परिणमे) पद्मलेश्याने ज परिणमे छे-पद्मलेश्यावाळो थाय छे. २९-३०.

अट्टरुद्दाणि वज्जित्ता, धम्मसुक्काणि झायए । पसंतचित्ते दंतप्पा, समिए गुत्ते य गुत्तिसु ॥ ३१॥

सरागे वीअरागे वा, उवसंते जिइंदिए । एअजोगसमाउत्ते, सुक्कलेसं तु परिणमे ॥ ३२ ॥

अर्थ—(अट्टरुद्दाणि) आर्तध्यान अने रौद्रध्याननो (वज्जित्ता) त्याग करी (धम्मसुक्काणि) धर्मध्यान अने शुक्लध्याननुं (झायए) जे ध्यान करे, (पसंतचित्ते) जेनुं चित्त प्रशांत होय, (दंतप्पा) जेणे आत्मानुं दमन कर्युं होय, (समिए)

जे पांच समितिवाळो होय, (गुत्ते य गुत्तिसु) जे त्रण गुप्तिवडे गुप्त होय, (सरागे वीअरागे वा) जे सराग के वीतराग संयमवाळो होय, (उवसंते) जे शांत आकारवाळो होय तथा (जिइंदिए) जे जितेंद्रिय होय, (एअजोगसमाउत्ते) आवा व्यापारवडे जे युक्त होय ते मनुष्य (सुक्कलेसं तु परिणमे) शुक्ललेश्याने ज परिणमे छे. अर्थात् तेवो जीव शुक्ललेश्यावाळो छे एम समजवुं. विशिष्ट लेश्यानी अपेक्षाए आ लक्षणो कह्यां छे, तेथी देवादिकमां तेवां लक्षणो कदाच जोवामां न आवे तोपण तेमां दोष नथी एम जाणवुं. ३१-३२.

हवे लेश्यानुं स्थान कहे छे.—

असंखेज्जाणोसप्पिणीण ओसप्पिणीण जे समया । संखाईआ लोगा, लेसाणं हुंति ठाणाइं ॥ ३३ ॥

अर्थ—(असंखेज्जाणोसप्पिणीण) असंख्याती अवसर्पिणी अने (ओसप्पिणीण) उत्सर्पिणीना (जे समया) जेटला समयो अथवा (संखाईआ लोगा) असंख्याता लोकाकाशना जेटला प्रदेश तेटला (लेसाणं) दरेक लेश्यानां (ठाणाइं हुंति) अध्यवसाय स्थानको छे. एटले के अशुभ लेश्याना उंचा नीचा संक्लेशनां स्थानो अने शुभलेश्यानां उंचा नीचा विशुद्धिनां स्थानो असंख्याता छे. ३३.

हवे लेश्यानी स्थिति कहे छे.—

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसं सागरा मुहुत्तहिआ । उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा किण्हलेसाए ॥३४॥

अर्थ—(किण्हलेसाए) कृष्णलेश्यानी (जहन्ना) जघन्य स्थिति (मुहुत्तद्धं तु) मुहूर्तार्ध एटले अंतर्मुहूर्तनी छे अने (उक्कोसा) उत्कृष्ट (ठिई) स्थिति (मुहुत्ताहिआ) अंतर्मुहूर्त अधिक एवा (तेत्तीसं सागरा) तेत्रीश सागरोपमनी (होइ) छे एम (नायव्वा) जाणवुं. आ उत्कृष्ट स्थिति सातमी नरक पृथ्वी आश्री जाणवी. तेमां अंतर्मुहूर्त करीने पूर्व तथा पछीना भवने आश्रीने बे अंतर्मुहूर्त जाणवां. एम सर्वत्र जाणी लेवुं. सर्व लेश्यानी जघन्य स्थिति जे कही छे ते तिर्यंच अने मनुष्यने विषे ज जाणवी. ३४.

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस उदही पलिअमसंखभागमब्भहिआ ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा नीललेसाए ॥ ३५ ॥

अर्थ—(नीललेसाए) नीललेश्यानी (जहन्ना) जघन्य स्थिति (मुहुत्तद्धं तु) अंतर्मुहूर्तनी ज छे तथा (उक्कोसा ठिई) उत्कृष्ट स्थिति (दस उदही) दश सागरोपम अने (पलिअं असंखभागं अब्भहिआ) पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक (होइ) छे एम (नायव्वा) जाणवुं. अहीं पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक कह्यो, तेनी अंदर पूर्वोत्तर भवना बे अंतर्मुहूर्त पण जाणी लेवा. ए ज प्रमाणे सर्वत्र जाणवुं. ३५. आ स्थिति धूमप्रभाने पहेले पाथडे समजवी.

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तिण्णुदही पलिअमसंखभागमब्भहिआ ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा काउलेसाए ॥ ३६ ॥

अर्थ—कापोत लेश्यानी उत्कृष्ट स्थिति त्रण सागरोपम अने पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक एटली जाणवी. शेष अर्थ पूर्ववत्. आटली स्थिति वालुकाप्रभाना उपरना पाथडे जाणवी. ३६.

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दुण्णुदही पलिअमसंखभागमब्भहिआ ।
उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा तेउलेसाए ॥ ३७ ॥

अर्थ—तेजोलेश्यानी उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपम अने पल्योपमनो असंख्यातमो भाग अधिक एटली जाणवी. आटली स्थिति ईशान देवलोकमां होय छे. ३७.

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, दस होंती सागरा मुहुत्तहिआ । उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा पम्हलेसाए ॥३८॥

अर्थ—पद्मलेश्यानी अंतर्मुहूर्त अधिक दश सागरोपमनी उत्कृष्ट स्थिति छे. ते ब्रह्मदेवलोकने विषे जाणवी. ३८.

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, तेत्तीसं सागरा मुहुत्तहिआ । उक्कोसा होइ ठिई, नायव्वा सुक्कलेसाए ॥३९॥

अर्थ—शुक्ललेश्यानी तेत्रीश सागरोपम अंतर्मुहूर्ताधिक उत्कृष्ट स्थिति छे. ते अनुत्तरविमानमां जाणवी. ३९.

हवे लेश्यानी स्थितिने समाप्त करवा पूर्वक लेश्या संबंधी बीजी हकीकतनो आरंभ करे छे.—

एसा खलु लेसाणं, ओहेण ठिई उ वण्णिआ होई । चउसु वि गईसु एत्तो, लेसाण ठिइं तु वोच्छामि ।४०।

अर्थ—(एसा) आ (खलु) निश्चे (लेसाणं) लेश्यानी (ओहेण) ओघे करीने एटले सामान्य रीते (ठिई उ) स्थिति (वण्णिआ होई) वर्णन करी छे. (एत्तो) हवे पछी (चउसु वि गईसु) चारे गतिने विषे (लेसाण ठिई तु) लेश्यानी स्थितिने (वोच्छामि) हुं कहीश. ४०.

ते ज कहे छे—

दसवाससहस्साइं, काऊए ठिई जहन्निआ होई। तिण्णुदही पलिओवम–असंखभागं च उक्कोसा ॥४१॥

अर्थ—(दसवाससहस्साइं) दश हजार वर्ष (काऊए ठिई) कापोतलेश्यानी स्थिति (जहन्निआ होई) जघन्य छे, तथा (तिण्णुदही) त्रण सागरोपम अने (पलिओवमअसंखभागं च) पल्योपमनो असंख्यातमो भाग एटली (उक्कोसा) उत्कृष्ट स्थिति छे. तेमां रत्नप्रभाना उपरना पाथडामां रहेला नारकीओनी जघन्य स्थिति दश हजार वर्षनी छे तेथी त्यां जघन्य स्थिति अने वालुकाप्रभाना पहेला पाथडामां रहेला नारकीओनी त्रण सागरोपम अने पल्योपमनो असंख्यातमो भाग एटली उत्कृष्ट स्थिति छे तेथी त्यां कापोतलेश्यानी उत्कृष्ट स्थिति होय एम सर्वत्र जाणवुं. ४१.

तिण्णुदही पलिअमसंखभागो उ जहन्ननीलठिई। दस उदही पलिओवम–असंखभागं च उक्कोसा ॥४२॥

अर्थ—(तिण्णुदही) त्रण सागरोपम अने (पलिअमसंखभागो उ) पल्योपमनो असंख्यातमो भाग एटली (जहन्ननीलठिई) नील लेश्यानी जघन्य स्थिति छे, ते वालुकाप्रभामां समजवी. अने (दस उदही) दश सागरोपमने (पलिओ-

समअसंखभागं च) पल्योपमनो असंख्यातमो भाग एटली नील लेश्यानी उत्कृष्ट स्थिति छे, ते धूमप्रभाना पहेले पाथडे समजवी. ४२.

दस उदही पलिअमसंखभागं जहन्निआ होई । तेत्तीस सागराइं, उक्कोसा होइ किण्हाए ॥ ४३ ॥

अर्थ—(दस उदही) दश सागरोपम अने (पलिअमसंखभागं) पल्योपमनो असंख्यातमो भाग एटली (जहन्निआ होई) कृष्णलेश्यानी जघन्य स्थिति छे. ते धूमप्रभामां समजवी. अने (तेत्तीस सागराइं) तेत्रीश सागरोपमनी (उक्कोसा) उत्कृष्ट स्थिति (किण्हाए होइ) कृष्णलेश्यानी छे, ते तमस्तमा पृथ्वीने विषे समजवी. आ अने आगळ देवतानी कहेशे ते सर्व द्रव्यलेश्यानी स्थिति जाणवी. तेमनी भावलेश्यानी स्थिति तो फरती होवाथी अन्यथा प्रकारे पण संभवे छे. एटले के भाव लेश्या तो देव नारकी सर्वने छए संभवे छे. ४३.

एसा नेरइआणं, लेसाण ठिई उ वण्णिआ होई । तेण परं वोच्छामि, तिरिअमणुस्साण देवाणं ॥४४॥

अर्थ—(एसा) आ (नेरइआणं) नारकीनी (लेसाण) लेश्यानी (ठिई उ) स्थिति (वण्णिआ होई) वर्णन करेली छे. (तेण परं) त्यारपछी–हवे (तिरिअमणुस्साण देवाणं) तिर्यंच, मनुष्य अने देवनी लेश्यानी स्थितिने (वोच्छामि) हुं कहीश–कहुं छुं. ४४.

अंतोमुहुत्तमद्धं, लेसाण ठिई जहिं जहिं जा उ । तिरियाण नराणं वा, वज्जित्ता केवलं लेसं ॥४५॥

अर्थ--(तिरियाणं) तिर्यंच (नराणं वा) अने मनुष्यमां (जहिं जहिं) ज्यां ज्यां एटले जे जे पृथिव्यादिकने विषे के संमूर्छिम मनुष्यादिकने विषे (केवलं लेसं) एक शुक्ल लेश्याने (वज्जित्ता) वर्जीने बीजी (जा उ) जे कृष्णादिक लेश्या संभवे छे, ते (लेसाण) लेश्याओनी (ठिई) जघन्य अने उत्कृष्ट स्थिति (अंतोमुहुत्तमद्धं) अंतर्मुहूर्तकाळनी ज छे. तेमां पृथ्वीकाय, अप्काय अने वनस्पतिकायने विषे पहेली चार लेश्याओ संभवे छे, तेजस्काय, वायुकाय, विकलेंद्रिय अने संमूर्छिमने विषे पहेली त्रण लेश्याओ संभवे छे अने बीजाने विषे छए लेश्या संभवे छे. तेथी करीने आ छए लेश्यानी स्थिति तिर्यंच अने मनुष्यने विषे अंतर्मुहूर्तकाळनी ज प्राप्त थइ. तेमां एक शुक्ल लेश्याने बाद करी छे. ४५.

हवे शुक्ल लेश्यानी स्थिति कहे छे.

मुहुत्तद्धं तु जहन्ना, उक्कोसा होइ पुव्वकोडी उ। नवहिं वरिसेहिं ऊणा नायव्वा सुक्कलेसाए॥४६॥

अर्थ—(सुक्कलेसाए) शुक्ल लेश्यानी (जहन्ना) जघन्य स्थिति (मुहुत्तद्धं तु) अंतर्मुहूर्तनी छे, अने (उक्कोसा) उत्कृष्ट स्थिति (नवहिं वरिसेहिं ऊणा) नव वर्ष ओछा एवा (पुव्वकोडी उ) पूर्वकोटी—करोड पूर्व वर्षनी (होइ) छे. एम (नायव्वा) जाणवुं. कोइ पूर्वकोटिना आयुष्यवाळो मनुष्य आठमे वर्षे चारित्र ग्रहण करे, ते ओछामां ओछो एक वर्षनो चारित्र पर्याय थाय त्यारे तेने शुक्ल लेश्यानो अने केवलज्ञान पामवानो संभव छे, पछी जीवित पर्यंत ते लेश्या रहे छे. तेथी नव वर्ष ओछा पूर्वकोटि वर्ष कह्या छे. ४६.

एसा तिरिअनराणं, लेसाए ठिई उ वण्णिआ होई ।
तेण परं वोच्छामि, लेसाण ठिई उ देवाणं ॥ ४७ ॥

अर्थ—(एसा) आ (तिरिअनराणं) तिर्यंच मनुष्यनी (लेसाण ठिई उ) लेश्यानी स्थिति (वण्णिआ होई) वर्णन करेली छे, (तेण परं) त्यारपछी–हवे (देवाणं) देवोनी (लेसाण ठिई उ) लेश्यानी स्थितिने (वोच्छामि) हुं कहीश. ४७.

दसवाससहस्साइं, किण्हाए ठिई जहन्निआ होई । पलिअमसंखिज्जइमो, उक्कोसा होइ किण्हाए ॥४८॥

अर्थ—देवोमां (दसवाससहस्साइं) दश हजार वर्ष प्रमाण (किण्हाए) कृष्णलेश्यानी (ठिई जहन्निआ) जघन्य स्थिति (होई) छे. तथा (पलिअमसंखिज्जइमो) पल्योपमना असंख्यातमा भाग जेटली (किण्हाए) कृष्ण लेश्यानी (उक्कोसा होइ) उत्कृष्ट स्थिति छे. आ स्थिति तेटला ज आयुष्यवाळा भवनपति अने व्यंतरोनी जाणवी, ए ज प्रमाणे नील अने कापोत लेश्यामां पण जाणवुं. ४८.

जा किण्हाइ ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिआ ।
जहन्नेणं नीलाए, पलिअमसंखेज्ज उक्कोसा ॥ ४९ ॥

अर्थ—(किण्हाइ) कृष्ण लेश्यानी (जा) जे (उक्कोसा) उत्कृष्ट (ठिई) स्थिति (खलु) निश्चे कही छे, (सा उ)

तेज एटले पल्योपमनो असंख्यातमो भाग (समयमब्भहिआ) एक समय अधिक (नीलाए) नीललेश्यानी (जहन्नेणं) जघन्य स्थिति जाणवी. तथा (उक्कोसा) उत्कृष्ट स्थिति (पलिअमसंखेज्ज) पल्योपमनो असंख्यातमो भाग जाणवी. आ पल्योपमनो असंख्यातमो भाग पूर्वना करतां मोटो जाणवो. ते पण भवनपति ने व्यंतरमां ज जाणवी. ४९.

जा नीलाए ठिई खलु, उक्कोसा उ समयमब्भहिआ ।
जहन्नेणं काऊए, पलिअमसंखं च उक्कोसा ॥ ५० ॥

अर्थ—(नीलाए) नील लेश्यानी (जा) जे (उक्कोसा उ) उत्कृष्ट (ठिई खलु) स्थिति निश्चे कही छे. ते (समयमब्भहिआ) एक समय अधिक एवी (जहन्नेणं) जघन्ये करीने (काऊए) कापोत लेश्यानी स्थिति छे. (च) अने तेनी (उक्कोसा) उत्कृष्ट स्थिति (पलिअमसंखं) पल्योपमना असंख्यातमा भाग प्रमाण जाणवी. अहीं पण पूर्वना पल्योपमना असंख्यातमा भाग करतां आ असंख्यातमो भाग मोटो जाणवो. ते पण भवनपतिने व्यंतरमां ज जाणवी. ५०.

तेण परं वोच्छामि, तेऊलेसा जहा सुरगणाणं । भवणवइवाणमंतर-जोइसवेमाणिआणं च ॥५१॥

अर्थ—(तेण परं) त्यारपछी-हवे (भवणवइ) भवनपति, (वाणमंतर) वाणव्यंतर, (जोइस) ज्योतिषी (वेमाणिआणं च) अने वैमानिक (सुरगणाणं) देवसमूहनी (जहा) जे प्रकारे (तेऊलेसा) तेजोलेश्या छे ते प्रकारे (वोच्छामि) हुं कहीश-कहुं छुं. ५१.

पलिओवमं जहन्ना, उक्कोसा सागरा उ दुण्णहिआ । पलिअमसंखिज्जेणं, होई भागेण तेऊए ॥५२॥

अर्थ—(तेऊए) तेजोलेश्यानी (जहन्ना) जघन्य स्थिति (पलिओवमं) एक पल्योपमनी छे, अने (उक्कोसा) उत्कृष्ट स्थिति (पलिअमसंखिज्जेणं) पल्योपमना असंख्यातमा (भागेण) भागे करी (अहिआ) अधिक एवा (दुण्ण सागरा उ) बे सागरोपमनी (होई) छे. आ स्थिति वैमानिकने आश्रीने ज जाणवी. तेमां जघन्य स्थिति सौधर्ममां अने उत्कृष्ट स्थिति ईशान देवलोकमां छे. उपलक्षणथी भवनपति अने व्यंतरनी तेजोलेश्यानी जघन्य स्थिति दश हजार वर्षनी, व्यंतरनी उत्कृष्ट स्थिति पल्योपमनी अने भवनपतिनी उत्कृष्ट स्थिति कांइक अधिक सागरोपमनी जाणवी. ज्योतिषीनी जघन्य स्थिति पल्योपमनो आठमो भाग अने उत्कृष्ट स्थिति लाख वर्ष अधिक एक पल्योपमनी जाणवी. ५२.

दसवाससहस्साइं, तेऊइ ठिई जहन्निआ होइ । दुण्णुदही पलिओवम—असंखभागं च उक्कोसा ॥५३॥

अर्थ—(दसवाससहस्साइं) दश हजार वर्ष प्रमाण (तेऊइ) तेजोलेश्यानी (जहन्निआ ठिई) जघन्य स्थिति (होइ) छे. (च) अने (उक्कोसा) उत्कृष्ट स्थिति (दुण्णुदही) बे सागरोपम उपर (पलिओवमअसंखभागं) पल्योपमनो असंख्यातमो भाग छे. अहीं प्रकरणने अनुसरीने तो जे कापोतलेश्यानी उत्कृष्ट स्थिति होय ते ज एक समय अधिक तेजोलेश्यानी जघन्य स्थिति होवी जोइए परंतु अहीं तेम कहेल नथी. तेनुं कारण ज्ञानीगम्य छे. ५२. आटली स्थिति कया देवोने होय ते उपरनी गाथाना अर्थमां कहेल छे.

जा तेऊए ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिया ।
जहन्नेणं पम्हाए, दस उ मुहुत्ताहियाइं उक्कोसा ॥ ५४ ॥

अर्थ—(खलु) निश्चे (तेऊए) तेजो लेश्यानी (जा) जे (उक्कोसा) उत्कृष्ट (ठिई) स्थिति कही छे, (सा उ) ते ज (समयमब्भहिया) एक समय अधिक (जहन्नेणं) जघन्ये करीने (पम्हाए) पद्मलेश्यानी स्थिति जाणवी. अने (उक्कोसा) उत्कृष्ट स्थिति (मुहुत्ताहियाइं) पूर्वोत्तर भवनी अपेक्षाए बे अंतर्मुहूर्त अधिक एवा (दस उ) दश सागरोपमनी जाणवी. ५४. आ जघन्य अने उत्कृष्ट स्थिति तेटला आयुष्यवाळा देवोने समजवी.

जा पम्हाई ठिई खलु, उक्कोसा सा उ समयमब्भहिआ ।
जहन्नेणं सुक्काए, तित्तीसं मुहुत्तमब्भहिआ ॥ ५५ ॥

अर्थ—(खलु) निश्चे (पम्हाई) पद्मलेश्यानी (जा) जे (उक्कोसा) उत्कृष्ट (ठिई) स्थिति कही छे, (सा उ) ते ज (समयमब्भहिआ) एक समय अधिक (जहन्नेणं) जघन्ये करीने (सुक्काए) शुक्ललेश्यानी स्थिति छे. तथा तेनी उत्कृष्ट स्थिति (मुहुत्तमब्भहिआ) बे अंतर्मुहूर्त अधिक (तित्तीसं) तेत्रीश सागरोपमनी छे. आनी जघन्य स्थिति लांतकमां अने उत्कृष्ट स्थिति अनुत्तर विमानमां छे. ५५.

स्थितिद्वार पूर्ण थयुं. हवे लेश्यानुं गतिद्वार कहे छे—

किण्हा नीला काऊ, तिन्नि वि एआ उ अहमलेसाओ। एआहिं तिहिं वि जीवो, दुग्गइं उववज्जइ ॥५६॥

अर्थ—(किण्हा) कृष्ण, (नीला) नील अने (काऊ) कापोत (एआ उ) आ (तिन्नि वि) त्रणे पण (अहमलेसाओ) अधम-अप्रशस्त लेश्याओ छे. (एआहिं) आ (तिहिं वि) त्रणे वडे (जीवो) जीव (दुग्गइं) दुर्गतिने (उववज्जइ) पामे छे. ५६.

तेऊ पम्हा सुक्का, तिन्नि वि एआ उ धम्मलेसाओ। एआहिं तिहिं वि जीवो, सुग्गइं उववज्जइ ॥५७॥

अर्थ—(तेऊ) तेजस (पम्हा) पद्म अने (सुक्का) शुक्ल (एआ उ) आ (तिन्नि वि) त्रणे पण (धम्मलेसाओ) धर्म-प्रशस्त लेश्याओ छे. (एआहिं तिहिं वि) आ त्रणे वडे (जीवो) जीव (सुग्गइं) सुगतिने (उववज्जइ) पामे छे. ५७.

हवे आयुष्य द्वारनो अवसर छे. तेमां अवश्य जीव जे लेश्यामां आगामी भवे उत्पन्न थवानो होय ते ज लेश्यावाळो आ भवमां मरे छे. तेमां जन्मांतरमां जे लेश्या थवानी होय ते लेश्याना पहेला समये परभवना आयुष्यनो उदय थाय छे? के चरम-छेल्ला समये थाय छे? के अन्यथा प्रकारे छे? ए शंकाने दूर करवा माटे कहे छे.

लेसाहिं सव्वाहिं, पढमे समयम्मि परिणयाहिं तु। न हु कस्स वि उववाओ, परे भवे होइ जीवस्स ॥५८॥

अर्थ—(परिणयाहिं तु) परिणमेली एटले आत्मस्वरूपे उत्पन्न थयेली (सव्वाहिं) सर्वे कोइ (लेसाहिं) लेश्यावडे युक्त एवा (कस्स वि) कोइ पण (जीवस्स) जीवनो (पढमे समयम्मि) पहेला समये (परे भवे) परभवने विषे (उव-

वाओ) उत्पत्ति (न हु होइ) थती नथी. ५८.

लेसाहिं सव्वाहिं, चरमे समयम्मि परिणयाहिं तु । न हु कस्स वि उववाओ, परे भवे होइ जीवस्स ॥५९॥

अर्थ—पूर्ववत्. विशेष ए के (चरमे समयम्मि) ते लेश्यानो छेल्ला समये पण उत्पत्ति थती नथी एम जाणवुं. ५९.

त्यारे शी रीते छे ? ते कहे छे.

अंतमुहुत्तम्मि गए, अंतमुहुत्तम्मि सेसए चेव । लेसाहिं परिणयाहिं, जीवा गच्छंति परलोगं ॥६०॥

अर्थ—(परिणयाहिं) परिणमेली (लेसाहिं) लेश्यावडे युक्त एवा (जीवा) जीवो (अंतमुहुत्तम्मि गए) अंतर्मुहूर्त गये सते (चेव) तथा (अंतमुहुत्तम्मि) अंतर्मुहूर्त (सेसए) बाकी रहे सते (परलोगं) परलोकमां (गच्छंति) जाय छे. अर्थात् तिर्यंच अने मनुष्यने पोतानुं आयुष्य अंतर्मुहूर्त बाकी रहे त्यारे परभवनी लेश्यानो परिणाम थाय छे एम सिद्ध थयुं एटले तिर्यंच अने मनुष्य आवता भवनी लेश्यानो अंतर्मुहूर्त गये सते परलोकमां जाय छे अने देव तथा नारकी पोताना भवनी लेश्यानो अंतर्मुहूर्त बाकी रहे सते ते लेश्या सहित परलोकमां जाय छे. ६०.

हवे आ अध्ययनने समाप्त करवापूर्वक उपदेश आपे छे.—

तम्हा एआण लेसाणं, अणुभावे विआणिआ ।
अप्पसत्था उ वज्जित्ता, पसत्था अहिट्ठिज्जासि त्ति बेमि ॥ ६१ ॥

अर्थ—(तम्हा) तेथी करीने (एआण लेसाणं) आ लेश्याओना (अणुभावे) अनुभावने-प्रभावने (विआणिआ) जाणीने तेमांथी (अप्पसत्था उ) अप्रशस्त लेश्याओने (वज्जित्ता) वर्जीने (पसत्था उ) प्रशस्त लेश्याने (अहिट्ठिआसि) अंगीकार करवी. (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं. ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. ६१.

॥ इति चतुस्त्रिंशत्तममध्ययनम् ॥ ३४.

अथ अनगारमार्गगति नामनुं पांत्रीशमुं अध्ययन ३५.

गया अध्ययनमां अप्रशस्त लेश्यानो त्याग करी प्रशस्त लेश्या स्वीकारवानुं कह्युं, ते गुणवान साधु ज करी शके छे, तेथी आ अध्ययनमां साधुना गुणोने कहे छे.—

सुणेह मेगग्गमणा, मग्गं बुद्धेहिं देसिअं । जमायरंतो भिक्खू, दुक्खाणंतकरो भवे ॥ १ ॥

अर्थ—हे शिष्यो ! (बुद्धेहिं) तीर्थंकरादिक पंडितोए (देसिअं) कहेला (मग्गं) मुक्तिमार्गने (मेगग्गमणा) मारी पासेथी एकाग्रचित्तवाळा थइने (सुणेह) तमे सांभळो. (जं) के जेने (आयरंतो) आचरतो-सेवतो (भिक्खू) साधु (दुक्खाण) कर्मना क्षयथी दुःखोनो (अंतकरो) अंत करनार (भवे) थाय छे. १.

गिहवासं परिच्चेज्ज, पव्वज्जं अस्सिए मुणी । इमे संगे विआणेज्जा, जेहिं सज्जंति माणवा ॥ २ ॥

अर्थ—(गिहवासं) गृहवासनो (परिच्चज्ज) त्याग करीने (पव्वज्जं) प्रव्रज्याने (अस्सिए) आश्रित थयेलो (मुणी) साधु (जेहिं) जेनावडे (माणवा) मनुष्यो (सज्जंति) आसक्त थाय छे, एवा (इमे) आ (संगे) पुत्र, स्त्री विगेरे संगोने (विआणेज्जा) जाणे एटले के आ स्त्री, पुत्र विगेरे भवना हेतु छे एम विशेषे करीने जाणे अने जाणीने ज्ञाननुं फळ विरति होवाथी प्रत्याख्यान करे–तेनो त्याग करे. २.

तहेव हिंसं अलिअं, चोज्जं अब्बंभसेवणं । इच्छाकामं च लोभं च, संजओ परिवज्जए ॥ ३ ॥

अर्थ—(तहेव) तथा (हिंसं) जीवहिंसाने, (अलिअं) मृषावादने, (चोज्जं) चोरीने, (अब्बंभसेवणं) मैथुनना सेवनने, (इच्छाकामं च) इच्छारूप कामने एटले अप्राप्त वस्तुना अभिलाषने अने (लोभं च) लोभने एटले प्राप्त थयेली वस्तुपरनी गृद्धिने अर्थात् आ बे शब्दवडे परिग्रह कह्यो छे तेथी तेने (संजओ) साधु (परिवज्जए) वर्जे. ३.

मणोहरं चित्तघरं, मल्लधूवेण वासिअं । सकवाडं पंडुरुल्लोअं, मणसाऽवि न पत्थए ॥ ४ ॥

अर्थ—(मणोहरं) मनोहर, (मल्लधूवेण) माल्य एटले पुष्पनी माळा अने दशांगादिक धूपवडे (वासिअं) वासित, (सकवाडं) कमाड सहित तथा (पंडुरुल्लोअं) उज्ज्वळ उल्लोचवाळा तथा (चित्तघरं) चित्रवाळा घरने साधु (मणसाऽवि) मनवडे पण (न पत्थए) प्रार्थना न करे–न इच्छे, तो पछी वचनवडे तो प्रार्थना न ज करे, तेम ज तेमां रहे पण नहीं. ४.

आवो उपदेश आपवानुं कारण कहे छे.--

इंदिआणि उ भिक्खुस्स, तारिसम्मि उवस्सए । दुक्कराई निवारेउं, कामरागविवड्ढणे ॥ ५ ॥

अर्थ—(उ) कारण के (तारिसम्मि) तेवा प्रकारना (कामरागविवड्ढणे) कामरागनी वृद्धि करनारा (उवस्सए) उपाश्रयमां वसनारथी (भिक्खुस्स) साधुने (इंदिआणि) पोतपोताना विषयमां प्रवर्तती इंद्रियोने (निवारेउं) निवारवाने (दुक्कराई) दुष्कर थइ पडे छे. ५.

त्यारे क्यां—केवा स्थानमां रहेवुं ? ते कहे छे.—

सुसाणे सुन्नगारे वा, रुक्खमूले वा एगगो । पइरिक्के परकडे वा, वासं तत्थाभिरोअए ॥ ६ ॥

अर्थ—(सुसाणे) स्मशानमां, (सुन्नगारे वा) शून्य घरमां, (रुक्खमूले वा) वृक्षनी नीचे, अथवा (परकडे वा) बीजाए एटले गृहस्थीए पोताने माटे करेला अने (पइरिक्के) अतिरिक्त एटले स्त्री आदिकथी रहित (तत्थ) तेवा स्थानमां साधु (एगगो) एकलो एटले कोइनी सहाय विना (वासं) निवासने (अभिरोअए) पसंद करे. ६.

फासुअम्मि अणाबाहे, इत्थीहिं अणभिद्दुए । तत्थ संकप्पए वासं, भिक्खू परमसंजए ॥ ७ ॥

अर्थ—(फासुअम्मि) प्रासुक एटले अचित्त पृथ्वीवाळा, (अणाबाहे) कोइनी बाधा—पीडा जेमां न होय एवा अने (इत्थीहिं) स्त्रीओ तथा उपलक्षणथी पंडकादिक वडे (अणभिद्दुए) उपद्रव नहीं पामेला एटले दोष नहीं पामेला एवा

(तत्थ) ते उपर कहेला समशानादिकने विषे (परमसंजए) मोक्षने माटे संयमने धारण करनारा (भिक्खू) साधु (वासं) निवासने (संकप्पए) करे. उपरना श्लोकमां 'तेवा स्थानने विषे साधु निवासने पसंद करे.' एम कह्युं हतुं, तेथी कोइक मात्र रुचि ज करे पण रहे नहीं, तेटला माटे आ श्लोकमां रहेवानुं कह्युं. ७.

अहीं कोइ शंका करे के—"बीजाए पोताने माटे करेला स्थानमां साधुए रहेवानुं पसंद करवुं." एम शा माटे कह्युं? ते उपर कहे छे.—

न सयं गिहाइँ कुव्विज्जा, नेव अन्नेहिं कारए। गिहकम्मसमारंभे, भूआणं दिस्सए वहो ॥ ८ ॥

अर्थ—साधु (सयं) पोते (गिहाइं) गृहादिक (न कुव्विज्जा) करे नहीं, तथा (अन्नेहिं) बीजा पासे गृहादिक (नेव कारए) करावे नहीं, तथा उपलक्षणथी गृहादिक करता एवा अन्यने अनुमोदे नहीं. कारण के (गिहकम्मसमारंभे) गृहकार्यना आरंभमां एटले माटी, इंट विगेरे लाववा–करवामां (भूआणं) अनेक प्राणीओनो (वहो) वध (दिस्सए) देखाय छे. ८. कया प्राणीओनो वध थाय छे? ते कहे छे.—

तसाणं थावराणं च, सुहुमाणं बायराण य। गिहकम्मसमारंभं, संजओ परिवज्जए ॥ ९ ॥

अर्थ—गृहादिकना आरंभ करवामां (तसाणं) त्रस, (थावराणं च) स्थावर, (सुहुमाणं) सूक्ष्म[१] अने (बायराण

---

१ आ सूक्ष्म एकेंद्रिय न समजवा. केमके तेनी विराधना थइ शकती नथी.

य) बादर जीवोनो वध थाय छे, तेथी (संजओ) साधु (गिहकम्मसमारंभं) गृहकर्मना समारंभने (परिवज्जए) वर्जे. ९.

तहेव भत्तपाणेसु, पयणपयावणेसु अ । पाणभूयदयट्ठाए, न पए न पयावए ॥ १० ॥

अर्थ—(तहेव) तेमज वळी (भत्तपाणेसु) भातपाणीने विषे (पयणपयावणेसु अ) रांधवा के रंधाववामां पण जीववध जोवामां आवे छे, तेथी (पाणभूयदयट्ठाए) प्राण एटले त्रसजीवो अने भूत एटले पृथिव्यादिक स्थावर जीवोनी दयाने अर्थे (न पए) साधु रांधे नहीं, तथा (न पयावए) रंधावे पण नहीं. १०.

ए ज हकिकत स्पष्ट रीते कहे छे—

जलधन्ननिस्सिआ पाणा, पुढविकट्ठनिस्सिआ । हम्मंति भत्तपाणेसु, तम्हा भिक्खू न पयावए ॥११॥

अर्थ—(भत्तपाणेसु) भातपाणी रंधाते सते (जलधन्ननिस्सिआ) जळ अने धान्यमां निश्रित थयेला एटले तेमां ज उत्पन्न थयेला अने अन्य स्थळे उत्पन्न थइ तेनी निश्राए रहेला एवा तथा (पुढविकट्ठनिस्सिआ) पृथ्वी अने काष्ठनी निश्राए रहेला एवा (पाणा) जीवो (हम्मंति) हणाय छे, (तम्हा) तेथी करीने (भिक्खू) साधु (न पयावए) रंधावे पण नहीं, तो पछी रांधे तो केम ? उपलक्षणथी अनुमोदना पण न करे. ११.

विसप्पे सव्वओ धारे, बहुपाणविणासणे । नत्थि जोइसमे सत्थे, तम्हा जोइं न दीवए ॥ १२ ॥

अर्थ—(विसप्पे) अल्प छतां पण बहु व्यापवाना स्वभाववाळुं, (सव्वओ धारे) चोतरफ धारवाळुं अने (बहुपा-

विनिवायसणे) घणा जीवोनो विनाश करनारुं (जोइमये) अग्नि जेवुं बीजुं कोइ पण (सत्थे) शस्त्र (नत्थि) नथी. (तम्हा) तेथी करीने (जोइं) अग्निने (न दीवए) साधु सळगावे नहीं. १२

अहीं कोइने शंका थाय के–" रांधवा अने रंधाववामां जीववध थाय छे, परंतु क्रयविक्रय करवामां जीववध नथी, माटे क्रयविक्रयवडे ज साधुए निर्वाह करवो योग्य छे. " आवी शंकावाळाने उत्तर आपे छे—

हिरण्णं जायरूवं च, मणसाऽवि न पत्थए। समलेट्ठुकंचणे भिक्खू विरए कयविक्कए ॥ १३ ॥

अर्थ—(समलेट्ठुकंचणे) कोइ पण ठेकाणे प्रतिबंध नहीं होवाथी समान छे लेष्टु–पथ्थर अने कांचन-सुवर्ण जेने एवा (भिक्खू) साधु (कयविक्कए) क्रयविक्रयने विषे–क्रयविक्रयथी (विरए) विरम्या छे--तेनाथी निवृत्त थया छे, तेथी (हिरण्णं) सुवर्ण, (जायरूवं च) रूपुं अने चशब्दथी समग्र धन धान्यादिकने (मणसाऽवि) मनवडे पण (न पत्थए) प्रार्थना न करे--इच्छे नहीं. १३.

किणंतो कइओ होइ, विक्किणंतो अ वाणिओ। कयविक्कयम्मि वट्टंतो, भिक्खू हवइ न तारिसो ॥१४॥

अर्थ—कारण के साधु (किणंतो) खरीद करतो सतो (कइओ होइ) अन्य मनुष्योनी जेम खरीद करनारो थाय छे, अने (विक्किणंतो अ) वेचतो सतो (वाणिओ) वणिक एटले वेपारी थाय छे, तेथी करीने (कयविक्कयम्मि) क्रयविक्रयने विषे (वट्टंतो) प्रवर्ततो (भिक्खू) साधु (तारिसो न हवइ) जेवो शास्त्रमां कह्यो छे तेवो थइ शकतो नथी. १४.

त्यारे शुं करवुं ? ते कहे छे.

भिक्खिअव्वं न केअव्वं, भिक्खुणा भिक्खवत्तिणा । कयविक्कओ महादोसो, भिक्खावित्ती सुहावहा ॥१५॥

अर्थ—(भिक्खवत्तिणा) भिक्षानी वृत्तिवाळा-भिक्षाथी आजीविकावाळा (भिक्खुणा) साधुए (भिक्खिअव्वं) भिक्षा मागवी, परंतु (न केअव्वं) खरीद करवुं नहीं, अने उपलक्षणथी वेचवुं पण नहीं. कारण के (कयविक्कओ) क्रय विक्रय करवामां (महादोसो) मोटो दोष छे अने (भिक्खावित्ती) भिक्षावृत्ति (सुहावहा) सुखकारक छे. १५.

भिक्षा मागवानुं एक ज कुळमां पण होइ शके तेथी कहे छे के—

समुआणं उंछमेसिज्जा, जहासुत्तमणिंदिअं । लाभालाभम्मि संतुट्ठे, पिंडवायं चरे मुणी ॥ १६ ॥

अर्थ—(मुणी) साधु (जहासुत्तं) शास्त्रमां कह्या प्रमाणे (अणिंदिअं) निंदा रहित--निर्दोष अने (उंछं) उंछना जेवी उंछ एटले जूदा जूदा घरथी थोडुं थोडुं लेवारूप (समुआणं) भिक्षानी (एसिज्जा) गवेषणा करे. तथा (लाभालाभम्मि) भिक्षाना लाभमां के अलाभमां पण (संतुट्ठे) संतोषवाळो सतो (पिंडवायं) जेमां पात्रने विषे पिंडनुं पडवुं थाय छे एवा पिंडपातने एटले भिक्षाटनने (चरे) सेवे करे. १६.

आ रीते पिंडने पामीने शी रीते आहार करे ? ते कहे छे.—

अलोले न रसे गिद्धे, जिब्भादंते अमुच्छिए । न रसट्ठाए भुंजिज्जा, जवणट्ठाए महामुणी ॥ १७ ॥

अर्थ—(अलोले) रसवाळो आहार मळ्यो होय तोपण तेमां लोलता—चपळता रहित, (रसे) प्राप्त न थयेला रसना विषयमां (न गिद्धे) गृद्धि रहित, (जिब्भादंते) जिव्हा इंद्रियने दमन करनार अने (असुच्छिए) आहारने राखी मूकवा-रूप संनिधि नहीं करवाथी मूर्छा रहित एवो (महागुणी) महामुनि (रसट्ठाए) रसने माटे एटले शरीरनी धातु पुष्ट करवा माटे (न भुंजिज्जा) न जमे. परंतु (जवणट्ठाए) यापनाने माटे एटले संयमना निर्वाहने माटे ज आहार करे. १७.

अच्चणं रयणं चेव, वंदणं पूअणं तहा । इड्ढीसक्कारसम्माणं, मणसाऽवि न पत्थए ॥ १८ ॥

अर्थ—वळी मुनि श्रावकथी कराती (अच्चणं) पुष्पादिकनी पूजा, (रयणं चेव) आसनादिकनी रचना, (वंदणं) शरीरथी वंदना, (पूअणं) वस्त्रादिकवडे पूजा, (तहा) तथा (इड्ढीसक्कारसम्माणं) ऋद्धि—श्रावकरूपी संपदा अथवा वस्त्र, पात्रादिक संपदा, सत्कार—गुणकीर्तनरूप सत्कार अने अभ्युत्थानादिक सन्मान, ए सर्वने (मणसाऽवि) मनवडे पण (न पत्थए) प्रार्थना न करे—इच्छे नहीं. १८.

त्यारे शुं करे ? ते कहे छे.—

सुक्कं झाणं झिआएज्जा, अनिआणो अकिंचणे । वोसट्ठकाए विहरेज्जा, जाव कालस्स पज्जओ ॥१९॥

अर्थ—(सुक्कं झाणं) शुक्ल ध्यानने (झिआएज्जा) ध्यावे, तथा (अनिआणे) नियाणा रहित, (अकिंचणे) परिग्रह रहित अने (वोसट्ठकाए) शरीरपर पण ममता रहित एवो सतो साधु (जाव) ज्यां सुधी (कालस्स) मरणनो

(पज्जओ) पर्याय आवे त्यां सुधी एटले जावजीव (विहरेजा) अप्रतिबद्ध विहार करे. १९.

त्यारपछी अंतकाळे शुं करीने शुं पामे ? ते कहे छे.—

निज्जूहिऊण आहारं, कालधम्मे उवट्ठिए । जहिऊण माणुसं बोंदिं, पभू दुक्खे विमुच्चइ ॥२०॥

अर्थ—(कालधम्मे) आयुष्यना क्षयरूप काळधर्म-मरण समय (उवट्ठिए) प्राप्त थये सते (आहारं) संलेखनादिकना अनुक्रमे चतुर्विध आहारनो (निज्जूहिऊण) त्याग करी (माणुसं बोंदिं) आ मनुष्य संबंधी शरीरने (जहिऊण) तजीने (पभू) विशेष सामर्थ्यवाळो सतो (दुक्खे विमुच्चइ) सर्व दुःखथी मूकाय छे. २०.

केवो सतो दुःखथी मूकाय छे ? ते कहे छे.—

निम्ममे निरहंकारे, वीअरागे अणासवे । संपत्ते केवलं नाणं, सासयं परिनिव्वुडे ॥ त्ति बेमि ॥२१॥

अर्थ—(निम्ममे) ममता रहित, (निरहंकारे) अहंकार रहित, (वीअरागे) राग रहित, उपलक्षणथी द्वेष रहित, (अणासवे) आश्रव रहित थयो सतो तथा (सासयं) शाश्वता (केवलं नाणं) केवळज्ञानने (संपत्ते) पाम्यो सतो (परिनिव्वुडे) सर्वथा प्रकारे स्वस्थ थाय छे अर्थात् सिद्धिस्थानने पामे छे. (त्ति बेमि) एम हुं कहुं छुं. ए प्रमाणे सुधर्मास्वामीए जंबूस्वामीने कह्युं. २१.

इति पञ्चत्रिंशमध्ययनम्. ३५.

अथ जीवाजीव विभक्ति नामनुं छत्रीशमुं अध्ययन. ३६.

पांत्रीशमा अध्ययनमां साधुना गुण कह्या. ते गुणो जीव अने अजीवनुं स्वरूप जाणवाथी ज सेवी शकाय छे, तेथी आ अध्ययनमां जीवाजीवनुं स्वरूप कहे छे.—

जीवाजीवविभत्तिं, सुणेह मे एगमणा इओ । जं जाणिऊण भिक्खू, सम्मं जयइ संजमे ॥१॥

अर्थ—(इओ) हवे हे शिष्यो ! (एगमणा) तमे एकाग्र मनवाळा सता (मे) मारी पासे (जीवाजीवविभत्तिं) जीव अने अजीवना विभागने (सुणेह) सांभळो, के (जं) जे विभागने (जाणिऊण) जाणीने (भिक्खू) साधु (सम्मं) सम्यक् प्रकारे (संजमे) संयमने विषे (जयइ) यत्न करे छे-करी शके छे. १.

जीवाजीव विभागना प्रसंगने लीधे ज प्रथम लोकालोकना विभागने कहे छे.—

जीवा चेव अजीवा य, एस लोए वियाहिए । अजीवदेसे आगासे, अलोए से वियाहिए ॥२॥

अर्थ—(जीवा चेव) जीव अने (अजीवा य) अजीव (एस) ए (लोए) लोक (वियाहिए) तीर्थंकरादिके कह्यो छे. तथा (अजीवदेसे) धर्मास्तिकायादिक अजीवनो देश एटले अंशरूप जे एक मात्र (आगासे) आकाश, (से) ते (अलोए) अलोक (वियाहिए) कह्यो छे. अर्थात् धर्मास्तिकायादिक रहित एवुं जे आकाश ते ज अलोक छे. अर्थात् अलोकमां मात्र आकाश ज छे.

जीव अने अजीवनी प्ररूपणा करवाथी ज तेमनो विभाग थइ शके छे, तेथी तेमनी प्ररूपणाने ज कहे छे.—

दव्वओ खेत्तओ चेव, कालओ भावओ तहा । परूवणा तेसिं भवे, जीवाणं अजीवाण य ॥३॥

अर्थ—(तेसि) ते (जीवाणं) जीवोनी (अजीवाण य) अने अजीवोनी (परूवणा) प्ररूपणा (दव्वओ) द्रव्यथी, (खेत्तओ चेव) क्षेत्रथी, (कालओ) काळथी (तहा) तथा (भावओ) भावथी (भवे) थाय छे. ३.

तेमां प्रथम थोडुं कहेवानुं होवाथी द्रव्यथी अजीवनी प्ररूपणा करे छे.—

रूविणो चेवऽरूवी अ, अजीवा दुविहा भवे । अरूवी दसहा वुत्ता, रूविणोऽवि चउव्विहा ॥४॥

अर्थ—(रूविणो) रूपी (चेव) तथा (अरूवी अ) अरूपी ए रीते (अजीवा) अजीव (दुविहा) बे प्रकारना (भवे) छे. तेमां (अरूवी) अरूपी (दसहा) दश प्रकारना (वुत्ता) कह्या छे, (रूविणोऽवि) अने वळी रूपी (चउव्विहा) चार प्रकारना कह्या छे. अहीं पण थोडुं कहेवानुं होवाथी अरूपीना भेद प्रथम बताव्या छे. ४.

अरूपीना दश भेदो कहे छे.—

धम्मत्थिकाए तद्देसे, तप्पएसे अ आहिए । अधम्मे तस्स देसे अ, तप्पएसे अ आहिए ॥५॥

अर्थ- (धम्मत्थिकाए) गतिना परिणामवाळा जीव अने पुद्गलोने तेवा स्वभावे करीने धारी राखे एटले गतिमां सहाय आपे ते धर्म कहेवाय छे. अस्ति एटले प्रदेशो, तेनो जे काय एटले समूह ते अस्तिकाय कहेवाय छे. धर्म एटले गति-

सहायक एवो जे अस्तिकाय–प्रदेशसमूह ते धर्मास्तिकाय कहेवाय छे. १. (तद्देसे) ते धर्मास्तिकायनो देश एटले त्रीजो, चोथो विगेरे भाग ते धर्मास्तिकाय देश. २. अने (तप्पएसे अ) ते धर्मास्तिकायनो प्रदेश एटले जेनो विभाग न थाय एवो भाग ते धर्मास्तिकाय प्रदेश (आहिए) कह्यो छे. ३. (अधम्मे) जीव अने पुद्गळोने गतिना परिणामने विषे धारण न करे अर्थात् स्थितिमां सहाय आपे ते अधर्म कहेवाय छे, ते अधर्मरूपी जे अस्तिकाय ते अधर्मास्तिकाय कहेवाय छे. ४. (तस्स देसे अ) ते अधर्मास्तिकायनो देश. ५. अने (तप्पएसे अ) ते अधर्मास्तिकायनो प्रदेश–एम तेना त्रण भेद (आहिए) कह्या छे. ६. ५.

आगासे तस्स देसे अ, तप्पएसे अ आहिए । अद्धासमए चेव, अरूवी दसहा भवे ॥ ६ ॥

अर्थ- (आगासे) 'आ' एटले पोताना स्वरूपनो त्याग नहीं करवारूप मर्यादाए करीने पदार्थो जेने विषे 'काशन्ते' एटले भासे छे ते आकाश कहेवाय छे, ते रूपी जे अस्तिकाय–प्रदेशसमूह ते आकाशास्तिकाय अर्थात् जीव अने पुद्गळने अवकाश आपे ते. ७. अने (तस्स देसे अ) ते आकाशास्तिकायनो अमुक विभाग ते देश. ८. तथा (तप्पएसे अ) ते आकाशास्तिकायनो निर्विभाग भाग ते प्रदेश (आहिए) कह्यो छे. ९. तथा (अद्धा समए चेव) काळरूप जे समय ते अद्धासमय कहेवाय छे. १०. समयनो निर्विभाग भाग होइ शकतो नथी तेथी तेना देश अने प्रदेशनो संभव नथी. परंतु आवलिका विगेरे जे काळना भेदो छे ते मात्र व्यवहारथी ज कहेवाय छे, तेथी तेनी अहीं विवक्षा करी नथी. आ प्रमाणे (अरूवी) अरूपी पदार्थ (दसहा भवे) दश प्रकारना छे. ६. हवे ते द्रव्योने क्षेत्रथी कहे छे.—

धम्माधम्मे अ दोवेए, लोगमेत्ता विआहिआ । लोआलोए अ आगासे, समए समयखेत्तिए ॥७॥

अर्थ—(धम्माधम्मे अ) धर्मास्तिकाय अने अधर्मास्तिकाय (दोवेए) आ बे द्रव्य (लोगमेत्ता) लोक प्रमाण (विआहिआ) कह्या छे एटले आखा लोकने व्यापीने रह्या छे. (लोआलोए अ) अने लोक तथा अलोक बन्नेने व्यापीने (आगासे) आकाशास्तिकाय रहेलो छे तथा (समए) अद्धासमय (समयखेत्तिए) समयक्षेत्रिक एटले अढीद्वीप अने बे समुद्ररूप समयक्षेत्रना विषयवाळो छे अर्थात् काळद्रव्य अढीद्वीप अने बे समुद्रमां ज छे. ७.

हवे तेने ज काळथी कहे छे.—

धम्माधम्मागासा, तिन्नि वि एए अणाइआ । अपज्जवसिआ चेव, सव्वद्धं तु विआहिआ ॥८॥

अर्थ—(धम्माधम्मागासा) धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय अने आकाशास्तिकाय (एए तिन्नि वि) आ त्रणे (अणाइआ) अनादि (अपज्जवसिआ चेव) तेमज अपर्यवसित एटले अनंत छे अने ते (सव्वद्धं तु) सर्वकाळे पोतानुं स्वरूप त्याग नहीं करवाथी नित्य छे एम (विआहिआ) कह्युं छे. ८.

समएऽवि संतइं पप्प, एवमेव विआहिए । आएसं पप्प साईए, सपज्जवसिएऽविअ ॥ ९ ॥

अर्थ—(समएऽवि) समय पण (संतइं) प्रवाहरूप संततिने (पप्प) आश्रीने (एवमेव) ए ज प्रमाणे एटले अनादि अनंत ज (विआहिए) कह्यो छे, अने (आएसं) आदेशने एटले नियमित व्यक्तिरूप विशेषने (पप्प) आश्रीने

(साइए) सादि अने (सपज्जवसिएऽविअ) सपर्यवसित एटले सांत पण कह्यो छे. ९.

हवे तेने ज भावथी कहेवानो अवसर छे, परंतु ते अमूर्त होवाथी तेना पर्यायो कह्या छतां पण जाणी शकाय तेवा नथी. तेथी तेनी प्ररूपणा नहीं करतां द्रव्यथी रूपी पदार्थनी प्ररूपणा करे छे.—

खंधा य १ खंधदेसा य २, तप्पएसा ३ तहेव य । परमाणुणो अ बोधव्वा, रूविणो य चउव्विहा ॥१०॥

अर्थ—(खंधा य) पुद्गलोनो उपचय–वृद्धि अने अपचय–हानिरूप जे स्तंभादिक ते स्कंध कहेवाय छे. १. (खंधदेसा य) ते ज स्तंभादिकनो बीजो, त्रीजो इत्यादि जे भाग ते स्कंधदेश कहेवाय छे, २. (तप्पएसा) ते ज स्तंभादिकना जेना बे भाग न थइ शके तेवा जे अंशो ते तत्प्रदेश एटले स्कंधप्रदेश कहेवाय छे, ३. (तहेव य) तथा (परमाणुणो अ) जेना अंश न थइ शके ते छुटा रहेला–स्कंध साथे नहीं मळेला होय ते परमाणु कहेवाय छे. ४. आ रीते (रूविणो य) रूपी पदार्थ (चउव्विहा) चार प्रकारना (बोधव्वा) जाणवा. १०.

अहीं देश अने प्रदेशनो स्कंधने विषे ज समावेश थाय छे. तेथी संक्षेप करीने स्कंध अने परमाणु ए बे ज रूपी द्रव्यना भेद कही शकाय छे. ते बन्नेनुं लक्षण कहे छे.—

एगत्तेण पुहत्तेणं, खंधा य परमाणुणो । लोएगदेसे लोए अ, भइअव्वा ते उ खेत्तओ ॥
इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥११॥

अर्थ—(खंधा य) स्कंधो अने (परमाणुणो) परमाणुओ (एगत्तेण) एकपणाए करीने एटले बे, त्रण, चार आदि परमाणुना संघातथी द्विप्रदेशिक, त्रिप्रदेशिक, चतुःप्रदेशिक विगेरे सरखा परिणामे करीने तथा (पुहत्तेणं) पृथक्त्वे करीने एटले जूदापणाए करीने अर्थात् बीजा परमाणुओनी साथे नहीं मळवाए करीने जणाय छे. एटले के एकत्व अने पृथक्त्व ए स्कंध अने परमाणुनुं लक्षण छे–छुटा रहे ते परमाणु कहेवाय छे ने भेगा मळे ते स्कंध कहेवाय छे. हवे तेने ज क्षेत्रथी कहे छे- (ते उ) ते एटले स्कंध अने परमाणुओ (खेत्तओ) क्षेत्रथी (लोएगदेसे) लोकना एक देशने विषे (लोए अ) अने लोकने विषे (भइअव्वा) भजनाए करीने जाणवा लायक छे. अहीं सामान्य रीते कह्युं छे तो पण परमाणुओ एक एक ज आकाशप्रदेशमां रहेला होय छे तेथी स्कंधने विषे ज अवगाहनानी भजना जाणवी. कारण के स्कंधो विचित्र परिणामवाळा होवाथी घणा प्रदेशोवडे वृद्धि पामेला होय तोपण केटलाक एक आकाशप्रदेशमां ज रहे छे, अने वधता वधता केटलाक संख्याता प्रदेशमां रहे छे, केटलाक असंख्यात प्रदेशमां रहे छे, यावत् केटलाक तथाप्रकारना अचित्त महास्कंधनी जेम समग्र लोकने व्यापीने पण रहे छे. तेथी स्कंधने आश्रीने भजना जाणवी (इत्तो) हवे एटले क्षेत्रनी प्ररूपणा कर्या पछी (तेसिं) ते स्कंध अने परमाणुओना (चउव्विहं) चार प्रकारना (कालविभागं तु) काळविभागने (वोच्छं) हुं कहीश. (आ गाथासूत्र छ पादवाळुं छे.) ११.

ते ज चार प्रकार कहे छे.—

संतइं पप्प तेऽणाई, अपज्जवसिआवि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआऽवि अ ॥१२॥

અર્થ—(संतइं) સંતતિને એટલે પરંપરાને (पप्प) આશ્રી (ते) તે સ્કંધ અને પરમાણુઓ (अणाई) અનાદિ અને (अपज्जवसिआवि अ) અપર્યવસિત એટલે અનંત પણ છે, એટલે કે પ્રવાહની અપેક્ષાએ સ્કંધ અને પરમાણુ રહિત કદાપિ જગત હતું નહીં, છે નહીં અને થશે પણ નહીં તથા (ठिइं) નિયમિત ક્ષેત્રમાં રહેવારૂપ સ્થિતિને (पडुच) આશ્રીને (साई-आ) સાદિ અને (सपज्जवसिआऽवि अ) સપર્યવસિત એટલે સાંત હોય છે. કારણ કે સ્કંધો અને પરમાણુઓ કાળાંતરે નવા નવા ક્ષેત્રમાં જાય છે તેથી તેની સ્થિતિ સાદિસાંત છે. ૧૨.

સાદિ સાંત છતાં પણ તેમની સ્થિતિ કેટલા કાળ સુધીની હોય છે ? તે કહે છે.—

असंखकालमुक्कोसं, एगं समयं जहन्नयं । अजीवाण य रूवीणं, ठिई एसा विआहिआ ॥१३॥

અર્થ—(अजीवाण य) અજીવ (रूवीणं) રૂપી દ્રવ્યોની (एसा) આ (उक्कोसं) ઉત્કૃષ્ટી (असंखकालं) અસંખ્યાત કાળની અને (जहन्नयं) જઘન્ય (एगं समयं) એક સમયની (ठिई) સ્થિતિ (विआहिआ) કહેલી છે. તે સ્કંધ અને પરમાણુઓ જઘન્ય એક સમય પછી અને ઉત્કૃષ્ટ અસંખ્યાત કાળ પછી એક ક્ષેત્રથી બીજા ક્ષેત્રમાં અવશ્ય જાય છે. ૧૩.

આ પ્રમાણે કાળને આશ્રી સ્થિતિ કહી. હવે તેની અંદર રહેલું આંતરું કહે છે.—

अणंतकालमुक्कोसं, एगं समयं जहन्नयं । अजीवाण य रूवीणं, अंतरेअं विआहिअं ॥ १४ ॥

અર્થ—(उक्कोसं) ઉત્કૃષ્ટથી (अणंतकालं) અનંત કાળ અને (जहन्नयं) જઘન્યથી (एगं समयं) એક સમય (एअं)

आटलुं (अजीवाण य) अजीव (रूवीणं) रूपी द्रव्यनुं (अंतरं) आंतरुं (विआहिअं) कहेलुं छे. एक क्षेत्रथी बीजा क्षेत्रमां गया पछी फरीथी ते ज प्रथमना क्षेत्रमां आवतां आटलुं जघन्य अने उत्कृष्ट आंतरुं पडे छे. १४.

हवे भावथी स्कंध अने परमाणुने कहे छे.—

वण्णओ गंधओ चेव, रसओ फासओ तहा । संठाणओ अ विण्णेओ, परिणामो तेसि पंचहा ॥१५॥

अर्थ—(वण्णओ) वर्णथी, (गंधओ चेव) गंधथी, (रसओ) रसथी, (फासओ) स्पर्शथी (तहा) तथा (संठाणओ अ) संस्थानथी, आ रीते (तेसि) ते स्कंध अने परमाणुनो (पंचहा) पांच प्रकारनो (परिणामो) परिणाम (विण्णेओ) जाणवो. पोताना स्वरूपमां रह्या थका पण जेमनो वर्णादिक बदलाइ जाय, ते परिणाम कहेवाय छे. १५

हवे ते वर्णादिकना उत्तर भेदो कहे छे.—

वण्णओ परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिआ । किण्हा नीला य लोहिआ, हालिद्दा सुक्किला तहा ॥१६॥

अर्थ—(वण्णओ) वर्णथी (जे उ) जे स्कंधादिक (परिणया) परिणाम पाम्या होय (ते) ते (पंचहा) पांच प्रकारे (पकित्तिआ) कहेला छे. ते आ प्रमाणे.—(किण्हा) काजळ विगेरे जेवा काळा, (नीला य) लीला घास जेवा नील, (लोहिआ) हींगळोक जेवा राता, (हालिद्दा) हळदर जेवा पीळा, (सुक्किला तहा) तथा शंख जेवा धोळा. १६.

गंधओ परिणया जे उ, दुविहा ते विआहिआ । सुब्भिगंधपरिणामा, दुब्भिगंधा तहेव य ॥ १७ ॥

अर्थ—(गंधओ) गंधथी (जे उ) जे स्कंधादिक (परिणया) परिणाम पाम्या होय (ते) ते (दुविहा) बे प्रकारना (विआहिआ) कह्या छे. तेमां एक (सुब्भिगंधपरिणामा) चंदन जेवा सुरभि गंधना परिणामवाळा (तहेव य) तथा बीजा (दुब्भिगंधा) लसण जेवा दुरभि गंधना परिणामवाळा. १७.

रसओ परिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिआ : तित्तकडुअकसाया, अंबिला महुरा तहा ॥१८॥

अर्थ—(रसओ) रसथी (जे उ) जे स्कंधादिक (परिणया) परिणाम पाम्या होय (ते) ते (पंचहा) पांच प्रकारना (पकित्तिआ) कह्या छे, ते आ प्रमाणे.—(तित्त) लींबडादिकनी जेवा तिक्त—कडवा १, (कडुअ) सुंठ विगेरेनी जेवा कटुक—तीखा २, (कसाया) बावळ विगेरेनी जेवा कषायला—तुरा ३, (अंबीला) आंबली जेवा खाटा ४, (तहा) तथा (महुरा) साकर जेवा मधुर—मीठा. ५. १८.

फासओ परिणया जे उ, अट्ठहा ते पकित्तिआ ।
कक्खडा१ मउआ२ चेव, गरुआ३ लहुआ४ तहा ॥ १९ ॥
सीआ५ उण्हा६ य निध्धा७ य, तहा लुक्खा य८ आहिआ ।
इति फासपरिणया, एए पुग्गला समुदाहिआ ॥ २० ॥

अर्थ—(फासओ) स्पर्शथी (जे उ) जे स्कंधादिक (परिणया) परिणाम पाम्या होय (ते) ते (अट्ठहा) आठ प्रकारना (पकित्तिआ) कह्या छे, ते आ प्रमाणे.—(कक्खडा) पथ्थर विगेरे जेवा कर्कश—कठण १, (मउआ चेव) मृदु—माखण विगेरे जेवा कोमळ—पोचा २, (गरुआ) गुरु—हीरा विगेरे जेवा तोलमां भारे ३, (लहुआ) लघु—आकडाना रु विगेरे जेवा हळवा ४, (तहा) तथा (सीआ) जळादिक जेवा शीतळ ५, (उण्हा य) अग्नि आदिक जेवा उष्ण ६, (निद्धा य) स्निग्ध—घी विगेरे जेवा चीकाशवाळा ७, (तहा) तथा (लुक्खा य) रूक्ष—राख विगेरे जेवा लूखा सूका—कोरा ८. (आहिआ) कह्या छे. (इति) आ प्रमाणे (फासपरिणया) स्पर्शथी परिणाम पामेला (एए) आ (पुग्गला) पुद्गलो (समुदाहिआ) कहेला छे. १९. २०.

संठाणपरिणया जे उ, पंचहा ते पकित्तिआ। परिमंडला य१ वट्टा२, तंसा३ चउरंस४ मायया५ ॥ २१ ॥

अर्थ—(जे उ) जे स्कंधादिक (संठाणपरिणया) संस्थानवडे परिणाम पाम्या होय (ते) ते (पंचहा) पांच प्रकारना (पकित्तिआ) कहेला छे. ते आ प्रमाणे—(परिमंडला य) परिमंडळ—वच्चे पोलुं अने वलयने आकारे गोळ १, (वट्टा) वच्चे पोलाण रहित झालरने आकारे अथवा लाडुने आकारे गोळ, २ (तंसा) शृंगाटकनी जेम त्रण खुणावाळुं ३, (चउरंसं) पाटनी जेम चार खुणावाळुं ४, तथा (आयया) आयत एटले लाकडीनी जेम लांबुं, ५. २१.

हवे ते स्कंधादिकना वर्ण रस विगेरेनो परस्पर संबंध—मिश्रता कहे छे.—

वण्णओ जे भवे किण्हे, भइए से उ गंधओ। रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओऽवि अ ॥२३॥

अर्थ—(जे) जे स्कंधादिक (वण्णओ) वर्णे करीने (किण्हे) काळो (भवे) होय, (से उ) ते (गंधओ) गंधवडे (भइए) भजना करवा लायक छे एटले के कृष्णवर्णवाळो कोइक स्कंधादिक सुरभिगंधवाळो पण होय छे अने कोइक दुरभिगंधवाळो पण होय छे. ए ज प्रमाणे (रसओ) रसथी, (फासओ चेव) स्पर्शथी अने (संठाणओऽवि अ) संस्थानथी पण (भइए) भजना करवा लायक छे, एटले के ते ज कृष्णवर्णवाळो सुरभि के दुरभिगंधवाळो स्कंधादिक कोइक रसवडे तिक्त होय, कोइक कटुक होय, कोइक कषायलो होय, कोइक खाटो होय अने कोइक मधुर होय. एज रीते ते ज कृष्णवर्णवाळो स्कंधादिक आठमांथी कोइ पण स्पर्शवाळो होय अने ए ज रीते पांच संस्थानमांथी कोइ पण संस्थानवाळो होय, तेथी एक कृष्णवर्णवाळो स्कंधादिक बे गंध, पांच रस, आठ स्पर्श अने पांच संस्थान मळी वीश प्रकारनो होय छे. ए ज रीते बीजा चारे वर्णोना वीश वीश प्रकार गणतां कुल सो भंग वर्णने आश्री थाय छे. हवे गंधने आश्रीने भंग करीए तो पांच वर्ण, पांच रस, आठ स्पर्श अने पांच संस्थान मळी २३ भंग एक सुरभि गंधना थाय, तेटला ज दुरभिगंधना थवाथी कुल ४६ थाय छे. ए ज रीते पांच रसने आश्री गणीए तो बे गंध, पांच वर्ण, आठ स्पर्श अने पांच संस्थान मळी वीश थाय अने पांचे रसना मळी कुल सो थाय छे. ए ज रीते स्पर्शने आश्री गणीए तो पांच वर्ण, बे गंध, पांच रस अने पांच संस्थान मळी सत्तर थाय अने आठे स्पर्शना मळी १३६ थाय छे. ए ज रीते पांच संस्थानना वीश वीश भंग होवाथी तेने आश्री कुल १०० थाय छे. सर्वेना भंग एकत्र करीए त्यारे कुल ४८२ थाय छे. आ गाथाना अर्थ प्रमाणे ज सर्वे नीचेनी गाथाओनो

अर्थ जाणी लेवो, तेमां कृष्णने बदले नील विगेरे शब्दो आवे तेनो अर्थ पण प्रसिद्ध छे, तेथी लखशुं नहीं. २२.

वण्णओ जे भवे नीले, भइए से उ गंधओ । रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥२३॥

वण्णओ लोहिए जे उ, भइए से उ गंधओ । रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥२४॥

वण्णओ पीअए जे उ, भइए से उ गंधओ । रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥२५॥

वण्णओ सुक्किले जे उ, भइए से उ गंधओ । रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥२६॥

गंधओ जे भवे सुब्भी, भइए से उ वण्णओ । रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥२७॥

गंधओ जे भवे दुब्भी, भइए से उ वण्णओ । रसओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥२८॥

रसओ तित्तए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥२९॥

रसओ कडुए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥३०॥

रसओ कसाए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥३१॥

रसओ अंबिले जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥३२॥

रसओ महुरे जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ फासओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥३३॥
फासओ कक्खडे जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥३४॥
फासओ मउए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥३५॥
फासओ गरुए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥३६॥
फासओ लहुए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥३७॥
फासओ सीअए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥३८॥
फासओ उण्हए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥३९॥
फासओ निद्धए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥४०॥
फासओ लुक्खए जे उ, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए संठाणओ वि अ ॥४१॥
परिमंडलसंठाणे, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि अ ॥ ४२ ॥
संठाणओ भवे वट्टे, भइए से उ वण्णओ । गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि अ ॥४३॥

संठाणओ भवे तंसे, भइए से उ वण्णओ। गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि अ ॥४४॥
संठाणओ अ चउरंसे, भइए से उ वण्णओ। गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि अ ॥४५॥
जे आययसंठाणे. भइए से उ वण्णओ। गंधओ रसओ चेव, भइए फासओ वि अ ॥ ४६ ॥
एसा अजीवपविभत्ती, समासेण विआहिआ। एत्तो जीवविभत्तिं, वुच्छामि अणुपुव्वसो ॥ ४७ ॥

अर्थ—(एसा) आ (अजीवपविभत्ती) अजीवनो विभाग (समासेण) संक्षेपे करीने (विआहिआ) कह्यो छे. (एत्तो) हवे पछी (जीवविभत्तिं) जीवना विभागने (अणुपुव्वसो) अनुक्रमे (वुच्छामि) हुं कहीश-कहुं छुं. ४७.

ते ज कहे छे—

संसारत्था य सिद्धा य, दुविहा जीवा विआहिआ। सिद्धाऽणेगविहा वुत्ता, तं मे कित्तयतो सुण ॥४८॥

अर्थ—(संसारत्था य) चार गतिरूप संसारमां रहेला अने (सिद्धा य) सिद्धिक्षेत्रमां रहेला सिद्धो एम (दुविहा) बे प्रकारना (जीवा) जीवो (विआहिआ) कहेला छे. तेमां (सिद्धा) सिद्धो (अणेगविहा) अनेक प्रकारना (वुत्ता) कह्या छे. (तं) ते (कित्तयतो मे) कहेता एवा मारी पासे हे जंबू ! (सुण) तुं सांभळ. ४८.

सिद्धना अनेक प्रकारने ज कहे छे—

इत्थीपुरिससिद्धा य, तहेव य नपुंसगा। सलिंगे अन्नलिंगे अ, गिहिलिंगे तहेव य ॥ ४९ ॥

अर्थ—(इत्थीपुरिससिद्धा य) स्त्रीलिंग सिद्ध थया ते स्त्रीलिंग सिद्ध, पुरुषलिंगे सिद्ध थया ते पुरुषलिंग सिद्ध, (तहेव य) तथा (नपुंसगा) नपुंसकलिंगे सिद्ध थया ते नपुंसकलिंग सिद्ध, (सलिंगे) साधु वेषे सिद्ध थया ते स्वलिंग सिद्ध. (अन्नलिंगे अ) शाक्य विगेरे अन्य लिंगे सिद्ध थया ते अन्यलिंग सिद्ध, (तहेव य) तथा (गिहिलिंगे) गृहस्थीने लिंगे सिद्ध थया ते गृहीलिंग सिद्ध कहेवाय छे. अहीं च शब्दथी बीजा नहीं कहेला सिद्धना भेदो पण जाणवा. ४९.

हवे सिद्धनी अवगाहना तथा क्षेत्रने कहे छे—

उक्कोसोगाहणाए अ, जहन्न मज्झिमाइ अ। उड्ढं अहे अ तिरिअं च, समुद्दम्मि जलम्मि अ ॥५०॥

अर्थ—(उक्कोसोगाहणाए अ) उत्कृष्ट अवगाहनाने विषे एटले पांचसो धनुष प्रमाण अवगाहनाने विषे सिद्ध थया छे, (जहन्न) जघन्यथी बे हस्त प्रमाण अवगाहनाने विषे पण सिद्ध थया छे, अने (मज्झिमाइ अ) मध्यम एटले उत्कृष्ट

१ उपलक्षणथी सिद्ध थाय छे अने सिद्ध थशे एम सर्वत्र त्रणे काळ जाणवा.

२ कहेला छ भेद उपरांत ७ जिनसिद्ध, ८ अजिनसिद्ध, ९ तीर्थसिद्ध, १० अतीर्थसिद्ध, ११ प्रत्येकबुद्धसिद्ध, १२ स्वयंबुद्धसिद्ध, १३ बुद्धबोधीसिद्ध, १४ एकसिद्ध अने १५ अनेकसिद्ध एम कुल १५ भेद जाणवा.

अने जघन्यनी बेनी अवगाहनाने विषे पण सिद्ध थया छे. (उड्ढे) मेरुपर्वतनी चूलिका विगेरे ऊर्ध्वलोकमां, (अहे अ) कुबडी विजयना अधोग्रामरूप अधोलोकमां, (तिरिअं च) अढी द्वीप अने बे समुद्ररूप तिर्च्छालोकमां, (समुद्दम्मि) तेमां पण केटलाक समुद्रमां तथा (जलम्मि अ) केटलाक नदी विगेरेना जळमां पण सिद्ध थया छे. ५०.

आ प्रमाणे स्त्रीलिंग सिद्ध विगेरे कहेवाथी स्त्रीत्वादिकने विषे सिद्धिनो संभव कह्यो. हवे तेमां पण कया भेदने विषे केटला सिद्ध थाय छे ? ते कहे छे—

दस चेव नपुंसेसुं, वीसंई इत्थिआसु अ । पुरिसेसुं अ अट्ठसयं, समएणेगेणं सिज्झई ॥ ५१ ॥

अर्थ—उत्कृष्टपणे (एगेण) एक (समएण) समये (नपुंसेसु) नपुंसकने विषे (दस चेव) दश ज सिद्ध थाय छे, (इत्थिआसु अ) स्त्रीओने विषे (वीसई) वीश सिद्ध थाय छे. अने (पुरिसेसु अ) पुरुषने विषे (अट्ठसयं) एक सो ने आठ (सिज्झई) सिद्ध थाय छे. अहीं सर्वत्र नपुंसक शब्दवडे कृत्रिम नपुंसक ज समजवा. केमके अकृत्रिम–जन्मथी नपुंसकने तो दीक्षा लेवानो परिणाम ज थतो नथी. ५१.

चत्तारि अ गिहिलिंगे, अन्नलिंगे दसेव य । सलिंगेण य अट्ठसयं, समएणेगेणं सिज्झइ ॥५२॥

अर्थ—उत्कृष्टथी (एगेण) एक (समएण) समये (गिहिलिंगे) गृहीलिंगे (चत्तारि अ) चार सिद्ध थाय छे, (अन्नलिंगे) शाक्य विगेरे अन्यलिंगे (दसेव य) दश ज सिद्ध थाय छे, तथा (सलिंगेण य) स्वलिंगे–साधुवेषे (अट्ठ-

सयं) एकसो ने आठ (सिज्झइ) सिद्ध थाय छे. ५२.

उक्कोसोगाहणाए उ, सिज्झंते जुगवं दुवे। चत्तारि जहण्णाए, जवमज्झट्ठुत्तरं सयं ॥ ५३ ॥

अर्थ—(उक्कोसोगाहणाए उ) उत्कृष्ट अवगाहनाने विषे (जुगवं) एक साथे एटले एक समये (दुवे) बे जीव (सिज्झंते) सिद्ध थाय छे, (जहण्णाए) जघन्य अवगाहनाने विषे (चत्तारि) चार सिद्ध थाय छे, अने (जवमज्झ) यवना मध्यनी जेवी ते यवमध्य एटले मध्यम अवगाहनाने विषे (अट्ठुत्तरं सयं) एकसो ने आठ सिद्ध थाय छे. ५३.

चउरुड्ढलोए अ दुवे समुद्दे, तओ जले वीसमहे तहेव य।
सयं च अट्ठुत्तर तिरिअलोए, समएणं एगेण उ सिज्झई धुवं ॥ ५४ ॥

अर्थ—उत्कृष्टपणे (एगेण उ) एक (समएण) समये (उड्ढलोएअ) ऊर्ध्वलोकमां (चउर) चार सिद्ध थाय छे, (समुद्दे) समुद्रमां (दुवे) बे सिद्ध थाय छे, (जले) बीजा जळस्थानमां (तओ) त्रण सिद्ध थाय छे, (तहेव य) तथा (अहे) अधोलोकमां (वीसं) वीश सिद्ध थाय छे, (तिरिअलोए) तिर्छालोकमां (अट्ठुत्तर) आठ अधिक एवा (सयं च) एक सो एटले एक सो ने आठ (धुवं) निश्चे (सिज्झइ) सिद्ध थाय छे. ५४.

हवे ते सिद्धोना प्रतिघात विगेरे कहे छे.—

कहिं पडिहया सिद्धा, कहिं सिद्धा पइट्ठिआ । कहिं बोंदिं चइत्ता णं, कत्थ गंतूण सिज्झई ॥५५॥

अर्थ—(सिद्धा) सिद्धो (कहिं) क्यां (पडिहया) स्खलना पाम्या सता ? (सिद्धा) सिद्धो (कहिं) क्यां (पइट्ठिआ) सादि अनंत काळ सुधी रह्या सता ? (कहिं) क्यां (बोंदिं) शरीरने (चइत्ता णं) तजीने ? तथा (कत्थ) क्यां (गंतूण) जइने (सिज्झई) सिद्ध थाय छे ? ५५.

उपरना प्रश्नोनो उत्तर आपे छे.—

अलोए पडिहया सिद्धा, लोअग्गे अ पइट्ठिआ । इहं बोंदिं चइत्ता णं, तत्थ गंतूण सिज्झई ॥५६॥

अर्थ—(सिद्धा) सिद्धो (अलोए) अलोकने विषे (पडिहया) स्खलना पाम्या सता, (लोअग्गे अ) लोकना अग्रभागने विषे (पइट्ठिआ) रह्या सता (इहं) आ लोकने विषे (बोंदिं) शरीरने (चइत्ता णं) तजीने (तत्थ) ते लोकना अग्रभागने विषे (गंतूण) जइने (सिज्झई) सिद्ध थाय छे. अलोकमां धर्मास्तिकाय विगेरे नहीं होवाथी तेमां गति थइ शकती नथी. तेथी लोकने छेडे रहेला छे. नीचे के तिरछुं गमन करवुं ते कर्मने आधीन छे अने सिद्धने कर्म होता नथी तेथी उंची ज गति होय छे. वळी जे समये अहीं शरीरनो त्याग करे छे ते ज समये लोकना अग्रभागे पहोंचे छे, इत्यादि समजवुं. ५६.

हवे लोकाग्रनुं अने सिद्धनुं स्वरूप कहे छे.—

बारसहिं जोअणेहिं, सव्वट्ठस्सुवरिं भवे । ईसीपब्भारनामा उ, पुढवी छत्तसंठिआ ॥ ५७ ॥

अर्थ—(सव्वट्ठस्स उवरिं) सर्वार्थसिद्ध विमाननी उपर (बारसहिं) बार (जोअणेहिं) योजन जइए त्यारे (छत्तसंठिआ) छत्रना संस्थानवाळी—छत्राकार (ईसीपब्भारनामा उ) ईषत्प्राग्भार नामनी (पुढवी) पृथ्वी (भवे) छे. ५७.

पणयालसयसहस्सा, जोअणाणं तु आयया ।
तावइअं चेव विच्छिन्ना, तिगुणा तस्सेव परिरओ ॥ ५८ ॥

अर्थ—ते पृथ्वी (पणयालसयसहस्सा) पीस्तालीश लाख (जोअणाणं तु) योजन (आयया) लांबी छे, (तावइअं चेव) अने तेटली ज एटले पीस्तालीश लाख योजन (विच्छिन्ना) पहोळी छे, तेथी (तस्सेव) तेनो (परिरओ) परिरय–परिधि (तिगुणो) त्रण गुणो एटले त्रण गुणाथी अधिक छे. अर्थात् एक करोड बेंताळीश लाख त्रीश हजार बसो ने ओगणपचास योजन छे. ५८.

अट्ठजोअणबाहल्ला, सा मज्झम्मि विआहिआ ।
परिहायंती चरिमंते, मच्छिपत्ताओ तणुअतरी ॥ ५९ ॥

अर्थ—(सा) ते पृथ्वी (मज्झम्मि) मध्यभागे (अट्ठजोअणबाहल्ला) आठ योजन बाहल्यवाळी एटले जाडी

(विआहिआ) कही छे, त्यारपछी (परिहायंती) चोतरफथी अनुक्रमे हानि पामती पामती एटले पातळी थती थती (चरिमंते) छेवट अंते (मच्छिअपत्ताओ) माखीनी पांख करतां पण (तणुअतरी) अति सूक्ष्म–पातळी छे. अहीं दरेक योजने अंगुल पृथक्त्वनी–बेथी नव अंगुल सुधीनी हानि जाणवी. ५९.

अज्जुणसुवण्णगमई, सा पुढवी निम्मला सहावेणं ।
उत्ताणगछत्तसंठिआ य, भणिआ जिणवरेहिं ॥ ६० ॥

अर्थ—(सा पुढवी) ते पृथ्वी (सहावेणं) स्वभावथी ज (निम्मला) निर्मळ, (अज्जुणसुवण्णगमई) श्वेत सुवर्णमय, (उत्ताणगछत्तसंठिआ य) तथा चत्ता राखेल छत्रना जेवा आकारवाळी (जिणवरेहिं) जिनेश्वरोए (भणिओ) कहेली छे. ६०.

संखंककुंदसंकासा, पंडुरा निम्मला सुभा । सीआए जोअणे तत्तो, लोअंतो उ विआहिओ ॥६१॥

अर्थ—ते पृथ्वी (संखंककुंदसंकासा) शंख, अंकरत्न अने कुंदपुष्पनी जेवी (पंडुरा) श्वेत, (निम्मला) निर्मळ अने (सुभा) शुभ छे, ते सिद्धशिला पृथ्वीनुं बीजुं नाम शीता छे. (तत्तो सिआए) ते शीता पृथ्वीथी (जोअणे) उत्सेधांगुले एक योजन उपर (लोअंतो उ) लोकांत (विआहिओ) कह्यो छे. ६१.

ज्यारे एक योजनने छेडे लोकांत छे तो ते योजनमां सर्वत्र सिद्धो रहेला छे के नहीं ? ते उपर कहे छे.—

जोअणस्स उ जो तस्स, कोसो उवरिमो भवे । तस्स कोसस्स छब्भाए, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६२॥

अर्थ—(तस्स) ते (जोअणस्स उ) योजननो (जो) जे (उवरिमो) उपरनो (कोसो) एक कोश (भवे) छे, (तस्स कोसस्स) ते कोशना (छब्भाए) छट्ठा भागने विषे (सिद्धाण ओगाहणा) सिद्धोनी अवगाहना—स्थिति (भवे) छे. एटले ३३३ धनुष्य ने ३२ अंगुल प्रमाण सिद्धस्थान छे. ६२.

सिद्धोनुं ज स्वरूप कहे छे.—

तत्थ सिद्धा महाभागा, लोगग्गम्मि पइट्ठिआ । भवप्पवंचउम्मुक्का, सिद्धिं वरगइं गया ॥ ६३ ॥

अर्थ—(तत्थ) त्यां एटले ते छट्ठा भागमां (सिद्धिं) सिद्धि नामनी (वरगइं) उत्तम गतिने (गया) पामेला अने (महाभागा) महाभागवंत एवा (सिद्धा) सिद्धो (भवप्पवंचउम्मुक्का) नारकादिक संसारना प्रपंचथी—विस्तारथी मुक्त थया सता (लोगग्गम्मि) लोकाग्रने विषे (पइट्ठिआ) स्थिर रहेला छे, अर्थात् हालवा चालवाना स्वभाव रहित—स्थिर रहेला छे. ६३.

हवे सिद्धोनी अवगाहना कहे छे.—

उस्सेहो जस्स जो होई, भवम्मि चरिमम्मि अ । तिभागहीणा तत्तो अ, सिद्धाणोगाहणा भवे ॥६४॥

अर्थ—(जस्स) जे सिद्धनो (चरिमम्मि अ) पोताना छेल्ला (भवम्मि) भवने विषे (जो) जे (उस्सेहो) उत्सेध—उंचपणुं (होइ) होय छे, (तत्तो अ) तेनाथी (तिभागहीणा) त्रीजो भाग ओछी (सिद्धाण ओगाहणा)

सिद्धोनी अवगाहना (भवे) होय छे. अर्थात् शरीरना अवयवोना आंतराओ पुरवामां त्रीजो भाग ओछो थाय छे, तेथी ⅔ भागनी अवगाहना रहे छे. ६४.

ते सिद्धोनी काळथी प्ररूपणा करे छे.—

एगत्तेणं साईआ, अपज्जवसिआ वि अ । पुहत्तेण अणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ ॥ ६५ ॥

अर्थ—(एगत्तेणं) एक एक सिद्धने आश्रीने कहीए तो ते (साईआ) सादि छे एटले जे काळे ते सिद्ध थया ते काळ तेनो आदि छे. अने (अपज्जवसिआ वि अ) त्यांथी कदापि चववानुं न होवाथी अपर्यवसित एटले अनंत छे. तथा (पुहत्तेण) बहुपणाए एटले समग्र सिद्धनी अपेक्षाए सिद्धो (अणाईआ) अनादि अने (अपज्जवसिआ वि अ) अनंत छे. केमके सिद्धो नहोता, नथी के नहीं हशे एवो कोइ पण काळ नथी तेथी अनादि अनंत छे. ६५.

ते सिद्धोनुं ज विशेष स्वरूप कहे छे.—

अरूविणो जीवघणा, नाणदंसणसन्निआ । अउलं सुहसंपत्ता, उवमा जस्स नत्थि उ ॥ ६६ ॥

अर्थ—(अरूविणो) ते सिद्धो अरूपी छे, (जीवघणा) निरंतर उपयोगयुक्त होवाथी जीवरूप अने पोला भागने पूर्ण करी निचित-गाढ प्रदेशवाळा होवाथी घन छे, (नाणदंसणसन्निआ) ज्ञान अने दर्शननी ज संज्ञावाळा छे एटले ज्ञान अने दर्शनना उपयोग विना तेमनुं बीजुं कांइ पण स्वरूप नथी, (अउलं सुहसंपत्ता) अतुल सुखने पामेला छे, के

(जस्स) जे सुखनी (उवमा) उपमा ज (नत्थि उ) नथी. ६६.

फरीथी वधारे स्पष्ट करवा माटे ते सिद्धोनुं ज क्षेत्र अने स्वरूप कहे छे.——

लोएगदेसे ते सव्वे, नाणदंसणसन्निआ । संसारपारनित्थिन्ना, सिद्धिं वरगइं गया ॥ ६७ ॥

अर्थ—(ते सव्वे) ते सर्वे सिद्धना जीवो (लोएगदेसे) लोकना एक देशमां रहेला छे, आ प्रमाणे कहेवाथी ' मुक्त सर्वत्र व्यापीने रह्या छे ' ए मत दूर कर्यो, तथा (नाणदंसणसन्निआ) ज्ञान अने दर्शननी संज्ञावाळा छे. आम कहेवाथी ' ज्ञाननो नाश थवाथी ज मोक्ष छे. ' एवो कोइनो मत छे ते दूर कर्यो. तथा (संसारपारनित्थिन्ना) संसारना पारने पाम्या छे एटले फरीथी तेमने कदापि संसारमां आववानुं नथी. आम कहेवाथी " धर्मतीर्थने प्रवर्तावी मोक्षपदने पामी फरीथी तीर्थना उच्छेद वखते संसारमां आवी अधर्मनो नाश करे छे. " इत्यादि मतने दूर कर्यो. तथा (सिद्धिं) सिद्धि नामनी (वरगइं) श्रेष्ठ गतिने (गया) पामेला छे. आम कहेवाथी एम जणाव्युं के कर्मनो क्षय थयो छतां पण स्वभावे करीने ज उत्पत्ति समये लोकाग्रे पहोंचे त्यांसुधी ते क्रिया सहित पण छे. ६७.

आ प्रमाणे सिद्धोनुं स्वरूप कह्युं. हवे संसारी जीवोनुं स्वरूप कहे छे.—

संसारत्था उ जे जीवा, दुविहा ते विआहिआ । तसा य थावरा चेव, थावरा तिविहा तहिं ॥६८॥

अर्थ—(संसारत्था उ) संसारमां रहेला (जे जीवा) जे जीवो छे, (ते) ते (दुविहा) बे प्रकारना (विआहिआ)

કહ્યા છે. તે આ પ્રમાણે.—(તસા ય) ત્રસ અને (થાવરા ચેવ) સ્થાવર. (તહિં) તેમાં (થાવરા) સ્થાવર (તિવિહા) ત્રણ પ્રકારના છે. ૬૮.

સ્થાવરના ત્રણ પ્રકાર કહે છે.—

पुढवी आउजीवा य, तहेव य वणस्सई । इच्चेते थावरा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ ६९ ॥

અર્થ—(પુઢવી) પૃથ્વીકાય, (આઉજીવા ય) તથા અપકાયના જીવ, (તહેવ ય) તથા વળી (વણસ્સઈ) વનસ્પતિકાય, (ઇચ્ચેતે) એ પ્રમાણે આ (થાવરા) સ્થાવરો (તિવિહા) ત્રણ પ્રકારના છે (તેસિં) તેમના (ભેએ) ભેદોને (મે) મારી પાસે (સુણેહ) તમે સાંભળો. અહીં તેજસ્કાય અને વાયુકાય ગતિત્રસ હોવાથી તેમને સ્થાવર મધ્યે ગણ્યા નથી. ૬૯.

હવે પૃથ્વીકાયને કહે છે.

दुविहा पुढवीजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा । पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥ ७० ॥

અર્થ—(પુઢવીજીવા ઉ) પૃથ્વીકાય જીવો (દુવિહા) બે પ્રકારના છે.—(સુહુમા) સૂક્ષ્મનામકર્મના ઉદયને લીધે સૂક્ષ્મ, (બાયરા તહા) તથા બાદરનામકર્મના ઉદયને લીધે બાદર (પુણો) તેમાં પણ ફરીથી (પજ્જત્તમપજ્જત્તા) પર્યાપ્ત અને અપર્યાપ્ત (એવં) એ પ્રમાણે (એએ) સૂક્ષ્મ અને બાદર એ બન્ને (દુહા) બબ્બે પ્રકારના છે. ૭૦.

હવે તેમના જ ઉત્તર ભેદ કહે છે.

बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते विआहिआ। सण्हा खरा य बोधव्वा, सण्हा सत्तविहा तहिं ॥७१॥

अर्थ—(जे उ) जेओ (बायरा) बादर (पज्जत्ता) पर्याप्त छे, (ते) तेओ (दुविहा) बे प्रकारना (विआहिआ) कह्या छे.—(सण्हा) श्लक्ष्ण एटले चूर्ण करेला ढेफा जेवी कोमळ पृथ्वी. ते पृथ्वीरूप जीव पण उपचारथी श्लक्ष्ण कहेवाय छे. ए प्रमाणे सर्वत्र जाणवुं. (खरा य) अने बीजा कठण (बोधव्वा) जाणवा. (तहिं) तेमां (सण्हा) श्लक्ष्ण बादर पर्याप्त (सत्तविहा) सात प्रकारना छे. ७१.

ते सात प्रकार कहे छे.—

किण्हा १ नीला २ य रुहिरा ३ य, हालिद्दा ४ सुक्किला ५ तहा ।
पंडू ६ पणगमट्टीआ ७, खरा छत्तीसईविहा ॥ ७२ ॥

अर्थ—(किण्हा) काळी १, (नीला य) नीली २, (रुहिरा य) राती ३, (हालिद्दा) हारिद्रा—पीळी ४, (सुक्किला) शुक्ला—धोळी ५, (तहा) तथा (पंडू) पांडुर एटले कांइक धोळी ६, आ प्रमाणे वर्णने आश्रीने छ भेद बताव्या. तेमां पांडुर वर्ण लख्यो छे, तेथी कृष्णादिक भेदोमां पण पोतपोताना वर्णना बीजा भेदो जाणवा. तथा सातमी (पणगमट्टिआ) पनक एटले अत्यंत सूक्ष्म रज, ते रूप मृत्तिका ते पनकमृत्तिका कहेवाय छे, ते रज आकाशमां होय छे तेथी लोकमां ते पृथ्वीपणे रूढ नथी, तेथी आ भेद जूदो बताव्यो छे. ७. हवे (खरा) खर—कठण पृथ्वी (छत्तीसई-

विहा) छत्रीश प्रकारनी छे. ७२.

ते ज छत्रीश प्रकार बतावे छे.—

पुढवी अ सक्करा वालुगा य उवले सिला य लोणूसे ।
अय–तंब–तउव–सीसग–रुप्प–सुवण्णे अ वइरे अ ॥ ७३ ॥

अर्थ—(पुढवी अ) शुद्ध पृथ्वी १, (सक्करा) शर्करा–कांकरा २, (वालुगा य) वालुका–वेळु ३, (उवले) उपल–गोळ आकारना पत्थर ४, (सिला य) शिला–छीपर ५, (लोण ऊसे) लवण–समुद्रादिकनुं मीठुं ६, ऊस–खारी माटी एटले खारो विगेरे ७, (अय) लोढुं ८, (तंब) त्रांबुं ९, (तउव) त्रपुं–तरवुं एटले कलइ १०, (सीसग) सीसुं ११, (रुप्प) रुपुं १२, (सुवण्णे अ) सुवर्ण १३, (वइरे अ) वज्ररत्न एटले हीरा. १४. ७३.

हरिआले हिंगुलए, मणोसिला सीसगंजणपवाले ।
अब्भपडलब्भवालुअ, बायरकाए मणिविहाणा ॥ ७४ ॥

अर्थ—(हरिआले) हडताल १५, (हिंगुलए) हींगळोक १६, (मणोसिला) मणशील १७, (सीसग) सीसक नामनी धातु एटले जसत १८, (अंजण) अंजन १९, (पवाले) परवाळा २०, (अब्भपडल) अभ्रपटल–अबरख २१, (अब्भवालुअ) अभ्रवालुका–अबरख मिश्र वालुका २२, (बायरकाए) बादर पृथ्वीकायने विषे आ भेदो जाणवा. तथा

(मणिविहाणा) मणिना नामो पण बादर पृथ्वीकायमां ज छे. ७४.

मणिनां ज भेदो कहे छे—

गोमेज्जए अ रुअगे, अंके फलिहे अ लोहिअक्खे अ ।
मरगय–मसारगल्ले, भुअमोअग इंदनीले अ ॥ ७५ ॥
चंदण गेरुय हंसगब्भ–पुलए सोगंधिए अ बोधव्वे ।
चंदप्पभ वेरुलिए, जलकंते सूरकंते अ ॥ ७६ ॥

अर्थ—(गोमेज्जए अ) गोमेयक–गोमेदक नामना मणि २३, (रुअगे) रुचकमणि २४, (अंके) अंक रत्न २५, (फलिहे अ) स्फटिकरत्न २६, (लोहिअक्खे अ) लोहित नामना मणि २७, (मरगय) मरकत मणि २८, (मसारगल्ले) मसारगल्लमणि २९, (भुअमोअग) भुजमोचकमणि ३०, (इंदनीले अ) इंद्रनीलमणि ३१, (चंदण) चंदनमणि ३२, (गेरुय) गैरिकमणि ३३, (हंसगब्भ) हंसगर्भमणि ३४, (पुलए) पुलकमणि ३५, (सोगंधिए अ) सौगंधिकमणि ३६, (चंदप्पभ) चंद्रप्रभमणि ३७, (वेरुलिए) वैडूर्यमणि ३८, (जलकंते) जळकांतमणि ३९, (सूरकंते अ) सूर्यकांतमणि ४०. (बोधव्वे) आ मणिनां नाम जाणवां. अहीं मणिओनी १६ जातिमांथी कोइ पण चार जातिने बीजा मणिनी जातिमां समावेश करीने ४० ने बदले छत्रीशनी संख्या करवी. अर्थात् मणिनी अढार जाति गणावी छे तेने बदले

चौद जाति जाणवी. ७५-७६.

बादर पृथ्वीकायनो विषय पूर्ण करवा पूर्वक सूक्ष्म पृथ्वीकायने कहे छे—

एते खरपुढवीए, भेआ छत्तीसमाहिआ । एगविहमनाणत्ता, सुहुमा तत्थ विआहिआ ॥ ७७ ॥

अर्थ—(एते) आ (खरपुढवीए) खर पृथ्वीना (छत्तीसं) छत्रीश (भेआ) भेदो (आहिआ) कह्या. (तत्थ) ते पृथ्वीकायने विषे (सुहुमा) सूक्ष्म जीवो (एगविहं) एक ज प्रकारना एटले (अनाणत्ता) नाना प्रकार रहित (विआहिआ) कह्या छे. ७७.

हवे क्षेत्रथी पृथ्वीकायने कहे छे—

सुहुमा य सव्वलोगम्मि, लोगदेसे अ बायरा । इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥७८॥

अर्थ—(सुहुमा य) सूक्ष्म पृथ्वीकाय जीवो (सव्वलोगम्मि) सर्व लोकमां रहेला छे, (अ) अने (बायरा) बादर पृथ्वीकाय जीवो (लोगदेसे) लोकना एक देशमां एटले रत्नप्रभादिक पृथ्वी विगेरेमां रहेला छे. (इत्तो) हवे पछी (तेसिं) ते पृथ्वीकाय जीवोना (चउव्विहं) चार प्रकारना (कालविभागं तु) काळना विभागने (वोच्छं) हुं कहीश-कहुं छुं. ७८.

संतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआ वि अ ॥ ७९ ॥

अर्थ—पृथ्वीकायना जीवो (संतइं) संततिने—प्रवाहने (पप्प) आश्रीने (अणाईआ) अनादि (अपज्जवसिआ वि अ) तथा अनंत छे, अने (ठिइं) भवस्थिति अने कायस्थितिने (पडुच्च) आश्रीने (साईआ) सादि (सपज्जवसिआ वि अ) तथा सांत छे. ७९.

बावीस सहस्साइं, वासाणुक्कोसिआ भवे । आउठिई पुढवीणं, अंतोमुहुत्तं जहन्नगं ॥ ८० ॥

अर्थ—(पुढवीणं) पृथ्वीकाय जीवोनी (आउठिई) आयुष्यनी स्थिति (उक्कोसिआ) उत्कृष्टी (बावीस) बावीश (सहस्साइं) हजार (वासाण) वरसोनी (भवे) छे, अने (जहन्नगं) जघन्य (अंतोमुहुत्तं) अंतर्मुहूर्तनी छे. ८०.

असंखकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नगा । कायठिई पुढवीणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥८१॥

अर्थ—(तं कायं तु) ते कायने (अमुंचओ) नहीं मूकता एटले फरी फरीने ते ज कायमां उत्पन्न थता एवा (पुढवीणं) पृथ्वीकायजीवोनी (कायठिई) कायस्थिति (उक्कोसं) उत्कृष्टथी (असंखकालं) असंख्यकाळ एटले लोकाकाशना जेटला असंख्याता प्रदेशो छे तेटली उत्सर्पिणी अवसर्पिणीनी छे, तथा (जहन्नगा) जघन्यथी (अंतोमुहुत्तं) अंतर्मुहूर्त काळनी छे. ८१.

काळमां अंतर्गत रहेलुं आंतरुं कहे छे.—

अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नगं । विजढम्मि सए काए, पुढवीजीवाण अंतरं ॥ ८२ ॥

अर्थ—(पुढवीजीवाण) पृथ्वीकायना जीवोने (सए काए) पोतानी काय (विजढम्मि) तज्या पछी (उक्कोसं) उत्कृष्टथी (असंखकालं) असंख्याता पुद्गल परावर्तनरूप अनंतकाळनुं अने (जहन्नगं) जघन्यथी (अंतोमुहुत्तं) अंतर्मुहूर्तनुं (अंतरं) आंतरुं होय छे. तेटलो काळ अन्य जातिमां भमीने त्यारपछी पृथ्वीकायने विषे फरीथी आवे छे. (जो मोक्षमां न जाय तो. एम सर्वत्र जाणवुं.) ८२.

हवे भावथी पृथ्वीकायनी प्ररूपणा करे छे.—

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ । संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥८३॥

अर्थ—(एएसिं) ते पृथ्वीकाय जीवोना (वण्णओ चेव) वर्णथी, (गंधओ) गंधथी, (रसफासओ) रसथी, स्पर्शथी, (वावि) तथा वळी (संठाणादेसओ) संस्थानना प्रकारथी (सहस्ससो) हजारो (विहाणाइं) भेदो छे. अर्थात् वर्णादिकनी तरतमताथी असंख्य भेदो थाय छे. ८३.

हवे अप्काय विषे कहे छे.—

दुविहा आउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा । पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥ ८४ ॥

अर्थ—(आउजीवा उ) अप्कायना जीवो (दुविहा) बे प्रकारना छे. सूक्ष्म तेम ज बादर. अने ए बंने पाछा पर्याप्त अने अपर्याप्त एम बे प्रकारना छे. ८४.

बायरा जे उ पज्जत्ता, पंचहा ते पकित्तिआ । सुद्धोदए अ उस्से, हरतणू महिआहिमे ॥ ८५ ॥

अर्थ—(जे उ) जे (बायरा) बादर (पज्जत्ता) पर्याप्ता छे, (ते) ते (पंचहा) पांच प्रकारना (पकित्तिआ) कह्या छे. ते आ प्रमाणे—(सुद्धोदए अ) शुद्ध मेघनुं जळ १, (उस्से) अवश्याय—शरदऋतुमां प्रातःकाळे झाकळ पडे छे ते २, (हरतणू) हरतनु—प्रातःकाळे आर्द्र पृथ्वीमांथी नीकळी तृणना अग्रभागपर जळना बिंदुओ लागे छे ते ३, (महिआ) महिका—चोमासानी ऋतु पहेलां सूक्ष्म वृष्टि पडे छे ते के जेने धूमर कहेवामां आवे छे ४, तथा (हिमे) हिम एटले जेने ठार कहेवामां आवे छे ते ५. ८५.

एगविहमनाणत्ता, सुहुमा तत्थ विआहिआ । सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे अ बायरा ॥ ८६ ॥

संतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआ वि अ ॥ ८७ ॥

सत्तेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिआ भवे । आउठिई [1]आऊणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निआ ॥ ८८ ॥

असंखकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्निआ । कायठिई [2]आऊणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥ ८९ ॥

अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नगं । विजढम्मि सए काए, [3]आऊजीवाण अंतरं ॥ ९० ॥

---

१ अप्कायनी उत्कृष्ट आयुष्यनी स्थिति सात हजार वर्षनी छे. २ अप्कायनी. ३ अप्कायना जीवोनुं.

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ । संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ ९१ ॥

अर्थ—प्रथमनी जेम करवो. ८६–९१.

हवे वनस्पतिकाय विषे कहे छे.—

दुविहा वणस्सईजीवा, सुहुमा बायरा तहा । पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥ ९२ ॥

अर्थ—(वणस्सईजीवा) वनस्पतिकायना जीवो बे प्रकारना छे. सूक्ष्म ने बादर. ते बंने पाछा पर्याप्त ने अपर्याप्त एम बे बे प्रकारना छे. ९२.

बायरा जे उ पज्जत्ता, दुविहा ते विआहिआ । साहारणसरीरा य, पत्तेगा य तहेव य ॥ ९३ ॥

अर्थ—(जे उ) जे (बायरा) बादर (पज्जत्ता) पर्याप्ता छे, (ते) ते (दुविहा) बे प्रकारना (विआहिआ) कहेला छे. ते आ प्रमाणे.—(साहारणसरीरा य) साधारण शरीरवाळा एटले अनंत जीवोनुं एक ज शरीर होय ते, (तहेव य) तथा वळी (पत्तेगा य) प्रत्येक शरीर एटले एक एक जीवनुं एक एक शरीर होय ते. ९३.

पत्तेअसरीरा उ, णेगहा ते पकित्तिआ । रुक्खा गुच्छा य गुम्मा य, लया वल्ली तणा तहा ॥ ९४ ॥

अर्थ—(पत्तेअसरीरा उ) तेमां जे प्रत्येक शरीरी छे, (ते) ते (णेगहा) अनेक प्रकारना (पकित्तिआ) कह्या छे. ते आ प्रमाणे.—(रुक्खा) आम्र विगेरे वृक्षो १, (गुच्छा य) वृन्ताक विगेरे गुच्छा २, (गुम्मा य) नवमालिका विगेरे

गुल्म ३, (लया) चंपकादिक लता ४, (वल्ली) चीभडा विगेरेना वेला ५, (तणा तहा) तथा दर्भ विगेरे तृण ६. ९४.

वलयलया पव्वगा कुहणा, जलरुहा ओसही तहा । हरिअकाया य बोधव्वा, पत्तेआ इति आहिया ॥९५॥

अर्थ—(वलयलया) नाळीयेरी, केळ विगेरे लतावलय, तेमने बीजी शाखा न होवाथी तेओ लता कहेवाय छे, अने तेमनो वलय जेवो आकार छे तेथी ते लतावलय कहेवाय छे ७, (पव्वगा) शेरडी विगेरे पर्वज-पर्वथी उत्पन्न थयेला ८, (कुहणा) छत्रने आकारे भूमिफोडा थाय छे ते कुहण कहेवाय छे ९, (जलरुहा) कमळ विगेरे जळरुह १०, (ओसही) फळपाकवाळी शाळी विगेरे ओषधि–धान्य ११, (तहा) तथा (हरिअकाया य) तांदळीयानी भाजी विगेरे हरितकाय १२, चशब्द छे तेथी पोतपोतामां रहेला अनेक भेदो जाणवा. (इति आहिआ) आ प्रमाणे कहेला (पत्तेआ) प्रत्येकशरीरी (बोधव्वा) जाणवा. ९५.

हवे साधारणशरीरी कहे छे.—

साहारणसरीरा उ, णेगहा ते पकित्तिआ । आलूए मूलए चेव, सिंगबेरे तहेव य ॥ ९६ ॥
हिरिली सिरिली सिस्सिरिली जावईके अ कंदली । पलंडू लसण कंदे, कंदली अ कुहुव्वए ॥९७॥
लोहणी हूअ थीहू अ, कुहगा य तहेव य । कण्हे अ वज्जकंदे अ, कंदे सूरणए तहा ॥ ९८ ॥
अस्सकण्णी अ बोधव्वा, सीहकण्णी तहेव य । मुसुंढी अ हलिद्दा य, णेगहा एवमायओ ॥९९॥

अर्थ—(साहारणसरीरा उ) जे साधारण शरीरी छे (ते) ते (णेगहा) अनेक प्रकारनां (पकित्तिआ) कहेला छे. ते आ प्रमाणे—(आलूए) आलु–पिंडालु नामनो कंद १, (मूलए चेव) मूळो २, (सिंगबेरे) शृंगबेर–आदु ३, (तहेव य) तथा वळी (हिरिली) हिरिली नामनो कंद ४, (सिरिली) सिरिली नामनो कंद ५, (सिस्सिरिली) सिस्सिरिली नामनो कंद ६, (जावईके अ) यावतीक नामनो कंद ७, (कंदली) कंदली नामनो कंद ८, (पलंडू) पलांडु–डुंगळी ९, (लसण कंदे) लसण कंद १०, (कंदली अ) कंदली कंद ११, (कुहुव्वए) कुहुव्रत कंद १२, (लोहणी) लोहिनी कंद १३, (हूअ) हुत कंद १४, (थीहू अ) थीहू कंद १५, (कुहगा य) कुहक कंद १६, (तहेव य) तथा वळी (कण्हे अ) कृष्ण कंद १७, (वज्जकंदे अ) वज्र कंद १८, (कंदे सूरणए) सूरण कंद १९, (तहा) तथा (अस्सकण्णी अ) अश्वकर्णी कंद २०, (सीहकण्णी) सिंहकर्णी कंद २१, (तहेव य) तथा वळी (मुसुंढी अ) मुसंढी कंद २२, (हलिद्दा य) अने हरिद्रा कंद २३ (एवमायओ) ए विगेरे मुख्य २३ प्रकारे तेम ज (णेगहा) अनेक प्रकारे (बोधव्वा) जाणवा. ९६–९९.

एगविहमनाणत्ता, सुहुमा तत्थ विआहिआ । सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे अ बायरा ॥ १०० ॥
संतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआ वि अ ॥ १०१ ॥
दस चेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिअं भवे । वणस्सईण आउं तु, अंतोमुहुत्तं जहन्नगं ॥ १०२ ॥

अर्थ—अर्थ पूर्ववत् जाणवो. विशेष ए के—वनस्पतिकायनुं उत्कृष्ट आयुष्य दश हजार वर्षनुं अने जघन्य अंत-

मुहूर्त्तनुं छे. तेमां उत्कृष्ट आयुष्य प्रत्येक शरीरवाळा पर्याप्त बादर वनस्पतिकायनुं ज होय छे, अने अपर्याप्तनुं जघन्य ज होय छे. सूक्ष्म अने साधारणनुं पर्याप्त अपर्याप्त बंनेनुं अंतर्मुहूर्त्तनुं ज होय छे. ए ज प्रमाणे पूर्वे कहेला पृथ्वीकाय अने अप्-कायमां तथा आगळ कहेशे एवा तेजस्काय अने वायुकायमां पण पर्याप्त बादरने ज उत्कृष्ट आयुष्य होय एम जाणवुं. १००-१०२.

अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नगा । कायठिई पणगाणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥ १०३ ॥

अर्थ— पूर्ववत्. विशेष ए के पनक (सूक्ष्म) वनस्पतिकायनी उत्कृष्ट कायस्थिति अनंतकाळनी छे. ते सामान्य रीते सूक्ष्म वनस्पतिना जीवोने अथवा सूक्ष्म निगोदना जीवोने आश्रीने कही छे. विशेष विवक्षा करतां तो प्रत्येक वनस्पति अने बादर निगोद ते साधारण वनस्पति-तेनी तो उत्कृष्ट कायस्थिति सीत्तेर कोटाकोटि सागरोपमनी छे, अने जेणे व्यवहार राशिनो कोइ वखत पण स्पर्श कर्यो छे अर्थात् व्यवहार राशिमां आवी गयेल छे एवा सूक्ष्म निगोदनी कायस्थितिनुं प्रमाण असंख्यात काळनुं छे. १०३.

असंखकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नगं । विजढम्मि सए काए, पणगजीवाणं अंतरं ॥ १०४ ॥

अर्थ—पूर्ववत्. विशेष ए के—कोइ जीव वनस्पतिथी नीकळी पृथ्व्यादिकने विषे भ्रमण करी पाछो फरीथी वनस्पतिमां आवे तो उत्कृष्टथी असंख्यात काळे आवे. केमके वनस्पति सिवाय बीजा सर्वनी कायस्थिति असंख्यात काळनी ज छे, तेथी वनस्पतिकायनुं उत्कृष्ट आंतरुं असंख्यात काळनुं ज कह्युं छे. १०४.

एएसिं वएणओ चेव, गंधओ रसफासओ । संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ १०५ ॥

अर्थ—पूर्ववत्. १०५.

इच्चेते थावरा तिविहा, समासेण विआहिआ । एत्तो उ तसे तिविहे, वोच्छामि अणुपुव्वसो ॥ १०६ ॥

अर्थ--(इच्चेते) आ प्रमाणे आ (तिविहा) त्रण प्रकारना (थावरा) स्थावरो (समासेण) संक्षेपे करीने (विआहिआ) कह्या. (एत्तो उ) हवे पछी (तिविहे) त्रण प्रकारना (तसे) त्रसने (अणुपुव्वसो) अनुक्रमे (वोच्छामि) हुं कहीश. १०६.

तेउ वाऊ अ बोधव्वा, उराला य तसा तहा । इच्चेते तसा तिविहा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १०७ ॥

अर्थ—(तेउ) तेजस्काय, (वाऊ अ) वायुकाय, (उराला य) अने उदार एटले स्थूळ एवा द्वींद्रियादिक ते त्रणे (तसा) त्रस (बोधव्वा) जाणवा, (तहा) तथा (इच्चेते) ए रीते आ (तसा) त्रसो (तिविहा) त्रण प्रकारना छे, (तेसिं) तेमना (भेए) भेदो (मे) मारी पासे (सुणेह) सांभळो. अहीं त्रस एटले गति करनार एवो अर्थ थाय छे. तेमां तेज अने वायु स्थावर नामकर्मनो उदय छतां पण गमननी अपेक्षाए त्रस कहेवाय छे, अने द्वींद्रियादिक तो त्रस नामकर्मना उदयथी तथा गति करनार होवाथी त्रस कहेवाय छे. १०७.

तेमां प्रथम तेजस्काय कहे छे.—

दुविहा तेउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा । पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥ १०८ ॥

बायरा जे उ पज्जत्ता, णेगहा ते पकित्तिआ । अंगारे मुम्मुरे अगणी, अच्ची जाला तहेव य ॥१०९॥

अर्थ—पूर्ववत्. विशेष ए के बादर पर्याप्ताना अनेक भेद आ प्रमाणे छे.—(अंगारे) धूमाडा विनाना बळता अंगारा १, (मुम्मुरे) राख मिश्रित अग्निना तणखा २, (अगणी) आ बे सिवायनो शुद्ध अग्नि ३, (अच्ची) बळता काष्ठनी साथे रहेली ज्वाळा ४, (तहेव य) तथा (जाला) तूटक थइने उंची गयेली ज्वाळा. ५. १०८–१०९.

उक्का विज्जुअ बोधव्वा, णेगहा एवमाइओ । एगविहमनाणत्ता, सुहुमा ते विआहिआ ॥ ११० ॥

अर्थ—(उक्का) आकाशमां उल्कापात थाय छे ते ६, (विज्जुअ) तथा वीजळी ७, (एवमाइओ) ए विगेरे (णेगहा) अनेक प्रकारे तेजस्कायना भेदो (बोधव्वा) जाणवा. बाकीनो अर्थ पूर्ववत् करवो. ११०.

सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे अ बायरा । एत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥ १११ ॥

संतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआ वि अ ॥ ११२ ॥

तिण्णेव अहोरत्ता, उक्कोसेण विआहिआ । आउठिई उ तेऊणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निआ ॥ ११३ ॥

---

१ त्रण ज. २ रात्रिदिवस.

असंखकालमुक्कोसा अंतोमुहुत्तं जहन्नगा । कायठिई तेऊणं, तं कायं तु अमुंचओ ॥ ११४ ॥
अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नगं । विजढम्मि सए काए, तेऊजीवाण अंतरं ॥ ११५ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ । संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ ११६ ॥

अर्थ—पूर्ववत्. १११-११६. एटलुं विशेष के एनुं उत्कृष्ट आयुष्य त्रण अहोरात्रीनुं जाणवुं.

हवे वायुकाय कहे छे.—

दुविहा वाउजीवा उ, सुहुमा बायरा तहा । पज्जत्तमपज्जत्ता, एवमेए दुहा पुणो ॥ ११७ ॥
बायरा जे उ पज्जत्ता, पंचहा ते पकित्तिआ। उक्कलिया मंडलिआ, घण गुंजा सुद्धवाया य ॥११८॥

अर्थ—पूर्ववत्. विशेष—(पंचहा) पांच प्रकारे बादर पर्याप्त वायुकाय कह्या छे. ते आ प्रमाणे.—(उक्कलिआ) उत्कलिका एटले जे रही रहीने वाय तेवो वायु १, (मंडलिआ) मंडलिक एटले वींटोळीओ २, (घण) रत्नप्रभादिकना आधाररूप घनवात ३, (गुंजा) गुंजारव करता वाय ते ४, (सुद्धवाया य) स्वाभाविक धीमे धीमे वाय ते वायु. ५. ११७-११८.

संवट्टगवाए अ, णेगहा एवमायओ । एगविहमनाणत्ता, सुहुमा ते विआहिआ ॥ ११९ ॥

अर्थ—(संवट्टगवाए अ) तथा संवर्तकवात एटले दूर रहेला तृणादिकने पण उपाडी अमुक प्रदेशमां लावी नांखे

तेवो वायु, (एवमायश्रो) ए विगेरे (श्रेगहा) अनेक प्रकार वायुकायजीवोना छे. अने नाना प्रकार न होवाथी सूक्ष्म वायुकाय जीवो एक ज प्रकारना छे, ११६.

सुहुमा सव्वलोगम्मि, लोगदेसे य बायरा । इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥१२०॥

संतइं पप्पऽणाईश्रा, श्रपज्जवसिश्रा वि श्र । ठिइं पडुच्च साईश्रा, सपज्जवसिश्रा वि श्र ॥ १२१ ॥

तिण्णेव सहस्साइं, वासाणुक्कोसिश्रा भवे । श्राऊठिई वाऊणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निश्रा ॥ १२२ ॥

श्रसंखकालमुक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निश्रा । कायठिई वाऊणं, तं कायं तु श्रमुंचश्रो ॥ १२३ ॥

श्रणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं । विजढम्मि सए काए, वाउजीवाण अंतरं ॥ १२४ ॥

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ । संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ १२५ ॥

श्रर्थ—पूर्ववत्. १२०–१२५ हवे उदार–स्थूल त्रसने कहे छे.—

उराला[२] य तसा[१] जे उ, चउहा[४] ते[३] पकित्तिश्रा । बेइंदिश्र तेइंदिश्र, चउरो पंचिंदिश्रा चेव ॥१२६॥

श्रर्थ—(जे उ) वळी जे (उराला य) उदार एटले स्थूल (तसा) त्रसो छे (ते) ते (चउहा) चार प्रकारना

---

१ एमनी त्रण हजार वर्षनी उत्कृष्ट स्थिति (आयु)छे.

(पकित्तिआ) कहेला छे. ते आ प्रमाणे.—(बेइंदिअ) द्वींद्रिय १, (तेइंदिअ) त्रींद्रिय २, (चउरो) चतुरिंद्रिय ३, (पंचिंदिआ चेव) तथा पंचेंद्रिय ४. १२६.

प्रथम द्वींद्रियने कहे छे.—

बेइंदिआ उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिआ । पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १२७ ॥

अर्थ—बेइंद्रियजीवो पर्याप्त अने अपर्याप्त एम बे प्रकारना कह्या छे. तेना पाछा अवांतर बीजा भेदो छे ते सांभळो. १२७.

किमिणो मंगला* चेव, अलसा माइवाहया । वासीमुहा य सिप्पीआ, संखा संखणया तहा ॥१२८॥

पलोगाणुलया चेव, तहेव य वराडगा । जलूगा जालगा चेव, चंदणा य तहेव य ॥ १२९ ॥

अर्थ—(किमिणो) कृमिआ १, (मंगला चेव) मंगल अथवा सोमंगल नामना जीव विशेष २, (अलसा) अळसीया-वर्षाऋतुमां थाय छे ते ३, (माइवाहया) मातृवाहक एटले चूडेल जातिना जीव ४, (वासीमुहा) वासीमुख एटले वांसलाना जेवा मुखवाळा जीवविशेष ५, (य) तथा (सिप्पीआ) शुक्ति—छीपलीओ ६, (संखा) शंख ७, (संखणया) शंखनक—नाना शंख ८, (तहा) तथा (पलोगाणुलया चेव) पल्लुका नामना जीव ९, नाना पल्लुका १०, (तहेव य) तथा (वराडगा) वराटक ते कोडाने कोडी ११, (जलूगा) जळो १२, (जालगा चेव) जालक जातिना जीव १३, (तहेव य) तथा (चंदणा य) चंदनक एटले अक्ष, जे स्थापनाचार्यमां काम लागे छे ते. १४. १२८-१२९.

---

* ' सोमंगला ' इति प्रत्यन्तरम्,

इइ बेइंदिआ एए, णेगहा एवमायओ । लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ विआहिआ ॥ १३० ॥
संतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआ वि अ ॥१३१॥
वासाइं बारसेव उ, उक्कोसेण विआहिआ । बेइंदिअआउठिई, अंतोमुहुत्तं जहन्निआ ॥ १३२ ॥
संखेज्जकालमुक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहन्निआ । बेइंदिअकायठिई, तं कायं तु अमुंचओ ॥ १३३ ॥
अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं । बेइंदिआण जीवाणं, अंतरेअं विआहिअं ॥ १३४ ॥
एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ । संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१३५॥

अर्थ—पूर्ववत्. १३०–१३५.

हवे त्रींद्रिय जीवोनी प्ररूपणा करे छे.—

तेइंदिया उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिआ । पज्जत्तमपज्जता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १३६ ॥

अर्थ—पूर्ववत्. १३६.

कुंथू पिपीलि उद्दंसा, उक्कलुद्देहिआ तहा । तणहारकट्ठहारा, मालुगा पत्तहारगा ॥ १३७ ॥

---

१ बार वरसनी तेमनी उत्कृष्ट स्थिति (आयु) कहेल छे, २ एमनी कायस्थिति उत्कृष्टी संख्याता काळनी कही छे.

कप्पासट्ठिमिंजा य, तिंदुगा तउसमिंजगा । सदावरी अ गुम्मी अ, बोधव्वा इंदकाइआ ॥१३८॥
इंदगोवगमाईआ, णेगहा एवमायओ । लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ विआहिआ ॥ १३९ ॥

अर्थ—(कुंथु) कुंथुवा, (पिपीलि) कीडी, (उदंसा) उदंश, (उक्कलुदेहिआ) उत्कालिक, उदेहीका–उधी (तहा) तथा (तणहार) तृणहार, (कट्ठहारा) काष्ठहार, (मालुगा) मालूक, (पत्तहारगा) पत्रहारक, (कप्पासिट्ठिमिंजा य) कपासना कपासीयामांथी उत्पन्न थता, (तिंदुगा) तिंदुक, (तउसमिंजगा) त्रपुसमिंजक, (सदावरी अ) सदावरी, (गुम्मी अ) गुम्मी एटले कानखजुरा, (इंदकाइआ) इंद्रकायिक, (बोधव्वा) जाणवा, तथा (इंदगोवगमाईआ) इंद्रगोप--इंद्र राजानी गाय आदि त्रींद्रिय जाणवा. (एवमायओ) ए आदि (अणेगहा) अनेक प्रकारना जाणवा. (ते सव्वे) ते सर्व (लोएगदेसे) लोकना एक देशमां रहेला छे. (सव्वत्थ) सर्वत्र (न विआहिआ) रहेला कह्या नथी. १३७–१३९.

संतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआ वि अ ॥ १४० ॥
एगूणपण्ण होरत्ता, उक्कोसेण विआहिआ । तेइंदिअ आउठिई, अंतोमुहुत्तं जहण्णिआ ॥ १४१ ॥
संखेज्जकालमुक्कोसा, अंतोमुहुत्तं जहण्णिआ । तेइंदिअकायठिई, तं कायं तु अमुंचओ ॥ १४२ ॥
अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नगं । तेइंदिअजीवाणं, अंतरेअं विआहिअं ॥ १४३ ॥

---

१ ओगणपचास अहोरात्र–रात्रिदिवसनी तेमनी उत्कृष्टी स्थिति (आयु) छे. २ आ आंतरुं.

एएसिं वरणओ चेव, गंधओ रसफासओ । संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ १४४ ॥

अर्थ—पूर्ववत्. १४०–१४४.

हवे चतुरिंद्रिय कहे छे.—

चउरिंदिआ उ जे जीवा, दुविहा ते पकित्तिआ । पज्जत्तमपज्जत्ता, तेसिं भेए सुणेह मे ॥ १४५ ॥

अर्थ—पूर्ववत्. १४५.

अंधिआ पोत्तिआ चेव, मच्छिआ मसगा तहा । भमरे कीडपयंगे अ, ढिंकुणे कुंकुणे तहा ॥१४६॥
कुक्कुडे सिंगिरीडी अ, नंदावत्ते अ विच्छिए । डोले भिंगिरीडी अ, विरिली अच्छिवेधए ॥१४७॥
अच्छिले माहए अच्छि–रोडए चित्तपत्तए । ओहिंजलिआ जलकारि अ नीआ तंबगा वि अ ॥१४८॥

अर्थ—(अंधिआ) अंधिक जातिना जीव, (पोत्तिआ चेव) पौतिक, (मच्छिआ) मक्षिका, (मसगा) मशक–मच्छर, (तहा) तथा (भमरे) भ्रमर, (कीडपयंगे) कीट, पतंगीयुं, (अ) तथा (ढिंकुणे) ढिंकुण–बगाइ, (कुंकुणे) कुंकण, (तहा) तथा (कुक्कुडे) कुर्कुट, (सिंगिरीडी अ) शृंगरीटी, (नंदावत्ते अ) नंदावर्त, (विच्छिए) वींछी, (डोले) डोल–खडमाकडी, (भिंगिरीडी अ) भृंगरीटक, (विरिली) विरली, (अच्छिवेधए) अक्षीवेधक, (अच्छिले) अक्षिल,

(माहए) मागध, (अच्छिरोडए) अचीरोटक, (चित्तपत्तए) चित्रपत्रक, (ओहिंजलिआ) उपधिजलिक, (जलकारि अ) जळकारी, (नीआ) नीचक, (तंबगा वि अ) तथा ताम्रक. १४६–१४८. (आमां घणा नाम समजाता नथी.)

चउरिंदिआ एए,ऽणेगहा एवमायओ । लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे परिकित्तिआ ॥ १४९ ॥

संतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआ वि अ ॥ १५० ॥

छच्चेव य मासाऊ, उक्कोसेण विआहिआ । चउरिंदिअआउठिई, अंतोमुहुत्तं जहण्णिआ ॥ १५१ ॥

संखेज्जकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नगं । चउरिंदिअकायठिई, तं कायं तु अमुंचओ ॥ १५२ ॥

अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नगं । चउरिंदियाण जीवाणं, अंतरेअं विआहिअं ॥ १५३ ॥

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ । संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ १५४ ॥

अर्थ—पूर्ववत्. १४९–१५४.

हवे पंचेंद्रिय कहे छे.—

पंचेंदिआ उ जे जीवा, चउव्विहा ते विआहिआ । नेरइआ तिरिक्खा य, मणुआ देवा य आहिआ ॥१५५॥

अर्थ—(जे जीवा) जे जीवो (पंचेंदिआ उ) पंचेंद्रिय छे, (ते) ते (चउव्विहा) चार प्रकारना (विआहिआ) कह्या

---

१ छ मासनी उत्कृष्टस्थिति (आयु) छे.

छे. ते आ प्रमाणे.—(नेरइआ) नारकी, (तिरिक्खा य) तिर्यंच, (मणुआ) मनुष्य, (देवा य) अने देव (आहिआ) कह्या छे. १५५.

हवे प्रथम नारकीना भेद कहे छे—

नेरईआ सत्तविहा, पुढवीसु सत्तसू भवे । रयणाभसक्कराभा, वालुआभा य आहिआ ॥ १५६ ॥
पंकाभा धूमाभा, तमा तमतमा तहा । इति नेरइआ एते, सत्तहा परिकित्तिआ ॥ १५७ ॥

अर्थ—(नेरईआ) नारकीओ (सत्तविहा) सात प्रकारना छे. कारण के ते (सत्तसू) सात जुदी जुदी—उपर नीचे रहेली (पुढवीसु) पृथ्वीने विषे (भवे) होय छे. तेथी ते पृथ्वीना सात भेदथी नारकीना पण सात भेद छे. ते सात पृथ्वीनां नाम आ प्रमाणे.—(रयणाभ) रत्नप्रभा १, (सक्कराभा) शर्कराप्रभा २, (वालुआभा य) तथा त्रीजी वालुकाप्रभा ३ (आहिआ) कही छे. तथा (पंकाभा) पंकप्रभा ४, (धूमाभा) धूमप्रभा ५, (तमा) एटले तमप्रभा ६, (तमतमा तहा) तथा तमतमा एटले तमतमप्रभा ७, (इति) आ प्रमाणे पृथ्वीना नामवाळा (एते) आ (नेरइआ) नारकी (सत्तहा) सात प्रकारना (परिकित्तिआ) कह्या छे. १५६—१५७.

लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे उ विआहिआ। इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥१५८॥
संतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआ वि अ ॥ १५९ ॥

सागरोवममेगं तु, उक्कोसेणे विआहिआ । पढमाए जहण्णेणं, दसवाससहस्सिआ ॥ १६० ॥

अर्थ—पूर्ववत्. १५८–१५६. (पढमाए) पहेली नरक पृथ्वीमां नारकीनी स्थिति (उक्कोसेण) उत्कृष्टथी (सागरोवममेगं तु) एक सागरोपमनी अने (जहण्णेणं) जघन्यथी (दसवाससहस्सिआ) दश हजार वर्षनी (विआहिआ) कही छे. १६०.

तिण्णेव सागराऊ, उक्कोसेण विआहिआ । दोच्चाए जहण्णेणं, एगं तु सागरोवमं ॥ १६१ ॥

सत्तेव सागराऊ, उक्कोसेण विआहिआ । तइआए जहन्नेणं, तिण्णेव उ सागरोवमा ॥ १६२ ॥

अर्थ—(दोच्चाए) बीजी पृथ्वीमां (उक्कोसेण) उत्कृष्टथी (तिण्णेव) त्रण ज (सागराऊ) सागरोपमनुं आयुष्य अथवा स्थिति (विआहिआ) कही छे अने (जहण्णेणं) जघन्यथी (एगं तु) एक (सागरोवमं) सागरोपमनी कही छे. १६१. (तइआए) त्रीजी पृथ्वीमां (उक्कोसेण) उत्कृष्टथी (सत्तेव) सात ज (सागराऊ) सागरोपमनुं आयुष्य अने (जहन्नेणं) जघन्यथी (तिण्णेव उ) त्रण ज (सागरोवमा) सागरोपमनुं आयुष्य अथवा स्थिति विआहिआ कही छे. १६२.

दस सागरोवमाऊ, उक्कोसेण विआहिआ । चउत्थीए जहन्नेणं, सत्तेव उ सागरोवमा ॥ १६३ ॥

अर्थ—(चउत्थीए) चोथी पृथ्वीमां (उक्कोसेण) उत्कृष्टथी (दस) दश (सागरोवमाऊ) सागरोपमनुं आयुष्य तथा (जहन्नेणं) जघन्यथी (सत्तेव उ) सात ज (सागरोवमा) सागरोपमनुं आयुष्य अथवा स्थिति (विआहिआ) कही छे. १६३.

सत्तरसं सागराऊ, उक्कोसेण विआहिआ । पंचमाए जहन्नेणं, दस चेव उ सागरोवमा ॥ १६४ ॥

अर्थ— (पंचमाए) पांचमी पृथ्वीमां (उक्कोसेण) उत्कृष्टथी (सत्तरस) सतर (सागराऊ) सागरोपमनुं आयुष्य अने (जहन्नेणं) जघन्यथी (दस चेव उ) दश ज (सागरोवमा) सागरोपमनुं आयुष्य अथवा स्थिति (विआहिआ) कही छे. १६४.

बावीस सागराऊ, उक्कोसेण विआहिआ । छट्ठीए जहन्नेणं, सत्तरस सागरोवमा ॥ १६५ ॥

तेत्तीस सागराऊ, उक्कोसेण विआहिआ । सत्तमाए जहन्नेणं, बावीसं सागरोवमा ॥ १६६ ॥

अर्थ—पूर्ववत्. विशेष ए के—छट्ठी पृथ्वीमां उत्कृष्ट आयुष्य बावीश सागरोपमनुं छे. तथा जघन्य सत्तर सागरोपमनुं छे. तथा सातमीमां उत्कृष्ट तेत्रीश सागरोपमनुं अने जघन्य बावीश सागरोपमनुं कह्युं छे. १६५–१६६.

जा चेव उ आउठिई, नेरईआणं विआहिआ । सा तेसिं कायठिई, जहन्नुक्कोसिआ भवे ॥१६७॥

अर्थ—(नेरईआणं) नारकीओनी (जा चेव उ) जे (आउठिई) आयुष्यनी स्थिति (विआहिआ) कही छे, (सा) ते ज (तेसिं) तेमनी (जहन्नुक्कोसिआ) जघन्य अने उत्कृष्ट (कायठिई) कायस्थिति पण (भवे) होय छे. कारण के नारकी मरीने अनंतर नारकी थइ शकतो नथी. १६७.

अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नगं । विजढम्मि सए काए, नेरइआणं तु अंतरं ॥१६८॥

अर्थ—तेनुं उत्कृष्ट अंतर अनंत काळनुं छे अने जघन्य अंतर कोइ जीव नरकमांथी उद्धरी गर्भज पर्याप्त मत्स्यने विषे उत्पन्न थइ अंतर्मुहूर्तनुं आयुष्य पूर्ण करी क्लिष्ट अध्यवसायने लीधे नरकमां ज उत्पन्न थाय त्यारे अंतर्मुहूर्त्तनुं पडे छे. १६८.

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ। संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१६९॥

अर्थ—पूर्ववत्. १६९. हवे तिर्यंचनी प्ररूपणा करे छे.—

पंचिंदिअतिरिक्खा उ, दुविहा ते विआहिआ । समुच्छिमतिरिक्खा य, गब्भवक्कंतिआ तहा ॥१७०॥

अर्थ—(पंचिंदिअतिरिक्खा उ) जे पंचेंद्रिय तिर्यंचो छे, (ते) ते (दुविहा) बे प्रकारना (विआहिआ) कह्या छे. ते आ प्रमाणे.–(समुच्छिमतिरिक्खा य) संमूर्छिम तिर्यंच (गब्भवक्कंतिआ तहा) तथा गर्भने विषे व्युत्क्रांति एटले उत्पत्ति छे जेनी एवा अर्थात् गर्भज तिर्यंच. १७०.

दुविहा वि ते भवे तिविहा, जलयरा थलयरा तहा। खहयरा य बोधव्वा, तेसिं भेए सुणेह मे ॥१७१॥

अर्थ–-(दुविहा वि) बे प्रकारना एवा पण (ते) ते (तिविहा) त्रण त्रण प्रकारना (भवे) होय छे. ते आ प्रमाणे.–(जलयरा) जळचर, (थलयरा) स्थळचर, (तहा) तथा (खहयरा य) खेचर, ए त्रण प्रकारना (बोधव्वा) जाणवा. (तेसिं) तेमना (भेए) भेदो (मे) मारी पासे (सुणेह) सांभळो. १७१.

प्रथम जळचर जीवोना भेद कहे छे.—

मच्छा य कच्छभा य, गाहा य मगरा तहा । सुंसुमारा य बोधव्वा, पंचहा जलचराहिआ ॥१७२॥

अर्थ—(मच्छा य) मत्स्य, (कच्छभा य) काचबा, (गाहा य) ग्राह-सुंढ, (मगरा) मगर, (तहा) तथा (सुंसुमारा य) सुंसुमार ए (पंचहा) पांच प्रकारना (जलचरा आहिआ) जळचरो कह्या छे एम (बोधव्वा) जाणवुं. १७२.

लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ विआहिआ । एत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥१७३॥

संतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआ वि अ ॥ १७४ ॥

अर्थ—पूर्ववत्. १७३–१७४.

एगा य पुव्वकोडी उ, उक्कोसेण विआहिआ । आउठिई जलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निआ ॥१७५॥

अर्थ—(जलयराणं) संमूर्छिम अने गर्भज जळचरोनी (आउठिई) आयुष्यस्थिति (उक्कोसेण) उत्कृष्टथी (एगा य) एक (पुव्वकोडी उ) पूर्वकोटि वर्षनी (विआहिआ) कही छे, अने (जहन्निआ) जघन्य स्थिति (अंतोमुहुत्तं) अंतर्मुहूर्तनी कही छे. १७५.

पुव्वकोडिपुहुत्तं तु, उक्कोसेण विआहिआ । कायठिई जलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं ॥ १७६ ॥

अर्थ—(जलयराणं) जळचरोनी (कायठिई) कायस्थिति (उक्कोसेण) उत्कृष्टथी (पुव्वकोडिपुहुत्तं तु) पूर्वकोटि

पृथक्त्व एटले बेथी नव पूर्वकोटिनी (विआहिआ) कहेली छे, अने (जहन्नयं) जघन्य स्थिति (अंतोमुहुत्तं) अंतर्मुहूर्तनी कही छे. अहीं जळचरोनी उत्कृष्ट कायस्थिति आठ पूर्वकोटिनी होय छे, ते आ प्रमाणे थइ शके छे.–पंचेंद्रिय तिर्यंच जळचर आंतरा रहित उत्कृष्टथी आठ भव करे छे, ते आठेनुं आयुष्य मेळववाथी आठ पूर्वकोटि ज थाय छे. आमां जळचर युगलिया थता न होवाथी युगलियानो भव आवतो नथी तेथी ते प्रमाणमां कांइ पण विरोध आवतो नथी. १७६.

अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नगं। विजढम्मि सए काए, जलयराणं तु अंतरं ॥ १७७ ॥

अर्थ––पूर्ववत्. १७७.

स्थळचरो विषे कहे छे.—

चउप्पया य परिसप्पा, दुविहा थलयरा भवे। चउप्पया चउविहा, ते मे कित्तयतो सुण ॥१७८॥

एगखुरा दुखुरा चेव, गंडीपय सणप्पया। हयमाई गोणमाई, गयमाई सीहमाइणो ॥ १७९ ॥

अर्थ—(चउप्पया) चारपगवाळा (य) अने (परिसप्पा) परिसर्प एम (दुविहा) बे प्रकारना (थलयरा) स्थळचर (भवे) होय छे. तेमां (चउप्पया) चार पगवाळा स्थळचर (चउविहा) चार प्रकारना छे, (ते) तेमने (कित्तयतो) कहेता एवा (मे) मारी पासे (सुण) सांभळ. १७८.–(एगखुरा) एक खरीवाळा, (दुखुरा चेव) बे खरीवाळा, (गंडीपय) गंडीपद–गंडी एटले कमळनी कर्णिका तेनी जेवा गोळ पगवाळा, तथा (सणप्पया) नख सहित पगवाळा,

तेमां (हयमाई) अश्वादिक एक खरीवाळा छे, (गोयामाई) बळद विगेरे बे खरीवाळा छे, (गयमाई) हाथी विगेरे गंडीपद छे, अने (सीहमाइणो) सिंहादिक सनख पद—नख सहित पगवाळा छे. १७९.

हवे परिसर्पने कहे छे.—

भुओरपरिसप्पा उ, परिसप्पा दुविहा भवे । गोहाई अहिमाई अ, एकेकाऽणेगहा भवे ॥१८०॥

अर्थ—(भुओरपरिसप्पा उ) भुजपरिसर्प अने उरपरिसर्प एम (परिसप्पा) परिसर्प (दुविहा) बे प्रकारना (भवे) छे. तेमां (गोहाई) गोधा-गरोळी विगेरे भुजपरिसर्प एटले भुजावडे गमन करनारा होय छे अने (अहिमाई अ) सर्प विगेरे उरपरिसर्प एटले उरवडे गमन करनारा होय छे. तेमां (एकेका) ते दरेक (अणेगहा) अनेक प्रकारना (भवे) छे. १८०

लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ समाहिआ । एत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥१८१॥

संतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआ वि अ ॥१८२॥

अर्थ—पूर्ववत्. १८१–१८२.

पलिओवमाइ तिण्णि उ, उक्कोसेण विआहिआ । आउठिई थलयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निआ ॥१८३॥

अर्थ—(थलयराणं) स्थळचरनी (आउठिई) आयुस्थिति (उक्कोसेण) उत्कृष्टथी (तिण्णि उ) त्रण (पलिओव-

माइ) पल्योपमनी (विआहिआ) कही छे, (जहण्णिआ) जघन्य स्थिति (अंतोमुहुत्तं) अंतर्मुहूर्त्तनी कही छे. अहीं विशेष ए छे जे—गर्भज भुजपरिसर्प अने उरपरिसर्पनुं उत्कृष्ट आयुष्य पूर्वकोटिनुं छे, अने संमूर्छिम एवा ते बन्नेनुं अनुक्रमे बत्रीश हजार अने त्रेपन हजार वर्षनुं छे तथा संमूर्छिम स्थळचरनुं आयुष्य चोराशी हजार वर्षनुं छे. १८३.

पलिओवमाइ तिण्णि उ, उक्कोसेण विआहिआ । पुव्वकोडीपुहुत्तेणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निआ ॥१८४॥

अर्थ—स्थळचरनी कायस्थिति (उक्कोसेण) उत्कृष्टथी (पुव्वकोडीपुहुत्तेणं) पूर्वकोटि पृथक्त्व अधिक (तिण्णि उ) त्रण (पलिओवमाइ) पल्योपमनी (विआहिआ) कहेली छे तथा (जहन्निआ) जघन्य कायस्थिति (अंतोमुहुत्तं) अंतर्मुहूर्त्तनी छे. अहीं कोइ जीव स्थळचर तिर्यंचने विषे पूर्वकोटिना आयुष्यवाळा सात भव करी पछी आठमो भव युगलिक स्थलचरने विषे *त्रण पल्योपमना आयुष्यवाळो करे, तेथी उपर कहेलुं कायस्थितिनुं उत्कृष्ट प्रमाण थाय छे. कारण के तिर्यंच* अने मनुष्यने विषे उत्कृष्टथी निरंतर आठ भव ज थइ शके छे. १८४.

कायठिई थलयराणं, अंतरं तेसिमं भवे । कालं अणंतमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नगं ॥ १८५ ॥

अर्थ—(थलयराणं) स्थळचरनी (कायठिई) कायस्थिति उपर प्रमाणे कही. हवे (तेसिं) तेमनुं (अंतरं) आंतरुं (इमं) आ प्रमाणे (भवे) छे.—(उक्कोसं) उत्कृष्टथी (अणंतं) अनंत (कालं) काळनुं अने (जहन्नगं) जघन्यथी (अंतोमुहुत्तं) अंतर्मुहूर्त्तनुं छे. १८५.

निजढम्मि सए काए, थलयराणं तु अंतरं ।

अर्थ—(सए काए) पोतानो काय-देह (विजढम्मि) त्याग करे सते (थलयराणं तु) स्थळचरोनुं (अंतरं) आ उत्कृष्ट अंतर जाणवुं.

हवे खेचरोने कहे छे.—

चम्मे उ लोमपक्खी अ तइआ समुग्गपक्खी अ ॥ १८६ ॥
विततपक्खी अ बोधव्वा, पक्खिणो उ चउव्विहा । लोएगदेसे ते सव्वे, न सव्वत्थ विआहिआ ॥१८७॥

अर्थ—(चम्मे उ) चर्ममय पांखवाळा चामचीडीया विगेरे अने (लोमपक्खी अ) रोममय एटले पींछावाळी पांखोवाळा, तथा (तइआ) त्रीजा (समुग्गपक्खी अ) दाबडाना आकार जेवी पांखोवाळा, तथा (विततपक्खी अ) विततपक्षी एटले जेओ निरंतर पांखोने पहोळी करीने रहेनारा. आमां समुग्गपक्खी अने विततपक्खी ए बे जातना पक्षीओ मानुषोत्तर पर्वतनी बहार होय छे. (पक्खिणो उ) आ रीते पक्षीओ (चउव्विहा) चार प्रकारना (बोधव्वा) जाणवा. (लोएगदेसे) लोकना एक देशमां (ते सव्वे) ते सर्वे रहेला छे, (सव्वत्थ) सर्व लोकने विषे (न विआहिआ) कहेला नथी. १८६-१८७

संतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइं पडुच्च साईआ सपज्जवसिआ वि अ ॥ १८८ ॥

अर्थ—पूर्ववत्. १८८.

पलिओवमस्स भागो, असंखिजइमो भवे । आउठिई खहयराणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निआ ॥ १८९ ॥

अर्थ—(खहयराणं) खेचरोनी (आउठिई) आयुस्थिति उत्कृष्टथी (पलिओवमस्स) पल्योपमना (असंखिजइमो) असंख्यातमो (भागो) भाग (भवे) छे, अने (जहन्निआ) जघन्य स्थिति (अंतोमुहुत्तं) अंतर्मुहूर्त्तनी छे. अहीं पल्योपमना असंख्यातमा भागनुं आयुष्य युगलिक पक्षीनुं जाणवुं. ते सिवाय बीजा गर्भज पक्षीओनुं आयुष्य पूर्वकोटि प्रमाण छे, अने संमूर्छिमनुं बहोंतेर हजार वर्षनुं छे. १८९.

असंखभागो पलिअस्स, उक्कोसेण उ साहिआ । पुव्वकोडिपुहुत्तेणं, अंतोमुहुत्तं जहन्निआ ॥१९०॥

कायठिई खहयराणं, अंतरं तेसिमं भवे । कालमणंतमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नगं ॥ १९१ ॥

अर्थ—(खहयराणं) खेचरोनी (कायठिई) कायस्थिति (उक्कोसेण उ) उत्कृष्टथी (पलिअस्स) पल्योपमनो (असंखभागो) असंख्यातमो भाग अने (पुव्वकोडिपुहुत्तेणं) पूर्वकोटि पृथक्त्व छे, तथा (जहन्निआ) जघन्य स्थिति (अंतोमुहुत्तं) अंतर्मुहूर्त्तनी (साहिआ) कही छे. तथा (तेसिं) तेमनुं (अंतरं) आंतरुं (इमं) आ प्रमाणे (भवे) छे.—(उक्कोसं) उत्कृष्टथी (अणंतं) अनंत (कालं) काळ अने (जहन्नगं) जघन्य (अंतोमुहुत्तं) अंतर्मुहूर्त्तनुं छे. १९०–१९१

एएसिं वणओ चेव, गंधओ रसफासओ । संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥१६२॥

अर्थ—पूर्ववत्. १६२.

हवे मनुष्योना भेद कहे छे.—

मणुआ दुविहभेआ उ, ते मे कित्तयओ सुण । संमुच्छिममणुस्सा य, गब्भवक्कंतिआ तहा ॥१६३॥

अर्थ—(मणुआ) मनुष्य (दुविहभेआ उ) बे प्रकारना छे, (ते) तेने (कित्तयओ) कहेता एवा (मे) मारी पासे (सुण) सांभळो.—(संमुच्छिममणुस्सा य) संमूर्छिम मनुष्य (तहा) तथा (गब्भवक्कंतिआ) गर्भव्युत्क्रांत एटले गर्भज. अहीं जे मन रहित अने गर्भज मनुष्यना वांतादिकमां उत्पन्न थइ अंतर्मुहूर्त्तना आयुष्यवाळा अपर्याप्ता सता ज मरण पामे छे ते संमूर्छिम मनुष्य जाणवा. १६३.

गब्भवक्कंतिआ जे उ, तिविहा ते विआहिआ। अकम्मकम्मभूमा य, अंतरद्दीवया तहा ॥ १९४ ॥

अर्थ—(जे उ) जे (गब्भवक्कंतिआ) गर्भज मनुष्यो छे, (ते) ते (तिविहा) त्रण प्रकारना (विआहिआ) कहेला छे. ते आ प्रमाणे—(अकम्मकम्मभूमा य) अकर्मभूमिमां उत्पन्न थयेला एटले युगलीया, कर्मभूमिमां एटले भरतादिक क्षेत्रमां उत्पन्न थयेला, (तहा) तथा (अंतरद्दीवया) अंतरद्वीपमां उत्पन्न थयेला युगलिक मनुष्यो. १९४.

पंनरसतीसईविहा, भेआ य अट्ठवीसई । संखा उ कमसो तेसिं, इइ एसा विआहिआ ॥१९५॥

अर्थ—(तेसिं) तेमनी (संखा उ) संख्या (कमसो) अनुक्रमे (इइ) आ प्रमाणे (एसा) आ (विआहिआ) कही छे.—(पणरसतीसईविहा) कर्मभूमिना पंदर प्रकार, अकर्मभूमिना त्रीश प्रकार, (य) अने अंतरद्वीपना (अट्ठवीसई) अठावीश (भेआ) भेद छे. अहीं पांच भरत, पांच ऐरवत अने पांच महाविदेहना मळी पंदर भेद कर्मभूमिना छे. हैमवत, हरिवर्ष, रम्यक, हैरण्यवत, देवकुरु अने उत्तरकुरु ए छ अकर्मभूमि प्रत्येके पांच पांच होवाथी त्रीश थाय छे. जो के अहीं अनुक्रम लेतां तो प्रथम अकर्मभूमिना कहेवा जोइए. तोपण कर्मभूमिना मनुष्योने मुक्तिनुं साधन होवाथी तेमनुं प्रधानपणुं जणाववा माटे तेमनी संख्या प्रथम गणावी छे. तथा अठावीश अंतरद्वीपो आ प्रमाणे छे.—हिमवान पर्वतना पूर्व पश्चिमने छेडे जंबूद्वीपनी वेदिकानी बहार चार दाढाओ विदिशा तरफ नीकळेली छे, तेमां पूर्वनी बे दाढाओमांथी एक ईशान तरफ अने बीजी अग्निखूण तरफ लांबी जाय छे, अने पश्चिमनी बे दाढामांथी एक नैर्ऋत्य तरफ अने बीजी वायव्य तरफ जाय छे. ते दरेक दाढामां जगतीना कोटथी त्रणसो त्रणसो योजन जइए त्यारे त्यां त्रणसो त्रणसो योजन लांबा अने पहोळा एकेक एटले कुल चार अंतरद्वीपो आवे छे, त्यारपछी त्यांथी चारसो चारसो योजन जइए त्यारे चारसो चारसो योजन लांबा पहोळा बीजा चार अंतरद्वीपो आवे छे, ए प्रमाणे सो सो योजननी वृद्धि करतां तेटला ज योजनना लांबा पहोळा चार चार अंतरद्वीपो आवे छे. एवी रीते दरेक दाढा उपर सात सात अंतरद्वीपो होवाथी कुल अठावीश अंतरद्वीपो छे. तेमनां नाम प्रदक्षिणाने क्रमे आ प्रमाणे छे.—पहेला चतुष्कमां एकोरुक १, आभाषिक २, वैषाणिक ३ अने लांगुलिक ४. बीजामां हयकर्ण १, गजकर्ण २, गोकर्ण ३ अने शष्कुलीकर्ण ४. त्रीजामां आदर्शमुख १, मेषमुख २, हयमुख ३ अने

गजमुख ४. चोथामां अश्वमुख १, हस्तिमुख २, सिंहमुख ३ अने व्याघ्रमुख ४. पांचमामां अश्वकर्ण १, सिंहकर्ण २, गजकर्ण ३ अने कर्णप्रावरण ४. छट्ठामां उल्कामुख १, विद्युन्मुख २, जिह्वामुख ३ अने मेघमुख ४. सातमामां घनदंत १, गूढदंत २, श्रेष्ठदंत ३ अने शुद्धदंत ४. आ सर्वे द्वीपोमां द्वीपनी जेवा ज नामवाळा युगलिया वसे छे. आ ज रीते एवा ज नाम विगेरेवाळा शिखरीपर्वतना पण बीजा अट्ठावीश अंतरद्वीप छे, ते सर्वे पूर्वना अट्ठावीश सदृश नाम विगेरे हकीकतवाळा होवाथी अभेदनी विवक्षाए जुदा कह्या नथी. एटले अट्ठावीश कहेवामां दोष नथी. (बाकी कुल मळीने ५६ छे.) १९५.

समुच्छिमाण एसेव, भेओ होइ आहिओ । लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वेऽवि विआहिआ ॥१९६॥

अर्थ (समुच्छिमाण) संमूर्छिम मनुष्यना पण (एसेव) ए ज (भेओ) भेदो (आहिओ) कहेला (होइ) छे, एटले के गर्भज मनुष्यना जे भेद उपर कह्या ते ज भेद संमूर्छिम मनुष्यना पण जाणवा. कारण के गर्भज मनुष्यना वात पित्तादिकने विषे ज तेओ उत्पन्न थाय छे. तथा (ते सव्वे वि) ते सर्वे संमूर्छिम मनुष्यो (लोगस्स) लोकना (एगदेसम्मि) एक देशने विषे (विआहिआ) कहेला छे, एटले लोकना एक भागमां रहेला छे एम जाणवुं. १९६.

संतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआ वि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआ वि अ ॥ १९७ ॥

अर्थ—पूर्ववत्. १९७

पलिओवमाइं तिण्णि उ, उक्कोसेण विआहिआ । आऊठिई मणुआणं, अंतोमुहुत्तं जहण्णिआ ॥१९८॥

अर्थ—(मणुआणं) मनुष्यनी (आउठिई) आयु स्थिति (उक्कोसेण) उत्कृष्टथी (तिण्णि उ) त्रण (पलिओवमाई) पल्योपमनी (विआहिआ) कही छे अने (जहण्णिआ) जघन्य आयुस्थिति (अंतोमुहुत्तं) अंतर्मुहूर्तनी कही छे. एटले के त्रण पल्योपमनुं आयुष्य युगलियानुं होय छे. संमूर्छिम मनुष्यनुं तो उत्कृष्ट आयुष्य पण अंतर्मुहूर्तनुं ज होय छे. १९८.

पलिओवमाइं तिण्णि उ, उक्कोसेण विआहिआ। पुव्वकोडीपुहुत्तेणं, अंतोमुहुत्तं जहण्णगा ॥१९९॥

कायठिई मणुआणं—

अर्थ—त्रण पल्योपम अने पूर्वकोटि पृथक्त्व एटले सात पूर्वकोटि एटली अधिक उत्कृष्ट कायस्थिति मनुष्योनी कही छे, अने जघन्य अंतर्मुहूर्तनी कही छे. १९९.

अंतरं तेसिमं भवे। अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहण्णगं ॥ २०० ॥

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ। संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥ २०१ ॥

अर्थ पूर्ववत् २००–२०१. हवे देवो विषे कहे छे—

देवा चउव्विहा वुत्ता, ते मे कित्तयओ सुण। भोमेज्जवाणमंतर–जोइसवेमाणिआ तह ॥२०२॥

अर्थ—(देवा) देवो (चउव्विहा) चार प्रकारना (वुत्ता) कह्या छे. (ते) तेमने (मे कित्तयओ) कहेता एवा मारा थकी (सुण) तुं सांभळ. (भोमेज्ज) भौमेय एटले भवनपति, (वाणमंतर) वाणव्यंतर, (जोइस) ज्योतिषी,

(तह) तथा (वेमाणिआ) वैमानिक. २०२.

देवोना उत्तर भेद बतावे छे.—

दसहा भवणवासी, अट्ठहा वणचारिणो । पंचविहा जोइसिआ, दुविहा वेमाणिआ तहा ॥ २०३ ॥

अर्थ—(दसहा भवणवासी) भवनवासी देव दश प्रकारना छे, (अट्ठहा वणचारिणो) वाणव्यंतर आठ प्रकारना छे, (पंचविहा जोइसिआ) ज्योतिषी देव पांच प्रकारना छे, (तहा) तथा (दुविहा वेमाणिआ) वैमानिक देव बे प्रकारना छे. २०३.

तेमनां नाम कहे छे.—

असुरा १ नाग २ सुवण्णा ३, विज्जू ४ अग्गी अ ५ आहिआ ।
दीवो ६ दहि ७ दिसा ८ वाया ९, थणिआ १० भवणवासिणो ॥ २०४ ॥

अर्थ—(असुरा) असुरकुमार १, (नाग) नागकुमार २, (सुवण्णा) सुवर्णकुमार ३, (विज्जू) विद्युत्कुमार ४, (अग्गी अ) अग्निकुमार ५, (दीव) द्वीपकुमार ६, (उदहि) उदधिकुमार ७, (दिसा) दिक्कुमार ८, (वाया) वायुकुमार ९, तथा (थणिआ) स्तनितकुमार १० आ दश (भवणवासिणो) भवनवासी (आहिआ) कह्या छे. कुमारनी जेम क्रीडा करवामां प्रीतिवाळा होवाथी आ सर्व कुमार कहेवाय छे. २०४. (सुवर्ण—गरुड. स्तनित—मेघ).

पिसाय १ भूआ २ जक्खा य ३, रक्खसा ४ किन्नरा य ५ किंपुरिसा ६ ।
महोरगा य ७ गंधव्वा ८, अट्ठविहा वाणमंतरा ॥ २०५ ॥

अर्थ—(पिसाय) पिशाच १, (भूआ) भूत २, (जक्खा य) यक्ष ३, (रक्खसा) राक्षस ४, (किन्नरा य) किन्नर ५, (किंपुरिसा) किंपुरुष ६, (महोरगा य) महोरग ७, अने (गंधव्वा) गंधर्व ८, (अट्ठविहा) आठ प्रकारना (वाणमंतरा) वाणव्यंतर कह्या छे. अहीं अणपन्नी, पणपन्नी विगेरे बीजा पण आठ प्रकार कहेवाय छे, तेमनो समावेश आ आठमां ज थाय छे तेथी जूदा कह्या नथी. २०५.

चंदा १ सूरा य २ नक्खत्ता ३, गहा ४ तारागणा ५ तहा ।
ठिआ विचारिणो चेव, पंचहा जोइसालया ॥ २०६ ॥

अर्थ—(चंदा) चंद्र १, (सूरा य) सूर्य २, (नक्खत्ता) नक्षत्र ३, (गहा) ग्रह ४ (तहा) तथा (तारागणा) ताराना समूह ५, (पंचहा) ए पांच प्रकारे (जोइसालया) ज्योतिषी देव (ठिआ) अढी द्वीपनी बहार स्थिर रहेला छे (चेव) अने (विचारिणो) अढी द्वीपनी अंदर विशेषे करीने एटले मेरुने प्रदक्षिणा दइने चालवावाळा छे. २०६.

वेमाणिआ उ जे देवा, दुविहा ते विआहिआ । कप्पोवगा य बोधव्वा, कप्पातीता तहेव य ॥२०७॥

अर्थ—(जे देवा) जे देवो (वेमाणिआ उ) वैमानिक छे, (ते) तेओ (दुविहा) बे प्रकारना (विआहिआ)

कह्या छे. ते आ प्रमाणे—(कप्पोवगा य) कल्पोपग एटले सौधर्मादिक कल्पने पामनारा (तहेव य) तथा वळी (कप्पातीता) कल्पातीत एटले कल्पने ओळंगी गयेला अर्थात् नव ग्रैवेयक अने पांच अनुत्तर देवलोकने पामनारा (बोधव्वा) जाणवा. २०७.

कप्पोवगा बारसहा, सोहम्मी १ साणगा २ तहा ।
सणंकुमारा ३ माहिंदा ४, बंभलोगा य ५ लंतगा ६ ॥ २०८ ॥
महासुक्का ७ सहस्सारा८, आणया ९ पाणया १० तहा ।
आरणा ११ अच्चुआ १२ चेव, इति कप्पोवगा सुरा ॥ २०९ ॥

अर्थ- (कप्पोवगा) कल्पोपग देव (बारसहा) बार प्रकारना छे. ते आ प्रमाणे—(सोहम्म) सौधर्म १, (ईसाणगा) ईशान २, (तहा) तथा (सणंकुमारा) सनत्कुमार ३, (माहिंदा) माहेंद्र ४, (बंभलोगा य) ब्रह्मलोक ५, (लंतगा) लांतक ६, (महासुक्का) महाशुक्र ७, (सहस्सारा) सहस्रार ८, (आणया) आनत ९, (पाणया) प्राणत १०, (तहा) तथा (आरणा) आरण ११, (अच्चुआ चेव) तथा अच्युत १२, (इति) आ प्रमाणे (कप्पोवगा) कल्पोपग (सुरा) देवो छे. अहीं सौधर्म विगेरे देवलोकनां नाम गणाव्यां छे, तेमां रहेनारा देव पण सौधर्म विगेरे नामना ज जाणवा. २०८-२०९. (आ देवो स्वामी सेवक भाव विगेरे कल्प-आचार तेने पाळनारा छे तेथी ते कल्पोपपन्न कहेवाय छे.)

कप्पातीता उ जे देवा, दुविहा ते विआहिआ । गेविज्जाणुत्तरा चेव, गेविज्जा नवविहा तहिं ॥ २१० ॥

अर्थ—(जे देवा) जे देवो (कप्पातीता उ) कल्पातीत छे, स्वामी सेवक भाव रहित–अहमिंद्र छे. (ते) तेओ (दुविहा) बे प्रकारना (विआहिआ) कह्या छे. ते आ प्रमाणे.—(गेविज्ज अणुत्तरा चेव) ग्रैवेयक अने अनुत्तर. (तहिं) तेमां (गेविज्जा) ग्रैवेयक (नवविहा) नव प्रकारना कह्या छे. २१०.

हिट्ठिमा हिट्ठिमा १ चेव, हिट्ठिमा मज्झिमा २ तहा ।
हिट्ठिमा उवरिमा ३ चेव, मज्झिमा हिट्ठिमा ४ तहा ॥ २११ ॥
मज्झिमा मज्झिमा ५ चेव, मज्झिमा उवरिमा ६ तहा ।
उवरिमा हिट्ठिमा ७ चेव, उवरिमा मज्झिमा ८ तहा ॥ २१२ ॥
उवरिमा उवरिमा ९ चेव, इइ गेविज्जगा सुरा ।
विजया १ वेजयंता २ य, जयंता ३ अपराजिआ ४ ॥ २१३ ॥
सव्वट्ठसिद्धिगा ५ चेव, पंचहाऽणुत्तरा सुरा ।
इइ वेमाणिआ एए, णेगहा एवमायओ ॥ २१४ ॥

अर्थ—अहीं नव ग्रैवेयकना त्रण विभाग पाडवाथी त्रण त्रिक थाय छे. तेथी ते नवनी संज्ञा आ प्रमाणे छे.—(हिट्ठिमा हिट्ठिमा चेव) नीचला त्रिकमां नीचेना १, (हिट्ठिमा मज्झिमा) नीचला त्रिकमां मध्यमना २, (तहा) तथा (हिट्ठिमा उवरिमा चेव) नीचला त्रिकमां उपरना ३, (मज्झिमा हिट्ठिमा) वचला त्रिकमां नीचेना ४, (तहा) तथा (मज्झिमा मज्झिमा चेव) वचला त्रिकमां मध्यना ५, (मज्झिमा उवरिमा) वचला त्रिकमां उपरना ६, (तहा) तथा (उवरिमा हिट्ठिमा चेव) उपला त्रिकमां नीचेना ७, (उवरिमा मज्झिमा) उपला त्रिकमां मध्यना ८, (तहा) तथा (उवरिमा उवरिमा चेव) उपला त्रिकमां उपरना ९, (इइ) आ प्रमाणे (गेविज्जगा सुरा) नव ग्रैवेयकमां रहेला देवो जाणवा. तथा (विजया) विजय १, (वेजयंता य) वैजयंत २, (जयंता) जयंत ३, (अपराजिआ) अपराजित ४, (सव्वट्ठसिद्धिगा चेव) तथा सर्वार्थसिद्ध ५ आ पांचमां रहेला (पंचहा) पांच प्रकारना (अणुत्तरा सुरा) अनुत्तर देवो जाणवा. (इइ) आ प्रमाणे (एए वेमाणिआ) आ वैमानिक देवो (एवमायओ) ए विगेरे (अणेगहा) अनेक प्रकारना जाणवा. २११-२१४.

लोगस्स एगदेसम्मि, ते सव्वे परिकित्तिआ । इत्तो कालविभागं तु, तेसिं वोच्छं चउव्विहं ॥ २१५ ॥

संतइं पप्पऽणाईआ, अपज्जवसिआवि अ । ठिइं पडुच्च साईआ, सपज्जवसिआवि अ ॥ २१६ ॥

साहिअं सायरं इक्कं, उक्कोसेण ठिई भवे । भोमेज्जाणं जहन्नेणं, दसवाससहस्सिआ ॥ २१७ ॥

पलिओवममेगं तु, उक्कोसेण ठिई भवे । वंतराणं जहन्नेणं, दसवाससहस्सिआ ॥ २१८ ॥
पलिओवमं तु एगं, वासलक्खेण साहिअं । पलिओवमट्ठभागो, जोईसेसु जहन्निआ ॥ २१९ ॥

अर्थ—बे गाथानो पूर्ववत्–पछी भूमिमां रहेला भुवनवासीओनी स्थिति उत्कृष्टी एक सागरोपम झाझेरी जाणवी. अने तेमनी जघन्य दश हजार वर्षनी आयुषी. व्यंतरोनी उत्कृष्ट स्थिति एक पल्योपमनी जाणवी अने जघन्य दश हजार वर्षनी जाणवी. ज्योतिषीनी लाख वर्ष अधिक एक पल्योपमनी उत्कृष्ट स्थिति जाणवी, ते चंद्रविमानना देवोनी छे अने जघन्य स्थिति पल्योपमना आठमा भागनी छे, ते ताराविमानना देवोनी जाणवी. २१५–२१६.

दो चेव सागराइं, उक्कोसेण विआहिआ । सोहम्मम्मि जहन्नेणं, एगं च पलिओवमं ॥ २२० ॥

अर्थ—सौधर्म देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति बे सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति एक पल्योपमनी कही छे. २२०.

सागरा साहिआ दुन्नि, उक्कोसेण विआहिआ । ईसाणम्मि जहन्नेणं, साहिअं पलिओवमं ॥ २२१ ॥

अर्थ—ईशान देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति कांइक अधिक एवा बे सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति कांइक अधिक एवा एक पल्योपमनी कहेली छे. २२१.

सागराणि अ सत्तेव, उक्कोसेण ठिई भवे । सणंकुमारे जहन्नेणं, दुन्नि उ सागरोवमा ॥ २२२ ॥

अर्थ—त्रीजा सनत्कुमार देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति सात सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति बे सागरोपमनी कहेली छे. २२२.

साहिआ सागरा सत्त, उक्कोसेण ठिई भवे । माहिंदम्मि जहन्नेणं, साहिआ दुन्नि सागरा ॥ २२३ ॥

अर्थ—चोथा माहेंद्र देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति कांइक अधिक सात सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति कांइक अधिक बे सागरोपमनी कहेली छे. २२३.

दस चेव सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे । बंभलोए जहन्नेणं, सत्त उ सागरोवमा ॥ २२४ ॥

अर्थ—पांचमा ब्रह्म देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति दश सागरोपमनी छे अने जघन्य स्थिति सात सागरोपमनी छे. २२४.

चउद्दस उ सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे । लंतगम्मि जहन्नेणं, दस उ सागरोवमा ॥ २२५ ॥

अर्थ—छट्ठा लांतक देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति चौद सागरोपमनी छे अने जघन्य स्थिति दश सागरोपमनी छे. २२५.

सत्तरस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे । महासुक्के जहन्नेणं, चउद्दस सागरोवमा ॥ २२६ ॥

अर्थ—सातमा महाशुक्र देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति सत्तर सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति चौद सागरोपनी छे. २२६.

अट्ठारस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे । सहस्सारे जहन्नेणं, सत्तरस सागरोवमा ॥ २२७ ॥

अर्थ—आठमा सहस्रार देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति अढार सागरोपनी अने जघन्य स्थिति सत्तर सागरोपमनी छे. २२७.

सागरा अउणवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे । आणयम्मि जहन्नेणं, अट्ठारस सागरोवमा ॥ २२८ ॥

अर्थ—नवमा आनत देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति ओगणीश सागरोपमनी अने जघन्य अढार सागरोपमनी छे. २२८.

वीसं तु सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। पाणयम्मि जहन्नेणं, सागरा अउणवीसई ॥ २२९ ॥

अर्थ—दशमा प्राणत देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति वीश सागरोपमनी अने जघन्य ओगणीश सागरोपमनी छे. २२९.

सागरा इक्कवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे। आरणम्मि जहन्नेणं, वीसई सागरोवमा ॥ २३० ॥

अर्थ—अग्यारमा आरण देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति एकवीश सागरोपमनी अने जघन्य वीश सागरोपमनी छे. २३०

बावीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। अच्चुअम्मि जहन्नेणं, सागरा इक्कवीसई ॥ २३१ ॥

अर्थ—बारमा अच्युत देवलोकमां उत्कृष्ट स्थिति बावीश सागरोपमनी अने जघन्य एकवीश सागरोपमनी छे. २३१.

तेवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। पढमम्मि जहन्नेणं, बावीसं सागरोवमा ॥ २३२ ॥

अर्थ—पहेला ग्रैवेयकमां उत्कृष्ट स्थिति त्रेवीश सागरोपमनी अने जघन्य बावीश सागरोपमनी छे. २३२.

चउवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। बिईअम्मि जहन्नेणं. तेवीसं सागरोवमा ॥ २३३ ॥

अर्थ—बीजा ग्रैवेयकमां उत्कृष्ट स्थिति चोवीश सागरोपमनी अने जघन्य त्रेवीश सागरोपमनी छे. २३३.

पणवीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। तइअम्मि जहन्नेणं, चउवीसं सागरोवमा ॥ २३४ ॥

अर्थ—त्रीजा ग्रैवेयकमां उत्कृष्ट स्थिति पचीश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति चोवीश सागरोपमनी छे. २३४.

छव्वीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे । चउत्थम्मि जहन्नेणं, सागरा पणवीसई ॥ २३५ ॥

अर्थ—चोथा ग्रैवेयकमां उत्कृष्ट स्थिति छवीश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति पचीश सागरोपमनी छे. २३५.

सागरा सत्तवीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे । पंचमम्मि जहन्नेणं, सागरा उ छवीसई ॥ २३६ ॥

अर्थ—पांचमा ग्रैवेयकमां उत्कृष्ट स्थिति सतावीश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति छवीश सागरोपमनी छे. २३६.

सागरा अट्ठवीसं तु; उक्कोसेण ठिई भवे । छट्ठम्मि जहन्नेणं, सागरा सत्तवीसई ॥ २४७ ॥

अर्थ— छट्ठा ग्रैवेयकमां उत्कृष्ट स्थिति अट्ठावीश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति सत्तावीश सागरोपमनी छे. २३७.

सागरा अउणतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे । सत्तमम्मि जहन्नेणं, सागरा अट्ठवीसई ॥ २३८ ॥

अर्थ—सातमा ग्रैवेयकमां उत्कृष्ट स्थिति ओगणत्रीश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति अट्ठावीश सागरोपमनी छे. २३८.

तीसं तु सागराइं उक्कोसेण ठिई भवे । अट्ठमम्मि जहन्नेणं, सागरा अउणतीसई ॥ २३९ ॥

अर्थ—आठमा ग्रैवेयकमां उत्कृष्ट स्थिति त्रीश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति ओगणत्रीश सागरोपमनी छे. ॥२३९॥

सागरा इक्कतीसं तु, उक्कोसेण ठिई भवे। नवमम्मि जहन्नेणं, तीसई सागरोवमा ॥ २४० ॥

अर्थ—नवमा ग्रैवेयकमां उत्कृष्ट स्थिति एकत्रीश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति त्रीश सागरोपमनी छे. २४०.

तेत्तीस सागराइं, उक्कोसेण ठिई भवे। चउसुं पि विजयाईसु, जहन्ना इक्कतीसई ॥ २४१ ॥

अजहन्नमणुक्कोसं, तित्तीसं सागरोवमा। महाविमाणे सव्वट्ठे, ठिई एसा वियाहिया ॥ २४२ ॥

अर्थ—विजयादिक चार अनुत्तर विमानमां उत्कृष्ट स्थिति तेत्रीश सागरोपमनी अने जघन्य स्थिति एकत्रीश सागरोपमनी छे अने सर्वार्थसिद्ध नामना महाविमानमां उत्कृष्ट अने जघन्य तेत्रीश सागरोपमनी छे. २४१–२४२.

जा चेव य आउठिई, देवाणं तु वियाहिया। सा तेसिं कायठिई, जहन्नुक्कोसिया भवे ॥२४३॥

अर्थ—(जा चेव य) जे ज (देवाणं तु) देवोनी (आउठिई) आयुनी स्थिति (वियाहिया) कही छे, (सा) ते (तेसिं) तेमनी (जहन्नुक्कोसिया) जघन्य तथा उत्कृष्ट (कायठिई) कायस्थिति पण (भवे) होय छे. देव मरीने अनंतर देव थइ शकतो नथी, तेथी देवोनी जेटली आयुस्थिति छे तेटली ज कायस्थिति पण छे. २४३.

अणंतकालमुक्कोसं, अंतोमुहुत्तं जहन्नयं। विजढम्मि सए काए, देवाणं हुज्ज अंतरं ॥ २४४ ॥

एएसिं वण्णओ चेव, गंधओ रसफासओ। संठाणादेसओ वावि, विहाणाइं सहस्ससो ॥२४५॥

यमनी जेम जाणवो. २४४–२४५.

हवे अजीव तथा जीवनो अधिकार समाप्त करे छे.

संसारत्था य सिद्धा य, इइ जीवा विआहिआ । रूविणो चेवऽरूवी य, अजीवा दुविहा वि अ ॥२४६॥

अर्थ—(संसारत्था य) संसारमां रहेला–संसारी अने (सिद्धा य) सिद्ध (इइ) ए बे प्रकारना (जीवा) जीवो (विआहिआ) कह्या. तथा (रूविणो चेव) रूपी अने (अरूवी य) अरूपी एम (दुविहा वि अ) बन्ने प्रकारना (अजीवा) अजीवो पण कह्या. २४६.

आ प्रमाणे जीव अने अजीवनुं स्वरूप सांभळीने तथा ते पर श्रद्धा करीने ज कृतार्थपणुं मानवानुं नथी, ते कहे छे.—

इइ जीवमजीवे अ, सुच्चा सद्दहिऊण य । सव्वनयाण अणुमए, रमिज्जा संजमे मुणी ॥२४७॥

अर्थ—(इइ) आ प्रमाणे (जीवं अजीवे अ) जीव तथा अजीवना स्वरूपने (सुच्चा) सांभळीने (सद्दहिऊण य) तथा सद्दहीने (मुणी) साधुए (सव्वनयाण) ज्ञाननय अने क्रियानयनी अंतर्गत रहेला नैगमादिक सर्व नयोने (अणुमए) संमत एवा (संजमे) चारित्रने विषे (रमिज्जा) रमण करवुं. २४७.

संयममां रति करीने शुं करवुं ? ते कहे छे.—

तओ बहूणि वासाणि, सामण्णमणुपालिआ । इमेण कम्मजोगेणं, अप्पाणं संलिहे मुणी ॥ २४८ ॥

अर्थ—(तओ) त्यारपछी (बहूणि) घणा (वासाणि) वर्षो सुधी (सामण्णं) संयमने (अणुपालिआ) पाळीने (मुणी) मुनि (इमेण) आ (कम्मजोगेणं) क्रमना व्यापारे करीने–तपना अनुष्ठाने करीने (अप्पाणं) पोताना आत्माने (संलिहे) संलेखना करे एटले द्रव्यथी अने भावथी कृश करे. २४८.

क्रमयोगने ज कहे छे.—

बारसेव उ वासाइं, संलेहुक्कोसिआ भवे । संवच्छरं मज्झिमिआ, छम्मासे अ जहन्निआ ॥ २४९ ॥

अर्थ—(उक्कोसिआ) उत्कृष्ट (संलेहा) द्रव्यथी शरीरनी अने भावथी कषायनी कृशतारूप संलेखना (बारसेव उ) बार (वासाइं) वर्षनी (भवे) होय छे. (मज्झिमिआ) मध्यम संलेखना (संवच्छरं) एक वर्षनी छे (अ) अने (जहन्निआ) जघन्य संलेखना (छम्मासे) छ मासनी छे. २४९.

हवे उत्कृष्ट संलखनानो क्रमयोग कहे छे.—

पढमे वासचउक्कम्मि, विगईनिज्जूहणं करे । बिइए वासचउक्कम्मि, विचित्तं तु तवं चरे ॥ २५० ॥

अर्थ—(पढमे) पहेला (वासचउक्कम्मि) चार वर्षमां (विगईनिज्जूहणं) विगयनो त्याग (करे) करे. (बिइए) बीजा (वासचउक्कम्मि) चार वर्षमां (विचित्तं तु) विचित्र प्रकारनो छट्ठ, अट्ठम विगेरे (तवं चरे) तप करे. अहीं पहेला चार [illegible] विचित्र तप करी पारणे नीवी करे अने बीजा चार वर्ष विचित्र तप करी पारणामां सर्व शुद्ध आहार वापरे [illegible] २५०.

एगंतरमायामं, कट्टू संवच्छरे दुवे । तओ संवच्छरद्धं तु, नाइविगिट्ठं तवं चरे ॥ २५१ ॥
तओ संवच्छरद्धं तु, विगिट्ठं तु तवं चरे । परिमिअं चेव आयामं, तम्मि संवच्छरे करे ॥२५२॥
कोडीसहिअमायामं, कट्टू संवच्छरे मुणी । मासद्धमासिएणं तु, आहारेणं तवं चरे ॥ २५३ ॥

अर्थ—(दुवे संवच्छरे) त्यारपछी बे वर्ष (एगन्तरं) एकांतर (आयामं) आंबिल एटले एक उपवास अने एक आंबिल ए प्रमाणे (कट्टू) करीने (तओ) त्यारपछी (संवच्छरद्धं तु) अर्ध वर्ष एटले छ मास (नाइविगिट्ठं) नातिविकृष्ट एटले अट्टम, दशम विगेरे उत्कृष्ट नहीं एवो (तवं) तप (चरे) करे. २५१. (तओ) त्यारपछी (संवच्छरद्धं तु) अर्ध वर्ष (विगिट्ठं तु) उत्कृष्ट एवो ज (तवं चरे) तप करे, परंतु (तम्मि संवच्छरे) ते आखा वर्षमां (परिमिअं चेव) परिमित एटले अल्प ज (आयामं करे) आंबिल करे. बारमा वर्षमां कोटि सहित आंबिल करवानुं छे अने अहीं अग्यारमा वर्षमां उपवासादिकना पारणामां ज आंबिल करवानुं छे, तेथी अहीं परिमित शब्द वापर्यो छे. २५२. त्यारपछी (मुणी) मुनि (संवच्छरे) बारमे वर्षे (कोडीसहिअं आयामं) निरंतर बे आंबिल करवाथी पहेला दिवसनो अंत अने बीजा दिवसनो आरंभ ए बे कोटि-अग्र मळवाथी कोटि सहित आंबिल (कट्टू) करीने छेवट आयुष्यनी समाप्तिने समये (मासद्धमासिएणं तु) मास के अर्ध मासनुं (आहारेणं) सर्व आहारना प्रत्याख्यान वडे (तवं) तप एटले भक्तपरिज्ञादिक अनशन (चरे) करे. २५३.

આ પ્રમાણે અનશન કર્યા પછી અશુભ ભાવનાનો ત્યાગ કહે છે.—

कंदप्पमाभिओगं च, किव्विसिअं मोहमासुरत्तं च ।
एआओ दुग्गईओ, मरणम्मि विराहिआ हुंति ॥ २५४ ॥

અર્થ—(कंदप्पं) કંદર્પભાવના ૧, (आभिओगं च) આભિયોગ્ય ભાવના ૨, (किव्विसिअं) કિલ્બિષભાવના ૩, (मोहं) મોહભાવના ૪, (आसुरत्तं च) આસુરભાવના ૫, (एआओ) આ પાંચ ભાવનાઓ (विराहिया) વિરાધિકા એટલે સમ્યગ્ જ્ઞાન, દર્શન અને ચારિત્રાદિકનો ભંગ કરનારી સતી (मरणम्मि) મરણ સમયે ભાવી સતી (दुग्गईओ) દુર્ગતિને આપનાર હોવાથી દુર્ગતિરૂપ (हुंति) થાય છે. એટલે કે મરણ સમયે તેવી અશુભ ભાવના ભાવવાથી દુર્ગતિ પ્રાપ્ત થાય છે, અર્થાત્ શુભ ભાવના ભાવવાથી સદ્ગતિ પણ થાય છે એમ સૂચવવા માટે મરણ સમયે એમ કહ્યું. ૨૫૪. (તેથી અશુભ ભાવના ન ભાવવી અને શુભ ભાવના ભાવવી એ તાત્પર્ય સમજવું.)

मिच्छादंसणरत्ता, सनिआणा हु हिंसगा । इइ जे मरंति जीवा, तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥ २५५ ॥

અર્થ—(मिच्छादंसणरत्ता) મિથ્યાદર્શનમાં રાગી થયેલા, (सनिआणा हु) નિયાણા સહિત અને (हिंसगा) પ્રાણીની હિંસા કરનારા (इइ) આવું કાર્ય કરનારા (जे) જે (जीवा) જીવો (मरंति) મરે છે, (तेसिं) તેઓને (पुण) ફરીને પરભવમાં (बोही) જિનધર્મની પ્રાપ્તિ (दुल्लहा) દુર્લભ થાય છે. ૨૫૫.

सम्मदंसणरत्ता, अनिआणा सुक्कलेसमोगाढा। इइ जे मरंति जीवा, सुलहा तेसिं भवे बोही ॥२५६॥

अर्थ—(सम्मदंसणरत्ता) सम्यग् दर्शनमां रक्त, (अनिआणा) नियाणा रहित अने (सुकलेसमोगाढा) शुक्ललेश्याथी व्याप्त (इइ) एवा प्रकारना (जे जीवा) जे जीवो (मरंति) मरे छे, (तेसिं) तेमने (बोही) जिनधर्मनी प्राप्ति (सुलभा) सुलभ (भवे) थाय छे. २५६.

मिच्छादंसणरत्ता, सनिआणा कण्हलेसमोगाढा। इअ जे मरंति जीवा, तेसिं पुण दुल्लहा बोही ॥२५७॥

अर्थ—(मिच्छादंसणरत्ता) मिथ्यादर्शनमां रक्त, (सनिआणा) नियाणा सहित अने (कण्हलेसमोगाढा) कृष्णलेश्याने पामेला (इअ) आवा प्रकारना (जे जीवा) जे जीवो (मरंति) मरे छे, (तेसिं) तेओने (पुण) फरीथी (बोही) जिनधर्मनी प्राप्ति (दुल्लहा) दुर्लभ छे. २५७.

जिणवयणे अणुरत्ता, जिणवयणं जे करिंति भावेणं।
अमला असंकिलिट्ठा, ते होंति परित्तसंसारी ॥ २५८ ॥

अर्थ—(जिणवयणे) जिनेश्वरना वचनने विषे (अणुरत्ता) प्रीतिवाळा (जे) जे जीवो (जिणवयणं) जिनेश्वरना वचनने-आज्ञाने (भावेणं) भावथी (करिंति) करे छे-ते प्रमाणे वर्ते छे (ते) तेओ (अमला) मिथ्यात्वादिक मळ रहित अने (असंकिलिट्ठा) रागादिक संक्लेश रहित एवा सता (परित्तसंसारी) परिमित-अल्प संसारवाळा (होंति) थाय छे. २५८.

बालमरणाणि बहुसो, अकाममरणाणि चेव बहुआणि ।
मरिहंति ते वराया, जिणवयणं जे न याणंति ॥ २५६ ॥

अर्थ—(जे) जेओ (जिणवयणं) जिनेश्वरना वचनने (न याणंति) जाणता नथी अने उपलक्षणथी जाणया छतां ते प्रमाणे वर्तता नथी, (ते वराया) ते बिचारा (बहुसो) घणीवार (बालमरणाणि) भृगुपातादिक बाळमरणे करीने (चेव) तथा (बहुआणि) घणा (अकाममरणाणि) अकाम मरणे करीने (मरिहंति) मरशे—मरे छे. २५६.

बहुआगमविन्नाणा, समाहिउप्पायगा य गुणगाही । एएण कारणेणं, अरिहा आलोअणं सोउं ॥२६०॥

अर्थ—(बहुआगमविन्नाणा) घणा आगमना ज्ञानवाळा, (समाहिउप्पायगा) आलोचकने समाधि उत्पन्न करनारा, (य) अने (गुणगाही) अन्यना छता गुणोने ग्रहण करवाना स्वभाववाळा एवा आचार्यादि होय छे, (एएण कारणेणं) आ कारणथी तेओ (आलोअणं सोउं) आलोचना सांभळवाने (अरिहा) योग्य छे. २६०.

आ प्रमाणे अनशनवाळानुं कृत्य बतावी हवे पूर्वे (२५४ मी गाथामां) कहेली कंदर्पादिक पांच अशुभ भावनानुं स्वरूप कहे छे.—

कंदप्पकुक्कुआइं, तह सीलसहावहासविगहाहिं । विम्हायंतो अ परं, कंदप्पं भावणं कुणइ ॥२६१॥

अर्थ—(कंदप्पकुक्कुआइं) कंदर्प एटले अट्टहास, मोटेथी बोलवुं, गुर्वादिकनी साथे पण कठोर वचनथी बोलवुं, अने

कामकथानो उपदेश तथा तेनी प्रशंसा करवी ते, काकुच्यै एटले भृकुटि अने नेत्रादिकनी चेष्टावडे अन्यने हसाववुं तथा पक्षी विगेरेनी भाषा बोली अने मुखवडे वाजिंत्र वगाडी अन्यने हसाववुं ते. (तह) तथा प्रकारना (सील) शीळ, (सहाव) स्वभाव, (हास) हास्य अने (विगहाहिं) विकथावडे (परं) परने (विम्हायंतो अ) विस्मय पमाडवो ते, आ रीते करतो प्राणी (कंदप्पं भावणं) कंदर्प भावनाने (कुणइ) करे छे. २६१.

मंताजोगं काउं, भूईकम्मं च जे पउंजंति । सायरसइड्ढिहेउं, अभिओगं भावणं कुणइ ॥ २६२ ॥

अर्थ—(मंताजोगं) मंत्र अने योग–चूर्णादिक (काउं) करीने (भूईकम्मं) भूतिकर्म अने रक्षादिकने माटे भस्म, माटी के दोरा विगेरेवडे जे कर्म करवुं तेने (च) तथा कौतुकादिकने–अंजनतिलकादिने (जे) जेओ (सायरसइड्ढिहेउं) साता, रस अने ऋद्धिने कारणे (पउंजंति) प्रयुंजे छे–करे छे, ते (अभिओगं भावणं) आभियोग्य भावनाने (कुणइ) करे छे. २६२.

नाणस्स केवलीणं, धम्मायरिअस्स संघसाहूणं । माई अवण्णवाई, किब्बिसिअं भावणं कुणइ ॥२६३॥

अर्थ—(नाणस्स) ज्ञानना, (केवलीणं) केवळीना, (धम्मायरिअस्स) धर्माचार्यना, (संघसाहूणं) संघना अने ... (अवण्णवाई) जे अवर्णवाद बोले तथा (माई) पोताना दोष ढांकवा माटे माया कपट करे ते (किब्बिसिअं) [illegible] (कुणइ) करे छे. २६३.

...अपसरो, तह य निमित्तम्मि होइ पडिसेवी ।
...एएहिं कारणेहिं, आसुरिअं भावणं कुणइ ॥ २६४ ॥

अर्थ—(अणुबद्धरोसपसरो) निरंतर क्रोधनो प्रचार छे जेने (तह य) तथा (निमित्तम्मि) अतीतादिक निमित्तने विषे (पडिसेवी) सेवा करनारा (होइ) जे होय ते (एएहिं कारणेहिं) आ कारणोए करीने (आसुरिअं भावणं) आसुरी भावनाने (कुणइ) करे छे. २६४.

सत्थग्गहणं विसभक्खणं च, जलणं च जलप्पवेसो अ ।
अणायारभंडसेवा, जम्मणमरणाणि बंधंति ॥ २६५ ॥

अर्थ—(सत्थग्गहणं) जे आत्मघात करवा माटे शस्त्रने ग्रहण करे, (विसभक्खणं च) विषभक्षण करे, (जलणं च) अग्निप्रवेश करे, (जलप्पवेसो अ) जळमां प्रवेश करे, चशब्दथी भृगुपातादिक करे तथा जे (अणायारभंडसेवा) हास्य मोहादिके करीने अनाचार एटले शास्त्रमां नहीं कहेला भांडनी एटले उपकरणनी सेवा करे, ते (जम्मणमरणाणि) जन्म मरणोने एटले अनेक जन्म मरण थाय तेवा कर्मोने (बंधंति) बांधे छे. शस्त्रग्रहणादिक संक्लेशनुं कारण होवाथी अनंत भवनुं कारण थाय छे. आम कहेवाथी पांचमी मोह भावना कही. २६५.

॥ अथ श्री उदयविजयकृतोत्तराध्ययनषट्त्रिंशत्स्वाध्यायाः प्रारभ्यन्ते ॥

प्रथम विनयाध्ययन सज्झाय. १

श्री नेमीसरजिनतणुं जी ॥ ए देशी ॥

पवयण देवी चित्तधरी जी, विनय वखाणीश सार ॥ जंबूने पूछे कह्यो जी, श्रीसोहम गणधार ॥ १ ॥ भविक जन विनय वहो सुखकार ॥ ए आंकणी ॥ पहेले अध्ययने कह्यो जी, उत्तराध्ययन मझार ॥ सघळा गुणमां मूळगो जी, जे जिनशासन सार ॥ भवि० ॥ २ ॥ नाणे विनयथी पामीए जी, नाणे दर्शन शुद्ध ॥ चारित्र दर्शनथी हुवे जी, चारित्रथी पुण सिद्ध ॥ भवि० ॥ ३ ॥ गुरुनी आज्ञा सदा धरे जी, जाणे गुरुनो भाव ॥ विनयवंत गुणरागीयो जी, ते मुनि सरळ स्वभाव ॥ भवि० ॥ ४ ॥ कणनुं कुंडुं परहरी जी, विष्टा शुं मन राग ॥ गुरु द्रोही ते जाणवा जी, सूअर उपम लाग ॥ ॥ भवि० ॥ ५ ॥ कोह्या काननी कूतरी जी, ठाम न पामे रे जेम ॥ शीलहीन अकह्यागरा जी, आदर न लहे तेम ॥ ॥ भवि० ॥६॥ चंदतणी पेरे उजली जी, कीर्ति तेह लहंत ॥ विषय कषाय जीती करी जी, जे नर विनय वहंत ॥ भवि० ॥ ॥७॥ विजयदेव गुरु पाटवी जी, श्रीविजयसिंह सुरींद्र ॥ शिष्य उदय वाचक भणे जी, विनय सकल सुखकंद ॥ भवि० ॥ ॥ ८ ॥ इति ॥

अथ द्वितीय परीषह अध्ययन सज्झाय. २.

शांतिसुधारस कुंडमां ॥ ए देशी ॥

सोहम स्वामी जंबू प्रत्ये, उपदेशे धर्म विचार रे ॥ उत्तराध्ययन बीजे कह्यो, परिषह तणो अधिकार रे ॥ १ ॥ इंद्रिय जय तुमे आदरो ॥ ए आंकणी ॥ जेम लहो सुख संसार रे ॥ अनुक्रमे नाण किरिया थकी, शाश्वतां सुख लहो सार रे ॥ इंद्रिय० ॥ २ ॥ खुहा तृषा शीत ने तावडो, डंस अचेल तेम होय रे ॥ अरति रति नारी चर्या वळी, निसीहि शय्या पुण जोय रे ॥ इंद्रिय० ॥ ३ ॥ तेम आक्रोश वध याचना, रोग अलाभ तृणफास रे ॥ मल सत्कार मतिमूढता, होय समकित सुखवास रे ॥ इंद्रिय० ॥ ४ ॥ एह बावीश परिषह कह्या, प्रथम तिहां ऋषभ जिणंद रे ॥ सांसही वरस ना पामीयुं, केवळ नाण सुख कंद रे ॥ इंद्रिय० ॥ ५ ॥ ढंढण मुनिवरे सांसह्यो, परिषह नाम अलाभ रे ॥ तेहथी तेहने उपज्यो, केवळ संपदा लाभ रे ॥ इंद्रिय० ॥ ६ ॥ बहुविध परिषह सांसह्या, शासन नायक वीर रे ॥ तेहथी नाण अविचळ लह्युं, मेरुगिरि साहस धीररे ॥ इंद्रिय० ॥ ७ ॥ श्री विजयदेव गुरु पाटवी, श्री विजयसिंह सूरींद रे ॥ शिष्य वाचक उदयविजयनी, वाणी भव-धारी नरवृंदरे ॥ इंद्रिय० ॥ ८ ॥ इति ॥

अथ तृतीय चतुरंगी अध्ययन सज्झाय. ३.

वीरमाता प्रीति कारिणी ॥ ए देशी ॥

प्रथम मानव भव दोहिलो, सुणावे चित्त आणो ॥ पालव सद्दहणा खरी, धर्म अंग एह जाणो ॥ १ ॥ चार शुभ अंग

भवि धारीये ॥ ए आंकणी ॥ कहे सोहम स्वामी ॥ त्रीजे अध्ययन निसुण्यो, जंबू शिर नामी ॥ चार० ॥ २ ॥ मणुष्य भव दुलहता कारिणी, दश होइ दिठ्ठंत ॥ सांभळवो वळी दोहीलो, जिनराय सिद्धंत ॥ चार० ॥ ३ ॥ जइ वि ते सांभळवुं मळे, तोहि रुचि किहां साची ॥ कवहुं किरिया तणी रुचि हुइ, बल शक्ति तेहि काची ॥ चार० ॥ ४ ॥ भाग्य योगे लहे ए. कोइ भविजन प्राणी ॥ धर्मनुं आळस मत करो, तमे तेण हित जाणी ॥ चार० ॥ ५ ॥ श्रीविजयदेव गुरु पाटवी, विजयसिंह मुनिराय ॥ शिष्य तस उपदेशे एणी परे, उदयविजय उवझाय ॥ चार० ॥ ६ ॥ इति ॥

अथ चतुर्थ संस्कृताध्ययन सज्झाय. ४.

मुनिजन मारग चालतां ॥ ए देशी ॥

अजरामर जग को नहीं, प्रमाद ते छांडो रे ॥ मिथ्या मति मूकी करी, गुण आदर मांडो रे ॥ १ ॥ शुद्ध धर्मनो खप करो ॥ ए आंकणी ॥ टाळी विषय विकारो रे ॥ चोथे अध्ययने कहे, वीर एह विचारो रे ॥ शुद्ध० ॥ २ ॥ पाप कर्म करी मेळवे, धनना लव जेह रे ॥ मूर्ख धन छांडी करी, नरके भमे तेह रे ॥ शुद्ध० ॥ ३ ॥ बंधव जनने पोषवा, करे जे नर पाप रे ॥ तेह तणां फळ दोहिलां, सहे एकलो आप रे ॥ शुद्ध० ॥ ४ ॥ खात्र तणे मुखे जे ग्रह्यो, एक चोर अयाण रे ॥ निज कर्मे दुःख देखतां, तेहने कुण त्राण रे ॥ शुद्ध० ॥ ५ ॥ इम जाणी पुण्य कीजीए, जेहथी सुख थाय रे ॥ नवी नवी संपद अभिनवी, वळी सुजश गवाय रे ॥ शुद्ध० ॥ ६ ॥ विजयदेव गुरु पाटवी, विजयसिंह मुणिंदो रे ॥ शिष्य उदय कहे पुण्यथी, होइ परम आणंदो रे ॥ शुद्ध० ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ पंचम अकामाध्ययन सज्झाय. ५

सकळ मनोरथ पूरवे ॥ ए देशी ॥

पंचम अध्ययने कहे ए, पंचम गणधर नियजी ए सद्दहे ए, जंबूस्वामी ते सही ए ॥ १ ॥ मरण सकाम अकाम ए, मूर्ख मरण अकाम ए, सकाम ए, बीज ड जाणपणा थकी ए ॥२॥ प्रथम अनंती वार ए, जीव लहे निरधार ए, सार ए, बीजुं पुण्य कोइक लहे ए ॥३॥ इह परलोक न सद्दहे, जे भावे ते सुखी कहे, नवि रहे, तत्त्व तणी मन वासना ए ॥ ४ ॥ पांचे आश्रव आदरे, विविध परे माया करे, नवि तरे, ते अज्ञानी जीवडो ए ॥५॥ सामायिक पोसह धरे, साधु तणा गुण अनुसरे, निस्तरे, ते प्राणी नाणी सही ए ॥ ६ ॥ गुण अवगुण इम जाणीए, गुण घरी ए गुण खाणी ए, वाणी ए, विजयसिंह गुरु शिष्यनी ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ षष्ठ ग्रंथियाध्ययन सज्झाय. ६.

ढाल ॥ मधुबिंदूअनो ॥ ए देशी ॥

संसारे रे जीव अनंत भवे करी, करे बहुला रे संबंध चिहु गति फरी फरी ॥ नवी राखे रे कोय न सव निज कर घरी, सगाइ रे कहो किण परे कहीए खरी ॥ १ ॥ त्रुटक ॥ कहो खरी किण पर एह सगाइ, कारिमो संबंध ए ॥ सवि मृषा मात पिता बहेनी, बंधु नेह प्रबंध ए ॥ घरे तरुण गृहिणी रंगे परणी, त्राण कारण ते नहीं ॥ मणि कणग मोतीअ धन धण हण, संपदा सवि संग्रही ॥ २ ॥ ढाल ॥ ए थावर रे जंगम पातक दोइ कह्यां, जेह करतां रे चउगइ दुःख जीवे सह्यां ॥

तेह टाळो रे पातक दूरे प्रणियणां, जिम पामो रे दृढ परभव सुख अतिघणां ॥ ३ ॥ त्रुटक ॥ अतिघणां सुख तुमे लहो भविषण, जैनधर्म करी खरो ॥ परदार परधन परहरी तिखे, जैनधर्म समाचरो ॥ जे मंद माचे रूपे राचे, धर्म साचे नवि रमे ॥ अंजलिजळ परे जन्म जातो, मूढ ते फळ त्रिण गमे ॥ ४ ॥ ढाळ ॥ अध्ययने रे छठे श्रीजिनवर कहे, शुभ दृष्टि रे तेह भली परे सद्दहे ॥ ते सद्दही रे तप नियमादिक आदरे, आदरतो रे केवळलच्छी पण वरे ॥ ५ ॥ त्रुटक ॥ लच्छी वरे जिनधर्म करतो, हलुअकर्मी जे हुवे ॥ पांचमो गणधर स्वामी जंबू, पूछीयो इणि परे कहे ॥ श्रीविजयदेव सूरींद पटधर, विजयसिंह मुनिसर, तस शिष्य वाचक उदय इणि परे, उपदिशे भवि हितकर ॥ ६ ॥ इति ॥

अथ सप्तम एडकाध्ययन सज्झाय. ७.

अज जिम कोइक पोषे आंगण, प्राहुणडाने हेते रे ॥ ते अज जव मनगमता चरतो, तास विपाक न चेते रे ॥ १ ॥ श्रीजिनवर इणि परे जंपे ॥ ए आंकणी ॥ विषय विकार म राचो रे ॥ तप जप संयम किरियानो खप, कीजे जे जग साचो रे ॥ श्री० ॥ २ ॥ मद्य मांस आहार करतो, विषय विकार उमाह्यो रे ॥ नरक तणुं ते आउखु बांधे, अज जिम पारकेभ कोह्यो ॥ श्री० ॥ ३ ॥ कोडी लोभे सहस गुमावे, मंद मति जिम कोइ रे ॥ अंबतणा फळ कारण छांडीये, राज्य ऋद्धि घरी सोइ रे ॥ श्री० ॥ ४ ॥ तिम नरभव सुखकारणी छांडि, अमरतणां सुख भोग रे ॥ तिम वळी मोख तणां सुख मोटां, किम पामे जड लोक रे ॥ श्री० ॥ ५ ॥ एणिपरे मूढपणुं परहरीये, पंडित गुण आदरीये रे ॥ विजयसिंह गुरु शिष्य कहे इम, उदय सदा सुख वरीये ॥ श्री० ॥ ६ ॥ इति ॥

अथाष्टम कपिलाध्ययन सज्झाय. ८.

रुक्मिणी अंगज जनमीयो ॥ ए देशी ॥

केवळ नाण गुण पूरीयो, चोर पांचसें हेत रे ॥ सुधन कपिलो मुनि उपदिसे, सुणो सुगुण सचित्त रे ॥ १ ॥ विषम ए विषास परिहरो ॥ ए आंकणी ॥ धरो धैर्य मन मांही रे ॥ कायर नवि छांडी शके, त्यजे सुर उत्साही रे ॥ वि० ॥ २ ॥ एह संसार जळनिधि समो, कह्यो ते दुःख भंडार रे ॥ वहाण सरिस एक ज साहु, तिहां धर्म आधार रे ॥ वि० ॥ ३ ॥ जेह मन वचन काया करी, जयणा करे सार रे ॥ तेह सघळां दुःख परहरी, लहे सुख श्रीकार रे ॥ वि० ॥ ४ ॥ लाभ जिम जिम हुवे अतिघणो, तिम तिम लोभ वाधंत रे ॥ दोइ मासा धन कारणे, नवि कोडि सरंत रे ॥ वि० ॥ ५ ॥ पंच सय एम प्रतिबोधिया, ऋषिराय उपदेश रे ॥ आठमा एह अध्ययननो, कह्यो अर्थ लव लेश रे ॥ वि० ॥ ६ ॥ विजयदेव गुरु पाटवी, विजयसिंह सूरिंद रे ॥ शिष्य तस वाचक इम भणे, उदयविजय सुखकंद रे ॥ वि० ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ नवम नमिराय अध्ययन सज्झाय. ९.

सुहवि सुहागण सुंदरी सारी ॥ ए देशी ॥

देव तणी ऋद्धि भोगवी आव्यो, मिथिला नयरी नरिंदो ॥ नमि नामि जे इंद्रे परखी, जाण्यो शुद्ध नरिंदो रे ॥ भविका एहवा मुनिवर वंदो ॥ सुख संपत्ति निज हाथे करीने, जिम चिर काळे नंदो रे ॥ भ० ॥ ए० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥

चारित्र लेइ मिथिला नाथो, संवेग रसमां भीनो ॥ नमि रायऋषि पंथे चाले, राग न रोष अदीनो रे ॥ भ० ॥ २ ॥ तास परीक्षा हेते सुरपति, ब्राह्मण वेषे आवे ॥ मिथिला अग्नि जळती देखाडे, सुरपति पूछे भावे रे ॥ भ० ॥ ३ ॥ निज नगरी जळती कां मूकी, तिम वळी आथी अनेरी ॥ मुनि कहे मारुं कांइ न विगाडे, केहनी अग्नि भंजेरी रे ॥ भ० ॥ ४ ॥ इंद्र भणे नगरी समरावी, अरिजन सवि वश कीजे ॥ अनुक्रमे संजम मार्ग लेइ, अविचळ सुखपद लीजे रे ॥ भ० ॥ ५ ॥ मुनि बोले जे अविचळ नगरी, तस मंडाण करे शुं ॥ अथिर तणो प्रतिबंध ते छांडी, थिरशुं प्रीति धरेशुं रे ॥ भ० ॥ ६ ॥ कोडि कटक जीते जे तेहथी, मन जीते ते शूरो ॥ एम प्रशंसी हरि सुरलोके, पहोंच्यो पुण्ये पूरो रे ॥ भ० ॥ ७ ॥ अविचळ सुख पाम्यो मुनिराजा, नवमे अध्ययने ॥ वात कही कहे उदयविजय इम, विजयसिंह गुरु वचने रे ॥ भ० ॥ ८ ॥

अथ दशम द्रुमपत्राध्ययन सज्झाय. १०.

प्राणीया पर तांत नवि कीजे ॥ ए देशी ॥

पंडुर पान थये परिपाके, तरुथी पडे कोइ काळे रे ॥ तिम धन यौवन जीवित पण तुं, गौतम नाणे निहाले रे ॥ १ ॥ गौतमने श्री वीर पयंपे ॥ ए आंकणी ॥ म करे समय प्रमाद रे ॥ तेम इह परभव सुख पामीजे, टाळीजे विषवाद रे ॥ गौ० ॥ ॥ २ ॥ [illegible] तणी अणीए जळ कणिका, जिम हुवे अथिर स्वभाव रे ॥ तिम नरनो आउखो जाणो, धर्म सदा थिर भाव रे ॥ गौ० ॥ ३ ॥ षट्काय मांहि काळ अनंतो, भमीयो दुःख सहंत रे ॥ वळी जरा वळि केश पंडुरा, इंद्रिय शक्ति न हुंति रे ॥ गौ० ॥ ४ ॥ तेहवा मांहे जिनवर नवि दीसे, पंचम काळे भरते रे ॥ मतमति नवनवी वाणी दीसे, धर्म ते कहो किहां

वरते रे ॥ गौ० ॥ ५ ॥ जिनवाणी निसुणी इम गौतम, अनुक्रमे केवळ नाणी रे ॥ दशमे अध्ययने इम भाखे, वीर जिनेश्वर वाणी रे ॥ गौ० ॥ ६ ॥ विजयदेव गुरु पट्ट प्रभाविक, विजयसिंह गुरु शिष्यो रे ॥ वाचक उदयविजय इम बोले, पुण्य पहोंचे जगीशो रे ॥ गौ० ॥ ७ ॥

अथ एकादश बहुश्रुताध्ययन सज्झाय. ११.

सह गुरु ओवे वाटडी ॥ ए देशी ॥

वीर जिणंदनी देशना, आगम गुण देखी ॥ जे बहु सुअ ते वर्णव्यो, अविनीत उवेखी ॥ वी० ॥ १ ॥ जे जे भाव वखाणीया, भावो ते भवि लोको ॥ जिम इहभव परभव हुवे, तुम सुख संयोगो ॥ वी० ॥ २ ॥ जे बहुश्रुत मुनिवर हुवे, तेहने उपमान ॥ सुरतरु सायर शशि रवि, गज रथ बहुमान ॥ वी० ॥ ३ ॥ अर्धचक्री चक्री हरि, धन कोश सिंह ॥ सीता नदी मंदिर गिरि, जंबू तरु लीह ॥ वी० ॥ ४ ॥ इत्यादिक उपमा घणी, बहुसुअ अणगार ॥ अध्ययने अग्यारमे, सहु ए अधिकार ॥ वी० ॥ ५ ॥ विजयदेव गुरु पाटवी, विजयसिंह सूरींद ॥ शिष्य उदय कहे सुअधरा, प्रतपो दुचंद ॥ वी० ॥६॥

अथ द्वादश हरिकेशी अध्ययन सज्झाय. १२.

जगवल्लभ गुरुजी, तुं वसीयो मोरे मन ॥ ए देशी ॥

ऋषि वनवासी सुरवर सेवित, पाळे पंच आचार ॥ पांचे निज इंद्रिय वश करतो, तपसी उग्र विहार ॥ १ ॥ मातंग मुनीश्वर

॥ ए आंकणी ॥ हरिकेशी धनधन्य ॥ हूओ मुनिवर जे कहायो, किरिया गुण संपन्न ॥ मातंग० ॥ २ ॥ मास तणो तपसी हरिकेशी, तिदुःख जखनी ठाणी ॥ मल शोभित तनु रह्यो संवेगी, निर्मळ काउस्सग्ग जाणी ॥ मा० ॥ ३ ॥ राजसुता भद्रा तिहां आवी, जखने नमवा काम ॥ भमती मांहे मुनिवर देखी, मुह मचकोडे ताम ॥ मा० ॥ ४ ॥ ते देखी सुरवर तव कोप्यो, कन्या कीधी दुष्ट ॥ ओडे हार ने मोडे तनु सा, प्रलपे भूताविष्ट ॥ मा० ॥ ५ ॥ ते निसुणी राजा तिहां आव्यो, करी उपचार अनेक ॥ बोलाव्यो सुर कहे सुता जो, परणे मुनि सुविवेक ॥ मा० ॥ ६ ॥ तो साजी तत्क्षण ए थाये, ते निसुणी कन्या तेह ॥ राजाए मुनिने परणावी, मूकी यक्षने गेह ॥ मा० ॥ ७ ॥ राते मुनि अविचळ तेणे दीठो, आवी प्रभाते गेह ॥ ऋषि निरखीने योग्य कही इम, आणी पुरोहित तेह ॥ मा० ॥ ८ ॥ मांडे याग पुरोहित एक दिन, विप्र मळ्या लख कोडि ॥ मासखमण पारणे तिहां मुनिवर, आव्यो मनने कोड ॥ मा० ॥ ९ ॥ आरंभी अविवेकी ब्राह्मण, न लहे धर्म विचार ॥ मुनि देखी कहे कुण तुं दीसे, जा अंत्यज अवतार ॥ मा० ॥ १० ॥ यक्ष तदा मुनिमुखथी बोले, यागनुं फळ तुम्ह एह ॥ शुद्ध पात्र गोचरीये पहोतो, हुं तुम्ह तारणि जेह ॥ मा० ॥ ११ ॥ रोषे ब्राह्मणसुत तव मुनिने, करवा यष्टि प्रहार ॥ उठ्या तव ते यक्षे कीधा, रुधिर वमंत कुमार ॥ मा० ॥ ॥ १२ ॥ पाय लागी मुनिने ते खामे, पुरोहित सुत अपराध ॥ प्रतिलाभी प्रतिबोध लह्यो तिणे, बाळकने थइ रे समाधि ॥ मा० ॥ १३ ॥ मुक्ति मुनि पहोंच्यो जय वर्त्या, ए अधिकार अशेष ॥ अध्ययने बारमे वखाण्यो, श्रीमहावीर जिणेश ॥ मा० ॥ १४ ॥ विजयदेव गुरु पाट प्रभाविक, श्रीविजयसिंह सूरिराय ॥ तेह तणो बाळक इम बोले, उदयविजय उवज्झाय ॥ मा० ॥ १५ ॥ इति ॥

अथ त्रयोदश चित्रसंभूति अध्ययन सज्झाय. १३.

सकळ मनोरथ पूरवे ॥ ए देशी ॥

चित्र अने संभूत ए, गजपुरमां विहरंत ए, महंत ए, दोइ मातंग मुनीश्वरा ए ॥ १ ॥ एक दिन तेहने वंदे ए, चक्री नियम निछंद ए, आणंदे ए, पटराणी पण वंदती ए ॥ २ ॥ नारी रयण ते दीठी ए, काम अग्नि अंगीठी ए, पइठी ए, मनमां ते संभूतने ए ॥३॥ चक्र तणुं नियाण ए, करे ते अजाण ए, जाण ए, चित्रे वार्यो नवि रहे ए ॥ ४ ॥ चित्र नियाणा विण शुद्ध ए, संभूतो मुनि अविशुद्ध ए, सुर ऋद्धि ए, भवि बीजे दोइ पामीया ए ॥ ५ ॥ त्रीजे भवे मुनि संभूत ए, चक्री थयो नरपुर हुंत ए, धन्यपूत ए, चित्र पुरिमताले थयो ए ॥ ६ ॥ सुविहिताने ते अनुसरे ए, अनुक्रमे संयम आदरे ए, एक दिन ते कंपिलपुरे ए ॥ ७ ॥ पुर कंपिले दोइ जणा ए, थया एकठा बहु गुणा ए, अति घणा ए, चक्री कहे सुख भोगवो ए ॥ ८ ॥ चित्र कहे लीजे दीख ए, ते न लहे चक्री शीख ए, सुपरिख ए, कर्म तणी जग एहवी ए ॥ ९ ॥ चक्री अपैठाण ए, मुनि निज पुण्य प्रमाण ए, जाण ए, उत्तम पदवी पामीयो ए ॥ १० ॥ विजयदेव पटधारक ए, विजयसिंह प्रभाविक ए, वाचक उदय ए, कहे गुण मुनितणा ए ॥ ११ ॥ इति ॥

अथ चतुर्दश इषुकार कमलाध्ययन सज्झाय. १४.

देवतणी रे वाणी सुणी रे ॥ ए देशी ॥

देवतणी ऋद्धि भोगवी रे, पुर इषुकार मझार ॥ मोरा लाल रे ॥ भृगु पुरोहित कुल आवीया रे, सुर दोइ शुभ

तिथि वार ॥ मोरा० ॥ १ ॥ ते मुनि बाळक वंदीये रे ॥ ए आंकणी ॥ मात पितानी साथ ॥ मोरा० ॥ दीख लेइ थया केवळी रे, वळी राणी नरनाथ ॥ मोरा० ॥ ते० ॥ २ ॥ मावित्रे वीहावीया रे, ऋषि देखीता संत ॥ मोरा० ॥ एक दिन ऋषि तेणे दीठडा रे, तरुतळे आहार करंत ॥ मोरा० ॥ ते० ॥ ३ ॥ जातिस्मरण जाणीयुं रे, पूर्व भव विरतंत ॥ मोरा० ॥ मात पिताने बूझवी रे, चारित्र तेह लहंत ॥ मोरा० ॥ ते० ॥ ४ ॥ मात पिता दीक्षा लीये रे, तिम वळी राणी राय ॥ मोरा० ॥ ए पट जण थया केवळी रे, पहोंच्या शिवपुरमांय ॥ मोरा० ॥ ते० ॥ ५ ॥ विजयदेव गुरु पाटवी रे, श्री विजयसिंह मुनिराय ॥ मोरा० ॥ तेह तणो शिष्य उपदिशे रे, उदयविजय उवज्झाय ॥ मोरा० ॥ ते० ॥ ६ ॥ इति ॥

अथ पंचदश भिक्षुकाराध्ययन सज्झाय. १५.

रुक्मिणी रूप रंगिली नारी ॥ ए देशी ॥

तप करतां मुनि राजीया लाला, न करे भोग नियाण ॥ मुनि मार्गे सुधो धरे लाला, ते बोल्या गुण खाणी ॥ मुनीश्वर तो भिक्षु गुण शुद्ध ॥ पंदरमा अध्ययनमां लाला, इम भाखे संबुद्ध ॥ मु० ॥ १ ॥ मंत्र तंत्र नवि केलवे लाला, तस न राग न रोष ॥ शूरा परिसह जीतवा लाला, चारित्रना नहीं दोष ॥ मु० ॥ ते० ॥ २ ॥ परिचय नहीं गृहस्थनो लाला, अरस विरस आहार ॥ पूजादिक वांछे नहीं लाला, साचा ते अणगार ॥ मु० ॥ ते० ॥ ३ ॥ इणि परि, मुनिगुण सांभळी लाला, परखी किरिया नाण ॥ साधु पंथ तुम्हे आदरो लाला, त्रण तत्त्वना जाण ॥ मु० ॥ ते० ॥ ४ ॥ विजयदेव गुरु पाटवी लाला, विजयसिंह गुरु लीह ॥ शिष्य उदय कहे एहवा लाला, मुनि प्रतपो निशि दीह ॥ मु० ॥ ते० ॥ ५ ॥

अथ षोडश ब्रह्मचर्य समाधि अध्ययन सज्झाय. १६.

हस्तीनागपुर ॥ ए देशी ॥

ब्रह्मचर्यनां दश कह्यां, स्थानक श्रीवीर जिणंद रे ॥ अध्ययने ते सोळमे, जेह पाळे शुद्ध मुणिंद रे ॥ १ ॥ जेह पाळे शुद्ध मुणिंद, संवेग रस भावीया गुण गेह ए ॥ गुण गेह निरेह निराग, विषय दल जीवतां सुविदेह रे ॥ ए आंकणी ॥ पशु पंडग नारी विना, वसही पहेली निरधार रे ॥ आसण तिणि नवि बेसीये, बेसे जिण आसन नारी रे ॥ बे० ॥ सं० ॥ ॥ २ ॥ नारी कथा नवि कीजीये, नवि निरखी इंद्रिय तास रे ॥ भींती पटंतर टाळीये, नवि चिंतिये पूर्व अभ्यास रे ॥ न० ॥ सं० ॥ ३ ॥ सरस भोजन नवि कीजीये, नवि लीजीये अधिक आहार रे ॥ उद्भट वेष न धारीये, तरीये इण संसार रे ॥ त० ॥ सं० ॥ ४ ॥ उदयविजय वाचक भणी, शीळवंत ते पुरुष रतन्न रे ॥ श्री विजयदेव गुरु पाटवी, श्री विजयसिंह गुरु धन्न रे, ते तो विजयसिंह गुरु धन्य रे, संवेग रस भाविया गुण गेह ए ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ सप्तदश पापश्रमणाध्ययन सज्झाय, १७.

आदि तुं जोने जीवडा ॥ ए देशी ॥

श्री जिनधर्म सुणी खरो, लही दीक्षा सार ॥ निय छंदे जे संचरे, ते पुरुष गमार ॥ १ ॥ वीर जिनेश्वर उपदिशे ॥ ए आंकणी ॥ पाप श्रमण जे तेह ॥ सतरमा अध्ययनमां, मुनि भाख्यो जेह ॥ वी० ॥ २ ॥ ज्ञान दायक निज गुरु तणो,

लोपक जे साध ॥ पंच प्रमाद वशे पड्यो, चारित्र न समाधि ॥ वी० ॥ ३ ॥ कंठ लगे भोजन भलुं, करी सूवे जेह ॥ रात दिवस विकथा करे, गुणनी नहीं रेह ॥ वी० ॥ ४ ॥ भव वेहु चूकी करी, करे काय कलेश ॥ विष मिश्र तेहने परहरी, धरो सुगुण विशेष ॥ वी० ॥ ५ ॥ विजयदेव गुरु पाटवी, विजयसिंह सूरीश ॥ शिष्य उदय कहे पुण्यथी, पहोंचे सुजगीश ॥ वी० ॥ ६ ॥ इति ॥

अथाष्टादश संयतिराजाध्ययन सज्झाय. १८.

लौकिक वाडानो ॥ ए देशी ॥

कंपिलपुरनो राजीयो, जग गाजीयो रे संजय नरराय के ॥ पाय नमे नर जेहना रे, पहोंचे भडवाय के ॥ १ ॥ धन धन संजय नरवरु ॥ ए आंकणी ॥ जग सुरतरु रे शासन वन मांहि के ॥ बांह ग्रही भवकूपथी, दुःखरूपथी रे जिनधर्म समाहि के ॥ ध० ॥ २ ॥ एक दिन केशरी कानने, रस वाह्यो रे जाये मृगया हेत के ॥ त्रास पमाडे जंतुने, एक मृगलो रे दुहव्यो तिण खेत के ॥ ध० ॥ ३ ॥ तीर पीडाये तडफड्यो, पड्यो हरणलो रे मुनिवरनी पास के ॥ ते देखी चिंता करे, राय खाभतो रे मुनि तेजे त्रास के ॥ ध० ॥ ४ ॥ राय कहे मुनिरायने, हुं तो तुम्ह तणो रे अपराधी एह के ॥ राख राख जगबंधु तुं, मुज भाखो रे जिनधर्म सनेह के ॥ ध० ॥ ५ ॥ ध्यान पारी मुनिवर भणे, राय कां हणे रे हरिणादिक जीव के ॥ निरपराधी जे बापडा, पाडंता रे दुःखीया बहु रीव के ॥ ध० ॥ ६ ॥ हय गज रथ पायक वळी, धन कामिनी रे कारिमुं सवि जाण के ॥ धर्म ज एक साचो अछे, एम निसुणी रे तेह संजय राण के ॥ ध० ॥ ७ ॥ गर्दभाली पासे लीये, जिन-

दीक्षा रे संसारी सार के ॥ गुरु आदेशे अनुक्रमे, पुहवीतले रे करे उग्र विहार के ॥ ध० ॥ ८ ॥ मार्गे एक मुनिवर मळ्यो, तेह साथे रे करे धर्मविचार के ॥ जिनदीक्षा पामी तर्यो, भरतेश्वर रे चक्री सनत्कुमार के ॥ ध० ॥ ९ ॥ सगर मघव संतीश्वरो, कुंथु पद्म अने हरिषेण नरिंद के ॥ जयचक्री नगइ नमी, करकंडु रे दोमुह मुणिचंद के ॥ ध० ॥ १० ॥ महबल राय उदायणो, वळी राजा रे दशार्णभद्र के ॥ नाण क्रिया पोते करी, ए तो तरीया रे संसार समुद्र के ॥ ध० ॥ ११ ॥ विजय जयदेव सूरीश्वरु, पट्टोधर रे विजयसिंह गुणखाण के ॥ उदयविजय कहे ए कह्यो, अध्ययने रे अढारमे जाण के ॥ध०॥१२॥

अथ एकोनविंश मृगापुत्राध्ययन सज्झाय. १९.

शारद बुधदायी सेवक ॥ ए देशी ॥ ढाल ॥

सुग्रीव नयर वर, वन वाडी आराम ॥ बळभद्र नरेश्वर, राज करे गुणधाम ॥ इंद्राणी सरखी, राणी मृगा अभिराम ॥ मकरध्वज सुंदर, कुंवर बलश्री नाम ॥ १ ॥ त्रु० ॥ बलश्री नाम कुंवर अति सुंदर, जीत्यो कामविकार ॥ संयम लेइ कर्म खपेइ, पाम्यो भवजल पार ॥ ओगणीशमे अध्ययने जिनवर, वीर दीये उपदेश ॥ भणतां गुणतां भव भवनां, नासे पाप क्लेश ॥२॥ढाल॥ एक दिन वर मंदिर, अंतेउर परिवार ॥ परवरीयो पेखे, नयर मझार कुमार ॥ दीठो तव मुनिवर, ईर्याए मलपंत ॥ तस ऊहापोहे, जाति स्मरण हुंत ॥ ३ ॥ त्रु० ॥ जातिस्मरण पामी देखे, पूर्वभव संबंध ॥ पंच महाव्रत सांभरे वळी, चउ गइ दुःख प्रबंध ॥ मातपिता आगळ जइ बोले, दुःख अनंतीवार ॥ जे जे में पाम्यां ते कहेतां, किमही न आवे पार ॥ ४ ॥ ढाल ॥ संसार असार ए, दीसे मळभंडार ॥ शंबल विण वाटे, जातां दुःख दातार ॥ बहु जन्म मरण भय,

नरय विरिय दुःख ठाण ॥ तिहां बळता घरथी, सार ग्रहे ते जाण ॥ ५ ॥ त्रु० ॥ सार ग्रहे ते जाण विचारी, आपणपुं तारशुं ॥ द्यो प्रभु तुम्ह आदेश अम्हे, हवे संयम गुण धारशुं ॥ शीत ताप क्षुद तृषा, अनंती दुःसह संबलि रुख ॥ पूतली अग्निवर्ण आलिंगी, दीठां नरके दुःख ॥ ६ ॥ ढाल ॥ दुःखकी नीकळ्या मृगापुत्र नारीने ॥ मातिपता आदेशे, दीक्षा लहे मुनि लीह ॥ अनुक्रमे ते मुनिवर, शिवपुर राज्य लहंत ॥ जिहां नाण दंसण वळी, परमानंद अनंत ॥ ७ ॥ त्रु० ॥ परमानंद अनंत ते लहीये, साधु तणा गुण धरता ॥ श्रीजिनशासन उत्तम पामी, सूधी किरिया करतां ॥ किरियानो ते आगर गणधर, विजयदेव पटधार ॥ विजयसिंह गुरुराज विराजे, शिष्य उदय जयकार ॥ ८ ॥ ढाळ ॥ इति ॥

अथ विंशतितम अनाथीराय अध्ययन सज्झाय.२०.

जोतां रे जतां रे कानन सघळुं ॥ ए देशी ॥

मगध देश राजगृही नगरी, राजा श्रेणिक दीपे रे ॥ चतुरंग सेनाए परवरियो, तेजे दिनयर झीपे रे ॥ धन धन श्रीऋषिराज अनाथी ॥ ए आंकणी ॥ रूपे देवकुमार रे ॥ संवेग रंग तरंगे झीले, यौवनवय अणगार रे ॥ ध० ॥ २ ॥ एक दिन कानन पहोंच्यो श्रेणिक, वंद्या श्रीऋषिराय रे ॥ लघु वय देखी हरखे पूछे, प्रभु तुम्ह कोमल काय रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ आ तुम्ह रूप अनूपम यौवन, तरुणी जन आधार रे ॥ इति अवसर नारी रस लीजे, वड पण संयम भार रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ ध्यान पूरि तव मुनिवर बोले, राजन् हुं छुं अनाथ रे ॥ नाथ विना संयम में लीधुं, नृप कहे हुं तुम्ह नाथ रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ जोइये ते तुम्हने हुं पूरुं, क्यों तुम्हें ए बहु आथ रे ॥ मुनि कहे राजन् नाथ न ताहरे, किम थाइश मुझ नाथ रे ॥ध०॥६॥

राय कहे हय गय रथ पायक, मणि माणक भंडार रे ॥ माहरे छे हुं नाथ सहूनो, तव बोले अणगार रे ॥ ध० ॥ ७ ॥ कोसंबी नयरीनो राजा, मुझ पिता गुणवंत रे ॥ तास कुंवर हुं अति घणुं वल्लभ, लहु वय लीलावंत रे ॥ ध० ॥८॥ एक दिन मुझ अंगे थइ वेदना, न टळे कोइ उपाये रे ॥ मातपिता महारे दुःखे दुःखीया, नारी ईंथई भराय रे ॥ ध० ॥ ९ ॥ बहुल विलाप कर्यो तेणीए, मुझ दुःख नवि लेवाय रे ॥ तब में निर्णय एहवो कीधो, धर्म ज एक सहाय रे ॥ ध० ॥ १० ॥ इम चिंतवतां वेदना नाठी, प्रातः संयम में लीधो रे ॥ नाथ अनाथ तणो ए विहरो, सुणी नरनाथ प्रसिद्धो रे ॥ ध० ॥ ११ ॥ ते सुणी राजा समकित पाम्यो, मुक्ति गयो अणगार रे ॥ वीशमे अध्ययने जिनवीरे, ए भांख्यो अधिकार रे ॥ ध० ॥ १२ ॥ श्रीविजयदेव सूरीश्वर पाटे, विजयसिंह मुनिराय रे ॥ उदयविजय वाचक तस बाळक, साधु तणा गुण गाय रे ॥ ध० ॥ १३ ॥ इति ॥

अथ एकविंश समुद्रपाल अध्ययन सज्झाय. २१.

पूज्य पधारो पाटीये ॥ ए देशी ॥

नयरी चंपामां वसे, ए तो श्रावक पालक नाम ॥ सजनी ॥ एक दिन प्रवहण पूरीयां, पहोंच्यो पिहुंडपुर ठाम ॥ सजनी ॥ १ ॥ समुद्रपाल मुनिवर जयो ॥ ए आंकणी ॥ ए तो संवेगी विख्यात ॥ सजनी ॥ अध्ययने एकवीशमें, एह सयल अवदात ॥ स० ॥ स० ॥२॥ ते तिहां धन भेळुं करी, परण्यो विदेशे नारी ॥ स० ॥ सगर्भा नारी लइ चड्यो, निजपुर आवण हार ॥ स० ॥ स० ॥ ३ ॥ समुद्र मांहि सुत जन्म्यो, समुद्रपाळ तस नाम ॥ स० ॥ पुत्र कलत्र लइ आवीयो, पालक

चंपा ठाम ॥ स० ॥ स० ॥ ४ ॥ अनुक्रमे ताते परणावीयो, रुक्मिणी नारी सरूप ॥ स० ॥ एक दिन गोंख बीराजतो, देखे नगर स्वरूप ॥ स० ॥ स० ॥ ५ ॥ एक चोर तव दीठडो, तस कंठ कणयर माळ ॥ स० ॥ गाढे बंधने बांधीयो, भोगवी दुःख असराळ ॥ स० ॥ स० ॥ ६ ॥ ते देखी तस उपज्यो, मन वैराग्य अपार ॥ स० ॥ समुद्रपाळ तव चिंतवे, जुओ कठिन कर्म अधिकार ॥ स० ॥ स० ॥ ७ ॥ माताने पूछी लीये, संयम भार कुमार ॥ स० ॥ मुक्ति गयो मुनिराजीयो, सुख पाम्यो श्रीकार ॥ स० ॥ स० ॥ ८ ॥ विजयदेव पट्टे जयो, विजयसिंह गणधार ॥ स० ॥ शिष्य उदयवाचक कहे, मुनि गुण मोहनगार ॥ स० ॥ स० ॥ ९ ॥ इति ॥

अथ द्वाविंश रहनेमि अध्ययन सज्झाय. २२.

फागनी ढालनी वा सुरती महिनानी देशी ॥

सौरिपुर अतिसुंदर, श्रीवसुदेव नरिंद ॥ रोहणी देवकी राणी, राम केशव होइ नंद ॥ समुद्रविजय वळी राजीयो, राणी शिवादे कंत ॥ मन आनंदन नंदन, नेमीश्वर अरिहंत ॥ १ ॥ सहस अठोत्तर सुंदर, लक्षण अंग अभंग ॥ अनुक्रमे पामीयुं मोहन, यौवन नव रस रंग ॥ एक दिन तेह तणो कारण, गोपीनो भरतार ॥ उग्रसेन पासे मागे, राजुल राजकुमारी ॥ २ ॥ मनअलि मालती मालती, चालती गज गति गेली ॥ मयणातणी सेना सजी, विकसी मोहनवेली ॥ वड सोभागिणी रागिणी, त्रिभुवन केरो सार ॥ जान लेइ ते परणवा, आवे नेम कुमार ॥ ३ ॥ चाले हलधर गिरिधर, बंधुर बंधव जोडी ॥ रवि शशी मंडल झीपता, दीपता होडा होडी ॥ शिव सींदूरीया साथीया, हाथीया मत्त गिरिंद ॥ बंदी जन बिरुदावळी, बोले

नव नव छंद ॥८॥ डंबरे अंबर गाजे, वाजे मंगळ तूर ॥ फेरी नफेरी नफेरीय, भेरीय भुंगल भूरि ॥ राचे माचे नाचे, जाचे साचे प्रेम ॥ गुणमणि ओरडी गोरडी, मोरडी पाउसि जेम ॥ ५ ॥ करे केइ सुकुमाळी, वाली गीत कल्लोल ॥ केवि सुभग शणगारी, प्यारी चढे चकडोल ॥ चतुर चकोरडी गोरडी, लूण उतारे एक ॥ जय जय नाद सुणावती, आवती धरती विवेक ॥ ॥ ६ ॥ हय गय रथ पायक वळी, मिलीय यादवनी जान ॥ एणिपेरे बहु आडंबरे, आवे यदु सुलतान ॥ ग्रहण मांहे शशी परे, सोहे नेमि कुमार ॥ अनुक्रमे तोरण बारण, पहोंच्या साथे मुरारि ॥ ७ ॥ पशुवाडे पशु जाणी, आणी करुणा तास ॥ सारथिने प्रभु पूछे, केम मेली पशु राशि ॥ गौरव कारण तुम्ह तणी, ते भणे ए सहु आज ॥ ते सुण पशु मूकावी, पाछा वळ्या जिनराज ॥ ८ ॥ सहसावन जइ बुझीयो, झुझीयो कर्मह साथ ॥ व्रत धरी तप करी आदरी, तीर्थंकर तणी आथ ॥ ते सुणी अति घणी वेयणा, वेइ राजुल नारी ॥ अनुक्रमे जिनवर नाणी, जाणी गइ गिरनार ॥ ९ ॥ दीक्ष लेइ प्रभु पासे, अभ्यासे गुणरंगी ॥ इक दिन गिरिभणी जातां, वृष्टे भीनुं अंग ॥ कंचुक चीर सुकववा, पहोंची गिरिदरी मांही ॥ तव मन मीठी दीठी, रहनेमी उत्साही ॥ १० ॥ नग्न नारी ते मन वसी, धसमसी बोल्यो बोल ॥ ते मुनि चारित्र चूकतो, मूकतो लाजनी ढोल ॥ मुनि सुणी सुंदरी मंदिरे, फरी करी पूरीये वास ॥ यौवन वय सुख लीजीये, कीजीये विविध विलास ॥ ११ ॥ सतीय शिरोमणि भाखी, आखे अणी सूक्ष्म शील ॥ वाडी न लोपुं तेह तणी, चउणि जिम होय लील ॥ तुझ पथ देखी तरुणी, रमणी चूकशे चित्त ॥ वो हड तरु परे होशे, चंचळ तुझ चरित्र ॥ १२ ॥ एम अगम धन कुल तणी, भणी उपमा सार ॥ बाळ कुंवारी तारीया, रहनेमी अणगार ॥ बिहु जण ते शिवपुर गया, गहगह्यां सुख अभंग ॥ अध्ययने बावीशमे, ए अधिकार सुचंग ॥ १३ ॥ धन धन

उपनी निय कुल, राजुल बाळ कुंवारी ॥ धन धन नेमि सहोदर, रहनेमी अणगार ॥ विजयदेव गुरु पटधर, विजयसिंह मुनिराय ॥ तेह तणो एम बालक, उदयविजय गुण गाय ॥ १७ ॥ इति ॥

अथ त्रयोविंश केशीगौतम अध्ययन सज्झाय. २३.

मन मधुकर मोही रह्यो ॥ ए देशी ॥

शिष्य जिनेश्वर पार्श्वना, केशी कुमार मुणिंद रे, ॥ गोयम वीर जिणंदना, एक सूरज एक चंद रे ॥ १ ॥ धन धन ए दो गणधरा ॥ ए आंकणी ॥ गोयम केशी कुमार रे ॥ तिंदुक वन भेळा मळी, करे जिनधर्म विचार रे, ॥ ध० ॥ २ ॥ संघाडा बेहु जिन तणा, मनमां आव्यो संदेह रे ॥ मुक्ति मार्ग दोइ जिन कहे, तो कां अंतर एह रे ॥ ध० ॥ ३ ॥ चार महाव्रत केशीने, गोयमने पुण पंच रे ॥ केशी पूछे गोयमा, कहे उत्तर प्रपंच रे ॥ ध० ॥ ४ ॥ ऋजु जड पहेला जिन तणा, अंतिम वक्र जड होइ रे ॥ जाण सरळ बावीशना, तिणे हुआ मार्ग दोइ रे ॥ ध० ॥ ५ ॥ परमार्थ पूर्ण जोयतां, मार्ग भेद म जाणी रे ॥ रुडी मति तुझ गोयमा, केशी टळीया संदेहो रे ॥ ध० ॥ ६ ॥ अध्ययने त्रेवीशमे, जे जे पूछ्युं तेह रे ॥ गोयम स्वामीए सहु कह्युं, केशी टळीया संदेह रे ॥ ध० ॥ ७ ॥ मुक्ति गया दोय गणधरा, जिहां सुख लाधा अभंग रे ॥ श्रीविजयसिंह सूरीश्वरु, शिष्य उदय रसरंग रे ॥ ध० ॥ ८ ॥ इति ॥

अथ चतुर्विंश समिति अध्ययन सज्झाय. २४.

समिति गुप्ति सुधी धरो ॥ भवि चेतो रे ॥ इम कहे वीर जिनेश ॥ भविक चित्त चेतो रे ॥ अध्ययने चउवीश

अथ सप्तविंश कुशिष्याध्ययन सज्झाय. २७.

मरु देवी माता ॥ ए देशी ॥

वीर गोयमने इम कहे, अविनीत उवेखो शिष्य जी ॥ वांका बळद तणी पेरे, कामवेला आणीए रीश जी ॥ वीर० ॥ ॥ १ ॥ समोल ते भांगे जोतरां, वळी सामा मांडे शींग जी ॥ तिम साहमा बोले घणुं, इम अविनयथी गुण भंग जी ॥ ॥ वीर० ॥ २ ॥ आलसुआ अकक्षागरा, छांडी जाये निजनिज छंद जी ॥ पोष्या गुरुए वळी शीखव्या, पण न धरे ते गुणवृंद जी ॥ वीर० ॥ ३ ॥ बळदने उवेखी रहे, जिम सारथि सुख समाधि जी ॥ तिम गुरु पण अविनीतने, उवेखी कारज साधे जी ॥ वीर० ॥ ४ ॥ श्री विजयदेव गुरु पाटवी, जयो श्री विजयसिंह गणधारजी ॥ अध्ययने सगवीशमें, कह्यो उदय कहे सुविचार जी ॥ वीर० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथाष्टाविंश मोक्षमार्गाध्ययन सज्झाय. २८.

छेल छबीले छेतर्यां ॥ ए देशी ॥

वर्धमान जिनवर कहे, दंसण नाण चारित्र रे ॥ अध्ययने अडवीशमे, जिण पाळे थाये पवित्र रे ॥ व० ॥ १ ॥ नाण पंचविह वर्णव्युं, आठे ते समकित भेद रे ॥ भेद आठ चारित्रना, तपगुण बारह भेद रे ॥ व० ॥ २ ॥ नाणी भाव सवे लहे, दंसण सद्दहे तेह रे ॥ चारित्र पातक आवतां, वारे निःसंदेह रे ॥ व० ॥३॥ पाप मेल लागो हुवे, ते शोधे तप शुद्ध

रे ॥ इम ए चार प्रभावथी, मुनि हुवे परम विशुद्ध रे ॥ स० ॥ ४ ॥ विजयदेव पटधर जयो, विजयसिंह मुनिराय रे ॥ तास शिष्य इम वीनवे, उदयविजय उवझाय रे ॥ स० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ एकोनत्रिंश सम्यक्त्वपराक्रमाख्य अध्ययन सज्झाय. २९.

सोहम जंबूने कहे, मैं जिन पासे विचार ॥ सुणीयुं ओगणत्रीशमे, अध्ययने सुखकार रे ॥ १ ॥ समकित आदरो ॥ तिहुंत्तर बोल उदार रे, वळी किरिया धरो ॥ ए आंकणी ॥ प्रथम बोल संवेगनो, बीजो ते निर्वेद ॥ त्रीजो रुचि धर्मह तणी, हवे चउथादिक भेद रे ॥ स० ॥ २ ॥ भक्ति सुगुरु साहामी तणी, पाप प्रकाशन निंद ॥ गर्हणा सामाइयं, चउविसत्थो अमंद रे ॥ स० ॥ ३ ॥ वंदन पडिकमणुं वळी, काउस्सग्ग पच्चख्खाण ॥ थयथुयें मंगळ चौदमो, बोल ते नियम नियाणो रे ॥ स० ॥ ४ ॥ चार काळ पडिलेहणा, खामणा प्रायश्चित्त ॥ सज्झाय भणवुं पूछवुं, गणवुं चिंतववुं चित्त रे ॥ स० ॥ ५ ॥ धर्मकथा श्रुत सेवना, मन एकाग्र निवेश ॥ संयम तप ने निर्जरा, नहीं दुसज्झाय प्रवेश रे ॥ स० ॥ ६ ॥ धरिय अप्रतिबंधता, सयणासण सुविवेक ॥ विषय निवृत्ति संभोगीया, पच्चख्खाणनी टेक रे ॥ स० ॥ ७ ॥ उपधि आहार कसाय ए, योग शरीर सहाय ॥ भाव अने सद्भावना, अड पच्चख्खाण अमाय रे ॥ स० ॥ ८ ॥ थिविर तणी पडिरूपता, वैयावच्च गुण भूरि ॥ वीतरागता पुण चमा, मुत्ति सरळता अदूर रे ॥ स० ॥ ९ ॥ मार्दव भाव सुसत्यता, करण योगना साच ॥ मण वय काय सुगुप्तता, शुभ मन काय सुवाच रे ॥ स० ॥ १० ॥ नाण दरिसण चारित्र ए, पण इंद्रिय जयकार ॥ क्रोध मान माया वळी, लोभ तणो परिहार रे ॥ स० ॥ ११ ॥ पिज्ज दोस

मिथ्यात्वनो, जय करवो निरधार ॥ शैलेशीय अकर्मता, ए विहुत्तरि अवधार रे ॥ एता बोल थकी लहे, साधु परम पद सार ॥ विजयसिंह मुनिराजनो, उदय कहे हितकार रे ॥ स० ॥ १२ ॥

अथ त्रिंशत्तम तपोमार्गाध्ययन सज्झाय. ३०

नारी रे निरुपम नागिला ॥ ए देशी ॥

श्री वीरे तप वर्णव्यो, महोटो गुण जग एह ॥ पापकर्म टाळी करी, मुक्ति पमाडे जेह ॥ श्री० ॥ १ ॥ जिम सरोवर कादव भर्यो, शोधे नायक तास ॥ गरनाली दूरी करी, सूरकिरणनी रे वास ॥ श्री० ॥ २ ॥ ते मळ जेम रवि शोषवे, जेम केम्हीं गरनाल ॥ आश्रव रुंध्यां तप तथा, शोधि करे ततकाळ ॥ श्री० ॥ ३ ॥ उपवासो ऊणोदरी, वृत्ति तणो रे संखेव ॥ रसवारण संलीनता, कायक्लेश भरेव ॥ श्री० ॥ ४ ॥ वैयावच्च आलोचना, विनय अने सज्झाय ॥ काउस्सग्ग ध्यान तथा, षट् दुग बारह थाय ॥ श्री० ॥ ५ ॥ बारे भेदे तप करो, अंगी धरो रे समाधि ॥ अध्ययने जिम त्रीशमे, बोले अर्थ अगाध ॥ श्री० ॥ ६ ॥ विजयदेव गुरु पाटवी, विजयसिंह मुनिसिंह ॥ उदयविजय कहे गणधरा, ए दोय गुरु गुण लीह ॥ श्री० ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ एकत्रिंशत्तम चरणविधि अध्ययन सज्झाय. ३१.

हुं बलिहारी यादवा ॥ ए देशी ॥

वर्धमान जिन उपदिशे, धरीये संयम शुद्धि के ॥ एक दिन चारित्तर दीये, किंचित् मानकी सिद्धि के ॥ १ ॥ सुधी

किरिया पाळीये ॥ ए आंकणी ॥ इंद्रिय निज वश कीजीये, विकथा तजी मोष के ॥ समिति गुप्ति आराधीये, परहरीये पुण दोष के ॥ सू० ॥ २ ॥ दश भेदे मुनिधर्म जे, ते आराधो जाणी के ॥ प्रतिमा मुनि श्रावक तणी, वहो धरो शुभ जाणी के ॥ सू० ॥ ३ ॥ ज्ञाताधर्म तणी कथा, साची आणो चित्त के ॥ बावीश परिसह सांसहो, बोलो वाणी सत्य के ॥ सू० ॥ ४ ॥ जे जे थानके इम कह्या, ते पाळो सुजगीश के ॥ अध्ययने एकत्रीशमे, बोले श्रीजगदीश के ॥ सू० ॥ ५ ॥ विजयदेव गुरु पाटवी, विजयसिंह गुरु हीर के ॥ शिष्य उदय कहे दोइ ए, जाणो गोयम वीर के ॥ सू० ॥ ६ ॥ इति ॥

अथ द्वात्रिंश प्रमाद ठाम अध्ययन सज्झाय. ३२.

कामिनी मूके न मोरो हाथ ॥ ए देशी ॥

वीर कहे बत्रीशमें रे, अध्ययने सुविचार ॥ पाप हेतु ते परिहरो रे, जिम लहो भवजळ पार ॥ १ ॥ भवियण भाव धरो गुण राशि, जिम न पडो दुःख पाश ॥ भ० ॥ ए आंकणी ॥ नाण धरो रे मोह परिहरो रे, जीतो राग ने रोष ॥ पंच इंद्रिय वश करो रे, म धरो विषय सदोष ॥ भ० ॥ २ ॥ तृणचारी वसतो वने रे, हरिण जुओ वेधाय ॥ नाद तणे रसे वाहिया रे, जो लय लीणा थाय ॥ भ० ॥ ३ ॥ करिणी फरसे मोहीया रे, हाथीया चूके ठाम ॥ दरबारे आवी रही रे, परवश सेवे गाम ॥ भ० ॥ ४ ॥ रूपे लुब्ध पतंगीयो रे, दीवे होमे अंग ॥ गंध तणे रस पंकजे रे, बंधन पामे भृंग ॥ भ० ॥ ५ ॥ आमिष रस वश माछलो रे, एकमनो जे होय ॥ पेखो ततखण बापडो रे, वेदन पामे सोय ॥ भ० ॥ ६ ॥ एकेकने परवशे रे, जो ए दुःखीया थाय ॥ तो पांचे परवश तणी रे, कहो गति केण कहाय ॥ भ० ॥ ७ ॥ इम जाणी ए छीपता रे, पामे

नित्य आनंद ॥ विजयसिंह गुरुनी परे रे, उदय सदा सुख कंद ॥ भ० ॥ ८ ॥ इति ॥

अथ त्रयस्त्रिंशत्तम कर्मपयडी अध्ययन सज्झाय. ३३.

तोगले मेवाडो राणो लोंडियो रे ॥ ए देशी ॥

केवळ नाणे जाणतो रे लो, बोले श्री जिन वीर रे ॥ मुणिंदराय ॥ आठ कर्मने वश पड्यो रे लो, न लहे भवजळ तीर रे ॥ मु० ॥ कर्म कठिन दल जीतीये रे लो ॥ आठो ए जीते ते लहे रे लो, सुख सघळां वड वीर रे ॥ मु० ॥ क० ॥ १ ॥ ए आंकणी ॥ नाण पंचने आवरे रे लो, नाणावरणी सोय रे ॥ मु० ॥ दंसणने जे आवरे रे लो, ते नव भेदे होय रे ॥ मु० ॥ क० ॥ २ ॥ दोय भेदे कह्युं वेदनी रे लो, मोह अठावीस रे ॥ मु० ॥ नरय तिरिय नर सुर तणुं रे लो, आयु कहे जगदीश रे ॥ मु० ॥ क० ॥ ३ ॥ तिन्नि अधिका एक सो रे लो, नाम कर्मना भेद रे ॥ मु० ॥ गोत्र तणा भेद दो कह्या रे लो, विघन तणा पण भेद रे ॥ मु० ॥ क० ॥ ४ ॥ अठावन शुं आगली रे लो, एक सो पयडी होय रे ॥ मु० ॥ अध्ययने तेत्रीशमे रे लो, ए परमारथ जोयरे ॥ मु० ॥ क० ॥ ५ ॥ विजयदेव पाटे जयो रे लो, श्री विजयसिंह गणधार रे ॥ मु० ॥ तेह तणो बाळक कहे रे लो, उदयविजय जयकार रे ॥ मु० ॥ क० ॥ ६ ॥

अथ चतुस्त्रिंशत्तम लेश्याध्ययन सज्झाय, ३४.

वेगे पधारो महेलथी ॥ ए देशी ॥

कृष्ण नील कापोते ए, तेज पद्म चउ पंच ॥ शुक्ल छठी एहना, हवे सुणो वर्ण प्रपंच ॥ १ ॥ छ लेश्या शुं

विचारीये ॥ ए आंकणी ॥ जिम तरीये संसार ॥ पहेली त्रण्ये परिहरी, वळी त्रण धरीये सार ॥ छ० ॥ २ ॥ पहेली कडुइ शामली, बीजी नीली तीख ॥ त्रीजी शामल रातडी, ते कषायेली पीख ॥ छ० ॥ ३ ॥ चउथी आंबिल रातडी, पीळी आसव सार ॥ पंचमी छठ्ठी उजली, साकर सरखी धार ॥ छ० ॥ ४ ॥ दुरभिगंध त्रण पहेलडी, त्रण आगली रे सुगंध ॥ कुगति त्रण पहेली दीये, सुगति त्रणथी बंध ॥ छ० ॥ ५ ॥ ए लेश्या रे चउत्रीशमें, अध्ययने कहे वीर ॥ तेमां उत्तम आदरे, लच्छी वरे मुनि हीर ॥ छ० ॥ ६ ॥ विजयदेव गुरु पाटवी, श्री विजयसिंह सूरीश ॥ तेह तणो वळी उपदिशे, उदय कहे सुजगीश ॥ छ० ॥ ७ ॥ इति ॥

अथ पंचत्रिंशत्तम अणगार मार्ग अध्ययन सज्झाय. ३५.

निःस्नेही तुमही भये ॥ ए देशी ॥

॥ वीर कहे भवि लोकने, पाळो मुनि आचार राजे ॥ अध्ययने पंचत्रिंशमे, तेह तणो अधिकार राजे ॥ वी० ॥ १ ॥ पापारंभ निषेधीये, धरीये संयम धीर राजे ॥ वसति विशुद्ध सेवीये, एम लहीये गुण हीर राजे ॥ वी० ॥ २ ॥ त्रस स्थावर नवि हिंसीये, मृषावाद परिहार राजे ॥ अणदीधुं नवि लीजीये, धरीये बंभ उदार राजे ॥ वी० ॥ ३ ॥ परिग्रह परिमित कीजीये, राखीये जय शुभ ध्यान राजे ॥ एणीपरे धर्म समाचरे, तस घर नवे निधान राजे ॥ वी० ॥ ४ ॥ विजयदेव गुरु पाटवी, विजयसिंह मुनिराय राजे ॥ शिष्य तेहनो उपदिशे, उदयविजय उवज्झाय राजे ॥ वी० ॥ ५ ॥ इति ॥

अथ षट्त्रिंशत्तम जीवाजीवविभक्ताख्याध्ययन सज्झाय. ३६.

॥ ढाल धमालनी ॥

सोहम स्वामी एम कहे रे, सुण जंबू अणगार ॥ वीर जिनेश्वर भाखीयो रे, जीव अजीव विचार ॥ १ ॥ परमारथ परिचय कीजीये रे, लीजे प्रवचन सार ॥ शुभ नाण अमीरस पीजीये रे, पामीजे भवपार ॥ प० ॥ ए आंकणी ॥ जीव अजीव दोइ वर्णव्या रे, लोकालोक मझार ॥ जीव अरूपी तेहमां रे, जाणो दोइ अजीव प्रकार ॥ प० ॥ २ ॥ पुद्‌गळ रूपी ए कह्यो रे, आकाशादिक अरूप ॥ संक्षेपथी अजीवनुं रे, वर्णव्युं एह स्वरूप ॥ प० ॥ ३ ॥ भेद सुण्या दोइ जीवना रे, सिद्ध अने भववास ॥ भेद पन्नर तो सिद्धना रे, जेह मळ्या अलोक आकाश ॥ प० ॥ ४ ॥ पुढवी जळ जलणानिला रे, वण से बि ति चउ पंच ॥ इंद्रिय माने भव तणी रे, जाणजो सूत्र प्रपंच ॥ प० ॥ ५ ॥ ए सवि भाव जिनेश्वरे रे, भाख्या भवि हित काज ॥ सूधा सद्दहतां थकां रे, पामीये अविचळ राज ॥ प० ॥ ६ ॥ विजयदेव सूरीश्वरु रे, पद प्राभाविक सिंह ॥ विजयसिंह मुनिराजीयो रे, सुविहित गणधर लीह ॥ प० ॥ ७ ॥ तास नाम सुपसाउले रे, ए छत्रीश सज्झाय ॥ उदयविजय वाचक भणे रे, जेह थकी नव निधि थाय ॥ प० ॥ ८ ॥

॥ इति श्री उत्तराध्ययन षट्त्रिंशाध्ययनानां स्वाध्यायाः संपूर्णाः ॥